# लेव तोलस्तोय

# युद्ध और शान्ति

# लेव तोलस्तोय

# युद्ध और शान्ति

उपन्यास
चार खण्डों में

## खण्ड २

रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

अनुवादक : डॉ० मदनलाल 'मधु'

चित्रकार : देमेन्ती श्मारिनोव

ЛЕВ ТОЛСТОЙ

ВОЙНА И МИР
Том II

*На языке хинди*

LEO TOLSTOY

WAR AND PEACE
Vol. II

*In Hindi*



सोवियत संघ में प्रकाशित

ISBN 5-05-001494-8
ISBN 5-05-001496-4

# अनुक्रम

# भाग १

# १

सन् १८०६ के शुरू में निकोलाई रोस्तोव छुट्टी पर घर लौटा। देनीसोव भी छुट्टी पर अपने घर वोरोनेज शहर जा रहा था। रोस्तोव ने उसे मास्को तक अपने साथ चलने और अपने घर पर ठहरने के लिये राज़ी कर लिया। एक कम अन्तिम डाक-चौकी पर देनीसोव को अपना एक दोस्त मिल गया, उसने उसके साथ शराब की तीन बोतलें पी डालीं और इसके बाद सड़क के धचकों-झटकों के बावजूद स्लेज-घोड़ागाड़ी के तल में रोस्तोव के पास लेटा हुआ गहरी नींद सोता रहा, जबकि रोस्तोव मास्को के अधिकाधिक निकट आते जाने पर अधिकाधिक बेचैन होता जा रहा था।

"अभी और कितनी दूर है? और कितनी दूर है? ओह, ये मुसीबत की मारी सड़कें, दुकानें, नानबाइयों की दुकानें, सड़कों के लैम्प, स्लेजें!" रोस्तोव उस समय सोच रहा था, जब वे नगर-द्वार पर अपनी छुट्टी के अनुमति-पत्र दर्ज करवाकर मास्को में प्रवेश कर रहे थे।

"देनीसोव, हम पहुंच गये! सो रहा है!" उसने अपने सारे शरीर को आगे की ओर झुकाते हुए कहा मानो इस तरह से वह स्लेज की गति को तेज़ करने की आशा कर रहा हो। देनीसोव कोई जवाब न देकर सोता रहा।

"वह रहा चौराहे का कोना जहां ज़ाख़ार कोचवान की स्लेज खड़ी रहती है, वह रहा ख़ुद ज़ाख़ार और वही घोड़ा है उसका। लो, वह दुकान भी आ गयी जहां हम मीठी रोटियां ख़रीदा करते थे। अभी और कितनी देर लगेगी? जल्दी करो न!"

"किस मकान पर जाना है?" कोचवान ने पूछा।

"उस, सिरेवाले, बड़े मकान पर। देखते हो न! वह हमारा घर है," रोस्तोव ने कहा, "हां, वही हमारा घर है!"

"देनीसोव! देनीसोव! हम अभी पहुंचने ही वाले हैं।"

देनीसोव ने सिर ऊपर उठाया, खांसा और कोई जवाब नहीं दिया।

"द्मीत्री," रोस्तोव ने कोचवान की बग़ल में बैठे अपने नौकर को सम्बोधित किया। "वे तो हमारे घर में ही बत्तियां जल रही हैं न?"

"जी, वहीं जल रही हैं, पापा के कमरे में भी रोशनी है।"

"तो वे लोग अभी तक सोये नहीं? क्यों? क्या ख़्याल है तेरा? देख, भूल नहीं जाना, सूटकेस में से फ़ौरन मेरी नयी, हंगेरियायी फ़ौजी वर्दी निकाल देना," उसने अपनी नयी-नयी बढ़ायी गयी मूंछों पर हाथ फेरते हुए नौकर मे इतना और कह दिया।

"अब जल्दी भी करो," उसने चिल्लाते हुए कोचवान से कहा। "देनीसोव, जाग भी जाओ," उसने देनीसोव को सम्बोधित किया जिसका सिर फिर नींद के कारण नीचे झुक गया था।

"अरे अब जल्दी भी करो, तीन रूबल मिलेंगे वोद्का के लिये, जल्दी करो!" रोस्तोव उस वक़्त चिल्ला उठा, जब स्लेज उसके घर मे केवल तीन घर ही इधर रह गयी थी। उसे ऐसे लग रहा था कि घोड़े जहां के तहां खड़े हैं। आख़िर स्लेज दायीं ओर के दरवाज़े के सामने पहुंच गयी। रोस्तोव को ऊपर की तरफ़ थोड़े-से उखड़े प्लस्तर-वाली जानी-पहचानी कार्निस, ओसारा और पटरी का स्तम्भ दिखायी दिया। वह चलती स्लेज से नीचे कूदकर ड्योढ़ी में भाग गया। घर ज्यों का त्यों बुत बना और उदासीन-सा खड़ा रहा मानो उसे इस बात से कोई मतलब न हो कि कौन उसमें दाख़िल हुआ है। ड्योढ़ी में कोई नहीं था। "हे भगवान! घर में सब कुशल-मंगल तो है?" रोस्तोव ने क्षण भर को रुककर धड़कते दिल से सोचा और अगले पल ही ड्योढ़ी तथा चिर परिचित टेढ़ी-मेढ़ी पैड़ियों को लांघता हुआ आगे भागता चला गया। दरवाज़े का वही हेंडल था जिसके अच्छी तरह से साफ़ न होने के कारण काउंटेस बिगड़ती रहती थीं और वह पहले की तरह ही ढीले-ढाले ढंग से खुलता था। प्रवेश-कक्ष में एक मोमबत्ती जल रही थी।

बूढ़ा मिखाइलो लकड़ी के अपने बड़े सन्दूक पर सो रहा था। सन्देशवाहक नौकर प्रोकोफ़ी, जो इतना तगड़ा था कि पिछले भाग से बग्घी को ऊपर उठा लेता था, बैठा हुआ छाल के जूते बना रहा था। उसने अपने सामने खुलनेवाले दरवाज़े की तरफ़ देखा और उसके चेहरे का उदासीन तथा उनींदा-सा भाव सहसा प्रसन्नतापूर्ण आश्चर्य में बदल गया।

"हे भगवान! छोटे साहब!" वह जवान मालिक को पहचानकर चिल्ला उठा। "मेरी आंखें मुझे धोखा तो नहीं दे रहीं? मेरे प्यारे!" और उत्तेजना से कांपता हुआ प्रोकोफ़ी सम्भवतः सूचना देने के लिये दीवानख़ाने के दरवाज़े की तरफ़ लपका, किन्तु शायद इसी क्षण उसने अपना इरादा बदल लिया, लौटा और जवान मालिक के गले से लिपट गया।

"घर में सब लोग ठीक-ठाक तो हैं न?" अपना हाथ मुक्त करते हुए रोस्तोव ने पूछा।

"भगवान की कृपा है! भगवान की कृपा से सब ठीक-ठाक हैं! अभी-अभी भोजन समाप्त हुआ है! ज़रा अपना मुखड़ा तो देखने दीजिये, मालिक!"

"सब कुशल-मंगल है न?"

"भगवान की दया है, भगवान की दया है!"

देनीसोव को बिल्कुल भूलकर और यह न चाहते हुए कि अपने आने के बारे में कोई पहले से ही जान जाये, रोस्तोव ने अपना फ़र-कोट उतार फेंका और दबे पांव बड़े, अन्धेरे हॉल में भाग गया। सब कुछ पहले जैसा था – वही ताश की मेज़ें, कपड़े से ढका हुआ वही झाड़-फ़ानूस। किन्तु किसी ने जवान काउंट को देख लिया था, वह भागता हुआ दीवानख़ाने तक पहुंच नहीं पाया था कि बग़ल के दरवाज़े से कोई तूफ़ान की तरह तेज़ी से भागता बाहर आया और उसका आलिंगन-चुम्बन करने लगा। दूसरे, तीसरे दरवाज़े से भी कोई इसी तरह भागकर बाहर आया, उसका और अधिक चुम्बन-आलिंगन हुआ, ख़ुशी की और ज़्यादा चीख़ें सुनायी दीं, आंसू नज़र आये। निकोलाई रोस्तोव यह नहीं जान पाया कि पापा कहां और कौन-से हैं, नताशा तथा पेत्या कौन-से हैं। सभी एकसाथ ख़ुशी से चिल्ला रहे थे, बोल रहे थे, उसे चूम रहे थे। केवल मां इन लोगों में नहीं थीं – इतना वह जान गया था।

"और मुझे तो पता ही नहीं था... मेरे प्यारे निकोलाई... मेरे दोस्त!"

"यह है... हमारा... निकोलाई... कितने बदल गये हो तुम! मोमबत्तियां कहां हैं? चाय का प्रवन्ध करो!"

"मुझे तो चूमो!"

"मेरे प्यारे... मुझे भी।"

सोन्या, नताशा, पेत्या, आन्ना मिख़ाइलोव्ना, वेरा, बुजुर्ग काउंट उसका आलिंगन कर रहे थे। नौकर-नौकरानियां कमरे में आ गये थे और तरह-तरह से अपनी ख़ुशी तथा आश्चर्य प्रकट कर रहे थे।

पेत्या तो निकोलाई की टांगों से ही लटक गया था।

"मुझे भी, मुझे भी चूमो!" वह चिल्लाता जा रहा था।

भाई को अपनी तरफ़ झुकाकर उसका सारा मुंह चूमने के बाद नताशा उससे कुछ दूर हट गयी थी और उसकी हंगेरियायी फ़ौजी वर्दी का कोना पकड़े हुए एक ही जगह पर बकरी की भांति उछल तथा ख़ुशी से चिल्ला रही थी।

सभी ओर प्यार भरी और ख़ुशी के आंसुओं से चमकती हुई आंखें थीं, सभी ओर चुम्बन पाने को उत्सुक होंठ थे।

सुर्ख़ कपड़े की तरह एकदम लाल सोन्या भी उसकी बांह से चिपकी हुई थी, ख़ुशी से चमक रही थी और निकोलाई की उन आंखों पर दृष्टि जमाये थी जिनकी वह राह देखती रही थी। सोन्या सोलहवां साल पार कर चुकी थी और बहुत ही सुन्दर थी, विशेषतः ख़ुशी और उल्लासपूर्ण उत्तेजना के इस क्षण में। वह मुस्कराते और दम साधे हुए उसे एकटक देख रही थी। निकोलाई ने उसकी ओर कृतज्ञतापूर्वक देखा, किन्तु वह किसी अन्य की प्रतीक्षा कर रहा था, आंखों से खोज रहा था। बूढ़ी काउंटेस अभी तक बाहर नहीं आयी थीं। इसी क्षण दरवाज़े के पास क़दमों की आहट सुनायी दी। इतने तेज़ क़दमों की कि वे उसकी मा के क़दम नहीं हो सकते थे।

फिर भी वह काउंटेस ही थीं, निकोलाई के लिये अपरिचित, नयी पोशाक पहने हुए जो उसकी अनुपस्थिति में सिली थी। सभी ने निकोलाई को छोड़ दिया और वह भागकर मां के पास गया। एक-दूसरे के निकट आने पर काउंटेस सिसकते हुए उसके वक्ष पर गिर गयीं। वह अपने चेहरे को ऊपर नहीं उठा पायीं और उसे निकोलाई की फ़ौजी वर्दी की ठण्डी डोरियों के साथ और अधिक सटाती चली गयीं। देनीसोव, जिसकी ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया था, कमरे में आकर यहीं खड़ा हो गया था और इनकी ओर देखते हुए अपनी आंखें मल रहा था।

"आपके बेटे का दोस्त, वसीली देनीसोव," उसने काउंट की

प्रश्नसूचक दृष्टि के उत्तर में अपना परिचय देते हुए कहा।

"स्वागत है। मुझे आपके बारे में मालूम है, मालूम है," काउंट ने देनीसोव को चूमते और गले लगाते हुए कहा। "बेटे निकोलाई ने आपके मम्बन्ध में लिखा था... नताशा, वेरा, यह है देनीसोव।"

वही खिले हुए और उल्लासपूर्ण चेहरे झबरे, काली मूंछोंवाले देनीसोव की ओर घूम गये और सभी ने उसे घेर लिया।

"प्यारे, देनीसोव!" नताशा चिल्ला उठी और ख़ुशी के कारण सुध-बुध खोते हुए उसकी तरफ़ लपकी, उसका आलिंगन किया तथा उसे चूमा। नताशा की इस हरकत से सभी झेंप गये। देनीसोव के चेहरे पर भी लाली दौड़ गयी, मगर वह मुस्करा दिया और उसने नताशा का हाथ अपने हाथ में लेकर चूमा।

देनीसोव को उसके ठहरने के लिये तैयार किये गये कमरे में पहुंचा दिया गया और रोस्तोव परिवार के बाक़ी सभी सदस्य दीवानखाने में निकोलाई के इर्द-गिर्द जमा हो गये।

बूढ़ी काउंटेस बेटे का हाथ थामे हुए, जिसे वह हर मिनट ही चूमती जाता थीं, उसके पास बैठी थीं। बाक़ी सभी इन दोनों को घेरे हुए निकोलाई की हर गति-विधि, उसके हर शब्द और दृष्टि की ओर ध्यान दे रहे थे तथा उसे उल्लास और प्रेमपूर्ण नज़रों से एकटक देखते जाते थे। भाई और बहनें उसके नज़दीक बैठने के लिये आपस में झगड़ते थे, बहस करते थे और उसके लिये चाय, रूमाल या पाइप लाने के लिये उलझते थे।

रोस्तोव अपने प्रति प्रदर्शित किये जा रहे प्रेम से बहुत ही ख़ुश था। किन्तु उसकी भेंट का पहला क्षण इतना सुखद था कि अब प्राप्त होनेवाली प्रसन्नता उसे कम प्रतीत हो रही थी और वह कुछ और, कुछ और, थोड़ी-सी और प्रसन्नता की प्रत्याशा में था।

अगली सुबह को लम्बे सफ़र के कारण थके हुए ये दोनों दोस्त दस बजे तक सोये रहे।

बग़ल के कमरे में इनकी तलवारें, थैले, झोले, खुले सूटकेस और गन्दे बूट इधर-उधर पड़े थे। एड़ों समेत साफ़ किये हुए बूटों के दो जोड़े कुछ ही देर पहले दीवार के पास रख दिये गये थे। नौकर चिलमचियां, दाढ़ी बनाने के लिये गर्म पानी और ब्रश से ख़ूब अच्छी तरह साफ़ करके इन दोनों के कपड़े ला रहे थे। तम्बाकू और मर्दों के शरीर

की गन्ध आ रही थी।

"अरे ग्रीशा, मेरा पाइप लाओ!" वसीली देनीसोव ने 'र' की जगह 'व' का उच्चारण करते हुए खरखरी-सी आवाज़ में अपने नौकर को पुकारा। "रोस्तोव उठो!"

रोस्तोव ने अपनी चिपकी-सी आंखों को मलते हुए गर्म तकिये से अस्त-व्यस्त बालोंवाला सिर ऊपर उठाया।

"क्या देर हो गयी?"

"हां देर हो गयी, दस बज रहे हैं," नताशा का जवाब सुनायी दिया और बग़ल के कमरे में कलफ़ लगे फ़्रॉकों की सरसराहट तथा लड़कियों की हंसी सुन पड़ी और कुछ-कुछ खुले हुए दरवाज़े में से आसमानी रंग की किसी चीज़, रिबनों, काले बालों और खिले हुए चेहरों की झलक मिली। ये नताशा, सोन्या और पेत्या थे जो यह जानने के लिये आये थे कि उनका भाई जाग गया या नहीं।

"निकोलाई भैया, उठ भी जाओ!" दरवाज़े के पास फिर से नताशा की आवाज़ सुनायी दी।

"अभी!"

इसी वक़्त बग़ल के कमरे में पेत्या को तलवार दिखायी दी, उसने उसे उठा लिया और वही ख़ुशी महसूस करते हुए, जो छोकरे अपने सैनिक बड़े भाई की उपस्थिति में अनुभव करते हैं, तथा यह भूलकर कि बहनों के लिये कपड़े न पहने हुए मर्दों को देखना अशिष्ट है, दरवाज़ा खोल दिया।

"यह तुम्हारी तलवार है?" उसने चिल्लाकर पूछा। सोन्या और नताशा झटपट दरवाज़े के सामने से एक तरफ़ को हट गयीं। देनीसोव ने घबराकर बालों से ढकी हुई अपनी टांगों को कम्बल में छिपा लिया और निकोलाई की ओर ऐसे देखा मानो सहायता करने का अनुरोध कर रहा हो। पेत्या के भीतर आ जाने के बाद दरवाज़ा फिर से बन्द हो गया। दरवाज़े के पीछे से हंसी सुनायी दी।

"निकोलाई भैया, ड्रेसिंग गाउन पहनकर ही यहां आ जाओ," नताशा ने कहा।

"यह तुम्हारी तलवार है?" पेत्या ने पूछा। "या आपकी?" उसने आदरभाव दिखाते हुए काले बालों और बड़ी-बड़ी काली मूंछोंवाले देनीसोव को सम्बोधित किया।

रोस्तोव ने झटपट जूते और ड्रेसिंग गाउन पहना और दूसरे कमरे में चला गया। नताशा ने एड़ सहित एक बूट पहन लिया था और दूसरे में अपना पांव डाल रही थी। सोन्या नाचती-सी चक्कर काट रही थी और अपने फ़्रॉक को गुब्बारे की तरह फुलाकर बैठने की सोच ही रही थी कि निकोलाई इस कमरे में आ गया। दोनों लड़कियां एक जैसी, नयी और आसमानी रंग की पोशाकें पहने थीं – दोनों के चेहरों पर ताज़गी और लाली थी, दोनों बड़ी प्रसन्न थीं। सोन्या भाग गयी, नताशा भाई का हाथ पकड़कर उसे दीवानख़ाने में ले गयी और उनके बीच बातचीत शुरू हो गयी। हज़ारों छोटी-मोटी बातों के बारे में, जिनमें केवल इन दोनों की दिलचस्पी हो सकती थी, वे बड़ी मुश्किल से एक-दूसरे से पूछ और जवाब दे पा रहे थे। नताशा अपने भाई द्वारा कहे जानेवाले और अपने हर शब्द पर भी हंस रही थी। सो भी इसलिये नहीं कि इन शब्दों में हंसने की कोई बात थी, बल्कि इसलिये कि वह हंसी के रूप में प्रकट होनेवाली अपनी ख़ुशी को वश में रखने में असमर्थ थी।

"भई वाह, मज़ा ही आ गया!" नताशा हर बात पर कहती जा रही थी। रोस्तोव ने अनुभव किया कि स्नेह की उष्म रश्मियों के प्रभाव से ही डेढ़ साल के बाद उसकी आत्मा में और उसके चेहरे पर वह बाल-सुलभ मुस्कान प्रकट हुई है जिसे घर से जाने के बाद उसने एक बार भी नहीं जाना था।

"लेकिन सुनो तो," वह बोली, "तुम तो अब पूरी तरह मर्द बन गये हो न? मैं बेहद ख़ुश हूं कि तुम मेरे भाई हो।" नताशा ने उसकी मूंछों को छुआ। "मैं यह जानना चाहती हूं कि तुम मर्द लोग वास्तव में हो कैसे? हमारे ही जैसे? नहीं न?"

"नहीं। सोन्या किसलिये भाग गयी?" रोस्तोव ने पूछा।

"ओह, यह तो अच्छा ख़ासा क़िस्सा है! यह बताओ कि तुम सोन्या से 'तुम' या 'आप' कहकर बात करोगे?"

"जैसे भी बात हो जायेगी, वैसे ही," रोस्तोव ने जवाब दिया।

"कृपया तुम उसे 'आप' ही कहना। मैं तुम्हें बाद में इसका कारण बताऊंगी।"

"मगर क्यों?"

"अच्छा, तो अभी बताती हूं। यह तो तुम जानते ही हो कि सोन्या

मेरी सहेली है, ऐसी सहेली कि उसके लिये मैं अपना हाथ भी जला सकती हूं। यह देखो।" उसने मलमल के फ़ॉक की आस्तीन ऊपर चढ़ा ली और अपनी लम्बी, दुबली-पतली तथा नाजुक बांह पर कोहनी से बहुत ऊपर और कंधे के नीचे (उस जगह पर जो बॉल-नृत्य की पोशाक में भी ढकी रहती है) एक लाल निशान दिखाया।

"मैंने यह प्रमाणित करने के लिये कि मैं उसे कितना अधिक प्यार करती हूं, इस जगह अपनी बांह को जला लिया था। रेखायें खींचने के रूल को आग पर गर्म किया और यहां रख दिया।"

किसी वक़्त पढ़ाई के लिये इस्तेमाल किये जानेवाले इसी कमरे में नरम हत्थोंवाले सोफ़े पर बैठा तथा नताशा की अत्यधिक उत्साह से परिपूर्ण आंखों को देखते हुए रोस्तोव फिर से अपने बचपन के उस पारिवारिक संसार में पहुंच गया जिसका उसके अतिरिक्त और किसी के लिये कोई अर्थ नहीं था, किन्तु जिससे उसे अपने जीवन का मधुरतम सुख मिल रहा था। अपना प्यार जताने के लिये रेखायें खींचने के रूल से हाथ जलाना भी उसे व्यर्थ प्रतीत नहीं हुआ। वह इस भावना को समझ रहा था और इससे उसे कोई हैरानी नहीं हुई।

"तो बस, इतनी ही बात है? और कुछ नहीं?" उसने पूछा।

"हम बहुत पक्की, बहुत ही पक्की सहेलियां हैं! रूल से हाथ जलाना – यह तो मामूली-सी बात है। लेकिन हमारी दोस्ती तो ज़िन्दगी भर की दोस्ती है। सोन्या तो जिसे प्यार करती है, हमेशा के लिये। लेकिन यह चीज़ मेरी समझ से दूर की बात है। मैं तो फ़ौरन भूल जाती हूं।"

"तो तुम कहना क्या चाहती थीं?"

"हां, यह कि वह मुझे और तुम्हें इसी तरह प्यार करती है।" नताशा के चेहरे पर अचानक लाली दौड़ गयी। "तुम्हें याद है न कि तुम्हारे जाने के पहले ... तो सोन्या कहती है कि तुम वह सब कुछ भूल जाओ ... उसका कहना है कि वह तो तुम्हें हमेशा ही प्यार करती रहेगी और तुम पूरी तरह से आज़ाद हो। सच है न कि यह तो बहुत बढ़िया बात है, बड़ी उदात्तता भी है! क्यों, है न? बड़ी उदात्तता है न?" नताशा ने इतनी गम्भीरता और ऐसी विह्वलता से पूछा कि स्पष्ट दिखायी दे रहा था कि अब वह जो कुछ कह रही थी, उसी को उसने पहले आंसू बहाते हुए कहा था। रोस्तोव सोच में डूब गया।

"मैं कभी भी अपना वादा नहीं तोड़ता हूं," उसने कहा। "इसके अलावा सोन्या इतनी प्यारी है कि कोई उल्लू ही ऐसी ख़ुशी से इन्कार करेगा।"

"नहीं, नहीं," नताशा चिल्ला उठी। "इसके बारे में हम दोनों की बातचीत हो चुकी है। हमें मालूम था कि तुम ऐसा ही कहोगे। लेकिन यह ठीक नहीं है, क्योंकि, बात यह है कि अगर तुम ऐसा कहते हो, अपने को वचनबद्ध अनुभव करते हो तो ऐसा प्रतीत होगा कि उसने जान-बूझकर ही यह कहा है। इसका मतलब तो यह होगा कि तुम मजबूरी से उसके साथ शादी कर रहे हो और यह बिल्कुल ठीक नहीं होगा।"

रोस्तोव ने महसूस किया कि इस मामले पर इन दोनों ने अच्छी तरह से सोच-विचार कर लिया है। सोन्या के सौन्दर्य ने उसे पिछले दिन ही चकित कर दिया था। आज तो ज़रा-सी झलक मिलने पर वह उसे और भी ज़्यादा ख़ूबसूरत लगी थी। वह बहुत ही प्यारी षोडशी थी, स्पष्टतः उसे बेहद प्यार करती थी (इसके बारे में उसे क्षण भर को भी सन्देह नहीं हुआ था)। "वह अब उसे क्यों प्यार न करे, क्यों उससे शादी न कर ले," रोस्तोव सोच रहा था, "लेकिन इतनी जल्दी नहीं... अभी तो इतनी अधिक दूसरी ख़ुशियां और दूसरी दिलचस्पियां हैं! हां, बहुत अच्छे नतीजे पर पहुंची हैं ये दोनों," उसने सोचा, "मुझे आज़ाद रहना चाहिये।"

"ख़ैर, ठीक है," उसने कहा, "बाद में इसकी चर्चा करेंगे। ओह, कितनी ख़ुशी हो रही है मुझे तुम्हारे साथ होने पर!" उसने इतना और कह दिया। "अरे हां, यह तो बताओ कि बोरीस को तो तुम अभी भी चाहती हो न?" निकोलाई ने पूछा।

"यह बेतुकी बात की है तुमने!" नताशा हंसते हुए चिल्ला उठी। "मैं तो न उसके और न किसी दूसरे के बारे में सोचती हूं और न सोचना ही चाहती हूं।"

"यह भी ख़ूब रही! तो तुम्हारा क्या करने का इरादा है?"

"मेरा?" नताशा ने प्रत्युत्तर में पूछा और उसका चेहरा ख़ुशी से चमक उठा। "तुमने डूपोर को देखा है?"

"नहीं।"

"तुमने प्रसिद्ध नर्त्तक डूपोर को नहीं देखा? तब तुम मेरी बात

नही समझ पाओगे। मैं तो यह करने का इरादा रखती हूं।" इतना कहकर उसने अपने हाथों को गोलाकार बनाते हुए स्कर्ट को नर्त्तकियों की भांति थाम लिया, कुछ क़दम पीछे भागी, मुड़ी, फिरकी की तरह घूमी, उसने अपने एक पांव को दूसरे पांव के साथ टकराया और पंजों पर कुछ क़दम चली।

"मैं पंजों पर खड़ी हूं न? देखते हो!" उसने कहा, मगर पंजों पर खड़ी न रह सकी। "तो यह इरादा है मेरा! कभी किसी से शादी नहीं करूंगी, नर्त्तकी बनूंगी। लेकिन तुम किसी से कहना नहीं।"

रोस्तोव ने इतने ज़ोर और ऐसी खुशी से ठहाका लगाया कि अपने कमरे में बैठे देनीसोव को उससे ईर्ष्या अनुभव हुई। नताशा भी अपने को वश में न रख सकी और निकोलाई के साथ ही खिलखिलाकर हंस पड़ी। "कहो, बढ़िया इरादा है न?" वह कहती जा रही थी।

"हां। तो तुम बोरीस से शादी करने का ख़्याल छोड़ चुकी हो?"

नताशा तमतमा उठी।

"मैं किसी से भी शादी नहीं करना चाहती। बोरीस से मुलाक़ात होने पर मैं उससे भी यही कह दूंगी।"

"सच!" रोस्तोव कह उठा।

"सच, ये सब बेकार की बातें हैं," नताशा बतियाती गयी। "देनीसोव अच्छा आदमी है?" उसने पूछा।

"बहुत अच्छा।"

"ख़ैर, तुम जाकर कपड़े पहनो। डरावना तो नहीं, वह देनीसोव?"

"डरावना किसलिये होगा?" निकोलाई ने पूछा। "नहीं, बहुत ही अच्छा आदमी है वास्का तो।"

"तुम उसे वास्का कहकर बुलाते हो? बड़ी अजीब बात है। तो बहुत ही अच्छा आदमी है वह?"

"हां, बहुत अच्छा।"

"ख़ैर, तुम जल्दी से नाश्ता करने आ जाओ। सब एकसाथ नाश्ता करेंगे।"

और नताशा पंजों पर खड़ी हो गयी तथा बैले-नर्त्तकी की भांति तैरती-सी, मगर ऐसे मुस्कराती हुई कमरे से बाहर चली गयी जैसे केवल पन्द्रह वर्षीया लड़कियां मुस्कराती हैं। दीवानख़ाने में सोन्या से

भेंट होने पर रोस्तोव लज्जारुण हो गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि सोन्या के साथ कैसे पेश आये। मिलन के पहले क्षण की ख़ुशी में पिछले दिन उन्होंने एक-दूसरे को चूमा था, किन्तु आज उन्हें ऐसा करना अनुचित लग रहा था। उसने अनुभव किया कि मां और बहनें, सभी लोग उसकी तरफ़ प्रश्नसूचक दृष्टि से देख रहे हैं और यह जानने की प्रतीक्षा में हैं कि वह सोन्या के साथ किस तरह का व्यवहार करता है। रोस्तोव ने उसका हाथ चूमा और उसे "आप" कहकर सम्बोधित किया। किन्तु नज़रें मिलने पर उन्होंने आंखों ही आंखों में एक दूसरे को "तुम" कहा और प्यार से चूमा। सोन्या ने अपनी दृष्टि से उससे इस बात के लिये क्षमा मांगी कि उसने नताशा के ज़रिये उसे उसके वादे की याद दिलाने की धृष्टता की थी और उसके प्यार के लिये धन्यवाद दिया। रोस्तोव की नज़र ने अपने को आज़ाद रखने के उसके प्रस्ताव के लिये उसके प्रति आभार प्रकट किया और यह कहा कि हर हालत में वह उसे प्यार करता रहेगा, क्योंकि उसे प्यार न करना असम्भव है।

"लेकिन यह कितनी अजीब बात है," वेरा ने उस समय कहा, जब सभी ख़ामोश थे, "कि सोन्या और निकोलाई अब एक-दूसरे को 'आप' कहते हैं और अजनबियों की भांति एक-दूसरे से मिले हैं।" वेरा की अन्य सभी टीका-टिप्पणियों की भांति यह भी बिल्कुल न्यायसंगत थी। किन्तु उसकी अधिकांश अन्य टिप्पणियों की भांति इस समय भी सभी को बड़ा अटपटा-सा प्रतीत हुआ और केवल सोन्या, निकोलाई और नताशा ही नहीं, बल्कि बूढ़ी काउंटेस भी, जिन्हें इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि सोन्या के प्रति उनके बेटे का प्यार उसके कोई धनी पत्नी पाने में बाधक हो सकता है, किसी छोकरी की भांति झेंप से लाल हो गयी। देनीसोव अपनी नयी वर्दी पहने, पोमेड और इत्र-फुलेल से महकता हुआ ऐसा बांका-छैला बनकर ड्राइंगरूम में आया जैसे युद्ध-क्षेत्र में जाता था और सभी महिलाओं के साथ ऐसे सौजन्य, ऐसी शिष्टता से पेश आया जिसकी रोस्तोव ने कभी आशा नहीं की थी और वह उसका ऐसा अन्दाज़ देखकर दंग रह गया।

## २

सेना के बाद मास्को में अपने घर लौटने पर एक बहुत ही अच्छे, वीर और प्यारे बेटे के रूप में निकोलाई रोस्तोव का स्वागत हुआ। रिश्तेदारों के लिये वह मधुर, प्यारा और शिष्ट नौजवान था और परिचितों की दृष्टि में एक सुन्दर हुस्सार-लेफ़्टिनेंट, बढ़िया नर्त्तक और मास्को की लड़कियों के लिये एक सर्वश्रेष्ठ वर था।

रोस्तोव परिवारवालों की सारे मास्को में ही जान-पहचान थी। बूढ़े काउंट के पास इस वर्ष ख़ूब पैसा था, क्योंकि उनकी सारी जागीरें फिर से गिरवी रख दी गयी थीं। इसलिये निकोलाई ने अपने लिये तेज़ दुलकी चालवाला घोड़ा, ऐसी फ़ैशनदार बिरजिस, जैसी मास्को में किसी के पास नहीं थी और चांदी के एड़ों तथा नुकीले पंजोंवाले नवीनतम फ़ैशन के बूट ख़रीद लिये थे और वह बड़े मज़े से अपना वक़्त बिताता था। कुछ समय में अपने को जीवन की पुरानी परिस्थितियों के अनुरूप बनाने के बाद निकोलाई को घर लौटना बहुत अच्छा लग रहा था। उसे लगता था कि वह काफ़ी बड़ा हो गया है, लगभग मर्द बन गया है। धर्म-शिक्षा की परीक्षा में असफल रहने के कारण कभी अनुभूत निराशा, घोड़ागाड़ी का भाड़ा चुकाने की ख़ातिर नौकर गव्रीला से उधार लिये गये पैसे और चोरी-छिपे सोन्या का चुम्बन – इन सभी बातों को वह बचकाना हरकतों के रूप में याद करता था जिनसे अब वह बहुत दूर जा चुका था। अब वह फ़र से सजी हुस्सार-लेफ़्टिनेंट की रुपहली जाकेट पहनता था, वीरता के लिये दिया जानेवाला सेंट जार्ज का क्रॉस लगाता था और घुड़दौड़ के प्रसिद्ध, अधेड़ और प्रतिष्ठित लोगों के साथ घुड़दौड़ के लिये अपने घोड़े को तैयार कर रहा था। छायादार सड़क पर उसकी एक परिचित महिला भी रहती थी जिसके यहां वह शामों को जाता था। अरख़ारोव परिवार के यहां उसने माज़ूर्का नाच का नेतृत्व किया, फ़ील्ड-मार्शल कामेन्स्की के साथ युद्ध की चर्चा की थी, वह "अंग्रेज़ी क्लब" में जाता था और चालीस साल के एक कर्नल को, जिसके साथ देनीसोव ने उसका परिचय करवाया था, वह बड़ी बेतकल्लुफ़ी से "तुम" कहता था।

सम्राट के प्रति उसका अनुराग मास्को में कुछ कम हो गया था क्योंकि इस अवधि में उसे उन्हें देखने का मौक़ा नहीं मिला था। फिर

भी वह अक्सर सम्राट की चर्चा करता, उनके प्रति अपने प्यार का उल्लेख करता, यह अनुभव कराता कि वह पूरी तरह से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति नहीं देता है, कि सम्राट के प्रति उसकी भावनाओं में कुछ ऐसा है जिसे हर कोई नहीं समझ सकता और पूरे उत्साह से सम्राट अलेक्सान्द्र पाव्लोविच के प्रति उस समय व्याप्त श्रद्धा भाव का समर्थन करता जिन्हें उन दिनों मास्को में "साकार देवदूत" कहा जाता था।

सेना में वापस जाने के पहले मास्को में बिताये गये इस थोड़े समय में रोस्तोव सोन्या के निकट आने के बजाय, उलटे उससे दूर ही हो गया। सोन्या बहुत सुन्दर, बड़ी प्यारी थी और स्पष्टतः उसकी प्रेम-दीवानी थी। लेकिन रोस्तोव अपनी जवानी के उस दौर में से गुज़र रहा था, जब ऐसा लगता है कि इतने अधिक दूसरे काम करने को हैं और इसके लिये उसके पास **वक़्त ही नहीं है**, जब जवान आदमी बन्धन से घबराता है – अपनी आज़ादी को बनाये रखना चाहता है जिसकी उसे और बहुत-सी चीज़ों के लिये ज़रूरत होती है। इस बार के अपने मास्कोवास के समय जब वह सोन्या के बारे में सोचता तो अपने आपसे कहता: "अरे, अभी तो और बहुत-सी ऐसी लड़कियां मिलेंगी, ऐसी अनेक तो कहीं और भी हैं जिनसे अभी तक मेरी भेंट नहीं हुई। जब चाहूंगा तो प्यार-मुहब्बत की भी फ़िक्र कर लूंगा, मगर अभी तो इसके लिये फ़ुरसत नहीं।" इसके अलावा औरतों की संगत उसे पुरुष की मान-मर्यादा के लिये अपमानजनक भी प्रतीत होती थी। वह यह ज़ाहिर करता हुआ बॉल-नृत्यों में और औरतों के क़रीब जाता कि मन मारकर ऐसा कर रहा है। घुड़दौड़ें, अंग्रेज़ी क्लब, देनीसोव के साथ खूब पीना-पिलाना और एक **ख़ास** जगह पर जाना – यह सब तो दूसरी ही बात थी – यह सब जवान हुस्सार को शोभा देता था।

मार्च के शुरू में बुज़ुर्ग काउंट इल्या अन्द्रेयेविच रोस्तोव अंग्रेज़ी क्लब में प्रिंस बग्रातिओन के सम्मान में डिनर का प्रबन्ध करने में बहुत व्यस्त थे।

ड्रेसिंग गाउन पहने और हॉल में इधर-उधर आते-जाते हुए काउंट क्लब के मैनेजर और बड़े बावर्ची, मशहूर फ़ेओक्तीस्त को बग्रातिओन के सम्मान में दिये जानेवाले डिनर के लिये शतावर, ताज़ा खीरों, जंगली स्ट्राबेरियों, बढ़िया मांस और मछलियों के बारे में हिदायतें

दे रहे थे। काउंट इस अंग्रेज़ी क्लब की स्थापना के दिन से ही इसके सदस्य और अध्यक्ष रहे थे। क्लब की ओर से बग्रातिओन के सम्मान में डिनर की व्यवस्था करने का दायित्व इसीलिये उन्हें दिया गया था कि शायद ही कोई दूसरा इतने बढ़िया और अच्छे ढंग से ऐसी दावत का प्रबन्ध करने में समर्थ था, ख़ास तौर पर इसीलिये कि शायद ही कोई ज़रूरत पड़ने पर दावत की कामयाबी की ख़ातिर उसमें अपने पैसे लगा सकता था या लगाना चाहता था। क्लब का बड़ा बावर्ची और मैनेजर खिले चेहरों से काउंट की हिदायतों को सुन रहे थे, क्योंकि जानते थे कि हज़ारों रूबलों के ख़र्चवाले इस डिनर में जितना अधिक नफ़ा काउंट रोस्तोव की बदौलत हासिल करना मुमकिन है, उतना और किसी की बदौलत सम्भव नहीं।

"तो देखो, कछुए के सूप में घोंघे डाल देना, समझ गये!"

"इसका मतलब यह हुआ कि ठण्डी डिशें तीन होंगी?" बड़े बावर्ची ने पूछा।

काउंट सोचने लगे।

"तीन से कम में काम नहीं चलेगा... मयोनेज़ – पहली डिश," काउंट ने एक उंगली मोड़ते हुए कहा...

"तो आप बड़ी स्टेरलेट मछलियां ख़रीदने का भी हुक्म देते हैं?" मैनेजर ने पूछा।

"दूसरा कोई चारा नहीं, अगर वे क़ीमत कम नहीं करते तो ख़रीदनी ही पड़ेंगी। हे भगवान, मैं तो भूल ही गया था। एक और डिश बढ़ानी चाहिये खाने की मेज़ पर। हाय, राम!" उन्होंने सिर थाम लिया। "फूलोंवाले गमले कौन लायेगा? मीत्या! ओ, मीत्या! तुम घोड़ागाड़ी में जल्दी से मास्को के बाहर हमारी जागीर पर जाओ, हमारे माली मक्सिम से कहो कि फ़ौरन भू-दासों को काम में जुटा दे," काउंट ने अपने पुकारने पर यहां आनेवाले कारिन्दे मीत्या से कहा, "माली से कह दो कि गर्म पौधाघर के सभी गमले नमदे में लिपटे हुए यहां पहुंचने चाहियें। शुक्रवार तक दो सौ गमले यहां होने चाहियें।"

इसी तरह की बहुत-सी अन्य हिदायतें देने के बाद काउंट कुछ आराम करने के लिये अपनी "प्यारी काउंटेस" के पास जाने को कमरे से बाहर निकले कि उन्हें कुछ और ज़रूरी बातें याद आ गयीं, वह लौटे, उन्होंने बड़े बावर्ची तथा मैनेजर को बुलवा लिया और फिर से

आदेश-अनुदेश देने लगे। दरवाज़े पर मर्दाना क़दमों की हल्की आहट और एड़ों की झनक सुनायी दी तथा काली मूंछोंवाली जवान काउंट भीतर आया। मास्को के सुख-चैन तथा मज़े के जीवन के फलस्वरूप वह स्पष्टतः अधिक सुन्दर हो गया था और उसके गालों पर गुलाब खिले हुए थे।

"ओह, मेरे अज़ीज़! मेरा तो दिमाग़ ही चकरा गया है," बूढ़े काउंट ने मानो झेंपते हुए मुस्कराकर बेटे से कहा। "तुम ही मेरी कुछ मदद करो! अभी तो कुछ गानेवालों का भी प्रबन्ध करना चाहिये। आर्केस्ट्रा का इन्तज़ाम तो है, लेकिन क्या कुछ जिप्सियों को बुलाया जाये? तुम्हारे फ़ौजी लोगों को तो वे अच्छे लगते हैं।"

"पापा, सच कहता हूं कि मेरे ख़्याल में तो शेनग्राबेन की लड़ाई की तैयारी करते वक़्त प्रिंस बग्रातिओन ने इससे कहीं कम दौड़-धूप की होगी जितनी आप इस समय कर रहे हैं," बेटे ने मुस्कराते हुए कहा।

बूढ़े काउंट ने ऐसे ज़ाहिर किया कि बेटे की बात उन्हें बुरी लगी है।

"हां, हां, तुम्हारे लिये बातें करना बड़ा आसान है, ख़ुद करके दिखाओ तो!"

और काउंट ने बड़े बावर्ची को सम्बोधित किया जो चेहरे पर समझदारी और आदर का भाव लिये हुए बहुत ध्यान और स्नेह से पिता तथा बेटे की ओर देख रहा था।

"देखते हो, फ़ेओक्तीस्त, कैसे जवान लोग हैं हमारे?" वह बोले। "हम बूढ़ों का मज़ाक़ उड़ाते हैं।"

"हुज़ूर, इन्हें तो बढ़िया खाने-पीने से मतलब है लेकिन इस सबका प्रबन्ध कैसे किया जाये, यह सब **पेश** किस ढंग से **किया जाये**, इन्हें इससे क्या लेना-देना है।"

"बिल्कुल ठीक, बिल्कुल ठीक!" काउंट चिल्ला उठे और ख़ुश-मिज़ाजी से बेटे के दोनों हाथ पकड़कर ऊंची आवाज़ में कह उठे: "तो तुम आ गये मेरे क़ाबू! अभी दो घोड़ोंवाली स्लेज लेकर बेज़ूख़ोव के पास जाओ और उससे कहो कि मैंने, इल्या अन्द्रेयेविच ने तुम्हें उसके यहां से स्ट्राबेरियां और ताज़ा अनानास लाने को भेजा है। किसी दूसरे से ये नहीं मिलेंगे। अगर वह ख़ुद घर पर न हो तो प्रिंसेसों से इसका अनुरोध करना। इसके बाद वहां से रज़गुल्याय ( मनोरंजन )

पार्क की तरफ़ चले जाना – हमारा कोचवान इपातका उसका रास्ता जानता है – वहां इल्यूश्का जिप्सी को ढूंढ़ लेना। यह वही जिप्सी है जो काउंट ओर्लोव के यहां सफ़ेद, छोटा कोट पहने हुए नाचा था। याद है न? उसे यहां, मेरे पास ले आना।"

"जिप्सी लड़कियों के साथ?" निकोलाई ने हंसते हुए पूछा।

"बस, मज़ाक़ रहने दो!.."

इसी समय किसी तरह की आहट के बिना, चेहरे पर काम-काजी और चिन्ता तथा साथ ही ईसाई के अनुरूप नम्रता का भाव लिये, जो सदा ही उसके मुख पर बना रहता था, आन्ना मिख़ाइलोव्ना कमरे में आई। इस चीज़ के बावजूद कि लगभग हर दिन ही कुछ ऐसा होता कि काउंट की जब आन्ना मिख़ाइलोव्ना से भेंट होती तो वह ड्रेसिंग गाउन पहने होते, फिर भी वह हर बार झेंप जाते और इस बात के लिये क्षमा मांगते कि सूट नहीं पहने हैं।

"कोई बात नहीं, प्यारे काउंट," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने नम्रता से आंखें मूंदते हुए कहा। "बेज़ूख़ोव के यहां मैं चली जाती हूं," वह बोली। "जवान बेज़ूख़ोव आ गया है और, काउंट, अब हम उसके तापघर से सभी कुछ हासिल कर लेंगे। मुझे तो वैसे भी उससे मिलना था। उसने बोरीस का पत्र मुझे भेजा है। भगवान की बड़ी कृपा है कि बोरीस अब स्टॉफ़ के लोगों में शामिल हो गया है।"

काउंट को इस बात की ख़ुशी हुई कि आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने उनके द्वारा सौंपे गये काम का एक भाग अपने ऊपर ले लिया था और उन्होंने उसके लिये छोटी बग्घी जोतने का आदेश दिया।

"आप बेज़ूख़ोव से कह दीजिये कि वह डिनर में आये। मैं सूची में उसका नाम लिख रहा हूं। वह क्या पत्नी के साथ यहां है?" काउंट ने पूछा।

आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने आंखें ऊपर को घुमायी और उसके चेहरे पर गहरे दुख की छाया-सी आ गयी...

"ओह, मेरे प्यारे, वह बड़ा बदक़िस्मत आदमी है," उसने कहा। "हमने जो कुछ सुना है, अगर वह सही है तो बहुत बुरी बात हो गयी है। जब हमने उसके सुख-सौभाग्य पर ख़ुशी मनायी थी तो क्या हमने ऐसा सोचा भी था! और इतना उदात्त, ऐसा देवतातुल्य है यह जवान बेज़ूख़ोव! हां, मुझे सच्चे दिल से उसके लिये अफ़सोस है और

मैं अपने बस भर उसे तसल्ली देने की कोशिश करूंगी।"

"ऐसी क्या बात हो गयी?" रोस्तोव बाप-बेटे ने एकसाथ पूछा।

आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने गहरी सांस ली।

"सुनने में आया है कि मरीया इवानोव्ना के बेटे दोलोख़ोव ने उसकी बीवी को पूरी तरह बदनाम कर दिया है," उसने रहस्यपूर्ण ढंग से फुसफुसाते हुए कहा। "बेज़ूख़ोव ने उसे सहारा दिया, पीटर्सबर्ग में अपने घर रहने के लिये आमन्त्रित किया और यह नतीजा निकला... वह यहां आई है और यह सिरफिरा भी उसके पीछे-पीछे यहां आ गया है," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने प्येर के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करने की इच्छा से कहा, मगर अपने कहने के अन्दाज़ और हल्की-सी मुस्कान से अनजाने ही सिरफिरे के प्रति, जैसा कि उसने दोलोख़ोव के बारे में कहा था, सहानुभूति प्रकट कर दी। "लोगों का कहना है कि दुख के मारे प्येर का बहुत बुरा हाल है।"

"फिर भी आप उससे कह दीजिये कि वह क्लब में ज़रूर आये। सब ठीक हो जायेगा। ऐसी बढ़िया दावत होगी कि कुछ न पूछिये।"

अगले दिन यानी ३ मार्च को दिन का एक बजने के बाद अंग्रेज़ी क्लब के ढाई सौ सदस्य और पचास मेहमान अपने प्यारे अतिथि, आस्ट्रियायी युद्ध-अभियान के हीरो, प्रिंस बग्रातिओन की लंच के लिये बाट जोह रहे थे। आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई के बारे में शुरू में मिलने-वाली सूचनाओं से मास्को सकते में आकर रह गया था। उस वक़्त रूसी अपनी जीतों के ऐसे आदी हो चुके थे कि हार का समाचार मिलने पर कुछ ने तो इसपर विश्वास ही नहीं किया और दूसरों ने ऐसी अजीब बात के लिये कुछ असाधारण कारणों के रूप में स्पष्टीकरण ढूंढ़ने का प्रयास किया। अंग्रेज़ी क्लब में, जहां विश्वसनीय सूचनायें पाने और महत्त्व रखनेवाले सभी जाने-माने लोग जमा होते थे, जब दिसम्बर महीने में बुरी ख़बरें आने लगीं, तो वहां युद्ध और अन्तिम लड़ाई के बारे में किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा मानो सभी ने मौन साधे रहने का षड्यन्त्र रच लिया हो। बातचीत का रुख़ तय करनेवाले लोग, जैसे कि काउंट रस्तोपचिन, प्रिंस यूरी व्लादीमिरोविच दोल्गो-रुकी, वल्यूयेव, काउंट मार्कोव, प्रिंस व्याज़ेम्स्की इन दिनों क्लब में आये ही नहीं, बल्कि अपने घरों में, अंतरंग मित्र-मण्डलियों में ही मिलते रहे और मास्कोवासी, जो दूसरों की बातें ही दोहराते थे (इल्या

अन्द्रेयेविच गेम्नोव भी इन्ही में शामिल थे ) कुछ ममय के लिये युद्ध के बारे में मुस्पष्ट विचारों और अपने मार्ग-दर्शकों के बिना रह गये। मास्कोवाले महमूम करते थे कि कहीं कोई गड़बड़ ज़रूर है और चूंकि इन बुरी ख़बरों की तह में जाना मुश्किल है, इसलिये चुप रहना ही बेहतर है। किन्तु कुछ ममय के बाद क्लब का जनमत बनानेवाले ये महत्त्वपूर्ण लोग बन्द कमरे में विचार-विमर्श करके बाहर आनेवाले जूरी के सदस्यों की भांति प्रकट हुए और तब सभी लोग स्पष्ट और सुनिश्चित विचार व्यक्त करने लगे। इम अविश्वसनीय, अनसुनी और अनहोनी घटना के लिये कि रूसियों को मुंह की खानी पड़ी है, कारण पेश कर दिये गये, सब कुछ स्पष्ट हो गया और मास्को के कोने-कोने में इन्हीं बातों को दोहराया जाने लगा। रूसियों की हार के ये कारण बताये जाते थे – आस्ट्रियावालों का विश्वासघात, सेनाओं के लिये रसद का बुरा प्रबन्ध, पोलैण्डी प्रजेबिशेव्स्की और फ़्रांसीसी लांजेरोन की ग़द्दारी, कुतूज़ोव की अयोग्यता और (यह कानाफूसी करते हुए कहा जाता था) सम्राट की जवानी की उम्र तथा अनुभवहीनता जिनके फलस्वरूप उन्होंने घटिया और तुच्छ लोगों पर विश्वास किया। किन्तु सेनायें, रूसी सेनायें बेजोड़ थीं और उन्होंने बहादुरी के अद्भुत कारनामे किये। सैनिकों, अफ़सरों और जनरलों – सभी ने बड़ी वीरता दिखायी। किन्तु वीरों का सिरमौर था प्रिंस बग्रातिओन जिसने शेनग्राबेन की लड़ाई और आउस्टेरलिट्ज़ से पीछे हटते वक़्त बड़ा नाम कमाया, जहां सिर्फ़ वही एक व्यवस्थित ढंग से अपनी सेना को पीछे ले जाता और दिन भर अपने से दुगनी शक्तिवाले शत्रु को मुंहतोड़ जवाब देता रहा था। हीरो के रूप में बग्रातिओन के प्रति मास्को में सम्मान प्रकट करने के निर्णय में एक अन्य कारण ने भी योग दिया। वह कारण यह था कि मास्को में उमका किसी से कोई सम्बन्ध, रिश्ता-नाता नहीं था और यहां वह एकदम अजनबी और पराया व्यक्ति था। उसके रूप में किमी भी प्रकार के ऊंचे सम्पर्कों-सम्बन्धों तथा षड्यन्त्रों से वास्ता न रखनेवाले वीर और साधारण रूसी सैनिक का सम्मान किया जा रहा था और जो इतालवी युद्ध-अभियान की स्मृतियों के आधार पर अभी तक सुवोरोव के नाम से जुड़ा हुआ था। इसके अतिरिक्त बग्रातिओन का सम्मान कुतूज़ोव के प्रति अरुचि और नापसन्दगी ज़ाहिर करने का भी एक मवमे बढ़िया उपाय था।

"अगर बग्रातिओन न होता तो किसी को उसकी कल्पना करनी पड़ती," हंसी-मज़ाक़ करनेवाले शिनशिन ने वालटेर के शब्दों की नक़ल करते हुए कहा। कुतूज़ोव की कोई भी चर्चा नहीं करता था, कुछ खुसर-फुसर करते हुए उन्हें कोसते थे, उन्हें दरबारी दुमछल्ला और खूसट लम्पट कहते थे।

सारे मास्को में प्रिंस दोल्गोरूकोव के ये शब्द दोहराये जाते थे कि "अगर गोंद से वास्ता रखोगे तो कभी न कभी उसके साथ चिपककर भी रह जाओगे," और इस तरह अपनी जीतों की स्मृतियों से इस हार के लिये सान्त्वना प्राप्त की जाती थी। रस्तोपचिन के इन शब्दों को भी दोहराया जाता था कि फ़्रांसीसी सैनिकों को जोशीले वाक्यों द्वारा लड़ाई के लिये प्रेरित करने की ज़रूरत होती है, जर्मनों को तर्कसंगत ढंग से यह विश्वास दिलाना ज़रूरी होता है कि पीछे भागने की तुलना में आगे बढ़ना कम ख़तरनाक है, लेकिन रूसी सैनिकों को क़ाबू में रखना और यही कहना होता है – ज़रा धीरे! सभी जगहों पर आउस्टे-रलिट्ज़ की लड़ाई में हमारे सैनिकों और अफ़सरों की बहादुरी के जहां-तहां हुए कारनामों के नये-नये क़िस्से सुनने को मिलते थे। किसी के बारे में यह कहा जाता कि उसने झण्डे को बचाया, दूसरे ने पांच फ़्रांसीसी मार डाले, तीसरे ने अकेले ही पांच तोपों में गोले भरे। बेर्ग को न जाननेवाले लोग उसकी भी चर्चा करते थे, यह कहते थे कि जब उसका दायां हाथ ज़ख़्मी हो गया तो वह बायें हाथ में खड्ग लेकर आगे बढ़ा। बोल्कोन्स्की के बारे में कोई कुछ नहीं कहता था और केवल उसे अच्छी तरह जाननेवाले लोग ही इस बात का अफ़सोस ज़ाहिर करते थे कि गर्भवती पत्नी को अपने सनकी बाप के यहां छोड़कर वह बहुत जल्दी इस दुनिया से कूच कर गया।

## ३

३ मार्च को अंग्रेज़ी क्लब के सभी कमरे लोगों की बातचीत से गूंज रहे थे और वसन्त के दिनों में मधुमक्खियों की उड़ान की भांति इस क्लब के सभी सदस्य और उनके मेहमान आगे-पीछे आ-जा रहे थे, बैठते और खड़े होते थे, आपस में मिलते-जुलते और अलग होते

थे। इनमें से कुछ वर्दियां और फ़ॉक-कोट पहने थे, कुछ बालों में पाउडर लगाये तथा रूसी ढंग के कोट डाटे थे। सभी दरवाज़ों पर वर्दियां, लम्बी जुराबें और बकलसवाले जूते पहने तथा बालों में पाउडर लगाये नौकर खड़े थे, मेहमानों और सदस्यों की हर गति-विधि पर नज़र टिकाये थे ताकि मौक़ा मिलते ही झटपट अपनी सेवा पेश करें। क्लब में उपस्थित अधिकतर लोग चौड़े और आत्मविश्वासपूर्ण चेहरों, मोटी-मोटी उंगलियों तथा दृढ़ गति-विधियों और आवाज़ोंवाले सम्मानित बुज़ुर्ग थे। इस ढंग के क्लब-सदस्य और मेहमान अपनी सुपरिचित और अभ्यस्त जगहों पर बैठते थे तथा सुपरिचित और अपने लिये अभ्यस्त मण्डलियों में घुलते-मिलते थे। उपस्थित लोगों का बहुत ही छोटा भाग संयोग से आनेवाले मेहमानों का था जिनमें मुख्यतः जवान लोग थे। देनीसोव, रोस्तोव और दोलोख़ोव, जो फिर से सेम्योनोव्स्की रेजिमेंट में अफ़सर हो गया था, इनमें शामिल थे। जवान लोगों, विशेषतः जवान फ़ौजी अफ़सरों के चेहरों पर बूढ़ों के प्रति तिरस्कारपूर्ण आदर का वह भाव झलक रहा था जो बड़ी पीढ़ी को यह कहता प्रतीत होता है: "आपका आदर और सम्मान करने को तो हम तैयार हैं, मगर याद रखिये कि भविष्य हमारा है।"

क्लब के पुराने सदस्य के रूप में नेस्वीत्स्की भी यहां था। बीवी के कहने पर बाल बढ़ा लेने और चश्मा उतार देनेवाला प्येर भी बहुत ही फ़ैशनदार कपड़े पहने, किन्तु उदास और मुरझाया-सा चेहरा लिये कमरों में आ-जा रहा था। अन्य सभी जगहों की भांति यहां भी उसकी दौलत के सामने सिर झुकानेवाले लोग उसे घेरे थे और वह तिरस्कार-पूर्ण अवहेलना तथा लापरवाही दिखाते हुए, जो उसकी आदत बन गयी थीं, बड़ी शान से उनके साथ पेश आता था।

उम्र के लिहाज़ से प्येर को जवान लोगों के बीच होना चाहिये था, मगर दौलत और असर-रसूख़ के मुताबिक़ वह बुज़ुर्ग तथा सम्मानित मेहमानों की मण्डली में आता था। इसलिये वह कभी तो जवान लोगों के बीच चला जाता और कभी बुज़ुर्गों के बीच। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बुज़ुर्ग मण्डलियों के केन्द्र-बिन्दु बने हुए थे। अपरिचित लोग भी इन प्रसिद्ध बुज़ुर्गों की बातें सुनने के लिये इन मण्डलियों के पास आ खड़े होते थे। काउंट रस्तोपचिन, वलूयेव और नारीशकिन को बहुत अधिक लोग घेरे हुए थे। रस्तोपचिन यह बता रहा था कि भागते हुए आस्ट्रि-

यायी सैनिकों ने कैसे रूसियों को रौंद डाला था और किस तरह रूसियों को संगीनों के बल पर भगोड़ों के बीच से अपना रास्ता बनाना पड़ा था।

वलूयेव एक रहस्य के रूप में यह चर्चा कर रहा था कि उवारोव को पीटर्सबर्ग से इसलिये मास्को भेजा गया था कि वह आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई के बारे में मास्कोवालों का मत जान सके।

तीसरी मण्डली में नारीशकिन आस्ट्रियायी सैनिक परिषद की उस बैठक का उल्लेख कर रहा था जिसमें सुवोरोव ने आस्ट्रियायी जनरलों की बेवक़ूफ़ी की बातों के जवाब में मुर्ग़े की तरह बांग दी थी। यहीं खड़े हुए शिनशिन ने यह कहकर मज़ाक़ करना चाहा कि कुतूज़ोव मुर्ग़े की तरह बांग देने की इस सीधी-सादी कला को भी सुवोरोव से नहीं सीख सके। किन्तु बुज़ुर्गों ने इस मसखरे की ओर कड़ाई से देखा और इस तरह उसे यह महसूस करवा दिया कि यहां और आज के दिन कुतूज़ोव की ऐसे चर्चा करना अशिष्टता है।

नर्म गमबूट पहने काउंट इल्या अन्द्रेयेविच रोस्तोव डाइनिंग हॉल से जल्दी-जल्दी ड्राइंगरूम में आ-जा रहे थे, महत्त्वपूर्ण और महत्त्व-हीन लोगों के साथ, जिन सब को वह जानते थे, समान ढंग से जल्दी-जल्दी सलाम-दुआ कर रहे थे, बीच-बीच में अपने सुघड़-सुन्दर बेटे को नज़रों से ढूंढ़ लेते थे, ख़ुश होते हुए उसपर अपनी नज़र टिकाते थे और उसकी ओर आंख मिचमिचाकर अपना प्यार व्यक्त करते थे। जवान रोस्तोव दोलोख़ोव के साथ खिड़की के पास खड़ा था। दोलोख़ोव के साथ कुछ ही समय पहले उसका परिचय हुआ था और इस जान-पहचान को वह बहुत मूल्यवान मानता था। बुज़ुर्ग काउंट इन दोनों के पास गये और उन्होंने दोलोख़ोव से हाथ मिलाया।

"अपने यहां आने का अनुरोध करता हूं। तो तुम मेरे इस सूरमा से परिचित हो... वहां, मोर्चे पर साथ-साथ बहादुरी के कारनामे करते रहे हो... अरे! वसीली इग्नातिच... नमस्ते, बड़े मियां..." उन्होंने पास से गुज़रते हुए एक बुज़ुर्ग को सम्बोधित किया, किन्तु अभिवादन के शब्द कहने के पहले ही सब लोगों में हलचल-सी मच गयी, सहमे-सहमे चेहरेवाला वेटर भागा हुआ आया और उसने यह सूचना दी: "वह पधार गये हैं!"

घण्टियां बजीं, प्रबन्धक लपककर आगे गये, अलग-अलग कमरों

में बिखरे हुए मेहमान छाज में एकत्रित अनाज की तरह एक ही जगह पर इकट्ठे होकर बड़े ड्राइंगरूम के दरवाज़े के पास खड़े हो गये।

टोप और खड्ग के बिना, जिन्हें उसने क्लब के क़ायदे के मुताबिक़ दरबान के पास छोड़ दिया था, बग्रातिओन प्रवेश-कक्ष के दरवाज़े पर प्रकट हुआ। उसके सिर पर न तो भेड़ की खाल की टोपी थी, न ही उसके कंधे पर कोड़ा था, जैसे उसे रोस्तोव ने आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई के पहलेवाली रात को देखा था। इस वक़्त वह बेहद कसी हुई नयी वर्दी पहने था, रूसी और विदेशी तमग़े लगाये था और उसके वक्ष के बायीं ओर सेंट जार्ज का सितारा लगा था। उसने सम्भवतः अभी, लंच के पहले अपने बाल और गलमुच्छे कटवाये-छंटवाये थे जिससे उसकी सूरत कुछ बिगड़ गयी थी। उसके चेहरे पर भोलेपन का तथा समारोही-सा भाव था जो उसके दृढ़ता और पौरुष से ओत-प्रोत नाक-नक़्शे के साथ मिलकर उसके चेहरे को कुछ मज़ाक़िया-सा बना रहा था। बेकले-शोव और फ़्योदोर पेत्रोविच उवारोव, जो उसके साथ आये थे, इस इच्छा से दरवाज़े के पास रुक गये कि मुख्य अतिथि के रूप में वह उनसे पहले भीतर जाये। उनकी इस शिष्टता का लाभ उठाने के अनिच्छुक बग्रातिओन को झेंप महसूस हुई और इसलिये इन तीनों के दरवाज़े पर ही रुक जाने से कुछ देर हो गयी और आख़िर उसे ही आगे जाना पड़ा। वह शर्माते हुए और अटपटे ढंग से ड्राइंगरूम के तख़्तों के फ़र्श पर क़दम बढ़ा रहा था और यह नहीं समझ पा रहा था कि अपने हाथों का क्या करे। उसके लिये तो गोलियों की बौछार के बीच जुते खेत में बढ़ना, जैसा कि उसने शेनग्राबेन की लड़ाई के वक़्त कूर्स्क की रेजिमेंट की अगुवाई करते हुए किया था, कहीं अधिक आसान और स्वाभाविक होता। प्रबन्धकों ने पहले दरवाज़े पर उसका स्वागत किया, ऐसे सम्मानित अतिथि के आने पर ख़ुशी के कुछ शब्द कहे और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना, मानो उसपर अपना अधिकार जमाते हुए, उसे घेर लिया और ड्राइंगरूम में ले चले। ड्राइंगरूम के दरवाज़े पर क्लब के सदस्यों और अतिथियों के जमघट के कारण, जो रेल-पेल करते हुए एक-दूसरे के कंधे के ऊपर से बग्रातिओन को एक दुर्लभ जानवर की तरह देखने की कोशिश कर रहे थे, ड्राइंगरूम में दाख़िल होना असम्भव था। काउंट इल्या अन्द्रेयेविच दूसरों की तुलना में अधिक जोश से भीड़ को धकेलते, हंसते और यह कहते हुए: "कृपया रास्ता

दीजिये, रास्ता दीजिये!" मेहमानों को ड्राइंगरूम में लाये और उन्हें बीचवाले सोफ़े पर बिठा दिया। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और सम्मानित सदस्यों ने फिर से इन मेहमानों को घेर लिया। काउंट इल्या अन्द्रेयेविच फिर से भीड़ को चीरते हुए ड्राइंगरूम से बाहर गये और एक मिनट बाद एक अन्य प्रबन्धक के साथ चांदी की बहुत बड़ी तश्तरी लिये हुए लौटे और उसे प्रिंस बग्रातिओन को भेंट किया। तश्तरी में इस समारोह के नायक के सम्मान में रचित और मुद्रित कविता रखी थी। तश्तरी सामने आने पर बग्रातिओन ने घबराकर इधर-उधर ऐसे देखा मानो सहायता करने की प्रार्थना कर रहा हो। किन्तु सभी आंखें यह मांग कर रही थी कि वह कोई आपत्ति न करे। अपने को मेज़बानों के वश में अनुभव करते हुए बग्रातिओन ने तश्तरी को दृढ़ता से दोनों हाथों में ले लिया और झल्लाहट तथा तिरस्कार से काउंट रोस्तोव की तरफ़ देखा जो इसे लेकर आये थे। किसी ने सेवा-भाव दिखाते हुए बग्रातिओन के हाथों से तश्तरी ले ली (वरना ऐसा प्रतीत होता था कि वह शाम तक इसे ऐसे ही थामे रहेगा और इसी तरह से खाने की मेज़ पर जायेगा) और कविता की तरफ़ उसका ध्यान आकर्षित किया। "अगर आप लोग यही चाहते हैं, तो पढ़ लेता हूं," बग्रातिओन ने मानो कहा और थकी-थकी आंखें काग़ज़ पर टिकाकर बहुत ध्यान तथा गम्भीरता से उसे पढ़ने लगा। किन्तु इसी क्षण कविता के रचयिता ने उसे अपने हाथ में लेकर पढ़ना शुरू किया। प्रिंस बग्रातिओन सिर झुकाकर सुनने लगा।

> गाये हम सम्राट अलेक्सान्द्र का मिल गुन-गान
> टाइटस की ही तरह राज्य के रक्षक, ओ' अभिमान।
> युग-युग रहें हमारे नेता, आप नेक इन्सान
> मातृभूमि के लिये रिफ़ेयस, सीज़र वीर महान।
> बड़ा विजेता, वह नेपोलियन,
> अपने कटु अनुभव से वह भी, किन्तु गया यह जान
> रूसी कैसे वीर, बहादुर, कैसे बग्रातिओन!

कवि ने अपना कविता-पाठ अभी समाप्त नहीं किया था कि क्लब के ऊंची आवाज़वाले मैनेजर ने घोषणा की: "भोजन के लिये पधारिये!" दरवाज़ा खुला और डाइनिंग हॉल से पोलिश नाच की

यह धुन गूंज उठी : "जीत का नारा लगाओ, वीरतापूर्ण रूस ख़ुशी मनाओ," * और काउंट रोस्तोव ने झल्लाहट से कवि की ओर देखकर, जो अभी भी कविता पढ़ता जा रहा था, बग्रातिओन के सामने सिर झुकाया और उसे दावत के लिये आमन्त्रित किया। सभी यह अनुभव करते हुए कि कविता की तुलना में भोजन अधिक महत्त्वपूर्ण था, उठकर खड़े हो गये और फिर बग्रातिओन सबसे आगे-आगे डाइनिंग हॉल की तरफ़ चल दिया। दो अलेक्सान्द्रों – अलेक्सान्द्र बेकलेशोव और अलेक्सान्द्र नारीशकिन – के बीच ( यह चीज़ ज़ार अलेक्सान्द्र के नाम की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थी ) बग्रातिओन को मुख्य स्थान पर बैठाया गया, तीन सौ व्यक्ति अपने पदों और महत्त्व के अनुसार सम्मानित अतिथि के निकट या दूर उसी तरह बैठ गये जैसे पानी ढलवान की तरफ़ बहता है।

लंच के ठीक पहले काउंट इल्या अन्द्रेयेविच ने अपने बेटे को प्रिंस के सामने पेश किया। बग्रातिओन ने उसे पहचानकर कुछ उसी तरह से असम्बद्ध और अटपटे-से शब्द कहे, जिस तरह कि इस सारी शाम को उसके द्वारा कहे गये शेष शब्द थे। जब बग्रातिओन उनके बेटे से बात कर रहा था तो उस वक़्त काउंट इल्या अन्द्रेयेविच ने बड़ी ख़ुशी और गर्व से लोगों की तरफ़ देखा।

देनीसोव और अपने नवपरिचित दोलोख़ोव के साथ निकोलाई रोस्तोव मेज़ के लगभग मध्य में जा बैठा। प्येर और प्रिंस नेस्वीत्स्की इनके सामने बैठ गये। काउंट रोस्तोव इस समारोह के अन्य प्रबन्धकों के साथ बग्रातिओन के सामने बैठे थे और मास्को के आतिथ्यसत्कार का साकार रूप बने हुए प्रिंस बग्रातिओन की ख़ातिरदारी कर रहे थे।

काउंट रोस्तोव की मेहनत बेकार नहीं गयी। लेंट पर्व के कारण मांस न खाने और मांस खानेवाले – दोनों ही तरह के लोगों के लिये उनका प्रबन्ध बहुत बढ़िया था। फिर भी लंच के समाप्त होने तक उन्हें पूरी तरह से चैन नहीं मिला। वह बटलर को आंखों से इशारे करते थे, बैरों को फुसफुसाकर हिदायतें देते थे और अपनी जानी-पहचानी हर डिश के आने के पहले बड़ी बेचैनी महसूस करते थे।

---

* इस धुन पर आधारित रूसी कवि गाव्रीला देर्जाविन का गीत १९वीं शताब्दी में रूस का राष्ट्रीय गान था। – सं०

सब कुछ बहुत शानदार था। दूसरी डिश, एक विराटकाय स्टेरलेट मछली (जिसे देखकर इल्या अन्द्रेयेविच के चेहरे पर ख़ुशी और संकोच के कारण लाली दौड़ गयी) के लाये जाने के साथ ही बैरे शेम्पेन की बोतलें खोलने और गिलास भरने लगे। मछली के बाद, जिसने अपना कुछ रंग जमाया, काउंट इल्या अन्द्रेयेविच ने समारोह के दूसरे प्रबन्धकों के साथ नज़रें मिलायीं। "बहुत-से टोस्ट पेश किये जायेंगे, इसलिये शुरू करना चाहिये!" उन्होंने फुसफुसाकर कहा और शेम्पेन का गिलास हाथ में लेकर खड़े हो गये। सभी ख़ामोश होकर उनके शब्दों की प्रतीक्षा करने लगे।

"सम्राट स्वस्थ रहें!" काउंट ने ऊंची आवाज़ में कहा और इसके साथ ही उनकी दयालु आंखें प्रसन्नता और उल्लास से सजल हो गयीं। इसी क्षण आर्केस्ट्रा यह धुन बजाने लगा: "जीत का नारा लगाओ!" सभी अपनी कुर्सियों से उठकर खड़े हो गये और "हुर्रा" चिल्ला उठे। बग्रातिओन ने भी ऐसा ही किया – उसी तरह की आवाज़ में जिस तरह की आवाज़ में वह शेनग्राबेन के युद्ध-क्षेत्र में चिल्लाया था। उत्साह से परिपूर्ण जवान रोस्तोव की आवाज़ बाक़ी सभी तीन सौ आवाज़ों से ऊंची सुनायी दी। वह तो लगभग रुआंसा हो गया था।

"सम्राट स्वस्थ रहें, हुर्रा!" वह चिल्लाया और एक ही सांस में शेम्पेन का पूरा गिलास ख़ाली करके उसने उसे फ़र्श पर मारकर तोड़ डाला। बहुत-से दूसरे लोगों ने भी उसका अनुकरण किया। बहुत देर तक यह शोर-शराबा चलता रहा। हो-हल्ला शान्त होने पर बैरों ने टूटे गिलासों से फ़र्श को साफ़ किया, सभी बैठ गये और अपने चीख़ने-चिल्लाने पर मुस्कराते हुए आपस में बातचीत करने लगे। काउंट इल्या अन्द्रेयेविच फिर से उठे, उन्होंने अपनी प्लेट के पास पड़ी सूची पर नज़र डाली, "अन्तिम युद्ध-अभियान के हमारे हीरो, प्रिंस बग्रातिओन की सेहत" का जाम पेश किया और उनकी नीली आंखें फिर मे गीली हो गयीं। "हुर्रा!" पुनः तीन सौ आवाज़ें गूंज उठीं और आर्केस्ट्रा के बजाय सहगान के गायक रचनाकार पावेल इवानोविच कुतूज़ोव * का यह प्रशस्ति-पद गाने लगे:

---

* रूसी सीनेट-सदस्य (१७६७–१८२९), समारोही कविताओं का रचयिता। – सं०

विजय सुनिश्चित करे वीरता
रूसी से लड़ पाये कौन?
शत्रु सभी घुटने टेकेंगे
जहां खड़े हों बग्रातिओन!..
आदि, आदि।

सहगान ख़त्म होते ही नये-नये टोस्ट पेश किये जाने लगे, उनके साथ-साथ काउंट रोस्तोव अधिकाधिक भावुक और द्रवित होते गये, अधिकाधिक गिलास तोड़े गये और अधिकाधिक ज़ोर से शोर मचाया गया। बेकलेशोव, नारीशकिन, उवारोव, दोल्गोरूकोव, अप्रांकसिन, वलूयेव, क्लब के प्रबन्धकों, समारोह-समिति, क्लब के सभी सदस्यों, क्लब के सभी मेहमानों और अन्त में इस लंच के संयोजक के नाते काउंट इल्या अन्द्रेयेविच रोस्तोव की सेहत का अलग से जाम पिया गया। इस टोस्ट के मौक़े पर तो काउंट ने रूमाल निकालकर उससे मुंह ढंक लिया और बिल्कुल ही रो पड़े।

## ४

प्येर दोलोख़ोव और निकोलाई रोस्तोव के सामने बैठा था। वह बहुत ज़्यादा और बेसब्री से खा रहा था, हमेशा की भांति ख़ूब पी रहा था। किन्तु उसे घनिष्ठ रूप से जानेवाले लोग यह अनुभव कर रहे थे कि आज वह बहुत ही बदला-बदला-सा है। लंच के पूरे वक़्त वह लगातार ख़ामोश रहा और आंखें तथा नाक-भौंह सिकोड़कर अपने इर्द-गिर्द देखता रहा या फिर एक ही जगह पर नज़र टिकाये बिल्कुल खोया-खोया-सा नासामूल को उंगली से मलता रहा। उसके चेहरे पर उदासी और दुख का भाव था। ऐसे लगता था कि उसके आस-पास क्या हो रहा है, वह कुछ भी सुन और देख नहीं रहा था और किसी दुखद-बोझल समस्या के बारे में ही सोचता जा रहा था जिसका उसे कोई समाधान नहीं मिल रहा था।

हल न हो सकने तथा यातना देनेवाली यह समस्या दोलोख़ोव के साथ उसकी पत्नी की घनिष्ठता के बारे में प्रिंसेस द्रुबेत्स्काया द्वारा मास्को में किये गये संकेतों और उस गुमनाम ख़त से सम्बन्धित थी जो

उसे आज सुबह ही मिला था। सभी गुमनाम ख़तों की तरह इसमें भी नीचतापूर्ण मज़ाक़िया ढंग से यह कहा गया था कि चश्मा पहनने के बावजूद उसकी आंखें अच्छी तरह से नहीं देखतीं और दोलोख़ोव तथा उसकी पत्नी के घनिष्ठ सम्बन्ध केवल उसी के लिये कोई राज़ हो सकते हैं। प्येर ने न तो प्रिंसेस के संकेतों और न पत्र पर ही कोई विश्वास किया, किन्तु उसे अपने सामने बैठे दोलोख़ोव को देखकर घबराहट-सी हो रही थी। जब-जब उसकी आंखें दोलोख़ोव की सुन्दर और बेहया आंखों से अनजाने ही मिल जातीं, तब-तब प्येर को अपने अन्तर में कोई भयानक और बेहूदा-सी भावना उमड़ती प्रतीत होती और वह झटपट अपनी नज़र दूसरी ओर कर लेता। अपनी पत्नी के अतीत और दोलोख़ोव के साथ उसके सम्बन्धों को बरबस याद करते हुए प्येर को यह स्पष्ट दिखायी देता कि पत्र में जो कुछ कहा गया है, वह, यदि उसका **उसकी पत्नी** से सम्बन्ध न होता, तो सच हो सकता था, कम से कम सच प्रतीत हो सकता था। प्येर को अनचाहे ही याद हो आया कि कैसे दोलोख़ोव, जिसे इस युद्ध के बाद पूरी तरह से बहाल कर दिया गया था, पीटर्सबर्ग लौटने पर, उसके यहां आ गया था। प्येर के साथ डटकर पीने-पिलाने के अपने मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों से लाभ उठाते हुए दोलोख़ोव सीधा उसके घर आ पहुंचा था और प्येर ने उसे रहने की जगह तथा उधार पैसे भी दिये थे। प्येर को याद आया कि एलेन ने कैसे मुस्कराते हुए इस बात पर अपनी अप्रसन्नता प्रकट की थी कि दोलोख़ोव उनके घर में रहता था, कैसे दोलोख़ोव ने बड़ी बेहयाई से उसकी पत्नी के सौन्दर्य की प्रशंसा की थी और कैसे मास्को आने के पहले वह पल भर को भी उनसे अलग नहीं हुआ था।

"हां, वह बहुत सुन्दर है," प्येर सोच रहा था, "मैं उसे अच्छी तरह से जानता-समझता हूं। उसे केवल इसलिये मेरी इज़्ज़त को धूल में मिलाने और मेरी खिल्ली उड़ाने से मज़ा मिलेगा कि मैंने उसके लिये दौड़-धूप की, उसकी तरफ़ मदद का हाथ बढ़ाया, उसे सहारा दिया। मैं जानता हूं, इस बात को समझता हूं कि अगर यह सच है, तो मेरी आंखों में धूल झोंककर उसे कितना आनन्द प्राप्त होगा। हां, अगर यह सच है, लेकिन मैं विश्वास नहीं करता, मुझे इसका अधिकार नहीं है, मैं विश्वास नहीं कर सकता।" उसे दोलोख़ोव

के चेहरे के उन क्षणों का भाव याद हो आया, जब उसपर क्रूरता का भूत सवार होता था। ऐसे क्षणों के समय का भाव, जब उसने पुलिसवाले को भालू की पीठ पर बांधकर उन्हें नदी में छोड़ दिया था या जब वह किसी कारण के बिना किसी भी व्यक्ति को द्वन्द्व-युद्ध के लिये ललकारता था या जब उसने पिस्तौल से गोली चलाकर कोचवान का घोड़ा मार डाला था। जब वह उसकी तरफ़ देखता तो ऐसा भाव अक्सर दोलोख़ोव के चेहरे पर झलक उठता। "हां, वह ज़ालिम आदमी है," प्येर सोच रहा था, "किसी आदमी की जान ले लेना उसके लिये मामूली बात है, उसे लगता होगा कि सभी उससे डरते हैं, उसे इस चीज़ से ख़ुशी होती होगी। वह सोचता होगा कि मैं भी उससे डरता हूं। और सच तो यही है कि मैं भी उससे डरता हूं," प्येर ने सोचा। इन विचारों के साथ उसने यह महसूस किया कि उसके अन्तर में फिर से कोई भयानक और घिनौनी-सी भावना सिर उठा रही है। दोलोख़ोव, देनीसोव और रोस्तोव अब प्येर के सामने बैठे थे तथा बड़े रंग में दिखायी दे रहे थे। रोस्तोव बेहद ख़ुशी के मूड में अपने दोनों दोस्तों के साथ बातें कर रहा था जिनमें से एक बड़ा दिलेर हुस्सार था और दूसरा लड़ने-मरने को हर वक़्त तैयार तथा द्वन्द्व-युद्धों के लिये मशहूर और सनकी था तथा कभी-कभी मज़ाक़िया ढंग से प्येर की तरफ़ देख लेता था जिसकी अपनी विचारमग्न खोयी-खोयी और भारी-भरकम आकृति आश्चर्यचकित करती थी। रोस्तोव सबसे पहले तो इसलिये प्येर को उपेक्षा की दृष्टि से देख रहा था कि उसकी हुस्सार की नज़र में वह एक असैनिक धनी और सुन्दर बीवी का पति था, कुल मिलाकर मर्द नहीं ज़नाना था, दूसरे इसलिये कि विचारमग्न और खोयेपन की अपनी मनःस्थिति के कारण उसने रोस्तोव को नहीं पहचाना और उसके अभिवादन का उत्तर नहीं दिया। जब सम्राट की सेहत का जाम पिया जाने लगा, तो अपने ही ख़्यालों में खोया हुआ प्येर उठा नहीं और उसने गिलास भी हाथ में नहीं लिया।

"यह आप क्या कर रहे हैं?" उत्साह और क्रोधपूर्ण आंखों से उसकी ओर देखते हुए रोस्तोव चिल्ला उठा। "क्या आपने सुना नहीं – सम्राट की सेहत का जाम पिया जा रहा है!" प्येर ने गहरी सांस ली, चुपचाप खड़ा हो गया, शेम्पेन का गिलास पी लिया और सभी के बैठ जाने पर अपनी दयालु मुस्कान के साथ

रोस्तोव को सम्बोधित किया :

"मैंने तो आपको पहचाना ही नही।" किन्तु रोस्तोव को इस चीज़ की तरफ़ ध्यान देने की फ़ुरसत ही नही थी, वह तो हुर्रा चिल्ला रहा था।

"तुम अपनी जान-पहचान को ताज़ा क्यों नही करते?" दोलोख़ोव ने पूछा।

"हटाओ भी, वह उल्लू है," रोस्तोव ने जवाब दिया।

"सुन्दर औरतों के पतियों के साथ हमेशा अच्छे ढंग से पेश आना चाहिये," देनीसोव ने कहा।

ये दोनों क्या बातें कर रहे थे, प्येर नहीं सुन पाया, मगर वह इतना जानता था कि उसी के बारे में कुछ कह रहे हैं। उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी और उसने दूसरी ओर मुंह कर लिया।

"तो अब हम सुन्दरियों की सेहत का जाम पियेंगे," दोलोख़ोव ने चेहरे पर गम्भीरता का भाव लाते हुए, यद्यपि उसके होंठों के कोनों पर मुस्कान थी, प्येर से कहा।

"प्येर , सुन्दरियों और उनके प्रेमियों की सेहत का जाम," दोलोख़ोव ने प्रस्ताव किया।

प्येर ने नज़रें झुकाये और दोलोख़ोव की तरफ़ देखे तथा कोई उत्तर दिये बिना शेम्पेन का घूंट भर लिया। कवि कुतूज़ोव के प्रशस्तिपद की प्रतिया बांटनेवाले बैरे ने सम्मानित अतिथि के रूप में प्येर के सामने भी एक प्रति रख दी। प्येर ने इसे उठाना चाहा, किन्तु दोलोख़ोव ने इसी समय आगे की ओर झुककर यह प्रति उसके हाथ से छीन ली और पढ़ने लगा। प्येर ने दोलोख़ोव की ओर देखा, उसकी आंखें झुक गयीं और लंच के पूरे वक़्त उसे यातना देनेवाली किसी भयानक और घिनौनी चीज़ ने अपना सिर उठाया और उसपर हावी हो गयी। अपनी पूरी, भारी-भरकम देह को मेज़ पर झुकाते हुए वह चिल्ला उठा :

"ऐसी जुर्रत नही करो!"

प्येर के ऐसे चिल्ला उठने से, और यह देखकर कि वह किसपर चिल्लाया है, नेस्वीत्स्की और प्येर के दायीं ओर बैठे व्यक्ति ने घबराकर झटपट प्येर को सम्बोधित किया।

"हटाइये, हटाइये, यह क्या कर रहे हैं आप?" सहमी-सहमी

आवाज़ों की फुसफुसाहट सुनायी दी। दोलोख़ोव ने अपनी निर्मल, प्रफुल्ल और क्रूर आंखों से प्येर की तरफ़ देखा तथा उसकी मुस्कान मानो यह कह रही थी: "हां, यह अन्दाज़ पसन्द है मुझे!"

"नही दूंगा," उसने दो टूक जवाब दे दिया।

पीले चेहरे और कांपते होंठों से प्येर ने काग़ज़ झपट लिया।

"आप... आप... कमीने हैं!.. मैं आपको चुनौती देता हूं," वह कह उठा और कुर्सी को पीछे हटाकर मेज़ पर से उठ खड़ा हुआ। इसी क्षण, जब प्येर ने काग़ज़ छीना और उक्त शब्द कहे, यह भी महसूस किया कि उसकी पत्नी के अपराधी होने के प्रश्न की, जो पिछले चौबीस घण्टों से उसके मन को व्यथित कर रहा था, अन्तिम और निर्विवाद रूप से अभिपुष्टि हो गयी है। उसे अपनी पत्नी से नफ़रत थी और वह सदा के लिये उससे नाता तोड़ चुका था। देनीसोव के इस अनुरोध के बावजूद कि रोस्तोव इस मामले में दख़ल न दे, वह दोलोख़ोव का सहायक बनने को राज़ी हो गया और लंच के बाद उसने प्येर के सहायक नेस्वीत्स्की के साथ द्वन्द्व-युद्ध की शर्तें तय कीं। प्येर घर चला गया, मगर दोलोख़ोव और देनीसोव के साथ रोस्तोव बहुत देर गये रात तक क्लब में जिप्सियों और दूसरे गायकों-गायिकाओं के गाने सुनता रहा।

"तो कल सोकोल्निकी में मिलेंगे," दोलोख़ोव ने क्लब के ओसारे में रोस्तोव से विदा लेते हुए कहा।

"क्या तुम चिन्तित नहीं हो?" रोस्तोव ने पूछा।

दोलोख़ोव रुक गया।

"मैं थोड़े-से शब्दों में ही द्वन्द्व-युद्ध का सारा राज़ तुम्हारे सामने खोल देता हूं। अगर कोई व्यक्ति द्वन्द्व-युद्ध के लिये जाते समय वसीयतनामा और अपने मां-बाप के नाम भावुकतापूर्ण पत्र लिखता है, अगर वह यह सोचता है कि उसकी हत्या हो सकती है तो वह उल्लू है और सम्भवतः मारा जायेगा। उसे तो जल्दी से जल्दी और अधिक से अधिक विश्वास के साथ अपने प्रतिद्वन्द्वी को मारने के इरादे से जाना चाहिये और तब यह समझो कि बात बन गयी। कोस्त्रोमा में भालुओं का शिकार करनेवाला हमारा एक शिकारी मुझसे कहा करता था: "भालू से कौन नहीं डरता? लेकिन उसे देखते ही डर ग़ायब हो जाता है, सिर्फ़ इस बात का डर रह जाता है कि वह कहीं हाथ

से निकल न जाये! मेरा भी यही हाल है। तो कल मिलेंगे, मेरे दोस्त!"

अगले दिन, सुबह के आठ बजे प्येर और नेस्वीत्स्की सोकोल्निकी के जंगल में पहुंच गये और दोलोख़ोव, देनीसोव तथा रोस्तोव भी उसे वहीं मिले। प्येर के चेहरे पर ऐसे व्यक्ति का भाव था जो अपने किन्हीं ऐसे ख़्यालों में खोया हुआ हो जिनका कुछ ही समय बाद होनेवाले मामले से कोई सम्बन्ध ही न हो। उसका उतरा हुआ चेहरा पीला था। सम्भवतः वह पिछली रात को सोया नहीं था। वह खोया-खोया-सा अपने इर्द-गिर्द देख रहा था और मानो तेज़ धूप के कारण अपनी आंखें सिकोड़ रहा था। दो विचार उसके दिल-दिमाग़ पर पूरी तरह से छाये हुए थे – एक तो यह कि उसकी बीवी अपराधी थी जिसके बारे में उनींदी रात के बाद उसके मन में ज़रा भी सन्देह नहीं रह गया था और दूसरे यह कि दोलोख़ोव निरपराध था और उससे यह आशा करना बेमानी था कि वह अपने लिये पराये किसी व्यक्ति की इज़्ज़त-आबरू की चिन्ता करेगा। "दोलोख़ोव की जगह अगर मैं होता तो शायद मैं भी ऐसा ही करता," प्येर सोच रहा था। "बल्कि ज़रूर ही मैंने ऐसा किया होता। तो फिर किसलिये यह द्वन्द्व-युद्ध किया जाये, यह हत्या-काण्ड हो? या तो मैं उसे मार डालूंगा या फिर उसकी गोली मेरे सिर, कोहनी या घुटने के पार हो जायेगी। यहां से चले जाना चाहिये, भाग जाना, कहीं ग़ायब हो जाना चाहिये," उसके दिमाग़ में यह ख़्याल आ रहा था। किन्तु ऐसे ही क्षणों में, जब उसके दिमाग़ में इस तरह के विचार आते थे, वह विशेष रूप से शान्त और बेख़्याली के भाव से, जो दूसरों के मन में आदर की भावना पैदा करता था, यह पूछता था: "अभी देर है क्या? सब तैयारी हो गयी या नहीं?"

जब पूरी तैयारी हो गयी., उस सीमा का संकेत करने के लिये, जहां तक वे दोनों आ सकते थे, बर्फ़ में तलवारें गाड़ दी गयीं और पिस्तौलों में गोलियां भर दी गयीं तो नेस्वीत्स्की प्येर के पास गया।

"काउंट, अगर इस महत्त्वपूर्ण क्षण, बहुत ही महत्त्वपूर्ण क्षण में मैं आपसे सब कुछ सच-सच नहीं कह दूंगा," उसने सहमे-सहमे ढंग से कहा, "तो मैं अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं करूंगा, अपने को उस विश्वास और सम्मान के योग्य सिद्ध नहीं करूंगा जो अपना सहायक चुनकर आपने मेरे प्रति प्रकट किया है। मैं समझता हूं कि इस मामले

के लिये कोई ऐसा गम्भीर कारण नहीं है और यह इस लायक़ नहीं है कि इसके लिये ख़ून बहाया जाये ... ग़लती आपकी है, आप ग़ुस्से में आ गये थे ..."

"ओह, यह ठीक है, बड़ी बेहूदा बात है ..." प्येर ने कहा।

"तो आप मुझे आपकी तरफ़ से अफ़सोस ज़ाहिर करने की इजाज़त दीजिये और मुझे विश्वास है कि हमारे प्रतिद्वन्द्वी हमारी क्षमा-याचना को स्वीकार कर लेंगे," नेस्वीत्स्की ने कहा (जो इस मामले में हिस्सा लेनेवाले बाक़ी लोगों की तरह और ऐसे मामलों में, जैसा कि अन्य सभी के साथ होता है, अभी तक यह विश्वास नहीं कर पा रहा था कि मामला सचमुच ही द्वन्द्व-युद्ध की हद तक पहुंच गया है)। "आप तो जानते ही हैं, काउंट, कि मामले के पूरी तरह से बिगड़ जाने की हद तक उसे खींचने के बजाय अपनी भूल स्वीकार कर लेना कहीं ज़्यादा नेक काम होता है। दोनों ओर से अपमान की कोई बात नहीं हुई थी। तो आप मुझे प्रतिद्वन्द्वियों से इस मामले की चर्चा करने की अनुमति दीजिये ..."

"नहीं, कैसी चर्चा!" प्येर ने उत्तर दिया। "ऐसे ही सब ठीक है ... तो तैयारी हो गयी?" उसने इतना और पूछ लिया। "आप मुझे केवल इतना बता दीजिये कि मैं किधर क़दम बढ़ाऊं और किस तरफ़ गोली चलाऊं?" उसने असाधारण रूप से विनम्रतापूर्वक मुस्कराते हुए पूछा। उसने पिस्तौल हाथ में ले ली, उसे चलाने का तरीक़ा पूछने लगा, क्योंकि आज तक पिस्तौल हाथ में नहीं ली थी, मगर वह यह बात मानने को तैयार नहीं था। "अरे हां, इस तरह से, मुझे मालूम है, लेकिन मैं तो ज़रा भूल गया था," उसने कहा।

"किसी तरह की कोई माफ़ी-वाफ़ी नहीं, ऐसा करने का सवाल ही नहीं पैदा होता," दोलोख़ोव ने देनीसोव को जवाब दिया जो अपनी ओर से सुलह कराने का यत्न कर रहा था और द्वन्द्व-युद्ध के लिये निश्चित जगह पर आ गया था।

द्वन्द्व-युद्ध के लिये रास्ते से कोई अस्सी क़दम की दूरी पर, जहां स्लेजें खड़ी रह गयी थीं, चीड़ के वन में एक खुले मैदान में जगह चुनी गयी थी। वन पिछले दिनों में कुछ पिघल जानेवाली बर्फ़ से ढका हुआ था। प्रतिद्वन्द्वी इस वन-प्रांगण के सिरों पर एक-दूसरे से कोई चालीस क़दमों की दूरी पर खड़े थे। सहायकों के द्वारा उस जगह से, जहां

वे खड़े थे, उस जगह तक क़दमों को मापते हुए, जहां अवरोध-सीमा का संकेत करनेवाली नेस्वीत्स्की और देनीसोव की तलवारें गाड़ दी गयी थीं, गहरी, गीली बर्फ़ पर पद-चिह्न अंकित हो गये। बर्फ़ पिघल रही थी और कुहरा छाया था – चालीस क़दमों की दूरी पर कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। सारी तैयारी हुए तीन मिनट हो चुके थे, फिर भी द्वन्द्व-युद्ध शुरू करने में देर की जा रही थी। सभी ख़ामोश थे।

## ५

"तो शुरू करें!" दोलोख़ोव ने कहा।

"हां, हां," प्येर ने पहले की तरह मुस्कराते हुए ही उत्तर दिया।

वातावरण में भय व्याप्त हो गया। स्पष्ट था कि ऐसे मामूली ढंग से आरम्भ होनेवाला यह मामला अब किसी तरह भी रोका नहीं जा सकता था, कि वह लोगों की इच्छा पर निर्भर न करते हुए अपने आप ही आगे बढ़ता जाता था और पूरा होकर रहेगा। देनीसोव ही सबसे पहले अवरोध-सीमा तक आगे आया और उसने यह घोषणा की:

"चूंकि प्रतिद्वन्द्वियों ने सुलह करने से इन्कार कर दिया है, इसलिये शुरू करना चाहिये – अपनी-अपनी पिस्तौल हाथ में ले लीजिये और 'तीन' कहने पर आप दोनों आगे बढ़ने लगें।"

"ए... क! दो! तीन!" देनीसोव झल्लाहट से चिल्लाया और एक ओर को हट गया। कुहरे में एक-दूसरे को पहचानते हुए दोनों रौंदी हुई पगडंडी पर निकट होने लगे। अवरोध-सीमा तक पहुंचते हुए प्रतिद्वन्द्वियों को, जब भी वे चाहें, गोली चलाने का अधिकार था। दोलोख़ोव पिस्तौल ऊपर उठाये बिना, अपनी सुन्दर, चमकीली, नीली आंखों को अपने प्रतिद्वन्द्वी के चेहरे पर जमाये हुए धीरे-धीरे बढ़ रहा था। उसके होंठों पर सदा जैसी मुस्कान थी।

"तीन" शब्द सुनने पर प्येर तेज़ी से आगे बढ़ चला, रौंदी हुई पगडंडी से हट गया और गहरी बर्फ़ में डग भरने लगा। प्येर मानो इस बात से डरते हुए कि अपनी पिस्तौल से कहीं अपनी ही हत्या न कर ले, दायें हाथ को अपने सामने फैलाये हुए उसमें पिस्तौल

थामे था। बायें हाथ को वह बड़े यत्न से पीठ पीछे रोके था, क्योंकि वह इससे दायें हाथ को सहारा देना चाहता था और यह जानता था कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिये। कोई छः क़दम तक चलने और पगडंडी से हटकर बर्फ़ में चले जाने पर प्येर ने अपने पांवों पर नज़र डाली, फिर जल्दी से दोलोख़ोव की तरफ़ देखा और जैसे उसे सिखाया गया था, उंगली मोड़कर गोली चला दी। ऐसी ज़ोरदार आवाज़ की किसी तरह भी आशा न करते हुए प्येर गोली चलने से कांप उठा, अपनी इस अनुभूति से मुस्कराया और रुक गया। धुएं ने, जो कुहरे के कारण और भी सघन हो गया था, पहले क्षण में उसके कुछ भी देख पाने में बाधा डाल दी। किन्तु, जैसी कि उसने आशा की थी, दूसरी गोली नहीं चली। केवल दोलोख़ोल के तेज़ क़दमों की आवाज़ सुनायी दी और धुएं के पीछे से उसकी आकृति नज़र आई। एक हाथ से वह अपनी बायीं बग़ल को दबाये था और दूसरे हाथ से नीचे झुकी पिस्तौल को भींचे था। उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था। रोस्तोव भागकर उसके पास गया और उससे कुछ कहा।

"न... नहीं," दोलोख़ोव दांतों के बीच से बुदबुदाया, "नहीं, अभी यह ख़त्म नहीं हुआ," और लड़खड़ाते हुए कुछ क़दम और बढ़ाकर तलवार तक पहुंच गया और उसके क़रीब ही बर्फ़ पर गिर गया। उसका बायां हाथ ख़ून से लथपथ था, उसने उसे अपने फ़ॉक-कोट से पोंछा और कोहनी टिकाकर उसी का सहारा ले लिया। उसका चेहरा फक था, उसपर बल पड़े हुए थे और वह कांप रहा था।

"कृप..." दोलोख़ोव ने कहना शुरू किया, मगर एकबारगी कह नहीं पाया... "कृपया," उसने बड़ी मुश्किल से कहा। प्येर बड़ी कठिनाई से अपनी सिसकियों पर क़ाबू पाते हुए दोलोख़ोव की तरफ़ भागा और दोनों अवरोधों को अलग करनेवाले फ़ासले को लांघने ही वाला था कि दोलोख़ोव चिल्ला उठा: "अपनी अवरोध-सीमा से आगे नहीं आओ!" और प्येर स्थिति को समझकर अपनी .अवरोध-सीमा का संकेत करनेवाली तलवार के पास रुक गया। इन दोनों के बीच सिर्फ़ दस क़दमों का फ़ासला था। दोलोख़ोव ने बर्फ़ की तरफ़ सिर झुका-या, बहुत सारी बर्फ़ मुंह में भर ली, सिर ऊपर उठाया, सीधा हुआ, टांगों को समेटकर बैठ गया और अचूक गुरुत्व-केन्द्र ढूंढ़ने लगा। वह ठण्डी बर्फ़ को निगल रहा था, चूस रहा था, उसके होंठ कांप रहे

थे, मगर अभी भी उनपर मुस्कान थी, आंखें बची-बचायी शक्ति को बटोरने के प्रयास और क्रोध से चमक रही थीं। उसने पिस्तौल ऊंची करके निशाना साधना शुरू किया।

"तिरछे खड़े हो जाइये, पिस्तौल से अपने को बचाइये," नेस्वीत्स्की ने प्येर से कहा।

"ढंक लीजिये!" अपने को वश में न रख पाते हुए देनीसोव भी चिल्ला उठा जो इस द्वन्द्व-युद्ध में प्येर का विरोधी था।

चेहरे पर अफ़सोस और पछतावे की विनम्र-सी मुस्कान लिये और असहायता से हाथ-पांव फैलाये प्येर अपनी चौड़ी छाती ताने हुए दोलोख़ोव के सामने खड़ा था और उदासी से उसकी तरफ़ देख रहा था। देनीसोव, रोस्तोव और नेस्वीत्स्की ने आंखें सिकोड़ लीं। इन सभी को एकसाथ ही गोली चलने और दोलोख़ोव की ग़ुस्से से चीख़ने की आवाज़ सुनायी दी।

"निशाना चूक गया!" दोलोख़ोव चिल्लाया और असहाय-सा औंधे मुंह बर्फ़ पर गिर गया। प्येर ने सिर थाम लिया, मुड़ा और गहरी बर्फ़ में क़दम बढ़ाता तथा ऊंचे-ऊंचे कुछ अस्पष्ट शब्द बोलता-बड़बड़ाता हुआ जंगल की तरफ़ चला गया।

"बेवक़ूफ़ी... बेवक़ूफ़ी! मौत... झूठ...," नाक-भौंह सिकोड़ते हुए वह दोहराता जाता था। नेस्वीत्स्की ने उसे रोका और घर ले गया।

रोस्तोव और देनीसोव घायल दोलोख़ोव को स्लेज में ले चले।

दोलोख़ोव आंखें मूंदे हुए स्लेज में लेटा था और उससे पूछे जानेवाले किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे रहा था। किन्तु मास्को पहुंचने पर वह अचानक होश में आया और मुश्किल से सिर ऊपर उठाकर उसने पास बैठे हुए रोस्तोव का हाथ अपने हाथ में ले लिया। दोलो-ख़ोव के चेहरे के बिल्कुल बदल जाने और अप्रत्याशित ही उसपर आ जानेवाले उत्साह तथा कोमलता के भाव से रोस्तोव आश्चर्यचकित रह गया।

"कहो? कैसी तबीयत है?" रोस्तोव ने पूछा।

"बहुत बुरी है! लेकिन यह महत्त्वपूर्ण नहीं है। मेरे दोस्त," दोलोख़ोव ने टूटती आवाज़ में कहा, "हम कहां हैं? हम मास्को में हैं, यह मैं जानता हूं। मेरी तो कोई बात नहीं, लेकिन मैंने उसे,

उसे मार डाला ... वह यह बर्दाश्त नहीं कर पायेगी। वह बर्दाश्त नहीं कर पायेगी ..."

"कौन बर्दाश्त नहीं कर पायेगी?" रोस्तोव ने पूछा।

"मेरी मां। मेरी मां, मेरी वह फ़रिश्ता, मेरी वह फ़रिश्ता जिसकी मैं पूजा करता हूं, मेरी मां," और रोस्तोव का हाथ दबाते हुए दोलोख़ोव रो पड़ा। कुछ शान्त होने पर उसने रोस्तोव को स्पष्ट किया कि वह मां के साथ रह रहा है और अगर वह उसे मरते हुए देखेगी तो इस सदमे को बर्दाश्त नहीं कर पायेगी। उसने रोस्तोव से अनुरोध किया कि वह उसकी मां के पास जाकर उसे यह दुख सहन कर पाने के लिये तैयार करे।

रोस्तोव उसे सौंपा गया यह कर्त्तव्य पूरा करने के लिये फ़ौरन रवाना हो गया और यह जानकर उसे बेहद हैरानी हुई कि दोलोख़ोव, वही उपद्रवी, द्वन्द्व-युद्धों का दीवाना दोलोख़ोव अपनी बूढ़ी मां और कुबड़ी बहन के साथ मास्को में रहता था और अधिकतम स्नेहशील बेटा तथा भाई था।

## ६

पिछले कुछ अरसे से प्येर अपनी पत्नी के साथ एकान्त में बहुत ही कम मिलता था। पीटर्सबर्ग और मास्को में भी उनका घर मेहमानों से भरा रहता था। द्वन्द्व-युद्ध के बाद की रात को, जैसा कि वह अक्सर करता था, प्येर अपने शयन-कक्ष में जाने के बजाय पिता के उस बहुत बड़े अध्ययन-कक्ष, उसी कमरे में रह गया जहां काउंट बेज़ूख़ोव की मृत्यु हुई थी। मानसिक हलचल के कारण उसकी पिछली उनींदी रात भी बेशक बहुत बेचैनी से बीती थी, मगर आज की रात तो और भी अधिक यातनापूर्ण होनेवाली थी।

वह सोफ़े पर लेट गया, उसने सोना चाहा, ताकि वह सब कुछ भूल जाये जो उसे परेशान कर रहा था, मगर वह ऐसा कर नहीं पाया। उसके अन्तर में अचानक भावनाओं, विचारों और स्मृतियों का ऐसा तूफ़ान उमड़ पड़ा कि सोना तो दूर, वह तो एक ही जगह

पर बैठा भी नहीं रह सका और सोफ़े से उठने तथा तेज़ क़दमों से कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाने के लिये विवश हो गया। शादी के फ़ौरन बाद के समयवाली उसकी पत्नी उसकी आंखों के सामने उभरी– नंगे कंधे, अलस, कामुक दृष्टि और इसी क्षण उसके निकट ही उसे दोलोख़ोव का सुन्दर, लज्जाहीन, दृढ़तापूर्ण और उपहासात्मक चेहरा दिखायी दिया जैसा कि वह लंच के वक़्त था और फिर उसे दोलोख़ोव के लड़खड़ाकर बर्फ़ पर गिरने के समय के पीले, कांपते तथा पीड़ित चेहरे की भी झलक मिली।

"आख़िर हुआ क्या था?" उसने अपने आपसे पूछा। "मैंने **प्रेमी** को मार डाला, हां, अपनी पत्नी के प्रेमी को मार डाला। हां, यह हुआ था। लेकिन किस कारण? किसलिये मैं इस स्थिति तक पहुंचा?"– "इसलिये कि तुमने उससे शादी की," उसके अन्तर की आवाज़ ने उत्तर दिया।

"किन्तु इसमें मेरा क्या दोष है?" उसने यह प्रश्न किया। "तुम्हारा दोष यह है कि तुमने उसे प्यार न करते हुए उससे शादी की, अपने को और उसे भी धोखा दिया,"–और उसकी आंखों के सामने प्रिंस वसीली के घर पर डिनर के बाद का वह क्षण सजीव हो उठा, जब उसने अपने मुंह से बड़ी मुश्किल से निकलनेवाले ये शब्द कहे थे: "मैं आपको प्यार करता हूं।" सब कुछ इसी कारण हुआ है! "मैंने तो तब भी यह महसूस किया था," वह सोच रहा था, "मैंने तो तब भी यह महसूस किया था कि यह सही नहीं था, कि मुझे ऐसा कहने का अधिकार नहीं था। ऐसा ही सिद्ध हो गया!" उसे मधुमास याद हो आया और वह इस स्मृति से लज्जारुण हो गया। यह स्मृति तो उसके लिये विशेष रूप से सजीव, अपमानजनक तथा लज्जापूर्ण थी कि कैसे शादी के फ़ौरन बाद एक रोज़ दिन के बारह बजे वह रेशमी ड्रेसिंग गाउन पहने हुए शयन-कक्ष से अध्ययन-कक्ष में आया था, जहां बड़ा कारिन्दा उपस्थित था, जिसने आदर से सिर झुकाकर उसके चेहरे, उसके ड्रेसिंग गाउन की तरफ़ देखा था और ज़रा मुस्कराया था मानो इस मुस्कान से अपने स्वामी के सुख-सौभाग्य के प्रति सम्मानपूर्वक सहानुभूति प्रकट की थी।

"किन्तु कितनी बार मैंने उसपर गर्व किया था, उसके भव्य सौन्दर्य, उसकी सांसारिक व्यवहारकुशलता पर गर्व किया था," वह

सोच रहा था, "अपने उस घर पर गर्व किया था जिसमें वह सारे पीटर्सबर्ग का स्वागत-सत्कार करती थी, दूसरों के प्रेम-जाल में न फंसने की उसकी क्षमता, उसकी सुन्दरता पर गर्व किया था। तो इन बातों पर गर्व किया था मैंने! तब मैं यह सोचता था कि उसे समझता नहीं हूं। उसके चरित्र के बारे में सोचते हुए कितना अक्सर मैं अपने आपसे यह कहा करता था कि यह मेरा ही दोष है कि मैं उसे नहीं समझता हूं, उसके सदा बने रहनेवाले चैन, सन्तोष, सभी तरह के अनुरागों, इच्छाओं-चाहों की अनुपस्थिति को नहीं समझता हूं, मगर इस पहेली का हल इस एक भयानक शब्द में छिपा हुआ था कि वह एक बदचलन औरत है। अब, जबकि मैंने यह भयानक शब्द मुंह से निकाल दिया तो सब कुछ स्पष्ट हो गया!

"अनातोल उससे पैसे उधार लेने के लिये उसके पास आता था और उसके उघाड़े कंधों को चूमता था। वह उसे पैसे तो नहीं देती थी, मगर चूमने से मना नहीं करती थी। उसके पिता मज़ाक़ करते हुए उसमें ईर्ष्या भाव जगाते थे, किन्तु वह शान्त मुस्कान से यह जवाब देती थी कि ऐसी बुद्धू नहीं है कि ईर्ष्या करे – 'वह जो भी चाहे, करता रहे' – मेरे बारे में वह ऐसा ही कहती थी। एक दिन मैंने उससे पूछा था कि वह गर्भवती होने के कोई लक्षण महसूस करती है या नहीं। वह तिरस्कारपूर्वक हंस दी थी और उसने यह जवाब दिया था: 'मैं ऐसी बेवक़ूफ़ नहीं हूं कि बच्चे पैदा करना चाहूं' और यह कि उसके पेट से **मेरे** बच्चे कभी नहीं होंगे।"

इसके बाद प्येर को अपनी पत्नी की अशिष्टता, फूहड़ विचार और अश्लील वाक्य याद हो आये जो उच्च अभिजातीय क्षेत्रों में उसके पालन-पोषण के बावजूद उसके जीवन के अभिन्न अंग थे। "मैं कोई उल्लू नहीं हूं... ख़ुद कोशिश कर देखो... चलते बनो," वह इस तरह के वाक्य कहा करती थी। बूढ़ों और जवानों, मर्दों तथा औरतों में उसकी सफलता को देखकर प्येर अक्सर यह नहीं समझ पाता था कि वह उसे क्यों प्यार नहीं करता। "हां, मैं उसे कभी भी प्यार नहीं करता था," प्येर ने अपने आपसे कहा, "मैं जानता था कि वह बदचलन औरत है," उसने मन ही मन दोहराया, "मगर मैं ऐसा मानने की हिम्मत नहीं कर पाया था।

"और अब वह दोलोख़ोव बर्फ़ पर बैठा है, बनावटी बहादुरी

से मेरे पश्चाताप का उत्तर देते हुए ज़बर्दस्ती मुस्करा और शायद दम तोड़ रहा है!"

प्येर ऐसे लोगों में से था जो बाहरी तौर पर नज़र आनेवाली अपने चरित्र की तथाकथित दुर्बलता के बावजूद किसी को भी अपने दुख-दर्द का राज़दान नहीं बनाते हैं। वह ख़ुद ही अपने दुख से निपट रहा था।

"वही, वह औरत ही हर चीज़ के लिये दोषी है," वह अपने आपसे कह रहा था। "लेकिन इससे क्या हासिल होता है? मैंने उसके साथ अपना नाता क्यों जोड़ लिया, किसलिये मैंने उससे यह कहा: 'मैं तुम्हें प्यार करता हूं'–जो झूठ था, झूठ से भी बदतर था," वह अपने आपसे कह रहा था, "मैं दोषी हूं और मुझे सहन करना होगा... लेकिन क्या? अपनी बदनामी, ज़िन्दगी भर की मुसीबत? ओह, यह सब बकवास है," उसने सोचा, "बदनामी और मेरी इज़्ज़त-आबरू–यह सब कुछ सापेक्ष है, सब कुछ मेरे बस के बाहर है।

"लुई १६वें को इसलिये मृत्यु-दण्ड दिया गया कि **उनके** अनुसार वह बेईमान और अपराधी था" (प्येर के दिमाग़ में यह विचार आया), "और अपने दृष्टिकोण से वे लोग सही थे। किन्तु इसी तरह से वे लोग भी सही थे जो उसे सन्त-महात्मा मानते थे और जिन्होंने शहीदों की तरह उसके लिये अपने प्राणों की बलि दी। फिर रोबेसपियेर को इसलिये मृत्यु-दण्ड दिया गया कि वह तानाशाह था। कौन सही है, कौन ग़लत है? कोई भी नहीं। तुम जी रहे हो–जियो: कल मर जाओगे, जैसे कि एक घण्टा पहले मैं मर सकता था। और क्या इसके लिये सन्तप्त होने में कोई तुक है, जबकि नित्यता की तुलना में केवल एक सेकण्ड का ही जीवन बाक़ी है?" किन्तु इसी क्षण, जब वह अपने को इस तरह के तर्क-वितर्क की बदौलत शान्त अनुभव कर रहा था, उसे अचानक उन क्षणों की याद हो आई, जब उसने उसके प्रति सबसे अधिक ज़ोर के साथ अपना झूठा प्यार व्यक्त किया था। उसने अपने दिल में बेहद बेचैनी महसूस की, वह फिर से उठने, इधर-उधर आने-जाने और हाथ में आ जानेवाली चीज़ों को उठाकर फेंकने और तोड़ने-फोड़ने को मजबूर हो गया। "किसलिये मैंने उससे यह कहा था: 'मैं तुम्हें प्यार करता हूं'?" वह मन ही मन लगातार यह दोहरा रहा था। कोई दस बार इसी प्रश्न को दोहराने के बाद मोलियर का यह

वाक्य उसके दिमाग़ में आ गया कि – तुम यहां क्या झक मार रहे हो – और वह अपने आप पर हंसने लगा।

उसने रात को ही अपने नौकर को बुलवाया और उसे पीटर्सबर्ग जाने की तैयारी करने का आदेश दिया। वह एक ही घर में उसके साथ नहीं रह सकता था। उसके लिये यह कल्पना करना कठिन था कि वह उसके साथ अब बातचीत ही कैसे करेगा। उसने तय कर लिया कि उसके नाम पत्र छोड़कर वह अगले दिन ही यहां से चला जायेगा और पत्र में हमेशा के लिये उससे अपना नाता तोड़ने का इरादा ज़ाहिर कर देगा।

अगली सुबह को, जब नौकर कॉफ़ी लेकर उसके कमरे में आया तो प्येर खुली हुई किताब हाथ में लिये सोफ़े पर सो रहा था।

वह जाग गया और यह न समझ पाते हुए देर तक सहमा-सहमा-सा इधर-उधर देखता रहा कि वह कहां है।

"काउंटेस ने यह पूछने का हुक्म दिया है कि हुज़ूर घर पर ही हैं या नहीं," नौकर ने कहा।

किन्तु इसके पहले कि प्येर यह तय कर पाता कि क्या जवाब दे, रुपहली कसीदाकारीवाला रेशमी ड्रेसिंग गाउन पहने हुए काउंटेस खुद ही उसके कमरे में आ गयी। वह बड़ी-बड़ी चोटियों का मुकुट जैसा सीधा-सादा केश-विन्यास किये थी, शान्त और भव्य थी। केवल उसके कुछ-कुछ उभरे, मरमरी मस्तक पर क्रोध का बल-सा दिखायी दे रहा था। अपने अत्यधिक आत्म-संयम से काम लेते हुए वह नौकर के सामने चुप रही। उसे द्वन्द्व-युद्ध के बारे में मालूम था और वह उसी की चर्चा करने आई थी। नौकर के कॉफ़ी रख देने और कमरे से बाहर चले जाने तक उसने इन्तज़ार किया। प्येर ने चश्मे में से भीरुता से उसकी तरफ़ देखा और जिस तरह कुत्तों से घिरा ख़रगोश दुश्मनों को सामने देखते हुए भी कान दबाकर लेटा रहता है, वैसे ही प्येर ने भी पुस्तक पढ़ते जाने का प्रयास किया। किन्तु यह अनुभव करके कि ऐसा करना बेकार और असम्भव है, उसने भीरुता से पुनः उसकी ओर देखा। वह बैठी नहीं और नौकर के बाहर जाने का इन्तज़ार करते हुए तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ प्येर की ओर देखती जा रही थी।

"यह क्या क़िस्सा है? मैं पूछती हूं कि आपने यह क्या किया है?" उसने कड़ाई से पूछा।

"मैंने? मैंने क्या किया है?" प्येर ने उत्तर दिया।

"देखिये तो, बड़े सूरमा बनने चले हैं! जवाब दीजिये न कि आपने यह द्वन्द्व-युद्ध किसलिये किया? आप इससे क्या प्रमाणित करना चाहते थे? क्या? मैं आपसे पूछ रही हूं।" प्येर ने बेढंगेपन से सोफ़े पर करवट ली, मुंह खोला, मगर वह कुछ भी जवाब नहीं दे सका।

"अगर आप जवाब नहीं देते हैं तो मैं आपको असलियत बताती हूं..." एलेन कहती गयी। "आपसे जो कुछ भी कहा जाता है, आप उस सब पर विश्वास कर लेते हैं। आपसे कहा गया..." एलेन हंस पड़ी, "कि दोलोख़ोव मेरा प्रेमी है," उसने बात करने के अपने अशिष्ट ढंग से किसी भी अन्य शब्द की भांति **प्रेमी** शब्द का भी बेझिझक उच्चारण करते हुए फ़्रांसीसी में कहा, "और आपने इसपर विश्वास कर लिया! किन्तु इससे आपने सिद्ध क्या किया? क्या सिद्ध किया आपने इस द्वन्द्व-युद्ध से? यही, कि आप उल्लू हैं? – मगर यह तो सब को पहले से मालूम है! इसका नतीजा क्या होगा? यही, कि सारा मास्को मुझपर हंसेगा। इसका यही नतीजा होगा कि हर कोई यह कहेगा कि आपने शराब के नशे की हालत में एक ऐसे आदमी को द्वन्द्व-युद्ध के लिये चुनौती दी जिससे आप अकारण ही ईर्ष्या करते हैं," एलेन अधिकाधिक उत्तेजित होते और आवाज़ को ऊंची करते हुए कहती गयी, "जो आपकी तुलना में हर दृष्टि से बेहतर है..."

"हुम... हुम," प्येर माथे पर बल डालकर, उसकी ओर देखे तथा अपने को ज़रा भी हिलाये-डुलाये बिना बुदबुदाया।

"और किसलिये आपने यह विश्वास कर लिया कि वह मेरा प्रेमी है?.. किसलिये? क्योंकि मुझे उसकी संगत अच्छी लगती है? अगर आप अधिक समझदार और अधिक मधुर होते तो मैंने आपकी संगत को तरजीह दी होती।"

"मेरे साथ बात नहीं कीजिये... आपकी मिन्नत करता हूं," प्येर खरखरी आवाज़ में फुसफुसाया।

"किसलिये बात न करूं! मैं कह सकती हूं और बड़े साहस से यह कहूंगी कि कोई विरली ही ऐसी पत्नी होगी जो आपके जैसा पति होने पर अपने प्रेमी न बना ले, मगर मैंने ऐसा नहीं किया," उसने कहा। प्येर ने कुछ कहना चाहा, अजीब-सी नज़रों से, जिनका भाव वह नहीं समझ पायी, उसने एलेन की तरफ़ देखा और फिर से लेट

गया। इस क्षण उसे शारीरिक पीड़ा हो रही थी, उसे अपनी छाती पर बोझ अनुभव हो रहा था और उसका दम घुटा जा रहा था। वह जानता था कि इस पीड़ा को ख़त्म करने के लिये उसे कुछ करना चाहिये, किन्तु जो वह करना चाहता था, वह बहुत ही भयानक था।

"हमारे लिये अलग हो जाना ही बेहतर होगा," उसने टूटती-सी आवाज़ में कहा।

"हम अलग हो जायें, बड़ी ख़ुशी से, लेकिन इस शर्त पर कि आप मेरे जीवन-निर्वाह की व्यवस्था कर दें," एलेन ने उत्तर दिया... "यह भी बहुत बड़ी धमकी दी आपने मुझे अलग होने की!"

प्येर उछलकर सोफ़े से खड़ा हुआ और लड़खड़ाता हुआ उसकी तरफ़ लपका।

"मैं तुझे मार डालूंगा!" वह चिल्ला उठा और मेज़ पर से संगमरमर की एक पटिया उठाकर ऐसी शक्ति से, जिसका अब तक उसे स्वयं ज्ञान नहीं था, उसने एलेन की ओर क़दम बढ़ाया और पटिया को घुमाया।

एलेन का चेहरा भयानक हो उठा। वह चीख़ी और पीछे हट गयी। प्येर में उसके पिता का ख़ून बोल उठा था। प्येर ने जनून के जोश और आकर्षण को अनुभव किया। उसने पटिया को फेंक दिया, उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले, वह हाथ फैलाये हुए एलेन की तरफ़ बढ़ा और ऐसी भयानक आवाज़ में "दफ़ा हो!" चिल्लाया कि घर के सभी लोग कांप उठे। यदि एलेन उसके कमरे से भाग न जाती तो भगवान ही जानता है कि इस वक़्त प्येर क्या करता।

एक सप्ताह बाद प्येर ने अपनी पत्नी को मध्य रूस की अपनी सारी जागीरों का (जो उसकी कुल सम्पत्ति का आधे से अधिक भाग थीं) अधिकार-पत्र सौंप दिया और अकेला ही पीटर्सबर्ग चला गया।

## ७

लीसिये गोरि जागीर पर आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई तथा प्रिंस अन्द्रेई की मृत्यु की ख़बर पहुंचे दो महीने हो गये थे। दूतावास के

द्वारा भेजे गये सभी पत्रों तथा सारी ढूंढ़-तलाश के बावजूद उसका शव नहीं मिला था और बन्दियों की सूची में भी उसका नाम नहीं था। उसके रिश्तेदारों के लिये सबसे बुरी बात तो अभी भी इस आशा का बने रहना था कि स्थानीय लोग उसे युद्ध-क्षेत्र से उठा ले गये थे और शायद वह पराये लोगों के बीच स्वस्थ हो रहा हो या मौत की घड़ियां गिन रहा हो और अपने बारे में सूचना देने में असमर्थ हो। अख़बारों में, जिनसे बुज़ुर्ग बोल्कोन्स्की को आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई की सबसे पहले सूचना मिली, सदा की भांति बहुत संक्षिप्त और गोल-मोल ढंग से इतना ही लिखा हुआ था कि रूसियों को शानदार लड़ाइयां लड़ने के बाद पीछे हटने को मजबूर होना पड़ा और रूसी सेनायें बड़े ही व्यवस्थित ढंग से पीछे हटीं। इस सरकारी सूचना से बुज़ुर्ग प्रिंस यह समझ गये कि हमारी सेनायें पिट गयी हैं। आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई की ख़बर देनेवाले अख़बारों के एक सप्ताह बाद कुतूज़ोव का पत्र आया जिसमें उन्होंने बुज़ुर्ग प्रिंस को उनके बेटे के भाग्य के बारे में सूचित किया था।

"आपका बेटा," कुतूज़ोव ने लिखा था, "हाथ में झण्डा लिये रेजिमेंट के आगे-आगे बढ़ता हुआ अपने पिता तथा मातृभूमि के सच्चे वीर सपूत की भांति मेरी आंखों के सामने ही गिरा था। मुझे और पूरी सेना को इस बात का बड़ा खेद है कि अभी तक यह पता नहीं चल सका कि वह जीवित है या नहीं। मैं आपको और अपने को इस आशा से सान्त्वना देता हूं कि आपका बेटा जीवित है, अन्यथा युद्ध-क्षेत्र में मिलनेवाले जिन अफ़सरों की सूची मुझे दी गयी है, उसमें उसका नाम भी होता।"

बुज़ुर्ग प्रिंस को यह ख़त शाम को काफ़ी देर से और उस वक़्त मिला जब वह अपने कमरे में अकेले थे। अगली सुबह को वह हर दिन की तरह घूमने गये, मगर कारिन्दे, माली तथा वास्तुकार के साथ उन्होंने कोई बातचीत नहीं की और यद्यपि उनके चेहरे पर क्रोध झलक रहा था, तथापि उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा।

अपने नियत समय पर प्रिंसेस मरीया जब उनके कमरे में आई तो वह ख़राद पर काम कर रहे थे, मगर सदा की भांति उन्होंने उसकी तरफ़ नहीं देखा।

"अरे! प्रिंसेस मरीया!" उन्होंने बनावटी अन्दाज़ में कहा और

छेनी को फेंक दिया। ( ज़ोर से घुमाये जाने के कारण ख़राद का पहिया अभी तक घूम रहा था। प्रिंसेस मरीया को पहिये की धीमी होती चीं-चर्र लम्बे अरसे तक याद रही, क्योंकि बाद में जो कुछ हुआ, यह ध्वनि उसके साथ जुड़कर रह गयी थी। )

प्रिंसेस मरीया पिता के निकट गयी, उसने उनका चेहरा देखा और अचानक उसके अन्तर में मानो कोई चीज़ टूट गयी। उसकी आंखों के सामने अन्धेरा-सा छा गया। उसने पिता के चेहरे से ही, जो उदास और बुझा हुआ नहीं था, मगर क्रोधपूर्ण और कृत्रिमता की नक़ाब चढ़ाये था, यह समझ गयी कि अभी-अभी उसपर भयानक दुर्भाग्य का पहाड़ टूट गिरेगा और उसे कुचल डालेगा, उसके जीवन के सबसे बुरे दुर्भाग्य का पहाड़, जिसका उसे अभी तक अनुभव नहीं हुआ था, जो असाध्य और अनबूझ था, ऐसे व्यक्ति की मृत्यु के दुर्भाग्य का पहाड़ जिसे वह प्यार करती थी।

"पिता जी! अन्द्रेई?" भद्दी और बेढंगी प्रिंसेस ने शोक और आत्म-विस्मृति के ऐसे अवर्णनीय सौन्दर्य से ये शब्द कहे कि पिता बेटी की नज़र की ताब न ला सके और उन्होंने सिसकी भरकर मुंह फेर लिया।

"ख़बर आयी है। बन्दियों और मृतकों में भी उसका नाम नहीं है। कुतूज़ोव का पत्र आया है," उन्होंने ऐसे चीख़कर कहा मानो इस चीख़ से प्रिंसेस को दूर भगा देना चाहते हों, "मारा गया!"

प्रिंसेस गिरी नहीं, बेहोश भी नहीं हुई। उसके चेहरे का रंग उड़ चुका था, किन्तु जब उसने उक्त शब्द सुने तो उसके चेहरे का भाव बदल गया और उसकी चमकीली, सुन्दर आंखों में ज्योति-सी जगमगा उठी, मानो ख़ुशी, पारलौकिक प्रसन्नता, जो इस दुनिया के दुख-दर्दों से मुक्त है, उस गहरे शोक पर, जो उसके अन्तर में था, छा गयी थी। वह पिता का सारा डर भूल गयी, उनके पास गयी, उसने उनका हाथ अपने हाथ में ले लिया, उन्हें अपनी तरफ़ खींचा और उनकी दुबली-पतली, उभरी नसोंवाली गर्दन के गिर्द अपना हाथ डाल दिया।

"पिता जी," उसने कहा, "मुझसे मुंह नहीं मोड़िये, हम मिलकर रोयेंगे।"

"नीच, कमीने!" प्रिंसेस की ओर से मुंह फेरते हुए बुज़ुर्ग चिल्ला

उठे। "सेना को मरवा डाला, लोगों को मरवा डाला! किसलिये? जाओ, जाओ, जाकर लीज़ा को बता दो!"

प्रिंसेस अपने को असहाय-सी अनुभव करते हुए पिता के निकट आरामकुर्सी पर बैठ गयी और रो पड़ी। वह अब उस क्षण में अपने भाई को अपनी आंखों के सामने देख रही थी, जब उसने बड़े प्यार और साथ ही अपने घमण्ड का भाव दिखाते हुए उससे और लीज़ा से विदा ली थी। वह क्षण भी उसकी आंखों के सामने था, जब उसने सस्नेह और उपहास की मुद्रा बनाते हुए देव-प्रतिमावाली सलीब की ज़ंजीर अपने गले में पहनी थी। "अब तो उसने अपनी आस्था व्यक्त की या नहीं? अपनी अनास्था के लिये उसे पश्चाताप हुआ या नहीं? क्या अब वह वहां है? वहां, शाश्वत चैन और परम सुख के संसार में," वह सोच रही थी।

"पिता जी, मुझे बताइये कि यह कैसे हुआ?" प्रिंसेस ने रोते हुए पूछा।

"जाओ, जाओ, वह उस लड़ाई में मारा गया, जहां रूस के सर्वश्रेष्ठ लोगों और रूसी ख्याति की हत्या करवा दी गयी। प्रिंसेस मरीया, जाइये। जाकर लीज़ा को यह बता दो। मैं अभी आता हूं।"

प्रिंसेस मरीया जब पिता के कमरे से लौटी तो टुइयां-सी प्रिंसेस अपने चेहरे पर आन्तरिक और सुख-चैन का वह भाव लिये, जो केवल गर्भवती नारियों का ही लक्षण होता है, कसीदा काढ़ रही थी। उसने प्रिंसेस मरीया की तरफ़ देखा। स्पष्ट था कि उसकी आंखों ने प्रिंसेस मरीया की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया, वे तो उसके अपने भीतर, कहीं गहराई में झांक रही थीं, उसके अन्दर हो रही किसी सुखद और रहस्यपूर्ण चीज़ की थाह ले रही थीं।

"मरीया," उसने कढ़ाई के फ़्रेम से हटते और पीछे की ओर झुकते हुए कहा, "अपना हाथ मुझे दो।" उसने प्रिंसेस का हाथ लेकर उसे अपने पेट पर टिका दिया।

उसकी आंखें प्रतीक्षा में मुस्करा दीं, रोयों से ढका होंठ ऊपर को उठ गया और बाल-सुलभ प्रसन्नता से ऊपर ही उठा रहा।

प्रिंसेस मरीया उसके सामने घुटनों के बल हो गयी और उसने भाभी की पोशाक की तहों में अपना मुंह छिपा लिया।

"सुनो, सुनो – सुनती हो? बड़ा अजीब-सा लगता है मुझे।

जानती हो मरीया, मैं उसे बेहद प्यार करूंगी," लीज़ा ने चमकती, खुशी छलकाती आंखों से ननद की ओर देखते हुए कहा। प्रिंसेस मरीया अपना सिर ऊपर नहीं उठा पायी – वह रो रही थी।

"क्या बात है, माशा?"

"कोई बात नही... यों ही मेरा मन उदास हो गया... अन्द्रेई के लिये मन उदास हो गया," उसने भाभी के घुटनों से आंसू पोंछते हुए उत्तर दिया। इस सुबह के दौरान प्रिंसेस मरीया ने अपनी भाभी को दुखद समाचार के लिये कई बार तैयार करना शुरू किया और हर बार ही रो पड़ी। टुइयां-सी प्रिंसेम के बहुत असावधान होने के बावजूद प्रिंसेस मरीया के इन आंसुओं ने, जिनका कारण वह समझ नही पा रही थी, उसे बेचैन कर दिया। उसने कहा तो कुछ नहीं, मगर परेशानी से, मानो कुछ ढूंढ़ती हुई, इधर-उधर देखती रही। लंच के पहले बुज़ुर्ग प्रिंस, जिनसे वह हमेशा डरती रहती थी, इस समय विशेष रूप से बहुत ही बेचैन और क्रोधपूर्ण मुद्रा बनाये हुए उसके कमरे में आये और कुछ भी कहे बिना बाहर चले गये। उसने प्रिंसेस मरीया की तरफ़ देखा, इसके बाद अपने भीतर ही संकेन्द्रित आंखों के उस भाव के साथ, जो गर्भवती स्त्रियों की आंखों में होता है, सोच में डूबकर अचानक रो पड़ी।

"अन्द्रेई की कोई खबर आई है क्या?" उसने पूछा।

"नहीं, तुम जानती ही हो कि इतनी जल्दी कोई खबर नहीं आ सकती। पिता जी परेशान हैं और मेरा दिल डर रहा है।"

"तो कोई खबर नहीं आई?"

"नही," प्रिंसेस मरीया ने अपनी चमकती आंखों से भाभी को दृढ़तापूर्वक देखते हुए उत्तर दिया। उसने तय कर लिया था कि भाभी से कुछ नही कहेगी और पिता जी को भी इसके लिये राज़ी कर लिया था कि शिशु-जन्म तक, जो कुछ ही दिनों की बात थी, अन्द्रेई के बारे में प्राप्त भयानक समाचार को वे उससे छिपाये रखेंगे। प्रिंसेस मरीया और बुज़ुर्ग प्रिंस अपने-अपने ढंग से इस दुख को सहन कर रहे थे, छिपा रहे थे। बुज़ुर्ग प्रिंस आशा को संजोये नही रहना चाहते थे – उन्होंने यह मान लिया था कि प्रिंस अन्द्रेई लड़ाई में खेत रहा है और इस चीज़ के बावजूद कि उन्होंने एक कर्मचारी को बेटे का अता-पता मालूम करने के लिये आस्ट्रिया भेजा था, साथ ही मास्को में उसका

बुत बनाने का भी आदेश दे दिया था, जिसे वह अपने बाग़ में स्थापित करना चाहते थे और वह सब से यही कहते थे कि उनका बेटा लड़ाई में मारा गया। उन्होंने अपने जीवन का रंग-ढंग पहले की तरह बनाये रखने का प्रयास किया, मगर उनकी ताक़त जवाब दे गयी – पहले की तुलना में वह अब कम घूमते थे, कम खाते-पीते, कम सोते थे और दिन प्रति दिन कमज़ोर होते जाते थे। प्रिंसेस मरीया आशा बनाये थी। वह भाई को जीवित मानते हुए उसके लिये प्रार्थना करती थी और किसी भी क्षण उसके घर लौटने की ख़बर पाने की राह देखती थी।

## ८

"मेरी प्यारी," १६ मार्च को टुइयां-सी प्रिंसेस ने नाश्ते के बाद प्रिंसेस मरीया को सम्बोधित किया और पुरानी आदत के मुताबिक़ उसका रोयों से ढका होंठ ऊपर को उठ गया। किन्तु चूंकि अन्द्रेई के बारे में प्राप्त होनेवाले भयानक समाचार के बाद इस घर के सभी लोगों की मुस्कान में ही नहीं, बल्कि बातचीत की ध्वनियों और चाल-ढाल में भी दुख-शोक की छाया बनी रहती थी, इसलिये सामान्य मनःस्थिति के अनुरूप (यद्यपि वह इसका कारण नहीं जानती थी) प्रिंसेस की मुस्कान भी ऐसी थी कि वह इस शोक की और अधिक याद दिलाती थी।

"मेरी बहन, मुझे डर है कि आज के ब्रेकफ़ेस्ट (जैसा कि बावर्ची फ़ोका नाश्ते को कहता था) से मेरी तबीयत कुछ गड़बड़ न हो जाये।"

"क्या बात है, मेरी प्यारी? तुम्हारे चेहरे का रंग उड़ा हुआ है। ओह, एकदम पीला है तुम्हारा चेहरा तो," अपनी ढीली-ढाली बोझल चाल से भाभी की ओर भागते हुए प्रिंसेस मरीया ने घबराकर कहा।

"प्रिंसेस, क्या मरीया बोगदानोव्ना को न बुलवा भेजा जाये?" यहां उपस्थित एक नौकरानी ने पूछा। (मरीया बोगदानोव्ना निकट के क्षेत्रीय नगर की दाई थी जो दो सप्ताह से लीसिये गोरि में रह रही थी।)

"हां, बात तो ठीक है," प्रिंसेस मरीया ने कहा, "शायद ऐसा ही है। मैं जाती हूं। हिम्मत से काम लो, मेरी फ़रिश्ते जैसे भाभी!" उसने लीज़ा को चूमा और कमरे से बाहर जाना चाहा।

"ओह, नहीं, नहीं!" और टुइयां-सी प्रिंसेस के चेहरे पर पीलेपन के अतिरिक्त अनिवार्य शारीरिक पीड़ा का बच्चे जैसा भय झलक उठा।

"नहीं, यह तो हाज़मे की गड़बड़ी है... माशा, यही कहना कि हाज़मे की गड़बड़ी है..." और टुइयां-सी प्रिंसेस अपने छोटे-छोटे हाथों को कुछ भद्दे ढंग से दबाते, बच्चे की तरह मचलते और ढोंग-सा करते हुए रोने लगी। प्रिंसेस मरीया दाई मरीया बोगदानोव्ना को बुलाने के लिये कमरे से बाहर भाग गयी।

"हे भगवान! हे भगवान! ओह!" उसे अपने पीछे भाभी की आवाज़ सुनायी दी।

छोटे-छोटे, गोरे-गोरे हाथों को मलती, और चेहरे पर अर्थपूर्ण शान्ति का भाव बनाये हुए दाई सामने से आती दिखायी दी।

"मरीया बोगदानोव्ना! लगता है कि मामला शुरू हो गया," प्रिंसेस मरीया ने भय-विस्फारित आंखों से दाई की ओर देखते हुए कहा।

"शुक्र है भगवान का," चाल तेज़ किये बिना मरीया बोगदानोव्ना ने उत्तर दिया। "आप जैमी कुमारी लड़कियों को यह सब कुछ जानने की ज़रूरत नहीं।"

"लेकिन मास्को से डाक्टर तो अभी तक आया नहीं?" प्रिंसेस कह उठी। (लीज़ा और प्रिंस अन्द्रेई की इच्छानुसार एक प्रसूति-विशेषज्ञ डाक्टर को मास्को से बुलवा भेजा गया था और हर क्षण उसके आने की प्रतीक्षा हो रही थी।)

"कोई बात नहीं, प्रिंसेस, आप कोई चिन्ता नहीं करें," मरीया बोगदानोव्ना ने कहा, "डाक्टर के बिना भी सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा।"

पांच मिनट बाद प्रिंसेस ने अपने कमरे से यह सुना कि कोई भारी-भरकम चीज़ ले जायी जा रही है। उसने झांककर देखा – न जाने किस कारण, नौकर चमड़े के उस सोफ़े को, जो प्रिंस अन्द्रेई के अध्ययन-कक्ष में रखा हुआ था, शयन-कक्ष में ले जा रहे थे। सोफ़े को ले जानेवालों के चेहरों पर गम्भीरता और शान्ति का भाव था।

प्रिंसेस मरीया अपने कमरे में अकेली बैठी हुई घर में सुनायी देनेवाली ध्वनियों पर कान लगाये थी, दरवाज़े के पास से किसी के आने-जाने पर कभी-कभार दरवाज़ा खोलती और यह देखती कि दालान में क्या हो रहा है। कुछ औरतें दबे पांवों इधर-उधर आयी-गयीं, उन्होंने प्रिंसेस की तरफ़ देखा और अपने मुंह दूसरी ओर कर लिये। उसे उनसे कुछ पूछने की हिम्मत नहीं हुई, उसने दरवाज़ा बन्द किया और अपने कमरे में लौट आयी। कभी तो वह आरामकुर्सी पर बैठ जाती, कभी प्रार्थना-पुस्तक हाथ में ले लेती और कभी देव-प्रतिमाओं के सामने घुटने टेककर प्रार्थना करने लगती। उसने बहुत दुखी और चकित होते हुए यह अनुभव किया कि प्रार्थना से उसकी उत्तेजना शान्त नहीं हो पा रही थी। अचानक उसके कमरे का दरवाज़ा धीरे से खुला और दहलीज़ पर सिर पर रूमाल बांधे उसकी बूढ़ी आया प्रास्कोव्या सावीश्ना दिखायी दी। वह लगभग कभी भी उसके कमरे में नहीं आती थी, क्योंकि बुज़ुर्ग प्रिंस ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया था।

"तुम्हारे पास बैठने को आई हूं, प्यारी माशा," आया ने कहा, "देव-प्रतिमाओं के सामने जलाने के लिये प्रिंस की शादी की मोमबत्तियां* भी ले आई हूं, मेरी फ़रिश्ता बेटी," उसने आह भरकर इतना और जोड़ दिया।

"ओह, मैं कितनी ख़ुश हूं तुम्हारे आने से, मेरी आया।"

"भगवान बड़े दयालु हैं, बिटिया।" आया ने देव-प्रतिमाओं के सामने सुनहरी मोमबत्तियां जला दीं और जुराब बुनने का काम लेकर दरवाज़े के पास बैठ गयी। प्रिंसेस मरीया किताब लेकर पढ़ने लगी। केवल जब क़दमों की आहट या आवाज़ें सुनायी देतीं तो प्रिंसेस भयभीत और प्रश्नसूचक दृष्टि से आया की तरफ़ और आया तसल्ली देती नज़र से उसकी ओर देखती। घर के हर कोने में वही भावना व्याप्त थी, सभी के दिल-दिमाग़ पर छाई थी जिसे अपने कमरे में बैठी हुई प्रिंसेस मरीया अनुभव कर रही थी। इस अन्ध-विश्वास के अनुसार कि जितने कम लोगों को मां बननेवाली नारी की प्रसव-पीड़ा की जानकारी होगी, उसे उतनी ही कम तकलीफ़ होगी, सभी यह ढोंग कर रहे थे

---

* तत्कालीन प्रचलित जन-धारणा के अनुसार ऐसी मोमबत्तिया शिशु-जन्म के समय सहायक होती थीं। – सं०

कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं है। कोई भी इस मामले की चर्चा नही कर रहा था, किन्तु सभी लोगों में अच्छे तौर-तरीक़ों की सामान्य गम्भीरता और शिष्टता के अतिरिक्त, जिनका प्रिंस के घर में बोल-बाला था, एक सामान्य चिन्ता, हृदय की कोमलता और यह चेतना भी दिखायी दे रही थी कि इस क्षण यहां कोई महान और गम्भीर घटना घट रही है।

नौकरानी-छोकरियों के बड़े कमरे में हंसी सुनायी नहीं दे रही थी। भोजन-कक्ष के पासवाले कमरे में सभी लोग कुछ करने को तैयार ख़ामोश बैठे थे। नौकरों की कोठरियों में खपचियां और मोमबत्तियां जल रही थीं और सभी जाग रहे थे। बुज़ुर्ग प्रिंस पंजों के बल अपने कमरे में इधर-उधर आ-जा रहे थे और उन्होंने तीख़ोन को यह जानने के लिये मरीया बोगदानोव्ना के पास भेजा कि क्या स्थिति है।

"सिर्फ़ इतना ही कहना कि प्रिंस ने स्थिति जानने के लिये भेजा है और फ़ौरन लौटकर मुझे उसका जवाब बताना।"

"प्रिंस से कह दो कि दर्द शुरू हो गया है," मरीया बोगदानोव्ना ने अर्थपूर्ण दृष्टि से तीख़ोन की तरफ़ देखकर कहा। तीख़ोन ने लौटकर प्रिंस को यही बताया।

"ठीक है," प्रिंस ने अपने कमरे का दरवाज़ा बन्द करते हुए कहा और इसके बाद तीख़ोन को प्रिंस के कमरे से कोई भी आवाज़ सुनायी नही दी। थोड़ी देर बाद तीख़ोन मानो मोमबत्तियां ठीक करने के लिये कमरे में गया। प्रिंस को सोफ़े पर लेटे हुए देखकर तीख़ोन ने उन्हें और उनके चिन्तित चेहरे को ग़ौर से देखा, सिर हिलाया, चुपचाप उनके पास गया, उनके कन्धे को चूमा और मोमबत्तियां ठीक किये बिना और यह कहे बिना ही बाहर चला गया कि वह किसलिये कमरे में आया था। संसार के एक सबसे महत्त्वपूर्ण रहस्य की प्रक्रिया जारी रही। शाम बीत गयी, रात आ गयी। इस अबोध-अगाध प्रक्रिया के कारण प्रतीक्षा और हार्दिक कोमलता की जो भावना पैदा हुई थी, वह कम होने के बजाय बढ़ती जा रही थी। कोई भी सोया नही।

मार्च महीने की ऐसी रात थी, जब जाड़ा मानो अपनी ताक़त दिखाने के लिये बड़े ज़ोर और क्रोध से अन्तिम बार ख़ूब बर्फ़ गिराता है और बर्फ़ के आंधी-तूफ़ान लाता है। मास्को से आनेवाले जर्मन

डाक्टर का हर क्षण इन्तज़ार हो रहा था, जिसकी बग्घी के घोड़े बदलने के लिये राजमार्ग पर घोड़े भेजे जा चुके थे और गड्ढों-खाइयों से बचकर निकलने का रास्ता दिखाने के लिये लालटेनें लिये हुए घुड़सवार मोड़ पर तैनात कर दिये गये थे।

प्रिंसेस मरीया ने बहुत पहले ही पुस्तक बन्द कर दी थी। वह अपनी चमकीली आंखों को आया के झुर्रीदार चेहरे (जिसकी हर छोटी से छोटी झुर्री उसकी चिर जानी-पहचानी थी), सिर पर बंधे रूमाल से निकल आयी सफ़ेद लटों और ठोड़ी के नीचे लटक रही त्वचा पर टिकाये हुए चुपचाप बैठी थी।

जुराब बुनती हुई आया सावीश्ना अपने शब्दों को न सुनते और न समझते हुए धीमी-धीमी आवाज़ में सैकड़ों बार पहले सुनायी जा चुकी यही बात सुना रही थी कि कैसे प्रिंसेस मरीया की दिवंगता मां ने कीशीनेव में दाई की जगह एक मामूली किसान औरत की मदद से उसे जन्म दिया था।

"भगवान बड़े दयालु हैं, डाकदारों (डाक्टरों) की कभी ज़रूरत नहीं पड़ी," वह कह रही थी। अचानक हवा का एक बहुत तेज़ झोंका आया, खिड़की के इकहरे चौखटे से टकराया (बुज़ुर्ग प्रिंस के आदेशानुसार भरत पक्षियों के प्रकट होते ही खिड़कियों में दोहरे चौखटों की जगह इकहरे चौखटे लगा दिये जाते थे), कसकर बन्द न की गयी सिटकनी को खोल दिया, बेल-बूटेदार परदे को ज़ोर से फड़फड़ाया और ठण्डी हवा तथा बर्फ़ के थपेड़ों के साथ उसने मोमबत्ती बुझा दी। प्रिंसेस मरीया सिहरी, आया ने जुराब नीचे रखी, खिड़की के पास गयी और मुंह बाहर निकालकर खुले हुए पट को पकड़ने लगी। ठण्डी हवा उसके दुपट्टे के पल्लुओं और दुपट्टे से बाहर निकली हुई सफ़ेद लटों को लहरा रही थी।

"प्रिंसेस, मेरी लाड़ली, प्रेश्पेक्ट (प्रोस्पेक्ट यानी बड़ी सड़क) पर बग्घी में कोई आ रहा है!" खिड़की के पट को पकड़े और उसे बन्द न करते हुए आया ने कहा। "लालटेनों के साथ। डाकदार ही होना चाहिये..."

"हे भगवान! शुक्र है भगवान का!" प्रिंसेस ने कहा। "मुझे उसके पास जाना चाहिये, वह तो रूसी नहीं जानता।"

प्रिंसेस मरीया ने शॉल ओढ़ ली और आगन्तुक से मिलने के लिये

नीचे भाग गयी। प्रवेश-कक्ष को लांघते हुए उसने खिड़की में से झांका और उसे दरवाज़े के सामने लालटेनें तथा एक बग्घी दिखायी दी। वह ज़ीने की तरफ़ गयी। सीढ़ी के जंगले के स्तम्भ पर चर्बी की एक बत्ती जल रही थी और हवा के कारण टपक रही थी। सहमा-सहमा और हाथ में दूसरी मोमबत्ती लिये हुए फ़िलीप नाम का नौकर नीचे, ज़ीने के पहले प्लेटफ़ार्म पर खड़ा था। और भी नीचे, ज़ीने के मोड़ पर गर्म बूट पहने किसी के ज़ीना चढ़ने की आहट मिली। प्रिंसेस मरीया को लगा कि परिचित-सी आवाज़ में कोई कुछ कह रहा था।

"शुक्र है भगवान का!" उसे आवाज़ सुनायी दी। "और पिता जी?"

"बिस्तर पर चले गये हैं," बटलर देम्यान ने उत्तर दिया जो नीचे पहुंच चुका था।

आगन्तुक ने कुछ और पूछा, देम्यान ने जवाब दिया और गर्म बूट पहने व्यक्ति के क़दमों की आवाज़ नज़र न आनेवाले ज़ीने के मोड़ से तेज़ी से नज़दीक आने लगी। "यह तो अन्द्रेई है!" प्रिंसेस मरीया ने सोचा। "नहीं, ऐसा तो हो नहीं सकता, यह तो कोई करिश्मा ही हो सकता है," उसने सोचा, और इसी क्षण, जब वह यह सोच रही थी, ज़ीने के उस प्लेटफ़ार्म पर, जहां नौकर मोमबत्ती लिये खड़ा था, फ़रकोट पहने, जिसके कालर पर बर्फ़ पड़ी हुई थी, प्रिंस अन्द्रेई का चेहरा, उसकी आकृति दिखायी दी। हां, यह वही था, मगर पीले, दुबले-पतले, बदले हुए तथा अजीब ढंग से कोमल और चिन्तित चेहरेवाला। ज़ीना चढ़कर उसने बहन को गले लगाया।

"आप लोगों को मेरा ख़त नहीं मिला?" उसने पूछा और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना, जो उसे मिलता भी नहीं, क्योंकि गला रुंधने के कारण बहन बोलने में असमर्थ थी, वह मुड़ा और डाक्टर के साथ, जो उसके पीछे-पीछे आ रहा था (अन्तिम घोड़ा-बदल चौकी पर इनकी भेंट हो गयी थी), तेज़ क़दमों से फिर ज़ीने के ऊपर आया और उसने फिर से बहन को गले लगाया।

"यह भी कैसा संयोग है!" उसने कहा, "मेरी प्यारी बहन, माशा!" और फ़रकोट तथा बूट उतारकर वह पत्नी के कमरे में गया।

# ६

रात की सफ़ेद टोपी पहने टुइया-सी प्रिंसेस तकियों के सहारे लेटी हुई थी। ( दर्द अभी बन्द हुआ था। ) उसके तमतमाये, पसीने से भीगे गालों पर काली जुल्फ़ें लहरा रही थीं। काले रोयों सहित ऊपरी होंठ-वाला उसका लाल-लाल और सुन्दर मुंह खुला हुआ था तथा वह खुशी से मुस्करा रही थी। प्रिंस अन्द्रेई कमरे में दाखिल हुआ और जिस सोफ़े पर वह लेटी थी, उसके पायंते खड़ा हो गया। बच्चे की तरह सहमी-सहमी और विह्वल नज़र से देख रही उसकी चमकीली आंखें प्रिंस के चेहरे पर टिक गयी, उनका भाव नहीं बदला। "मैं आप सबको प्यार करती हूं, मैंने किसी के साथ कोई बुराई नहीं की, किसलिये मैं यह दुख भोग रही हूं?" उसकी आंखें मानो यह कह रही थी। वह पति को देख रही थी, मगर इस समय उसके अपने सामने आने का अर्थ नही समझ पा रही थी। प्रिंस अन्द्रेई सोफ़े के गिर्द घूमकर उसके पास गया और उसने उसका माथा चूमा।

"मेरी रानी," उसने कहा। ये शब्द उसने पत्नी से पहले कभी नही कहे थे। "भगवान बड़े दयालु हैं..." लीज़ा ने प्रश्नसूचक, बालक की तरह भर्त्सना करती दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"मैंने तुमसे तो सहायता की आशा की थी, किन्तु तुम भी, तुम भी कुछ नही कर रहे!" उसकी आंखें कह रही थीं। उसे इस बात से हैरानी नही हुई कि वह आ गया है, वह यह समझी ही नहीं थी कि वह आ गया है। उसके आगमन का उसकी पीड़ा और राहत से कोई सम्बन्ध नही था। दर्द फिर से उठने लगा और मरीया बोगदानोव्ना ने अन्द्रेई को कमरे से बाहर चले जाने की सलाह दी।

डाक्टर कमरे में आ गया। प्रिंस अन्द्रेई बाहर आया और प्रिंसेस मरीया को देखकर फिर से उसके पास चला गया। वे फुसफुसाकर बातें करने लगे, मगर रह-रहकर चुप हो जाते थे। वे प्रतीक्षा में थे, उनके कान किसी दूसरी तरफ़ लगे हुए थे।

"भैया, तुम वहां जाओ!" प्रिंसेस मरीया ने कहा। प्रिंस अन्द्रेई फिर से पत्नी के कमरे की ओर चला गया और बग़ल के कमरे में बैठकर इन्तज़ार करने लगा। डरे-सहमे चेहरेवाली कोई औरत लीज़ा के कमरे से बाहर आयी और प्रिंस अन्द्रेई को देखकर चकरा गयी।

प्रिंस अन्द्रेई ने हाथों से मुंह ढांप लिया और कुछ मिनट तक ऐसे ही बैठा रहा। दरवाज़े के पीछे बहुत ही दयनीय, असहाय आहें-कराहें सुनायी दे रही थीं। प्रिंस अन्द्रेई दरवाज़े के पास गया और उसने उसे खोलना चाहा। कोई दरवाज़े को भीतर से पकड़े था।

"नहीं खोलिये, नहीं खोलिये!" वहां से सहमी-सी आवाज़ सुनायी दी। वह कमरे में चक्कर काटने लगा। चीखें बन्द हो गयीं, कुछ सेकण्ड और बीत गये। अचानक बग़ल के कमरे में एक भयानक चीख़, उसकी चीख़ नहीं, वह ऐसे नहीं चीख सकती थी – गूंज उठी। प्रिंस अन्द्रेई तेज़ी से दरवाज़े की तरफ़ लपका – चीख़ शान्त हो गयी, बच्चे का रोना सुनायी दिया।

"बच्चे को वहां किसलिये ले गये?" प्रिंस अन्द्रेई ने पहले क्षण में सोचा। "बच्चा? कौन-सा बच्चा?.. बच्चा वहां किसलिये है? या फिर वहां बच्चे का जन्म हुआ है?"

जब सहसा बच्चे के चीखने का प्रसन्नतापूर्ण महत्त्व उसकी समझ में आ गया तो आंसुओं से उसका गला रुंध गया और खिड़की के दासे पर दोनों कोहनियां टिकाकर वह बच्चे की तरह सिसकते हुए रो पड़ा। दरवाज़ा खुला, आस्तीनें ऊपर चढ़ाये और फ़ॉक-कोट के बिना डाक्टर बाहर आया। उसका चेहरा फक था और उसका नीचेवाला जबड़ा कांप रहा था। प्रिंस अन्द्रेई उसकी तरफ़ मुड़ा, लेकिन डाक्टर ने खोयी-खोयी नज़र से उसे देखा और एक भी शब्द कहे बिना आगे चला गया। औरत भागकर दरवाज़े के पास आई और प्रिंस अन्द्रेई को देखकर दहलीज़ पर ही ठिठक गयी। प्रिंस पत्नी के कमरे में गया। मृत प्रिंसेस उसी मुद्रा में लेटी हुई थी जिसमें प्रिंस ने उसे पांच मिनट पहले देखा था और आंखों के जड़ तथा गालों के पीले हो जाने के बावजूद उसके काले रोयों से ढके ऊपरी होंठवाले सुन्दर और बच्चों जैसे प्यारे चेहरे पर पहले जैसा भाव बना हुआ था।

"मैं आप सबको प्यार करती थी और मैंने किसी के साथ भी कोई बुराई नहीं की, लेकिन आपने मेरे साथ यह क्या किया है?" उसका सुन्दर, दयनीय और निर्जीव चेहरा कह रहा था। कमरे के कोने में मरीया बोगदानोव्ना के गोरे और कांपते हाथों में कोई छोटी तथा लाल-सी चीज़ धीरे-धीरे ठुनक और रीं-रीं कर रही थी।

इस घटना के दो घण्टे बाद प्रिंस अन्द्रेई दबे पांवों पिता के कमरे में गया। बुज़ुर्ग को सब कुछ मालूम हो चुका था। वह दरवाज़े के पास ही खड़े थे और जैसे ही दरवाज़ा खुला, उन्होंने बुढ़ापे के अनुरूप शिकंजे की तरह कठोर-खुरदरी बांहें चुपचाप बेटे के गले में डाल दीं और बच्चे की तरह रोने लगे।

तीन दिन बाद टुइयां-सी प्रिंसेस को दफ़नाया गया और प्रिंस अन्द्रेई उससे अन्तिम विदा लेने के लिये ताबूत के पास गया। ताबूत में भी वही चेहरा था, यद्यपि आंखें मुंदी हुई थीं। "ओह, आपने यह क्या किया, मेरे साथ?" यह चेहरा अभी भी यही कह रहा था। प्रिंस अन्द्रेई ने अनुभव किया कि उसकी आत्मा में मानो कोई चीज़ टूट गयी है, कि उसने ऐसा अपराध किया है जिससे कभी मुक्त नहीं हो सकेगा और जिसे कभी नहीं भूल सकेगा। वह रो नहीं पाया। बुज़ुर्ग प्रिंस भी ताबूत के पास गये और उन्होंने उसका पीला हाथ चूमा जो उसके दूसरे हाथ के ऊपर टिका हुआ था। बुज़ुर्ग प्रिंस से भी उसके चेहरे ने यही कहा: "ओह, आपने मेरे साथ यह क्या और किसलिये किया?" और बुज़ुर्ग ने उसका चेहरा देखकर झुंझलाहट से मुंह फेर लिया।

पांच दिन और बीतने पर नवजात शिशु प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच को बपतिस्मा दिया गया। बच्चे की धाय उस समय उसके पोतड़े दबाये रही, जब पादरी शिशु के लाल-लाल और सिकुड़े-सिकुड़े हाथों-पैरों पर कलहंस के पंख से ख़ुशबूदार तेल लगाता रहा।

बच्चे के दादा ने, जो उसके धर्म-पिता बने, इस डर से कांपते हुए कि कहीं उसे अपने हाथों से गिरा न दें, टीन के टेढ़े-मेढ़े टब के गिर्द उसे चक्कर लगवाया और धर्म-माता यानी प्रिंसेस मरीया को सौंप दिया। दूसरे कमरे में बैठा हुआ प्रिंस अन्द्रेई धड़कते दिल से कि कहीं बच्चे को पानी में गिरा न दें, इस रस्म के समाप्त होने की राह देख रहा था। धाय जब उसे लेकर प्रिंस अन्द्रेई के पास आयी तो उसने प्रसन्नता से उसकी तरफ़ देखा और जब उसे इस शुभ शकुन के बारे

मे बताया गया कि बच्चे के बाल सहित मोम का टुकड़ा टब के पानी में डूबा नही, बल्कि तैरता रहा, तो उसने सन्तोष प्रकट करते हुए सिर हिलाया।*

## १०

प्येर बेज़ूख़ोव के साथ दोलोख़ोव के द्वन्द्व-युद्ध में रोस्तोव के भाग लेने की बात को बुज़ुर्ग काउंट ने बड़ी कोशिश करके किसी तरह दबा दिया और रोस्तोव, जैसा कि उसे आशा थी, अफ़सर से मामूली सैनिक बनाये जाने के बजाय मास्को के गवर्नर-जनरल का एडजुटेंट नियुक्त हो गया। इसके परिणामस्वरूप वह अपने सभी परिवारवालों के साथ गांव नहीं जा सका और अपनी नयी नौकरी के कर्त्तव्य पूरे करने के लिये गर्मी भर मास्को में ही रहा। दोलोख़ोव स्वस्थ हो गया और उसके स्वस्थ होने की इस अवधि में रोस्तोव की उसके साथ ख़ास तौर पर बहुत गहरी छनने लगी। घायल दोलोख़ोव बहुत ही कोमल भावनायें रखने तथा अत्यधिक प्यार करनेवाली अपनी मां के पास ही रह रहा था। दोलोख़ोव की बूढ़ी मां, मरीया इवानोव्ना, रोस्तोव को इसीलिये चाहने लगी थी कि वह उसके बेटे फ़्योदोर का दोस्त था। वह अक्सर उससे अपने बेटे की चर्चा करती।

"हां, काउंट, हमारे आज के छल-कपट के ज़माने को देखते हुए वह दिल का बहुत ही नेक और निर्मल आत्मावाला आदमी है," वह कहती। "नेकी को कोई पसन्द नहीं करता, वह सबकी आंखों का कांटा है। आप ही बताइये, काउंट, क्या बेज़ूख़ोव की तरफ़ से यह इन्साफ़ और ईमानदारी की बात थी? लेकिन मेरा फ़्योदोर अपनी नेकदिली के कारण उसे प्यार करता था और अब भी उसके बारे में कभी एक बुरा शब्द नही कहता। पीटर्सबर्ग में उस पुलिसवाले के साथ इन्होंने जो शैतानी की थी, वह दोनों ने की थी न? लेकिन बेज़ूख़ोव का कुछ नहीं बिगड़ा और फ़्योदोर को ही यह सारी मुसीबत झेलनी पड़ी थी।

---

* पुराने रूस में नये बच्चे के भविष्य का अनुमान लगाने के लिये इस प्रकार की परम्परा प्रचलित थी। – सं०

और सो भी कैसी मुसीबत! यह ठीक है कि उसे फिर से अफ़सर बना दिया गया, मगर ऐसा किया कैसे न जाता? मैं समझती हूं कि वहां, मोर्चे पर उसके जैसे बहादुर और मातृभूमि के सच्चे सपूत बहुत नहीं होंगे। अब इस द्वन्द्व-युद्ध को ही लीजिये! इन लोगों में कोई भावना, सौजन्य नाम की कोई चीज़ है क्या? यह जानते हुए कि वह इकलौता बेटा है, उसे द्वन्द्व-युद्ध के लिये ललकारा और उसपर सीधे-सीधे गोली चला दी! यह तो भगवान की कृपा कहिये कि उसकी जान बच गयी। लेकिन किसलिये ऐसा किया गया? हमारे ज़माने में कौन इश्क़-मुहब्बत नहीं करता? अगर वह इतना ही अधिक डाही आदमी है तो उसे पहले से इसकी चेतना करवानी चाहिये थी, साल भर इस क़िस्से को चलने नहीं देना चाहिये था। उसने तो यही जानते हुए द्वन्द्व-युद्ध की चुनौती दी कि फ़्योदोर नहीं लड़ेगा, क्योंकि वह उसका ऋणी है। कितना घटियापन है! कैसी नीचता है! मेरे प्यारे काउंट, मैं जानती हूं कि आप फ़्योदोर को समझ गये हैं और विश्वास कीजिये कि इसीलिये मैं आपको दिल से चाहती हूं। बहुत कम लोग ही उसे समझ पाते हैं। यह तो बहुत ऊंची, देवतातुल्य आत्मावाला व्यक्ति है!"

अपने स्वस्थ होने के दौरान ख़ुद दोलोख़ोव भी रोस्तोव से अक्सर ऐसे शब्द कहता था जिनकी उससे किसी भी तरह आशा नहीं की जा सकती थी।

"मैं जानता हूं कि लोग मुझे बहुत बुरा आदमी मानते हैं," वह कहता, "मेरी बला से। मैं जिन्हें चाहता हूं, उनके अलावा और किसी की परवाह करने को तैयार नहीं। लेकिन जिसे प्यार करता हूं तो ऐसे कि उसके लिये अपनी जान भी दे दूंगा और दूसरे अगर मेरे रास्ते में आयेंगे तो उन्हें कुचल कर रख दूंगा। मेरी बहुत ही प्यारी, पूजनीय मां है, दो-तीन दोस्त हैं, जिनमें तुम भी शामिल हो, और बाक़ी लोगों की तरफ़ मैं सिर्फ़ उतना ही ध्यान देता हूं जितना वे मेरे लिये उपयोगी या हानिकारक हो सकते हैं। और लगभग सभी हानिकारक हैं, विशेषत: नारियां। हां, मेरे दोस्त," वह कहता गया, "मुझे प्यार करनेवाले, नेक और उच्चादर्शी पुरुष तो मिले हैं, लेकिन स्त्रियां – वे चाहे बावर्चिनें हों या काउंटेसें – इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता – अभी तक ऐसी स्त्रियां नहीं मिलीं जिन्हें ख़रीदा न जा सकता हो। अभी तक मुझे ऐसी स्वर्गिक निर्मलता, ऐसी निष्ठा के दर्शन नहीं हुए जो मैं नारी में खोजता हूं।

अगर मुझे कोई ऐसी औरत मिल जाती तो मैंने उसके लिये अपने प्राण न्योछावर कर दिये होते। लेकिन ये!.." उसने तिरस्कारपूर्ण भावना का संकेत किया। "तुम शायद यह यक़ीन नहीं करोगे कि अगर मैं अभी भी अपनी ज़िन्दगी को प्यार करता हूं तो केवल इसलिये कि अभी भी मुझे किसी ऐसी पवित्र आत्मा से मिलने की आशा है जो मुझे नया जन्म देगी, मुझे निर्मल बना देगी, ऊपर उठा देगी। लेकिन तुम यह सब कुछ नही समझते।"

"तुम्हारा ख़्याल ग़लत है, मैं बहुत अच्छी तरह से यह सब समझता हूं," रोस्तोव ने जवाब दिया जो अपने नये मित्र के अत्यधिक प्रभाव में था।

पतझर में रोस्तोव-परिवार मास्को लौट आया। जाड़े के शुरू में देनीसोव भी वापस आ गया और रोस्तोव-परिवार में ही ठहरा। निकोलाई रोस्तोव द्वारा सन् १८०६ के जाड़े के शुरू में मास्को में बिताया जानेवाला यह समय ख़ुद उसके लिये तथा उसके परिवार के लिये भी सबसे अधिक सुखद था। निकोलाई के साथ जवान लोग उसके माता-पिता के घर में आने-जाने लगे। वेरा बीस साल की सुन्दर युवती थी, सोन्या कुछ ही समय पहले खिली कली के समूचे सौन्दर्यवाली षोडशी थी, नताशा कुछ हद तक बच्ची और कुछ हद तक बड़ी थी, कभी बच्चों की तरह हास्यास्पद और कभी युवती की तरह रूप का जादू करनेवाली।

रोस्तोव-परिवार में इस वक़्त प्यार का वह विशेष वातावरण छा गया था जो उन घरों में होता है जहां बहुत ही प्यारी और बहुत ही जवान लड़कियां होती हैं। इस घर में आनेवाला हर नौजवान यौवन मे ओत-प्रोत, संवेदनशील, किसी कारण मुस्कराते (सम्भवतः अपने सुख-सौभाग्य के कारण) युवितयों के इन चेहरों और इनकी सजीव दौड़-धूप को देखते, इनकी असंगत, किन्तु सभी के प्रति स्नेहपूर्ण, सभी कुछ के लिये उत्साहपूर्ण, आशा से भरपूर बातें और गीत-संगीत की स्वतःस्फूर्त ध्वनियां को सुनते हुए प्यार की वैसी ही तत्परता और सुख-सौभाग्य की वही प्रत्याशा अनुभव करता था जो रोस्तोव-परिवार के युवजन स्वयं अनुभव करते थे।

रोस्तोव द्वारा अपने घर मे सबसे पहले लाये जानेवाले जवान लोगों में दोलोखोव भी था। नताशा को छोड़कर वह रोस्तोव-परिवार के सभी लोगों को बहुत पसन्द आया। दोलोखोव के कारण उसका अपने भाई मे लगभग झगड़ा ही हो गया। वह अपनी इस बात पर अड़ी रही कि दोलोखोव बुरे दिल का आदमी है, कि दोलोखोव के साथ द्वन्द्व-युद्ध करने के मामले में बेज़ूखोव सही था, दोलोखोव दोषी था, कि वह अप्रिय था और उसमें बड़ी बनावट थी।

"मेरे समझने की बात ही क्या है!" वह हठधर्मी से चिल्ला उठती, "दोलोखोव क्रोधी और भावनाहीन व्यक्ति है। तुम्हारे देनीसोव को तो मै पसन्द करती हूं, वह पियक्कड है, उसमें और भी बुराइयां हैं, फिर भी मैं उसे पसन्द करती हूं। इसका यह मतलब है कि मैं भी कुछ समझती हूं। नही जानती कि कैसे मैं तुम्हें अपनी बात समझाऊं – वह पहले मे ही हिसाब-किताब जोड़कर हर चीज़ करता है और यह मुझे अच्छा नही लगता। देनीसोव..."

"देनीसोव की बात दूसरी है," निकोलाई ने यह महसूस करवाते हुए जवाब दिया कि दोलोखोव के मुक़ाबले में देनीसोव कुछ भी नहीं है – यह समझना चाहिये कि दोलोखोव की आत्मा कैसी है, उसे उसकी मा के साथ देखना चाहिये, बड़ा ही कोमल दिल है उसका!"

"यह तो मैं नही जानती, लेकिन उसकी उपस्थिति में मैं बेचैनी अनुभव करती हूं। और तुम्हें मालूम है कि वह सोन्या को प्यार करता है?"

"यह बिल्कुल बकवास है"

"मुझे पूरा विश्वास है और तुम देख लेना कि मेरी बात सच निकलेगी।"

नताशा की यह भविष्यवाणी सच साबित हुई। महिलाओं की संगत न पसन्द करनेवाला दोलोखोव अक्सर यहां आने लगा और यह प्रश्न कि वह किसके लिये इस घर में आता है, बहुत जल्द ही तय हो गया (यद्यपि कोई भी इस बात को मुंह पर नहीं लाता था)। सब का यही मत था कि वह सोन्या के लिये आता है। और सोन्या, बेशक वह ऐसा कहने की कभी जुर्रत न कर पाती, यह जानती थी और दोलोखोव के आने पर हर बार ही लाल-सुर्ख़ हो जाती थी।

दोलोखोव अक्सर रोस्तोव-परिवार में ही खाना खाता, वही खेल-

नाटक देखने जाता जो इस परिवार के लोग देखते और ईओगेल के यहां तरुणों के बॉल-नृत्यों में हिस्सा लेता, जहां रोस्तोव-परिवार की लड़कियां हमेशा होती थीं। वह सोन्या की तरफ़ ख़ास ध्यान देता और उसे ऐसे घूरता कि न केवल वही शर्माकर लाल हो जाती, बल्कि उसकी नज़र को देखकर बूढ़ी काउंटेस और नताशा भी लज्जारुण हुए बिना न रह पातीं।

बिल्कुल साफ़ था कि यह ताक़तवर और अजीब-सा मर्द इस काले बालोंवाली तथा सजीली लड़की के प्यार के जादू में बंध गया था जो ख़ुद दूसरे को प्यार करती थी।

रोस्तोव ने दोलोख़ोव और सोन्या के बीच कुछ नये सम्बन्धों की ओर ध्यान दिया, मगर उसने अपने लिये इन सम्बन्धों को स्पष्ट नहीं किया। "वे सभी किसी न किसी को प्यार करती हैं," उसने सोन्या और नताशा के बारे में सोचते हुए अपने आपसे कहा। किन्तु अब दोलोख़ोव और सोन्या की उपस्थिति में वह पहले जैसी सहजता अनुभव नही करता था और इसलिये बहुत कम ही घर आता था।

सन् १८०६ की पतझर में फिर से सभी नेपोलियन के साथ लड़ाई की चर्चा करने लगे, सो भी पिछले साल की तुलना में अधिक उत्साह-उत्तेजना से। प्रति दस हज़ार व्यक्तियों के पीछे न केवल दस रंगरूट, बल्कि नौ अस्थायी सैनिक भी भर्ती करने का आदेश जारी किया गया। सभी जगह बोनापार्ट को शाप दिया जाता था और मास्को में तो शीघ्र शुरू होनेवाली जंग का ही ज़िक्र होता रहता था। रोस्तोव-परिवार के लिये युद्ध की इन तैयारियों में दिलचस्पी का केवल यही कारण था कि निकोलाई किसी भी हालत में मास्को में रुके रहने को राज़ी नहीं हो रहा था। वह तो सिर्फ़ देनीसोव की छुट्टी ख़त्म होने की प्रतीक्षा कर रहा था, ताकि क्रिसमस के पर्व के बाद उसके साथ अपनी रेजिमेंट में वापस चला जाये। नज़दीक आता हुआ जाने का वक़्त उसकी रंग-रलियों में कोई बाधा डालने के बजाय उसे इसके लिये और भी प्रोत्सा-हित करता था। वह अपना अधिकतर समय घर के बाहर दावतों, पार्टियों और नृत्य-बॉलों में बिताता था।

## ११

क्रिसमस पर्व के तीसरे दिन निकोलाई ने घर पर खाना खाया। पिछले कुछ समय से वह बहुत कम ही ऐसा करता था। इस दिन घरवालों ने विदाई की बढ़िया दावत का आयोजन किया था, क्योंकि 'प्रभुप्रकाश' पर्व के बाद वह देनीसोव के साथ रेजिमेंट में वापस जा रहा था। दोलोख़ोव और देनीसोव समेत खाने की मेज़ पर कोई बीस आदमी उपस्थित थे।

रोस्तोव-परिवार में पर्व के इन दिनों जैसी प्यार की हवा कभी नहीं रही थी, प्रेम का वातावरण कभी इतने अधिक ज़ोर से हावी नहीं हुआ था। "ख़ुशी के इन क्षणों को हाथ से नहीं जाने दो, ख़ुद प्यार करो और ख़ुद को प्यार करने दो! दुनिया में सिर्फ़ यही हक़ीक़त है और बाक़ी सब बकवास है। हम सब सिर्फ़ इसी में खोये हुए हैं," प्यार का वातावरण मानो यह कह रहा था।

हर दिन की तरह घोड़ों की दो जोड़ियों को बुरी तरह थकाने के बाद और फिर भी उन सभी जगहों पर, जहां उसे जाना था और जहां उसे बुलाया गया था, पहुंचने में सफल न होकर ठीक भोजन के वक़्त ही निकोलाई रोस्तोव घर पहुंचा। घर में दाख़िल होते ही उसने वहां प्यार के वातावरण का तनाव देखा, उसे अनुभव किया और इसके साथ ही उसे यहां उपस्थित कुछ व्यक्तियों में अजीब-सी परेशानी का भी आभास मिला। सोन्या, दोलोख़ोव, बूढ़ी काउंटेस और कुछ हद तक नताशा भी विशेष रूप से उत्तेजित नज़र आ रहे थे। निकोलाई समझ गया कि भोजन के पहले सोन्या और दोलोख़ोव के बीच ज़रूर कोई बात हो गयी है और अपनी सहज संवेदनशीलता के अनुरूप भोजन के समय वह इन दोनों के प्रति अपने व्यवहार में बहुत स्नेहशील और सावधान रहा। क्रिसमस पर्व के इस तीसरे दिन ही ईओगेल (नृत्य-शिक्षक) के यहां एक बॉल-नृत्य का भी आयोजन था। पर्वों के अवसरों पर वह अपने सभी शिष्यों-शिष्याओं के लिये ऐसे बॉल-नृत्यों का आयोजन किया करता था।

"निकोलाई, तुम ईओगेल के यहां जाओगे न? कृपया ज़रूर जाना," नताशा ने उससे कहा, "उसने तुम्हारे लिये विशेष अनुरोध किया है, और देनीसोव भी वहां जायेगा।"

"काउंटेस का हुक्म मिलने पर मैं कहां नहीं जाऊंगा!" देनीसोव ने कहा जो मज़ाक़ के रूप में रोस्तोव-परिवार में नताशा के उपासक की भूमिका अदा करता था। मैं तो शॉलवाला नाच भी नाचने को तैयार हूं।"

"अगर मेरे लिये ऐसा करना सम्भव हो सका। मैंने अरख़ारोव-परिवारवालों के यहां जाने का वादा किया हुआ है। उनके यहां पार्टी है," निकोलाई ने जवाब दिया।

"और तुम?.." निकोलाई ने दोलोख़ोव से पूछा। मगर पूछते ही उसने महसूस किया कि उसे यह नहीं पूछना चाहिये था।

"हां, शायद..." दोलोख़ोव ने सोन्या की ओर देखकर रुखाई और झल्लाहट से जवाब दिया और त्योरी चढ़ाकर बिल्कुल वैसे ही ढंग से, जैसे उसने क्लब में आयोजित लंच के वक़्त प्येर की तरफ़ देखा था, निकोलाई की तरफ़ देखा।

"ज़रूर कोई बात हो गयी है," निकोलाई ने सोचा और उसके इस अनुमान की उस समय और अधिक पुष्टि हो गयी जब भोजन के तुरन्त बाद ही दोलोख़ोव यहां से चला गया। निकोलाई ने नताशा को बुलाकर पूछा कि क्या मामला है?

"मैं तुम्हें ढूंढ़ रही थी," नताशा ने भागकर उसके पास आते हुए कहा। "मैंने तुमसे कहा था न, लेकिन तुम मेरी बात का यक़ीन ही नहीं करना चाहते थे!" वह विजेता की तरह कह उठी। "उसने सोन्या से अपने साथ विवाह करने का प्रस्ताव किया है!"

इस सारे वक़्त के दौरान निकोलाई ने सोन्या की तरफ़ बेशक बहुत ही कम ध्यान दिया था, फिर भी यह ख़बर सुनकर उसका मन टीस उठा। यतीम और दहेज के बिना सोन्या के लिये दोलोख़ोव अच्छा और कुछ अर्थ में बहुत ही बढ़िया वर था। बूढ़ी काउंटेस और सोसाइटी की दृष्टि से दोलोख़ोव के प्रस्ताव को ठुकराया नहीं जाना चाहिये। इसलिये यह समाचार सुनने पर निकोलाई के मन में जो पहला भाव आया, वह सोन्या के प्रति क्रोध का भाव था। वह यह कहने ही वाला था: "बहुत ख़ूब! ज़ाहिर है कि उसे बचपन के वादों को भूलकर इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेना चाहिये।" मगर उसके ऐसा कहने के पहले ही नताशा कह उठी:

"और तुम कल्पना करो! सोन्या ने इन्कार कर दिया, साफ़

इन्कार कर दिया!" ज़रा ख़ामोश रहने के बाद उसने इतना और जोड़ दिया: "सोन्या ने कहा कि वह किसी दूसरे को प्यार करती है।"

"हां, मेरी सोन्या दूसरा कुछ कर ही नही सकती थी!" निकोलाई ने सोचा।

"अम्मां ने चाहे उसकी कितनी ही मिन्नत क्यों न की, उसने फिर भी इन्कार कर दिया और मैं जानती हूं कि अगर उसने एकबार कुछ कह दिया है तो वह किसी भी हालत में अपना इरादा नहीं बदलेगी..."

"और अम्मां ने भी ऐसा करने के लिये उसकी मिन्नत की?" निकोलाई ने भर्त्सना के स्वर में पूछा।

"हां," नताशा ने हामी भरी। "सुनो, निकोलाई, तुम बुरा नही मानना, लेकिन मैं यह जानती हूं कि तुम सोन्या से शादी नहीं करोगे! मैं यह जानती हूं, भगवान ही जानें कि क्यों जानती हूं, मगर यक़ीनी तौर पर जानती हूं कि तुम उससे शादी नहीं करोगे।"

"ख़ैर, यह तो तुम कुछ जानती-वानती नही हो," निकोलाई ने कहा, "किन्तु अब मुझे उससे बात करनी चाहिये। क्या कमाल की लड़की है यह सोन्या!" उसने मुस्कराते हुए इतना और कह दिया।

"सो तो वह है ही! मैं उसे तुम्हारे पास भेज देती हूं।" और नताशा अपने भाई को चूमकर भाग गयी।

एक मिनट बाद सहमी-सहमी, परेशान और दोषी-सी सोन्या सामने आई। निकोलाई ने उसके पास जाकर उसका हाथ चूमा। निकोलाई के मोर्चे से लौटने के बाद पहली बार ही ये दोनों एकान्त में मिल रहे थे और अपने प्यार की चर्चा कर रहे थे।

"सोन्या," निकोलाई ने शुरू में कुछ झिझकते, मगर बाद में अधिकाधिक साहस बटोरते हुए कहा, "आप न केवल बहुत बढ़िया, बहुत लाभदायक प्रस्ताव से इन्कार करना चाहती हैं—लेकिन वह तो बहुत अच्छा, बहुत नेक आदमी भी है... वह मेरा दोस्त है..."

सोन्या ने उसे टोक दिया।

"मैं तो इन्कार कर भी चुकी हूं," उसने जल्दी से कह डाला।

"अगर आपने मेरी ख़ातिर इन्कार किया है तो मुझे डर है कि मैं..."

सोन्या ने फिर से उसे टोक दिया। उसने मिन्नत करती, डरी-डरी नज़र से उसकी तरफ़ देखा।

"निकोलाई, मुझसे यह नही कहिये," वह बोली।

"नहीं, मुझे कहना ही होगा। बेशक यह मेरी अहंमन्यता ही हो, फिर भी कह देना ही बेहतर होगा। अगर आप मेरी खातिर इन्कार कर रही हैं तो मुझे आपसे सब कुछ सच-सच कह ही देना चाहिये। मैं आपको प्यार करता हूं, मेरे ख़्याल में, सबसे ज़्यादा प्यार करता हूं..."

"मेरे लिये इतना ही काफ़ी है," सोन्या शर्म से लाल होते हुए कह उठी।

"नही, लेकिन मैं तो हज़ारों बार प्यार कर चुका हूं और आगे भी प्यार करूंगा, यद्यपि मैत्री, विश्वास और प्यार की ऐसी भावना मेरे दिल में अन्य किसी के लिये भी नहीं है, जैसी मैं आपके लिये अनुभव करता हूं। इसके अलावा मैं जवान हूं। अम्मां भी यह नहीं चाहती हैं। मतलब यह कि मैं किसी तरह का वचन नही दे सकता। इसलिये आपसे अनुरोध करता हूं कि आप दोलोखोव के प्रस्ताव पर अच्छी तरह से सोच-विचार करें," बड़ी मुश्किल से अपने मित्र का कुलनाम ज़बान पर लाते हुए उसने कहा।

"मुझसे ऐसा नही कहिये। मुझे कुछ भी नही चाहिये। मैं आपको भाई की तरह प्यार करती हूं और हमेशा करती रहूंगी, मुझे इससे ज़्यादा और कुछ नहीं चाहिये।"

"आप फ़रिश्ता हैं, मैं आपके लायक़ नही हूं, मगर मुझे सिर्फ़ यही डर है कि कही आपको धोखा न दे दूं।" निकोलाई ने फिर से उसका हाथ चूमा।

## १२

ईओगेल के यहां ही मास्को में सबसे ज़्यादा उल्लासपूर्ण बॉल-नृत्य होते थे। ऐसा उन माताओं का कहना था जो अपनी तरुणियों को कुछ ही समय पहले सीखे गये नाच के क़दम उठाते देखती थीं, खुद तरुण-तरुणियां का भी यही कहना था जो गिरने की हद तक वहां नाचते जाते थे। वयस्क युवक-युवतियों का भी ऐसा ही मत था जो

कृपाभाव दिखाते हुए इन बॉल-नृत्यो में आते थे और इन्हें ही सर्वाधिक उल्लासपूर्ण पाते थे। इसी साल इन बॉल-नृत्यों की बदौलत दो शादियां भी हो गयी थीं। गोर्चाकोव-परिवार की दो प्यारी-सी प्रिंसेसों की इनमें अपने भावी पतियों से भेंट हुई और उनके विवाह हो गये। इससे बॉल-नृत्यों की ख्याति को चार चांद लग गये। इन बॉल-नृत्यों की ख़ास बात यह थी कि इनमें मेज़बान और उसकी पत्नी नही होते थे। इनमें होता था अपने सभी मेहमानों से नाच सिखाने की फ़ीस के टिकट जमा करता, रोयें की तरह उड़ता और कला के नियमों के अनुसार अपने पांव रगड़ता तथा सिर झुकाता हुआ खुशमिज़ाज ईओगेल। इनकी एक अन्य विशेषता यह थी कि इनमें केवल वही आते थे जो पहली बार लम्बे फ़ॉक पहननेवाली तेरह-चौदह साल की लड़कियों की तरह नाचना और ख़ुश होना चाहते थे। कुछ इने-गिने अपवादों को छोड़कर ये सभी लड़कियां बहुत प्यारी होती थीं या ऐसी प्रतीत होती थीं, बहुत ही उत्साह से ये सब मुस्कराती थी और बहुत ही उल्लासपूर्ण होती थीं उनकी सुन्दर आंखें। ईओगेल की श्रेष्ठ शिष्यायें, जिनमें नताशा अपने लालित्य के कारण सबसे बढ़-चढ़कर थी, कभी-कभी pas de châle जैसा कठिन नाच भी नाचती थी, मगर आज के इस बॉल-नृत्य में केवल स्कॉटलैंड का एकोसेज़ और इंगलैंड का आंगलेज़ और पोलैंड का माज़ूर्का नाच, जिसका इन्हीं दिनों चलन हो रहा था, नाचे गये थे। ईओगेल ने बेज़ूख़ोव के घर का बड़ा हॉल ले लिया था और, जैसा कि सभी का कहना था, यह नृत्य-समारोह बहुत सफल रहा था। बड़ी संख्या में सुन्दर लड़कियां थी और रोस्तोव-परिवार की लड़कियां सबसे अधिक सुन्दर लड़कियों में से थीं। ये दोनों विशेष रूप मे बहुत प्रसन्न और उल्लासमयी थी। दोलोख़ोव के विवाह-प्रस्ताव, अपने इन्कार और निकोलाई के साथ अपनी बातचीत पर इतराती हुई सोन्या इस शाम को अपने कमरे में भी नाच के चक्कर काटती रही थी जिसके कारण नौकरानी के लिये उसके बाल गूंथना भी बहुत कठिन रहा था और अब तो उसकी छलकती हुई ख़ुशी उसके रोम-रोम से प्रतिबिम्बित हो रही थी।

नताशा भी इस कारण कुछ कम गर्व अनुभव नहीं कर रही थी कि उसने पहली बार लम्बा फ़्रॉक पहना था, पहली बार असली बॉल-नृत्य में गयी थी और इसलिये वह और भी ज़्यादा ख़ुश थी। ये दोनों

गुलाबी रिबनों से सजे मलमल के सफ़ेद फ्रॉक पहने थीं।

नताशा तो हॉल में आते ही प्रेम-दीवानी-सी हो गयी। वह किसी विशेष व्यक्ति पर मुग्ध नहीं हुई थी, बल्कि सभी पर मुग्ध थी। जिस क्षण वह जिस किसी को देखती होती, उसी को प्यार करने लगती।

"ओह, कितना अच्छा लग रहा है!" नताशा बार-बार भागकर सोन्या के पास जाती और उससे कहती।

निकोलाई और देनीसोव स्नेहपूर्वक और संरक्षण के अन्दाज़ में नाचनेवालों को देखते हुए हॉलों में चक्कर लगा रहे थे।

"कितनी प्यारी है, बला की ख़ूबसूरत निकलेगी," देनीसोव ने कहा।

"कौन?"

"काउंटेस नताशा," देनीसोव ने उत्तर दिया।

"और कितना बढ़िया नाचती है वह, कैसा सजीलापन है उसमें!" कुछ देर चुप रहने के बाद उसने फिर कहा।

"तुम किसकी चर्चा कर रहे हो?"

"तुम्हारी बहन की," देनीसोव झुंझलाकर चिल्लाया।

रोस्तोव मुस्करा दिया।

"प्यारे काउंट, आप मेरे एक सबसे अच्छे शिष्य हैं। आपको ज़रूर नाचना चाहिये," नाटे-से ईओगेल ने फ्रांसीसी में कहा। "देखिये तो यहां कितनी अधिक प्यारी-प्यारी लड़कियां हैं।" उसने देनीसोव से भी, जो उसका एक भूतपूर्व शिष्य था, यही अनुरोध किया।

"नहीं, जनाब, दिखावे के लिये यहीं बैठे रहना बेहतर समझूंगा।" देनीसोव ने कहा। "क्या आपको याद नहीं कि मैं आपका कितना बुरा शिष्य था?.."

"अजी नहीं!" ईओगेल ने उसे जल्दी से तसल्ली दी। "आप ज़रा ध्यान कम देते थे, मगर आप में प्रतिभा है, हां, प्रतिभा है।"

इन्हीं दिनों प्रचलित होनेवाले माज़ूर्का नाच की धुन बजने लगी। निकोलाई ईओगेल के अनुरोध को नहीं टाल सका और उसने सोन्या को अपने साथ नाचने के लिये निमन्त्रित कर लिया। देनीसोव बुज़ुर्ग महिलाओं के पास जा बैठा, म्यान का सहारा लेते तथा पांवों से ताल देते और नाचते युवजन को देखते हुए बुढ़ियों को मनोरंजक क़िस्से-चुटकुले सुनाकर हंसाने लगा। अपने गौरव और सर्वश्रेष्ठ शिष्या नताशा

के साथ ईओगेल सबसे आगे-आगे नाच रहा था। हल्के-हल्के जूतों में बड़े कोमल और नाजुक ढंग से क़दम बढ़ाता हुआ ईओगेल कुछ झिझक-ती, किन्तु बड़े यत्न से लय के साथ पांव उठाती नताशा के साथ सबसे पहले हॉल में तेज़ी से नाचता चला गया। देनीसोव तो नताशा पर से नज़र नहीं हटा पा रहा था और लय के साथ म्यान पर ऐसे ताल दे रहा था जो स्पष्ट रूप से यह कहती प्रतीत होती थी कि वह इसलिये नहीं नाच रहा है, क्योंकि नाचना नही चाहता, न कि इसलिये कि नाच नहीं सकता। एक मुद्रा के समय उसने नज़दीक से गुज़रते हुए रोस्तोव को अपने पास बुलाया।

"बात कुछ बन नही रही," उसने कहा। "पोलिश माज़ूर्का भला ऐसे नाचा जाता है? लेकिन वह बहुत बढ़िया नाच रही है।"

निकोलाई यह जानते हुए कि पोलिश माज़ूर्का नाचने के लिये तो देनीसोव की पोलैंड में भी बड़ी धूम थी, वह भागकर नताशा के पास गया और बोला:

"जाकर देनीसोव को अपना साथी चुन लो। बहुत बढ़िया नाचता है वह! एकदम लाजवाब!"

जब फिर से नताशा की बारी आई तो वह उठी, कुछ झेंपती और रिबनोंवाले हल्के-फुल्के जूते पहने पूरे हॉल में से भागती हुई देनीसोव के पास जा पहुंची। उसने देखा कि सभी उसकी ओर देख रहे हैं और इन्तज़ार कर रहे हैं। निकोलाई ने देखा कि देनीसोव और नताशा मुस्कराते हुए बहस कर रहे हैं, कि देनीसोव इन्कार कर रहा है, मगर ख़ुशी से मुस्करा रहा है। निकोलाई भागकर इन दोनों के पास गया।

"वसीली द्मीत्रिच, आपकी मिन्नत करती हूं," नताशा कह रही थी, "कृपया चलिये।"

"नही, नहीं, मैं माफ़ी चाहता हूं, काउंटेस," देनीसोव जवाब दे रहा था।

"बस, बहुत नख़रे कर चुके, वसीली," निकोलाई ने कहा।

"आप लोग तो वास्का* बिल्ले की तरह ही मुझे मना रहे हैं," देनीसोव ने मज़ाक़ किया।

"एक पूरी शाम को सिर्फ़ आपके लिये गाती रहूंगी," नताशा बोली।

---

* रूस में बिल्लों का 'वास्का', यानी वसीली, आम नाम है। – अनु०

"यह छोटी-सी जादूगरनी मुझे मनमाने नाच नचा सकती है!" देनीसोव ने कहा और उसने अपनी तलवार उतारकर रख दी। वह कुर्सियों के पीछे से आगे आया, उसने मज़बूती से अपनी महिला का हाथ थामा, सिर को तान लिया और ताल की प्रतीक्षा करते हुए पांव आगे बढ़ा दिया। केवल घोड़े पर सवारी करते और माज़ूर्का नाच नाचते समय ही देनीसोव के नाटे क़द की तरफ़ किसी का भी ध्यान नहीं जाता था और वह वैसे ही सूरमा के रूप में सामने आता था, जैसा कि अपने को अनुभव करता था। ठीक ताल आने पर उसने कनखियों से अपनी नृत्य-संगिनी पर विजेता जैसी और मज़ाकिया-सी नज़र डाली, अचानक एक पाव से थाप दी, गेंद की भांति लचीले ढंग से फ़र्श से उछला और नृत्य-संगिनी को अपने साथ लिये हुए लट्टू की तरह तेज़ी से कमरे में घूमने लगा। किसी तरह की आहट किये बिना वह एक ही पांव पर तेज़ी से आधे हॉल को पार कर गया और ऐसे प्रतीत हुआ कि वह अपने सामने रखी कुर्सियों को देखे बिना बड़ी रफ़्तार से उन्हीं की तरफ़ बढ़ता जाता है। किन्तु अचानक उसने एड़ें खनखनायीं, पांव फैलाये और एड़ियों पर खड़ा हो गया, एक सेकण्ड तक ऐसे खड़ा रहा, एक ही जगह पर पैरों से थाप देते हुए एड़ों को खनखनाता रहा, तेज़ी से घूमा और बायें पांव से दायें को बजाकर फिर चक्कर काटता हुआ बढ़ चला। नताशा पहले से ही उसके इरादे का अनुमान लगाती और अपने को पूरी तरह उसके अनुरूप बनाती तथा ख़ुद यह न जानती हुई कि वह कैसे ऐसा कर पा रही है, उसका अनुकरण करती। देनीसोव कभी तो उसे चक्कर दिलवाता, कभी दायें और कभी बायें हाथ पर साध लेता, कभी अपना घुटना टेक देता और उसे अपने गिर्द घुमाता, कभी फिर से उछलकर खड़ा होता और ऐसी तेज़ी से आगे बढ़ जाता मानो वह सांस लिये बिना भागता हुआ सारे कमरों को लांघ जायेगा, तो कभी फिर अचानक रुक जाता और रह-रहकर नाच के नये तथा अप्रत्याशित क़दम उठाता। जब उसने अपनी नृत्य-संगिनी को उसकी सीट के सामने ज़ोर से घुमाकर एड़ बजायी और सिर झुकाया तो नताशा को उसके सामने झुकने तक का ध्यान नहीं रहा। वह भौचक्की-सी होकर मुस्कराते हुए उसे ऐसे एकटक देख रही थी, मानो पहचान ही न पा रही हो।

"क्या नाच था यह भी?" वह कह उठी।

इस चीज़ के बावजूद कि ईओगेल ने इस नाच को असली माजूर्का नहीं माना, देनीसोव की इस कला-दक्षता ने सभी को मुग्ध कर दिया, सभी लड़कियां अपने नृत्य-साथी के रूप मे लगातार उसे ही चुनने की इच्छा ज़ाहिर करने लगी और बुजुर्ग लोग मुस्कराते हुए पोलैंड तथा अपने अच्छे, पुराने वक़्तों की चर्चा करने लगे। माजूर्का के कारण लाल हो जानेवाले चेहरे को रूमाल से पोंछते हुए देनीसोव नताशा के पास बैठ गया और बॉल के ख़त्म होने तक उसी के साथ रहा।

## १३

सोन्या द्वारा दोलोख़ोव के विवाह-प्रस्ताव के ठुकराये जाने के बाद रोस्तोव ने दो दिन तक न तो उसे अपने यहां देखा और न ही उसके घर पर उससे उसकी भेंट हो सकी। तीसरे दिन उसे दोलोख़ोव का यह रुक्का मिला.

"चूंकि तुम्हे ज्ञात कारणों से मैं अब फिर कभी आप लोगों के घर आने का इरादा नही रखता और सेना में वापस जा रहा हूं, इस-लिये आज शाम को अपने यार-दोस्तों की विदाई-दावत कर रहा हूं और इसमें शामिल होने के लिये तुम इंगलिश होटल में आ जाना।" दोलोख़ोव द्वारा नियत दिन पर रोस्तोव नौ बजे के बाद सीधा थियेटर से ही, जहां वह अपने घरवालों तथा देनीसोव के साथ गया था, इंगलिश होटल में पहुंच गया। उसे उसी क्षण होटल के सबसे अच्छे कमरे में पहुंचा दिया गया जो इस रात के लिये दोलोख़ोव ने ले रखा था।

उस मेज़ के इर्द-गिर्द कोई बीस आदमियो की भीड़ जमा थी जिसके सामने दोलोख़ोव दो मोमबत्तियों के बीच बैठा था। मेज़ पर सोने की मुद्राओं और नोटों का ढेर लगा था तथा दोलोख़ोव पत्ते बांट रहा था। दोलोख़ोव के विवाह-प्रस्ताव और सोन्या के इन्कार के बाद निकोलाई उससे मिला नही था और इस विचार से उसे परेशानी-सी महसूस हो रही थी कि अब उनकी मुलाक़ात कैसी रहेगी।

रोस्तोव अभी कमरे के दरवाज़े पर ही था कि दोलोख़ोव ने अपनी

निर्मल, कठोर दृष्टि मे उमकी तरफ़ देखा मानो बहुत देर से उसका इन्तज़ार कर रहा हो।

"ख़ासा अरसा हो गया तुमसे मिले हुए," उसने कहा, "आने के लिये शुक्रिया। ज़रा यह खेल का झंझट निपटा लूं और तभी इल्यूश्का जिप्सी अपनी गान-मण्डली के साथ यहां हाज़िर हो जायेगा।"

"मैं तो तुम्हारे यहा गया था," रोस्तोव ने झेंप से लाल होते हुए कहा।

दोलोख़ोव ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"चाहो तो तुम भी दांव लगा मकते हो," उमने कहा।

इस क्षण रोम्तोव को किमी दिन दोलोख़ोव के माथ हुई एक अजीब-सी बातचीत याद हो आई। तब दोलोख़ोव ने कहा था: "अच्छी क़िस्मत का भरोमा करते हुए केवल मूर्ख ही जुआ खेल मकते हैं।"

"या तुम मेरे माथ खेलते हुए डरते हो?" दोलोख़ोव ने मानो रोस्तोव के मन के विचार भापते हुए कहा और मुस्करा दिया। दोलोख़ोव की इस मुस्कान की ओट में रोस्तोव को उसके उस मूड की झलक मिली जो बग्रातिओन के सम्मान में आयोजित सहभोज के समय था या फिर आम तौर पर तब होता था, जब वह हर दिन की ज़िन्दगी से ऊबकर किसी अजीब, अधिकतर तो क्रूर ढंग से उसमे मुक्ति पाने की आवश्यकता अनुभव करता था।

रोस्तोव को बड़ा अटपटा-सा लग रहा था। वह मन ही मन कोई ऐमा मज़ाक ढूंढ़ रहा था जो दोलोख़ोव के इन शब्दों का अच्छा प्रत्युत्तर हो सकता, किन्तु उसे इसमें सफलता नहीं मिल रही थी। उसके ऐसा कर पाने के पहले ही दोलोख़ोव ने धीरे-धीरे और सभी को अच्छी तरह मे मुनाकर उमसे कहा:

"तुम्हें याद है न कि हमने एक बार जुए की चर्चा की थी... अच्छी क़िस्मत का भरोसा करके जुआ खेलनेवाला मूर्ख होता है, भरोसे का खेल खेलना चाहिये, और मैं यह आज़माकर देखना चाहता हूं।"

"अच्छी क़िस्मत या भरोसे के खेल को आज़माया जाये?" रोस्तोव सोच रहा था।

"हां, तुम्हारे लिये न खेलना ही ज़्यादा अच्छा होगा," दोलोख़ोव ने इतना और कह दिया और ताश की नयी गड्डी निकालकर बो-ला "दाव के पैसे यहां रख दीजिये, महानुभावो!"

पैसों को अपने नज़दीक करके दोलोख़ोव पत्ते बांटने लगा। रोस्तोव उसके क़रीब बैठ गया और शुरू में उसने खेल में हिस्सा नही लिया। दोलोख़ोव ने उसकी तरफ़ देखा।

"खेलते क्यों नहीं?" दोलोख़ोव ने प्रश्न किया। और अजीब बात थी कि निकोलाई ने पत्ता हाथ में लेने, उसपर बहुत छोटा-सा दांव लगाने और खेल शुरू करने के लिये अपने को विवश-सा अनुभव किया।

"इस वक़्त मेरे पास पैसे नहीं हैं," रोस्तोव ने कहा।

"तुमपर यक़ीन कर सकता हूं!"

रोस्तोव ने पांच रूबल का दांव लगाया और हार गया, फिर से दांव लगाया और हार गया। दोलोख़ोव ने एक के बाद एक रोस्तोव के दस पत्ते पीट डाले यानी दस दांव जीत लिये।

"महानुभावो," उसने कुछ समय तक पत्ते बांटने के बाद कहा, "आपसे पत्ते पर ही दांव के पैसे रखने का अनुरोध करता हूं, वरना मुझसे हिसाब में गड़बड़ हो सकती है।"

एक खिलाड़ी ने कहा कि उसपर विश्वास करने की आशा की जा सकती है।

"विश्वास तो किया जा सकता है, मगर मुझे डर है कि मैं हिसाब में गड़बड़ कर दूंगा। इसलिये अनुरोध करता हूं कि पत्ते पर ही पैसे रखते जाइये," दोलोख़ोव ने जवाब दिया। "तुम कोई चिन्ता न करो, तुम्हारे साथ हम बाद में हिसाब निपटा लेंगे," उसने रोस्तोव से इतना और कह दिया।

जुआ चलता रहा, बैरा लगातार शेम्पेन के गिलास लाता रहा।

रोस्तोव के सारे पत्ते पिटते रहे और उसके नाम आठ सौ रूबल लिखे जा चुके थे। अगली बाज़ी में वह एक पत्ते पर आठ सौ रूबल का दांव लिख चुका था, किन्तु उसी समय जब शेम्पेन का गिलास उसकी तरफ़ बढ़ाया गया, उसने इरादा बदल लिया और अपना बीस रूबल का सामान्य दांव लिख दिया।

"पहलेवाला दांव ही रहने दो," दोलोख़ोव ने कहा, यद्यपि ऐसा प्रतीत होता था कि वह उसकी ओर देख ही नहीं रहा था, "जल्दी से हारे हुए सारे पैसे वापस जीत लोगे। दूसरों से हारता हूं, मगर तुमसे जीतता हूं। या फिर तुम मुझसे डरते हो?" उसने ये शब्द दोहराये।

रोस्तोव ने उसकी बात मान ली, पहले से लिखे हुए आठ सौ

रूबल ही रहने दिये और फटे सिरेवाला पान का सत्ता, जो उसने फ़र्श पर से उठाया था, चल दिया। यह पत्ता बाद में उसे खूब याद रहा। उसने पान के सत्ते पर खड़िया के टुकड़े से बड़े-बड़े और साफ़ अकों में आठ सौ लिखकर उसे चल दिया, गुनगुनी शेम्पेन का गिलास पी लिया, दोलोखोव के शब्दों पर मुस्कराया और सत्ते के निकलने की आशा करते हुए धड़कते दिल से ताश की गड्डी लिये दोलोखोव के हाथों की ओर देखने लगा। पान के इस सत्ते के जीतने या हारने का रोस्तोव के लिये बहुत महत्त्व था। पिछले इतवार को उसके पिता, काउंट इल्या अन्द्रेयेविच ने उसे दो हज़ार रूबल दिये थे और अपनी आर्थिक कठिनाइयों की चर्चा पसन्द न करनेवाले काउंट ने बेटे से यह कहा था कि अब मई महीने तक वह उसे और पैसे नहीं दे सकेंगे और इसलिये वह ज़रा सोच-समझकर पैसे ख़र्च करे। तब निकोलाई ने यह जवाब दिया था कि उसके लिये यह रक़म भी बहुत ज़्यादा है और यह वचन देता है कि वसन्त यानी मई के महीने तक और पैसे नहीं मांगेगा। अब इस रक़म में से बारह सौ बाक़ी रह गये थे। इसका मतलब यह था कि पान के सत्ते पर न केवल सोलह सौ रूबल को हार जाना ही निर्भर करता था, बल्कि यह कि उसे पिता को दिया हुआ वचन भी तोडना पड़ेगा। वह धड़कते दिल से दोलोखोव के हाथों को देख और यह सोच रहा था. "जल्दी से मुझे यह पत्ता दो और मैं अपनी टोपी पहनकर घर जाता हूं तथा देनीसोव, नताशा और सोन्या के साथ डिनर खाता हूं। इस बात को पत्थर की लकीर समझो कि अब फिर कभी मैं जुआ नही खेलूंगा।" इस क्षण उसे अपना घरेलू जीवन – पेत्या के साथ हंसी-मज़ाक़, सोन्या के साथ बातचीत, नताशा के साथ युगल-गान, पिता के साथ ताश की बाज़ियां, यहां तक कि पोवर्स्की सड़क के घर में चैन देनेवाला बिस्तर भी इतने ज़ोर से, इतनी स्पष्टता और इतने सुन्दर रूप में उसकी आंखों के सामने उभरा कि उसे यह सब कुछ बीती, लुटी-लुटायी और ऐसी खुशी प्रतीत हुआ जिसका ठीक मूल्यांकन नही किया गया था। वह यह मानने को तैयार नही था कि एक मूर्खतापूर्ण संयोग, जिसके परिणामस्वरूप पान का सत्ता बायी ओर आने के पहले दायी ओर आ सकता है, उसे उसकी नये रूप में समझी और पहचानी गयी खुशी से वंचित कर सकता है और अभी तक अनजाने तथा अस्पष्ट दुख के भंवर में फेंक सकता है।

ऐसा नही हो सकता था, फिर भी वह दोलोख़ोव के हाथो की गति-विधि को धड़कते दिल से देख रहा था। क़मीज़ के नीचे से नज़र आने-वाली चौड़ी-चौड़ी, लाल-लाल और बालों से ढकी कलाइयोंवाले हाथों ने ताश की गड्डी नीचे रख दी और अपनी तरफ़ बढ़ाया गया शेम्पेन का गिलास तथा पाइप ले लिया।

"तो तुम्हें मेरे साथ खेलते हुए डर नही लगता?" दोलोख़ोव ने इन शब्दों को दोहराया और मानो कोई मनोरंजक बात सुनाने के लिये पत्ते मेज़ पर रख दिये, कुर्सी की टेक ले ली और मुस्कराते हुए धीरे-धीरे यह कहने लगा:

"हां, महानुभावो, मुझे बताया गया है कि मास्को में यह अफ़वाह फैली हुई है कि मैं पत्तेबाज़ हूं। इसलिये आपको यह सलाह देता हूं कि मेरे मामले में ज़रा सावधान रहें।"

"तुम पत्ते बांटो न!" रोस्तोव ने कहा।

"ओह, मास्को की ये बातूनी बुढ़ियां!" दोलोख़ोव ने अपनी बात समाप्त की, मुस्कराया और पत्ते बांटने लगा।

"उफ़!" रोस्तोव अपने दोनों हाथों को सिर की तरफ़ उठाते हुए लगभग चिल्ला उठा। पान का सत्ता, जिसकी उसे इतनी अधिक ज़रूरत थी, ताश की गड्डी में सबसे ऊपर, पहला पत्ता था। वह जितना ऋण चुका सकता था, उससे अधिक हार गया था।

"लेकिन तुम अपना दिवाला नहीं निकालो।" रोस्तोव पर उड़ती-सी नज़र डालते हुए दोलोख़ोव ने कहा और पत्ते बांटना जारी रखा।

## १४

डेढ़ घण्टे के बाद अधिकतर खिलाड़ी अपने खेल की तरफ़ कोई ख़ास ध्यान नहीं दे रहे थे।

खेल पूरी तरह से रोस्तोव पर ही केन्द्रित हो गया था। एक हज़ार छः सौ रूबलों की जगह अब उसके नाम काफ़ी लम्बे आंकड़े लिखे हुए थे जिनका वह दस हज़ार रूबल तक जोड़ कर चुका था और अब उसके अस्पष्ट-से अनुमान के अनुसार पन्द्रह हज़ार रूबल तक पहुंच गया होगा।

वास्तव में वह बीस हज़ार से अधिक रूबल हार चुका था। दोलोख़ोव अब न तो हंसी-मज़ाक़ के क़िस्से-कहानियां सुन रहा था और न ही सुना रहा था। वह रोस्तोव के हाथों की हर गति-विधि को बहुत ग़ौर से देखता था और जब-तब उसके नाम अपने हाथ से लिखी हुई रक़म पर उड़ती-सी नज़र डाल लेता था। उसने इस रक़म के तैंतालीस हज़ार तक पहुंच जाने तक खेल जारी रखने का निर्णय किया था। उसने यह आंकड़ा इसलिये चुना था कि यह सोन्या और उसकी अपनी उम्र के जोड़ के बराबर था। दोनों हाथों पर सिर टिकाये हुए रोस्तोव उस मेज़ के सामने बैठा था जिसपर उसके द्वारा हारे गये रूबलों के आंकड़े लिखे थे, जहां-तहां शराब बिखरी हुई थी और ताश के ढेरों पत्ते पड़े थे। एक यातनाप्रद विचार उसे लगातार व्यथित कर रहा था – क़मीज़ के नीचे से दिखायी देनेवाले चौड़ी-चौड़ी, लाल-लाल और बालों से ढकी हुई कलाइयोंवाले हाथ जिन्हें वह प्यार करता था और जिनसे उसे नफ़रत थी, उसे अपनी मुट्ठी में बन्द किये हुए थे।

"छः सौ रूबल, इक्का, नहला ... इसे वापस जीतना असम्भव है!.. और इस वक़्त घर पर कितना मज़ा रहता ... ग़ुलाम, मगर यह नही हो सकता!.. किसलिये वह मेरे साथ ऐसा कर रहा है?.." रोस्तोव सोच रहा था और याद कर रहा था। कभी-कभी वह बड़ा दांव लगाता, लेकिन दोलोख़ोव इन्कार कर देता और ख़ुद दांव तय करता। निकोलाई उसकी बात मान लेता। कभी तो वह भगवान से उसी तरह प्रार्थना करता जैसे अमश्टेटन पुल की लड़ाई के समय करता रहा था, कभी उसके दिमाग़ में यह विचार आता कि मेज़ के नीचे पड़े, मुड़े हुए पत्तों के ढेर में से जो पत्ता सबसे पहले उसके हाथ में आयेगा, वही उसे बचायेगा, कभी वह अपनी जाकेट की डोरियां गिनता और उसी गिनती के पत्ते पर अपनी हारी हुई सारी रक़म के बराबर दांव लगाने का यत्न करता, कभी मदद के लिये दूसरे खिलाड़ियों की तरफ़ देखता और कभी दोलोख़ोव के अब कठोर हो चुके चेहरे पर नज़र डालता और यह भांपने की कोशिश करता कि उसके मन में इस वक़्त क्या विचार आ रहे हैं।

"आख़िर वह तो यह जानता ही है कि मेरे लिये इतनी बड़ी रक़म को हारने का क्या अर्थ है। वह मेरी बरबादी तो नहीं चाह सकता? आख़िर तो वह मेरा दोस्त था। मैं उसे प्यार करता था लेकिन

उसका कोई क़ुसूर नहीं है, अगर क़िस्मत उसका साथ दे रही है तो वह क्या करे? और मेरा भी कोई क़ुसूर नही है," वह अपने आपसे कह रहा था। "मैंने कोई बुराई नहीं की है। क्या मैंने किसी की हत्या की है, किसी का अपमान किया है, किसी का बुरा चाहा है? किसलिये मुझपर मुसीबत का यह पहाड़ टूट पड़ा है? इसका आरम्भ कब हुआ? कुछ ही देर पहले मैं यह विचार लेकर इस मेज़ पर आया था कि कोई एक सौ रूबल जीत लूंगा, मां के जन्मदिन के लिये अपनी पसन्द की मंजूषा ख़रीदूंगा और घर चला जाऊंगा। मैं इतना सौभाग्यशाली, उन्मुक्त और प्रफुल्ल था! और तब मैं यह नहीं समझता था कि मैं कितना सौभाग्यशाली हूं! कब यह समाप्त हो गया और कब आरम्भ हुई मेरी यह नयी, भयानक स्थिति? किस रूप में यह परिवर्तन प्रकट हुआ? मैं तो इसी मेज़ के पास, इसी तरह और इसी जगह पर बैठा रहा हूं, इसी तरह पत्ते उठाता और फेंकता रहा हूं और चौड़ी कलाइयोंवाले इन फुर्तीले हाथों को देखता रहा हूं। यह सब कब हुआ और क्या हुआ है? मैं स्वस्थ हूं, शक्तिशाली हूं, जैसा था वैसा ही हूं और उसी जगह पर हूं। नहीं, यह सब कुछ नहीं हो सकता! निश्चय ही यह सब व्यर्थ सिद्ध होगा।"

इस चीज़ के बावजूद कि कमरे में गर्मी नहीं थी, निकोलाई रोस्तोव का चेहरा तमतमाया हुआ तथा पसीने से तर था। उसका चेहरा भयानक और दयनीय लग रहा था, ख़ास तौर पर अपने को शान्त ज़ाहिर करने की नाकाम कोशिशों के कारण।

उसके नाम लिखी जानेवाली रक़म तैंतालीस हज़ार की निर्णायक सीमा पर पहुंच गयी। रोस्तोव ने पत्ते का सिरा मोड़कर अभी-अभी जीते गये तीन हज़ार रूबल के चौथे भाग का दांव लगाते हुए पत्ता तैयार ही किया था, जब दोलोख़ोव ने ताश की गड्डी से मेज़ पर ठक-ठक की, ताश की गड्डी को एक तरफ़ रख दिया और खड़िया लेकर, जो उसके ज़ोर से लिखने के कारण टूटती जाती थी, अपनी साफ़ और मज़बूत हाथ की लिखावट में रोस्तोव द्वारा हारे गये रूबलों का हिसाब जोड़ने लगा।

"डिनर, डिनर का वक़्त हो गया! यह लीजिये, जिप्सी भी आ गये!" वास्तव में ही जिप्सी उच्चारण के साथ कुछ कहते हुए काले बालोंवाले सांवले पुरुष-स्त्रियां बाहर ठण्ड से भीतर आ रहे थे।

निकोलाई समझ रहा था कि सब कुछ ख़त्म हो चुका है, लेकिन फिर भी उसने लापरवाही के अन्दाज़ में कहा:

"तो क्या और नहीं खेलोगे? मैंने तो बहुत बढ़िया पत्ता तैयार कर रखा है," मानो खेल से मिलनेवाली ख़ुशी में ही उसकी सबसे ज़्यादा दिलचस्पी हो।

"सब कुछ ख़त्म हो गया, मैं कहीं का नहीं रहा!" रोस्तोव सोच रहा था, "अब सिर्फ़ यही रह गया है कि गोली अपने सिर के आर-पार कर लूं!" मगर साथ ही उसने ख़ुशी भरी आवाज़ में कहा:

"सुनो, एक पत्ता और हो जाये।"

"अच्छी बात है," दोलोख़ोव ने हिसाब जोड़ना समाप्त करते हुए कहा, "अच्छी बात है। इक्कीस रूबल का दांव लगेगा उसपर," उसने इक्कीस रूबल के उन आंकड़ों की ओर संकेत करते हुए कहा जो तैंतालीस हज़ार की रक़म से ऊपर थे और ताश की गड्डी लेकर पत्ते बांटने को तैयार हो गया। रोस्तोव ने उसकी बात का विरोध किये बिना पत्ते का कोना मोड़ा और छः हज़ार के बजाय, जो वह लिखना चाहता था, बड़े साफ़ अंकों में इक्कीस लिख दिया।

"मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा," रोस्तोव ने कहा, "मेरी तो सिर्फ़ यही जानने में दिलचस्पी है कि मेरा यह दहला भी तुम पीट लोगे या मेरी जीत होगी।"

दोलोख़ोव बड़ी संजीदगी से पत्ते बांटने लगा। ओह, इस क्षण कैसे फूटी आंखों नहीं सुहा रहे थे उसे क़मीज़ के नीचे से दिखायी देनेवाली कलाइयों सहित ये बालों से ढके, कुछ कुछ लाल-लाल, छोटी-छोटी उंगलियोंवाले हाथ जो उसे अपनी मुट्ठी में बन्द किये हुए थे... दहला जीत गया था।

"तो आपको मेरे तैंतालीस हज़ार रूबल देने हैं, काउंट," दोलोख़ोव ने कहा और अंगड़ाई लेते हुए मेज़ पर से उठकर खड़ा हो गया। "इतनी देर तक बैठे रहकर आदमी थक तो जाता ही है," वह बोला।

"हां, मैं भी थक गया हूं," रोस्तोव ने कहा।

दोलोख़ोव ने मानो उसे यह याद दिलाते हुए कि उसे मज़ाक़ के अन्दाज़ में बात करना शोभा नहीं देता, फ़ौरन यह पूछा:

"कब मुझे यह रक़म मिल जायेगी, काउंट?"

रोस्तोव शर्म से लाल होते हुए उसे दूसरे कमरे में ले गया।

"मैं इतनी जल्दी तो सारी रक़म नहीं दे सकता, तुम मुझसे हुंडी लिखवा लो।"

"सुनो, रोस्तोव," दोलोख़ोव ने खुलकर मुस्कराते और निकोलाई से आंखें मिलाते हुए कहा, "तुम्हें यह कहावत तो मालूम है न – 'जो मुहब्बत में जीते, वह जुए में हारे।' तुम्हारी मौसेरी बहन तुम्हें प्यार करती है। मैं यह जानता हूं।"

"ओह! अपने को इस आदमी की मुट्ठी में महसूस करना बड़ी भयानक बात है," रोस्तोव ने सोचा। रोस्तोव अच्छी तरह से समझता था कि जुए में इतनी बड़ी रक़म हारने की ख़बर से उसके माता-पिता के दिल को कितना बड़ा धक्का लगेगा। वह समझता था कि इस मुसीबत से निजात पाना उसके लिये कितना बड़ा सौभाग्य होता। उसे यह भी स्पष्ट था कि दोलोख़ोव जानता है कि वह उसे लज्जा और संकट की इस स्थिति से उबार सकता है, मगर अब उसके साथ उसी तरह खिलवाड़ भी करना चाहता है जैसे बिल्ली चूहे को खाने के पहले उसके साथ करती है।

"तुम्हारी मौसेरी बहन..." दोलोख़ोव ने कहना चाहा, मगर निकोलाई ने उसे बीच में ही रोक दिया।

"मेरी मौसेरी बहन का इस मामले से कोई सम्बन्ध नहीं और उसकी चर्चा करने की ज़रूरत नहीं!" वह गुस्से से चिल्ला उठा।

"तो कब मिल जायेंगे मुझे मेरे पैसे?" दोलोख़ोव ने पूछा।

"कल," रोस्तोव ने जवाब दिया और कमरे से बाहर चला गया।

## १५

"कल" कह देना और गर्वीला अन्दाज़ बनाये रखना तो कुछ मुश्किल नहीं था, लेकिन अकेले घर लौटना, बहनों, भाई और मां-बाप से नज़रें मिलाना, अपनी भूल स्वीकार करना तथा पैसे मांगना, जिन्हें वचन देने के बाद उसे मांगने का कोई अधिकार नहीं था, बहुत भयानक था।

घर के लोग अभी सोये नहीं थे। रोस्तोव-परिवार के युवजन थियेटर

से लौटने और भोजन करने के बाद क्लावीकॉर्ड के गिर्द जमा थे। इस हॉल में दाखिल होते ही निकोलाई के मन पर प्यार और काव्यमय वातावरण का वह रंग छा गया जिसका इस जाड़े में इनके घर में बोल-बाला रहा था और जो दोलोख़ोव के विवाह-प्रस्ताव तथा ईओगेल के यहां बॉल-नृत्य के बाद तूफ़ान के पहले हवा के दम रोक लेने की भांति सोन्या और नताशा के ऊपर और भी अधिक घना हो गया था। आसमानी रंग की पोशाकों में, जिन्हे पहनकर ये दोनों थियेटर गयी थीं, बहुत ही प्यारी लगती तथा अपने सौन्दर्य के प्रति सचेत ये क्लावी-कॉर्ड के पास खड़ी मुस्करा रही थीं, बहुत खुश नज़र आ रही थीं। वेरा दीवानख़ाने में शिनशिन के साथ शतरंज खेल रही थी। बूढ़ी काउंटेस बेटे और पति के लौटने का इन्तज़ार करती हुई एक कुलीन बुढ़िया के साथ, जो यही रहती थी, ताश की बाज़ियों से मन बहला रही थीं। देनीसोव, जिसकी आंखें चमक रही थीं और बाल अस्तव्यस्त थे, अपना एक पांव पीछे को किये हुए क्लावीकॉर्ड के सामने बैठा था, उसके परदों पर छोटी-छोटी उंगलियां मारते तथा आंखों को घुमाते हुए स्वरचित कविता 'जादूगरनी' को स्वरबद्ध करने के प्रयास में अपनी धीमी, खरखरी, मगर सुर में सधी आवाज़ में गा रहा था:

मुझे बताओ जादूगरनी, कौन प्ररेणा-स्रोत भला
जिससे प्रेरित होकर फिर मे छेड़ रहा हू वीणा-तार?
किसने मेरे दिल को ऐसे विकल किया है, आग लगा,
ऐसा क्या उल्लास, उंगलियां फड़क रही हैं बारम्बार?

वह अपनी सुलेमानी पत्थर जैसी काली-काली आंखों को सहमी-सहमी और खुश नताशा की ओर चमकाते हुए बड़े भावपूर्ण स्वर में गा रहा था।

"बहुत खूब! लाजवाब!" नताशा ज़ोर-ज़ोर से कह रही थी। "अब अगला पद गाइये," निकोलाई को देखे बिना उसने कहा।

"यहा तो वही सब चल रहा है," निकोलाई ने दीवानख़ाने में झांकने के बाद सोचा जहां उसे वेरा और बुढ़िया के साथ अपनी मां दिखायी दीं।

"ओह। लो, निकोलाई भी आ गया!" नताशा भागकर उसके पास गयी।

"पापा घर पर हैं?" उसने पूछा।

"मैं कितनी ख़ुश हूं कि तुम आ गये!" निकोलाई के प्रश्न का उत्तर दिये बिना नताशा ने कहा। "हमें तो बड़ा ही मज़ा आ रहा है! जानते हो, वसीली द्मीत्रिच मेरी ही ख़ातिर एक दिन और यहां रुक गया है?"

"नहीं, पापा अभी तक नहीं आये," सोन्या ने उसे बताया।

"मेरे प्यारे, तुम आ गये, मेरे पास तो आओ, मेरे लाड़ले," दीवानख़ाने से काउंटेस की आवाज़ सुनायी दी। निकोलाई मां के पास गया, उसने उसका हाथ चूमा और चुपचाप मेज़ के पास बैठकर मां के पत्ते चलनेवाले हाथों को देखने लगा। हॉल से लगातार हंसी और नताशा को गाने के लिये राज़ी करनेवाली ख़ुशी भरी आवाज़ें सुनायी दे रही थीं।

"ख़ैर, ठीक है, ठीक है," देनीसोव चिल्ला उठा। "बहानेबाज़ी छोड़िये, अब आपकी इतालवी खेवटों का 'बार्कारोल्ला' गाना सुनाने की बारी है। आपकी मिन्नत करता हूं।"

काउंटेस ने गुमसुम बैठे बेटे की तरफ़ देखा।

"क्या बात है?" मां ने निकोलाई से पूछा।

"ओह, कोई बात नहीं," उसने ऐसे जवाब दिया मानो इस एक ही सवाल से तंग आ गया हो। "पापा जल्दी ही आ जायेंगे?"

"ख़्याल तो ऐसा ही है।"

"यहां तो वही सब कुछ हो रहा है। इन्हें तो कुछ भी मालूम नहीं! कहां जाऊं मैं?" निकोलाई ने सोचा और फिर से उस हॉल में चला गया जहां क्लावीकॉर्ड था।

सोन्या क्लावीकॉर्ड के सामने बैठी थी और उसी बार्कारोल्ला की धुन छेड़ रही थी जो देनीसोव को बेहद पसन्द था। नताशा गाने को तैयार हो रही थी। देनीसोव उल्लासपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था।

निकोलाई इस कमरे में इधर-उधर चक्कर काटने लगा।

"किसलिये ये लोग इसे गाने को मजबूर कर रहे हैं? वह गा ही क्या सकती है! ख़ुश होने की कोई बात ही नहीं है," निकोलाई सोच रहा था।

सोन्या ने धुन छेड़ी।

"हे भगवान, मैं कहीं का नहीं रहा, मेरी इज़्ज़त-आबरू धूल में मिल गयी। गाना-सुनना नहीं, बल्कि गोली अपने सिर के आर-पार

कर लूं – यही बाक़ी रह गया है मेरे लिये," वह सोच रहा था। "यहां से चला जाऊं? मगर जाऊं भी तो कहां? मेरी बला से, गाते रहें ये लोग!"

उदास-सा निकोलाई देनीसोव और लड़कियों पर नज़र डालता, किन्तु उनसे आंखें चुराता हुआ कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाता रहा।

"प्यारे निकोलाई, तुम्हें क्या हुआ है?" निकोलाई को एकटक देखती हुई सोन्या की नज़र पूछ रही थी। उसने तो फ़ौरन यह भांप लिया था कि उसके साथ कोई बात हो गयी है।

निकोलाई ने उसकी ओर से मुंह फेर लिया। संवेदनशील नताशा का भी भाई की मानसिक स्थिति की तरफ़ फ़ौरन ध्यान गया था। उसने यह अनुभव तो कर लिया था, मगर इस क्षण वह इतनी अधिक ख़ुश थी और दुख, उदासी तथा आत्म-भर्त्सना से इतनी दूर थी कि उसने (जैसा कि यह जवान लोगों के साथ अक्सर होता है) जान-बूझकर अपने को धोखा दे दिया।

"नहीं, मैं इस वक़्त इतनी अधिक ख़ुश हूं कि दूसरे के दुख के प्रति सहानुभूति प्रकट करके अपनी ख़ुशी नष्ट नहीं कर सकती," उसने ऐसा महसूस किया और अपने आपसे कहा: "नहीं, ज़रूर मुझसे ग़लती हुई है, निश्चय ही वह उसी तरह से ख़ुश है, जैसे मैं हूं।"

"तो सोन्या," उसने कहा और हॉल के ठीक बीचोंबीच उधर बढ़ चली, जहां उसके मतानुसार, आवाज़ सबसे ज़्यादा अच्छी तरह गूंजती थी। सिर ऊपर उठाकर, बांहों को ढीले-ढाले ढंग से लटकाकर, जैसे कि नर्त्तकियां करती हैं, झटके के साथ एड़ियों से पंजों पर उठते हुए वह कमरे के मध्य में पहुंची और रुक गयी।

"तो यह रही, मैं!" उसने मानो अपने चेहरे पर टिकी हुई देनीसोव की दृष्टि के उत्तर में कहा।

"यह किसलिये ख़ुश हो रही है!" निकोलाई ने बहन की ओर देखते हुए सोचा। "इसे ऊब क्यों महसूस नहीं हो रही, शर्म क्यों नहीं आ रही!" नताशा ने पहला स्वर उठाया, उसकी गर्दन की नसें फूल गयीं, छाती तन गयी, आंखों में गम्भीरता का भाव आ गया। इस क्षण वह किसी भी व्यक्ति और किसी भी चीज़ के बारे में नहीं सोच रही थी और उसके मुस्कराते होंठों से वे ध्वनियां निकल रही थीं जो इतने ही विरामों के साथ और इतने ही लम्बे समय तक कोई भी अपने

गले से निकाल सकता है, किन्तु जिनका एक हज़ार बार मन पर कोई प्रभाव नही होता और जो एक हज़ार एकवीं बार मन के तारों को छू लेती हैं और हमें रोने के लिये विवश कर देती हैं।

नताशा ने इस जाड़े में पहली बार गम्भीरता से गाना आरम्भ किया, ख़ास तौर पर इसलिये कि देनीसोव उसके गाने के बारे में बहुत उत्साही था। वह अब बालिका की तरह नही गाती थी, उसके गाने में अब बालिका जैसी वह हास्यास्पद यत्नशीलता नही थी जो पहले होती थी। किन्तु, जैसा कि उसे सुननेवाले संगीत-पारखी कहते थे, वह अभी काफ़ी अच्छी तरह से नहीं गाती थी। "बहुत अच्छी आवाज़ है, मगर अभी सधी नही, इसे साधना चाहिये," सभी यह कहते। किन्तु ये लोग सामान्यत: नताशा का गाना बन्द हो जाने के बहुत देर बाद ही ऐसा कहते। गाने के समय ठीक ढंग से सांस न लेने और स्वरों के उतार-चढ़ाव के क्षणों में यत्न करनेवाली यह बिना सधी आवाज़ जब तक गूंजती रहती तो ये संगीत-पारखी भी कुछ न बोलते, इस अनसधी आवाज़ को सुनते रहते और केवल यही चाहते कि इसे एक बार और सुनें। उसकी आवाज़ में कुमारी-सुलभ अछूतापन था, अपनी शक्ति के बारे में अबेधता थी, सहज मख़मली कोमलता थी और ये सभी चीजें गाने की कला की उसकी त्रुटियों के साथ ऐसे घुल-मिल गयी थीं कि यों प्रतीत होता था मानो इस आवाज़ को ख़राब किये बिना इसमें कोई भी सुधार नहीं किया जा सकता।

"अरे, यह क्या है?" निकोलाई ने नताशा की आवाज़ सुनी तो आंखें फाड़-फाड़कर उसे देखते हुए सोचा। "इसे क्या हुआ है? कितना अच्छा गा रही है आज यह?" वह यही सोच रहा था। अचानक उसके लिये सारी दुनिया अगले स्वर, अगले वाक्य की प्रतीक्षा में संकेंद्रित हो गयी, दुनिया की हर चीज़ तीन तालों में विभाजित हो गयी: "ओह, मेरे निर्मम प्यार... एक, दो, तीन... एक, दो... तीन एक... ओह, मेरे निर्मम प्यार... एक, दो, तीन... एक। उफ़, हमारी यह बेहूदा ज़िन्दगी!" वह सोच रहा था। "यह सब कुछ, यह दुर्भाग्य, धन-दौलत, दोलोख़ोव, क्रोध, मान-सम्मान – यह सब बकवास है... यह है – असली चीज़... तो नताशा, मेरी प्यारी बहन! मेरी अच्छी बहन!.. कैसे अब वह ऊपरवाला 'सा' उठायेगी?.. अरे, उठा लिया? शुक्र है भगवान का!" और यह न जानते हुए कि

वह ख़ुद भी गा रहा है, 'सा' की शक्ति बढ़ाने के लिये इससे दो सुर नीचे यानी 'पा' और 'धा' सुरों को उठाने लगा। हे भगवान! कितना आनन्द है इसमें! क्या सचमुच मैंने ही इन सुरों को उठाया था? कितना सुख है इसमें!" उसने सोचा।

ओह, यह 'धा' कैसे थरथरा रहा था और किस तरह से वह सब कुछ स्पन्दित हो उठा था जो रोस्तोव की आत्मा में सर्वश्रेष्ठ था। और यह "सर्वश्रेष्ठ" दुनिया की हर चीज़ से अलग, हर चीज़ से ऊपर था। यहां हारे हुए पैसों, दोलोख़ोव और वचन-वादों का क्या महत्त्व हो सकता था!.. सब कुछ बेमानी था! हम हत्या और चोरी कर सकते हैं, फिर भी सुखी हो सकते हैं...

## १६

बहुत अरसे से रोस्तोव को संगीत में आज जैसा आनन्द नही मिला था। किन्तु नताशा के 'बार्कारोल्ला' समाप्त करते ही जीवन का कटु सत्य फिर से उसके सामने आ गया। किसी से कुछ भी कहे बिना वह बाहर आया और नीचे, अपने कमरे में चला गया। कोई पन्द्रह मिनट बाद बुज़ुर्ग काउंट बड़े सन्तुष्ट और बहुत ख़ुश-ख़ुश क्लब से घर लौटे। उनके आने की आवाज़ सुनकर निकोलाई उनके पास गया।

"तो ख़ूब मौज कर आये?" काउंट इल्या अन्द्रेयेविच ने बेटे की ओर प्रसन्नता और गर्व से मुस्कराते हुए पूछा। निकोलाई ने "हां" कहना चाहा, मगर कह नहीं सका। उसने बड़ी मुश्किल से अपनी सिसकी रोकी। काउंट अपना पाइप सुलगा रहे थे और इसलिये बेटे की स्थिति की ओर उनका ध्यान नही गया।

"ओह, मुझे यह तो करना ही पड़ेगा!" निकोलाई ने पहली और अन्तिम बार सोचा। और अचानक लापरवाही के ऐसे अन्दाज़ में कि ख़ुद उसे अपने पर शर्म आयी, उसने पिता को यों सम्बोधित किया मानो शहर जाने के लिये बग्घी मांग रहा हो।

"पापा, मैं आपके पास एक काम से आया हूं। मैं तो भूल ही चला था। मुझे पैसों की ज़रूरत है।"

"तो यह मामला है," पिता ने कहा जो ख़ास तौर पर बहुत अच्छे मूड में थे। "मैंने तुमसे कहा था कि तुम्हारा काम नहीं चलेगा। बहुत पैसे चाहिये क्या तुम्हें?"

"बहुत ज़्यादा," बेचैनी से लाल होते और मूर्खता तथा लापरवाही से मुस्कराते हुए, जिसके लिये बाद में वह बहुत देर तक अपने को क्षमा नहीं कर सका, उसने उत्तर दिया। "मैं कुछ पैसे हार गया हूं, मेरा मतलब है, बहुत, बहुत ही ज़्यादा पैसे, तैंतालीस हज़ार रूबल हार गया हूं।"

"क्या? किसे हार गये हो?.. मज़ाक़ कर रहे हो!" काउंट अचानक चिल्ला उठे और मिरगी के दौरे के समय की लाली के समान उनकी गर्दन तथा गुद्दी वैसे ही लाल हो गयी जैसे बूढ़े लोगों की हुआ करती हैं।

"मैंने यह रक़म कल अदा करने का वचन दिया है," निकोलाई ने कहा।

"यह भी ख़ूब रही!.." बुज़ुर्ग काउंट कह उठे और निराशा से हाथ फैलाते हुए सोफ़े पर लाचार-से बैठ गये।

"क्या किया जाये! किसी के साथ भी ऐसा हो सकता है," बेटे ने बेतकल्लुफ़ी और दिलेरी से कहा, जबकि मन में वह अपने को ऐसा नीच और कमीना मान रहा था जो जीवन भर अपने को इस अपराध से मुक्त नहीं कर पायेगा। उसका मन चाह रहा था कि अपने पिता के हाथ चूमे, घुटनों के बल होकर उनसे माफ़ी मांगे, लेकिन वह लापरवाही, यहां तक कि गुस्ताख़ी के अन्दाज़ में यह कह रहा था कि ऐसा तो किसी के साथ भी हो सकता है।

बेटे के उक्त शब्द सुनकर काउंट ने नज़रें झुका लीं और बेचैनी से इधर-उधर हिलने-डुलने लगे मानो कुछ ढूंढ़ रहे हों।

"हां, हां," वह कह उठे, "यह मुश्किल होगा, मुझे डर है कि इतनी बड़ी रक़म हासिल करना मुश्किल होगा... हर किसी के साथ ऐसा हो सकता है! हां, हर किसी के साथ..." और काउंट बेटे के चेहरे पर उड़ती-सी नज़र डालकर कमरे से बाहर चले गये... निकोलाई ने अपने को पिता की डांट-डपट, उनके विरोध के लिये तैयार कर लिया था, मगर उसने ऐसी आशा बिल्कुल नहीं की थी।

"पापा जी! पा... पा!" उसने सिसकते हुए ऊंची आवाज़ में

उनके पीछे से कहा। "मुझे क्षमा कर दीजिये!" और पिता का हाथ पकड़कर उसे अपने होंठों के साथ लगा लिया और रो पड़ा।

जिस वक़्त बेटे की पिता के साथ यह बातचीत हो रही थी, उसी समय मां और बेटी के बीच भी कुछ कम महत्त्वपूर्ण बातचीत नहीं चल रही थी। बहुत ही उत्तेजित-सी नताशा मां के पास भागी आयी।

"अम्मां!.. अम्मां!.. उसने कर दिया..."

"क्या कर दिया?"

"कर दिया, मुझसे शादी का प्रस्ताव कर दिया। अम्मां! अम्मां!" वह चिल्ला रही थी।

काउंटेस को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। देनीसोव ने शादी करने का प्रस्ताव किया है? किससे? इस बित्ते भर की छोकरी नताशा से जो कुछ ही समय पहले तक गुड़ियां खेलती थी और अभी भी स्कूल की पढ़ाई कर रही है।

"नताशा, बस, काफ़ी है, यह बेवक़ूफ़ी की बात बन्द करो!" काउंटेस ने अभी भी यह आशा करते हुए कहा कि बेटी मज़ाक़ कर रही है।

"आप भी कमाल कर रही हैं, इसे बेवक़ूफ़ी की बात कह रही हैं! मैं सचाई बता रही हूं," नताशा ने झुंझलाकर जवाब दिया। "मैं यह पूछने आई हूं कि अब क्या किया जाये और आप इसे 'बेवक़ूफ़ी' कह रही हैं..."

काउंटेस ने कंधे झटके।

"अगर यह सच बात है कि **श्रीमान** देनीसोव ने तुमसे विवाह का प्रस्ताव किया है तो तुम उससे कह दो कि वह उल्लू है। बस, बात ख़त्म।"

"नहीं, वह उल्लू नहीं है," नताशा ने बुरा मानते हुए गम्भीरता से जवाब दिया।

"तो तुम क्या चाहती हो? आजकल तो तुम सभी प्यार-मुहब्बत के फेर में पड़ी हुई हो। अगर उसे प्यार करती हो तो कर लो उससे शादी," काउंटेस ने खीझकर और हंसते हुए कहा, "भगवान तुम्हारा भला करें!"

"नहीं, अम्मां, मैं उसे प्यार नहीं करती हूं... शायद प्यार नहीं करती हूं।"

"तो तुम उससे ऐसे ही कह दो।"

"अम्मां, आप नाराज़ हैं? आप नाराज़ नहीं हों, मेरी अच्छी अम्मां। इसमें मेरा क्या क़ुसुर है?"

"नहीं, मगर तुम क्या चाहती हो, मेरी बेटी? चाहती हो तो मैं जाकर कह देती हूं उससे।" काउंटेस ने मुस्कराते हुए कहा।

"नहीं, मैं ख़ुद ही कहूंगी, आप सिर्फ़ मुझे सिखा दीजिये कि कैसे कहूं। आपको तो यह सब बहुत आसानी से सूझ जाता है," मां की मुस्कान के उत्तर में उसने इतना और कह दिया। "लेकिन काश, आपने देखा होता कि उसने मुझसे कैसे यह कहा! मैं जानती हूं कि वह यह कहना नहीं चाहता था, बस, यों ही संयोग से कह बैठा।"

"फिर भी तुम्हें इन्कार तो करना होगा।"

"नहीं, यह नहीं करना चाहिये। मुझे इतना अफ़सोस हो रहा है उसके लिये! इतना भला है वह।"

"तो उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लो। तुम्हें शादी करने में देर नहीं करनी चाहिये," मां ने झुंझलाते और मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा।

"नहीं, अम्मां, मुझे बहुत अफ़सोस हो रहा है उसके लिये। मैं समझ नहीं पा रही कि कैसे उससे यह कहूं।"

"तुम्हें कुछ भी कहने की ज़रूरत नहीं, मैं ख़ुद कह दूंगी," काउंटेस ने इस कारण बुरा मानते हुए कहा कि कोई उसकी छोटी-सी नताशा को शादी के लायक़ बड़ी समझने की जुर्रत कर सकता है।

"नहीं, हरगिज़ नहीं, मैं ख़ुद कहूंगी और आप दरवाज़े के पास खड़ी रहकर सुनिये," और नताशा दीवानख़ाने से होती हुई हॉल में भाग गयी जहां देनीसोव दोनों हाथों से मुंह ढके क्लावीकॉर्ड के पास उसी कुर्सी पर बैठा था। नताशा की हल्की पद-चाप सुनते ही वह उछलकर खड़ा हो गया।

"नताशा," तेज़ क़दमों से उसके नज़दीक आकर उसने कहा, "मेरे भाग्य का निर्णय कर दीजिये। वह आपके हाथों में है!"

"वसीली द्मीत्रिच, मुझे बहुत दुख हो रहा है आपके लिये!.. आप, आप इतने अच्छे हैं... लेकिन यह नहीं हो सकता... यह... यों मैं हमेशा आपको प्यार करती रहूंगी।"

देनीसोव उसके हाथ पर झुक गया और नताशा को अजीब, समझ में न आनेवाली ध्वनियां सुनायी दीं। नताशा ने उसके अस्त-व्यस्त, घुंघराले बालोंवाला सिर चूमा। इसी समय इन्हें काउंटेस की पोशाक की तेज़ी से अपनी तरफ़ आती सरसाहट सुनायी दी। काउंटेस इनके पास आयी।

"वसीली द्मीत्रिच, मैं यह सम्मान प्रदान करने के लिये आपकी आभारी हूं," काउंटेस ने परेशान-सी आवाज़ में कहा जो देनीसोव को कठोर प्रतीत हुई, "लेकिन मेरी बेटी अभी इतनी छोटी है और मेरे ख़्याल में मेरे बेटे के मित्र के नाते आपको पहले मुझसे बात करनी चाहिये थी। तब आपने मुझे इस तरह इन्कार करने के लिये मजबूर न किया होता।"

"काउंटेस ..." देनीसोव ने नज़रें झुकाये हुए अपराधी की तरह कहा। वह कुछ और भी कहना चाहता था, मगर कह नही पाया।

नताशा उसे ऐसे दयनीय रूप में देख नही पायी, बुरी तरह बेचैन हो उठी और ज़ोर-ज़ोर से सिसकने लगी।

"काउटेस, मैं आपके सामने क़ुसूरवार हूं," देनीसोव टूटती-सी आवाज़ में कहता गया, "लेकिन सच मानिये कि मैं आपकी बेटी और आपके पूरे परिवार को ही इतना अधिक चाहता हूं कि एक नहीं, अपने दो जीवन भी न्योछावर कर सकता हूं ..." उसने काउंटेस की ओर देखा और उनके चेहरे पर कठोरता देखकर बोला: "विदा दीजिये, काउंटेस," उनका हाथ चूमा और नताशा की ओर देखे बिना, तेज़, दृढ़ क़दमों से कमरे से बाहर चला गया।

अगले दिन रोस्तोव ने देनीसोव को विदा किया जो अब मास्को में एक भी दिन नहीं ठहरना चाहता था। मास्को के उसके सभी यार-दोस्तों ने उसे जिप्सियों के यहां विदाई पार्टी दी और उसे यह तक होश नही रहा कि कैसे उसे स्लेज में लेटाया गया और पहली तीन घोड़ा-बदल-चौकियों तक का उसका सफ़र किस तरह से बीता।

देनीसोव के जाने के बाद रोस्तोव ने पैसों का इन्तज़ार करते हुए, जिनकी बुज़ुर्ग काउंट फ़ौरन व्यवस्था नहीं कर सके, मास्को में दो हफ़्ते और बिताये। इन दिनों के दौरान वह घर पर ही, मुख्यत: लड़कियों के कमरे में रहा।

सोन्या उसके प्रति पहले से अधिक स्नेहशील और अनुरागमयी हो गयी थी। ऐसे प्रतीत होता था मानो वह उसे यह दिखाना चाहती थी कि जुए में उसका इतनी बड़ी रक़म हारना उसकी एक उपलब्धि थी जिसके लिये वह अब उसे पहले से भी ज़्यादा प्यार करती थी। मगर निकोलाई अब अपने को उसके योग्य नहीं मानता था।

वह लड़कियों के एलबमों में कवितायें और स्वर-लिपियां लिखता रहता तथा आख़िर दोलोख़ोव को पूरे तैंतालीस हज़ार रूबल भेजकर और उससे इस रक़म की रसीद पाकर नवम्बर के अन्त में किसी भी परिचित से विदा लिये बिना फिर से अपनी रेजिमेंट में शामिल होने के लिये, जो पोलैंड पहुंच भी चुकी थी, मास्को से रवाना हो गया।

# भाग २

# १

बीवी के साथ अपने झगड़े के बाद प्येर पीटर्सबर्ग चल दिया। तोर्जोक नगर की घोड़ा-बदल-चौकी पर या तो घोड़े थे नही या चौकी-वाला घोड़े देना नहीं चाहता था। इसलिये उसे वहां रुकना पड़ा। कपड़े उतारे बिना ही वह चमड़े के सोफ़े पर लेट गया जिसके सामने गोल मेज़ रखी थी। उसने गर्म बूट पहने हुए ही अपने बड़े-बड़े पांव गोल मेज़ पर टिका दिये और विचारों में डूब गया।

"आपका हुक्म हो तो मैं सूटकेस भीतर ले आऊं? आपके लिये बिस्तर लगा दूं, चाय बना दूं?" नौकर पूछता रहा।

प्येर ने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि वह न तो कुछ सुन रहा था और न ही देख रहा था। वह तो पिछली घोड़ा-बदल-चौकी पर ही विचारों में खो गया था और अभी तक उसी प्रश्न पर, जो इतना अधिक महत्त्वपूर्ण था, इस तरह सोचता जा रहा था कि अपने इर्द-गिर्द होनेवा-ली किसी भी चीज़ की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दे रहा था। उसे इस बात में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी कि वह जल्दी या देर से पीटर्सबर्ग पहुंचेगा या इस चौकी पर उसके लिये आराम करने की जगह होगी या नहीं, और जिन विचारों में वह इस वक़्त खोया हुआ था, उनकी तुलना में तो उसके लिये इस बात का भी कोई महत्त्व नहीं था कि वह इस चौकी पर कुछ घण्टे या पूरी ज़िन्दगी ही बिता देगा।

चौकीवाला, उसकी बीवी, प्येर का नौकर और तोर्जोक की कसी-दाकारी की चीज़ें बेचनेवाली औरत भी कमरे में आती रही और ये सभी अपनी सेवायें पेश करते रहे। गोल मेज़ पर अपनी टांगें फैलाये हुए ही प्येर चश्मे में से इन सबकी ओर देखता और यह न समझ पाता कि वे उससे क्या चाहते हैं और उन प्रश्नों को हल किये बिना, जो उसके दिल-दिमाग़ पर छाये थे, वे ज़िन्दा ही कैसे रह सकते हैं। उसे वही सवाल परेशान कर रहे थे जो सोकोल्निकी के जंगल में द्वन्द्व-युद्ध के बाद घर लौटने और पहली यातनापूर्ण तथा उनींदी रात बिताने पर उसके दिमाग़ में आये थे। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना ही था कि यात्रा के

इस एकान्त में वे अधिक शक्ति से उसपर हावी हो गये थे। वह चाहे किसी भी चीज़ के बारे में क्यों न मोचने लगता, हर हालत में उन्हीं प्रश्नों की ओर लौट आता जिन्हें वह हल नहीं कर पा रहा था और जिन्हें वह लगातार अपने से पूछे बिना नहीं रह सकता था। यों कहना चाहिये कि उसके दिमाग़ का वह मुख्य पेच ही कुछ **गड़बड़** हो गया था जिसपर उसकी सारी ज़िन्दगी निर्भर थी। यह पेच न तो आगे जाता था, न बाहर निकलता था, एक ही जगह पर घूमता जाता था और उसे घुमाते न जाना असम्भव था।

घोड़ा-बदल-चौकीवाला कमरे में आया और बड़ी नम्रता से मिन्नत-समाजत करते हुए यह अनुरोध करने लगा कि प्येर सिर्फ़ कोई दो घण्टे रुक जाये और इसके बाद वह हुजूर के लिये (चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये) सरकारी घोड़े मुहैया कर देगा। चौकीवाला सम्भवतः झूठ बोल रहा था और मुसाफ़िर से कुछ और पैसे ऐंठना चाहता था। "यह अच्छा था या बुरा?" प्येर ने अपने से पूछा। "मेरे लिये अच्छा है, दूसरे मुसाफ़िर के लिये बुरा होगा और ख़ुद यह तो ऐसा किये बिना रह नहीं सकता क्योंकि उसके पास खाने को कुछ नहीं। उसका कहना है कि एक फ़ौजी अफ़सर ने किसी ग़ैरफ़ौजी को सरकारी घोड़े देने के लिये उसकी पिटाई कर दी। लेकिन फ़ौजी अफ़सर ने इसलिये उसकी पिटाई की थी कि उसे जल्दी जाना था। और मैंने दोलोख़ोव पर इस-लिये गोली चलायी कि मैंने अपने को अपमानित महसूस किया। लुई १६वें को इसलिये मृत्यु-दण्ड दिया गया कि उसे अपराधी माना गया था और एक वर्ष बाद उसकी हत्या करनेवालों को भी किसी कारण मौत की सज़ा दे दी गयी। बुराई क्या है? अच्छाई क्या है? किस चीज़ से प्रेम और किससे घृणा करनी चाहिये? किसलिये जिया जाये और 'मैं' क्या हूं? जीवन क्या है, मृत्यु क्या है? कौन-सी शक्ति सभी कुछ का संचालन करती है?" वह अपने से पूछ रहा था। एक असंगत उत्तर के सिवा इन सब प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं था, मगर वह इन प्रश्नों का उत्तर नहीं था। यह उत्तर था: "मरने पर सब कुछ ख़त्म हो जाये-गा। मरने पर सब कुछ जान जाओगे या सवाल पूछना बन्द कर दोगे।" लेकिन मरना तो भयानक था।

तोर्जोक की चीज़ें बेचनेवाली औरत चिचियाती-सी आवाज़ में प्येर से अपना माल, ख़ास तौर पर बकरी के चमड़े के जूते ख़रीदने

का अनुरोध कर रही थी। "मेरे पास सैकड़ों रूबल हैं जिनका मैं कही इस्तेमाल नहीं कर सकता, जबकि यह फटा-पुराना कोट पहने सहमी-सहमी नज़र से मेरी तरफ़ देख रही है," प्येर सोच रहा था। "लेकिन उसे पैसों की क्या ज़रूरत है? जैसे कि पैसे उसकी ख़ुशी, उसके मन के चैन को रत्ती भर भी बढ़ा सकते हों? क्या दुनिया की कोई भी चीज़ इसे या मुझे बुराई या मौत से बचाने में ज़रा भी मदद दे सकती है? मौत, जिसके साथ सब कुछ ख़त्म हो जाता है और जो आज या कल आ ही जायेगी – कुछ भी हो, शाश्वतत्व की तुलना में तो वह एक पल के बराबर ही है।" वह फ़िट न होनेवाले पेच को फिर से घुमाने लगा और यह पेच उसी तरह एक ही जगह पर घूमता रहा।

प्येर के नौकर ने मदाम स्युज़ा का पत्रों के रूप में लिखा नया उपन्यास, जिसके आधे पृष्ठ अभी भी जुड़े हुए थे तथा आधे काटकर खोल दिये गये थे, उसे पढ़ने को दे दिया। वह इस उपन्यास में किसी अमेली दे मेन्सफ़ील्ड के दुख-दर्दों और सदाचारपूर्ण संघर्ष के बारे में पढ़ने लगा। "उसने अपने को बहकाने-फुसलानेवाले के विरुद्ध संघर्ष क्यों किया, जबकि वह उसे प्यार करती थी?" प्येर सोच रहा था। "भगवान अपनी इच्छा के विरुद्ध तो उसकी आत्मा में किसी भावना को जन्म दे नही सकते थे। मेरी भूतपूर्व पत्नी ने संघर्ष नही किया और सम्भवतः उसका ऐसा करना ठीक ही था। कुछ भी तो नही खोजा गया," प्येर ने पुनः अपने आपसे कहा, "कोई भी तो नया आविष्कार नहीं किया गया। हम केवल इतना ही जान सकते हैं कि कुछ भी नहीं जानते। और पूरी मानवीय सूझ-बूझ का यही सार है।"

प्येर को अपने भीतर और अपने इर्द-गिर्द सभी कुछ उलझा-उलझाया, बेमानी और घृणित प्रतीत हो रहा था। किन्तु अपने इर्द-गिर्द की सभी चीज़ों के प्रति अपनी घृणा में ही उसे किसी तरह का चिढ़ानेवाला आनन्द भी मिल रहा था।

"हुज़ूर, आपसे इन साहब को थोड़ी-सी जगह देने की प्रार्थना करने की गुस्ताख़ी कर रहा हूं," चौकीवाले ने एक अन्य यात्री के साथ कमरे में प्रवेश करते हुए कहा। यह यात्री भी घोड़े न होने के कारण यहां रुकने को विवश हो गया था। यह यात्री नाटा, चौड़ी काठी, पीले और झुर्रीदार चेहरेवाला बूढ़ा व्यक्ति था। उसकी चमकीली, अस्पष्ट भूरे रंग की आंखों के ऊपर घनी-घनी सफ़ेद भौंहें थीं।

प्येर ने मेज़ से अपनी टांगें उठा लीं, उठकर खड़ा हुआ और अपने लिये तैयार किये गये बिस्तर पर जा लेटा। वह जब-तब इस यात्री की ओर देख लेता था जो चेहरे पर उदासी तथा थकान के भाव के साथ नौकर की मदद से बमुश्किल अपने कपड़े उतार रहा था और प्येर की ओर कोई ध्यान नहीं देता था। बदन पर भेड़ की खाल का भद्दा-सा नानकीन कोट और पतली-पतली, हड़ीली टांगों पर घुटनों तक के नमदे के बूट बाक़ी रह जाने पर यह यात्री अपना बहुत बड़ा, चौड़ी कनपटियों और छोटे-छोटे कटे-छंटे बालोंवाला सिर सोफ़े पर टिकाकर बैठ गया और उसने बेज़ूखोव की तरफ़ देखा। इस नज़र के कठोर, बुद्धिमत्तापूर्ण और बीधते भाव ने प्येर को चकित कर दिया। उसका इस यात्री से बातचीत करने को मन हुआ। किन्तु जब उसने उससे रास्ते के बारे में पूछने के विचार से मुंह खोलना चाहा तो उसने पाया कि यात्री ने आंखें मूंद ली हैं, बुढ़ापे के झुर्रियोंवाले हाथों को (जिनमें से एक हाथ की उंगली पर आदम की खोपड़ीवाली लोहे की बड़ी-सी अंगूठी थी) एक-दूसरे के साथ सटा लिया है, बुत बना बैठा है – या आराम कर रहा है या, जैसा कि प्येर को लगा, किसी चीज़ के बारे में गहन और शान्त मन से चिन्तन कर रहा है। बूढ़े यात्री का नौकर भी झुर्रियों तथा पीले और दाढ़ी-मूंछों के बिना चेहरेवाला बूढ़ा आदमी था। उसने दाढ़ी-मूंछों को सफ़ाचट नहीं किया था, बल्कि उसके चेहरे पर वे कभी उगी ही नहीं थीं। फुर्तीले बूढ़े नौकर ने सफ़री रसोई की सब चीज़ें निकालीं, चाय की मेज़ लगायी और उबलते पानी का समोवार कमरे में लाया। जब सब कुछ तैयार हो गया तो यात्री ने आंखें खोलीं, मेज़ के नज़दीक हुआ, अपने लिये चाय का एक गिलास बनाकर दूसरे गिलास में दाढ़ी-मूंछों के बिना नौकर के लिये चाय डाली और गिलास उसे पकड़ा दिया। प्येर इस यात्री से बातचीत करने की बेचैनी, आवश्यकता, यहां तक कि अनिवार्यता भी अनुभव करने लगा।

नौकर अपना ख़ाली, उलटा रखा हुआ गिलास तथा पूरी तरह से ख़त्म न की गयी चीनी की डली वापस लेकर आया और उसने मालिक से पूछा कि उन्हें किसी अन्य चीज़ की ज़रूरत तो नहीं।

"नहीं। किताब दे दो," यात्री ने कहा। नौकर ने किताब दे दी जो प्येर को धार्मिक प्रतीत हुई। यात्री उसे पढ़ने में मगन हो गया।

प्येर उसकी तरफ़ देखता रहा। यात्री ने अचानक किताब नीचे रख दी, उसमें पृष्ठ संकेत-चिह्न रखकर उसे बन्द कर दिया, फिर से आंखें मूंद लीं और फिर से सोफ़े पर टेक लगाकर अपनी पहले जैसी मुद्रा में बैठ गया। प्येर उसकी तरफ़ देखता रहा और इसके पहले कि वह दूसरी ओर मुंह कर पाता, बूढ़े ने आंखें खोल ली और अपनी दृढ़ तथा कठोर दृष्टि प्येर के चेहरे पर टिका दी।

प्येर ने घबराहट महसूस की और इस नज़र से बचना चाहा, मगर बुढ़ापे की चमकती हुई आंखें अदम्य रूप से उसे अपनी तरफ़ खींचती जा रही थी।

## २

"अगर मैं ग़लती नहीं कर रहा हूं तो मुझे काउंट बेज़ूखोव से बात करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है," इस यात्री ने जल्दी किये बिना ऊंचे-ऊंचे कहा। प्येर चुपचाप और प्रश्नसूचक दृष्टि से अपने सहभाषी को चश्मे में से देखता जा रहा था।

"मैंने आपके बारे में सुना है," वह कहता गया, "और उस दुर्भाग्य के बारे में भी सुना है, मेरे हुज़ूर, जिसके आप शिकार हुए हैं।" उसने "दुर्भाग्य" शब्द पर विशेष ज़ोर दिया मानो कह रहा हो : "आप उसे चाहे कोई भी संज्ञा क्यों न दें, वह दुर्भाग्य था। मैं जानता हूं कि मास्को में आपके साथ जो कुछ भी हुआ था, वह दुर्भाग्य था।" – "मुझे इसका बहुत अफ़सोस है, मेरे हुज़ूर।"

प्येर शर्म से लाल हो गया, उसने झटपट अपनी टांगें बिस्तर से नीचे कर लीं और कृत्रिमता तथा भीरुता से मुस्कराते हुए बूढ़े की ओर झुक गया।

"मैंने केवल जिज्ञासावश इसका उल्लेख नहीं किया है, मेरे हुज़ूर, बल्कि इसके लिये मेरे पास कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण कारण हैं," वह प्येर के चेहरे पर अपनी नजर टिकाये हुए चुप हो गया, सोफ़े पर एक ओर को कुछ खिसक गया और इस तरह उसने मानो प्येर को अपने पास आकर बैठने का संकेत किया। प्येर को इस बुड्ढे के साथ बातचीत

शुरू करना अच्छा नही लग रहा था, मगर वह अनचाहे ही उसकी इच्छा के सामने झुकते हुए उसके पास जाकर बैठ गया।

"आप दुखी हैं, मेरे हुज़ूर," अजनबी कहता गया। "आप जवान हैं, मैं बूढ़ा हूं। मैं यथाशक्ति आपकी मदद करना चाहता हूं।"

"ओह, हां," प्येर ने होंठों पर बनावटी मुस्कान लाते हुए कहा। "आपका बहुत आभारी हूं... कहां से आना हुआ आपका?" अजनबी का चेहरा स्नेहहीन ही नहीं था, बल्कि उसपर बेरुखी और कठोरता भी थी। इसके बावजूद इस नवपरिचित की बातचीत और उसका चेहरा अदम्य रूप से प्येर पर अपनी मोहिनी डाल रहा था।

"फिर भी अगर किन्हीं कारणों से आपको मेरे साथ बातचीत करना अच्छा न लग रहा हो तो आप मुझसे ऐसे ही कह दीजिये, मेरे हुज़ूर," बूढ़े ने कहा और सहसा उसके चेहरे पर पिता-तुल्य, अप्रत्याशित, मधुर मुस्कान खिल उठी।

"जी नही, बिल्कुल नहीं। इसके विपरीत, आपसे परिचित होकर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई है," प्येर ने जवाब दिया और अपने नवपरिचित के हाथ पर एक बार फिर नज़र डालकर उसने उसकी अंगूठी को निकट से देखा। उसे उसपर फ़्री मेसनों का चिह्न यानी आदम की खोपड़ी दिखायी दी।

"आप इजाज़त दें तो मैं यह जानना चाहूंगा कि आप फ़्री मेसन हैं?"

"हां, मैं फ़्री मेसनों के भ्रातृ-संघ का सदस्य हूं," अजनबी ने प्येर की आंखों की अधिकाधिक थाह लेते हुए उत्तर दिया। "अपनी तथा उन सबकी ओर से आपकी ओर बन्धुत्व का हाथ बढ़ाता हूं।"

"मगर मुझे डर है," प्येर ने मुस्कराते और इस फ़्री मेसन द्वारा पैदा किये गये विश्वास तथा फ़्री मेसनों की आस्थाओं का मज़ाक़ उड़ाने की अपनी आदत के बीच डांवांडोल होते हुए कहा, "मुझे डर है कि मैं इसे समझने में इतना असमर्थ हूं, मालूम नहीं कि कैसे कहूं, मुझे डर है कि विश्व की रचना के बारे में मेरी पूरी चिन्तनधारा आपके विचारों से इतनी भिन्न है कि हम एक-दूसरे को समझ नहीं पायेंगे।"

"आपकी चिन्तनधारा से मैं परिचित हूं," फ़्री मेसन बोला, "और आपकी यह चिन्तनधारा, जिसकी आप चर्चा कर रहे हैं और जो आपको अपने मानसिक परिश्रम का परिणाम प्रतीत होती है, यही

अधिकांश लोगों की चिन्तनधारा है और यह घमण्ड, काहिली तथा जहालत का निरपवाद नतीजा है। क्षमा चाहता हूं, मेरे हुजूर, अगर मुझे इसके बारे में मालूम न होता तो मैंने आपसे बातचीत ही न शुरू की होती। आपका चिन्तन करने का ढंग दुखद भटकाव है।"

"ठीक इसी तरह से मैं भी यह मान सकता हूं कि आप भी भटके हुए हैं," प्येर ने ज़रा मुस्कराकर कहा।

"मैं कभी यह कहने का साहस नहीं करूंगा कि मैं सचाई जानता हूं," फ़्री मेसन ने अपने कथन की सुस्पष्टता और दृढ़ता से प्येर को अधिकाधिक चकित करते हुए कहा। "अकेला तो कोई भी सचाई तक नहीं पहुंच सकता। हमारे आदि पुरुष से आरम्भ करके हमारे समय की लाखों-करोड़ों पीढ़ियों के सहयोग से एक-एक पत्थर रखते हुए ही परमेश्वर के रहने योग्य भव्य मन्दिर बनता है," फ़्री मेसन ने कहा और आंखें मूंद लीं।

"मुझे आपसे कहना होगा कि मैं... कि मैं भगवान में विश्वास नहीं करता हूं," प्येर ने सब कुछ सच-सच कहने की आवश्यकता अनुभव करते हुए कहा।

फ़्री मेसन ने प्येर की तरफ़ देखा और ऐसे मुस्करा दिया जैसे हाथ में लाखों रूबल लिये हुए कोई धनी आदमी उस ग़रीब की तरफ़ देखकर मुस्कराता है जो यह कहता है कि उसके पास पांच रूबल नहीं हैं जो उसे सुखी बना सकते हैं।

"हां, आप उसे जानते नहीं हैं, मेरे हुज़ूर," फ़्री मेसन ने जवाब दिया। "आप उसे जान नहीं सकते। आप उसे नहीं जानते, इसीलिये आप दुखी हैं।"

"हां, हां, मैं दुखी हूं," प्येर ने पुष्टि की, "लेकिन मैं क्या करूं?"

"आप उसे नहीं जानते, मेरे हुज़ूर, इसीलिये आप बहुत दुखी हैं। आप उसे नहीं जानते, मगर वह यहां है, मेरे भीतर है, मेरे शब्दों में है, वह तुममें है, ईश्वर-निन्दा के उन शब्दों में है जो तुमने अभी-अभी कहे," फ़्री मेसन ने कठोर और कांपती आवाज़ में कहा।

वह चुप हो गया और उसने गहरी सांस ली। सम्भवतः वह शान्त होने का प्रयास कर रहा था।

"अगर वह न होता," उसने धीरे से कहा, "तो हमने उसकी

चर्चा न की होती, मेरे हुजूर। हमने क्यों और किसकी चर्चा की है? तुमने किससे इन्कार किया है?" उसने अचानक उल्लासपूर्ण कठोरता और अपनी आवाज़ में प्रभुता का पुट लाते हुए कहा। "अगर वह नही है तो किसने उसे अपने मन से गढ़ लिया है? तुम्हारे दिमाग़ में यह विचार कहां से आया कि कोई ऐसी कल्पनातीत हस्ती भी है? क्यों तुमने और सारी दुनिया ने एक ऐसी अचिन्त्य हस्ती के अस्तित्व की कल्पना की, ऐसी हस्ती जो अपने सभी लक्षणो की दृष्टि से सर्व-शक्तिमान, शाश्वत और अनन्त है?.." वह रुक गया और देर तक ख़ामोश रहा।

प्येर इस ख़ामोशी को तोड़ना नहीं चाहता था और तोड़ भी नहीं सकता था।

"वह है, लेकिन उसे समझना मुश्किल है," फ़्री मेसन ने प्येर के चेहरे की ओर नहीं, बल्कि सीधे अपने सामने देखते हुए फिर से कहना शुरू किया, जबकि उसके बुढ़ापे के हाथ आन्तरिक उत्तेजना के कारण शान्त न रहकर पुस्तक के पृष्ठों को उलट-पलट रहे थे। "अगर यह कोई आदमी होता, जिसके अस्तित्व के बारे में तुम सन्देह करते, तो मैं इस आदमी का हाथ पकड़कर उसे तुम्हारे पास ले आता और तुम्हे दिखा देता। किन्तु मैं तुच्छ नश्वर भला कैसे उस सर्वशक्ति-मान, अनन्त-अनित्य और सर्वकल्याणकारी को किसी अन्धे या ऐसे व्यक्ति को दिखा सकता हू जो इसलिये आंखें मूंद लेता है कि उसे न देखे, न समझे और जो अपनी तुच्छता और भ्रष्टता को समझने में असमर्थ है?" वह चुप हो गया। "तुम कौन हो? क्या हो? तुम अपने बारे में यह सोचते हो कि बड़े बुद्धिमान हो, क्योंकि तुम वे अपवित्र शब्द मुह से निकाल सके," वह उदासी और तिरस्कारपूर्ण व्यंग्य के अन्दाज़ में कहता गया, "लेकिन तुम उस छोटे-से बालक से भी ज़्यादा मूर्ख हो जो बड़ी चतुराई से बनायी गयी घड़ी के पुर्ज़ों से खेलते हुए यह कहता है कि चूंकि वह इस घड़ी के उपयोग का महत्त्व नही समझता, इसलिये इसे बनानेवाले कारीगर पर भी विश्वास नहीं करता। 'उसे' जान पाना कठिन है। आदम के ज़माने से आज तक, अनेक सदियों के दौरान हम उसे जानने की कोशिश कर रहे हैं और अपने लक्ष्य से असीम दूर हैं। किन्तु 'उसे' समझ न पाने को हम केवल अपनी दुर्बलता और 'उसकी' महानता मानते हैं..."

प्येर धड़कते दिल और चमकती आंखों से फ़्री मेसन के चेहरे को देखते हुए उसकी बात सुन रहा था, उसे रोकता नहीं था, कोई सवाल नहीं पूछता था और जी-जान से उसपर विश्वास कर रहा था जो यह अजनबी आदमी उससे कह रहा था। वह फ़्री मेसन की बातों के विद्यमान तर्कसंगत निष्कर्षों में विश्वास कर रहा था या बच्चों की भांति उसके शब्दों में पायी जानेवाली आस्था और हार्दिकता के लहजे में विश्वास कर रहा था या कांपती आवाज़ में जो कभी-कभी भावावेश के कारण टूट जाती थी या फिर चमकती, बूढ़ापे की आंखों में जो अपनी इसी आस्था को बनाये रखते हुए बुढ़ा गयी थीं, या फिर उस शान्ति, दृढ़ता और अपने उद्देश्य की उस चेतना में जो फ़्री मेसन के पूरे व्यक्तित्व से प्रकट हो रही थीं और जो अपने विषाद तथा निराशा की तुलना में उसे विशेष रूप से अत्यधिक चकित कर रही थीं – किन्तु वह पूरे मन से विश्वास करना चाहता था, विश्वास करता था और मानसिक चैन, पुनरुत्थान, जीवन की ओर प्रत्यावर्त्तन की सुखद भावना अनुभव कर रहा था।

"उसे बुद्धि से नहीं, जीवन से जाना जाता है," फ़्री मेसन ने कहा।

"मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं," प्येर अपने अन्तर में सिर उठाते सन्देह के कारण डरते हुए बोला। वह अपने सहभाषी के तर्क-वितर्क की अस्पष्टता और दुर्बलता के विचार से डर रहा था, वह उसपर विश्वास न करने से डर रहा था। "मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं," उसने कहा, "मानवीय बुद्धि उसे जानने में कैसे असमर्थ है जिसकी आप चर्चा कर रहे हैं।"

फ़्री मेसन के होंठों पर पिता-तुल्य विनम्र मुस्कान दिखायी दी।

"परम विवेक और सचाई मानो एक निर्मलतम ओसकण है जिसे हम अपने भीतर ग्रहण करना चाहते हैं," वह बोला। "लेकिन क्या मैं इस निर्मलतम ओसकण को गन्दे वर्तन में डालकर उसकी निर्मलता के बारे में निर्णय कर सकता हूं? केवल अपनी आन्तरिक स्वच्छता से ही मैं अपने अन्तर के इस ओसकण को एक निश्चित सीमा तक निर्मलता प्रदान कर सकता हूं।"

"हां, हां, ऐसा ही है!" प्येर ने खुशी से कहा।

"परम विवेक केवल तर्क-बुद्धि, भौतिकी, इतिहास, रसायन

आदि सांसारिक विज्ञानों-शास्त्रों पर भी, जिनमें बौद्धिक ज्ञान को विभाजित किया जाता है, आधारित नहीं है। परम विवेक एक ही है। परम विवेक का केवल एक विज्ञान है, सर्वस्व का विज्ञान, सारी विश्व-रचना और उसमें मानव के स्थान को स्पष्ट करनेवाला विज्ञान। अपने भीतर इस विज्ञान को स्थान देने के लिये यह सर्वथा आवश्यक है कि मानव अपने अन्तर को स्वच्छ बनाये और अपना पुनरुत्थान करे। इसलिये 'उसे' जानने के पहले जरूरी है कि विश्वास और आत्म-परिष्कार किया जाये। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये हमारी आत्मा में ईश्वरीय आलोक को जगह दी गयी है जिसे अन्तःकरण कहा जाता है।"

"हां, हां," प्येर ने पुष्टि की।

"आत्मिक दृष्टि से अपने भीतर झांककर देखो और खुद से पूछो कि तुम अपने से सन्तुष्ट हो। अपनी बुद्धि का अनुकरण करते हुए तुमने क्या प्राप्त किया है? तुम हो क्या? आप जवान हैं, धनी हैं, समझदार हैं, पढ़े-लिखे हैं, मेरे हुजूर। आपको दिये गये इन सभी वरदानों से आपने क्या लाभ उठाया है? आप खुद से और अपनी ज़िन्दगी से सन्तुष्ट हैं?"

"नहीं, मैं अपनी ज़िन्दगी से नफ़रत करता हूं," प्येर माथे पर बल डालते हुए कह उठा।

"तुम इससे नफ़रत करते हो तो इसे बदल डालो, अपने को स्वच्छ बनाओ और जिस हद तक अपने को स्वच्छ बना लोगे, उस हद तक विवेक से भी परिचित हो जाओगे। अपने जीवन पर दृष्टि डालिये, मेरे हुजूर। आपने कैसे अपना जीवन बिताया है? रंग-रलियों और ऐयाशी में, समाज से सभी कुछ लेते तथा उसे कुछ भी न देते हुए। आपको बहुत-सी दौलत मिल गयी। आपने उसका कैसे इस्तेमाल किया? अपने बन्धु-मानव के लिये आपने क्या किया है? क्या आपने अपने दसियों हज़ार भूदासों के बारे में कभी सोचा है, उनकी कोई भौतिक या नैतिक सहायता की है? नहीं। आपने ऐयाशी की ज़िन्दगी बिताने के लिये उनकी खून-पसीना एक करनेवाली मेहनत का इस्तेमाल किया है। बस, यही किया है आपने। क्या आपने अपने लिये कोई ऐसी जगह चुनी, जहां आप अपने लोगों के लिये उपयोगी हो सकते? नहीं। आपने काहिली में अपनी ज़िन्दगी बितायी है। फिर आपने शादी कर

ली, मेरे हुज़ूर, एक जवान औरत का पथ-प्रदर्शन करने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली और आपने इस बारे में क्या किया? मेरे हुज़ूर, आपने सचाई का रास्ता ढूंढ़ने में उसकी मदद नही की, बल्कि उसे झूठ और दुर्भाग्य के भंवर में फंसा दिया। एक आदमी ने आपका अपमान किया और आपने गोली चलाकर उसे लगभग मार ही डाला था। और फिर आप यह कहते हैं कि भगवान को नहीं जानते और अपनी ज़िन्दगी से नफ़रत करते हैं। इसमें हैरानी की कोई बात नहीं है, मेरे हुज़ूर!"

इन शब्दों के बाद मानो देर तक बोलने के कारण थककर उसने फिर से सोफ़े पर टेक लगा ली और आंखें मूंद लीं। प्येर इस कठोर, भावशून्य, लगभग निर्जीव, बुढ़ापे के इस चेहरे को ध्यान से देखते और मौन रहते हुए होंठों को हिलाता रहा। वह यह कहना चाहता था कि हां, बहुत ही घटिया, काहिली और व्यभिचार की ज़िन्दगी बिताता रहा हूं, लेकिन उसे बुज़ुर्ग का मौन भंग करने का साहस नहीं हुआ।

फ़्री मेसन ने बूढ़ों की तरह खरखरी-सी आवाज़ में खूं-खां की और अपने नौकर को पुकारा।

"घोड़ों का क्या हुआ?" उसने प्येर की तरफ़ देखे बिना पूछा।

"अभी कुछ आये हैं," नौकर ने जवाब दिया। "आप आराम नही करेंगे?"

"नहीं, उन्हें जोतने के लिये कह दो।"

"क्या यह सब कुछ कहे बिना और सहायता का वचन दिये बिना मुझे ऐसे ही अकेला छोड़कर चला जायेगा?" प्येर उठकर खड़ा हो गया, वह सिर झुकाये, कभी-कभी फ़्री मेसन की तरफ़ देखते और कमरे में चक्कर काटना शुरू करते हुए सोच रहा था। "हां, मैंने उसके बारे में पहले कभी नहीं सोचा था, हां, मैंने बड़ी घटिया और व्यभिचार की ज़िन्दगी बितायी है, मगर मुझे वह पसंद नहीं थी और मैं वैसी ज़िन्दगी चाहता नहीं था," प्येर सोच रहा था, "और यह आदमी सचाई जानता है तथा अगर चाहे तो मुझे उसका ज्ञान करा सकता है।" प्येर चाहता था कि फ़्री मेसन से यह कह दे, मगर उसकी ऐसा करने की हिम्मत नहीं हुई। अपरिचित ने अपने बुढ़ाये हुए सधे हाथों से सामान समेटा और भेड़ की खाल के कोट के बटन बन्द कर लिये। ये काम समाप्त करने के पश्चात उसने उदासीनता से और शिष्ट लहजे

में प्येर से पूछा :

"तो अब आप किधर जाने का इरादा रखते हैं, मेरे हुज़ूर ?"

"मैं ?.. मैं, पीटर्सबर्ग," प्येर ने बाल-सुलभ और झिझकती-सी आवाज़ में उत्तर दिया। "मैं आपका आभारी हूं। मैं आपके साथ पूरी तरह सहमत हूं। मगर आप ऐसा नहीं सोचिये कि मैं इतना अधिक बुरा हूं। मैं जी-जान से वैसा बनना चाहता हूं, जैसा कि आप मुझे देखना चाहते हैं। किन्तु किसी ने भी कभी मेरी मदद नहीं की ... वैसे, मैं ही सब कुछ के लिये सबसे ज़्यादा क़ुसूरवार हूं। मेरी मदद कीजिये, मुझे अक़्ल दीजिये और बहुत सम्भव है कि मैं ..." प्येर अपनी बात पूरी नही कर पाया, उसने नाक से सूं-सूं की और मुंह दूसरी ओर कर लिया।

फ़्री मेसन मानो कुछ सोचते हुए बहुत देर तक चुप रहा।

"मदद तो सिर्फ़ भगवान ही करता है," उसने कहा, "किन्तु हमारे संगठन के लिये आपकी जो मदद करना सम्भव है, वह की जायेगी, मेरे हुज़ूर। आप पीटर्सबर्ग जा रहे हैं, काउंट विल्लार्स्की को यह दे दीजिये (उसने नोटबुक निकाली और चार बार तह किये गये बड़े काग़ज़ पर कुछ शब्द लिख दिये)। आपको एक सलाह देने की अनुमति चाहता हूं। राजधानी पहुंचकर शुरू के कुछ दिन अपने बारे में सोच-विचार करते हुए एकान्त में बिताइये और फ़ौरन अपनी ज़िन्दगी के पुराने ढर्रे पर चलना आरम्भ नहीं कीजिये। अब मैं आपके लिये शुभ-यात्रा की कामना करता हूं, मेरे हुज़ूर," उसने यह देखकर कि नौकर कमरे में आ गया है, प्येर से कहा, "और चाहता हूं कि आपको सफलता मिले ..."

जैसा कि प्येर को चौकीवाले के रजिस्टर से बाद में मालूम हुआ, यह अपरिचित व्यक्ति ओसिप अलेक्सेयेविच बाज़्देयेव था। बाज़्देयेव तो नोविकोव के वक़्तों का भी एक बहुत प्रसिद्ध फ़्री मेसन और मार्ति-नीस्त था।* उसके जाने के बहुत देर बाद तक प्येर न तो बिस्तर पर गया, न उसने घोड़ों के बारे में कुछ पूछा और इस घोड़ा-बदल-चौकी

---

* मार्तिनीस्त – फ़्रांसीसी रहस्यवादी फ़्री मेसन संगठन का सदस्य। इस संगठन की सेन-मार्तेन ने १८वी शताब्दी में स्थापना की थी।

नोविकोव के वक़्तों यहां रूसी लेखक, प्रबोधक (१७४४–१८१८) की ओर संकेत है, जो फ़्री मेसन था। – सं०

के कमरे में चक्कर काटता हुआ अपने बुरे अतीत तथा पुनरुत्थान के उत्साह से परम आनन्ददायक, दोषहीन तथा भलाई के जीवन की कल्पना करने लगा जिसकी प्राप्ति अब उसे इतनी आसान प्रतीत हो रही थी। उसे लग रहा था कि वह यह भूल जाने के कारण ही बुराई के रास्ते पर चलता रहा था कि भलाई के मार्ग पर चलना कितना अच्छा है। उसकी आत्मा में पहले के सन्देहों का लेश मात्र भी शेष नहीं रह गया था। भलाई के मार्ग पर एक-दूसरे को सहारा देने के लिये सूत्रबद्ध होनेवाले लोगों के बन्धुत्व में उसका दृढ़ विश्वास पैदा हो गया था और फ़्री मेसनों के आंदोलन की वह इसी रूप में कल्पना करता था।

## ३

पीटर्सबर्ग पहुंचकर प्येर ने किसी को भी अपने आने की सूचना नहीं दी, कहीं भी आया-गया नहीं और सारा-सारा दिन फ़ोमा केम्पी-स्की * की वह किताब पढ़ता रहता था जो किसी अज्ञात व्यक्ति ने उसे भेज दी थी। इस पुस्तक को पढ़ते हुए प्येर रह-रहकर यही अनुभव करता था कि अपना पूरी तरह से परिष्कार कर पाने की अभी तक अपरिचित सम्भावना के सुख में विश्वास किया जा सकता है और लोगों के बीच बन्धुत्वपूर्ण तथा सक्रिय प्रेम सम्भव है, जिसे ओसिप अलेक्सेयेविच बाज़्देयेव ने स्पष्ट किया था। प्येर के पीटर्सबर्ग आने के एक सप्ताह बाद जवान पोलिश काउंट विल्लार्स्की, जिसे प्येर पीटर्सबर्ग में कभी-कभी मिलने-जुलने के कारण थोड़ा-बहुत जानता था, वैसी ही औपचारिक और गम्भीर मुख-मुद्रा बनाये हुए उसके कमरे में आया जैसे द्वन्द्व-युद्ध के पहले दोलोख़ोव का सहायक आया था। उसने कमरे में आकर दरवाज़ा बन्द किया और इस बात का पूरा यक़ीन हो जाने पर कि वहां प्येर के सिवा कोई नहीं है, उसे सम्बोधित किया।

"काउंट, मैं अपने को सौंपा गया एक कार्यभार और प्रस्ताव

---

* फ़ोमा केम्पीस्की (१३८०–१४७१) – मध्ययुगीन रहस्यवादी, अनेक पुस्तिकाओं के रचयिता, जिनमें प्रमुख थी – 'ईसा मसीह के अनुकरण के बारे में'। इसमें तपस्या और भलाई के जीवन का प्रचार किया गया है। – सं०

लेकर आपके पास आया हूं," उसने बैठे बिना ही कहा। "हमारे भ्रातृ-संघ के एक अत्यधिक ऊंचे पदवाले व्यक्ति ने यह प्रार्थनापत्र भेजा है कि आपको नियत अवधि से पहले ही हमारे भ्रातृ-संघ में शामिल कर लिया जाये और इसके लिये मुझसे आपका नाम प्रस्तुत करने को कहा गया है। इस व्यक्ति की इच्छा की पूर्ति को मैं अपना पावन कर्त्तव्य मानता हूं। क्या आप मेरे प्रस्ताव पर फ़्री मेसनों के भ्रातृ-संघ में सम्मि-लित होना चाहेंगे?"

प्येर ने काउंट विल्लार्स्की को बॉल-नृत्यों में बहुत ही सुन्दर महि-लाओं की संगत में हमेशा मधुर मुस्कानें बिखराते देखा था और इस समय उसके बात करने के रूखे और कठोर अन्दाज़ ने उसे चकित कर दिया।

"हां, मैं ऐसा चाहता हूं," प्येर ने जवाब दिया।

विल्लार्स्की ने सिर झुकाया।

"आपसे मैं एक और बात पूछना चाहता हूं, काउंट," वह बोला, "जिसका मैं आपसे भावी फ़्री मेसन के नाते नहीं, बल्कि एक ईमानदार आदमी के नाते पूरी निष्कपटता से जवाब देने का अनुरोध करता हूं – आपने अपनी पहले की आस्थाओं को त्याग दिया या नहीं? आप भगवान में विश्वास करते हैं या नहीं?"

प्येर कुछ देर तक सोचता रहा।

"हां... हां... मैं भगवान में विश्वास करता हूं।"

"अगर ऐसा है तो..." विल्लार्स्की ने कहना शुरू किया, मगर प्येर ने उसे टोक दिया।

"हां, मैं भगवान में विश्वास करता हूं," उसने दोहराया।

"अगर ऐसा है तो हम चल सकते हैं," विल्लार्स्की ने कहा। "मेरी बग्घी आपकी सेवा में उपस्थित है।"

विल्लार्स्की रास्ते भर ख़ामोश रहा। प्येर के यह पूछने पर कि उसे वहां क्या करना होगा और वह क्या उत्तर दे, विल्लार्स्की ने केवल इतना ही कहा कि उससे अधिक योग्य बन्धु उसे जांचें-परखेंगे और उसे सच बोलने के सिवा और कुछ भी नहीं करना होगा।

बग्घी एक बड़ी हवेली के फाटक में दाखिल हुई। यहीं फ़्री मेसन संगठन का कार्यालय था। एक अन्धेरे ज़ीने पर चढ़कर ये दोनों एक छोटे-से और रोशन प्रवेश-कक्ष में पहुंचे जहां इन्होंने किसी नौकर की

सहायता के बिना अपने फ़र-कोट उतारे। यहां से ये दूसरे कमरे में गये। अजीब-सी पोशाक पहने हुए एक व्यक्ति दरवाज़े के पास दिखायी दिया। विल्लार्स्की ने उसकी तरफ़ बढ़कर धीमे स्वर में उससे फ़्रांसीसी में कुछ कहा और फिर एक छोटी-सी अलमारी के नज़दीक गया जिसमें प्येर ने ऐसी अजीब पोशाकें देखीं जो उसने पहले कभी नहीं देखी थीं। इस अलमारी में से एक रूमाल लेकर विल्लार्स्की ने उसे प्येर की आंखों पर बांध दिया और उसके बालों को भी ख़ूब ज़ोर से गांठ में कस दिया। इसके बाद उसने प्येर को अपनी तरफ़ झुकाकर उसका मुंह चूमा और हाथ पकड़कर कहीं ले चला। गांठ से कसे हुए बालों के कारण प्येर को दर्द महसूस हो रहा था, दर्द की वजह से वह नाक-भौंह सिकोड़ रहा था और किसी चीज़ की शर्म अनुभव करते हुए मुस्करा रहा था। लम्बे-चौड़े डील-डौलवाला प्येर बांहों को दायें-बायें लटकाये, नाक-भौंह सिकोड़े और मुस्कराते चेहरे के साथ झिझकते और सहमे-सहमे क़दमों से विल्लार्स्की के पीछे-पीछे चल रहा था।

प्येर को कोई दसेक क़दम अपने साथ ले जाने के बाद विल्लार्स्की रुक गया।

"अगर आपने हमारे भ्रातृ-संघ में शामिल होने का पक्का इरादा बना लिया है तो आपके साथ चाहे कुछ भी क्यों न हो, आपको वह सभी बड़े साहस से सहन करना होगा (प्येर ने हामी भरते हुए सिर झुकाया)। जब आपको दरवाज़े पर दस्तक सुनायी दे तो आप पट्टी खोल दें," विल्लार्स्की ने इतना और कह दिया, "आपके लिये साहस तथा सफलता की कामना करता हूं।" और वह तपाक से प्येर का हाथ दबाकर चला गया।

अकेला रह जाने पर प्येर पहले की तरह ही मुस्कराता रहा। उसने एक-दो बार कन्धे झटके, रूमाल को खोलने की इच्छा से उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाया और फिर नीचे कर लिया। पट्टी-बंधी आंखों के साथ उसने जो पांच मिनट बिताये, वे उसे एक घण्टे के बराबर प्रतीत हुए। उसके हाथ सुन्न हो गये थे, टांगें जवाब दे रही थीं और उसे ऐसे लग रहा था कि वह बेहद थक गया है। उसे बहुत ही जटिल और विविध-तापूर्ण भावनाओं की अनुभूति हो रही थी। उसे इस बात का डर महसूस हो रहा था कि न जाने उसके साथ क्या होनेवाला है और इससे भी ज़्यादा उसे यह डर था कि कहीं वह अपने इस डर को प्रकट

न कर दे। उसके मन में यह जानने की जिज्ञासा थी कि उसके साथ क्या गुज़रेगी, उसे क्या नयी बात मालूम होगी। किन्तु सबसे अधिक तो उसे इस बात की ख़ुशी थी कि आख़िर वह क्षण आ गया, जब वह नवजीवन और सक्रिया भलाई के जीवन-मार्ग पर क़दम बढ़ा सकेगा जिसकी ओसिप अलेक्सेयेविच बाज़्देयेव के साथ अपनी भेंट के बाद कल्पना करता रहा था। दरवाज़े पर ज़ोर की ठक-ठक सुनायी दी। प्येर ने पट्टी खोली और अपने इर्द-गिर्द नज़र डाली। कमरे में घुप अन्धेरा था और केवल एक ही जगह पर किसी सफ़ेद-सी चीज़ में एक छोटा-सा दीपक जल रहा था। प्येर उसके पास गया और उसने देखा कि दीपक काली मेज़ पर रखा है और वहीं एक खुली हुई किताब भी है। पुस्तक इंजील थी और वह सफ़ेद चीज़, जिसमें दीपक रखा हुआ था, आंखों के गड्ढों तथा दांतों सहित इन्सान की खोपड़ी थी। इंजील के ये प्रारम्भिक शब्द पढ़ने के बाद : "शुरू में शब्द था और शब्द भगवान को सम्बोधित था" प्येर ने मेज़ के गिर्द चक्कर लगाया तथा उसे किसी चीज़ से भरा हुआ एक बड़ा तथा ढक्कन के बिना खुला बक्सा दिखायी दिया। यह हड्डियों से भरा हुआ ताबूत था। इन सब चीज़ों को देखकर उसे ज़रा भी हैरानी नहीं हुई। सर्वथा नये जीवन, पहले के जीवन से एकदम भिन्न जीवन-मार्ग पर चलने की आशा करते हुए वह असाधारण चीज़ों, अब तक सामने आनेवाली चीज़ों से भी कहीं अधिक असाधारण चीज़ों को देखने की उम्मीद कर रहा था। इन्सान की खोपड़ी, ताबूत, इंजील – उसे लगा कि वह इस सब की आशा कर रहा था, इन चीज़ों से कहीं अधिक की आशा कर रहा था। मन में भक्ति-भाव लाने की कोशिश करते हुए वह अपने इर्द-गिर्द देख रहा था। "भगवान, मृत्यु, प्यार, लोगों का बन्धुत्व" – वह इन शब्दों के साथ किसी चीज़ की अस्पष्ट, किन्तु सुखद धारणा को सम्बद्ध करते हुए इन्हें मन ही मन दोहरा रहा था। दरवाज़ा खुला और कोई भीतर आया।

बहुत मद्धिम प्रकाश में, जिसका प्येर अब तक अभ्यस्त हो गया था, उसे एक नाटा-सा आदमी दिखायी दिया। सम्भवतः रोशनी से अन्धेरे में आने के कारण यह आदमी रुक गया, इसके बाद सावधानी से क़दम बढ़ाता हुआ मेज़ के पास गया और उसने चमड़े के दस्ताने पहने अपने छोटे-छोटे हाथों को उसपर टिका दिया।

यह नाटा आदमी छाती और टांगों को ढंकनेवाला चमड़े का सफ़ेद

पेशबन्द बांधे था। उसके गले में हार जैसी कोई चीज़ थी और हार के ऊपर उसके नीचे से रोशन लम्बोतरे-से चेहरे को घेरे ऊंचा, सफ़ेद कालर उभरा हुआ था।

"आप किसलिये यहा आये हैं?" इस व्यक्ति ने प्येर के हल्की-सी सरसराहट करने पर उसकी ओर मुड़ते हुए पूछा। "ईश्वरीय प्रकाश की सचाई में विश्वास न रखने और उस प्रकाश को न देखनेवाले आप, किसलिये यहां आये हैं, आप हमसे क्या अपेक्षा करते हैं? बुद्धिमत्ता, भलाई, ज्ञान पाना चाहते हैं?"

दरवाज़ा खुलने और इस अपरिचित व्यक्ति के भीतर आने पर प्येर ने भय और श्रद्धा का वैसा ही भाव अनुभव किया, जैसा वह बचपन में पादरी के सामने पाप-स्वीकृति के समय अनुभव किया करता था। वह सामान्य जीवन की दृष्टि से एकदम अजनबी, मगर लोगों के बन्धुत्व की दृष्टि से एक घनिष्ठ व्यक्ति के सामने था। प्येर धड़कते दिल से गुरू (फ़्री मेसनों के भ्रातृ-संघ में सम्मिलित होने के **इच्छुकों** को तैयार करनेवालों को यही संज्ञा दी जाती थी) की तरफ़ बढ़ा। नज़दीक जाने पर उसने गुरू के रूप में स्मोल्यानीनोव नाम के एक परिचित व्यक्ति को पहचान लिया। किन्तु उसे यह सोचने से बुरा लग रहा था कि यह व्यक्ति उसका परिचित था – वह केवल बन्धु था और उसे नेकी की ओर उन्मुख करनेवाला गुरू था। प्येर देर तक कुछ भी नहीं कह पाया और इसलिये गुरू को अपना प्रश्न दोहराना पड़ा।

"हां, मैं... मैं... आत्मोद्धार चाहता हूं," प्येर बड़ी कठिनाई से कह पाया।

"अच्छी बात है," स्मोल्यानीनोव ने कहा और उसी क्षण जल्दी-जल्दी तथा शान्त भाव से यह पूछा: "आपको उन साधनों का कुछ आभास है जिनकी मदद से हमारा पावन संघ आपके लक्ष्य की प्राप्ति में आपका सहायक हो सकता है?"

"मुझे... आशा है... मेरा मार्ग-दर्शन किया जायेगा... आत्मोद्धार में... मेरी सहायता की जायेगी," प्येर ने उत्तेजना तथा अमूर्त्त चीज़ों की रूसी में चर्चा करने का अभ्यस्त न होने के कारण कांपती आवाज़ में और कठिनाई से जवाब दिया।

"फ़्री मेसनरी का आप क्या अर्थ समझते हैं?"

"मेरे विचार में फ़्री मेसनरी का अर्थ नेक उद्देश्यों से लोगों का भ्रातृत्व और उनकी समानता है," प्येर ने अपने शब्दों को इस क्षण की गम्भीरता के अनुरूप न अनुभव करते और इसी वजह से झेंपते हुए उत्तर दिया। "मेरे विचार में..."

"ठीक है," गुरू ने इस उत्तर से सम्भवतः पूरी तरह सन्तुष्ट होकर जल्दी से कहा। "क्या आपने धर्म में अपने लक्ष्य की प्राप्ति के उपाय ढूंढ़े हैं?"

"नहीं, मैं धर्म को न्यायपूर्ण नहीं मानता था और इसलिये उसका अनुकरण नहीं करता था," प्येर ने इतनी धीमी आवाज़ में कहा कि गुरू इसे सुन नहीं पाया और उसने पूछा कि वह क्या कह रहा है। "मैं नास्तिक था," प्येर ने जवाब दिया।

"आप इसलिये सचाई की खोज कर रहे हैं कि वास्तविक जीवन में उसके नियमों का अनुकरण करें। इसका यह मतलब है कि आप बुद्धिमत्ता और नेकी की तलाश में हैं। ऐसा ही है न?" गुरू ने क्षण भर चुप रहने के बाद कहा।

"हां, हां," प्येर ने पुष्टि की।

गुरू ने ज़रा खांसकर गला साफ़ किया, दस्ताने पहने, हाथों को छाती पर टिका लिया और बोलने लगा:

"अब मैं आपके सामने अपने संघ का मुख्य लक्ष्य स्पष्ट करूंगा और अगर वह आपके लक्ष्य के साथ मेल खायेगा तो आपके लिये हमारे संघ में शामिल होना उपयोगी होगा। हमारा प्रमुखतम लक्ष्य और साथ ही हमारे संघ का मूलभूत आधार, जिसे कोई भी मानवीय शक्ति नष्ट नहीं कर सकती, एक महत्त्वपूर्ण रहस्य को सुरक्षित रखना तथा उसे अपने वंशजों को देना है... यह रहस्य प्राचीनतम समय और यहां तक कि आदि पुरुष से हम तक पहुंचा है और बहुत सम्भव है कि मानवजाति का भाग्य ही इसपर निर्भर हो। लेकिन चूंकि यह रहस्य इस ढंग का है कि बहुत समय तक तथा बड़ी लगन से आत्म-परिष्कार द्वारा अपने को तैयार किये बिना इसे जानना और इससे लाभ उठाना सम्भव नहीं, इसलिये हर कोई इसे जल्दी से प्राप्त करने की आशा नहीं कर सकता। अतः हमारा दूसरा लक्ष्य उन उपायों की सहायता से, जो हमें परम्परागत रूप से उन लोगों से प्राप्त हुए हैं जिन्होंने इस रहस्य को खोजने के प्रयास किये हैं, जहां तक सम्भव हो सके अपने सदस्यों को, उनके

हृदयों को सुधारने, बुद्धि को स्वच्छ और प्रबुद्ध बनाने के लिये तैयार करना है।

तीसरी बात यह है कि अपने सदस्यों के परिष्कार और सुधार द्वारा तथा उन्हें पवित्रता तथा सदाचार के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हुए हम सारी मानवजाति को सुधारने का यत्न करते हैं और इस प्रकार संसार में व्याप्त बुराई के विरुद्ध जूझने के लिये एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाते हैं। मैंने जो कुछ कहा है, इसपर विचार कीजिये और मैं फिर आपके पास आऊंगा," वह यह कहकर कमरे से बाहर चला गया।

"संसार में व्याप्त बुराई के विरुद्ध जूझने के लिये..." प्येर ने इन शब्दों को दोहराया और मन ही मन इस क्षेत्र में अपने भावी कार्य-कलापों की कल्पना की। उसकी कल्पना में ऐसे ही लोग उभरे जैसा कि दो सप्ताह पहले तक वह ख़ुद था, और उसने मन ही मन उन्हें शिक्षाप्रद उपदेश दिया। उसने बुराई के रास्ते पर चलनेवाले बदक़िस्मत लोगों की कल्पना की जिन्हें उसने शब्दों और कार्यों द्वारा उभरने में मदद दी, उत्पीड़कों की कल्पना की जिनसे उसने उनके उत्पीड़ितों को मुक्ति दिलाई। गुरू द्वारा बताये गये तीन लक्ष्यों में से अन्तिम अर्थात् सारी मानवजाति का सुधार उसे सबसे ज़्यादा अच्छा लगा। गुरू ने महत्त्वपूर्ण रहस्य का भी उल्लेख किया था और इसने उसमें जिज्ञासा तो पैदा की थी, मगर यह उसे बहुत महत्त्वपूर्ण प्रतीत नहीं हुआ था। आत्म-परिष्कार और आत्मोद्धार के दूसरे लक्ष्य में उसे विशेष दिलचस्पी महसूस नहीं हुई, क्योंकि इस क्षण उसने बहुत प्रसन्नता से यह अनुभव किया कि वह अपनी पहले की सभी बुराइयों से पूरी तरह मुक्त हो चुका है और केवल भलाई से ही वास्ता रखता है।

आध घण्टे बाद गुरू लौटा, ताकि अपने शिष्य को सोलोमोन* के मन्दिर की सात पैड़ियों के अनुरूप उन सात सद्‌गुणों की शिक्षा दे जिन्हें हर फ़्री मेसन को अपने भीतर विकसित करना चाहिये। ये सद्‌गुण थे – १) **विनयशीलता**, संघ के रहस्यों को गुप्त रखना, २) संघ

---

* सोलोमोन – ईसवी पूर्व की १०वीं शताब्दी में इज़राइली-यहूदी राज्य के महाराजा। ईसाइयों और यहूदियों की धार्मिक पुस्तक इंजील के मुताबिक़ सोलोमोन असाधारण रूप से बुद्धिमान थे। फ़्री मेसन उन्हें अपनी शिक्षा के जनक मानते थे। – सं०

के उच्च संचालकों के सम्मुख **आज्ञाकारिता**, ३) सदाचार, ४) मानव-जाति के प्रति प्यार, ५) साहस, ६) उदारता और ७) मृत्यु से प्रेम।

"जहां तक **सातवें** सद्गुण का सम्बन्ध है," गुरू ने कहा, "मृत्यु के बारे में बहुधा चिन्तन करते हुए अपने को ऐसे स्तर पर लाइये कि मृत्यु आपको भयानक शत्रु न प्रतीत होकर मित्र लगे ... जो नेकी के लिये भारी श्रम करने के कारण थकी-हारी आत्मा को जीवन के दुख-दर्दों से निजात दिलाती है और उसे पुरस्कार और चैन की जगह पर ले जाती है।

"हां, होना तो ऐसा ही चाहिये," प्येर ने इस समय सोचा, जब उक्त शब्दों के बाद गुरू उसे एकान्त में चिन्तन करने के लिये छोड़कर पुनः कमरे से बाहर चला गया। "हां, होना तो ऐसा ही चाहिये, लेकिन मैं तो अभी इतना कमज़ोर हूं कि अपनी ज़िन्दगी को प्यार करता हूं जिसका अभी कुछ-कुछ अर्थ मेरी समझ में आने लगा है।" किन्तु शेष पांच सद्गुणों को, जिन्हें उंगलियों पर गिनते हुए प्येर ने दोहराया, उसने अपनी आत्मा में अनुभव किया – **साहस**, **उदारता**, **सदाचार**, **मानवजाति के प्रति प्यार** और विशेषतः **आज्ञा-कारिता**, जो सद्गुण के बजाय उसे कहीं अधिक सुखप्रद प्रतीत हुई। (उसे अब अपनी मनमानी से मुक्ति पाकर अपनी इच्छा को उनके अधीन करने से अत्यधिक प्रसन्नता हो रही थी जो विश्वसनीय सचाई से परिचित थे।) सातवां सद्गुण प्येर किसी प्रकार भी याद नही कर पाया।

तीसरी बार गुरू जल्द ही वापस आ गया और उसने प्येर से पूछा कि क्या उसका इरादा बिल्कुल पक्का है और क्या वह सब कुछ करने को तैयार है जिसकी उससे मांग की जायेगी।

"मैं सब कुछ करने को तैयार हूं," प्येर ने उत्तर दिया।

"मेरे लिये आपको यह बताना भी ज़रूरी है," गुरू ने कहा, "कि हमारा संघ केवल शब्दों में ही नहीं, बल्कि कुछ दूसरे उपायों से भी अपनी शिक्षा का प्रचार करता है जो बुद्धिमत्ता और नेकी के सच्चे खोजियों पर शायद शब्दों द्वारा किये जानेवाले स्पष्टीकरण से अधिक गहरा प्रभाव डालता है। यह कमरा और इसमें जो चीज़ें आप देख रहे हैं, उन्होंने आपके दिल को, यदि वह निष्कपट है, शब्दों से कही अधिक कुछ स्पष्ट कर दिया होगा। अपनी भावी दीक्षा के समय

सम्भवत आप स्पष्टीकरण का यही ढग देख सकें। हमारा संघ प्राचीन समाजों का अनुकरण करता है जो चित्र-लिपि से अपनी शिक्षा की व्याख्या करते थे। चित्र-लिपि," गुरू ने कहा, "एक ऐसे अमूर्त्त विचार का बिम्ब होती है जो अपने में उस चीज़ के तत्त्वों का समावेश करता है जिसे प्रतिबिम्बित करता है।"

प्येर बहुत अच्छी तरह से यह जानता था कि चित्र-लिपि किसे कहते हैं, किन्तु उसे कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं हो रही थी। गुरू की सभी बातों से यह अनुभव करते हुए कि अभी उसकी परीक्षा आरम्भ हो जायेगी, वह चुपचाप उसे सुनता जा रहा था।

"अगर आपका इरादा पक्का है तो मुझे आपको दीक्षा देने का कार्य आरम्भ करना चाहिये," गुरू ने प्येर के पास जाकर कहा। "उदारता के प्रमाण के रूप में आपसे अपनी सभी मूल्यवान वस्तुएं देने का अनुरोध करता हूं।"

"लेकिन मैं अपने साथ कुछ भी नहीं लाया हूं," प्येर ने यह मानते हुए कि उससे अपनी सारी सम्पत्ति देने को कहा जा रहा है, उत्तर दिया।

"आपके पास इस वक़्त जो कुछ है, वह दे दीजिये, – घड़ी, रुपये-पैसे, अंगूठिया "

प्येर ने फ़ौरन अपना बटुआ और घड़ी दे दी और बहुत देर तक अपनी मोटी उंगली से शादी की अंगूठी नही उतार सका। जब यह हो गया तो फ़्री मेसन ने कहा:

"आज्ञाकारिता के प्रमाण के रूप में आपसे कपड़े उतारने का अनुरोध करता हूं।" प्येर ने गुरू के संकेतानुसार फ़्रॉक-कोट, वास्कट और बायें पांव का बूट उतार दिया। फ़्री मेसन ने उसकी छाती के बायें भाग की क़मीज़ हटा दी और झुककर उसके पतलून के दायें पायंचे को घुटनों के ऊपर उठा दिया। प्येर ने झटपट दायां बूट उतारना और बायां पायंचा ऊपर उठाना चाहा, ताकि इस अपरिचित व्यक्ति को इस झंझट से बचा दे, मगर फ़्री मेसन ने कहा कि ऐसा करने की कोई ज़रूरत नहीं और उसने उसे बायें पांव में पहनने के लिये एक स्लीपर दे दिया। झेंप, शंका और अपने पर हंसती हुई बाल-सुलभ मुस्कान के साथ, जो न चाहने पर भी उसके चेहरे पर आ गयी थी, प्येर बांहें लटकाये, पांवों को एक-दूसरे से दूरी पर टिकाकर गुरू के सामने खड़ा हुआ उसके नये आदेशों की प्रतीक्षा कर रहा था।

"अन्त में आपकी हार्दिकता के प्रमाण के रूप में आपसे अपने मुख्य अनुराग का उल्लेख करने का अनुरोध करता हूं," गुरू ने कहा।

"मेरा मुख्य अनुराग! वे तो बहुत **थे**," प्येर ने कहा।

"आप वह अनुराग बताइये जिसने नेकी की राह पर चलने में आपको सबसे अधिक डांवाडोल होने के लिये विवश किया।"

प्येर यह सोचते हुए कि किस अनुराग का उल्लेख करे, चुप रहा।

"शराब? पेटूपन? काहिली? सुस्ती? तुनकमिज़ाजी? क्रोध? औरतें?" वह अपने दुर्गुणों को गिनता तथा मन ही मन तौलता रहा और यह नहीं समझ पा रहा था कि किसे मुख्य कहे।

"औरतें," उसने बहुत धीमे और बड़ी मुश्किल से सुनायी देनेवाली आवाज़ में कहा। गुरू हिला-डुला नही और इस जवाब के बाद देर तक चुप रहा। आख़िर वह प्येर के पास गया, उसने मेज़ पर पड़ा हुआ रूमाल उठा लिया और उसे फिर से उसकी आंखों पर बाध दिया।

"अन्तिम वार आपसे कह रहा हूं – अपने अन्तर को अच्छी तरह से टटोलिये, अपनी भावनाओं को लगाम लगाइये और काम-वासनाओं में नही, बल्कि अपने हृदय में आनन्द की खोज कीजिये ... आनन्द का स्रोत बाहर नही, हमारे भीतर है ..."

प्येर ताज़गी देनेवाले इस आनन्द-स्रोत को, जो उसकी आत्मा को अब प्रसन्नता तथा सुखद भावनाओं से ओत-प्रोत कर रहा था, अपने भीतर अनुभव भी कर रहा था।

## ४

कुछ ही देर बाद इस कमरे मे गुरू नहीं, बल्कि प्येर का प्रतिभू विल्लार्स्की आया जिसे उसने उसकी आवाज़ से पहचान लिया। उसके पक्के इरादे के बारे में नये प्रश्नों के उत्तर में प्येर ने कहा:

"हा, हां, मैं सहमत हूं," और बाल-सुलभ खिली मुस्कान, नंगी, मांसल छाती तथा एक पांव में बूट और दूसरे में स्लीपर के कारण अटपटे और झिझकते-से क़दम उठाता हुआ आगे बढ़ने लगा, जबकि विल्लार्स्की उसकी नंगी छाती पर तलवार टिकाये था। इस कमरे से उसे आगे-

पीछे घुमाते हुए कई दालानों में से ले जाया गया और आख़िर ये दोनों संघ-शाखा के दरवाज़े पर पहुंचे। विल्लास्कीं खांसा, फ़्री मेसनों की हथौड़ों की विशेष ठक-ठक से इस खांसी का जवाब दिया गया और इनके सामने दरवाज़ा खुल गया। किसी ने भारी-भरकम आवाज़ में (प्येर की आंखों पर अभी भी पट्टी बंधी थी) उससे ये सवाल किये कि वह कौन है, कब और कहां उसका जन्म हुआ आदि, आदि। इसके बाद उसकी आंखों पर से पट्टी हटाये बिना ही उसे कही और ले जाया गया और चलते हुए उसकी यात्रा की कठिनाइयों, पावन-मैत्री, शाश्वत विश्व-निर्माता और उस साहस के बारे में, जिससे उसे दुख-दर्दों और ख़तरों का सामना करना चाहिये, अन्योक्ति के रूप में चर्चा की जाती रही। इस यात्रा के समय प्येर ने इस बात की ओर ध्यान दिया कि उसे कभी तो "**जिज्ञासु**", कभी "**पीड़ित**" और कभी "**अभ्यर्थी**" कहा जाता था और इन्हीं शब्दों के अनुरूप हथौड़ों तथा तलवारों से भिन्न-भिन्न ढंग से ठक-ठक की जाती थी। जब उसे किसी चीज़ के पास ले जाया जा रहा था तो उसने अनुभव किया कि उसके पथ-प्रदर्शकों को किसी तरह की झिझक और परेशानी हो रही है। उसने अपने इर्द-गिर्द के लोगों को फुसफुसाकर बहस करते और उनमें से एक को इस बात के लिये आग्रह करते सुना कि उसे किसी क़ालीन पर से ले जाया जाना चाहिये। इसके बाद उसका दायां हाथ पकड़कर किसी चीज़ पर टिका दिया गया, बायें हाथ से कम्पास को छाती के बायी ओर टिकाने को कहा गया और इस भ्रातृ-संघ के नियमों के प्रति निष्ठा की शपथ के उन शब्दों को दोहराने का आदेश दिया गया जिन्हें कोई पढ़ रहा था। इसके पश्चात मोमबत्तियां बुझा दी गयीं, स्पिरिट का छोटा-सा लैम्प जला दिया गया, जिसका प्येर ने स्पिरिट की गन्ध से अनुमान लगाया, और उससे यह कहा गया कि अब वह लघु प्रकाश देखेगा। उसकी आंखों पर से पट्टी हटा दी गयी और प्येर ने मानो सपने में स्पिरिट लैम्प की मद्धिम रोशनी में कुछ लोगों को अपने सामने खड़े देखा। वे गुरू जैसे ही पेशबन्द पहने थे और उसकी छाती की तरफ़ तलवारें ताने थे। इनमें रक्त-सनी सफ़ेद क़मीज़ पहने एक व्यक्ति भी था। यह देखकर प्येर इस उद्देश्य से छाती तानकर तलवारों की ओर बढ़ा कि वे उसका सीना चाक कर दें। किन्तु तलवारों को हटा लिया गया और उसकी आंखों पर उसी क्षण फिर से पट्टी बांध दी गयी।

"अभी तुमने लघु प्रकाश देखा," किसी ने कहा। फिर से मोमबत्तियां जला दी गयीं, यह कहा गया कि अब उसे पूर्ण प्रकाश देखना होगा, पुनः आंखो पर से पट्टी हटा दी गयी और दस से अधिक आवाज़ों ने अचानक यह कहा : "ऐसे लुप्त हो जाती है सांसारिक ख्याति।"

प्येर धीरे-धीरे सम्भलने लगा, कमरे में इधर-उधर देखने और वहां उपस्थित लोगों की तरफ़ ध्यान देने लगा। काले कपड़े से ढकी हुई लम्बी मेज़ के गिर्द कोई बारह आदमी बैठे थे। वे सभी वैसी ही पोशाकें पहने थे, जैसी पोशाकों में वह कुछ लोगों को यहां पहले देख चुका था। इनमें से कुछ के साथ पीटर्सबर्ग की ऊंची सोसाइटी में प्येर की मुलाक़ात भी हो चुकी थी। गले में एक ख़ास तरह की सलीब पहने एक अपरिचित नौजवान अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठा था। उसके दायीं ओर इतालवी पादरी था जिसके साथ दो साल पहले आन्ना पाव्लोव्ना के यहां प्येर की भेंट हुई थी। यहां एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति भी उपस्थित था तथा स्विटज़रलैंड का वह शिक्षक भी बैठा था जो कभी कुरागिन-परिवार में रहा करता था। सभी लोग हाथ में हथौड़ा लिये अध्यक्ष के शब्दों को बड़ी गम्भीरता से सुन रहे थे। दीवार पर सितारे की शक्लवाला प्रकाश जगमगा रहा था। मेज़ के एक ओर विभिन्न आकृतियोंवाला छोटा-सा क़ालीन बिछा था तथा दूसरी ओर वेदी-सी बनी थी जिसपर इंजील और खोपड़ी रखी थी। मेज़ के गिर्द सात बड़े-बड़े शमादान रखे थे, जैसे कि गिरजाघरों में होते हैं। दो बन्धु प्येर को वेदी के पास ले गये और यह कहते हुए उन्होंने उसकी टांगों को आयताकार टिका दिया कि उसे मन्दिर के द्वार पर साष्टांग प्रणाम करना चाहिये।

"उसे तो पहले फावड़ा दिया जाना चाहिये," एक बन्धु ने फुसफुसाकर कहा।

"ओह, कृपया चुप रहिये," दूसरा कह उठा।

प्येर ने आज्ञा का पालन न करते हुए अपनी कमज़ोर और बहकी-बहकी दृष्टि से अपने इर्द-गिर्द देखा। अचानक सन्देहों-शंकाओं ने उसके मन में सिर उठाया। "मैं कहां हूं? क्या कर रहा हूं? कहीं मेरी खिल्ली तो नहीं उड़ाई जा रही? मुझे यह सब याद करके बाद में शर्म तो नहीं महसूस होगी?" किन्तु ये शंकायें केवल क्षण भर को ही बनी रहीं। प्येर ने अपने इर्द-गिर्द के लोगों के गम्भीर चेहरों की तरफ़

देखा, जो कुछ उसके साथ हो चुका था, उसे याद किया और यह समझ गया कि अब आधे रास्ते में नहीं रुका जा सकता। अपनी शंका से वह भयभीत हो उठा और मन्दिर के सामने साष्टांग होते हुए उसने अपने भीतर पहले जैसी श्रद्धा की भावना लाने का प्रयास किया। और वास्तव में ही उसके हृदय में पहले से भी अधिक प्रबल श्रद्धा-भावना उमड़ पड़ी। उसके कुछ समय तक साष्टांग प्रणाम की स्थिति में लेटे रहने पर उससे उठने को कहा गया, उसे दूसरों जैसा ही चमड़े का सफ़ेद पेशबन्द पहना दिया गया, उसके हाथ में फावड़ा और दस्तानों के तीन जोड़े दे दिये गये। तब अध्यक्ष ने उसे सम्बोधित किया। उसने कहा कि वह इस बात का प्रयास करे कि दृढ़ता और पवित्रता के प्रतीक इस पेशबन्द की सफ़ेदी पर किसी भी प्रकार का धब्बा न लगने दे। इसके बाद रहस्यपूर्ण फावड़े के बारे में उसने यह कहा कि इससे वह अपने मन को बुराइयों से मुक्त करने की कोशिश करे और नम्रता तथा धैर्य से बन्धु-मानवों के हृदयों पर चैन का लेप करे। मर्दाना दस्तानों के पहले जोड़े के बारे में उसने यह कहा कि उसका महत्त्व उसे नहीं बताया जायेगा, किन्तु इसे सहेजना चाहिये, मर्दाना दस्तानों के दूसरे जोड़े के बारे में यह बताया कि वह भ्रातृ-संघ की बैठकों में उसे पहना करे और आखिर में ज़नाना दस्तानों के जोड़े की चर्चा करते हुए बोला:

"प्यारे बन्धु, ये ज़नाना दस्ताने भी आपके लिये ही हैं। इन्हें आप उस नारी को भेंट कीजियेगा जिसका आप सबसे अधिक आदर करेंगे। इस उपहार द्वारा आप उसे अपने पावन हृदय का विश्वास दिलायेंगे जिसे फ़्री मेसन के ध्येय के लिये सुयोग्य संगिनी के रूप में चुनेंगे।" कुछ देर चुप रहने के बाद उसने इतना और कह दिया: "किन्तु इस बात का ध्यान रखिये, प्यारे बन्धु, कि ये दस्ताने अपवित्र हाथों की कभी शोभा नहीं बढ़ाते।" अध्यक्ष ने जब ये अन्तिम शब्द कहे तो प्येर को लगा कि अध्यक्ष कुछ विह्वल हो गया है। प्येर उससे भी ज़्यादा विह्वल हो उठा, बच्चों की तरह झेंप गया और रुआंसा-सा हो गया, बेचैनी मे इधर-उधर देखने लगा और अटपटी-सी ख़ामोशी छा गयी।

इस ख़ामोशी को एक बन्धु ने भंग किया जो प्येर को क़ालीन के पास ले जाकर उसपर अंकित सभी आकृतियों – सूर्य, चन्द्रमा, हथौड़े, साहुल-सूत्र, फावड़े, अनघड़ और चौकोर पत्थर, स्तम्भ, तीन खिड़कियों आदि का एक कापी में से स्पष्टीकरण पढ़कर सुनाने लगा। इसके

बाद प्येर के बैठने की जगह तय कर दी गयी, उसे फ़्री मेसनों की निशानियां दिखायी गयीं, प्रवेश-शब्द बताया गया और आखिर बैठने की अनुमति दे दी गयी। अध्यक्ष नियमावली पढ़ने लगा। वह बहुत ही लम्बी थी और प्येर खुशी, विह्वलता और लज्जा के कारण वह सब समझने में असमर्थ था जो उसे पढ़कर सुनाया जा रहा था। वह तो नियमावली के केवल अन्तिम शब्द ही सुन पाया जो उसे याद रह गये।

"अपने मन्दिरों में हम नेकी और बदी के अतिरिक्त और कोई भी श्रेणियां नहीं जानते," अध्यक्ष पढ़ रहा था। "सन्तुलन में बाधा डाल सकनेवाले भेद-भावों से सावधान रहो। हर बन्धु की, वह चाहे कोई भी क्यों न हो, मदद करने दौड़ो, भटके हुए को राह दिखाओ, गिरे हुए को उठाओ, अपने मानव-बन्धु के प्रति कभी द्वेष और बैर-भाव न रखो। प्यार और मेल-जोल से काम लो। सभी दिलों में नेकी की मशाल जलाओ। अपने पड़ोसी के साथ सुख को बांटो और यही कामना है कि ईर्ष्या कभी भी तुम्हारे इस पवित्र आनन्द पर अपनी छाया न डाल सके।

"अपने शत्रु को क्षमा करो, उससे प्रतिशोध न लो और केवल भलाई के रूप में ही बदला दो। इस प्रकार उच्च नियम का पालन करके तुम पुनः उस पुरातन गरिमा के लक्षण प्राप्त कर लोगे जिन्हें खो चुके हो," अध्यक्ष ने अपनी बात समाप्त की, उठकर खड़ा हुआ, उसने प्येर को गले लगाया और चूमा।

आंखों में खुशी के आंसू लिये हुए प्येर अपने इर्द-गिर्द देख रहा था और यह समझने में असमर्थ था कि उसे दी जानेवाली बधाइयों तथा उसके साथ परिचित कराये जानेवाले लोगों के अभिवादनों का क्या जवाब दे। वह किसी को भी परिचित के रूप में मानने को तैयार नहीं था, इन सभी लोगों को अपने भाइयों की तरह देखता था और इन सभी के साथ काम में जुट जाने को बेचैन था।

अध्यक्ष ने हथौड़े से ठक-ठक की, सभी अपनी जगहों पर बैठ गये और एक फ़्री मेसन ने नम्रता की आवश्यकता के बारे में शिक्षा पढ़कर सुनायी।

अध्यक्ष ने अन्तिम कर्त्तव्य पूरा करने का सुझाव दिया और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति, जो दान-संग्रहकर्त्ता की उपाधि से सम्मानित था, सभी बन्धुओं के पास जाने लगा। प्येर ने दान-सूची में अपना सारा ही धन लिख देना

चाहा, किन्तु उसे डर महसूस हुआ कि ऐसा करने पर उसे घमंडी माना जा सकता है और इसलिये उसने उसमें दूसरों जितना ही चन्दा लिखा।

बैठक ख़त्म हो गयी और घर लौटने पर प्येर को ऐसा लगा कि वह दसियों वर्षों की किसी लम्बी यात्रा के बाद घर लौटा है, बिल्कुल बदल गया है और जीवन के पुराने रंग-ढंग तथा आदतों से उसका कोई नाता नही रहा।

## ५

फ़्री मेसनों का संघ-सदस्य बनाये जाने के अगले दिन प्येर अपने घर में बैठा हुआ एक किताब पढ़ रहा था और चौकोर के महत्त्व को समझने की कोशिश कर रहा था जिसके एक ओर भगवान चित्रित था, दूसरी ओर नैतिक जगत, तीसरी ओर भौतिक जगत तथा चौथी ओर इनका मिला-जुला रूप। कभी-कभी वह किताब और चौकोर पर से ध्यान हटा लेता तथा अपनी कल्पना में नवजीवन की योजना बनाता। पिछले दिन संघ-शाखा में ही उसे यह बताया गया था कि उसके द्वन्द्व-युद्ध की ख़बर सम्राट तक पहुंच गयी है और उसके लिये पीटर्सबर्ग से चले जाना ही बेहतर होगा। प्येर अपनी दक्षिणी जागीरों पर जाने और वहां अपने किसानों की देख-भाल के काम में मन लगाने की सोच रहा था। अपने इस नये जीवन के सपने देखते हुए उसे ख़ुशी हो रही थी और इसी वक़्त प्रिंस वसीली ने उसके कमरे में प्रवेश किया।

"मेरे दोस्त, तुमने मास्को में क्या गड़बड़ कर डाली? किसलिये तुमने एलेन से झगड़ा कर लिया, मेरे प्यारे? तुम ग़लतफ़हमी के शिकार हो गये हो," प्रिंस वसीली ने उसकी ओर बढ़ते हुए कहा। "मुझे सब कुछ मालूम है, मैं पूरे विश्वास के साथ तुमसे यह कह सकता हूं कि एलेन तुम्हारे सामने वैसे ही निर्दोष है जैसे ईसा मसीह यहूदियों के सामने।"

प्येर ने उत्तर देना चाहा, मगर प्रिंस वसीली ने उसे टोक दिया।

"और तुमने एक दोस्त की तरह साधारण ढंग से तथा सीधे-सीधे मुझसे ही बात क्यों नहीं की? मैं सब कुछ जानता हूं, सब कुछ समझता

प्येर बेज़ूख़ोव।

हूं," उसने कहा, "तुमने वही किया जो अपनी इज़्ज़त का एहसास रखनेवाले किसी भले आदमी को करना चाहिये था। हां, यह हो सकता है कि कुछ जल्दबाज़ी की हो, लेकिन हम इसकी चर्चा नहीं करेंगे। तुम एक बात को ध्यान में रखो कि तुम सारी सोसाइटी और राज दरबार की नज़रों में भी मेरी तथा एलेन की कैसी स्थिति कर रहे हो," प्रिंस वसीली ने "राज दरबार" का उल्लेख करते हुए अपनी आवाज़ को थोड़ा धीमा कर लिया। "एलेन मास्को में है और तुम यहां हो। मगर तुम यह समझ लो, मेरे प्यारे," उसने प्येर के हाथ को नीचे की ओर खींचा, "इस मामले में ग़लतफ़हमी के सिवा और कुछ भी नहीं। मेरे ख़्याल में तुम ख़ुद भी ऐसा महसूस करते हो। आओ, हम दोनों अभी उसे ख़त लिख देते हैं, वह यहां आ जायेगी, सारी बात साफ़ हो जायेगी। वरना, मैं तुमसे यह कहे देता हूं कि तुम आसानी से किसी बड़ी मुसीबत का शिकार हो सकते हो, मेरे प्यारे।"

प्रिंस वसीली ने अर्थपूर्ण दृष्टि से प्येर की तरफ़ देखा।

"मुझे विश्वसनीय स्रोतों से यह पता चला है कि विधवा सम्राज्ञी इस सारे मामले में गहरी दिलचस्पी ले रही हैं। तुम तो जानते ही हो कि एलेन पर वह बहुत मेहरबान हैं।"

प्येर ने कई बार जवाब देना चाहा, लेकिन एक तरफ़ तो प्रिंस वसीली ने उसे ऐसा नहीं करने दिया और दूसरी तरफ़ प्येर ख़ुद भी दृढ़ता से इन्कार करने तथा असहमति के उस अन्दाज़ में बात शुरू करते हुए घबराता था जिस अन्दाज़ में उसने अपने ससुर को जवाब देने का पक्का इरादा बना लिया था। इसके अलावा फ़्री मेसनों की नियमावली के ये शब्द "दूसरों को प्यार करो और उनके साथ अच्छी तरह से पेश आओ" उसे याद हो आये। उसने अपने जीवन के सबसे कठिन कार्य के लिये यानी किसी के मुंह पर ही कोई अप्रिय बात कहने, उससे भिन्न कुछ कहने को जिसकी कोई भी व्यक्ति उससे आशा कर रहा हो, ख़ुद से संघर्ष करते हुए माथे पर बल डाले, उसके चेहरे पर लाली आयी, वह उठकर खड़ा हुआ और फिर से बैठ गया। वह प्रिंस वसीली के लापरवाही के तथा आत्मविश्वास के इस लहजे के सामने सिर झुकाने का ऐसा आदी हो गया था कि अनुभव कर रहा था कि अब भी इसका विरोध नहीं कर पायेगा। लेकिन वह यह भी महसूस कर रहा था कि इस वक़्त जो कुछ कहेगा, उसी से उसके भविष्य का

निर्णय होगा। वह पुराने रास्ते पर ही चलेगा या उस नये रास्ते को अपनायेगा जो उसे फ़्री मेसनों ने ऐसे आकर्षणपूर्ण ढंग से दिखाया था और जिसके बारे में उसका यह दृढ़ विश्वास था कि उसपर चलने से उसे नया जीवन मिल जायेगा।

"तो, मेरे प्यारे," प्रिंस वसीली ने मज़ाक़िया अन्दाज़ अपनाते हुए कहा, "तुम 'हां' कह दो, मैं अपनी ओर से उसे पत्र लिख दूंगा और फिर हम चर्बीवाले जानवर को हलाल करके दावत उड़ायेंगे।"* किन्तु प्रिंस वसीली अपने मज़ाक़ ख़त्म भी नहीं कर पाया था कि प्येर ग़ुस्से से ऐसे लाल-पीला होकर, जिससे उसके पिता की याद ताज़ा हो गयी, प्रिंस वसीली से आंखें न मिलाते हुए फुसफुसा दिया:

"प्रिंस, मैंने आपको अपने यहां नहीं बुलवाया था, कृपया जाइये, यहां से चले जाइये!" वह उछलकर खड़ा हुआ और दरवाज़ा खोलते हुए उसने दोहराया: "जाइये!" अपने इस व्यवहार पर उसे ख़ुद विश्वास नहीं हो रहा था और प्रिंस वसीली के चेहरे पर झलक उठनेवाले परेशानी तथा भय के भाव से ख़ुशी हो रही थी।

"तुम्हें क्या हुआ है? तुम बीमार हो क्या?"

"जाइये!" धमकी भरी आवाज़ फिर से सुनायी दी। और प्रिंस वसीली किसी भी तरह का उत्तर पाये बिना जाने को मजबूर हो गया।

एक सप्ताह बाद प्येर अपने नये, फ़्री मेसन मित्रों से विदा लेकर और दान के रूप में उन्हें बड़ी रक़म देकर अपनी जागीरों पर चला गया। उसके इन नये बन्धुओं ने कीयेव और ओदेस्सा में वहां के फ़्री मेसनों के नाम उसे पत्र दिये, यह वादे किये कि वे उसे पत्र लिखेंगे और उसके नये कार्य-कलाप में उसका मार्ग-दर्शन करेंगे।

## ६

प्येर और दोलोख़ोव के द्वन्द्व-युद्ध के मामले को दबा दिया गया था और द्वन्द्व-युद्ध के प्रति सम्राट की उस समय की कठोरता के बावजूद

---

* यहां प्रिंस वसीली ने इंजील की उस शिक्षाप्रद कहानी की ओर संकेत किया है जिसके अनुसार माता-पिता की बात न माननेवाला एक बेटा घर से चला जाता है, किन्तु बाद में पछताता हुआ वापस आ जाता है। उसके लौटने पर ख़ुशी मनायी जाती है और जानवर को हलाल किया जाता है। – सं०

न तो दोनों प्रतिद्वन्द्वियों और न उनके सहायकों को किसी तरह की मुसीबत से दो-चार होना पड़ा। किन्तु प्येर तथा उसकी पत्नी के सम्बन्ध-विच्छेद द्वारा पुष्ट होनेवाला द्वन्द्व-युद्ध का क़िस्सा सोसाइटी की चर्चा का विषय बन गया। प्येर जब ग़ैरक़ानूनी बेटा था, ऊंची सोसाइटी के लोगों ने उसके प्रति कृपा और दया का भाव दिखाया, जब वह रूसी साम्राज्य की युवतियों के लिये सर्वश्रेष्ठ वर था, तो उसे सभी ओर हाथों हाथ लिया गया और उसकी तारीफ़ों के ख़ूब पुल बांधे गये, मगर शादी के बाद, जब युवतियों और माताओं की उसमें दिलचस्पी न रही, तो सोसाइटी की नज़र में वह काफ़ी नीचे गिर गया। ख़ास तौर पर इसलिये कि सोसाइटी की दृष्टि में अपने को ऊंचा उठाने की न तो वह कला ही जानता था और न इसकी परवाह ही करता था। अब इस पूरे क़िस्से के लिये उसी के मत्थे सारा दोष मढ़ा जाता, यह कहा जाता कि वह बुद्धू क़िस्म का शक्की मिज़ाजवाला आदमी है, कि उसे भी उसके बाप की तरह गुस्से के ऐसे दौरे पड़ते हैं जब वह दूसरों के ख़ून का प्यासा हो जाता है। प्येर के जाने के बाद एलेन जब पीटर्सबर्ग लौटी तो उसकी जान-पहचान के सभी लोगों ने न केवल सहर्ष, बल्कि उसके दुर्भाग्य को ध्यान में रखते हुए कुछ आदर भाव से भी उसका स्वागत किया। जब कभी उसके पति की चर्चा चलती तो एलेन अपनी स्वाभाविक व्यवहारकुशलता के अनुरूप अपने चेहरे पर गरिमा का भाव ले आती, यद्यपि वह स्वयं उसका महत्त्व नहीं समझती थी। उसका यह भाव यह कहता प्रतीत होता कि वह किसी भी तरह का शिकवा-शिकायत किये बिना अपने इस दुर्भाग्य को सहन करेगी और यह कि उसका पति उसके लिये भगवान का भेजा हुआ दण्ड है। प्रिंस वसीली तो साफ़-साफ़ ही अपनी राय ज़ाहिर करता। प्येर का ज़िक्र आने पर वह कंधे झटकता और माथे की तरफ़ इशारा करके कहता:

"मैं तो हमेशा यही कहता रहा हूं कि उसके कुछ पेच ढीले हैं।"

"मैंने तो पहले ही कहा था," आन्ना पाव्लोव्ना प्येर के बारे में कहती, "मैंने तो फ़ौरन और सबसे पहले (वह हमेशा अपने प्रथम होने पर ज़ोर देती) ही कह दिया था कि यह सिरफिरा नौजवान हमारे युग के विलासितापूर्ण विचारों से भ्रष्ट हो चुका है। मैंने तो उस वक़्त ही यह कहा था, जब सब उसपर मुग्ध होते थे और वह विदेश से लौटा ही था। याद है न कि कैसे तब उसने मेरे यहां एक पार्टी

में अपने को किसी म्युराट* जैसा ज़ाहिर किया था। आख़िर नतीजा क्या निकला? मैं तो तभी इस शादी के हक़ में नहीं थी और मैंने पहले से ही यह कह दिया था कि इसका क्या अन्त होगा।"

आन्ना पाव्लोव्ना छुट्टी के दिनों में पहले की तरह ही अपने यहां पार्टियों का आयोजन करती थी। ऐसी पार्टियों का, जो केवल वही आयोजित कर सकती थी और जिनमें, जैसा कि वह ख़ुद कहती थी, "असली बढ़िया सोसाइटी की क्रीम" और "पीटर्सबर्ग के बौद्धिक जगत के रत्न" जमा होते थे। बड़ी बारीकी से किये जानेवाले इस अतिथि-चुनाव के अतिरिक्त आन्ना पाव्लोव्ना की इन पार्टियों की एक ख़ूबी यह होती थी कि हर ऐसी पार्टी में वह किसी नये और दिलचस्प व्यक्ति को मेहमानों के सामने पेश करती तथा पीटर्सबर्ग की सोसाइटी के वफादार राज दरबारियों के मूड के राजनीतिक थर्मामीटर के उतार-चढ़ाव को भी यहीं सबसे ज़्यादा अच्छी तरह देखा और महसूस किया जा सकता था।

सन् १८०६ के अन्त में, जब इयेन और आउएरस्ताद के नज़दीक नेपोलियन द्वारा प्रशा की फ़ौजों के कुचले जाने तथा प्रशा के अधिकांश दुर्गों पर उसके क़ब्ज़ा करने के सभी दुखद समाचारों के ब्योरे प्राप्त हो चुके थे, जब हमारी सेनायें प्रशा में पहुंच गयी थीं और नेपोलियन के साथ हमारा दूसरा युद्ध शुरू हो गया था, आन्ना पाव्लोव्ना ने अपने यहां एक पार्टी का आयोजन किया। "असली बढ़िया सोसाइटी की क्रीम" में पति द्वारा छोड़ी गयी, बदक़िस्मत, मगर बला की ख़ूबसूरत एलेन, मोर्तेमार, रूप की मोहिनी डालनेवाला प्रिंस इप्पोलीत, जो कुछ ही समय पहले वियना से आया था, दो राजनयिक, मौसी, "अतीव गुणी व्यक्ति" के नाम से विख्यात एक जवान आदमी, कुछ ही समय पहले नियुक्त की गयी एक सम्राज्ञी-संगिनी और उसकी मां तथा कम महत्त्वपूर्ण कुछ अन्य लोग भी शामिल थे।

नवीनता के रूप में आन्ना पाव्लोव्ना इस शाम को बोरीस द्रुबेत्स्कोई को अपने मेहमानों के सामने पेश कर रही थी। वह हाल ही में प्रशा की सेना से एक विशेष सन्देश लेकर यहां आया था और किसी बहुत

---

* १८वी शताब्दी के अन्त की महान फ़्रांसीसी क्रान्ति के एक प्रमुखतम कार्यकर्त्ता और जन-हितो के रक्षक जॉन पोल म्युराट (१७४३–१७९३) से अभिप्राय है। – सं०

ही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का एडजुटेंट था।

इस पार्टी में राजनीतिक थर्मामीटर जो कुछ ज़ाहिर कर रहा था, वह यह था – यूरोप के शासक और सेनापति **मुझे** और कुल मिलाकर **हमें** दुख देने तथा संतप्त करने के लिये बोनापार्ट के प्रति चाहे कितनी ही नर्मी क्यों न दिखायें, बोनापार्ट के बारे में हमारी राय नही बदलेगी। हम किसी भी तरह की लाग-लपेट के बिना इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते रहेंगे और प्रशा के बादशाह तथा दूसरों से केवल यही कह सकते हैं: "इसमें आपका ही अहित है। बस, हम तो यही कह सकते हैं।" तो आन्ना पाव्लोव्ना के यहां इस शाम का राजनीतिक थर्मामीटर यही दिखा रहा था। जब बोरीस, जिसे इस पार्टी का सबसे "ज़ायक़ेदार पकवान" होना था, ड्राइंगरूम में आया, तो लगभग सभी मेहमान जमा हो चुके थे और आन्ना पाव्लोव्ना के निर्देशन में आस्ट्रिया के साथ हमारे कूटनीतिक सम्बन्धों और हमारे दोनों देशों के बीच गठबन्धन के बारे में बातचीत चल रही थी।

एडजुटेंट की बढ़िया वर्दी पहने, चेहरे पर ताज़गी तथा लालिमा लिये और पूरी तरह जवान मर्द बन चुका बोरीस जब बड़े आत्म-विश्वास से ड्राइंगरूम में दाखिल हुआ तो, जैसा कि होना चाहिये था, उसे मौसी के अभिवादन के लिये ले जाया गया और इसके बाद वह बाक़ी मेहमानों के बीच आ गया।

आन्ना पाव्लोव्ना ने चुम्बन के लिये अपना सूखा-सा हाथ उसकी तरफ़ बढ़ाया, कुछ अपरिचितों के साथ उसका परिचय करवाया और फुसफुसाकर हर किसी के बारे में कुछ शब्द कहे।

"प्रिंस इप्पोलीत कुरागिन, प्यारा जवान आदमी। श्रीमान क्रुग, डेनमार्क का प्रभारी राजदूत, 'बहुत बुद्धिमान आदमी'... और 'अतीव गुणी व्यक्ति' श्रीमान शीतोव।" उसने उस नौजवान के बारे में कहा जो इस नाम से विख्यात था।

अपनी मां, आन्ना मिख़ाइलोव्ना के प्रयासों, अपनी रुचियों तथा संयत स्वभाव के गुणों की बदौलत बोरीस ने अपनी नौकरी के दौरान अपने लिये काफ़ी ऊंची और लाभदायक जगह हासिल कर ली थी। वह किसी बहुत ही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का एडजुटेंट था, बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्यभार देकर उसे प्रशा भेजा गया था और कोई विशेष सन्देश लेकर अभी-अभी वहां से आया था। उसने ओलम्यूत्स में उसे पसन्द आनेवाले

उस अलिखित नियम को पूरी तरह से आत्मसात् कर लिया था जिसकी सहायता से कोई लेफ़्टिनेंट किसी जनरल से भी कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण बन सकता है और जिसके लिये न तो बहुत श्रम, अध्यवसाय, वीरता-साहस और अडिगता की आवश्यकता थी, बल्कि उनके साथ मेल-जोल बढ़ाने की कला में पारंगत होने की ही ज़रूरत थी जो नौकरी में तरक्की देते हैं, पुरस्कृत करते हैं। उसे अपनी द्रुत सफलता और इस बात से अक्सर आश्चर्य होता कि दूसरे लोग इस रहस्य को क्यों नहीं समझ पाते हैं। इस खोज के परिणामस्वरूप उसके जीवन का सारा रंग-ढंग, पूर्व परिचितों के साथ उसका आचार-व्यवहार और उसकी भावी योजनायें – यह सब कुछ पूरी तरह बदल गया। वह धनी नही था, मगर दूसरों से बेहतर कपड़े पहनने के लिये आखिरी पैसा तक ख़र्च कर देता था, पीटर्सबर्ग की सड़कों पर गन्दी-सी बग्घी में आने-जाने या पुरानी वर्दी पहने हुए नजर आने के बजाय, वह अपनी बहुत-सी दूसरी खुशियो को क़ुर्बान करना बेहतर समझता। वह केवल ऐसे ही लोगों से जान-पहचान करता और घनिष्ठता बढ़ाता था जो उससे ऊंचे दर्जे के होते थे तथा इसलिये उसके किसी काम आ सकते थे। वह पीटर्सबर्ग को चाहता और मास्को से घृणा करता था। रोस्तोव-परिवार में बिताये गये वर्षों और नताशा के प्रति अपने बाल-सुलभ प्यार की स्मृतियां उसे अरुचिकर लगतीं और सेना में जाने के बाद वह एक बार भी रोस्तोवों के यहां नही गया था। आन्ना पाव्लोव्ना के ड्राइंगरूम में अपनी उपस्थिति को महत्त्वपूर्ण पदोन्नति मानते हुए वह फौरन ही यहा अपनी भूमिका को समझ गया, आन्ना पाव्लोव्ना को अपनी उपस्थिति से लाभ उठाने का अवसर दिया, खुद बहुत ग़ौर से हर चेहरे को देखता और उनमें से प्रत्येक के साथ घनिष्ठता बढ़ाने के लाभों और सम्भावनाओं का अनुमान लगाता रहा। वह इंगित स्थान पर खूबसूरत एलेन के निकट बैठ गया और यहां चल रही सामान्य बातचीत को बहुत ध्यान से सुनने लगा।

" 'प्रस्तावित सन्धि के आधारों को वियना इस हद तक असम्भव मानता है कि उन्हें लगातार कई शानदार जीतों द्वारा ही सम्भव बनाया जा सकता है और उसे उन साधनों के बारे में सन्देह है जिनसे उन्हें प्राप्त किया जा सकता है।' मैंने वियना के मन्त्रिमण्डल का सही वाक्य ज्यों का त्यों उद्धृत किया है," डेनमार्क के प्रभारी राजदूत ने कहा।

"सन्देह प्रशंसनीय है!" 'बहुत बुद्धिमान आदमी' ने चालाकी भरी मुस्कान के साथ राय जाहिर की।

"वियना के मन्त्रिमण्डल और आस्ट्रिया के सम्राट में अन्तर करना ज़रूरी है," मोर्तेमार बोला। "आस्ट्रिया का सम्राट कभी ऐसा नहीं सोच सकता था, यह तो केवल मन्त्रिमण्डल का मत है।"

"ओह, मेरे प्यारे वाईकोंट," आन्ना पाव्लोव्ना ने बातचीत में दख़ल देते हुए कहा, "उरोप," (न जाने किस कारण वह "यूरोप" के बजाय हमेशा "उरोप" ही कहती थी मानो यह फ़ांसीसी भाषा की कोई ख़ास बारीकी हो जिसकी किसी फ्रांसीसी से बात करते हुए छूट ली जा सकती हो), "उरोप कभी भी हमारा सच्चा मित्र नही बनेगा।"

इसके बाद आन्ना पाव्लोव्ना ने इस उद्देश्य से प्रशा के बादशाह के साहस और दृढ़ता की चर्चा शुरू कर दी कि बोरीस को बोलने के लिये उकसा सके।

बोरीस अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हुए बहुत ध्यान से प्रत्येक वक्ता की बाते सुन रहा था, मगर साथ ही कई बार अपने पास बैठी हुई एलेन की ओर भी देख चुका था जो मुस्कराते हुए सुन्दर और जवान एडजुटेंट से कई बार अपनी नज़रें भी मिला चुकी थी।

प्रशा की स्थिति की चर्चा करते हुए आन्ना पाव्लोव्ना ने बहुत ही स्वाभाविक ढंग से बोरीस से यह अनुरोध किया कि वह ग्लोगाऊ की अपनी यात्रा और इस बारे में बताये कि प्रशा की फ़ौजें कैसी हालत में हैं। बोरीस ने बड़े इतमीनान से परिमार्जित और सही फ़ांसीसी भाषा में सेनाओं और राज दरबार के बारे में बहुत-से दिलचस्प ब्योरे बताये और साथ ही बड़े यत्न से इस बात की भी कोशिश करता रहा कि वह जिन तथ्यों की चर्चा कर रहा है, उनके सम्बन्ध में अपना मत प्रकट न करे। कुछ समय तक बोरीस सभी की रुचि का केन्द्र-बिन्दु बना रहा और आन्ना पाव्लोव्ना ने अनुभव किया कि उसके सभी मेहमानों को उनके सामने पेश किया गया यह नया और ज़ायक़ेदार पकवान काफ़ी पसन्द आया है। बोरीस की बातों की ओर एलेन ने सबसे ज़्यादा ध्यान दिया। उसने बोरीस से कई बार उसकी यात्रा के कई ब्योरे पूछे और ऐसे प्रतीत हुआ कि प्रशा की सेना की स्थिति में उसकी ख़ासी दिलचस्पी थी। बोरीस के बात ख़त्म करने पर उसने अपनी सामान्य मुस्कान के साथ उसे सम्बोधित किया:

"आपको ज़रूर ही मुझसे मिलने के लिये आना होगा," एलेन ने ऐसे अन्दाज़ में कहा मानो कुछ बातों को ध्यान में रखते हुए, जिनका उसे ज्ञान नहीं हो सकता था, उसके लिये उससे मिलना एकदम ज़रूरी था। "मंगलवार को आठ और नौ के बीच। आपके आने से मुझे बेहद खुशी होगी।"

बोरीस ने एलेन की इच्छा पूरी करने का वचन दिया और वह उसके साथ और अधिक बातचीत शुरू करने ही जा रहा था, जब आन्ना पाव्लोव्ना ने इस बहाने से कि मौसी भी उसकी बातें सुनना चाहती है, उसे वहां से बुला लिया।

"उसके पति को तो आप जानते ही हैं?" आन्ना पाव्लोव्ना ने आंखें मूंदकर तथा उदासी भरी मुद्रा से एलेन की ओर संकेत करते हुए कहा। "ओह, बड़ी बदक़िस्मत और बहुत ही प्यारी औरत है यह! कृपया उसके सामने उसके पति का हरगिज़ ज़िक्र नहीं कीजिये। उसके दिल पर बहुत भारी गुज़रती है!"

## ७

बोरीस और आन्ना पाव्लोव्ना जब दूसरे अतिथियों के बीच लौटे तो प्रिंस इप्पोलीत कुछ कह रहा था। अपनी आरामकुर्सी पर आगे की ओर झुकते हुए उसने कहा:

"प्रशा का बादशाह!" और इतना कहकर वह हंस पड़ा। सभी ने उसकी तरफ़ ध्यान दिया। "प्रशा का बादशाह?" इप्पोलीत ने सवाल किया, फिर से हंस पड़ा और फिर से अपनी आरामकुर्सी पर कुछ पीछे हटकर बड़े इतमीनान तथा संजीदगी से बैठ गया। आन्ना पाव्लोव्ना ने कुछ देर इन्तज़ार किया, लेकिन जब यह लगा कि वह और कुछ भी नहीं कहना चाहता तो उसने यह चर्चा शुरू की कि कैसे काफ़िर बोनापार्ट पोट्सडम से फ़्रेड्रिक महान का खड्ग उड़ा ले गया।*

---

* पोट्सडम शहर १८वीं शताब्दी से प्रशा के बादशाहों का निवासस्थान बन गया था। १७४० से १७८६ तक प्रशा पर शासन करने तथा दूसरों पर जीतों के झण्डे फहरानेवाले बादशाह फ़्रेड्रिक द्वितीय के अवशेष यहीं सुरक्षित थे। – सं०

"यह फ़्रेड्रिक महान का खड्ग है जो मैं..." उसने कहना आरम्भ किया, किन्तु इप्पोलीत ने निम्न शब्दों से उसे टोक दिया:

"प्रशा का बादशाह..." और पुनः जैसे ही सब ने उसकी ओर ध्यान दिया, वैसे ही वह क्षमा मांगकर चुप हो गया। आन्ना पाव्लोव्ना के माथे पर बल पड़ गये। मोर्तेमार ने, जो इप्पोलीत का दोस्त था, उससे दृढ़तापूर्वक पूछा:

"आख़िर क्या कहना चाहते हो तुम प्रशा के बादशाह के बारे में?"

इप्पोलीत ऐसे हंस दिया मानो वह अपनी हंसी के लिये लज्जित हो।

"नहीं, कुछ नहीं, मैं तो केवल यह कहना चाहता था..." (वह वियना में सुने हुए एक मज़ाक़ को दोहराने का इरादा रखता था और सारी शाम यही कोशिश करता रहा था।) "मैं केवल यह कहना चाहता था कि हम व्यर्थ ही **प्रशा के बादशाह की ख़ातिर** लड़ रहे हैं।"*

बोरीस ऐसे सावधानी से मुस्करा दिया कि उसकी मुस्कान को व्यंग्यपूर्ण या अनुमोदन करनेवाली भी समझा जा सकता था और यह इस बात पर निर्भर था कि लोग इसका क्या अर्थ लगाते हैं। सभी हंस पड़े।

"आपका यह शब्द-खिलवाड़ अच्छा नहीं, इसमें चतुराई तो है किन्तु यह न्यायसंगत नहीं। हम ऊंचे उद्देश्यों के लिये लड़ रहे हैं, प्रशा की ख़ातिर नहीं। ओह, कैसा दुष्ट है यह प्रिंस इप्पोलीत!" आन्ना पाव्लोव्ना ने कहा।

सारी शाम लगातार बातचीत होती रही और मुख्यतः राजनीतिक समाचारों के गिर्द घूमती रही। पार्टी की समाप्ति के समय, जब सम्राट द्वारा दिये जानेवाले पुरस्कारों की चर्चा चल पड़ी, तो इसमें विशेष रूप से बड़ी सजीवता आ गयी।

"पिछले साल फ़लां साहब को सम्राट के छविचित्रवाली नासदानी

---

* मूलतः फ़्रांसीसी में कहे गये इस वाक्य मे शब्द-खिलवाड़ है। इस वाक्य का एक अर्थ यदि यह है कि हम "व्यर्थ ही प्रशा के बादशाह की ख़ातिर" लड़ रहे हैं तो दूसरा अर्थ है – "हम व्यर्थ की चीज़ों के लिये" लड़ रहे हैं। – सं०

मिली थी न," 'बहुत बुद्धिमान आदमी' ने कहा, "तो भला इस दूसरे महानुभाव को यही पुरस्कार क्यों नहीं मिल सकता?"

"क्षमा कीजिये, सम्राट के छविचित्रवाली नासदानी पुरस्कार तो है, मगर कोई उपाधि या पद-चिह्न तो नही – इसे उपहार ही कहना ज़्यादा ठीक होगा," कूटनीतिज्ञ ने कहा।

"ऐसी कई मिसालें हैं – जैसे कि श्वारत्सेनबेर्ग।"

"यह असम्भव है," दूसरे ने आपत्ति की।

"मैं शर्त लगाने को तैयार हूं। सम्मान-रिबन की बात दूसरी है..."

जब सभी लोग जाने को उठे तो सारी शाम बहुत ही कम बोलनेवाली एलेन ने फिर बोरीस से अनुरोध किया और स्नेह तथा अर्थपूर्ण आदेश-सा देते हुए कहा कि मंगलवार को वह उसके यहां आना न भूले।

"मेरे लिये यह बहुत महत्त्व रखता है," उसने आन्ना पाव्लोव्ना की ओर देखते हुए मुस्कराकर कहा और आन्ना पाव्लोव्ना ने उसी उदासी भरी मुस्कान के साथ, जो उसकी उच्च संरक्षिका यानी सम्राज्ञी की चर्चा के समय उसके चेहरे पर आ जाती थी, एलेन की इस इच्छा की पुष्टि की। ऐसे प्रतीत होता था कि इस शाम को प्रशा की सेना के बारे में बोरीस द्वारा कहे गये कुछ शब्दों ने अचानक उससे मिलने की आवश्यकता पैदा कर दी थी। उसने मानो उसे यह वचन दिया कि मंगल के दिन, जब वह उसके यहां आयेगा, तो वह मिलने की इस आवश्यकता को स्पष्ट कर देगी।

मंगल की शाम को बोरीस जब एलेन के शानदार ड्राइंगरूम में पहुंचा तो उसे स्पष्ट रूप से यह नहीं मालूम हो सका कि किसलिये उसका यहां आना इतना ज़रूरी था। अन्य अतिथि भी थे, काउंटेस एलेन ने उसके साथ बहुत कम बातचीत की और केवल विदा लेने के समय, जब वह उसका हाथ चूम रहा था, उसने मुस्कान के बिना अप्रत्याशित ही फुसफुसाकर कहा:

"कल शाम को भोजन करने आइये। यह ज़रूरी है। अवश्य आइये।"

पीटर्सबर्ग के इस बार के निवास के दौरान बोरीस काउंटेस बेज़ूख़ोवा के घर का एक घनिष्ठ व्यक्ति बन गया।

युद्ध की आग ज़ोर से भड़कती और रूस की सीमाओं के अधिकाधिक निकट आती जा रही थी। मानवजाति के शत्रु यानी बोनापार्ट पर लोग सभी जगह लानत भेजते थे। गांवों में रिज़र्व सेनाओं के सैनिक और रंगरूट भर्ती किये जा रहे थे। युद्ध-क्षेत्र से एक-दूसरी का खण्डन करनेवाली, सदा की भांति झूठी ख़बरें आ रही थीं और इसलिये उनके बहुत भिन्न-भिन्न अर्थ लगाये जा सकते थे।

सन् १८०५ के बाद से बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की, प्रिंस अन्द्रेई और प्रिंसेस मरीया के जीवन में काफ़ी परिवर्तन हो चुका था।

सन् १८०६ में बुज़ुर्ग प्रिंस सारे रूस में आरम्भ की गयी सेना की भर्ती के लिये नियुक्त किये गये आठ मुख्य कमांडरों में से एक कमांडर बना दिये गये। बुढ़ापे की शारीरिक दुर्बलता के बावजूद, जो उस अवधि में विशेष रूप से अधिक स्पष्ट हो गयी थी जब वह अपने बेटे को काल-कलवित मानते थे, उन्होंने इस ज़िम्मेदारी से इन्कार करना उचित नहीं समझा जो सम्राट ने स्वयं उन्हें सौंपी थी। सक्रियता की इस नयी सम्भावना ने उन्हें नयी स्फूर्ति और शक्ति दी। वह सैनिकों की भर्ती के लिये अपने को सौंपे गये तीन प्रान्तों का लगातार दौरा करते, बड़ी कड़ाई से अपने कर्त्तव्य निभाते, क्रूरता की सीमा तक अपने मातहतों के प्रति कठोरता से काम लेते और हर मामले की छोटी से छोटी तफसील की खुद जांच-पड़ताल करते। प्रिंसेस मरीया अब पिता से गणित नहीं सीखती थी और धाय तथा नन्हे प्रिंस निकोलाई (दादा उसे इसी नाम से बुलाते थे) के साथ पिता के कमरे में जाती थी, जब वह घर पर होते थे। नन्हा प्रिंस निकोलाई धाय और आया सावीश्ना के साथ दिवंगता प्रिंसेस के कमरों में रहता था। प्रिंसेस मरीया दिन का अधिकतर समय बच्चे के साथ ही बिताती और उसके लिये जितना सम्भव होता नन्हे भतीजे की मां का दायित्व निभाने की कोशिश करती। कुमारी बुर्येन भी बच्चे को बेहद चाहती प्रतीत हुई और प्रिंसेस मरीया अक्सर नन्हे **फ़रिश्ते** (अपने भतीजे को वह यही संज्ञा देती थी) को लाड़ लड़ाने से अपने को वंचित करते हुए अपनी सहेली को यह सुख पाने और उसके साथ खेलने की सम्भावना दे देती थी।

लीसिये गोरि जागीर के गिरजाघर की वेदी के पास टुइयां-सी

प्रिंसेस की क़ब्र के ऊपर एक समाधि बना दी गयी थी और उसमें पंख फैलाये हुए उड़ने को तैयार फ़रिश्ते की इटली से लायी गयी संग-मरमर की एक मूर्त्ति रख दी गयी थी। फ़रिश्ते का ऊपरवाला होंठ ज़रा ऊपर को उठा हुआ था मानो वह मुस्कराने जा रहा हो और एक दिन समाधि से बाहर आते हुए प्रिंस अन्द्रेई तथा प्रिंसेस मरीया ने एक-दूसरे के सामने यह स्वीकार किया कि बड़ी अजीब बात थी कि इस फ़रिश्ते का चेहरा उन्हें दिवंगता प्रिंसेस लीज़ा के चेहरे की याद दिलाता था। किन्तु इससे भी ज़्यादा अजीब बात यह थी, और जो प्रिंस अन्द्रेई ने अपनी बहन से नहीं कही, कि मूर्त्तिकार द्वारा संयोग से ही फ़रिश्ते के चेहरे की इस भावाभिव्यक्ति में प्रिंस अन्द्रेई को वही विनम्र भर्त्सना दिखाई देती थी जो उसने अपनी मृत पत्नी के चेहरे पर देखी थी: "ओह, आपने मेरे साथ ऐसा क्यों किया है?.."

प्रिंस अन्द्रेई के लौटने के कुछ ही समय बाद बुज़ुर्ग प्रिंस ने बेटे को बोगुचारोवो नाम की बड़ी जागीर दे दी जो लीसियये गोरि से कोई चालीस किलोमीटर दूर थी। कुछ हद तक लीसियये गोरि के साथ जुड़ी हुई कटु स्मृतियों, कुछ हद तक हमेशा ही पिता के स्वभाव को बर्दाश्त न कर पाने के कारण और कुछ सीमा तक एकान्त की आवश्यकता अनुभव करते हुए प्रिंस अन्द्रेई ने बोगुचारोवो जागीर का उपयोग किया, वहां निर्माण करवाने लगा और वह अपना अधिकतर समय वहीं बिताता।

आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई के बाद प्रिंस अन्द्रेई ने पक्का इरादा बना लिया था कि वह फिर कभी सेना में नहीं जायेगा। जब जंग छिड़ गयी और सभी के लिये सैन्यसेवा ज़रूरी हो गयी तो उसने पिता के संचालन में भर्ती के काम में हाथ बंटाने की एक ड्यूटी ले ली। १८०५ की लड़ाई के बाद बूढ़े प्रिंस और जवान बेटे ने मानो अपनी भूमिकायें बदल ली थीं। अपनी सक्रियता से उत्तेजित बूढ़े प्रिंस यह आशा कर रहे थे कि इस नये युद्ध के सभी अच्छे परिणाम निकलेंगे, जबकि प्रिंस अन्द्रेई को, जो युद्ध में भाग नहीं ले रहा था और मन ही मन पछता भी रहा था, सब कुछ बुरा ही बुरा दिखाई देता था।

२६ फ़रवरी १८०७ को बुज़ुर्ग प्रिंस अपने भर्ती-क्षेत्र में चले गये। जैसा कि अक्सर होता था, पिता की अनुपस्थिति में प्रिंस अन्द्रेई लीसियये गोरि में रह रहा था। चार दिन से नन्हे प्रिंस निकोलाई की तबीयत अच्छी नहीं थी। बुज़ुर्ग प्रिंस को शहर पहुंचानेवाले कोचवान लौट आये

थे और वे प्रिंस अन्द्रेई के काग़ज़-पत्र अपने साथ लाये थे।

प्रिंस अन्द्रेई को उसके कमरे में न पाकर नौकर पत्र लिये हुए प्रिंसेस मरीया के कमरों में गया, मगर वह वहां भी नहीं मिला। नौकर को बताया गया कि प्रिंस बच्चे के कमरे में गया है।

"हुज़ूर, पेत्रूशा काग़ज़-पत्र लेकर आया है," आया की सहायता करनेवाली एक नौकरानी ने प्रिंस अन्द्रेई से कहा जो बच्चे की छोटी-सी कुर्सी पर बैठा था और त्योरी चढ़ाये तथा कांपते हाथों से पानी से आधी भरी गिलासी में शीशी से दवाई डाल रहा था।

"क्या बात है?" उसने झल्लाकर कहा और असावधानी से हाथ हिल जाने के कारण शीशी से दवाई की कुछ अधिक बूंदें गिलासी में पड़ गयीं। उसने दवाई फ़र्श पर गिरा दी और फिर से पानी मांगा। नौकरानी ने पानी दे दिया।

इस कमरे में बच्चे की छोटी-सी पलंगिया थी, दो सन्दूक़ थे, दो आरामकुर्सियां थीं, मेज़ और बच्चे की छोटी-सी मेज़ तथा कुर्सी थी जिसपर प्रिंस अन्द्रेई बैठा था। खिड़कियां पर्दों से ढकी थीं, मेज़ पर एक मोमबत्ती जल रही थी जिसे स्वरलिपि की जिल्द-बंधी पुस्तक से ऐसे ढक दिया गया था कि बच्चे की पलंगिया पर रोशनी न पड़े।

"भैया," प्रिंसेस मरीया ने पलंगिया के पास से, जहां वह खड़ी थी, प्रिंस अन्द्रेई को सम्बोधित किया, "कुछ इन्तज़ार कर लेना ही बेहतर होगा... थोड़ी देर बाद..."

"ओह, तुम यह रहने दो, बेतुकी बात कर रही हो, हमेशा इन्तज़ार करने को कहती रहती हो – देख रही हो न इन्तज़ार का नतीजा," प्रिंस अन्द्रेई ने सम्भवतः बहन के दिल को ठेस लगाने के लिये क्रोधपूर्ण फुसफुसाहट के साथ कहा।

"भैया, मैं ठीक कह रही हूं, वह सो गया है, उसे जगाना ठीक नहीं होगा," प्रिंसेस ने गिड़गिड़ाती आवाज़ में कहा।

प्रिंस अन्द्रेई उठा और हाथ में गिलासी लिये हुए दबे पांव पलंगिया के पास गया।

"शायद न जगाना ही ज़्यादा अच्छा होगा?" प्रिंस अन्द्रेई ने दुविधा में पड़ते हुए कहा।

"जैसे ठीक समझो – सच... मेरे ख़्याल में तो... लेकिन जैसे तुम ठीक समझो," प्रिंसेस मरीया ने सम्भवतः इस बात से सहमते

और झेंपते हुए कहा कि उसके विचार को ही स्वीकार किया जा रहा है। उसने उस नौकरानी की ओर भाई का ध्यान आकृष्ट किया जो फुसफुसाकर उसे बुला रही थी।

यह दूसरी रात थी कि ये दोनों बच्चे की सेवा-शुश्रूषा करते हुए, जिसे बहुत ज़ोर का बुख़ार था, नहीं सोये थे। इन दो दिनों में अपने घरेलू डाक्टर पर भरोसा न करते और उस डाक्टर की राह देखते हुए जिसे शहर मे बुलाया गया था, ये दोनों तरह-तरह की दवाइयों का उपयोग करते रहे थे। उनींदे के कारण अत्यधिक व्यथित और चिन्तित ये दोनों एक-दूसरे के मत्थे अपनी परेशानी मढ़ते थे, एक-दूसरे को ताने-बोलियां देते थे और झगड़ते थे।

"पेत्रूशा पापा के काग़ज़-पत्र लेकर आया है," नौकरानी ने फुस-फुसाकर कहा। प्रिंस अन्द्रेई बाहर आया।

"क्या बात है?" वह झल्लाते हुए बोला और पिता द्वारा भेजा गया ज़बानी सन्देश सुनकर और लिफ़ाफ़े तथा पिता का पत्र लेकर बच्चे के कमरे में लौट गया।

"कैसा हाल है इसका?" उसने पूछा।

"पहले जैसा ही। भगवान के लिये थोड़ा रुक जाओ। कार्ल इवानिच हमेशा यह कहता है कि नींद सबसे ज़्यादा महत्त्व रखती है," प्रिंसेस मरीया निःश्वास छोड़ते हुए फुसफुसायी। प्रिंस अन्द्रेई ने बच्चे के पास जाकर उसे छुआ। वह तेज़ बुख़ार से जल रहा था।

"भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारा कार्ल इवानिच!" वह दवाई की बूंदोंवाली गिलासी लेकर फिर से बच्चे के पास गया।

"अन्द्रेई, ऐसा नहीं करो!" प्रिंसेस मरीया ने कहा।

किन्तु उसने क्रोध और साथ ही व्यथापूर्वक त्योरी चढ़ाकर उसकी ओर देखा और हाथ में गिलासी लिये हुए बच्चे की ओर झुका।

"मगर मैं ऐसा चाहता हूं," उसने कहा। "तुम्हारी मिन्नत करता हूं, इसे यह दवाई पिला दो।"

प्रिंसेस मरीया ने कंधे झटके, लेकिन किसी तरह की हील-हुज्जत के बिना गिलासी ले ली और आया को बुलाकर बच्चे को दवाई पिलाने लगी। बच्चा चीख़ने-चिल्लाने लगा, उसे उच्छू आने लगी। प्रिंस अन्द्रेई के माथे पर बल पड़ गये, उसने अपना सिर थाम लिया, कमरे से बाहर चला गया और बग़ल के कमरे में जाकर सोफ़े पर बैठ गया।

पत्र अभी भी उसके हाथ में थे। वह उन्हें यन्त्रवत् खोलकर पढ़ने लगा। बुजुर्ग प्रिंस ने अपनी बड़ी-बड़ी, आयताकार लिखावट में कहीं-कहीं संकेताक्षरों का उपयोग करते हुए नीले काग़ज़ पर यह लिखा था :

"सन्देशवाहक से अभी-अभी बहुत ख़ुशी भरी ख़बर मिली है, अगर वह झूठी नहीं है। बेनिगसेन ने मानो प्रैसिश-एइलाऊ के निकट बोनापार्ट पर पूरी तरह विजय प्राप्त की है। पीटर्सबर्ग में लोगों की ख़ुशी का पारावार नही और सेना को ढेरों पुरस्कार भेजे गये हैं। बेशक वह जर्मन है – फिर भी मैं बधाई देता हूं। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि कोर्चेव नगर का संचालक – कोई ख़ांडरीकोव न जाने क्या कर रहा है – अभी तक अतिरिक्त लोग और रसद का सामान यहां नही पहुंचा। सरपट घोड़ा दौड़ाते हुए अभी वहां जाओ और उससे कह दो कि अगर एक हफ़्ते में सब कुछ वहां नही पहुंच जायेगा तो मैं उसका सिर क़लम करवा दूंगा। प्रैसिश-एइलाऊ की लड़ाई के बारे में मुझे पेत्या का भी एक पत्र मिला है। उसने इस लड़ाई में हिस्सा लिया था – सब कुछ सच है। जब वे लोग टांग नही अड़ाते, जिन्हें ऐसा नहीं करना चाहिये, तो एक जर्मन ने भी बोनापार्ट का मुंह तोड़ दिया। कहते हैं कि वह बड़ी गड़बड़ी की हालत में पीछे भागा जा रहा है। देखो, सरपट घोड़ा दौड़ाते हुए फ़ौरन कोर्चेव जाओ और मेरा आदेश पूरा करो!"

प्रिंस अन्द्रेई ने आह भरी और दूसरा लिफ़ाफ़ा खोला। यह बहुत बारीक लिखावट में बिलीबिन के हाथ का लिखा हुआ दो पृष्ठों का पत्र था। उसने इसे पढ़े बिना ही तहाकर लिफ़ाफ़े में डाल दिया और फिर से पिता का पत्र पढ़ा जो इन शब्दों के साथ समाप्त होता था : "सरपट घोड़ा दौड़ाते हुए फ़ौरन कोर्चेव जाओ और मेरा आदेश पूरा करो!"

"नहीं, माफी चाहता हूं, बच्चे के ठीक होने तक मैं कहीं नहीं जाऊंगा," उसने सोचा और दरवाज़े के पास जाकर भीतर नज़र डाली। प्रिंसेस मरीया अभी तक पलंगिया के पास खड़ी हुई बच्चे को धीरे-धीरे झुला रही थी।

"अरे हां, पिता जी ने और क्या बुरी ख़बर लिखी है?" उसने पत्र को याद करने की कोशिश की। "हां, बोनापार्ट पर तब विजय

प्राप्त की गयी, जब मैं सेना में नहीं हूं। हां, हां, वह हमेशा मेरा मज़ाक़ उड़ाते रहते हैं... ख़ैर, उड़ाते रहें..." और वह फ़्रांसीसी में लिखा हुआ बिलीबिन का पत्र पढ़ने लगा। वह पत्र को आधा समझे विना और केवल इसलिये पढ़ रहा था कि किसी तरह, बेशक थोड़ी देर को ही, उस चीज़ के बारे में सोचना बन्द कर दे जिसके सम्बन्ध में और सारी बातें भूलकर बहुत देर तक तथा यातनापूर्ण ढंग से सोचता रहा था।

## ९

बिलीबिन अब राजनयिक की हैसियत से मुख्य सैनिक कार्यालय में काम कर रहा था और यद्यपि उसका पत्र फ़्रांसीसी भाषा में था तथा उसमें फ़्रांसीसी मज़ाक़ों और मुहावरों, फ़्रांसीसी रंग का उपयोग किया गया था, तथापि उसने सच्ची रूसी निडरता और पूरी निष्पक्षता से युद्ध का वर्णन किया था, अपने पक्ष की कड़ी आलोचना की थी और उसपर तीखे व्यंग्य किये थे। बिलीबिन ने लिखा था कि राजनयिक के नाते उसकी नम्रता उसके लिये यातना बनी हुई थी और उसे इस बात की ख़ुशी थी कि प्रिंस अन्द्रेई के रूप में एक ऐसा विश्वसनीय व्यक्ति तो उपलब्ध था जिसके सामने वह अपना वह सारा क्रोध प्रकट कर सकता था जो सेना की बुरी हालत को देखकर उसके मन में इकट्ठा होता रहा था। यह पत्र कुछ पुराना था, प्रैसिश-एइलाऊ की लड़ाई से पहले लिखा गया था।

"मेरे प्यारे प्रिंस, आप जानते हैं कि आउस्टेरलिट्ज़ की हमारी शानदार कामयाबी के बाद से मैं मुख्य सैनिक कार्यालय में ही काम कर रहा हूं। युद्ध में मेरी निश्चय ही विशेष रुचि हो गयी है और मुझे इस बात की ख़ुशी है। तीन महीनों में मैंने यहां जो कुछ देखा है, उसकी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती।

"मैं शुरू से सिलसिलेवार चर्चा करता हूं। **मानवजाति का शत्रु***,

---

* नेपोलियन। – सं०

जिसे आप जानते हैं, प्रशावालों पर आक्रमण कर रहा है। प्रशावाले हमारे सच्चे साथी हैं जिन्होंने तीन सालों में केवल तीन बार ही हमें धोखा दिया है। हम उनकी हिमायत कर रहे हैं। लेकिन पता यह चलता है कि **मानवजाति का शत्रु** हमारे बढ़िया भाषणों की ओर ज़रा भी ध्यान नहीं देता है और उसने अपने अशिष्ट तथा पाशविक ढंग से प्रशावालों पर हमला कर दिया, उसने तो उनके द्वारा आरम्भ की गयी परेड भी ख़त्म नहीं होने दी, उनकी सेनाओं को खण्ड-खण्ड कर डाला और पोट्सडम के महल में जा डेरा जमाया।

"'मेरी यह हार्दिक कामना है, हुजूर,' प्रशा के बादशाह ने बोनापार्ट को लिखा, 'कि मेरे महल में आपका ऐसे स्वागत-सत्कार किया जाये कि जिससे आपका दिल बाग़-बाग़ हो जाये और जहां तक मुझसे सम्भव हो सका, मैंने विशेष यत्न से इसकी पूरी व्यवस्था करने का प्रयास किया है। काश, मुझे अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता मिले!' प्रशा के जनरल फ़्रांसीसियों के सामने अपनी शिष्टता पर गर्व करते हैं और उनके मांग करते ही उनके सामने अपने हथियार फेंक देते हैं। दस हज़ार सैनिकोंवाले ग्लोगाऊ गैरिज़न के संचालक ने प्रशा के बादशाह से यह पूछा कि अगर उससे आत्म-समर्पण करने को कहा जाये तो वह क्या करे। यह सब कुछ सोलह आने सच है। थोड़े में यह कि हमने तो ऐसा सोचा था कि जंगी तेवर दिखाकर फ़्रांसीसियों में दहशत पैदा कर देंगे, लेकिन नतीजा यह है कि हम अपनी ही सीमा पर ख़ुद जंग में घसीट लिये गये हैं और सबसे बड़ी बात तो यह है कि **प्रशा के बादशाह की ख़ातिर** और उसके साथ। हमारे यहां सब कुछ बहुतायत से है, बस, एक छोटी-सी चीज़ की कमी है यानी प्रधान सेनापति की। चूंकि यह पता चला है कि आउस्टेरलिट्ज़ की हमारी कामयाबी और भी निर्णायक हो सकती थी, यदि प्रधान सेनापति इतना जवान न होता, इसलिये अस्सी वर्षीय जनरलों के बारे में विचार-विनिमय किया जा रहा है और प्रज़ोरोव्स्की तथा कामेन्स्की में से कामेन्स्की को चुना जाता है। यह जनरल बन्द घोड़ागाड़ी में सुवोरोव के ढंग से हमारे यहां आया और बेहद ख़ुशी तथा शान-बान से उसका स्वागत किया गया।

"४ तारीख़ को पहला सन्देशवाहक पीटर्सबर्ग से यहां पहुंचा। डाक के सूटकेसों को फ़ील्ड-मार्शल के कमरे में ले जाया गया, क्योंकि

वह हर चीज़ पर अपनी नज़र रखते हैं। मुझे डाक छांटने और हमारी चिट्ठियां अलग करने के लिये बुलाया गया। हमें यह काम सौंपकर फ़ील्ड-मार्शल इन्तज़ार करने लगे कि उनके नाम के पत्र उन्हें दिये जायें। हम ढूंढ़ते रहे – मगर उनके नाम का एक भी पत्र नहीं निकला। फ़ील्ड-मार्शल परेशान हो उठे और खुद सारी डाक को देखने लगे। उन्हें काउंट 'त' और प्रिंस 'व' तथा अन्य लोगों के नाम सम्राट के पत्र दिखाई दिये। वह आग-बबूला हो उठे, आपे से बाहर हो गये और दूसरों के नाम के पत्रों को खोल-खोलकर पढ़ने लगे। 'तो ऐसा बर्ताव होता है मेरे साथ! मुझ पर ज़रा भी भरोसा नहीं किया जाता! मुझपर नज़र रखने का हुक्म दिया गया है – अच्ची बात है, तो तुम सब यहां से दफ़ा हो जाओ!' और फ़ील्ड-मार्शल ने जनरल बेनिगसेन को अपना यह विख्यात आदेश लिख भेजा।

"'मैं घायल हूं, घुड़सवारी नहीं कर सकता और इसलिये सेना की कमान भी नहीं सम्भाल सकता। आपने पुलटुस्क में अपनी सेना को पिटवा लिया। वहां उसपर शत्रु हमला कर सकता है, आपकी सेना के पास ईंधन और चारा नहीं है। इसलिये कोई उपाय करना चाहिये। जैसा कि स्वयं आपने कल काउंट बुक्सगेव्देन को सूचित किया था, हमारी सीमा की ओर पीछे हटने के लिये क़दम उठाये जाने चा-हिये। आप आज ऐसा करें।

"'मेरी सारी यात्राओं के फलस्वरूप,' उन्होंने सम्राट को लिखा, 'मुझे काठी का घाव हो गया है और मेरे पहले के घाव के साथ वह अब मेरे घुड़सवारी करने तथा इतनी फैली हुई सेना की कमान सम्भालने में बाधक होता है। इसलिये मैंने उसकी कमान अपने वरिष्ठ जनरल, काउंट बुक्सगेव्देन को सौंप दी है और अपना पूरा स्टॉफ़ तथा अन्य सभी सम्बन्धित चीज़ें भी उसके पास भेज दी हैं। उसे यह परामर्श भी दिया है कि अगर अनाज न हो तो वह अपनी सेना को प्रशा के भीतरी क्षेत्रों की ओर ले जाये, क्योंकि उनके पास केवल एक दिन की रसद बाक़ी थी और जैसा कि डिवीज़न-कमांडरों – ओस्टेरमन तथा सेद्मोरेत्स्की – ने सूचित किया था, कुछ रेजिमेंटों के पास ज़रा भी रसद नहीं रही तथा स्थानीय किसानों के पास जो अनाज था, वह भी ख़त्म हो चुका है। मैं खुद स्वस्थ होने तक ओस्टरोलेन्क के अस्पताल में रहूंगा। बहुत ही नम्रतापूर्वक अपनी यह रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए

मैं यह भी जोड़ना चाहूंगा कि अगर हमारी सेना और पन्द्रह दिन तक इसी पड़ाव पर रुकी रहेगी तो वसन्त आते न आते इसमें एक भी स्वस्थ व्यक्ति बाक़ी नहीं रहेगा।

"'मुझ बूढ़े को, जो पहले ही अपने को कलंकित कर चुका है, गांव चले जाने की अनुमति दे दीजिये, क्योंकि मैं उस महान और यशस्वी कार्य को पूरा नहीं कर सका जिसके लिये मुझे चुना गया था। इस बारे में मैं अस्पताल में आपके आदेश की प्रतीक्षा करूंगा ताकि मुझे **सेनापति** की जगह **मुंशी** की भूमिका न अदा करनी पड़े। सेना से मेरे अलग कर दिये जाने से किसी तरह का कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा, यह तो किसी अंधे के सेना से चले जाने के बराबर होगा। मेरे जैसे तो रूस में हज़ारों हैं।'

"फ़ील्ड-मार्शल सम्राट से नाराज़ हैं और हम सभी को सज़ा देते हैं। यह तो बिल्कुल तर्कसंगत है।

"तो यह है इस कामदी का पहला अंक। ज़ाहिर है कि दूसरे अंक का पहले से अधिक दिलचस्प और मनोरंजक होना स्वाभाविक ही है। फ़ील्ड-मार्शल के जाने के बाद मालूम हुआ कि दुश्मन हमारे सामने है और उससे टक्कर लेना ज़रूरी है। वरिष्ठता की दृष्टि से बुक्सगेव्देन प्रधान सेनापति था, मगर जनरल बेनिगसेन बिल्कुल ऐसा नहीं मानता था। ख़ास तौर पर इसलिये कि उसी की सेना शत्रु के बिल्कुल सामने थी और वह उससे लड़ने की सम्भावना का उपयोग करना चाहता था। उसने ऐसा ही किया भी। यह पुलतुस्क की लड़ाई थी जिसे बहुत बड़ी विजय माना जाता है और जिसे मैं ऐसा नहीं मानता हूं। जैसा कि आप जानते हैं, हम ग़ैरफ़ौजी लोगों को किसी लड़ाई की हार-जीत का अपने ही ढंग से निर्णय करने की बहुत बुरी आदत है। हम यह कहते हैं कि लड़ाई के बाद जो पीछे हट गया, वह हारा। इस मापदण्ड के अनुसार हम पुलतुस्क की लड़ाई में हार गये। थोड़े में यह कि लड़ाई के बाद हम पीछे हट गये, मगर अपनी विजय की ख़बर देने के लिये सन्देशवाहक को पीटर्सबर्ग भेज देते हैं। जनरल बेनिगसेन यह आशा करते हुए कि अपनी विजय के आधार-स्वरूप वह पीटर्सबर्ग से प्रधान सेनापति का पद प्राप्त कर लेगा, जनरल बुक्सगेव्देन को प्रधान सेनापति मानने को तैयार नहीं होता। दो मुल्लाओं के बीच एक मुर्ग़ीवाली इस हालत में हम बहुत ही मौलिक और मनो-

रंजक पैंतरेबाज़ी से काम लेते हैं। जैसा कि होना चाहिये था, हमारा उद्देश्य अब शत्रु से बचना या उसपर आक्रमण करना नहीं, बल्कि यह था कि जैसे भी हो, जनरल बुक्सगेव्देन से कन्नी काटी जाये जिसे वरिष्ठता के अनुसार हमारा सेनाध्यक्ष होना चाहिये था। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये हमने इतना जोश दिखाया कि ऐसी नदी पार करते हुए भी, जहां उतारा नहीं था, हमने पुल जला दिया ताकि हमारा दुश्मन हमसे दूर रहे जो इस समय बोनापार्ट नहीं, बल्कि बुक्सगेव्देन था। उससे हमें बचानेवाली ऐसी ही एक पैंतरेबाज़ी के समय जनरल बुक्सगेव्देन शत्रु की कहीं श्रेष्ठ सेना का शिकार और बन्दी बनते बाल-बाल बचा। बुक्सगेव्देन हमारा पीछा कर रहा था – हम उससे दूर भाग रहे थे। वह नदी के एक किनारे पर आता और हम दूसरे पर पहुंच जाते। आख़िर हमारे दुश्मन बुक्सगेव्देन ने हमें आ दबोचा और चोट की। दोनों जनरलों के बीच ख़ूब तू-तू मैं-मैं हुई और दोनों सेना-ध्यक्षों के बीच द्वन्द्व-युद्ध तक की नौबत आ गयी। किन्तु सौभाग्य से संकट के इसी भयानक क्षण में पुलतुस्क की लड़ाई की विजय का समाचार पीटर्सबर्ग ले जानेवाला सन्देशवाहक वापस आ गया और हमारे लिये प्रधान सेनापति होने का आदेश लाया। इस तरह हमारे पहले शत्रु यानी बुक्सगेव्देन पर जीत हासिल कर ली गयी। अब हम दूसरे शत्रु यानी बोनापार्ट के बारे में सोच सकते थे। लेकिन इसी समय हमारे सामने तीसरा शत्रु आ खड़ा हुआ – रूसी सेना। रूसी सैनिक बड़ी कटुता से रोटी, मांस, रस्क, भूसे, जई और न जाने अन्य किन-किन चीज़ों की मांग करने लगे! गोदाम ख़ाली पड़े थे, रास्ते बहुत बुरी हालत में थे। रूसी सैनिक लूट-मार करने लगे और उन्होंने ऐसी लूट मचाई कि पिछली जंग के आधार पर आप इसका अनुमान तक नही लगा सकते। आधी रेजिमेंटों ने मुक्त संगठन बना लिये और वे देहातों में घूमते हुए मार-काट करने तथा आग लगाने लगे। स्थानीय लोग पूरी तरह से ख़स्तहाल हो गये हैं, अस्पताल बीमारों से भरे पड़े हैं और हर जगह भुखमरी है। लुटेरों ने दो बार तो मुख्य सैनिक कार्यालय पर भी हमला किया और प्रधान सेनापति को उन्हें खदेड़ने के लिये बटालियन बुलानी पड़ी। ऐसे एक हमले में वे मेरा ख़ाली सूटकेस और ड्रेसिंग गाउन भी उठा ले गये। सम्राट सभी डिविज़न-कमांडरों को लुटेरों को गोलियों से भून डालने का अधिकार देना चाहते हैं, लेकिन

मुझे इस बात की बड़ी शंका है कि ऐसी स्थिति में कहीं आधी सेना को दूसरी आधी सेना को गोलियों से भूनने के लिये विवश न होना पड़े।"

प्रिंस अन्द्रेई शुरू में तो किसी दिलचस्पी के बिना केवल आंखों से ही इस पत्र को पढ़ रहा था, मगर बाद में जैसे-जैसे वह इसे पढ़ता गया, वैसे-वैसे इसमें बरबस उसकी रुचि बढ़ती गयी (यद्यपि वह यह जानता था कि किस हद तक उसे बिलीबिन की बातों पर विश्वास करना चाहिये)। उक्त स्थल तक पत्र को पढ़ने के बाद उसने उसे मसलकर फेंक दिया। उसने इस कारण ऐसा नहीं किया था कि पत्र में लिखी बातें उसे बुरी लगी थीं, बल्कि इसलिये कि वहां के, दूसरी जगह के जीवन में, जिसमें वह कोई भाग नहीं ले रहा था, उसकी क्या दिलचस्पी हो सकती थी। उसने आंखें मूंद लीं, हाथ से माथे को रगड़ा मानो पढ़ी बातों को दिमाग़ से दूर खदेड़ा और जो कुछ बच्चे के कमरे में हो रहा था, उसपर अपने कान लगा दिये। अचानक उसे लगा कि दरवाज़े के पीछे उसे कोई अजीब-सी आवाज़ सुनायी दी है। उसे डर ने दबोच लिया। उसे घबराहट हुई कि जिस समय वह पत्र पढ़ रहा था, उसी वक़्त बच्चे के साथ कोई बुरी बात तो नहीं हो गयी। वह पंजों के बल बच्चे के कमरे के पास गया और दरवाज़ा खोला।

कमरे में दाख़िल होते वक़्त उसने देखा कि डरी-सहमी-सी आया ने उसकी नज़र से कोई चीज़ छिपायी है और प्रिंसेस मरीया पलंगिया के पास नही है।

"भैया," अपने पीछे से, जैसा कि उसे प्रतीत हुआ, उसे प्रिंसेस मरीया की फुसफुसाहट सुनायी दी। जैमा कि लम्बे उनींदे और लम्बी चिन्ता के वाद अक्सर होता है, उसपर निराधार भय हावी हो गया – उसके दिमाग़ में यह बात आई कि वच्चा मर गया। वह जो भी देख और सुन रहा था, सभी कुछ इस भय की पुष्टि करता प्रतीत हुआ।

"सब कुछ ख़त्म हो गया," उसने सोचा और उसके माथे पर ठण्डा पसीना आ गया। वह पूरी तरह से यह विश्वास करते हुए खोया-खोया-सा पलंगिया के पास गया कि उसे ख़ाली पायेगा, कि आया ने मृत वच्चे को छिपा दिया है। उसने परदा हटाया और उसकी डरी-डरी तथा इधर-उधर भटकती आंखें देर तक बच्चे को नहीं देख पायीं। आख़िर उसने उसे देखा – लाल-लाल गालोंवाला बच्चा पलंगिया के

आर-पार पसरा हुआ था, उसका सिर तकिये से ज़रा नीचे आ गया था, वह नींद में होंठों को हिलाता हुआ उन्हें चुमकार रहा था और इतमीनान से सांस ले रहा था।

बच्चे को देखकर प्रिंस अन्द्रेई को ऐसी ख़ुशी हुई मानो मरा हुआ बच्चा फिर से ज़िन्दा हो उठा हो। वह झुका और जैसे उसकी बहन ने सिखाया था, यह जानने के लिये उसे होंठों से छुआ कि बुख़ार है या नहीं। बच्चे का कोमल माथा नम था, प्रिंस अन्द्रेई ने हाथ से उसे सिर तक छूकर देखा – उसके बाल तक नम थे, इतना अधिक पसीना आया था उसे। वह न केवल मरा ही नहीं था, बल्कि अब यह स्पष्ट हो गया था कि संकट टल गया और वह स्वस्थ हो गया है। प्रिंस अन्द्रेई का मन हुआ कि वह इस छोटे और असहाय-से प्राणी को हाथों में उठा ले, छाती से लगा ले, अपने साथ चिपका ले, मगर वह ऐसा करने की जुर्रत नहीं कर सका। वह उसके पास खड़ा हुआ उसके सिर तथा कम्बल के नीचे छिपे छोटे-छोटे हाथों-पांवों को देख रहा था। उसे अपने क़रीब हल्की सरसराहट सुनायी दी और पलंगिया के परदे के नीचे किसी परछाई की झलक मिली। उसने मुड़कर नहीं देखा और बच्चे के चेहरे को निहारते हुए वह उसकी ढंग से आती-जाती सांसों को सुनता रहा। काली छाया प्रिंसेस मरीया की थी जो दबे पांव पलंगिया के पास आई थी, पलंगिया के परदे को उठाकर उसे अपने पीछे नीचे कर दिया था। प्रिंस अन्द्रेई ने मुड़कर देखे बिना ही उसे जान लिया और उसकी तरफ़ अपना हाथ बढ़ा दिया। प्रिंसेस ने स्नेहपूर्वक भाई का हाथ दबाया।

"उसे पसीना आ गया है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा।

"मैं यही बताने के लिये तुम्हारे पास गयी थी।"

बच्चा नींद में ज़रा हिला-डुला, मुस्कराया और उसने तकिये के साथ सिर रगड़ा।

प्रिंस अन्द्रेई ने बहन की तरफ़ देखा। परदे के झीने प्रकाश में उसकी चमकीली आंखें उनमें छलक आनेवाले ख़ुशी के आंसुओं के कारण सामान्य से कहीं अधिक चमक रही थीं। प्रिंसेस मरीया ने भाई की ओर झुककर उसे चूमा और उसके ऐसा करते समय पलंगिया का परदा ज़रा हिल गया। इन दोनों ने एक-दूसरे को सावधानी से काम लेने के संकेत किये, पलंगिया के परदे के हल्के प्रकाश में कुछ देर तक और खड़े

रहे मानो इस दुनिया से अलग न होना चाहते हों जिसमें इन तीनों को शेष सारे संसार की कोई सुध-बुध नहीं थी। पलंगिया के परदे की मलमल में अपने बाल उलझाते हुए प्रिंस अन्द्रेई ही पहले पलंगिया से दूर हटा। "बस, यही तो है जो अब मेरे पास रह गया है," उसने गहरी सांस लेते हुए कहा।

## १०

फ़्री मेसन भ्रातृ-संघ में शामिल कर लिये जाने के फ़ौरन बाद प्येर अपने द्वारा तैयार की गयी उन अनुदेशों की पूरी सूची लेकर कि उसे अपनी जागीरों पर क्या कुछ करना चाहिये, कीयेव गुबेर्निया को रवाना हो गया जहां उसके किसानो का अधिकांश भाग था।

कीयेव पहुंचकर प्येर ने सारे कारिन्दों-प्रबन्धकों को मुख्य कार्यालय मे एकत्रित किया और उसके सामने अपने मन्तव्य तथा इच्छायें स्पष्ट कीं। उसने उन्हें बताया कि बहुत जल्द ही किसानों को भूदासता से पूरी तरह मुक्त करने के लिये क़दम उठाये जायेंगे, कि तब तक किसानों पर काम का बहुत ज़्यादा बोझ न डाला जाये, कि बच्चोंवाली औरतों को काम पर न भेजा जाये, कि किसानों की सहायता की जाये, कि मार-पीट नहीं, बल्कि डांट-डपट के रूप में ही सज़ा दी जाये, कि हर जागीर में अस्पताल, अनाथालय और स्कूल खोले जायें। कुछ कारिन्दों (जिनमें कुछ अर्ध-शिक्षित प्रबन्धक भी थे) ने भयभीत होते हुए ये बातें सुनीं और इनका यह मतलब निकाला कि जवान काउंट उनके प्रबन्ध और पैसों के ग़बन के कारण नाराज़ है, दूसरों को प्रारम्भिक भय के बाद प्येर की यह तुतलाहट और नये, पहले कभी न सुने गये शब्द दिलचस्प लगे, तीसरों को यही सुनने में मज़ा आया कि उनका मालिक कैसे बातें करता है, शेष, सबसे ज़्यादा समझदार, जिनमें मुख्य कारिन्दा भी शामिल था, इन बातों से यह समझ गये कि अपना उल्लू सीधा करने के लिये उन्हें कैसे मालिक से निपटना चाहिये।

मुख्य कारिन्दे ने प्येर के इरादों के प्रति बड़ी सहानुभूति प्रकट की, मगर साथ ही यह भी कहा कि इन सुधारों के अलावा

सभी मामलों की ओर बहुत ध्यान देना ज़रूरी था जो बहुत बुरी हालत में थे।

काउंट बेज़ूख़ोव की बेशुमार दौलत के बावजूद प्येर, जब से इसका वारिस बना था और, जैसा कि लोग कहते थे, हर साल पांच लाख रूबल की आमदनी पाने लगा था, वह अपने को उस समय की तुलना में कहीं कम धनी अनुभव करता था, जब दिवंगत काउंट से दस हज़ार रूबल वार्षिक पाता था। उसके सामने अपने सालाना बजट की कुछ ऐसी अस्पष्ट-सी रूपरेखा बनती थी। सभी जागीरों के लिये लगभग अस्सी हज़ार रूबल संरक्षण परिषद * को दिये जाते थे, मास्को के निकटवर्ती और मास्को के घर के रख-रखाव तथा तीनों प्रिंसेसों पर लगभग तीस हज़ार रूबल ख़र्च होते थे; लगभग पन्द्रह हज़ार पेंशनों के रूप में और इतने ही धर्म-संस्थाओं को दिये जाते थे, डेढ़ लाख रूबल काउंटेस को ख़र्च के लिये भेजे जाते थे, क़र्ज़ों पर लगभग सत्तर हज़ार रूबल सूद दिया जाता था, नये गिरजे के निर्माण पर दो सालों में लगभग दस हज़ार रूबल ख़र्च हुए थे तथा बाक़ी एक लाख रूबल न जाने और कहां ख़र्च हो जाते थे तथा उसे हर साल कुछ न कुछ क़र्ज़ भी लेना पड़ता था। इसके अलावा मुख्य कारिन्दा प्रति वर्ष ही उसे कहीं आग लग जाने, फ़सल न होने और इस बारे में सूचित करता कि कुछ फ़ैक्टरियों तथा वर्कशापों का पुनःनिर्माण ज़रूरी है। इस तरह प्येर को सबसे पहले जो काम करना चाहिये था, और जिसकी उसमें सबसे कम क्षमता तथा रुचि थी, वह था – सभी कामों में अमली तौर पर जुट जाना।

प्येर हर दिन ही मुख्य कारिन्दे के साथ **विचार-विनिमय करता।** किन्तु उसे यह अनुभव होता कि इस विचार-विनिमय से मामला ज़रा भी आगे नहीं बढ़ रहा है। वह महसूस करता कि उसका विचार-विनिमय मामले को नहीं छूता, कि असली समस्या के साथ उसका सम्बन्ध नहीं जुड़ रहा है और उसे आगे नहीं बढ़ा रहा है। एक ओर तो मुख्य कारिन्दा मामले की बहुत ही बुरी तस्वीर पेश करता, इस बात की ज़रूरत पर ज़ोर देता कि क़र्ज़ चुकाये जायें और भूदासों के श्रम से

---

* यहां ज़ारकालीन उन संस्थाओं से अभिप्राय है जो पालन-शिक्षण संगठनों और ऋण-सम्बन्धी मामलों का संरक्षण करती थी। – सं०

नये काम शुरू किये जायें जिसे प्येर स्वीकार न करता; और दूसरी ओर प्येर भूदासों की मुक्ति का कार्य आरम्भ करने की मांग करता जिसके जवाब में मुख्य कारिन्दा पहले संरक्षण परिषद के ऋण चुकाने की आवश्यकता का प्रश्न प्रस्तुत कर देता और इस तरह यह स्पष्ट करता कि इस काम को जल्दी से पूरा करना असम्भव है।

मुख्य कारिन्दा यह न कहता कि ऐसा करना बिल्कुल असम्म्व है। वह इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये यह सुझाव देता कि उत्तरी कोस्त्रोमा गुबेर्नियां के जंगल, उत्तर-पूर्वी गुबेर्नियों की ज़मीनें और क्रीमिया की जागीर बेच दी जाये। किन्तु कारिन्दे के कथनानुसार यह सब कुछ करना बहुत जटिल था, इसके लिये पाबन्दियों तथा वैधानिक धाराओं को हटवाना और अनुमति आदि लेने की ज़रूरत थी कि प्येर इस भूल-भुलैयां में खो जाता और केवल इतना ही कहता: "हां, हां, ऐसा ही कीजिये।"

प्येर में व्यावहारिक कार्य की वह दृढ़ता नहीं थी जो उसे ख़ुद इस काम को हाथ में लेने को प्रेरित करती। इसलिये यह काम उसे नापसन्द था और मुख्य कारिन्दे के सामने वह केवल यह ढोंग करता कि इस काम में बहुत मन लगा रहा है। मुख्य कारिन्दा काउंट के सामने यह ढोंग करने की कोशिश करता कि मालिक की इस दिलचस्पी को वह उसके लिये सर्वथा उपयोगी और अपने लिये असुविधाजनक मानता है।

कीयेव में प्येर को अपनी जान-पहचान के कई लोग मिल गये। अपरिचितों ने जल्दी से जल्दी उसके साथ जान-पहचान की और बड़ी ख़ुशी से इस धनी व्यक्ति, गुबेर्नियां के सबसे बड़े भूस्वामी का स्वागत-सत्कार किया। अपनी मुख्य दुर्बलता के मामले में, जिसे प्येर ने अपने गुरू के सामने स्वीकार किया था, प्येर के प्रलोभन इतने प्रबल थे कि वह उनसे इन्कार नहीं कर सका। पीटर्सबर्ग की भांति यहां भी उसके पूरे के पूरे दिन, सप्ताह और महीने शाम की दावतों, लंचों, नाश्तों तथा बॉल-नृत्यों में बीतते और उसे अन्य किसी चीज़ का होश ही न रहता। नये जीवन के बजाय, प्येर ने जिसे आरम्भ करने की आशा की थी, वह केवल दूसरे परिवेश में वही पुराने ढंग की ज़िन्दगी बिता रहा था।

प्येर यह स्वीकार करता था कि उन तीन नियमों में से, जिनका

प्रत्येक फ़्री मेसन को पालन करना चाहिये, वह उसका पालन नहीं कर रहा था जो नैतिक जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करने की मांग करता था। सात सद्‌गुणों में से दो का उसमें पूरी तरह अभाव था – सदाचार और मृत्यु-प्रेम का। वह अपने को इस बात से तसल्ली देता कि इनकी जगह एक अन्य निर्देश पूरा कर रहा था – मानवजाति का सुधार कर रहा था और उसमें कुछ अन्य सद्‌गुण भी थे – वह लोगों को चाहता था और विशेषतः यह कि उसमें बड़ी उदारता थी।

सन् १८०७ के वसन्त में प्येर ने पीटर्सबर्ग लौटने का निर्णय किया। लौटते वक़्त उसने अपनी सारी जागीरों का दौरा करने और अपनी आंखों से यह देखने का इरादा बनाया कि उसके आदेशों को कहां तक पूरा किया गया है, कि भगवान की ओर से उसके हाथों में सौंपे गये लोगों की अब कैसी हालत है जिसे उन्हें सुधारने की कोशिश की है।

जवान काउंट के सारे सुझावों को लगभग पागलपन और अपने, मालिक तथा किसानों के लिये हानिकारक माननेवाले मुख्य कारिन्दे ने कुछ हद तक उन्हें स्वीकार कर लिया था। भूदासता से किसानों की मुक्ति के मामले को असम्भव बताना जारी रखते हुए उसने सभी जागीरों में स्कूलों, अस्पतालों और अनाथालयों की बड़ी-बड़ी इमारतें बनाने के आदेश दे दिये, सभी जगह काउंट के स्वागत की व्यवस्था कर दी – भव्य और ठाठदार स्वागत की नहीं जो उसे मालूम था कि प्येर को अच्छे नहीं लगेंगे, बल्कि देव-प्रतिमाओं और नमक-रोटीवाले स्वागत की जो, जैसे कि वह अपने मालिक को समझता था, उसे अच्छे लगेंगे और उसकी आंखों में धूल झोंक सकेंगे।

दक्षिण का वसन्त, शान्त वातावरण, आरामदेह घोड़ागाड़ी में द्रुत यात्रा और रास्ते के एकान्त ने प्येर के मन पर बहुत सुखद प्रभाव डाला। अपनी जिन जागीरों में वह अभी तक नहीं गया था, वे एक से एक बढ़कर सुन्दर थीं। सभी जगह किसान ख़ुशहाल प्रतीत होते थे और उनपर जो मेहरबानियां की गयी थीं, उनके लिये मर्मस्पर्शी ढंग से अपना आभार प्रकट करते थे। सभी जगह लोगों ने उसका भावभीना स्वागत-सत्कार किया, जिसके कारण उसे झेंप भी अनुभव होती थी, फिर भी मन की गहराई में ख़ुशी की लहर दौड़ जाती थी। एक जगह पर किसान उसके पास नमक-रोटी और पीटर तथा

पाल * की प्रतिमा लेकर आये तथा उन्होंने उनपर की गयी मेहरबानियों के लिये अपने प्यार तथा आभारस्वरूप उसके रक्षक-देवताओं – पीटर और पाल – के सम्मान में गिरजाघर में अपने ख़र्च पर एक नयी वेदी बनवाने की अनुमति मांगी। दूसरी जगह पर गोद के बच्चोंवाली माताओं ने उसका स्वागत किया और भारी काम से मुक्ति दिलाने के लिये उसे धन्यवाद दिया। तीसरी जागीर में सलीब लिये और बालकों से घिरा हुआ एक पादरी उससे मिला जो काउंट की कृपा के फलस्वरूप इन बालकों को पढ़ना-लिखना सिखाता था और धर्म-शिक्षा देता था। सभी जागीरों में प्येर ने अस्पतालों, स्कूलों और अनाथालयों की एक ही ढंग की बन चुकी या बन रही पक्की इमारतें देखी जो शीघ्र ही चालू होनेवाली थीं। सभी जगह प्येर ने कारिन्दों द्वारा तैयार किये गये पहले की तुलना में कम बेगारवाले हिसाब देखे और इसके लिये नीले कोट पहने किसान-प्रतिनिधियों ने मन को मर्मस्पर्शी शब्दों में हार्दिक धन्यवाद दिये।

प्येर को यह मालूम नही था कि जिस गांव में उसे नमक-रोटी भेंट की गयी थी और जहां पीटर तथा पाल की वेदी बनाने की अनुमति मांगी गयी थी, वह व्यापार का केन्द्र था और सन्त पीटर के दिन वहां पैंठ लगती थी, कि धनी किसान, जो प्रतिनिधिमण्डल के रूप में उसके पास आये थे, बहुत पहले ही गिरजाघर में नयी वेदी बनाने लगे थे और इस गांव के दस में से नौ किसानों की हालत बहुत ही ख़स्ता थी। वह यह नहीं जानता था कि उसके आदेशानुसार **गोद के बच्चोंवाली** किसान औरतों ने बेगार करना बन्द कर दिया था, मगर इन्हीं गोद के बच्चोंवाली माताओं को अपनी ज़मीन पर कहीं ज़्यादा कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। उसे यह ज्ञान नहीं था कि जिस पादरी ने सलीब के साथ उसका स्वागत किया था, उसने ज़ोर-ज़बर्दस्ती की लूट से किसानों के नाक में दम कर रखा था, कि रोते-कलपते किसान माता-पिता ने अपने बच्चे उसके हवाले किये थे जिन्हें वे बड़ी रक़म अदा करके ही उससे वापस ले पाते थे। उसे यह जानकारी नहीं थी कि एक ही ढंग से बननेवाली पक्की इमारतें अपने ही किसानों के श्रम

---

* ईसा मसीह के शिष्यो पीटर और पाल के बिम्बोवाली देव-प्रतिमाओं से आशय है। – सं०

से बन रही थीं और इस तरह उनकी बेगार केवल काग़ज़ पर कम हुई थी, मगर वास्तव में बढ़ गयी थी। उसे यह पता नहीं था कि उसकी इच्छा को पूरा करते हुए कारिन्दे ने जहां एक ओर रजिस्टर में किसानों के लगान में एक तिहाई कटौती दिखाई थी, वहां दूसरी ओर उनकी बेगार डेढ़ गुनी कर दी गयी थी। इसलिये प्येर अपनी जागीरों की यात्रा से गद्गद हो अठा और पूरी तरह से उस परोपकारी मूड में आ गया जिसमें पीटर्सवर्ग से रवाना हुआ था और उसने गुरू-बन्धु को, जैसा कि वह अध्यक्ष को कहता था, बड़े उल्लासपूर्ण पत्र लिखे।

"इतनी अधिक भलाई करना कितना आसान है, इसके लिये कितने कम यत्न की आवश्यकता है," प्येर सोचता, "और हम इसकी कितनी कम चिन्ता करते हैं!"

प्येर को अपने प्रति प्रकट की जानेवाली कृतज्ञता से प्रसन्नता होती, किन्तु इसे स्वीकार करते हुए वह लज्जा अनुभव करता। यह आभार-प्रदर्शन उसे इस बात की याद दिलाता कि इन सीधे-सादे और दयालु लोगों के लिये वह अभी **कितना कुछ और** कर सकता है।

समझदार और भोले-भाले काउंट को अच्छी तरह से समझने और उसके साथ खिलौने की तरह खिलवाड़ करनेवाले ख़ासे बेवक़ूफ़ और मक्कार मुख्य कारिन्दे ने अपने द्वारा सोचे और तैयार करवाये गये इन स्वागतों का अच्छा प्रभाव देखकर पहले से भी अधिक दृढ़ता के साथ यह तर्क प्रस्तुत करना आरम्भ किया कि किसानों को भूदासता के बन्धनों से मुक्त करना सम्भव नही तथा सबसे बड़ी बात तो यह है कि ऐसा करने की कोई ज़रूरत भी नही, क्योंकि वे इसके बिना ही बहुत सुखी हैं।

अपने मन की गहराई में प्येर मुख्य कारिन्दे के इस विचार से सहमत था कि इनसे अधिक सुखी लोगों की कल्पना करना कठिन था और केवल भगवान ही जानते थे कि मुक्त होने पर इन लोगों की क्या हालत होगी। फिर भी प्येर, बेशक मन मारकर ही उस चीज़ के लिये आग्रह करता जिसे न्यायसंगत मानता था। मुख्य कारिन्दे ने स्पष्ट रूप से यह समझते हुए काउंट की इच्छा पूरी करने के लिये अपना पूरा ज़ोर लगाने का वचन दिया कि काउंट कभी भी न केवल इस बात की जांच नही कर पायेगा कि उसने संरक्षण परिषद के क़र्ज़ चुकाने के लिये जंगलों तथा जागीरों को बेचने के सभी यत्न किये

या नहीं, बल्कि सम्भवत: कभी यह भी नहीं पूछेगा और जान भी नहीं पायेगा कि नयी बनायी गयी इमारतें ख़ाली पड़ी हैं और किसान श्रम तथा पैसों के रूप में वह सभी कुछ देते रहते हैं जो दूसरों के किसान देते हैं यानी जो कुछ भी उनके लिये देना सम्भव है।

## ११

बहुत ही सुखद मन:स्थिति में अपनी दक्षिण-यात्रा से लौटते हुए प्येर ने बहुत समय से मन में मचल रही, अपने मित्र बोल्कोन्स्की से मिलने की इच्छा पूरी की। उसे बोल्कोन्स्की से मिले दो साल हो गये थे।

अन्तिम घोड़ा-बदल-चौकी पर उसे पता चला था कि प्रिंस अन्द्रेई लीसिये गोरि में नहीं है, बल्कि अपनी नयी जागीर पर है और वह उससे मिलने वहीं चला गया।

बोगुचारोवो की जागीर खेतों, कटे और अनकटे फ़र तथा भोज वृक्षों के जंगलों के बीच असुन्दर और समतल क्षेत्र में थी। बोल्कोन्स्की का निवास-स्थान राजमार्ग के साथ सीधे फैले गांव के छोर पर कुछ बड़े-बड़े चीड़ वृक्षोंवाले नौउम्र जंगल के बीच था, उसके सामने पानी से लबालब भरा हुआ नया तालाब था जिसके किनारों पर अभी तक घास नहीं उग पायी थी।

निवास-स्थान के क़रीब ही खलिहान था, नौकरों-चाकरों के घर थे, अस्तबल और गुसलख़ाना था, उपभवन और अर्ध-चन्द्राकार अग्र-भागवाला पक्का, बड़ा घर था जिसका निर्माण अभी जारी था। घर के गिर्द नया-नया बाग़ लगाया गया था। बाड़ें और फाटक मज़बूत तथा नये थे। सायबान में आग बुझानेवाली दो पाइपें और हरे रोग़न से रंगा तथा पानी से भरा हुआ एक बड़ा पीपा रखा था। सड़कें सीधी-सतर थीं, पुल मज़बूत थे और उनपर जंगले लगे हुए थे। सभी कुछ इस बात का आभास देता था कि हर चीज़ बहुत ध्यान और ढंग से की गयी है। सामने आनेवाले कुछ भूदासों से यह पूछने पर कि प्रिंस बोल्कोन्स्की कहां रहता है, उन्होंने तालाब के बिल्कुल सिरे पर खड़े

छोटे-से नवनिर्मित उपभवन की ओर संकेत किया। प्रिंस अन्द्रेई के बूढ़े नौकर अन्तोन ने प्येर को सहारा देकर बग्घी से नीचे उतारा, यह बताया कि प्रिंस घर पर ही है और उसे छोटे-से साफ़-सुथरे प्रवेश-कक्ष में ले गया।

प्येर ने अपने मित्र को जिस ठाठ-बाट से अन्तिम बार पीटर्सबर्ग में रहते देखा था, उसकी तुलना में वह इस छोटे-से, बेशक साफ़-सुथरे, घर को देखकर चकित रह गया। वह तेज़ क़दम बढ़ाता हुआ अभी तक चीड़ की लकड़ी की गन्धवाले छोटे-से हॉल में दाख़िल हुआ। हॉल की दीवारों पर अभी प्लस्तर नहीं किया गया था। प्येर ने आगे जाना चाहा, मगर अन्तोन पंजों के बल भागता हुआ आगे गया और दरवाज़ा खटखटाया।

"क्या बात है?" तीखी और झल्लायी-सी आवाज़ सुनायी दी।

"मेहमान," अन्तोन ने जवाब दिया।

"ज़रा रुकने के लिये कहो," और कुर्सी को पीछे हटाने की आवाज़ सुनायी दी। प्येर तेज़ क़दमों से दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा और उसने अपने को माथे पर बल डाले तथा कुछ बुढ़ा गये प्रिंस अन्द्रेई के सामने पाया। प्येर ने उसे गले लगाया, चश्मा ऊपर उठाकर उसके गालों को चूमा और ग़ौर से उसे देखा।

"ऐसी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, बहुत ख़ुशी हुई तुम्हारे आने से," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। प्येर ने कोई जवाब नहीं दिया, वह बड़ी हैरानी से और टकटकी बांधकर अपने दोस्त को देख रहा था। उसे प्रिंस अन्द्रेई में हुए परिवर्तन ने हैरान कर दिया था। प्रिंस अन्द्रेई के शब्द स्नेहपूर्ण थे, उसके होंठों और चेहरे पर मुस्कान थी, मगर नज़र बुझी-बुझी और बेजान-सी थी जिसे स्पष्ट प्रयास के बावजूद वह प्रसन्नता और उल्लास की चमक नहीं दे पा रहा था। बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं थी कि उसका मित्र दुबला हो गया था, उसके चेहरे का रंग पीला पड़ गया था और उसमें परिपक्वता आ गयी थी; बल्कि जिस कारण उसे हैरानी हो रही थी और जब तक वह अभ्यस्त नहीं हो गया, परायापन महसूस करता रहा, – वह कारण था उसकी बुझी नज़र और माथे पर पड़ी हुई रेखा जो उसके किसी चीज़ पर बहुत देर तक अपने ध्यान को संकेन्द्रित करने को अभिव्यक्त करती थीं।

जैसा कि हमेशा होता है, बहुत अरसे के बाद मुलाक़ात होने

पर उनकी बातचीत देर तक ढंग से नहीं चल सकी। इन दोनों ने उन चीज़ों के बारे में सवाल किये और बहुत संक्षिप्त उत्तर दिये जिनके सम्बन्ध में वे स्वयं जानते थे कि उन्हें लंबी चर्चा करनी चाहिये थी। आख़िर धीरे-धीरे उन विषयों पर विस्तार से बातचीत होने लगी जिनका पहले यों ही मामूली-सा ज़िक्र हुआ था। वे बीते जीवन, भावी योज-नाओं, प्येर की यात्रा, उसके काम-काजों और युद्ध आदि के प्रश्नों की अधिक विस्तृत चर्चा करने लगे। प्रिंस अन्द्रेई की किसी विचार में खोयी और बुझी-बुझी दृष्टि, जिसकी ओर प्येर का शुरू में ही ध्यान गया था, अब उस मुस्कान में और भी अधिक स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त हो रही थी जो प्येर की बातें सुनते हुए उसके होंठों पर बनी रहती थी। ख़ास तौर पर तब, जब प्येर उत्साहपूर्ण उल्लास से अतीत या भविष्य की चर्चा करता। प्रिंस अन्द्रेई तो मानो चाहकर भी उसकी बातों में दिलचस्पी नहीं ले पा रहा था। चुनांचे प्येर यह महसूस करने लगा कि प्रिंस अन्द्रेई के सामने अपना उत्साह दिखाना, अपने सपनों, सुख-सौभाग्य और नेकी की आशाओं का ज़िक्र करना अशिष्ट होगा। अपने नये, फ़्री मेसन संगठन से सम्बन्धित विचारों का, जिन्हें उसकी अन्तिम यात्रा के समय नूतन बल और शक्ति मिली थी, उल्लेख करते हुए उसे झेंप महसूस हो रही थी। उसने इस डर से अपने को संयत किया कि कहीं बहुत भोला न प्रतीत हो। साथ ही वह अपने मित्र को यह दिखाने को बहुत उत्सुक था कि अब वह उससे बिल्कुल भिन्न और कहीं बेहतर प्येर है जैसा कि वह पीटर्सबर्ग में था।

"मैं आपको बता नहीं सकता कि इस अवधि के दौरान मैंने कितना कुछ देखा-सहा है। मेरे लिये ख़ुद अपने को पहचानना सम्भव नहीं।"

"हां, तब से अब तक हममें बहुत काफ़ी परिवर्तन हुआ है," प्रिंस अन्द्रेई ने जवाब दिया।

"और आप?" प्येर ने पूछा, "आपकी क्या योजनायें हैं?"

"योजनायें?" प्रिंस अन्द्रेई ने व्यंग्यपूर्वक इसे दोहराया। "मेरी योजनायें?" उसने मानो योजना शब्द के अर्थ से हैरान होते हुए इसे दोहराया। "जैसा कि देख रहे हो, यहां निर्माण करवा रहा हूं और अगले साल पूरी तरह से यहीं आ बसना चाहता हूं..."

प्येर ख़ामोश रहते हुए अन्द्रेई के बुढ़ा गये चेहरे को एकटक देखता रहा।

"नहीं, मैं यह पूछ रहा था," प्येर ने कहा, मगर अन्द्रेई ने उसे बीच में ही टोक दिया:

"मेरी चर्चा करने में क्या तुक है... तुम बताओ, तुम अपनी यात्रा और उन सभी चीज़ों के बारे में बताओ जो अपनी जागीरों पर करते रहे हो।"

प्येर ने अपनी जागीरों पर जो कुछ किया था, उसमें अपने योगदान को यथासम्भव छिपाने की कोशिश करते हुए सब कुछ बताने लगा। प्रिंस अन्द्रेई ने कई बार पहले से ही वह कह दिया जो प्येर कहने जा रहा था मानो प्येर का सारा कार्य-कलाप चिर-परिचित क़िस्सा था और वह न केवल किसी दिलचस्पी के बिना, बल्कि कुछ लज्जित होते हुए भी प्येर की बातें सुन रहा था।

प्येर को अपने मित्र की संगत में अटपटापन, यहां तक कि परेशानी भी महसूस होने लगी। वह चुप हो गया।

"सुनो, मेरे प्यारे," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा जिसे खुद भी सम्भवतः अपने मेहमान के साथ बेचैनी और परेशानी अनुभव हो रही थी, "मैं तो कुछ ही देर को यहां का हालचाल देखने आया हूं और आज ही बहन के पास वापस जा रहा हूं। मैं तुम्हारा उससे परिचय करवा दूंगा। अरे हां, लगता है कि तुम तो उससे परिचित ही हो," उसने सम्भवतः कुछ कहने के लिये ही अपने मेहमान से कहा जिसके साथ वह अब कोई भी साझी दिलचस्पी अनुभव नहीं कर रहा था। "हम लंच के बाद रवाना होंगे। और अब यह बताओ कि क्या तुम मेरी इस जगह को देखना चाहोगे?" वे बाहर आ गये और लंच तक घूमते तथा राजनीतिक ख़बरों तथा साझे परिचितों के बारे में ऐसे बातें करते रहे मानो उनके बीच मामूली जान-पहचान हो। प्रिंस अन्द्रेई ने केवल नये घर और निर्माण-कार्य के सम्बन्ध में कुछ सजीवता और दिलचस्पी से बातचीत की। किन्तु इस बातचीत के मध्य में ही, जब वे मचान पर खड़े थे और प्रिंस अन्द्रेई प्येर को भावी घर की योजना बता रहा था, वह अचानक रुक गया। "वैसे, इसमें दिलचस्पी की कोई बात नहीं, चलो खाना खायें और फिर रवाना हो जायें।" लंच के वक़्त प्येर की शादी की चर्चा चल पड़ी।

"जब मैंने यह ख़बर सुनी थी तो मुझे बड़ी हैरानी हुई थी," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा।

प्येर वैसे ही लज्जारुण हो गया जैसे कि इस चर्चा के समय हमेशा हो जाता था। "कभी मैं आपको बता दूंगा कि यह सब कैसे हुआ। लेकिन आप जानते हैं कि यह सब खत्म हो चुका है और सो भी हमेशा के लिये।"

"हमेशा के लिये?" प्रिंस अन्द्रेई ने प्रश्न किया। "हमेशा के लिये कभी कुछ नही होता।"

"मगर आप यह तो जानते ही हैं कि यह मामला कैसे खत्म हुआ? द्वन्द्व-युद्ध के बारे में तो आपने सुना ही होगा?"

"हां, तुम्हें यह भी भुगतना पड़ा।"

"जिस एक चीज़ के लिये मैं भगवान को धन्यवाद देता हूं, वह यह है कि मैंने उस आदमी की हत्या नहीं कर डाली," प्येर ने कहा।

"इसमें भगवान को धन्यवाद देने की कौन-सी बात है?" प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "किसी कटखने कुत्ते को मार डालना तो बहुत अच्छा है।"

"नहीं, किसी आदमी को मार डालना अच्छा नही, न्यायपूर्ण नहीं ..."

"क्यों न्यायपूर्ण नहीं?" प्रिंस अन्द्रेई ने जानना चाहा। "क्या न्याय-पूर्ण है और क्या न्यायपूर्ण नहीं – लोगों को इसका निर्णय करने का अधिकार नहीं है। लोग हमेशा भूल करते रहे हैं और करते रहेंगे और अन्य किसी भी चीज़ की तुलना में इस बारे में कहीं ज़्यादा ग़लती के शिकार होंगे कि किस चीज़ को वे न्यायपूर्ण तथा किसको अन्यायपूर्ण मानते हैं।"

"वही अन्यायपूर्ण है जो किसी दूसरे व्यक्ति के लिये बुरा है," प्येर ने खुशी से यह महसूस करते हुए कहा कि जबसे वह यहां आया है, प्रिंस अन्द्रेई पहली बार सजीव हो उठा है, बातचीत करने लगा है और वह सब कुछ बताना चाहता है जिसने उसे ऐसा बना दिया है, जैसा कि वह अब है।

"और तुम्हें यह किसने बताया कि दूसरे व्यक्ति के लिये क्या बुरा है?" प्रिंस अन्द्रेई ने प्रश्न किया।

"बुरा? बुरा?" प्येर ने दोहराया। "हम सब यह जानते हैं कि खुद हमारे लिये क्या बुरा है।"

"हां, हम जानते हैं, लेकिन जिस चीज़ की हमें अपने लिये

बुरी होने की चेतना है, वह मैं दूसरे व्यक्ति के साथ नहीं करूंगा," प्रिंस अन्द्रेई ने अधिकाधिक रंग में आते और सम्भवतः जीवन के बारे में प्येर के सामने अपना नया दृष्टिकोण स्पष्ट करने के लिये कहा। वह फ़्रांसीसी भाषा में बोल रहा था: "मैं जीवन में केवल दो ही वास्तविक दुर्भाग्य जानता हूं – अन्तःकरण की धिक्कार और बीमारी। इन दोनों बुराइयों का न होना ही सौभाग्य है। इन दोनों बुराइयों से बचते हुए केवल अपने लिये ही जीना – मेरी बुद्धिमत्ता का अब यही सार है।"

"और अपने बन्धु-मानव के लिये प्यार तथा आत्म-बलिदान?" प्येर कह उठा। "नहीं, मैं आपके साथ सहमत नहीं हो सकता। ऐसे ज़िन्दगी बिताना कि कोई बुराई न करे, उसे पश्चाताप न हो, यह काफ़ी नहीं। मैं ऐसे जीता रहा, केवल अपने लिये जीता रहा और मैंने अपना जीवन नष्ट कर लिया। केवल अभी, जब मैं दूसरों के लिये जीता हूं, कम से कम ऐसा प्रयास करता हूं (प्येर ने नम्रतावश अपनी भूल सुधा-री), केवल अभी मैं जीवन के सुख-सौभाग्य को समझ पाया हूं। नही, मैं आपके साथ सहमत नहीं हो सकता और आप भी वैसा ही नहीं सोचते, जैसा कि कह रहे हैं।" प्रिंस अन्द्रेई ने चुप रहते हुए प्येर की ओर देखा और व्यंग्यपूर्वक मुस्करा दिया।

"थोड़ी देर बाद तुम मेरी बहन, प्रिंसेस मरीया से मिलोगे। उसके साथ तुम्हारे विचारों का ख़ूब मेल बैठेगा," उसने कहा। "शायद तुम्हारा दृष्टिकोण तुम्हारे लिये ठीक हो," कुछ देर चुप रहने के बाद उसने कहा, "लेकिन हर कोई अपने ढंग से जीता है। तुम अपने लिये जिये और कहते हो कि इस तरह तुमने अपना जीवन लगभग नष्ट कर डाला तथा तुम्हें सुख की तभी अनुभूति हुई, जब दूसरों के लिये जीने लगे। किन्तु मेरा अनुभव इसके प्रतिकूल रहा। मैं यश-कीर्ति के लिये जिया। (आख़िर यश-कीर्ति क्या है? वही दूसरों के लिये प्रेम, दूसरों के लिये कुछ करने की इच्छा, उनकी प्रशंसा पाने की चाह।) तो मैं दूसरों के लिये जिया और मैंने लगभग नहीं, बल्कि पूरी तरह ही अपना जीवन नष्ट कर डाला। और जब से केवल अपने लिये जीता हूं, चैन अनुभव करने लगा हूं।"

"लेकिन सिर्फ़ अपने लिये ही जीने से आपका क्या अभिप्राय है?" प्येर ने भड़कते हुए पूछा। "और आपका बेटा, आपकी बहन

और आपके पिता?"

"ये तो मेरे 'मैं' में ही शामिल हैं, ये पराये नहीं हैं," प्रिंस अन्द्रेई ने उत्तर दिया। "लेकिन दूसरे लोग, हमारे बन्धु-मानव, जैसा कि तुम और प्रिंसेस मरीया उन्हें कहते हैं, वही हमारी भ्रांति और बुराई के मुख्य स्रोत हैं। हमारे बन्धु-मानव – ये तुम्हारे कीयेव के वही किसान हैं जिनका तुम भला करना चाहते हो।"

और उसने प्येर की ओर उपहासपूर्ण तथा चुनौती देती दृष्टि से देखा। वह सम्भवतः प्येर को चुनौती दे रहा था।

"आप मज़ाक़ कर रहे हैं," प्येर ने अधिकाधिक उत्साहित होते हुए कहा। "इसमें भला कौन-सी भ्रांति या बुराई हो सकती है कि मैंने भलाई करनी चाही (जो बहुत थोड़ी और बुरे ढंग से की), लेकिन भलाई करनी चाही तथा कुछ तो कर भी दी? इसमें भला क्या बुराई हो सकती है कि अगर क़िस्मत के मारे लोगों, हमारे किसानों, हमारे जैसे ही इन्सानों को, जो धार्मिक अनुष्ठानों और अर्थहीन प्रार्थना के सिवा भगवान तथा सचाई का कोई अन्य मतलब समझे बिना ही जन्म लेते और मर जाते हैं, अगले जीवन के सान्त्वनाप्रद विश्वास, प्रतिदान, पुरस्कार और शान्ति की शिक्षा दे दी जाये? इसमें भला कौन-सी भूल और बुराई हो सकती है कि लोग डाक्टरी सहायता के बिना बीमारी से मरते हैं और मैं उनके लिये डाक्टर, अस्पताल तथा बूढ़ों के लिये आश्रय की व्यवस्था करके आसानी से उनकी मदद कर सकता हूं? क्या यह स्पष्ट और सन्देहहीन भलाई नहीं है कि किसान या गोद के बच्चेवाली औरत, जिन्हें दिन या रात को भी काम से फ़ुरसत नहीं मिलती, मैं उन्हें कुछ आराम और फ़ुरसत दे देता हूं?..." प्येर ने जल्दी-जल्दी तथा तुतलाते हुए कहा। "और मैंने यह कर दिया है, बेशक बुरे ढंग से, बेशक थोड़ा-सा, लेकिन इसके लिये कुछ तो कर दिया है और आप मुझे न केवल यह विश्वास नहीं दिला सकते कि मैंने जो कुछ किया है, वह अच्छा नहीं है, बल्कि यह भी कि आप ख़ुद भी ऐसा नहीं मानते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है," प्येर कहता गया, "कि मैं जानता हूं और पूरे यक़ीन से जानता हूं कि भलाई करने का सुख ही जीवन का एकमात्र सच्चा सुख है।"

"अगर मामले को ऐसे पेश किया जाये तो यह दूसरी बात हो

जाती है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "मैं मकान बनवा रहा हूं, बाग़ लगवा रहा हूं और तुम अस्पतालों का निर्माण करवा रहे हो। दोनों चीज़ें ही वक़्त काटने का अच्छा साधन हो सकती हैं। लेकिन क्या न्यायपूर्ण है, क्या भला है – इसका निर्णय 'उसी' पर छोड़ दो जो यह सब कुछ जानता है। हम यह तय नहीं कर सकते। लेकिन तुम बहस करना चाहते हो," उसने इतना और जोड़ दिया, "तो आओ, बहस हो जाये।" ये दोनों खाने की मेज़ से उठकर छज्जे का काम देनेवाले ओसारे में जा बैठे।

"तो आओ, बहस हो जाये," प्रिंस अन्द्रेई ने दोहराया। "तुम स्कूलों की, शिक्षा देने आदि की बात करते हो," उसने एक उंगली मोड़ते हुए अपनी बात जारी रखी, "यानी इसे," उसने टोपी उतारकर सामने से गुज़रते किसान की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "इसकी पशु जैसी स्थिति से उबारकर इसमें आत्मिक आवश्यकतायें पैदा करना चाहते हो। लेकिन मुझे लगता है कि उसकी पशु जैसी स्थिति ही एक-मात्र सौभाग्य की स्थिति है और तुम इसे इसी से वंचित करना चाहते हो। मैं इससे ईर्ष्या करता हूं, किन्तु तुम इसे मेरी जैसी बुद्धि, भावनायें और दौलत दिये बिना मेरे जैसा बनाना चाहते हो। दूसरी बात: तुम यह कहते हो कि इसके यानी किसान के काम को हल्का कर दो। लेकिन मेरे ख़्याल में इसके लिये शारीरिक श्रम वैसी ही आवश्यकता है, इसके ज़िंदा रहने की वैसी ही शर्त है, जैसे तुम्हारे और मेरे लिये मानसिक श्रम। तुम सोच-विचार किये बिना नहीं रह सकते। मैं रात के दो बजने के बाद बिस्तर पर जाता हूं, मेरे दिमाग़ में विचार आने लगते हैं और मैं सो नहीं पाता हूं। मैं करवटें बदलता रहता हूं, मुझे सुबह तक नीद नहीं आती क्योंकि सोचता रहता हूं और सोचे बिना वैसे ही नहीं रह सकता, जैसे यह हल चलाये और कटाई किये बिना। अगर यह ऐसा नहीं करेगा तो शराबखाने में जायेगा या बीमार हो जायेगा। जैसे मैं इसके कठिन शारीरिक श्रम को सहन नहीं कर सकता और एक हफ़्ते बाद ही मर जाऊंगा, वैसे ही यह मेरी शारीरिक काहिली बर्दाश्त नहीं कर सकता, इसपर चर्बी चढ़ जायेगी और यह मर जायेगा। तीसरी बात... तुमने और क्या कहा था?"

प्रिंस अन्द्रेई ने तीसरी उंगली मोड़ी।

"अरे हां, अस्पताल और चिकित्सा। किसान को रक्ताघात होता

है, वह मरने लगता है, मगर तुम उसका रक्त निकलवाकर उसकी जान बचा लेते हो। वह पंगु होकर दस साल तक और जीता रहता है, सभी के लिये बोझ बना रहता है। उसके लिये मर जाना कहीं अधिक चैन की और आसान बात होगी। और बहुत-से जन्म ले रहे हैं, कितनी बडी संख्या है उनकी। अगर तुम्हें इस बात का अफ़सोस होता कि तुम्हारा एक कमेरा कम हो रहा है,–तब बात दूसरी होती। लेकिन, जैसा कि मैं इस मामले को समझता हूं, तुम तो उसके प्रति प्यार के कारण उसकी जान बचाना चाहते हो। उसे इसकी ज़रूरत नही। इसके अलावा यह भी ख़ूब रही कि दवा-दारू से कभी कोई अच्छा हुआ है! हां–वह जान ज़रूर ले सकती है!" उसने ग़ुस्से से नाक-भौंह सिकोड़कर कहा और मुंह फेर लिया।

प्रिंस अन्द्रेई इतनी स्पष्टता और सटीकता से अपने विचार प्रकट कर रहा था कि साफ़ नज़र आता था कि उसने अनेक बार इसके बारे में सोच-विचार किया है तथा वह ऐसे व्यक्ति की भांति, जो बहुत समय तक चुप रहा हो, अब बड़े उत्साह से और जल्दी-जल्दी बोलता जा रहा है। उसके विचार जितने अधिक निराशाजनक होते थे, उसकी आंखों में उतनी ही अधिक चमक आ जाती थी।

"ओह, यह बहुत भयानक, बड़ी भयानक बात है!" प्येर ने कहा। "मैं सिर्फ़ यही नहीं समझ पा रहा हूं कि ऐसे विचार रखते हुए ज़िन्दा कैसे रहा जा सकता है। मेरे जीवन में भी ऐसे क्षण आये थे, यह कुछ ही समय पहले की बात है, मास्को में, यात्रा करते वक़्त रास्ते में। लेकिन ऐसे क्षणों में मेरा ऐसा बुरा हाल हो जाता है कि मुझमें ज़िन्दगी जैसी कोई चीज़ बाक़ी नहीं रह जाती, मुझे सभी कुछ से नफ़रत होने लगती है, सबसे बढ़कर तो ख़ुद से। तब मैं न तो कुछ खाता-पीता हूं, न नहाता-धोता हूं... और आपको?.."

"नहाया-धोया क्यों न जाये? गन्दा रहना तो अच्छा नहीं," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "इसके विपरीत, अपने जीवन को यथाशक्ति अधिक से अधिक सुखद-मधुर बनाने की कोशिश करनी चाहिये। मैं ज़िन्दा हूं–इसमें मेरा तो कोई क़ुसूर नहीं। इसका मतलब यह है कि किसी दूसरे के लिये परेशानी बने बिना मौत आने तक ज़िन्दगी को अच्छे से अच्छे ढंग से जीना चाहिये।"

"ऐसे विचारों के साथ आपको जीने की प्रेरणा कहां से मिलती

है? ऐसी हालत में तो आदमी हाथ पर हाथ धरे बैठा रहना चाहेगा..."

"ज़िन्दगी तो यों ही चैन नहीं लेने देती। मैं तो ख़ुशी से हाथ पर हाथ धरे बैठा रहता। लेकिन, एक बात तो यह है कि यहां के कुलीनों ने मुझे अपना मुखिया चुनने का सम्मान प्रदान किया। बहुत ही मुश्किल से मैंने उनसे अपना पिंड छुड़ाया। वे यह समझ ही नहीं पाये कि मुझमें वह चीज़ नहीं है जिसकी इसके लिये ज़रूरत है। काफ़ी चिन्ताशीलता और ख़ुशमिज़ाजी का पुट लिये वह घटियापन नहीं है जो इस काम के लिये ज़रूरी है। फिर यह मकान है जिसे बनवाना ज़रूरी था, ताकि अपने लिये चैन से रहने की कोई जगह बन सके। अब भर्ती का काम सामने है।"

"आप सेना में क्यों नहीं जाते?"

"आउस्टेरलिट्ज़ के बाद!" प्रिंस अन्द्रेई ने उदासी से उत्तर दिया। "नही, बहुत, बहुत धन्यवाद! मैंने यह प्रतिज्ञा की है कि युद्धरत रूसी सेना में कभी नहीं जाऊंगा। और कभी ऐसा नही करूंगा। उस हालत में भी नही कि अगर बोनापार्ट यहां, स्मोलेन्स्क के पास तक आ जाये और हमारी लीसिये गोरि जागीर के लिये ख़तरा पैदा हो जाये। हां, तो मैं तुमसे कह रहा था," प्रिंस अन्द्रेई ने शान्त होकर कहा, "अब भर्ती का काम सामने आ गया है। पिता जी तीसरे क्षेत्र के प्रधान सेनाध्यक्ष हैं और मेरे लिये सेना में जाने से बचने का एकमात्र यही उपाय था कि उनके अधीन काम करूं।"

"तो आप सैन्य-सेवा तो कर ही रहे हैं?"

"हां, कर रहा हूं।"

"किसलिये ऐसा कर रहे हैं?"

"अभी बताता हूं कि किसलिये ऐसा कर रहा हूं। मेरे पिता जी अपने युग के एक बहुत ही अद्भुत व्यक्ति हैं। लेकिन वह बुढ़ाते जा रहे हैं और ऐसा तो नहीं कि क्रूर हों, किन्तु अत्यधिक उत्साही-उद्यमी स्वभाव के व्यक्ति हैं। किसी रोक-टोक के बिना मनमानी करने के आदी होने के कारण वह भयानक हैं और अब सम्राट ने भर्ती के मामले में उन्हें ऐसी छूट दे दी है। दो सप्ताह पहले यदि मुझे दो घण्टे की देर हो जाती तो उन्होंने युख़नोवो में रेकार्ड रखनेवाले क्लर्क को फांसी के तख़्ते पर लटकवा दिया होता," प्रिंस अन्द्रेई ने मुस्कराकर कहा। "तो मैं इसलिये सैन्य-सेवा कर रहा हूं कि मेरे सिवा पिता जी और

किसी की बात नहीं मानते और मैं कहीं-कही उन्हें कोई ऐसा काम करने मे बचा लेता हूं जिसके कारण उन्हें बाद में व्यथित होना पड़े।"

"तो यह तो आप मेरी ही बात की पुष्टि कर रहे हैं!"

"नही, तुम्हारी बात की नहीं," प्रिंस अन्द्रेई कहता गया। "मैं उस कमीने क्लर्क के साथ, जो रंगरूटों के बूट चुराता था, न तो तब कोई भलाई करना चाहता था और न ही अब ऐसा चाहता हूं। उसे फांसी के तख़्ते पर लटकते देखकर मुझे तो ख़ुशी भी हुई होती, लेकिन पिता जी के लिये अफ़सोस हुआ – यानी फिर अपने ही लिये।"

प्रिंस अन्द्रेई अधिकाधिक जोश में आता जा रहा था। जब वह प्येर के सामने यह सिद्ध करने का प्रयास कर रहा था कि अपने किसी भी कार्य-कलाप में वह किसी बन्धु-मानव की भलाई की इच्छा से प्रेरित नहीं हुआ था, तो उसकी आंखें ख़ूब चमक रही थीं।

"तुम अपने किसानों को मुक्त करना चाहते हो," उसने अपनी बात जारी रखी। "यह बहुत अच्छा है, मगर तुम्हारे लिये नहीं (मेरे ख़्याल में तुमने तो कभी किसी को कोड़े नही लगवाये और साइबेरिया नही भेजा) और किसानों के लिये तो और भी कम अच्छा है। अगर उनकी पिटाई होती है, उन्हें कोड़े लगाये जाते हैं, साइबेरिया भेजा जाता है तो मैं समझता हूं कि इससे उनका कुछ भी नहीं बिगड़ता। वे साइबेरिया में भी अपना पशुओं जैसा यही जीवन बिताते रहते हैं, उनके तन पर कोड़ों के निशान मिट जाते हैं और वे पहले की तरह ही ख़ुश रहते हैं। लेकिन यह उन लोगों के लिये करना चाहिये जिनकी नैतिक दृष्टि से मृत्यु होती है, जो पश्चाताप के शिकार होते हैं, उस पश्चाताप को दबाते हैं और इस कारण कठोर बन जाते हैं कि उन्हें उचित-अनुचित ढंग से दण्ड देने का अधिकार प्राप्त है। मुझे इनके लिये अफ़सोस होता है और इन्हीं के लिये मैं किसानों को मुक्ति देना चाहूंगा। शायद तुमने नहीं देखा, लेकिन मैंने देखा है कि कैसे निरंकुश, अबाध सत्ता की इन परम्पराओं में पनपे ये अच्छे लोग वर्षों के बीतने के साथ अधिकाधिक चिड़चिड़े, कठोर और क्रूर हो जाते हैं, उन्हें इस बात की चेतना भी होती है, मगर अपने को वश में नहीं कर पाते और इस तरह ज़्यादा से ज़्यादा दुखी होते चले जाते हैं।"

प्रिंस अन्द्रेई इतने उत्साह से यह सब कुछ कह रहा था कि प्येर

बरबस यह सोचने को विवश हो गया कि अन्द्रेई के पिता ने ही उसके दिल-दिमाग़ में इन विचारों को बिठाया है। उसने उसे कोई जवाब नहीं दिया।

"तो मुझे ऐसे लोगों और ऐसी चीज़ों के लिये अफ़सोस होता है – मानवीय गरिमा, अन्तःकरण की शान्ति, पवित्रता-निर्मलता के लिये, किसानों की पीठों और उनके सिर के बालों के लिये नहीं, जिन्हें उन्हें सैनिक बनाते समय काट दिया जाता है। उनकी पीठों पर चाहे कितने ही कोड़े क्यों न बरसाये जायें, उनके सिर बेशक कितने ही क्यों न मूंडे जायें, वे पीठें और वे सिर वैसे के वैसे ही रहेंगे।"

"नहीं, नहीं, हज़ार बार नहीं! मैं आपके साथ कभी भी सहमत नहीं हो सकूंगा," प्येर ने कहा।

## १२

प्रिंस अन्द्रेई और प्येर शाम को बग्घी में बैठकर लीसिये गोरि की ओर रवाना हो गये। प्रिंस अन्द्रेई प्येर की तरफ़ देखते हुए जब-तब ऐसे शब्द कहकर ख़ामोशी को भंग करता जो यह ज़ाहिर करते कि वह ख़ासे अच्छे मूड में है।

खेतों की तरफ़ इशारा करते हुए वह प्येर को यह बताता कि अपनी खेतीबाड़ी में उसने कैसे सुधार किये हैं।

प्येर उदास और ख़ामोश बना रहा, एकाध शब्द कहकर ही उसे उत्तर देता और ऐसे प्रतीत होता कि वह अपने ख़्यालों में डूबा-खोया हुआ है।

प्येर सोच रहा था कि प्रिंस अन्द्रेई सुखी नहीं है, अन्धेरे में भटक रहा है, जीवन-सत्य से अनभिज्ञ है, कि उसे उसकी मदद करनी चाहिये, उसे रोशनी दिखानी तथा उसे ऊपर उठाना चाहिये। किन्तु प्येर जैसे हीं यह सोचता कि वह कैसे और क्या कहेगा तो उसे पहले से ही यह अनुभूति होती कि प्रिंस अन्द्रेई एक शब्द कहकर, एक तर्क प्रस्तुत करके ही उसकी सारी शिक्षा को बेमानी बना देगा। इसलिये वह इस शंका से अपनी बात शुरू करते हुए डरता-घबराता था कि उसे

जो कुछ प्रिय तथा पावन है, वह कहीं उपहास की चीज़ न बन जाये।

"आप ऐसा क्यों सोचते हैं," प्येर ने अचानक सिर झुकाकर और सींग मारने के लिये तैयार सांड़ जैसी मुद्रा बनाते हुए अचानक कहना शुरू किया, "आप ऐसा क्यों सोचते हैं? आपको ऐसा नही सोचना चाहिये।"

"किस बारे में मैं क्या सोचता हूं?" प्रिंस अन्द्रेई ने हैरान होकर पूछा।

"जीवन के बारे में, मानव के महत्त्व के बारे में। ऐसा नहीं हो सकता। मैं भी ऐसा ही सोचता था और आप जानते हैं कि किस चीज़ ने मुझे बचाया? फ़्री मेसनरी ने। नहीं, आप मुस्कराइये नहीं। जैसा कि मैं खुद भी यही समझता था, फ़्री मेसनरी कोई धार्मिक और धार्मिक अनुष्ठानोंवाला सम्प्रदाय नही है। फ़्री मेसनरी मानव-जाति के श्रेष्ठ और शाश्वत पक्षों की सर्वश्रेष्ठ और एकमात्र अभिव्यक्ति है।" और वह जिस तरह से फ़्री मेसनरी को खुद समझता था, उस रूप में प्रिंस अन्द्रेई के सामने उसकी व्याख्या करने लगा।

उसने बताया कि फ़्री मेसनरी राजकीय और धार्मिक बन्धनों से मुक्त ईसाई धर्म की, समानता, भ्रातृत्व और प्रेम की शिक्षा है।

"केवल हमारा पावन भ्रातृत्व ही जीवन में कोई वास्तविक अर्थ रखता है, बाक़ी सब कुछ तो सपना है," प्येर ने कहा। "मेरे दोस्त, आप इस बात को समझ लें कि हमारे इस भ्रातृ-संघ के बाहर सब कुछ मिथ्या और झूठ है तथा मैं आपके साथ सहमत हूं कि समझदार और उदार व्यक्ति के लिये, जैसे कि आप हैं, इस चीज़ के अलावा कोई चारा नही रह जाता कि दूसरों के जीवन में बाधक न होने का प्रयास करते हुए अपना जीवन बिता दे। किन्तु आप हमारी मूलभूत आस्थाओं को स्वीकार कर लें, हमारे भ्रातृ-संघ में शामिल हो जायें, अपने को हमें सौंप दें, अपने को निर्देशित करने दें और मेरी भांति आप भी अपने को तत्काल उस विराट, अदृश्य शृंखला की एक कड़ी अनुभव करने लगेंगे जिसका आरम्भ कही आकाश में छिपा हुआ है," प्येर ने कहा।

प्रिंस अन्द्रेई चुपचाप और अपने सामने देखते हुए प्येर की बातें सुन रहा था। बग्घी के शोर के कारण कुछ शब्द उसे सुनायी नहीं देते थे और उसने कई बार प्येर से उन्हें दोहराने के लिये कहा। प्रिंस

अन्द्रेई की आंखों में दिखाई देनेवाली विशेष चमक और उसकी खामोशी से प्येर ने यह भांप लिया कि उसके शब्द व्यर्थ ही नहीं जा रहे हैं, कि प्रिंस अन्द्रेई उसे बोलने से रोकेगा नहीं, कि वह उसके शब्दों की खिल्ली नहीं उड़ायेगा।

ये दोनों ऐसी नदी पर पहुंच गये जिसमें बाढ़ आई हुई थी और जिसे उन्हें बड़ी नाव की मदद से पार करना था। जब तक बग्घी और घोड़ों को नाव पर ले जाने की व्यवस्था की गयी, ये दोनों पैदल वहां पहुंच गये।

प्रिंस अन्द्रेई नाव के जंगले पर कोहनियां टिकाये हुए डूबते सूरज की रोशनी में बाढ़ के पानी को चुपचाप देख रहा था।

"इस बारे में आपका क्या विचार है?" प्येर ने पूछा। "आप चुप क्यों हैं?"

"मेरा क्या विचार है? मैं तुम्हारी बातें सुन रहा था। यह सब ठीक है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "लेकिन तुम कहते हो कि हमारे भ्रातृ-संघ में शामिल हो जाओ और हम तुम्हें जीवन का उद्देश्य, मानव का महत्त्व तथा जीवन का संचालन करनेवाले नियम स्पष्ट कर देंगे। लेकिन ये 'हम' कौन हैं? लोग। भला आप ही सब कुछ क्यों जानते हैं? क्यों मैं ही वह नहीं देख सकता जो आप सब देखते हैं? आप इस धरती पर भलाई तथा सचाई का साम्राज्य देखते हैं, मगर मैं उसे नही देखता।"

प्येर ने उसे टोक दिया।

"आप अगले जन्म में विश्वास करते हैं?" प्येर ने पूछा।

"अगले जन्म में?" प्रिंस अन्द्रेई ने दोहराया, किन्तु प्येर ने उसे जवाब देने का मौक़ा नहीं दिया और प्रिंस अन्द्रेई के द्वारा इस प्रश्न के दोहराये जाने को इन्कार मान लिया। खास तौर पर इसलिये कि वह प्रिंस अन्द्रेई के नास्तिकता के विचारों से पूर्वपरिचित था।

"आप कहते हैं कि इस धरती पर भलाई और सचाई का साम्राज्य नही देख सकते। मैं भी इसे देखने में असमर्थ था। अगर हम अपने जीवन को सभी कुछ का अन्त मानते हैं तो इसे देखा भी नहीं जा सकता। **धरती** पर, यानी इस धरती पर (प्येर ने खेतों की तरफ़ इशारा किया), सचाई नहीं है – झूठ और बुराई ही है। किन्तु संसार में, पूरे ब्रह्माण्ड में सचाई का साम्राज्य है और हम, जो इस समय

इस धरती के बच्चे हैं, शाश्वत अर्थ में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के बच्चे हैं। क्या मैं अपनी आत्मा में यह अनुभव नहीं करता हूं कि मैं इस विराट और सामंजस्यपूर्ण ब्रह्माण्ड का अंग हूं? क्या मैं यह अनुभव नहीं करता हूं कि मैं इन विराट और असंख्य प्राणियों में, जिनमें भगवान – आप चाहें तो उन्हें परम शक्ति कह सकते हैं – का रूप प्रकट होता है – मैं इनमें एक कड़ी हूं, निम्न प्राणियों और उच्च प्राणियों के बीच एक स्तर हूं? अगर मैं वनस्पति से मानव की ओर जानेवाली इस सीढ़ी को देखता हूं, बिल्कुल स्पष्ट रूप से देख सकता हूं तो मैं ऐसा क्यों मान लूं कि यह सीढ़ी, जिसका सिरा मैं नहीं देख सकता, वह वन-स्पती-जगत में छिपी हुई है। मैं ऐसा क्यों मान लूं कि यह सीढ़ी मेरे साथ ही ख़त्म हो जाती है, आगे ही आगे नहीं बढ़ती जाती है? मैं अनुभव करता हूं कि मैं न केवल लुप्त ही नही हो जाऊंगा, जैसे कि ब्रह्माण्ड में कुछ भी लुप्त नहीं होता, बल्कि यह कि मैं हमेशा रहूंगा और हमेशा रहा हूं। मैं अनुभव करता हूं कि मेरे अतिरिक्त, मेरे ऊपर आत्मायें सांस ले रही हैं और इस दुनिया में सचाई है।"

"हां, यह गेरडेर की शिक्षा है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा, "किन्तु, मेरे प्यारे, यह चीज़ नही, बल्कि जीवन और मृत्यु ही मुझे विश्वास दिलाते हैं। विश्वास तो यह चीज़ दिलाती है कि वह प्यारा प्राणी जो तुम्हारे साथ सम्बन्धित है, जिसके सामने तुम किसी कारण अपराधी थे और यह आशा करते थे कि अपने उस अपराध से मुक्त हो पाओगे (प्रिंस अन्द्रेई की आवाज़ कांपी और उसने मुंह फेर लिया), और अचानक यह प्राणी पीड़ा तथा यातना सहने लगता है और उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है... भला क्यों? ऐसा नहीं हो सकता कि इस प्रश्न का कोई उत्तर न हो! मैं यक़ीन करता हूं कि उत्तर है... यही चीज़ है जो मुझे विश्वास दिलाती है, इसी ने मुझे विश्वास दिलाया," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा।

"हां, हां," प्येर ने कहा, "क्या मैं भी यही नहीं कह रहा हूं!"

"नहीं। मैं केवल यह कह रहा हूं कि तर्क हमें इस बात का विश्वास नहीं दिलाता कि अगला जन्म होना चाहिये, बल्कि यह कि जब हम किसी प्राणी के साथ जीवन की डगर पर चलते जाते हैं और अचानक यह आदमी **कहीं शून्य** में खो जाता है और हम स्वयं इस खाई के सिरे पर रुककर नीचे देखते रहते जाते हैं। जैसा कि मैं कर चुका हूं..."

बड़ी नाव पर प्येर और अन्द्रेई बोल्कोन्स्की बातचीत करते हुए।

"यही तो चीज़ है! आप जानते हैं कि **वहां** कुछ है, **कोई** है? वहां – अगला जीवन है। **कोई** – भगवान हैं।"

प्रिंस अन्द्रेई ने कोई उत्तर नहीं दिया। बग्घी और घोड़े कभी के दूसरे तट पर पहुंचाये जा चुके थे और घोड़ों को बग्घी में जोत भी दिया गया था। सूरज आधा डूब चुका था और सन्ध्याकालीन पाला नाव के निकटवर्ती डबरों पर अपने सितारे-से जड़ रहा था। मगर नौकरों, कोचवानों तथा नाव खेनेवालों को हैरानी में डालते हुए प्येर और अन्द्रेई अभी तक नाव पर खड़े हुए बातें करते जा रहे थे।

"अगर भगवान हैं और भावी जीवन है तो सचाई और भलाई भी है और मानव का उच्चतम सुख-सौभाग्य इनकी प्राप्ति के प्रयास में है। जीना, प्यार करना और विश्वास करना चाहिये," प्येर कह रहा था, "कि हम केवल अभी और धरती के इसी टुकड़े पर नहीं रह रहे हैं, बल्कि वहां, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में (उसने आकाश की ओर संकेत किया) हमेशा जीते रहे हैं और जीते रहेंगे। प्रिंस अन्द्रेई नाव के जंगले पर कोहनियां टिकाये खड़ा था और प्येर की बातें सुनते हुए बाढ़ के नीले पानी में सूरज के अरुण प्रतिबिम्ब को एकटक देख रहा था। प्येर ख़ामोश हो गया। एकदम ख़ामोशी छाई थी। नाव कभी की दूसरे तट पर पहुंचकर रुक गयी थी और केवल बहाव की लहरियां धीमी-सी आवाज़ पैदा करती हुई उसके तल से टकरा रही थीं। प्रिंस अन्द्रेई को ऐसा प्रतीत हुआ कि लहरों की यह ध्वनि प्येर के शब्दों का साथ देती हुई मानो कह रही है: "यह सच है, इसपर विश्वास करो।"

प्रिंस अन्द्रेई ने गहरी सांस ली और उल्लास से लाल हो गया, तथा उसने अपने मित्र की बौद्धिक श्रेष्ठता की चेतना से अभी तक भीरुता का भाव लिये प्येर के चेहरे पर चमकती, बाल-सुलभ और स्नेहपूर्ण दृष्टि डाली।

"काश, ऐसा ही होता!" उसने कहा। "ख़ैर, चलो, बग्घी में बैठें," प्रिंस अन्द्रेई ने इतना और जोड़ दिया और नाव से नीचे आते हुए उसने आकाश की तरफ़ देखा जिसकी ओर प्येर ने संकेत किया था। आउस्टेरलिट्ज़ के बाद उसने पहली बार उस ऊंचे तथा शाश्वत आकाश को देखा जिसे आउस्टेरलिट्ज़ के युद्ध-क्षेत्र में पड़े हुए देखा था और बहुत पहले ही आंख मूंद चुकी उसकी आत्मा की किसी श्रेष्ठ भावना ने अचानक सहर्ष और नूतन रूप में पलक खोल

ली। प्रिंस अन्द्रेई ज्योंही हर दिन का सामान्य जीवन बिताने लगा, त्योंही यह भावना लुप्त हो गयी, किन्तु उसे मालूम था कि यह भावना, जिसे विकसित करने का ढंग वह नहीं जानता था, उसके अन्तर में सांस ले रही है। प्येर के साथ प्रिंस अन्द्रेई की भेंट एक नये युग का द्योतक बनी। यद्यपि बाहरी तौर पर उसका जीवन पहले जैसा ही बना रहा, तथापि उसके अन्तर में एक नूतन जीवन का सूत्रपात हो गया।

## १३

प्रिंस अन्द्रेई और प्येर जिस वक़्त लीसिये गोरि के मकान के मुख्य द्वार के पास पहुंचे तो झुटपुटा हो चुका था। जब इनकी बग्घी निकट पहुंच रही थी तो प्रिंस अन्द्रेई ने मकान के पीछे हो रही दौड़-धूप की ओर मुस्कराते हुए प्येर का ध्यान आकृष्ट किया। बग्घी को आते देखकर पीठ पर थैला लटकाये झुकी कमरवाली बुढ़िया तथा नाटा पुरुष, जो काली पोशाक पहने था तथा जिसके बाल लम्बे थे, फाटक की तरफ़ तेज़ी से पीछे भाग चले। उनके पीछे-पीछे दो औरतें भागती हुई बाहर आईं और ये चारों डरे-सहमे तथा मुड़-मुड़कर बग्घी को देखते हुए पिछवाड़े के ओसारे की ओर भाग गये।

"ये मेरी बहन के 'भगवान के बन्दे' हैं," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "इन्होंने यह समझा है कि पिता जी आ रहे हैं। इसी एक मामले में मेरी बहन पिता जी की आज्ञा का उल्लंघन करती है। पिता जी का आदेश है कि इन तीर्थ-यात्रियों को खदेड़ दिया जाये, मगर वह इनका स्वागत-सत्कार करती है।"

"लेकिन 'भगवान के बन्दों' से क्या अभिप्राय है?" प्येर ने पूछा।

प्रिंस अन्द्रेई के उत्तर देने के पहले ही नौकर-चाकर इनके स्वागत को बाहर आ गये। उसने उनसे पूछा कि बुज़ुर्ग प्रिंस कहां हैं और वह जल्द ही यहां आनेवाले हैं या नहीं।

बुज़ुर्ग प्रिंस अभी तक शहर में थे और किसी भी क्षण यहां आ सकते थे।

प्रिंस अन्द्रेई प्येर को अपने कमरों में ले गया जो पिता जी के घर में हमेशा ही उसके लिये साफ़-सुथरे तथा ढंग से सजे-सजाये रहते थे। वह ख़ुद बच्चे के कमरे में चला गया।

"आओ, बहन के पास चलें," उसने लौटकर प्येर से कहा, मैं अभी तक उससे नहीं मिला। इस वक़्त वह अपने 'भगवान के बन्दों' के साथ कहीं छिपी बैठी है। वह हमारे वहां जाने पर झेंप जायेगी और ख़ुद ही इसके लिये दोषी होगी। वहां तुम 'भगवान के बन्दों' को भी देख लोगे। यह तो दिलचस्प होगा न!"

"'भगवान के बन्दों' से क्या अभिप्राय है?" प्येर ने दोहराया।

"अभी ख़ुद देख लोगे।"

जब ये दोनों प्रिंसेस मरीया के पास पहुंचे तो वह सचमुच ही झेंप गयी और उसके गालों पर लाल धब्बे उभर आये। उसके आरामदेह कमरे में देव-प्रतिमाओं के दीपों के सामने और समोवार के निकट पादरियों का काला चोग़ा पहने हुए लम्बी नाक और लम्बे बालोंवाला एक युवक उसकी बग़ल में सोफ़े पर बैठा था।

इनके नज़दीक ही आरामकुर्सी पर एक दुबली-पतली बुढ़िया बैठी थी जिसके चेहरे पर झुर्रियों का हल-सा चला हुआ था और बाल-सुलभ नम्रता का भाव था।

"अन्द्रेई, तुमने मुझे पहले से सूचित क्यों नहीं किया?" बहन ने हलीमी से भाई को फटकारते तथा चूज़ों की रक्षा करनेवाली मुर्ग़ी की तरह अपने तीर्थ-यात्रियों के सामने खड़े होते हुए कहा।

"आपके आने से बहुत ख़ुशी हुई। बहुत ही ख़ुशी हुई," उसने प्येर से उस समय कहा, जब उसने उसका हाथ चूमा। बचपन में वह प्येर से परिचित थी और अब अन्द्रेई के साथ उसकी मित्रता, पत्नी के मामले में उसके दुर्भाग्य और मुख्यतः तो उसके दयालु तथा सीधे-सादे चेहरे ने उसका मन मोह लिया। वह अपनी बहुत ही सुन्दर, चमकीली आंखों से ऐसे देख रही थी मानो कह रही हो: "आप मुझे बहुत अच्छे लगते हैं, लेकिन कृपया **मेरे** इन लोगों पर हंसिये नहीं।" एक-दूसरे का अभिवादन करके ये बैठ गये।

"अरे, इवानुश्का भी यहां है," प्रिंस अन्द्रेई ने मुस्कराकर युवा तीर्थ-यात्री की ओर संकेत करते हुए कहा।

"अन्द्रेई!" प्रिंसेस मरीया मिन्नत के लहजे में बोली।

"जानते हो, यह युवती है," अन्द्रेई ने फ़्रांसीसी में प्येर को बतलाया।

"अन्द्रेई, भगवान के लिये चुप रहो!" प्रिंसेस मरीया ने फिर से उसकी मिन्नत की।

साफ़ दिखाई दे रहा था कि इन तीर्थ-यात्रियों के प्रति प्रिंस अन्द्रेई का उपहासजनक लहजा और प्रिंसेस मरीया द्वारा उनका असफल पक्ष-पोषण – यह बहन-भाई के बीच एक आदत-सी बन गये थे।

"लेकिन, मेरी अच्छी बहन, तुम्हें तो मुझे इस बात के लिये धन्यवाद देना चाहिये कि मैं प्येर को इस युवक के साथ तुम्हारी घनिष्ठता को स्पष्ट कर रहा हूं," प्रिंस अन्द्रेई ने अब भी फ़्रांसीसी में कहा।

"सच?" प्येर ने चश्मे में से इवानुश्का के चेहरे को ग़ौर से देखते हुए जिज्ञासा तथा गम्भीरता से फ़्रांसीसी में कहा (प्रिंसेस ने इसके लिये प्येर का बहुत आभार माना)। इवानुश्का ने यह समझकर कि उसकी चर्चा हो रही है, चालाकी भरी दृष्टि से सब पर नज़र डाली।

प्रिंसेस मरीया व्यर्थ ही इन **अपनों** के लिये झेंप रही थी। वे तो ज़रा भी घबराहट महसूस नहीं कर रहे थे। बुढ़िया आंखें झुकाकर, किन्तु आनेवालों पर कनखियों से नज़र डालकर, चाय के प्याले को प्लेट में उलटा रखकर और कुछ खाई हुई चीनी की डली भी उसके पास टिकाकर अपनी आरामकुर्सी पर शान्त और चैन से बैठी और चाय पाने की प्रतीक्षा कर रही थी। प्लेट में डालकर चाय पीती हुई इवानुश्का ने नारी की तिरछी चंचल नज़रों से इन जवान लोगों को देखा।

"कहां से आ रही हो? कीयेव गयी थीं?" प्रिंस अन्द्रेई ने बुढ़िया से पूछा।

"हां, मालिक, कीयेव भी गयी थी," बातूनी बुढ़िया ने उत्साह से जवाब दिया। ठीक क्रिसमस के अवसर पर ही मुझे सन्तों के गिरजे में स्वर्गीय महाप्रसाद पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अभी तो कोल्याज़िन से आ रही हूं, वहां एक महान चमत्कार प्रकट हुआ है..."

"क्या इवानुश्का भी तुम्हारे साथ थी?"

"मैं तो अकेला ही अपनी राह चला करता हूं, अन्नदाता,"

इवानुश्का ने भारी आवाज़ बनाने का प्रयास करते हुए कहा। "केवल युख़नोवो में ही पेलागेया के साथ मेरा मेल हो गया था..."

पेलागेया ने अपनी संगिनी को टोक दिया। स्पष्ट था कि उसका मन वह बताने को बड़ा उत्सुक था जो उसने देखा था।

"कोल्याज़िन में एक महान चमत्कार प्रकट हुआ है, मेरे मालिक।"

"क्या किसी और सन्त के अवशेष मिले हैं?" प्रिंस अन्द्रेई ने पूछा।

"बस, बस, रहने दो अपनी ये बातें, अन्द्रेई," प्रिंसेस मरीया ने कहा। "कुछ नहीं बताओ, पेलागेया।"

"भला क्यों? भला क्यों न बताया जाये, मालकिन? मुझे तो मालिक बहुत अच्छे लगते हैं। बड़े दयालु हैं। भगवान की इनपर बड़ी कृपादृष्टि है, मेरे तो बहुत उपकारी हैं, मुझे याद है कि इन्होंने मुझे दस रूबल दिये थे। जैसे मैं कीयेव पहुंची, वैसे ही प्रभु का सच्चा सेवक, जाड़े और गर्मी में नंगे पांव घूमनेवाला भगवान का बन्दा किरील्ल मुझसे बोला: 'तुम अपनी असली जगह पर क्यों नहीं जाती, कोल्याज़िन जाओ, वहां माता मरियम की चमत्कारी देव-प्रतिमा प्रकट हुई है।' यह सुनते ही मैंने सन्तों से विदा ली और कोल्याज़िन चल दी..."

सभी ख़ामोश थे, केवल यह तीर्थ-यात्री बुढ़िया ही चैन से सांस लेती हुई लयबद्ध स्वर में बोलती जा रही थी।

"तो मैं वहां पहुंची, मेरे मालिक। लोग-बाग मुझसे कहने लगे: 'महान चमत्कार हुआ है, पवित्रतम माता मरियम के गालों से पावन तेल बहता है...'"

"बस, काफ़ी है, काफ़ी है, बाक़ी बाद में बताना," प्रिंसेस मरीया ने लज्जारुण होते हुए कहा।

"कृपया मुझे इससे कुछ पूछ लेने दीजिये," प्येर ने कहा। "तुमने अपनी आंखों से यह देखा है?" उसने जानना चाहा।

"देखा कैसे नहीं, मालिक? मुझे इसका सौभाग्य प्राप्त हुआ। माता मरियम के मुख-मण्डल पर स्वर्ग जैसा प्रकाश था और उनके गालों पर बूंद-बूंद करके पावन तेल टपक रहा था..."

"यह तो पाखण्ड है," प्येर ने बहुत ध्यान से तीर्थ-यात्री की बात सुनकर भोलेपन से कहा।

"ओह, मालिक, यह क्या कह रहे हैं!" पेलागेया ने अत्यधिक

भयभीत होकर तथा समर्थन के लिये प्रिंसेस मरीया की ओर देखते हुए कहा।

"यह तो लोगों की आंखों में धूल भोंकी जा रही है," उसने अपना मत दोहराया।

"भगवान ईसा मसीह," अपने ऊपर सलीब का निशान बनाते हुए तीर्थ-यात्री बुढ़िया ने कहा। "ऐसी बात मुंह से नहीं निकालनी चाहिये, मालिक। इसी तरह एक जनरल ने विश्वास न करते हुए यह कह दिया था: 'मठवासी साधु दग़ेबाज़ हैं।' इतना कहते ही वह अन्धा हो गया। उसे सपना आया और सपने में उसे पेचेर्स्काया मां मरियम दिखाई दी। वह बोली: 'मुझपर आस्था लाओ और तुम्हारी आंखों की ज्योति लौट आयेगी।' तो वह लगा यही रट लगाने: 'मुझे उसकी शरण में ले चलो, उसके पास ले चलो।' मैं तुमसे यह बिल्कुल सच्ची बात कह रही हूं, मैंने अपनी आंखों से यह देखा है। उस अन्धे जनरल को वहां, उसके पास ले गये। वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और बोला: 'मेरी आंखों की ज्योति दो! जो कुछ ज़ार ने मुझे दिया है, सब तुम्हें भेंट कर दूंगा।' अपनी आंखों से देखा है मैंने, मालिक, मां मरियम के वक्ष पर जनरल का सितारा चमक उठा। जनरल को उसकी आंखों की रोशनी मिल गयी! ऐसी बात कहना पाप है। भगवान दण्ड देंगे," बुढ़िया ने शिक्षा देते हुए प्येर से कहा।

"जनरल का सितारा देव-प्रतिमा के वक्ष पर कैसे पहुंच गया?" प्येर ने पूछा।

"मां मरियम को जनरल बना दिया गया?" प्रिंस अन्द्रेई ने मुस्कराते हुए प्रश्न किया।

पेलागेया के चेहरे का अचानक रंग उड़ गया और उसने दुखी होते हुए हाथ लहराये।

"मालिक, मालिक, तुम्हारे लिये तो यह पाप है। तुम तो बेटेवाले हो!" वह कह उठी और उसके चेहरे का रंग सहसा पीले से लाल हो गया।

"मालिक, तुम क्या कर रहे हो, भगवान तुम्हें क्षमा करें।" बुढ़िया ने सलीब का निशान बनाया। "हे प्रभु, इन्हें क्षमा कर दीजिये। यह सब क्या है, मालकिन?.." उसने प्रिंसेस मरीया से कहा। वह उठी और लगभग रोते हुए अपना थैला समेटने लगी। सम्भवतः उसे

इस बात से भय और लज्जा की अनुभूति हुई कि वह ऐसे घर में भिक्षा ग्रहण कर रही है जहां ऐसी बातें कही जा सकती हैं। उसे इस बात का दुख भी हो रहा था कि अब इस घर के दान-पुण्य से वंचित होना पड़ेगा।

"किसलिये आप यह सब कर रहे हैं?" प्रिंसेस मरीया ने पूछा। "किसलिये आप यहां आये हैं?.."

"नहीं, मैं तो मज़ाक़ कर रहा था, पेलागेया," प्येर ने कहा। "प्रिंसेस, सच मानिये, मैं इसका दिल नहीं दुखाना चाहता था," उसने फ़्रांसीसी में प्रिंसेस मरीया के सामने सफ़ाई पेश की, "मैंने तो यों ही यह कह दिया। तुम मेरे शब्दों की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दो, मैंने तो मज़ाक़ किया था," प्येर ने अपने को अपराध-मुक्त करने के लिये झेंप भरी मुस्कान के साथ कहा।

पेलागेया विश्वास न करते हुए ठिठक गयी, मगर प्येर के चेहरे पर पश्चाताप का ऐसा सच्चा भाव था और प्रिंस अन्द्रेई ने ऐसी विनम्रता से कभी पेलागेया और कभी प्येर की ओर देखा कि वह कुछ शान्त हो गयी।

## १४

तीर्थ-यात्री बुढ़िया शान्त हो गयी और फिर से बातचीत के लिये उत्साहित किये जाने पर वह देर तक यह चर्चा करती रही कि फ़ादर (पादरी) अम्फ़ीलोखी इतना पवित्र-पावन जीवन बिताता था कि उसके हाथों से लोबान की गंध आती थी, कि कैसे उसकी इस बार की कीयेव-यात्रा के समय उसके कुछ परिचित साधुओं ने उसे गुफाओं की चाबियां दे दी थीं और कैसे खाने के लिये कुछ रस्क अपने साथ लेकर उसने सन्तों के अवशेषों की संगत में दो दिन बिताये थे। "एक के सामने प्रार्थना करती, इंजील का थोड़ा पाठ करती और फिर दूसरे सन्त के अवशेषों के पास चली जाती। थोड़ी देर को सो लेती, फिर से सन्तों के अवशेषों को चूमने लगती और सच कहती हूं, मालकिन, वहां ऐसी शान्ति थी, ऐसा परम सुख मिलता था कि बाहर

आने को मन नही होता था।"

प्येर बहुत ध्यान और बड़ी गम्भीरता से बुढ़िया की बातें सुनता रहा। आख़िर प्रिंस अन्द्रेई कमरे से बाहर चला गया। उसके पीछे-पीछे ही तीर्थ-यात्रियों को यहीं छोड़कर, ताकि वे चाय ख़त्म कर लें, प्येर को अपने साथ लिये हुए प्रिंसेस मरीया भी ड्राइंगरूम की ओर चल दी।

"आप बड़े दयालु हैं," प्रिंसेस ने प्येर से कहा।

"ओह, सच कहता हूं कि मैं तो उसके दिल को ज़रा भी ठेस नहीं लगाना चाहता था। मैं इन भावनाओं को बहुत अच्छी तरह से समझता हूं और इनका बहुत ही ऊंचा मूल्यांकन करता हूं।"

प्रिंसेस मरीया ने कुछ भी कहे बिना प्येर की ओर देखा और उसके होंठों पर मधुर मुस्कान खिल उठी।

"मैं तो आपको बहुत पहले से जानती हूं और भाई की तरह चाहती हूं," प्रिंसेस ने कहा। "अन्द्रेई के बारे में आपका क्या ख़्याल है?" उसने प्येर को अपने स्नेहपूर्ण शब्दों के जवाब में कुछ कहने का समय दिये बिना झटपट पूछा। "मुझे उसकी बड़ी चिन्ता रहती है। जाड़े में तो उसका स्वास्थ्य बेहतर है, मगर पिछले वसन्त में उसका घाव फिर से खुल गया और डाक्टर ने कहा कि उसे इलाज करवाने के लिये विदेश जाना चाहिये। उसकी मानसिक स्थिति के बारे में भी मुझे बड़ी फ़िक्र रहती है। वह तो ऐसा आदमी नहीं है कि हम औरतों की तरह दुख-दर्द की चर्चा करके, रो-धोकर अपना जी हल्का कर ले। वह तो सब कुछ अपने दिल में ही दबाये रहता है। आज वह बहुत खुश और अच्छे मूड में है – यह तो आपके आने का उसपर ऐसा अच्छा असर हुआ है – बहुत कम ही वह ऐसे रंग में होता है। काश, आप उसे विदेश चले जाने के लिये राज़ी कर लें! यह ज़रूरी है कि वह किसी काम में जुटा रहे, क्रियाशील रहे और यह शान्त तथा नपी-तुली ज़िन्दगी उसके लिये घातक है। दूसरों का इस बात की ओर ध्यान नहीं जाता, मगर मुझसे यह छिपा नहीं है।"

नौ बजने के बाद बुजुर्ग प्रिंस की बग्घी की घंटियों की आवाज़ सुनकर नौकर-चाकर ओसारे की तरफ़ भागे। प्येर और प्रिंस अन्द्रेई भी ओसारे में आ गये।

"यह कौन है?" बुजुर्ग प्रिंस ने बग्घी से बाहर आते हुए प्येर को देखकर पूछा।

"अरे, वाह! बहुत ख़ुशी हुई! मुझे चूमो!" यह मालूम होने पर कि अपरिचित जवान आदमी कौन है, बुज़ुर्ग प्रिंस ने उससे कहा।

बुज़ुर्ग प्रिंस अच्छे मूड में थे और प्येर के साथ बहुत प्यार से पेश आये।

रात के भोजन के पहले पिता के कमरे में लौटने पर प्रिंस अन्द्रेई ने बुज़ुर्ग प्रिंस को प्येर के साथ गर्मागर्म बहस करते पाया। प्येर यह साबित कर रहा था कि ऐसा वक़्त आयेगा जब युद्ध नही होगा। बुज़ुर्ग प्रिंस प्येर की खिल्ली उड़ाते हुए, किन्तु झल्लाये बिना, उसके साथ बहस कर रहे थे।

"रगों में से ख़ून निकालकर उनमें पानी भर दो, तब युद्ध नहीं होगा। यह बूढ़ी औरतों जैसी बकवास है, बूढ़ी औरतों जैसी," उन्होंने कहा। फिर भी वह प्यार से प्येर का कंधा थपथपाकर उस मेज़ के पास चले गये, जहां प्रिंस अन्द्रेई, जो सम्भवतः इस बहस में हिस्सा नही लेना चाहता था, उन काग़ज़-पत्रों को देख रहा था जो पिता शहर से लाये थे। बुज़ुर्ग प्रिंस उसके पास जाकर उससे काम-काज की बातें करने लगे।

"कुलीन-मुखिया, काउंट रोस्तोव ने अपने आधे रंगरूट नहीं भेजे। शहर आकर उसने मुझे लंच पर निमन्त्रित करना चाहा। मैंने उसे लंच के निमंत्रण का ऐसा मज़ा चखाया कि कुछ न पूछो... लो, इस काग़ज़ को देखो... सुनो भैया," बुज़ुर्ग प्रिंस ने प्येर का कन्धा थप-थपाते हुए बेटे को सम्बोधित किया, "तुम्हारा यह दोस्त बहुत बढ़िया आदमी है, मुझे पसन्द है! दिमाग़ पर ज़ोर डालने के लिये मजबूर करता है। कोई दूसरा जब समझदारी की भी बातें करता है, तब भी सुनने को मन नही होता। लेकिन यह बेसिर-पैर की बातें करता है, फिर भी मुझ बूढ़े को सोचने के लिये विवश कर देता है। ख़ैर, तुम लोग जाओ, खाने की मेज़ पर जाओ," बुज़ुर्ग ने कहा, "हो सकता है कि मैं भी तुम लोगों के साथ वहां आ बैठूं। फिर से थोड़ी बहस कर लूंगा। मेरी बुद्धू बेटी, प्रिंसेस मरीया को प्यार करो," बुज़ुर्ग ने दरवाज़े में से ऊंची आवाज़ में प्येर से कहा।

प्येर ने अभी, लीसिये गोरि आने पर ही, प्रिंस अन्द्रेई के साथ अपनी मित्रता की सारी शक्ति और मधुरता को अनुभव किया। यह मधुरता प्रिंस अन्द्रेई के साथ उसके सम्बन्धों में उतनी नहीं, जितनी

कि उसके सभी सगे-सम्बन्धियों और घर के लोग-बाग के सम्बन्धों में व्यक्त हुई। इस चीज़ के बावजूद कि प्येर बूढ़े और कठोर प्रिंस, तथा विनीत और भीरु प्रिंसेस मरीया को लगभग नहीं जानता था, उसने यह अनुभव किया मानो उनके बीच पुरानी मित्रता हो। वे सभी उसे चाहने लगे थे। न केवल प्रिंसेस मरीया ही, जिसके मन को प्येर ने तीर्थ-यात्रियों के प्रति अपने विनम्र व्यवहार से मोह लिया था, उसकी ओर अपनी अत्यधिक कान्तिपूर्ण दृष्टि से देखती थी, बल्कि एक साल का नन्हा प्रिंस निकोलाई भी, जैसे कि दादा उसे बुलाते थे, प्येर को देखकर मुस्करा दिया और उसकी गोद में चला गया। जब वह बुज़ुर्ग प्रिंस के साथ बातें करता तो वास्तुकार मिख़ाईल इवानिच और कुमारी बुर्येन भी ख़ुशी से मुस्कराते हुए उसकी तरफ़ देखते रहते थे।

बुज़ुर्ग प्रिंस खाने की मेज़ पर आये। ज़ाहिर था कि प्येर की ख़ातिर ही उन्होंने ऐसा किया था। लीसिये गोरि में प्येर के दो दिन के आवास के दौरान वह उसके प्रति बहुत ही स्नेहशील रहे और उससे यह कहा कि वह फिर भी यहां आये।

प्येर के जाने के बाद जब परिवार के सभी लोग एकत्रित हुए और, जैसा कि किसी नये आदमी के जाने के पश्चात बहुधा होता है, उन्होंने उसके बारे में अपने विचार प्रकट किये, तो सभी ने उसके सम्बन्ध में अच्छे शब्द कहे। ऐसा तो विरले ही होता है।

## १५

इस बार छुट्टी से घर लौटने पर रोस्तोव ने पहली बार यह अनुभव किया और यह समझ लिया कि देनीसोव और पूरी रेजिमेंट के साथ उसका कितना घनिष्ठ सम्बन्ध था।

रेजिमेंट के पास पहुंचने पर उसे वैसी ही बेचैनी की अनुभूति हुई, जैसी उसने अपने घर के निकट पहुंचने पर अनुभव की थी। जब उसने अपनी रेजिमेंट का पहला हुस्सार देखा जिसकी वर्दी के बटन खुले हुए थे, जब उसने देमेनत्येव के लाल बालोंवाले सिर को पहचाना, जब उसने लाल घोड़ों को देखा, जब लाव्रूश्का ने ख़ुशी से

चिल्लाकर अपने मालिक को सूचित किया: "काउंट आ गये!" – और कच्चे घर में अपने बिस्तर पर सो रहा अस्त-व्यक्त बालोंवाला देनीसोव भागकर बाहर आया तथा उसने उसे गले लगाया और उसका स्वागत करने के लिये उसी क्षण अफ़सर जमा हो गये तो रोस्तोव वैसी ही भावना से अभिभूत हो गया जैसी भावना उसने माता-पिता और बहनों से मिलते वक़्त अनुभव की थी। ख़ुशी के आंसुओं से उसका गला रुंध गया और वह कुछ भी नही कह पाया। रेजिमेंट भी उसका घर थी और माता-पिता के घर की तरह यह घर भी उतना ही मधुर और प्यारा था।

रेजिमेंट-कमांडर को अपने आने की रिपोर्ट देने और पहलेवाले स्क्वाड्रन में नियुक्ति पाने, अफ़सर के नाते अपनी ड्यूटी बजाने और चारा जुटाने के लिये जाने के बाद, रेजिमेंट की सभी छोटी-मोटी रुचियों का फिर से अभ्यस्त हो जाने, अपनी आज़ादी से वंचित होने और रेजिमेट की सीमित तथा बंधी-बंधायी गति-विधियों के घेरे में बन्द हो जाने के पश्चात रोस्तोव ने वैसा ही चैन, उसी तरह का सहारा और उसी प्रकार की यह चेतना अनुभव की कि यहां भी वह अपने ही घर में है, अपनी ठीक जगह पर है, जैसे उसने यही सब कुछ माता-पिता की छत्र-छाया में महसूस किया था। यहां ऊंची, आज़ाद सोसाइटी की वह दौड़-धूप नही थी जिसमें वह अपने को पराया-सा अनुभव करता था और जहां अपनी इच्छानुसार काम करने में उससे अक्सर भूलें हो जाती थी। यहां सोन्या नहीं थी जिसके साथ उसे अपने सम्बन्धों को स्पष्ट करना या नही स्पष्ट करना चाहिये था। यहां उसे यह तय करने की ज़रूरत नही थी कि वह कहां जाये और कहां न जाये; उसके पास वे चौबीस घण्टे नहीं थे जिनका एक या दूसरे ढंग से उपयोग किया जा सकता था; ढेरों-ढेर वे लोग नही थे जिनमें से किसी में भी उसकी ख़ास दिलचस्पी थी या नहीं थी; पैसों के मामले में पिता के समान अस्पष्ट और अनिश्चित सम्बन्ध नहीं थे; दोलोख़ोव के साथ जुए में हारी गयी बहुत बड़ी रक़म की कटु स्मृति भी नहीं थी! यहां, रेजिमेंट में सभी कुछ स्पष्ट और सीधा-सादा था। सारी दुनिया दो असमान भागों में विभाजित थी: एक भाग था – हमारी पाव्लोग्राद की रेजिमेंट और दूसरा – बाक़ी सब कुछ। इस बाक़ी सब कुछ से उसे कोई मतलब नहीं था। रेजिमेंट में सब कुछ स्पष्ट था – कौन लेफ़्टिनेंट है और कौन

कप्तान, कौन अच्छा आदमी है तथा कौन बुरा और सबसे बढ़कर तो यह कि कौन अच्छा साथी है। कैंटीन का मालिक उधार चीज़ें देने से कभी इन्कार नहीं करता, हर चौथे महीने वेतन मिल जाता है, खुद कुछ भी सोचने और चुनने का कोई प्रश्न नहीं, केवल ऐसा कुछ नहीं करना चाहिये जिसे पाव्लोग्राद की रेजिमेंट में बुरा समझा जाता है। अगर कुछ करने को कहीं भेजा जाता है तो आदेशानुसार वह काम पूरा कर दो जो स्पष्ट तथा पूर्वनिश्चित है – और बस, सब ठीक है।

रेजिमेंट के जीवन की इन स्पष्ट स्थितियों में फिर से लौटने पर रोस्तोव को वैसी ही प्रसन्नता और शान्ति की अनुभूति हुई, जैसी थका-हारा आदमी बिस्तर पर लेटकर अनुभव करता है। इस बार के युद्ध-अभियान के समय उसे रेजिमेंट का जीवन इस कारण और भी अधिक सुखद लग रहा था कि दोलोखोव के साथ जुए में इतनी बड़ी रक़म हारने के बाद ( यह वह हरकत थी जिसके लिये माता-पिता के बहुत तसल्ली देने पर भी उसने अपने को क्षमा नहीं किया था ) उसने यह तय किया था कि वह पहले की तरह ही काम नहीं करेगा, बल्कि अपने इस अपराध का प्रायश्चित करने के लिये बहुत ही अच्छी तरह से ड्यूटी बजायेगा, बहुत बढ़िया साथी और अफ़सर यानी श्रेष्ठ मानव बनेगा। ऊंची सोसाइटी में उसे ऐसा कर पाना बहुत कठिन प्रतीत होता था, जबकि रेजिमेंट में बिल्कुल सम्भव लगता था।

रोस्तोव ने जुए में रक़म हारने के समय से ही यह तय कर लिया था कि पांच सालों में माता-पिता को यह क़र्ज़ चुका देगा। मां-बाप उसे हर साल दस हज़ार रूबल भेजते थे, अब उसने वर्ष में केवल दो हज़ार रूबल लेने और शेष आठ हज़ार ऋण चुकाने के लिये उन्हीं के पास छोड़ देने का निर्णय किया।

हमारी सेना कई बार पीछे हटने, आक्रमण करने और पुलतुस्क तथा प्रैसिश-एइलाऊ के निकट लड़ाई में हिस्सा लेने के बाद बार्टेनश्टैन के नज़दीक संकेन्द्रित हो गयी थी। वह सम्राट के आगमन और नये युद्ध-अभियान के आरम्भ होने की प्रतीक्षा कर रही थी।

पाव्लोग्राद की रेजिमेंट हमारी सेना का वह अंग थी जिसने १८०५ के अभियान में भाग लिया था और रूस में अपने सैनिकों की क्षति की पूर्ति कर रही थी। वह अभियान के पहले दौर में शामिल नहीं हो सकी

थी। उसने न तो पुलतुस्क और न ही प्रैसिश-एइलाऊ की लड़ाई में भाग लिया था और अभियान के दूसरे दौर के मध्य में युद्धरत सेना के साथ जा मिलने पर इसे प्लातोव डिवीज़न में सम्मिलित कर दिया गया था।

प्लातोव डिवीज़न बाक़ी सेना से स्वतन्त्र रूप में काम कर रहा था। पाव्लोग्राद की रेजिमेंट के कुछ दस्तों ने कई बार दुश्मन का सामना किया था, उसके सैनिकों को बन्दी बनाया था और एक बार तो मार्शल ऊदीनो * की कुछ बग्घियां भी अपने क़ब्ज़े में कर ली थीं। अप्रैल में पाव्लोग्राद की रेजिमेंट के हुस्सार पूरी तरह से बरबाद हो गये एक जर्मन गांव के पास कई सप्ताह तक पड़ाव डाले रहे, वहां से हिले-डुले ही नहीं।

बर्फ़ पिघलने लगी थी, सभी ओर गन्दगी थी, ठण्ड थी, नदियों में बर्फ़ टूट रही थी, रास्तों पर आना-जाना असम्भव हो गया था। कई-कई दिनों तक न तो लोगों को रसद और न घोड़ों को चारा ही दिया गया था। चूंकि रसद का आना नामुमकिन हो गया था, इसलिये सैनिक आलुओं की तलाश में उन सुनसान गांवों में इधर-उधर बिखर गये जिन्हें लोग छोड़कर चले गये थे। किन्तु उन्हें आलू भी बहुत कम मिलते थे।

सभी कुछ खाया जा चुका था, सभी लोग भाग गये थे। अगर कुछ रह भी गये थे तो उनकी भिखमंगों से बुरी हालत थी और उनसे कुछ भी छीना नहीं जा सकता था। स्थिति ऐसी थी कि बहुत ही कम दया-रहम करनेवाले सैनिक भी उनसे कुछ लेने के बजाय अक्सर अपनी बची-खुची रसद भी उन्हें दे देते थे।

लड़ाइयों में तो पाव्लोग्राद की रेजिमेंट के केवल दो सैनिक घायल हुए थे, जबकि भूख और बीमारी से उसके लगभग आधे लोग मर गये थे। अस्पतालों में मौत इतनी यक़ीनी थी कि सैनिक बुखार तथा बुरी खुराक के कारण हो जानेवाली सूजन के बावजूद अस्पताल में जाने के बजाय किसी तरह गिरते-पड़ते अपनी फ़ौजी ड्यूटी पर बने रहना बेहतर समझते थे। वसन्त के आगमन पर सैनिकों को धरती से अपने आप फूट निकलनेवाले शतावर से मिलता-जुलता एक पौधा दिखाई देने लगा जिसे, न जाने क्यों, वे "माशा की मीठी जड़" कहते थे।

---

* नेपोलियन का एक मार्शल। – स०

वे इसी मीठी जड़ ( जो वास्तव में बहुत कड़वी थी ) की तलाश में दूर-दूर तक चरागाहों और खेतों में जाने लगे, तलवारों से खोदकर इन्हें निकालते और इस हानिकारक पौधे को खाने की मनाही के हुक्म के बावजूद इसे खाते रहते। वसन्त में सैनिकों में एक नयी बीमारी सामने आई – उनके हाथ-पांव और चेहरे सूज जाते थे। डाक्टरों का कहना था कि यह बीमारी इसी मीठी जड़ के इस्तेमाल का नतीजा है। किन्तु निषेध की परवाह न करते हुए देनीसोव के स्क्वाड्रन के हुस्सार मुख्यत: मीठी जड़ें ही खाते थे, क्योंकि दो सप्ताह से बचे-बचाये रस्कों से बमुश्किल काम चलाया जा रहा था, हर सैनिक को केवल आध पौण्ड रस्क दिये जाते थे और आख़िरी बार लाये जानेवाले आलू पाले के मारे हुए थे तथा अंकुरित होने या फूटने लगे थे।

दो हफ़्तों से घोड़े भी फूस की छतों से उतारा गया फूस खा रहे थे, बेहद दुबले-पतले हो गये थे और जाड़े के बाल गुच्छों के रूप में अभी भी उनके बदन पर लटके हुए थे।

ऐसी भयानक स्थिति के बावजूद सैनिक और अफ़सर बिल्कुल हमेशा जैसा जीवन बिता रहे थे। हुस्सारों के चेहरे बेशक पीले और सूजे हुए थे तथा उनकी वर्दियां ख़स्ता हालत में थीं, फिर भी वे हाज़िरी के लिये क़तार में खड़े होते, झाड़-बुहार करते, घोड़ों और अपनी बन्दूक़ों को साफ़ करते, चारे की जगह छतों से फूस उतारकर घोड़ों के सामने डालते, खाने के लिये देगों-कड़ाहों के पास जमा होते और बहुत ही बुरे भोजन तथा अपनी भूख का मज़ाक़ उड़ाते हुए मेज़ों से भूखे पेट उठते। हमेशा की तरह ड्यूटी के बाद के वक़्त सैनिक अलाव जलाते, उनके पास नंगे बदन बैठकर ख़ूब आग तापते, तम्बाकू पीते, अंकुरित और सड़े हुए आलू बटोरकर उन्हें आग में भूनते तथा प्रसिद्ध रूसी सेनापतियों और सुवोरोव की लड़ाइयों की दास्तानें अथवा मक्कार अल्योशा और पादरी के सेवक मिकोलका के क़िस्से-कहानियां सुनते।

हमेशा की तरह दो-दो, तीन-तीन अफ़सर छतों के बिना टूटे-फूटे घरों में रह रहे थे। बड़े अफ़सर फूस और आलू हासिल करने यानी कुल मिलाकर लोगों के लिये भोजन जुटाने का प्रयत्न करते, जबकि छोटे अफ़सर हमेशा की तरह या तो जुआ खेलते ( रसद नहीं थी, मगर पैसे बहुत थे ) या फिर तरह-तरह की दूसरी चीज़ों में वक़्त बिताते। लड़ाई का ऊंट किस करवट बैठ रहा है, इसकी बहुत कम चर्चा

की जाती, कुछ हद तक तो इसलिये कि उन्हें उसके बारे में निश्चित रूप से कुछ मालूम नहीं था और कुछ हद तक इसलिये कि वे अस्पष्ट रूप से यह अनुभव करते थे कि लड़ाई का सारा रंग-ढंग अच्छा नहीं है।

रोस्तोव पहले की तरह देनीसोव के साथ ही रहता था और छुट्टियों के समय से उनकी दोस्ती का रंग और भी गाढ़ा हो गया था। देनीसोव कभी भी रोस्तोव-परिवार की चर्चा नहीं करता था, किंतु कमांडर देनीसोव अफ़सर रोस्तोव पर जितना प्यार उंडेलता था, उससे रोस्तोव यह अनुभव करता कि उम्र में ख़ासे बड़े हुस्सार का नताशा के प्रति असफल प्रेम उसकी मैत्री-भावना को अधिक तीव्र बनाने में योग दे रहा है। देनीसोव स्पष्टतः रोस्तोव को यथासम्भव ख़तरे से बचाने की कोशिश करता और अगर ख़तरे का ऐसा मौक़ा आ ही जाता तो उसके सही-सलामत तथा ठीक-ठाक लौट आने पर बेहद ख़ुश होता। अपनी एक ड्यूटी के समय एक तबाह और उजड़े गांव में, जहां वह रसद की तलाश में गया था, उसे एक बूढ़े पोलैंडी तथा गोद के बच्चे के साथ उसकी बेटी का परिवार मिल गया। उनके पास काफ़ी कपड़े नहीं थे, वे भूखे थे और जाने के साधन न होने के कारण वहां से जा भी नहीं सकते थे। रोस्तोव उन्हें अपने पड़ाव पर ले आया, उसने उन्हें अपने रहने का स्थान दे दिया और बूढ़े के स्वस्थ होने तक उन्हें खिलाता-पिलाता रहा। औरतों की चर्चा करते हुए रोस्तोव के एक साथी ने मज़ाक़ में उससे यह कहा कि वह उन सभी से ज़्यादा चालाक है और कुछ बुरा नहीं होगा अगर वह अपने साथियों की भी उस प्यारी-सी पोलैंडी युवती से जान-पहचान करा दे जिसे उसने बचाया है। रोस्तोव ने इस मज़ाक़ को अपना अपमान माना और ग़ुस्से में आकर उस अफ़सर को ऐसी खरी-खोटी बातें सुना दीं कि देनीसोव बड़ी मुश्किल से ही उन्हें द्वन्द्व-युद्ध करने से रोक पाया। उस अफ़सर के चले जाने पर देनीसोव, जो ख़ुद भी यह नहीं जानता था कि उस पोलैंडी युवती के साथ रोस्तोव के क्या सम्बन्ध हैं, उसके इस तरह भड़क उठने के लिये जब उसकी लानत-मलामत करने लगा तो रोस्तोव ने उसे जवाब दिया:

"मैं इसके सिवा और कर ही क्या सकता था... मेरे लिये वह बहन के समान है और मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि इससे मेरे दिल को कैसी ठेस लगी... क्योंकि... इसलिये कि..."

देनीसोव ने रोस्तोव का कंधा थपथपाया और उसकी ओर देखे

बिना कमरे में जल्दी-जल्दी इधर-उधर आने-जाने लगा। वह मानसिक विह्वलता की स्थिति में ही ऐसा करता था।

"ओह, बड़े अजीब हो तुम रोस्तोव कुल के लोग," वह कह उठा और रोस्तोव को देनीसोव की आंखों में आंसुओं की झलक मिली।

## १६

अप्रैल में सम्राट के आने की ख़बर से सेनाओं में ख़ुशी की लहर दौड़ गयी। रोस्तोव उस परेड में उपस्थित नहीं हो सका जिसका सम्राट ने बार्टेनश्टैन में निरीक्षण किया – क्योंकि पाव्लोग्राद की रेजिमेंट बार्टेनश्टैन से बहुत दूर, अग्रिम चौकियों पर तैनात थी।

यह रेजिमेंट पड़ाव डाले थी। देनीसोव और रोस्तोव सैनिकों द्वारा इनके लिये ज़मीन खोदकर बनायी गयी झोंपड़ी में रहते थे जो टहनियों-शाखाओं और घास-फूस से ढकी हुई थी। यह झोंपड़ी उस समय के प्रचलित ढंग से एक मीटर चौड़ी, डेढ़ मीटर गहरी और ढाई मीटर लम्बी ख़न्दक़ खोदकर बनायी गयी थी। इस ख़न्दक़ के एक सिरे पर पैड़ियां बनायी जाती थीं और ये पैड़ियां झोंपड़ी में जाने का रास्ता या प्रवेश-द्वार होती थीं। ख़ुद ख़न्दक़ कमरा होती थी जिसमें स्क्वाड्रन-कमांडर जैसे ख़ुशक़िस्मतों के लिये पैड़ियों के सामनेवाले कोने में डंडों पर एक तख़्ता भी रखा रहता था जो मेज़ का काम देता था। ख़न्दक़ के दोनों ओर पौन मीटर ज़मीन और खोद दी जाती थी और यह जगह दो चारपाइयों तथा सोफ़े के लिये होती थी। छत ऐसे बनायी जाती थी कि ख़न्दक़ के मध्य में आदमी खड़ा भी हो सकता था और अगर वह मेज़ के निकट हो जाये तो उसके लिये चारपाई पर बैठना भी सम्भव था। देनीसोव की झोंपड़ी में, जो इसलिये बड़े ठाठ से रहता था कि उसके स्क्वाड्रन के लोग उसे चाहते थे, छत के सामनेवाले भाग में एक तख़्ता भी लगा था और उसमें टूटा हुआ, किंतु जोड़ा गया एक शीशा भी फ़िट कर दिया गया था और इस तरह खिड़की बना दी गयी थी। जब बहुत ज़्यादा ठण्ड होती तो सैनिकों के अलाव से लोहे के एक मुड़े हुए टुकड़े पर दहकते अंगारे लाकर पैड़ियों के पास (जिसे

देनीसोव अतिथि-कक्ष कहता था) रख दिये जाते थे और वहां ऐसी गर्मी हो जाती थी कि अफ़सर लोग, जो हमेशा बड़ी संख्या में देनीसोव और रोस्तोव के पास आते रहते थे, सिर्फ़ क़मीज़ें पहने हुए ही बैठे रहते।

अप्रैल में रोस्तोव ड्यूटी-अफ़सर का कर्त्तव्य पूरा करता रहा। उनींदी रात के बाद एक दिन सुबह के सात और आठ बजे के बीच अपनी झोंपड़ी में लौटने पर उसने अंगारे लाने का हुक्म दिया, बारिश में भीगे हुए अपने कपड़े बदले, भगवान की प्रार्थना की, चाय पी, गर्म हो गया, उसने अपने कोने तथा मेज़ को ठीक-ठाक किया और मौसम के प्रभाव तथा गर्मी से तमतमाये चेहरे के साथ एक क़मीज़ पहने तथा हाथों को सिर के नीचे रखकर चित लेट गया। वह यह सोचकर ख़ुश हो रहा था कि कुछ ही समय पहले उसके द्वारा की गयी टोहिया-कार्रवाइयों के लिये उसे जल्द ही नया सैनिक पद मिलेगा और वह झों-पड़ी से कहीं बाहर चले गये देनीसोव की राह देख रहा था। रोस्तोव का उससे बातचीत करने को मन हो रहा था।

इसी समय उसे झोंपड़ी के पीछे से देनीसोव की क्रोधपूर्ण ऊंची आवाज़ सुनायी दी। रोस्तोव यह देखने के लिये कि देनीसोव किस पर चीख़-चिल्ला रहा है, खिड़की से सट गया। उसने देखा कि वह क्वाटर मास्टर तोप्चेयेन्को पर बरस रहा है।

"मैंने तुम्हें हुक्म दिया था न कि तुम फ़ौजियों को यह 'माशा की जड़ें' खाने के लिये नहीं जाने देना!" देनीसोव चिल्ला रहा था। "लेकिन मैंने अपनी आंखों से लाज़ारचूक को उन्हें मैदान से लाते देखा है।"

"हुज़ूर, मैंने उन्हें यह हुक्म दिया था, मगर वे मेरी बात पर कान ही नहीं देते," क्वाटर मास्टर ने जवाब दिया।

रोस्तोव फिर से अपनी चारपाई पर लेट गया और सुखी मन से यह सोचने लगा: "ठीक है, अब वह तंग और परेशान होता रहे, मैंने तो अपनी ड्यूटी पूरी कर दी और अब आराम से लेटा हुआ हूं – बड़े मज़े हैं!" दीवार के पीछे से उसे क्वाटर मास्टर के अलावा देनीसोव के दबंग और चालाक अरदली लाव्रूश्का के कुछ कहने की भी आवाज़ सुनायी दी। वह किन्हीं बैल-गाड़ियों, रस्कों और बैलों की चर्चा कर रहा था जिन्हें उसने उस समय देखा था जब वह रसद के लिये गया था।

रोस्तोव को झोंपड़ी से कुछ दूरी पर फिर से ऊंची आवाज़ में

देनीसोव के ये शब्द सुनायी दिये: "दूसरा दस्ता घोड़ों पर ज़ीन कस ले!"

"कहां जाने की तैयारी हो रही है यह?" रोस्तोव ने सोचा।

पांच मिनट के बाद देनीसोव झोंपड़ी में आया, गन्दे बूट उतारे बिना ही बिस्तर पर लेट गया और झुंझलाया हुआ-सा पाइप पीता रहा। उसने अपनी चीज़ें इधर-उधर बिखरा दी, कोड़ा और खड्ग पेटी से लटका लिये तथा झोंपड़ी से बाहर जाने लगा। रोस्तोव के यह पूछने पर कि वह कहां जा रहा है, उसने खीझते हुए अनिश्चित-सा उत्तर दिया कि कोई काम है।

"बाद में भगवान और महान सम्राट ही मेरा निर्णय करें!" देनीसोव ने बाहर जाते हुए कहा और रोस्तोव को झोंपड़ी के पीछे कीचड़ में से छपछप की आवाज़ पैदा करते और जाते हुए कुछ घोड़ों की टापें सुनायी दीं। रोस्तोव ने यह तक जानने की परवाह नहीं की कि देनीसोव कहां गया है। अपने कोने में गर्माहट महसूस करते हुए वह सो गया और शाम होने के कुछ पहले ही झोंपड़ी से बाहर आया। देनीसोव अभी तक नहीं लौटा था। मौसम सुहावना हो गया था – पड़ोस की झोंपड़ी के पास दो अफ़सर और एक केडेट भुरभुरी और कीचड़वाली ज़मीन में किल्लियां गाड़ने का खेल खेल रहे थे। रोस्तोव भी उनके साथ खेलने लगा। खेल के दौरान अफ़सरों ने माल ढोनेवाली गाड़ियों को अपनी ओर आते देखा। दुबले-पतले घोड़ों पर पन्द्रह हुस्सार उनके पीछे-पीछे आ रहे थे। हुस्सारों की निगरानी में आनेवाली इन गाड़ियों के घोड़ों के खूंटों के पास पहुंचने पर हुस्सारों की भीड़ ने उन्हें घेर लिया।

"यह लीजिये, देनीसोव तो हमेशा परेशान होता रहता था," रोस्तोव ने कहा, "रसद तो आ भी गयी।"

"हां, आ गयी!" अफ़सरों ने कहा। "फ़ौजियों की खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं रहेगा!"

हुस्सारों से कुछ पीछे घोड़े पर सवार देनीसोव पैदल फ़ौज के दो अफ़सरों के साथ कुछ बातें करता हुआ आ रहा था। रोस्तोव उसकी तरफ़ बढ़ गया।

"मैं आपको आगाह किये जा रहा हूं, कप्तान," उन दो में से एक दुबले-पतले और नाटे अफ़सर ने कहा जो स्पष्टतः बहुत गुस्से में था।

"मैंने कह तो दिया कि नहीं दूंगा," देनीसोव ने उत्तर दिया।

"आपको इसके लिये जवाब देना पड़ेगा, यह सरासर ज़्यादती है कि अपने ही लोगों से रसद छीन ली जाये! हमारे लोगों ने दो दिन से कुछ नहीं खाया।"

"और मेरे लोगों ने दो हफ़्तों से," देनीसोव ने जवाब दिया।

"यह तो दिन दहाड़े डकैती है! देख लीजिये जनाब, आपको इसका भुगतान करना पड़ेगा।" प्यादा फ़ौज के अफ़सर ने ऊंची आवाज़ में दोहराया।

"आप मेरा सिर क्यों खा रहे हैं? किसलिये?" देनीसोव अचानक गुस्से में आकर चिल्ला उठा। जवाब मैं दूंगा, आप तो नहीं। आप यहां चख़-चख़ नहीं कीजिये और जब तक सही-सलामत हैं, चलते बनिये! जाइये!" वह प्यादा फ़ौज के अफ़सरों पर चिल्ला उठा।

"ऐसा ही है, तो ठीक है!" प्यादा फ़ौज के नाटे अफ़सर ने डरे बिना और वहां से अपना घोड़ा हटाये बिना चिल्लाकर कहा। "अगर आप डाकाज़नी पर ही उतारू हैं तो मैं आपको..."

"जब तक हड्डी-पसली सलामत है, जल्दी से जहन्नुम में चलते बनो!" और देनीसोव ने अपना घोड़ा अफ़सर की तरफ़ मोड़ दिया।

"अच्छी बात है, अच्छी बात है," प्यादा फ़ौज का अफ़सर धमकी-सी देते हुए कह उठा और घोड़े को मोड़कर उसे दुलकी चाल से दौड़ाते और ज़ीन पर दायें-बायें हिलते-डुलते हुए आगे बढ़ चला।

"वाड़ पर कुत्ता, बाड़ पर ज़िन्दा कुत्ता," देनीसोव ने पीछे से पुकारकर कहा। ये सबसे अपमानजनक वे शब्द थे जो घुड़सेना का अफ़सर प्यादा फ़ौज के अफ़सर के प्रति कह सकता था। रोस्तोव के पास आकर देनीसोव ने ठहाका लगाया।

"मैंने प्यादा फ़ौजवालों से रसद की गाड़ियां छीन लीं, ज़बर्दस्ती छीन ली!" उसने कहा। "आख़िर लोगों को भूख से तो नहीं मरने दिया जा सकता!"

हुस्सारों के पास आ जानेवाले रसद से भरे छकड़े प्यादा रेजिमेंट के लिये भेजे गये थे। किन्तु लाव्रूश्का से यह सूचना मिलने पर कि उनके साथ सैनिक रक्षक-दल नहीं है, देनीसोव ने अपने हुस्सारों को साथ ले जाकर उन्हें ज़बर्दस्ती क़ब्ज़े में कर लिया था। सैनिकों को जी भरकर रस्क दिये गये, यहां तक कि अन्य स्क्वाड्रनों में भी बांटे गये।

अगले दिन रेजिमेंट-कमांडर ने देनीसोव को अपने पास बुलवाया और खुली उंगलियों से आंखों को ढंकते हुए उससे कहा : "इस मामले के प्रति मेरा रवैया यह है। मुझे इससे कुछ लेना-देना नहीं, मुझे कुछ भी मालूम नहीं और मैं तुम्हारे विरुद्ध कोई भी कार्रवाई नहीं करूंगा। किन्तु तुम्हें यह सलाह देता हूं कि तुम मुख्य सैनिक कार्यालय में चले जाओ, वहां रसद विभाग में जाकर मामले को ठीक-ठाक कर लो और अगर सम्भव हो तो ऐसी रसीद पर हस्ताक्षर कर आओ कि हमें इतनी रसद मिल गयी है। यदि तुम ऐसा नहीं करते हो और यह रसद प्यादा रेजिमेंट के हिसाब में लिख दी जाती है तो कोई झंझट पैदा हो जायेगा और उसका बुरा अंजाम हो सकता है।"

देनीसोव रेजिमेंट-कमांडर के यहां से ही मुख्य सैनिक कार्यालय की ओर रवाना हो गया। वह सच्चे दिल से अपने कमांडर की सलाह को अमली शक्ल देना चाहता था। शाम को वह ऐसी हालत में अपनी झोंपड़ी में लौटा, जैसी हालत में रोस्तोव ने उसे पहले कभी नहीं देखा था। देनीसोव से बोला नहीं जा रहा था और वह सांस लेने में कठिनाई अनुभव कर रहा था। रोस्तोव के यह पूछने पर कि उसे क्या हुआ है, देनीसोव खरखरी और क्षीण आवाज़ में कुछ अस्पष्ट-असम्बद्ध गालियां तथा धमकियां देकर ही चुप हो गया।

देनीसोव की ऐसी हालत से घबराकर रोस्तोव ने उससे कपड़े बदल लेने और पानी पीने को कहा तथा डाक्टर को बुलवा भेजा।

"मुझपर डकैती के लिये मुक़दमा चलाया जायेगा – ओह ! थोड़ा और पानी दो... चलाते रहें मुक़दमा, लेकिन मैं हमेशा कमीनों की पिटाई करता रहूंगा और सम्राट से भी यही कह दूंगा। बर्फ़ दो," वह कह उठा।

रेजिमेंट का डाक्टर आ गया और उसने कहा कि देनीसोव का कुछ खून निकालना ज़रूरी है। देनीसोव की घने बालों से ढकी बांह से गहरी प्लेट भरकर काला खून निकाल देने पर ही वह अपने साथ बीतनेवाली सारी बात बता पाया।

"तो मैं वहां पहुंचा," देनीसोव ने बताना शुरू किया। "'आपका संचालक कहां है?' अर्दली ने उसके कमरे की ओर इशारा किया और बोला : 'थोड़ा इन्तज़ार कीजिये।' – 'मुझे भी बहुत-से काम-काज हैं, मैं तीस किलोमीटर से ज़्यादा लम्बा रास्ता तय करके आया हूं, मेरे

पास इन्तज़ार करने का वक़्त नहीं है, मेरे आने की सूचना दे दो।' तो वह चोरों का सरदार, बड़ा चोर बाहर आया और लगा मुझे अक़्ल सिखाने। 'यह डाकाज़नी है!' उसने कहा। 'डाकाज़नी वह नहीं करता है जो अपने सैनिकों को खिलाने के लिये रसद लेता है, बल्कि वह करता है जो उससे अपनी जेब गर्माता है।' ख़ैर। 'तो कमिश्नर के दफ़्तर में जाकर रसीद पर दस्तख़्त कर दीजिये, मगर आपका यह मामला मुख्य सेनाधिकारियों को भेज दिया जायेगा।' मैं कमिश्नर के दफ़्तर में पहुंचा। भीतर गया तो क्या देखता हूं कि मेज़ के पीछे वहां कौन बैठा है?! नहीं, तुम ज़रा कल्पना तो करो! . कौन हमें भूखों मार रहा था," उसने उसी हाथ से जिससे ख़ून निकाला गया था, मेज़ पर इतने ज़ोर से घूंसा मारा कि मेज़ गिरते-गिरते बची और उसपर रखे हुए गिलास उछल पड़े। "तेल्यानिन!! 'अच्छा, तो यह तुम हो जो हमें भूखों मार रहे हो!' और मैंने तड़ाक से उसके तोबड़े पर एक घूंसा जड़ दिया... 'ओह, तुम नीच, कमीने...' और मैं लगा उसकी ख़ूब मरम्मत करने! सच कहता हूं, मज़ा आ गया मुझे," काली मूंछों के नीचे से सफ़ेद दांतों की झलक देते हुए देनीसोव ने द्वेषपूर्ण प्रसन्नता से चिल्लाकर कहा। "अगर लोग उसे बचा न लेते तो मैंने तो उसे मार ही डाला होता।"

"तुम चिल्ला क्यों रहे हो, शान्त हो जाओ," रोस्तोव ने कहा। "देखो, फिर से ख़ून बहने लगा है। ज़रा आराम से बैठे रहो, बांह पर फिर से पट्टी बांधनी होगी।"

देनीसोव की बांह पर फिर से पट्टी बांधकर उसे बिस्तर पर लेटा दिया गया। अगले दिन आंख खुलने पर वह शान्त और ख़ुश था।

किन्तु दोपहर के वक़्त रेजिमेंट-कमांडर का एडजुटेंट गम्भीर और दुखी-सी सूरत बनाये हुए देनीसोव तथा रोस्तोव की झोंपड़ी में आया और बहुत अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए उसने मेजर देनीसोव के नाम रेजिमेंट-कमांडर द्वारा औपचारिक रूप से तैयार किया गया वह काग़ज़ दिखाया जिसमें पिछले दिन की घटनाओं के बारे में पूछ-ताछ की गयी थी। एडजुटेंट ने बताया कि मामला बहुत ही बुरा रुख़ लेनेवाला है, कि फ़ौजी अदालत नियुक्त कर दी गयी है और सेना की इस समय की लूट-मार तथा अनुशासन की हरकतों के सिलसिले में कड़ाई को देखते हुए अगर उसे मेजर से मामूली फ़ौजी बना देने पर ही बात ख़त्म हो

जाये तो उसे अपने को ख़ुशक़िस्मत समझना चाहिये।

देनीसोव के विरोधियों ने मामले को इस तरह पेश किया था कि छकड़ों पर ज़बर्दस्ती क़ब्ज़ा करने के बाद मेजर देनीसोव किसी तरह के बुलावे के बिना ही शराब पिये हुए रसद के बड़े अधिकारी के पास गया, उसने उसे चोर कहा, पीटने की धमकी दी और जब उसे वहां से हटाया गया तो वह दफ़्तर में जा घुसा, उसने दो क्लर्कों को पीट डाला और एक की बांह की हड्डी उतार दी।

रोस्तोव के और सवाल पूछने पर देनीसोव ने हंसते हुए कहा कि ऐसे लगता है कि ज़रूर कोई दूसरा आदमी सामने आ गया होगा, लेकिन यह सब बकवास है, बेसिर-पैर की बातें हैं, कि वह किसी फ़ौजी अदालत-वदालत से डरनेवाला नहीं है और अगर ये कमीने उसके साथ कोई झगड़ा मोल ही लेना चाहेंगे तो इन्हें ऐसा मुंह तोड़ जवाब देगा कि उम्र भर याद रखेंगे।

देनीसोव इस सारे मामले की बहुत उपेक्षा-भाव से चर्चा करता रहा। लेकिन रोस्तोव तो अपने दोस्त को बहुत अच्छी तरह से जानता-समझता था और इसलिये उससे यह बात छिपी नहीं रह सकती थी कि देनीसोव फ़ौजी अदालत से डरता था और इस मामले से बड़ा व्यथित था ( यद्यपि दूसरों से इसे छिपाता था ), जिसका सम्भवतः बहुत बुरा नतीजा होनेवाला था। हर दिन पूछ-ताछ के काग़ज़ और अदालत के नोटिस आने लगे तथा यह हुक्म जारी कर दिया गया कि पहली मई को वह अपने से नीचेवाले वरिष्ठ अफ़सर को स्क्वाड्रन की कमान सौंप दे और उसके द्वारा रसद के दफ़्तर में की गयी हुल्लड़बाज़ी की जवाबदेही के लिये डिवीज़न के मुख्य सैनिक कार्यालय में हाज़िर हो। इसके एक दिन पहले प्लातोव ने कज़्ज़ाकों की दो रेजिमेंटें और हुस्सारों के दो स्क्वाड्रन अपने साथ लेकर दुश्मन की टोह लेने का काम किया। देनीसोव हमेशा की तरह अपनी बहादुरी की शान दिखाता हुआ सबसे आगे-आगे अपना घोड़ा बढ़ा रहा था। फ़्रांसीसी निशानेबाज़ की एक गोली उसकी टांग के ऊपरी, मांसल भाग में आ लगी। किसी दूसरे वक़्त तो देनीसोव शायद ऐसे छोटे-से घाव की कोई परवाह न करता और रेजिमेंट से कहीं न जाता, लेकिन अब इस मौक़े से फ़ायदा उठाकर उसने डिवीज़न के मुख्य सैनिक कार्यालय में जाने से इन्कार कर दिया और अस्पताल चला गया।

## १७

जून में फ़्रीडलैंड की लड़ाई* हुई। पाव्लोग्राद की रेजिमेंट ने उसमें हिस्सा नहीं लिया और इसके बाद विराम-सन्धि हो गयी। रोस्तोव को अपने दोस्त की अनुपस्थिति बहुत खल रही थी और चूंकि उसके जाने के बाद से उसकी ख़ैर-खबर नहीं मिली थी और उसे उसके मामले तथा घाव की भी चिन्ता थी, इसलिये उसने इस विराम-सन्धि का उपयोग किया और अनुमति लेकर देनीसोव से अस्पताल में मिलने चला गया।

अस्पताल प्रशा की छोटी-सी बस्ती में था जिसे रूसी और फ़्रांसीसी सेनायें दो बार लूट चुकी थीं। क्योंकि गर्मी के ऐसे दिन थे, जब खेत-मैदान इतने अच्छे और प्यारे लगते हैं, इसी कारण टूटी-फूटी छतों और बाड़ों, गन्दी-मन्दी गलियों तथा चिथड़े पहने जहां-तहां आवारा-गर्दी करते यहां के निवासियों, शराबियों और बीमार सैनिकोंवाली यह बस्ती विशेष रूप से बड़ा अवसादपूर्ण दृश्य प्रस्तुत करती थी।

बची-बचायी बाड़वाले एक अहाते के पक्के मकान में, जिसकी अधिकतर खिड़कियों के चौखटे और शीशे टूटे हुए थे, अस्पताल था। पट्टियां-बांधे, पीले और सूजे चेहरोंवाले कुछ फ़ौजी अहाते में इधर-उधर आ-जा रहे थे या धूप में बैठे थे।

इस घर के दरवाज़े में दाखिल होते ही रोस्तोव ने सड़ते जिस्मों और अस्पताल की तेज़ गंध अनुभव की। ज़ीने पर उसकी रूसी फ़ौजी डाक्टर से मुलाक़ात हो गयी। डाक्टर मुंह में सिगार दबाये था। डाक्टर के पीछे-पीछे उसका रूसी सहायक आ रहा था।

"मैं सभी जगह तो नहीं हो सकता, अपने टुकड़े तो नहीं कर सकता," डाक्टर कह रहा था। "शाम को मकार अलेक्सेयेविच के यहां आ जाना, मैं वहां हूंगा।" डाक्टर के सहायक ने उससे कुछ और पूछा।

"अरे भाई, जैसा ठीक समझो, वैसा करो! क्या किसी चीज़

---

* इस लड़ाई में बेनिगसेन ने बहुत ही अटपटी सैनिक स्थिति अपनायी जिसका नेपोलियन ने लाभ उठाया और रूसी सेनाओं को फ़्रांसीसी तोपखाने से भारी क्षति उठाकर तिलज़ीत नगर की तरफ़ पीछे हटना पड़ा। १८०६–१८०७ के युद्ध-अभियान की यह अन्तिम लड़ाई थी। – सं०

से यहां कोई फ़र्क पड़नेवाला है?" डाक्टर की ज़ीने पर चढ़ रहे रोस्तोव पर नज़र पड़ी।

"आप यहां किसलिये आये हैं, हुजूर?" डाक्टर ने पूछा। "किसलिये? अगर गोली ने आप पर रहम कर दिया तो अब आप क्या टाइफ़स को गले लगाना चाहते हैं? भैया मेरे, यह तो कोढ़ख़ाना है।"

"क्या मतलब है आपका?" रोस्तोव ने जानना चाहा।

"टाइफ़स, मेरे भैया। यहां आने का मतलब है – मौत। माकेयेव (उसने सहायक की तरफ़ इशारा किया) और मैं, बस, दोनों ही किसी तरह ज़िन्दा बचे हुए हैं। यहां हमारे पांच डाक्टर भाई मौत के मुंह में जा चुके हैं। जैसे ही कोई नया आदमी यहां आता है, हफ़्ते भर में दूसरी दुनिया में पहुंच जाता है," डाक्टर ने स्पष्ट प्रसन्नता का भाव दिखाते हुए कहा। "प्रशा के डाक्टरों को यहां आने को कहा, मगर हमारे मित्र-राष्ट्रवालों को ऐसा करना पसन्द नहीं।"

रोस्तोव ने उसे बताया कि वह हुस्सार-सेना के मेजर देनीसोव से मिलना चाहता है जो इसी अस्पताल में इलाज के लिये आया हुआ है।

"मुझे मालूम नहीं, मैं कुछ नहीं जानता, भैया। आप ज़रा ख़्याल कीजिये, मुझ अकेले पर तीन अस्पतालों का, चार सौ से अधिक रोगियों का बोझ है! इतनी ही ग़नीमत है कि प्रशा की परोपकारी महिलायें हमें महीने में कोई दो पौंड कॉफ़ी और लिनन भेज देती हैं, वरना बिल्कुल ही लुटिया डूब जाती।" वह हंस दिया। "चार सौ, मेरे भाई। और हर दिन नये-नये रोगी आते रहते हैं। चार सौ तो होंगे न? क्यों, होंगे न?" उसने सहायक से पूछा।

सहायक बेहद थका-टूटा दिखाई दे रहा था। वह सम्भवतः बड़ी खीझ महसूस करते हुए यह इन्तज़ार कर रहा था कि बातूनी डाक्टर कब यहां से जाता है।

"मेजर देनीसोव," रोस्तोव ने दोहराया, "वह मोलीटेन के नज़दीक ज़ख़्मी हुआ था।"

"लगता है कि मर गया। तुम्हारा क्या ख़्याल है, माकेयेव?" डाक्टर ने लापरवाही से अपने सहायक से पूछा।

किन्तु सहायक ने डाक्टर के शब्दों की पुष्टि नहीं की।

"वह ख़ासा लम्बा और लाल बालोंवाला तो नहीं है क्या?" डाक्टर ने पूछा।

रोस्तोव ने देनीसोव की शक्ल-सूरत का वर्णन किया।

"हां, हां, एक ऐसा था," डाक्टर मानो खुश होता हुआ कह उठा, "वह तो ज़रूर मर चुका है। फिर भी मैं जांच कर लूंगा। मेरे पास कहीं सूचियां थी। तुम्हारे पास है माकेयेव?"

"सूचियां मकार अलेक्सेयेविच के पास हैं," सहायक ने कहा। "आप अफ़सरों के वार्डों में चले जाइये, वहां खुद ही देख लेंगे," उसने रोस्तोव को सम्बोधित करते हुए इतना और कह दिया।

"भैया मेरे, यही ज़्यादा अच्छा होगा कि आप वहां न जायें," डाक्टर बोला, "कहीं ऐसा न हो कि खुद भी यहीं रह जायें!" किन्तु रोस्तोव ने सिर झुकाकर डाक्टर से विदा ली और डाक्टर के सहायक से अनुरोध किया कि वह उसे बीमार अफ़सरों के वार्डों में ले चले।

"बाद में मुझे दोषी नहीं ठहराइयेगा," डाक्टर ने ज़ीने के नीचे से पुकारकर कहा।

रोस्तोव और डाक्टर का सहायक एक दालान में दाखिल हुए। इस अंधेरे, तंग दालान में अस्पताली गंध इतनी तेज़ थी कि रोस्तोव ने अपनी नाक बंद कर ली और उसे आगे जाने के लिये शक्ति बटोरने की खातिर कुछ देर को रुक जाना पड़ा। दायीं ओर एक दरवाज़ा खुला और उसमें से एक दुबला-पतला, पीले चेहरेवाला आदमी बैसाखियों पर बाहर आया। वह सिर्फ़ अंडरवियर पहने था और उसके पांव नंगे थे। वह चौखट का सहारा लेकर खड़ा हो गया और उसने चमकती, ईर्ष्यालु नज़रों से इन दोनों को अपने निकट से गुज़रते देखा। भीतर झांकने पर रोस्तोव को दिखाई दिया कि रोगी और घायल फ़र्श, फूस तथा अपने फ़ौजी ओवरकोटों पर लेटे हुए हैं।

"यह सब क्या है?"

"ये सिपाहियों के वार्ड हैं। क्या किया जाये?" डाक्टर के सहायक ने मानो क्षमा-याचना करते हुए इतना और कह दिया।

"मैं भीतर जाकर देख सकता हूं?" रोस्तोव ने डाक्टर के सहायक से पूछा।

"वहां देखने के लिये है ही क्या?" डाक्टर के सहायक ने जवाब दिया। लेकिन चूंकि डाक्टर का सहायक सम्भवतः यह नहीं चाहता था कि रोस्तोव भीतर जाये, इसीलिये वह जान-बूझकर सैनिकों के वार्डों में गया। रोस्तोव दालान में ही जिस दुर्गन्ध का आदी हो गया था,

वह यहां और भी तेज़ थी। यह दुर्गन्ध यहां कुछ बदली हुई थी, अधिक तिक्त थी और यह अनुभव होता था कि वह यहीं से आ रही है।

एक लम्बे कमरे में, जो बड़ी-बड़ी खिड़कियों से छन रही धूप के कारण ख़ूब रोशन था, रोगी और घायल सैनिक दो क़तारों में आमने-सामने लेटे हुए थे। उनके सिर दीवारों से सटे थे और उन्होंने बीच में आने-जाने के लिये रास्ता छोड़ रखा था। इन सैनिकों में से अधिकतर बेहोशी की हालत में थे और उन्होंने इन दोनों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। जो होश में थे, वे सभी कुछ उचक गये या फिर उन्होंने अपने पीले, दुबले-पतले चेहरे ऊपर उठा लिये और सहायता की आशा, भर्त्सना तथा दूसरे के स्वास्थ्य के प्रति ईर्ष्या की समान भावना लिये हुए रोस्तोव को एकटक देखने लगे। रोस्तोव कमरे के मध्य में चला गया, उसने दोनों ओर के बग़ल के कमरों में, जिनके दरवाज़े खुले थे, नज़र दौड़ाई और वहां भी उसे यही कुछ देखने को मिला। वह चुपचाप अपने इर्द-गिर्द देखता हुआ एक ही जगह खड़ा रहा। उसने ऐसा दृश्य देखने की कभी आशा नहीं की थी। उसके बिल्कुल सामने बीच के रास्ते के लगभग आर-पार एक रोगी नंगे फ़र्श पर पड़ा था। वह सम्भवतः कज़्ज़ाक था, क्योंकि उसके बाल कज़्ज़ाकों के ढंग से ही कटे हुए थे। अपनी लम्बी-लम्बी टांगों और बांहों को फैलाये हुए यह कज़्ज़ाक चित लेटा था। उसका चेहरा लाल-सुर्ख़ था, आंखें ऐसे ऊपर को उलटी हुई थी कि उनकी सिर्फ़ सफ़ेदी ही नज़र आ रही थी और उसके नंगे हाथों-पांवों पर, जो अभी भी लाल थे, रस्सियों की भांति नसें उभरी हुई थीं। वह अपनी गुद्दी को फ़र्श पर पटकता था, खरखरी आवाज़ में कुछ बुदबुदाता था और एक ही शब्द को लगातार दोहराता जाता था। रोस्तोव ने बहुत ध्यान से उसे सुना और उसके द्वारा दोहराये जानेवाले शब्द को समझ गया। यह शब्द था – पानी-पानी-पानी। रोस्तोव ने ऐसे किसी आदमी को ढूंढ़ते हुए इधर-उधर देखा जो इस रोगी को उसकी जगह ढंग से लिटा देता और इसे पानी पिलाता।

"यहां रोगियों की देख-भाल कौन करता है?" उसने डाक्टर के सहायक से पूछा। इसी समय बग़ल के कमरे से अस्पताल में रोगियों की सेवा-सुश्रुषा करनेवाला सैनिक यहां आया और रोस्तोव के सामने तनकर खड़ा हो गया।

"सलाम, हुज़ूर!" इस फ़ौजी ने दीदे बाहर को निकालकर रोस्तोव की ओर देखते और उसे अस्पताल का कोई अफ़सर समझते हुए चिल्ला-कर कहा।

"इसे इसकी जगह पर लिटा दो और पीने को पानी दो," रोस्तोव ने कज़्ज़ाक की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

"जो हुक्म, हुज़ूर," फ़ौजी ने ख़ुशी से जवाब दिया, आंखों को और बाहर को निकाल लिया, अधिक तनकर खड़ा हो गया, मगर अपनी जगह से नहीं हिला।

"नहीं, यहां कुछ नहीं किया जा सकता," रोस्तोव ने नज़रें झुकाते हुए सोचा और बाहर जाना चाहा। किन्तु उसने अनुभव किया कि दायी ओर से कोई अर्थपूर्ण दृष्टि से उसे टकटकी बांधकर देख रहा है। उसने उधर देखा। लगभग कोने में एक बूढ़ा फ़ौजी अपने ओवरकोट पर बैठा था। उसका कठोर चेहरा कंकाल की तरह पीला और दुबला था तथा उसकी सफ़ेद दाढ़ी बढ़ी हुई थी। वह रोस्तोव को एकटक देख रहा था। बूढ़े फ़ौजी के पासवाला सैनिक रोस्तोव की तरफ़ इशारा करते हुए उसके कान में कुछ फुसफुसा रहा था। रोस्तोव समझ गया कि बूढ़ा उससे किसी बात का अनुरोध करना चाहता है। वह उसके क़रीब गया और उसने देखा कि बूढ़ा केवल एक टांग अपने नीचे मोड़े था और उसकी दूसरी टांग घुटने के ऊपर तक कटी हुई थी। बूढ़े के दूसरी ओर, उससे ख़ासी दूरी पर एक जवान सैनिक गतिहीन पड़ा था और उसका सिर पीछे को लुढ़का हुआ था। चपटी नाकवाले, पीले और मोम जैसे बेजान चेहरे पर अभी भी ढेरों झांइयां थीं और उसकी आंखें पथरायी हुई थीं। रोस्तोव ने चपटी नाकवाले इस सैनिक को ध्यान से देखा और उसे अपनी पीठ पर झुरझुरी-सी महसूस हुई।

"लगता है कि यह तो..." रोस्तोव ने डाक्टर के सहायक को सम्बोधित किया।

"कितनी बार मिन्नत कर चुके हैं, हुज़ूर," बूढ़े फ़ौजी ने कहा और बोलते समय उसका निचला जबड़ा कांप उठा। "यह तो सुबह ही मर गया था। आख़िर हम भी इन्सान हैं, कुत्ते तो नहीं..."

"अभी लोगों को भेज देता हूं, इसे उठा ले जायेंगे," डाक्टर के सहायक ने जल्दी से कहा। "आइये, चलिये, हुज़ूर।"

"हां, चलिये, चलिये," रोस्तोव ने तुरन्त उत्तर दिया और आंखें झुकाकर तथा दोनों ओर से अपने ऊपर टिकी इन भर्त्सनापूर्ण और ईर्ष्यालु नज़रों से बचने के लिये सिकुड़ता-सिमटता हुआ कमरे से बाहर चला गया।

## १८

दालान लांघकर डाक्टर का सहायक रोस्तोव को अफ़सरों के वार्डों में ले गया। इन वार्डों में तीन कमरे थे जिनके दरवाज़े खुले हुए थे। कमरों में चारपाइयां बिछी थीं और घायल तथा बीमार अफ़सर उनपर लेटे या बैठे हुए थे। कुछ अफ़सर अस्पताल के ड्रेसिंग गाउन पहने कमरों में चहलक़दमी कर रहे थे। अफ़सरों के वार्डों में एक दुबला-पतला और नाटा-सा आदमी ही सबसे पहले रोस्तोव के सामने आया। उसकी एक बांह कटी हुई थी, वह टोपी और ड्रेसिंग गाउन पहने था, उसके मुंह में पाइप था और पहले कमरे में इधर-उधर टहल रहा था। रोस्तोव यह याद करने की कोशिश करते हुए कि उससे कहां मिल चुका है, उसे ग़ौर से देख रहा था।

"देखिये, भगवान ने हमें फिर कहां मिलाया है," इस नाटे-से आदमी ने कहा। "मैं तूशिन हूं, तूशिन। याद है न कि शेनग्राबेन के नज़दीक मैंने आपको तोपगाड़ी पर बिठा लिया था? मेरा तो थोड़ा-सा टुकड़ा काट दिया गया, यह देखिये..." वह मुस्कराते और ड्रेसिंग गाउन की खाली आस्तीन दिखाते हुए बोला। "आप वसीली द्मीत्रियेविच देनीसोव को ढूंढ़ रहे हैं? वह तो मेरे ही कमरे में है!" तूशिन ने यह मालूम होने पर कि रोस्तोव किससे मिलना चाहता है, उससे कहा। "इधर आइये, इधर," और तूशिन उसे दूसरे कमरे में ले गया जहां से कुछ लोगों के ठहाके सुनाई दे रहे थे।

"ठहाकों की बात तो दूर, ये लोग यहां रह ही कैसे सकते हैं?" रोस्तोव ने सोचा जो अभी भी सैनिकों के वार्ड में अपनी नाक में घुस जानेवाली लाश की दुर्गन्ध को अनुभव कर रहा था, अपने इर्द-गिर्द इन ईर्ष्यालु आंखों को देख रहा था जो उसके कमरे से बाहर जाने के

समय दोनों ओर से उसपर टिकी रही थी तथा पथरायी आंखोंवाले जवान फ़ौजी का चेहरा भी अभी तक उसके सामने घूम रहा था।

देनीसोव कम्बल से मुंह-सिर ढके हुए अपने बिस्तर पर सो रहा था, यद्यपि दिन के बारह बज चुके थे।

"अरे, रोस्तोव! नमस्ते, नमस्ते!" वह उसी अन्दाज़ में चिल्ला उठा जैसे कि रेजिमेंट में किया करता था। किन्तु रोस्तोव ने दुखी मन से इस बात की ओर ध्यान दिया कि देनीसोव की इस अभ्यस्त बेत-कल्लुफ़ी और ज़िन्दादिली में कोई नयी, मनहूस तथा गुप्त भावना थी जो उसके चेहरे के भाव, उसके लहजे और शब्दों में व्यक्त हो रही थी।

उसका घाव बहुत मामूली-सा था और उसे घायल हुए भी बेशक छः हफ़्ते हो गये थे, लेकिन वह अभी तक भरा नहीं था। उसके चेहरे पर अस्पताल के सभी रोगियों और घायलों जैसी पीली सूजन थी। किन्तु रोस्तोव को इस बात से कोई हैरानी नही हुई। उसे हैरानी इस चीज़ से हुई कि देनीसोव उसके आने से मानो ख़ुश नहीं हुआ था और मुस्कराने का ढोंग कर रहा था। देनीसोव ने न तो रेजिमेंट और न ही युद्ध के आम रंग-ढंग के बारे में कुछ पूछा। रोस्तोव ने जब यह चर्चा की तो देनीसोव ने उसकी बातों पर कान ही नहीं दिया।

रोस्तोव का इस चीज़ की तरफ़ भी ध्यान गया कि जब उसने रेजिमेंट और उस मुक्त जीवन की चर्चा की जो अस्पताल के बाहर की दुनिया में चल रहा था, तो देनीसोव को यह अच्छा नहीं लगा था। ऐसे प्रतीत हुआ कि वह अपने इस भूतपूर्व जीवन को भूल जाना चाहता था और सिर्फ़ रसद विभाग के कर्मचारियों के साथ अपने मामले में ही उसकी दिलचस्पी थी। रोस्तोव के यह पूछने पर कि उसके मामले की क्या स्थिति है, उसने तकिये के नीचे से अदालती आयोग द्वारा भेजा गया अभियोग-पत्र और उसके जवाब में तैयार किया गया अपना मसविदा भी निकाल लिया। अपने इस जवाब को पढ़ना शुरू करते ही वह खिल उठा और उन तीखे व्यंग्य-वाणों की ओर विशेष रूप से रोस्तोव का ध्यान आकर्षित करने लगा जो उसने अपने शत्रुओं पर चलाये थे। जैसे ही वह अपना यह जवाब पढ़ने लगा, वैसे ही बाहर की दुनिया से आनेवाले रोस्तोव के गिर्द एकत्रित हो गये देनीसोव के अस्पताल के साथी धीरे-धीरे वहा से खिसकने लगे। उनके चेहरों

के भाव से रोस्तोव यह समझ गया कि ये महानुभाव देनीसोव के इस जवाब को अनेक बार सुन चुके हैं और इसे सुनते-सुनते उनके कान पक गये हैं। केवल देनीसोव की बग़लवाली चारपाई का रोगी, घुड़सेना का मोटा-सा अफ़सर, पाइप के कश खींचता और क्षुब्ध मन से नाक-भौंह सिकोड़ता तथा एक बांह से वंचित नाटा-सा तूशिन अपनी नापसन्दगी ज़ाहिर करने के लिये सिर हिलाता हुआ इसे सुनते रहे। घुड़सेना के अफ़सर ने देनीसोव को बीच में ही टोक दिया।

"मेरा तो यह ख़्याल है," उसने रोस्तोव को सम्बोधित करते हुए कहा, "इसे तो सम्राट से बस, क्षमा-याचना करनी चाहिये। सुनने में आया है कि अब तो हम लोगों को ढेरों पुरस्कार दिये जायेंगे और निश्चित रूप से इसे क्षमा कर दिया जायेगा..."

"मैं सम्राट से क्षमा-याचना करूं!" देनीसोव ने ऐसी आवाज़ में उत्तर दिया जिसे उसने पहले जैसा उत्साह, पहले जैसी उत्तेजना प्रदान करनी चाही, मगर जो व्यर्थ की झल्लाहट-सी ही प्रतीत हुई। "किस चीज़ की क्षमा-याचना करूं? अगर मैं कोई लुटेरा-डाकू होता तो क्षमा-याचना करता, लेकिन मुझपर तो इसलिये मुक़दमा चलाया जा रहा है कि मैं चोर-लुटेरों का पर्दाफ़ाश कर रहा हूं। करते रहें मेरे ख़िलाफ़ अदालती कार्रवाई, किसी से भी नहीं डरता हूं मैं। मैंने पूरी ईमानदारी से सम्राट और अपनी मातृभूमि की सेवा की है तथा किसी तरह की कोई चोरी नहीं की! मुझे अफ़सर से मामूली फ़ौजी बनाया जाये... सुनो, मैंने तो उन्हें साफ़-साफ़ ही लिख दिया है, यह लिखा है: 'अगर मैंने सरकारी माल में ग़बन किया होता...'"

"इस बारे में दो मत नहीं हो सकते कि ख़ूब बढ़िया जवाब दिया गया है," तूशिन ने कहा। "लेकिन बात यह नहीं है, वसीली द्मीत्रियेविच," उसने भी रोस्तोव को सम्बोधित किया, "नम्रता दिखाने की ज़रूरत है, मगर वसीली द्मीत्रियेविच इसके लिये तैयार नहीं हैं। सरकारी वकील ने भी तो आपको यही लिखा है कि आपका मामला ख़ासा गड़बड़ है।"

"गड़बड़ है तो होती रहे गड़बड़," देनीसोव ने उत्तर दिया।

"सरकारी वकील ने आपको प्रार्थना-पत्र तैयार करके भेज दिया है," तूशिन कहता गया, "आपको उसपर हस्ताक्षर करके इनके हाथ ही भेज देना चाहिये। इनका," (उसने रोस्तोव की तरफ़ इशारा

किया ), "तो मुख्य सैनिक कार्यालय में ज़रूर कोई जान-पहचान का भी होगा। आपको इससे बेहतर मौक़ा और कोई नहीं मिलेगा।".

"मैं कह तो चुका हूं कि किसी के सामने नाक नहीं रगड़ूंगा," देनीसोव ने तूशिन को टोक दिया और अपने जवाब के मसविदा को आगे पढ़ता गया।

रोस्तोव देनीसोव को समझाने-बुझाने की हिम्मत नहीं कर पाया, यद्यपि उसका मन यह कह रहा था कि तूशिन और दूसरे अफ़सर जो रास्ता सुझा रहे थे, वही ठीक था और अगर वह किसी तरह से देनीसोव के काम आ सकता तो अपने को ख़ुशक़िस्मत मानता, तथापि उसे यह चेतना थी कि उसका मित्र कितने दृढ़ संकल्प का व्यक्ति है और वह न्याय के लिये कैसे डटा रह सकता है।

जब इस ज़हरीले मसविदे का एक घण्टे से अधिक समय तक जारी रहनेवाला पठन समाप्त हुआ तो रोस्तोव ने कोई भी टीका-टिप्पणी नहीं की और बहुत ही खिन्न मानसिक स्थिति में देनीसोव के साथियों को ( जो फिर से उसके पास जमा हो गये थे ) वह सब बताते हुए जो उसे मालूम था और उनकी बातें सुनते हुए बाक़ी सारा दिन बिताया। देनीसोव लगातार उदासी भरी ख़ामोशी बनाये रहा।

शाम गहरा जाने पर रोस्तोव जाने को तैयार हुआ और उसने देनीसोव से यह पूछा कि वह उसे कोई काम सौंपना चाहता है या नहीं।

"हां, ज़रा रुको," देनीसोव ने कहा, साथी अफ़सरों पर नज़र डाली, तकिये के नीचे से अपने काग़ज़ात निकाले, खिड़की की तरफ़ गया जहां दवात रखी थी और वहां बैठकर कुछ लिखने लगा।

"लगता है कि सिर मारकर दीवार को नहीं तोड़ा जा सकता," उसने खिड़की के पास से वापस लौटते और रोस्तोव को एक बहुत बड़ा लिफ़ाफ़ा देते हुए कहा। यह सरकारी वकील द्वारा सम्राट के नाम तैयार करके भेजा गया वह प्रार्थना-पत्र था जिसमें देनीसोव ने रसद-विभाग के कर्मचारियों के अपराधों का कोई भी उल्लेख किये बिना केवल क्षमा-याचना की थी।

"इसे वहां दे देना। लगता है कि..." उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया और पीड़ायुक्त कृत्रिम ढंग से मुस्करा दिया।

अपनी रेजिमेंट में लौटने और रेजिमेंट-कमांडर को यह बताने के बाद कि देनीसोव का मामला कैसी स्थिति में है, रोस्तोव सम्राट के नाम लिखा गया पत्र लेकर तिलज़ीत को रवाना हो गया।

१३ जून को फ़्रांसीसी और रूसी सम्राट की तिलज़ीत में भेंट हुई। बोरीस द्रुबेत्स्कोई ने अपने उस महत्त्वपूर्ण अफ़सर से, जिसका वह एडजुटेंट था, यह अनुरोध किया था कि वह उसे उस अमले में शामिल कर ले जो तिलज़ीत में उपस्थित रहेगा।

"मैं उस महान व्यक्ति को देखना चाहता हूं," उसने नेपोलियन के बारे में फ़्रांसीसी में कहा जिसे, अन्य सभी की भांति, वह अभी तक तिरस्कार से बुओनापार्ट ही कहा करता था।

"आप बुओनापार्ट की चर्चा कर रहे हैं?" जनरल ने मुस्कराते हुए पूछा।

बोरीस ने अपने जनरल पर प्रश्नसूचक दृष्टि डाली और फ़ौरन यह समझ गया कि मज़ाक़िया ढंग से उसकी परीक्षा ली जा रही है।

"प्रिंस, मैं सम्राट नेपोलियन की चर्चा कर रहा हूं," उसने उत्तर दिया। जनरल ने मुस्कराकर उसका कंधा थपथपाया।

"तुम बड़ी तरक़्क़ी करोगे," जनरल ने कहा और उसे अपने साथ तिलज़ीत ले गया।

नाइमन में दोनों सम्राटों की भेंट के दिन बोरीस वहां उपस्थित थोड़े-से लोगों में से एक था। उसने सम्राटों के नामों और कुलनामों के प्रारम्भिक अक्षरों सहित समुद्री बेड़े देखे, फ़्रांसीसी गार्ड-सेना के पास से नेपोलियन को दूसरे तट पर जाते देखा, सम्राट अलेक्सान्द्र के विचार-मग्न चेहरे की उस समय झलक पायी, जब वह नाइमन के तट पर होटल में बैठे हुए नेपोलियन की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसने देखा कि कैसे दोनों सम्राट नावों में बैठे और कैसे नेपोलियन, जो बेड़े पर पहले पहुंच गया था, तेज़ क़दमों से आगे बढ़ा, उसने अलेक्सान्द्र का स्वागत किया, उनसे हाथ मिलाया और फिर कैसे वे दोनों मण्डप में आंखों से ओझल हो गये। ऊंचे समाज का अंग बनने के बाद से बोरीस ने अपने इर्द-गिर्द के जीवन को बहुत ध्यान से देखने और उसे लिख लेने की आदत बना ली थी। तिलज़ीत की भेंट के समय उसने उन लोगों

के नाम पूछे जो नेपोलियन के साथ आये थे, उन वर्दियों के बारे में पूछ-ताछ की जो वे पहने हुए थे और महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों द्वारा कहे जानेवाले हर शब्द को बहुत ध्यान से सुना। दोनों सम्राट जिस वक़्त मण्डप में गये, उसने घड़ी पर नज़र डाली और उस समय भी घड़ी को देखना नहीं भूला जब अलेक्सान्द्र मण्डप से बाहर आये। यह भेंट एक घण्टा और तिरपन मिनट तक जारी रही। उस शाम को उसने अन्य तथ्यों के साथ, जिन्हें वह ऐतिहासिक महत्त्व रखनेवाले मानता था, भेंट के समय को भी लिख लिया। चूंकि सम्राट अलेक्सान्द्र का अमला बहुत बड़ा नहीं था, इसलिये अपनी नौकरी में पदोन्नति को महत्त्व देनेवाले व्यक्ति के लिये सम्राटों की भेंट के समय तिलज़ीत में उपस्थित रहना बहुत ही मार्के की बात थी और तिलज़ीत में आने के बाद बोरीस यह अनुभव करने लगा कि अब उसकी स्थिति बिल्कुल मज़बूत हो गयी है। लोग उसे केवल जानते ही नहीं थे, बल्कि उसे बहुत अच्छी तरह पहचानने लगे थे, उसके आदी हो गये थे। दो बार उसे किसी काम से स्वयं सम्राट के पास भेजा गया। इसलिये सम्राट भी उसके चेहरे से परिचित थे और सम्राट के आस-पास के लोग उसे नया आदमी मानते हुए न सिर्फ़ उससे कन्नी नहीं काटते थे, जैसा कि पहले होता था, बल्कि उसके उपस्थित न रहने पर हैरान भी होते थे।

बोरीस एक अन्य एडजुटेंट, पोलैंडी काउंट जिलीन्स्की के साथ रह रहा था। पेरिस में पाला-पोसा और शिक्षित-दीक्षित पोलैंडी जिलीन्स्की अमीर आदमी था, फ़्रांसीसियों को बहुत चाहता था और तिलज़ीत में आने के बाद से लगभग हर दिन ही फ़्रांसीसी गार्ड-सेना और मुख्य सैनिक कार्यालय के अफ़सर जिलीन्स्की तथा बोरीस के यहां नाश्ते और दोपहर के भोजन पर आमन्त्रित होते थे।

बोरीस के साथ रहनेवाले काउंट जिलीन्स्की ने २४ जून की शाम को अपनी जान-पहचान के कुछ फ़्रांसीसियों को भोजन के लिये आमन्त्रित किया। नेपोलियन का एक एडजुटेंट इस दावत का सम्मानित अतिथि था, फ़्रांसीसी गार्ड-सेना के कुछ अफ़सर और नेपोलियन का निजी सेवक, फ़्रांस के एक पुराने, कुलीन परिवार का एक तरुण भी इस भोज में शामिल था। इसी दिन, सन्ध्या के अन्धेरे में अपने को छिपाता हुआ ताकि कोई उसे पहचान न ले, रोस्तोव असैनिक पोशाक में तिलज़ीत पहुंचा और जिलीन्स्की तथा बोरीस के घर गया।

सामान्य रूसी सेना की भांति, जिससे रोस्तोव यहां आया था, नेपोलियन और फ़ांसीसियों के प्रति, जो अचानक शत्रुओं से मित्र बन गये थे, रोस्तोव के मन में वह भावना-परिवर्तन नहीं हुआ था जो मुख्य सैनिक कार्यालय और बोरीस में हो गया था। रूसी सेना में बोनापार्ट और फ़ांसीसियों के प्रति अभी भी पहलेवाली क्रोध, तिरस्कार और भय की मिली-जुली भावना बनी हुई थी। कुछ ही समय पहले प्लातोव डिवीज़न के एक कज़्ज़ाक अफ़सर के साथ बात करते हुए रोस्तोव ने यह मत प्रकट किया था कि अगर नेपोलियन को बन्दी बना लिया जाये तो उसके साथ सम्राट जैसा नहीं, बल्कि एक अपराधी का-सा बर्ताव किया जायेगा। हाल ही में एक घायल फ़ांसीसी कर्नल से मुलाक़ात हो जाने पर रोस्तोव ने बड़े जोश से यह सिद्ध करने की कोशिश की थी कि वैध सम्राट और अपराधी बोनापार्ट के बीच शान्ति-सन्धि नहीं हो सकती। इसीलिये बोरीस के घर पर फ़ांसीसी अफ़सरों को उन्हीं वर्दियों में देखकर, जिन्हें वह अग्रिम घुड़सैनिक चौकियों से दूसरी ही दृष्टि से देखने का आदी हो चुका था, रोस्तोव को अजीब-सी हैरानी हुई। जैसे ही उसने एक फ़ांसीसी अफ़सर को दरवाज़े से बाहर झांकते देखा, वैसे ही लड़ाई और शत्रुता की यह भावना उसपर हावी हो गयी जो दुश्मन को देखते ही उसके मन में पैदा हुआ करती थी। वह दहलीज़ पर ही रुक गया और उसने रूसी भाषा में यह पूछा कि द्रुबेत्स्कोई यहीं रहता है या नहीं। ड्योढ़ी से किसी अजनबी की आवाज़ सुनकर बोरीस वहां आया। रोस्तोव को पहचानते ही एक क्षण को उसके चेहरे पर खिन्नता का भाव झलक उठा।

"अरे, यह तुम हो! बहुत खुशी हुई, बहुत खुशी हुई तुम्हारे आने से," फिर भी उसने मुस्कराते और उसकी तरफ़ बढ़ते हुए कहा। लेकिन रोस्तोव ने उसके चेहरे पर आनेवाले पहले भाव को देख लिया था।

"लगता है कि मैं ग़लत वक़्त पर आ गया हूं," रोस्तोव बोला। "मैंने ऐसा न किया होता, मगर एक ज़रूरी काम है," उसने रुखाई से कहा...

"नहीं, मैं तो सिर्फ़ इस बात से हैरान हो रहा हूं कि तुम अपनी रेजिमेंट से यहां आ कैसे गये।" – "मैं अभी हाज़िर होता हूं।" उसने अपने को पुकारनेवाले को फ़ांसीसी में जवाब दिया।

"मैं देख रहा हूं कि ग़लत वक़्त पर यहां आ गया हूं," रोस्तोव ने दोहराया।

बोरीस के चेहरे से खिन्नता का भाव ग़ायब हो चुका था। सम्भवतः मन में यह विचार और निर्णय करके कि उसे क्या करना चाहिये, उसने बड़े इतमीनान से रोस्तोव के दोनों हाथ थाम लिये और उसे बग़ल के कमरे में ले गया। शान्ति और दृढ़ता से रोस्तोव को देखती हुई बोरीस की आंखें मानो किसी आवरण से ढकी हुई थीं, मानो उनपर कोई नक़ाब या सोसाइटी का नीला चश्मा चढ़ा हुआ था। रोस्तोव को ऐसे ही लग रहा था।

"बस, अब हटाओ भी इस बात को, तुम्हारे ग़लत वक़्त पर आने का सवाल ही क्या हो सकता है," बोरीस ने कहा। बोरीस उसे उस कमरे में ले गया जहां खाने की मेज़ लगी हुई थी। उसने मेहमानों से उसका परिचय करवाया, उसका नाम और यह बताया कि वह ग़ैरफ़ौजी नहीं, बल्कि हुस्सार रेजिमेंट का अफ़सर और उसका पुराना दोस्त है। उसने रोस्तोव को मेहमानों का परिचय दिया: "काउंट जिलीन्स्की, काउंट न० न०, कप्तान स० स०।" रोस्तोव ने नाक-भौंह सिकोड़कर फ़ांसीसियों की ओर देखा, मन मारकर उनका अभिवादन किया और ख़ामोश रहा।

जिलीन्स्की को इस नये रूसी चेहरे के यहां प्रकट होने पर सम्भवतः प्रसन्नता नहीं हुई थी और इसलिये उसने रोस्तोव से कोई बात नहीं की। बोरीस मानो रोस्तोव के आने से पैदा होनेवाले तनाव को महसूस नही कर रहा था और पहले जैसे सुखद चैन तथा आंखों पर वही चश्मा चढ़ाये हुए, जिससे उसने रोस्तोव का स्वागत किया था, बातचीत को सजीव बनाने का प्रयत्न किया। फ़्रांसीसी शिष्टता के अनुरूप एक फ़्रांसीसी अतिथि ने दृढ़तापूर्वक मौन साधे हुए रोस्तोव को सम्बोधित किया और कहा कि शायद वह सम्राट को देखने के लिये तिलज़ीत आया है।

"नहीं, मैं काम से आया हूं," रोस्तोव ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

रोस्तोव का मूड उसी वक़्त ख़राब हो गया था, जब उसने बोरीस के चेहरे पर खिन्नता का भाव देखा था और जैसा कि बुरे मूड में होनेवाले लोगों के साथ होता है, उसे ऐसा लग रहा था कि वह सभी

की नज़रों में खटक रहा है, सभी के लिये बाधा बन रहा है। वास्तव में ही वह सबके लिये बाधा बन रहा था और सिर्फ़ वही फिर से शुरू होनेवाली बातचीत में कोई हिस्सा नहीं ले रहा था। "यह किसलिये यहां बैठा है?" मेहमानों की नज़रें मानो यह पूछ रही थीं। वह उठा और बोरीस के पास गया:

"बेशक तुम कुछ न कहो, लेकिन मैं जानता हूं कि तुम्हारे लिये परेशानी पैदा कर रहा हूं," उसने धीरे से कहा, "ज़रा मेरे साथ आओ, मैं तुमसे काम की बात कर लेता हूं और फिर चला जाऊंगा।"

"नहीं, तुम ज़रा भी परेशानी पैदा नहीं कर रहे हो," बोरीस ने जवाब दिया। "लेकिन अगर तुम थक गये हो तो मेरे कमरे में चलो और वहां आराम कर लो।"

"हां, यह ठीक होगा..."

ये दोनों बोरीस के सोने के छोटे-से कमरे में गये। रोस्तोव बैठे बिना उसी वक़्त झल्लाहट से, मानो बोरीस उसके सामने किसी चीज़ के लिये दोषी हो, उसे देनीसोव के मामले के बारे में बताने और यह पूछने लगा कि वह अपने जनरल की मार्फ़त देनीसोव के बचाव के लिये सम्राट से अनुरोध करवा सकता है या नहीं, वह ऐसा करना चाहे-गा या नहीं और सम्राट तक देनीसोव का पत्र पहुंचवा देगा या नहीं। इन दोनों के कमरे में अकेले होने पर ही रोस्तोव को पहली बार इस बात का पूरा विश्वास हुआ कि बोरीस से नज़रें मिलाते हुए उसे कुछ अटपटापन-सा महसूस होता है। टांग पर टांग रखे और बायें हाथ से दायें हाथ की पतली-पतली उंगलियों को सहलाते हुए बोरीस अपने मातहत की रिपोर्ट सुननेवाले जनरल की तरह रोस्तोव की बातें सुन रहा था। कभी वह दूसरी ओर देखने लगता और कभी अपनी आंखों पर वही चश्मा-सा चढ़ाये हुए सीधे उसकी आंखों में झांकने लगता। बोरीस के ऐसा करने पर रोस्तोव को हर बार ही बेचैनी-सी होने लगती और वह नज़रें झुका लेता।

"मैं ऐसे मामलों के बारे में सुन चुका हूं और जानता हूं कि ऐसे मामलों में सम्राट बहुत कड़ाई दिखाते हैं। मेरे ख़्याल में तो हमें इस मामले को सम्राट तक नहीं पहुंचाना चाहिये। शायद सीधे कोर-कमांडर से अनुरोध करना बेहतर होगा... लेकिन कुल मिलाकर मेरा यह विचार है..."

"तो साफ़ ही कह दो कि तुम कुछ भी नही करना चाहते!" बोरीस से आंखें न मिलाते हुए रोस्तोव लगभग चिल्ला उठा।

बोरीस मुस्कराया।

"इसके विपरीत, मैं तो जो कर सकता हूं, सब कुछ करने को तैयार हूं। मैंने तो सिर्फ़ यह सोचा..."

इसी वक़्त दरवाज़े पर जिलीन्स्की की आवाज़ सुनायी दी जो बोरीस को बुला रहा था।

"तुम जाओ, वहां जाओ, जाओ..." रोस्तोव ने कहा। उसने भोजन से इन्कार कर दिया और छोटे कमरे में अकेला रह जाने पर देर तक इधर-उधर आता-जाता हुआ बग़ल के कमरे में फ़्रांसीसी भाषा में हो रही उल्लासपूर्ण गपशप की आवाज़ सुनता रहा।

## २०

देनीसोव के मामले के लिये दौड़-धूप करने को रोस्तोव बहुत ही बुरे दिन तिलज़ीत पहुंचा। वह ख़ुद तो ड्यूटीवाले जनरल के पास जा नहीं सकता था, क्योंकि असैनिक पोशाक यानी फ़्रॉक-कोट पहने था और अपने बड़े अफ़सर से इजाज़त लिये बिना तिलज़ीत आया था। रहा बोरीस, तो वह अगर चाहता भी, तो भी रोस्तोव के आने के अगले दिन यह काम नही कर सकता था। वह इसलिये कि इसी दिन यानी २७ जून को शान्ति-सन्धि की पहली शर्तों पर हस्ताक्षर किये गये थे। सम्राटों ने एक-दूसरे को पदकों से सम्मानित किया था। सम्राट अलेक्सान्द्र को फ़्रांसीसी लीजन सम्मान-पदक मिला और नेपोलियन को सेंट अन्द्रेई का प्रथम श्रेणी का पदक।* इसी दिन फ़्रांसीसी गार्ड-बटालियन ने रूसी प्रेओब्राजेन्स्की रेजिमेंट** के लिये डिनर की व्यवस्था की थी।

---

* नेपोलियन ने १८०२ में सैनिक और असैनिक सेवाओं के लिये लीजन सम्मान-पदक की पुष्टि की थी। रूसी सेंट अन्द्रेई के पदक की पांच श्रेणियां थीं। प्रथम श्रेणी का पदक उच्चतम था। – सं०

** रूसी गार्ड-सैनिकों की सबसे पुरानी यह रेजिमेंट मास्को के निकट प्रेओब्राजेन्स्की गांव में १६८७ में बनायी गयी थी। – सं०

दोनों सम्राट इस सम्मान-भोज में हिस्सा लेनेवाले थे।

बोरीस के साथ रोस्तोव इतना अटपटा और अप्रिय-सा अनुभव कर रहा था कि डिनर के बाद बोरीस ने जब कमरे में झांका तो उसने यह ढोंग किया कि सो रहा है और अगली सुबह को इसलिये जल्दी ही घर से चला गया कि उससे मुलाक़ात न हो। फ़ॉक-कोट और गोल टोप पहने हुए निकोलाई शहर में घूमता रहा, फ़्रांसीसियों और उनकी वर्दियों तथा उन सड़कों और घरों को देखता रहा जहां रूसी तथा फ़्रांसीसी सम्राट ठहरे हुए थे। बड़े चौक में उसने डिनर के लिये मेज़ें लगायी जाती देखी और सड़कों पर रूसी तथा फ़्रांसीसी झण्डों के रंगोंवाले कपड़े बिछे देखे, जिनपर A ( अलेक्सान्द्र ) तथा N ( नेपोलियन ) संकेत-अक्षर लिखे हुए थे। घरों की खिड़कियों पर भी झण्डे लहरा रहे थे तथा उनपर भी संकेत-अक्षर अंकित थे।

"बोरीस मेरी मदद नहीं करना चाहता और मैं भी उससे इसके लिये नही कहना चाहता। यह बात तय है," निकोलाई सोच रहा था, "हमारे बीच सब कुछ समाप्त हो गया। लेकिन मैं देनीसोव के लिये जो कुछ कर सकता हूं, वह सब किये बिना यहां से नहीं जाऊंगा और मुख्य बात तो यह है कि देनीसोव का ख़त ज़रूर सम्राट तक पहुंचा दूंगा। हां, सम्राट तक?! वह तो यहां हैं!" अनचाहे ही फिर से उस मकान के पास पहुंचते हुए रोस्तोव ने सोचा जिसमें सम्राट ठहरे हुए थे।

इस घर के पास सवारी के लिये तैयार घोड़े खड़े थे और सम्राट के अमले के लोग जमा हो रहे थे। ज़ाहिर था कि सम्राट के बाहर जाने की तैयारी हो रही थी।

"किसी भी क्षण मैं उन्हें देख सकता हूं," रोस्तोव सोच रहा था। "काश, मैं खुद उन्हें देनीसोव का ख़त दे सकता, सारी बात स्पष्ट कर पाता... क्या मुझे इसलिये गिरफ़्तार किया जा सकता है कि मैं असैनिक पोशाक में हूं, फ़ॉक-कोट पहने हूं? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता! सम्राट यह समझ जाते कि न्याय किसके पक्ष में है। वह तो सब कुछ समझते हैं, सब कुछ जानते हैं। उनसे अधिक न्यायशील और दयालु भला कौन हो सकता है? और अगर मुझे इसके लिये गिरफ़्तार भी कर लेंगे कि मैं यहां हूं, तो भी क्या मुसीबत है?" उसने उस घर में, जिसमे सम्राट ठहरे हुए थे, एक फ़ौजी अफ़सर को अन्दर जाते देखकर मन में सोचा। "आख़िर दूसरे लोग भी तो भीतर जा रहे हैं! अरे!

यह सब बेकार की बात है! अन्दर जाकर खुद सम्राट को देनीसोव का ख़त दे देता हूं। बोरीस द्रुबेत्स्कोई के लिये ही यह बुरा होगा जिसने मुझे ऐसा करने को मजबूर किया।" अचानक ऐसी दृढ़ता से, जिसकी उसने खुद अपने से आशा नहीं की थी, पत्र को अपनी जेब में छूने के बाद वह उस घर की तरफ़ बढ़ गया जिसमें सम्राट ठहरे हुए थे।

"नहीं, अब में आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई के बाद की भांति इस मौक़े को हाथ से नहीं जाने दूंगा," रोस्तोव किसी भी क्षण सम्राट से भेंट होने की सम्भावना और इस विचार के कारण दिल की धड़कन को तेज़ होते हुए अनुभव करके सोच रहा था। "मैं उनके पांवों पर गिर जाऊंगा और उनसे प्रार्थना करूंगा। वह मुझे उठायेंगे, मेरी बात सुनेंगे और आभार तक प्रकट करेंगे।" – "किसी के साथ कोई नेकी करके मुझे खुशी होती है, किन्तु अन्याय को दूर करने से बढ़कर मेरे लिये और कोई खुशी नहीं," रोस्तोव ने उन शब्दों की कल्पना की जो सम्राट उससे कहेंगे। और वह जिज्ञासा से अपनी ओर देखते लोगों के पास से गुज़रकर उस घर के ओसारे में चला गया जहां सम्राट ठहरे हुए थे।

ओसारे से एक चौड़ा ज़ीना सीधा ऊपर को चला गया था। दायीं ओर एक बन्द दरवाज़ा दिखाई दे रहा था। ज़ीने के नीचे पहली मंज़िल के कमरों का दरवाज़ा था।

"आपको किससे मिलना है?" किसी ने पूछा।

"सम्राट को एक पत्र, एक प्रार्थना-पत्र देना है," रोस्तोव ने कांपती आवाज़ में उत्तर दिया।

"प्रार्थना-पत्र – कृपया उधर, ड्यूटी-अफ़सर के पास चले जाइये," (नीचेवाले दरवाज़े की तरफ़ इशारा करते हुए कहा गया)। "लेकिन उसे लिया नहीं जायेगा।"

ऐसी उदासीन-सी आवाज़ सुनकर रोस्तोव जो कुछ कर रहा था, उसके बारे में डर गया। किसी भी क्षण सम्राट के सामने होने की सम्भावना का विचार इतना अधिक आकर्षक था और इसी कारण वह इतना भयभीत हो उठा कि यहां से भाग जाने को तैयार था। किन्तु इसी क्षण सम्राट के अमले के एक व्यक्ति ने, जिसने उसका स्वागत किया था, उसके सामने ड्यूटी-अफ़सर के कमरे का दरवाज़ा खोल दिया और वह भीतर चला गया।

सफ़ेद पतलून, ऊंचे घुड़सैनिक बूट और सिर्फ़ महीन मलमल की क़मीज़ पहने, जो नज़र आ रहा था कि उसने अभी-अभी पहनी थी, कोई तीसेक साल का नाटा तथा गदराये बदन का व्यक्ति इस कमरे में खड़ा था। उसका अर्दली पीछे की ओर से उसकी बिरजिस पर रेशमी कढ़ाईवाले बहुत ही सुन्दर और नये गेलिस बांध रहा था। न जाने क्यों, रोस्तोव ने इन गेलिसों की ओर विशेष ध्यान दिया। यह व्यक्ति किसी से बात कर रहा था जो दूसरे कमरे में था।

"उस सुन्दरी का तो तराशा हुआ बदन है और वह चढ़ती जवानी में है," यह व्यक्ति कह रहा था, मगर रोस्तोव को देखकर चुप हो गया और उसके माथे पर बल पड़ गया।

"आप क्या चाहते हैं? कोई प्रार्थना-पत्र लाये हैं?.."

"क्या बात है?" किसी ने दूसरे कमरे से पूछा।

"एक और प्रार्थी आया है," उस व्यक्ति ने उत्तर दिया जो गेलिस पहने था।

"उससे कह दीजिये कि बाद में आये। सम्राट अभी बाहर आनेवाले हैं, हमें जाना चाहिये।"

"बाद में, बाद में, कल आ जाइये। अब देर हो चुकी है..."

रोस्तोव मुड़ा और उसने जाना चाहा, मगर गेलिस पहने व्यक्ति ने उसे रोककर पूछा:

"किसका प्रार्थना-पत्र है? आप कौन हैं?"

"मेजर देनीसोव का," रोस्तोव ने जवाब दिया।

"आप कौन हैं? कोई अफ़सर?"

"लेफ़्टिनेंट, काउंट रोस्तोव।"

"कैसी धृष्टता है! अपने कमांडरों के ज़रिये भिजवाइये। और खुद जाइये, जाइये..." यह कहकर वह अर्दली द्वारा अपनी ओर बढ़ायी जानेवाली वर्दी पहनने लगा।

रोस्तोव फिर से ड्योढ़ी में आ गया और उसने देखा कि पूरी फ़ौजी वर्दी पहने बहुत-से फ़ौजी अफ़सर और जनरल ओसारे में खड़े हैं जिनके पास से उसे गुज़रकर जाना था।

अपने ऐसे साहस के लिये खुद को कोसता और इस ख़्याल से दिल में धड़कन महसूस करता हुआ कि किसी भी क्षण सम्राट से उसकी भेंट हो सकती है, उनके सामने ही उसे लज्जित और गिरफ़्तार किया जा

सकता है, अपनी इस हरकत की पूरी बेहूदगी को समझता तथा इसके लिये पछताता हुआ रोस्तोव आंखें झुकाकर सम्राट के शानदार अमले से घिरे इस घर से बाहर जा रहा था कि किसी परिचित आवाज़ ने उसे पुकारा और किसी के हाथ ने उसे रोक लिया।

"भैया मेरे, फ़ॉक-कोट पहने हुए आप यहां क्या कर रहे हैं?" किसी ने भारी-भरकम आवाज़ में पूछा।

यह घुड़सेना का वह जनरल था जो इस युद्ध-अभियान के दौरान सम्राट का विशेष कृपापात्र बन गया था और पहले उस डिवीज़न का कमांडर रह चुका था जिसमें रोस्तोव काम करता रहा था।

रोस्तोव घबराकर अपनी सफ़ाई पेश करने लगा, मगर जनरल के चेहरे पर ख़ुशमिज़ाजी तथा मज़ाक़ का भाव देखकर वह उसे एक तरफ़ को ले गया, विह्वल स्वर में उसने उसे सारी बात बता दी और जनरल से यह अनुरोध किया कि वह देनीसोव की, जिसे वह जानता था, मदद करे। रोस्तोव की सारी बात सुनने के बाद जनरल ने यह ज़ाहिर करते हुए सिर हिलाया कि मामला ख़ासा संजीदा है।

"बड़ा अफ़सोस है, बड़ा अफ़सोस है उस बहादुर आदमी के लिये। लाओ, ख़त मुझे दो।"

रोस्तोव ने ख़त दिया ही था और देनीसोव का सारा क़िस्सा बताया ही था कि ज़ीने पर एड़ोंवाले तेज़ क़दमों की आवाज़ सुनायी दी और रोस्तोव को वहीं छोड़कर जनरल ओसारे की तरफ़ चला गया। सम्राट के अमले के महानुभाव झटपट पैडियों से नीचे भागकर अपने घोड़ों की तरफ़ बढ़ गये। एने नाम का वही सईस, जो आउस्टेरलिट्ज़ में भी था, सम्राट के घोड़े को ओसारे के पास ले आया और सीढ़ियों पर क़दमों की हल्की-सी चरमराहट सुनाई दी जिसे रोस्तोव ने फ़ौरन पहचान लिया। इस ख़तरे को भूलकर कि उसे पहचाना जा सकता है, रोस्तोव जिज्ञासुओं की भीड़ के साथ ओसारे के बिल्कुल पास तक पहुंच गया और दो साल के बाद उसने फिर से अपने आराध्य को देखा – उसी चेहरे, उसी नज़र, उसी चाल-ढाल, भव्यता और विनम्रता के मेल को सम्राट के प्रति उल्लास और प्यार की भावना पहले की भांति ही रोस्तोव की आत्मा में सजीव हो उठी। प्रेओब्राजेन्स्की रेजिमेंट की वर्दी, हिरन की खाल की सफ़ेद बिरजिस और ऊंचे बूट पहने तथा वक्ष पर पदक लगाये, जिससे रोस्तोव अपरिचित था (यह

फ़ांसीसी लीजन सम्मान-पदक था) सम्राट अपने टोप को बग़ल में दबाये और दस्ताने पहनते हुए ओसारे में आये। वह रुके, उन्होंने अपने आस-पास नज़र डाली और अपनी दृष्टि से इर्द-गिर्द की हर चीज़ को आलोकित कर दिया। किसी-किसी जनरल से उन्होंने दो-चार शब्द कहे। उन्होंने रोस्तोव के भूतपूर्व डिवीज़न-कमांडर को भी पहचान लिया, उसकी ओर देखकर मुस्कराये और उसे अपने पास बुलाया।

सम्राट के अमले के सभी लोग पीछे हट गये और रोस्तोव ने देखा कि कैसे यह जनरल देर तक सम्राट से कुछ कहता रहा।

सम्राट ने उससे कुछ शब्द कहे और घोड़े की तरफ़ क़दम बढ़ाया। फिर से अमला और दर्शकों की भीड़, जिसमें रोस्तोव भी शामिल था, सम्राट की ओर बढ़ गयी। घोड़े के क़रीब रुककर और ज़ीन पर हाथ रखकर सम्राट ने घुड़सेना के जनरल को सम्बोधित करते हुए सम्भवतः इस आशय से कि सभी सुन सकें, ऊंची आवाज़ में कहा:

"मैं यह नही कर सकता, जनरल। इसलिये नहीं कर सकता कि क़ानून मुझसे ज़्यादा शक्तिशाली है।" इतना कहकर उन्होंने रकाब में पांव रख दिया। जनरल ने सादर सिर झुकाया और सम्राट घोड़े पर सवार होकर उसे सड़क पर सरपट दौड़ा ले चले। उल्लास-उत्साह से अपनी सुध-बुध भूले हुए रोस्तोव भीड़ के साथ-साथ सम्राट के पीछे-पीछे दौड़ने लगा।

## २१

घोड़े पर सवार सम्राट अलेक्सान्द्र जिस मुख्य नगर-चौक की तरफ़ गये थे, वहां दो बटालियनें एक-दूसरी के सामने खड़ी थीं। दायीं ओर प्रेओब्राजेन्स्की बटालियन थी और बायीं ओर भालू के समूर की टोपियां पहने फ़ांसीसी गार्ड-बटालियन।

सम्राट अलेक्सान्द्र जिस समय इन बटालियनों के (जो अटेनशन खड़ी हो गयी थीं) एक बाजू पहुंच रहे थे, उसी समय दूसरी ओर के बाजू से घुड़सवारों का एक बड़ा दल बढ़ा आ रहा था। इस दल के आगे-आगे रोस्तोव ने नेपोलियन को पहचान लिया। नेपोलियन के

अतिरिक्त यह कोई हो ही नहीं सकता था। वह सिर पर छोटा-सा टोप डाटे, कंधे से कमर तक के फ़ीते पर सेंट अन्द्रेई के पदक को वक्ष पर लटकाये, सफ़ेद वास्कट पर नीली वर्दी पहने, सुनहरी कढ़ाईवाले लाल ज़ीनपोश से सजे बहुत ही बढ़िया नसल के भूरे, अरबी घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ बढ़ा आ रहा था। सम्राट अलेक्सान्द्र के क़रीब आकर उसने अपना टोप ऊपर उठाया और उसके ऐसा करने पर घुड़सैनिक होने के नाते रोस्तोव यह देखे बिना न रह सका कि नेपोलियन अपने घोड़े पर ढंग से और जमकर नहीं बैठा था। बटालियनें "हुर्रा!" और "सम्राट ज़िन्दाबाद!" चिल्ला उठी। नेपोलियन ने अलेक्सान्द्र से कुछ कहा। दोनों सम्राट अपने घोड़ों से नीचे उतर आये और उन्होंने एक-दूसरे के हाथ थाम लिये। नेपोलियन के चेहरे पर अप्रिय बनावटी मुस्कान थी। सम्राट अलेक्सान्द्र चेहरे पर स्नेह का भाव लिये नेपोलियन से कुछ कह रहे थे।

फ़्रांसीसी फ़ौजी पुलिसवालों के घोड़ों के लतियाने के बावजूद, जो भीड को पीछे हटा रहे थे, रोस्तोव सम्राट अलेक्सान्द्र और नेपोलियन की हर गति-विधि को बहुत ध्यान से देख रहा था। उसे इस बात से अप्रत्याशित आश्चर्य हुआ कि अलेक्सान्द्र बराबरी की हैसियत से बोना-पार्ट के साथ व्यवहार कर रहे थे और बोनापार्ट किसी भी तरह की झेंप के बिना, मानो सम्राट के साथ ऐसी निकटता उसके लिये स्वाभा-विक हो तथा वह उसका अभ्यस्त हो, बराबरी की हैसियत से रूसी ज़ार के साथ पेश आ रहा था।

अपने बहुत बड़े अमले के साथ अलेक्सान्द्र और नेपोलियन प्रेओ-ब्राज़ेन्स्की बटालियन के दायें बाज़ू की ओर, जहां भारी भीड़ एकत्रित थी, बढ़ आये। लोगों की भीड़ ने अचानक ही अपने को दोनों सम्राटों के इतना अधिक निकट पाया कि अगली क़तारों में खड़े रोस्तोव को इस ख़्याल से डर महसूस होने लगा कि कहीं उसे पहचान ही न लिया जाये।

"सम्राट, मैं आपके सबसे बहादुर सैनिक को फ़्रांसीसी लीजन सम्मान-पदक भेंट करने की अनुमति चाहता हूं," प्रत्येक अक्षर पर ज़ोर देते हुए तीखी और स्पष्ट आवाज़ ने फ़्रांसीसी में कहा।

यह नाटे बोनापार्ट की आवाज़ थी जो नज़र ऊपर उठाये हुए सीधे अलेक्सान्द्र की आंखों में देख रहा था। सम्राट अलेक्सान्द्र ध्यान से

बोनापार्ट के शब्दों को सुन रहे थे और वह सिर झुकाकर मधुर ढंग से मुस्कराये।

"उस सैनिक को, जिसने इस युद्ध में सबसे ज़्यादा बहादुरी का सबूत दिया हो," प्रत्येक शब्द पर बल देते और रोस्तोव को बहुत अखरनेवाली शान्त तथा विश्वासपूर्ण दृष्टि से रूसी सैनिकों की पांतों की ओर देखते हुए, जो उसके सामने अभी तक अटेनशन खड़ी थीं और हिले-डुले बिना अपने सम्राट को एकटक देख रही थीं, उक्त शब्द और कह दिये।

"हुज़ूर, आप मुझे अपने कर्नल की राय लेने की इजाज़त दें," सम्राट अलेक्सान्द्र ने भी फ़्रांसीसी में ही जवाब दिया और बटालियन-कमांडर प्रिंस कोज़्लोव्स्की की तरफ़ तेज़ी से कुछ क़दम बढ़ाये। इसी बीच बोनापार्ट अपने छोटे-से, गोरे-गोरे हाथ पर से दस्ताना उतारने लगा। ऐसा करते समय दस्ताना फट गया और उसने उसे फेंक दिया। बोनापार्ट के पीछे खड़े एडजुटेंट ने लपककर उसे उठा लिया।

"किसे भेंट किया जाये?" सम्राट अलेक्सान्द्र ने दबी आवाज़ में प्रिंस कोज़्लोव्स्की से रूसी में पूछा।

"आप जिसे भेंट करने का हुक्म देंगे, हुज़ूर।"

सम्राट ने अप्रसन्नता से माथे पर बल डाला और मुड़कर देखते हुए कहा:

"उसे तो जवाब देना चाहिये।"

प्रिंस कोज़्लोव्स्की ने सैनिक पांतों पर दृढ़ता से दृष्टि डाली और ऐसा करते समय रोस्तोव की ओर भी देख लिया।

"क्या कर्नल मेरा नाम लेने जा रहे हैं?" रोस्तोव ने सोचा।

"लाज़ारेव!" कर्नल ने त्योरी चढ़ाकर ऊंची आवाज़ में आदेश दिया और पहली क़तार में खड़ा पहला फ़ौजी बड़ी फ़ुर्ती से आगे आ गया।

"तुम किधर चल दिये? यहीं खड़े रहो!" कई आवाज़ों ने फुस-फुसाकर लाज़ारेव से कहा जिसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह किधर जाये। लाज़ारेव रुक गया, उसने कनखियों से कर्नल की तरफ़ देखा और उसका चेहरा सिहर उठा, जैसा कि सबके सामने बुलाये जाने पर सैनिकों के साथ आम तौर पर होता है।

नेपोलियन ने अपना सिर ज़रा घुमाया, छोटा-सा गुदगुदा हाथ

पीछे की ओर ऐसे बढ़ाया मानो उसमें कोई चीज़ लेना चाहता हो। उसके अमले के लोग उसी क्षण यह अनुमान लगाते हुए कि क्या मामला है, दौड़-धूप करने, फुसफुसाने लगे, कोई चीज़ एक-दूसरे के हाथ में देने लगे और वह निजी सेवक, जिसे रोस्तोव ने बोरीस के यहां पिछले दिन देखा था, भागकर आगे आया, उसने नेपोलियन के बढ़े हुए हाथ के सामने सिर झुकाया और क्षण भर भी इन्तज़ार न करवाकर लाल फ़ीते सहित पदक को उस हाथ पर रख दिया। नेपोलियन ने तरुण की ओर देखे बिना दो उंगलियां दबा दीं। पदक उन उंगलियों के बीच था। वह लाज़ारेव के पास गया जो दीदे फैलाये लगातार अपने सम्राट की तरफ़ ही देखता जाता था। नेपोलियन ने घूमकर सम्राट अलेक्सान्द्र की तरफ़ देखा और इस तरह यह प्रकट किया कि अब वह जो कुछ कर रहा था, वह केवल अपने मित्र-राष्ट्र के सम्राट के लिये कर रहा था। पदक लिये हुए छोटे-से गोरे हाथ ने सैनिक लाज़ारेव के बटन को छू भर दिया। नेपोलियन को मानो यह मालूम था कि यह सैनिक सदा-सर्वदा के लिये सौभाग्यशाली और पुरस्कृत हो जाये, दुनिया के अन्य सभी लोगों की तुलना में अलग-थलग हो जाये, इसके लिये केवल इतना ही काफ़ी था कि उसका, नेपोलियन का हाथ सैनिक के वक्ष को केवल छू दे। नेपोलियन ने पदक को लाज़ारेव की छाती पर सिर्फ़ रख ही दिया और हाथ नीचे करके अलेक्सान्द्र की ओर घूम गया मानो उसे मालूम हो कि इस पदक को लाज़ारेव के वक्ष पर चिपक जाना चाहिये। वास्तव मे ऐसा ही हुआ भी था। सेवा करने को तत्पर रूसी और फ़ांसीसी हाथों ने फ़ौरन पदक को थाम लिया और उसे लाज़ारेव की वर्दी पर लटका दिया। लाज़ारेव ने गोरे-गोरे हाथोंवाले नाटे-से व्यक्ति को उदासी से देखा जिसने उसकी छाती को छुआ था और पहले की तरह हिले-डुले बिना अटेनशन खड़े रहकर फिर से सीधे अलेक्सान्द्र की आंखों में देखने लगा मानो पूछ रहा हो: क्या वह अभी और खड़ा रहे या उसे चले जाने का हुक्म दिया जा रहा है या वह कुछ और करे? किन्तु उसे कोई हुक्म नहीं दिया गया और वह काफ़ी देर तक ऐसे बुत बना ही खड़ा रहा।

दोनों सम्राट घोड़ों पर सवार होकर चले गये। प्रेओब्राजेन्स्की बटालियन के सैनिक अपनी क़तारों से निकलकर फ़ांसीसी गार्ड-सैनिकों के साथ घुल-मिल गये और अपने लिये लगायी गयी मेज़ों के सामने जा बैठे।

लाज़ारेव बहुत ही सम्मानित स्थान पर बैठा था। लोग उसे गले लगा रहे थे, बधाई दे रहे थे और रूसी तथा फ़ांसीसी अफ़सर उससे हाथ मिला रहे थे। बहुत बड़ी संख्या में अफ़सर और आम लोग लाज़ारेव को देखने के लिये आ रहे थे। इस चौक में मेज़ों के गिर्द रूसी और फ़ांसीसी भाषा के शब्द और ठहाके गूंज रहे थे। बहुत खुश तथा बड़े प्रफुल्ल दो अफ़सर, जिनके चेहरे लाल थे, रोस्तोव के पास से गुज़रे।

"भैया मेरे, क्या बढ़िया दावत है? सब कुछ चांदी के बर्तनों में परोसा गया है," एक अफ़सर ने कहा।

"लाज़ारेव को देखा?"

"हां, देखा है।"

"सुनने में आया है कि कल प्रेओब्राजेन्स्की बटालियनवाले दावत करेंगे।"

"तुम ज़रा ख्याल करो कि लाज़ारेव की तक़दीर कैसे खुल गयी है! उम्र भर के लिये बारह सौ फ़्रांक की पेंशन।" *

"कहो दोस्तो, यह टोपी मेरे सिर पर कैसी फब रही है!" किसी फ़्रांसीसी की झबरीली टोपी पहनकर प्रेओब्राजेन्स्की बटालियन का कोई सैनिक चिल्ला रहा था।

"बहुत बढ़िया है, लाजवाब है!"

"तुमने नारे तो सुने?" एक गार्ड-अफ़सर ने दूसरे से पूछा। "दो दिन पहले ये नारे थे – नेपोलियन, फ़्रांस, बहादुरी। कल थे – अलेक्सान्द्र, रूस, भव्यता। एक दिन हमारे सम्राट नारों की घोषणा करते हैं और दूसरे दिन नेपोलियन। कल हमारे सम्राट सबसे बहादुर फ़्रांसीसी गार्ड-सैनिक को सेन्ट जार्ज के पदक से सम्मानित करेंगे। ऐसा करना तो ज़रूरी है! पुरस्कार के बदले में पुरस्कार तो देना ही चाहिये।"

अपने साथी जिलीन्स्की के साथ बोरीस भी प्रेओब्राजेन्स्की बटालियन की दावत देखने आया। वापस लौटते हुए एक घर के कोने में खड़े रोस्तोव पर उसकी नज़र पड़ गयी।

"अरे रोस्तोव! नमस्ते, हमारी तो आज मुलाक़ात ही नहीं हुई,"

---

* लीजन सम्मान-पदक पानेवाले सैनिक को यह पेंशन भी दी जाती थी। – सं०

उसने कहा और उससे यह पूछे बिना न रह सका कि उसके साथ क्या कोई बुरी बात हो गयी है, क्योंकि रोस्तोव का चेहरा इतना अजीब, उदास और खिन्न-सा दिखाई दे रहा था।

"नहीं, कोई बात नहीं," रोस्तोव ने जवाब दिया।

"तुम आओगे न?"

"हां, आऊंगा।"

रोस्तोव देर तक दावत उड़ाते लोगों को दूर से देखता हुआ मकान के कोने में खड़ा रहा। उसके दिमाग़ में यातनापूर्ण उथल-पुथल मची हुई थी जिसका वह कोई निष्कर्ष नहीं निकाल पा रहा था। उसकी आत्मा में भयानक सन्देह सिर उठा रहे थे। उसे देनीसोव तथा उसमें हुए परिवर्तन, उसके घुटने टेक देने और कटे हाथों-पांवोंवाले लोगों, वहां की गन्दगी और बीमारियों की याद हो आई। उसे इस चीज़ की इतनी सजीव-सी अनुभूति हुई मानो वह इस समय भी लाशों की सड़ांध को अनुभव कर रहा हो, कि उसने यह समझने के लिये कि यह दुर्गन्ध कहां से आ रही है, मुड़कर देखा। उसके बाद उसे छोटे-से गोरे हाथवाले आत्मतुष्ट बोनापार्ट का ध्यान हो आया जो अब सम्राट था और सम्राट अलेक्सान्द्र उसको प्यार तथा उसका आदर करते थे। किसलिये लोगों के हाथ-पांव कटे, किसलिये उनकी जानें गयीं? इसके बाद उसे पुरस्कृत लाज़ारेव और दंडित देनीसोव का स्मरण हो आया जिसे क्षमा नहीं किया गया था। उसने अपने को ऐसे अजीब ख्यालों में खोये हुए अनुभव किया कि वह उनसे भयभीत हो उठा।

प्रेओब्राजेन्स्की बटालियनवालों के खाने की गन्ध और भूख ने उसे ऐसी मानसिक स्थिति से मुक्ति दिलायी। जाने से पहले कुछ खा लेना ज़रूरी था। वह उस होटल की तरफ़ चल दिया, जिसपर उस सुबह को उसकी नज़र पड़ी थी। होटल में लोगों और अपनी ही तरह असैनिक पोशाकों में आनेवाले फ़ौजी अफ़सरों की इतनी अधिक भीड़ थी कि वह बहुत मुश्किल से ही अपने लिये भोजन पाने की व्यवस्था कर पाया। उसके अपने ही डिवीज़न के दो अफ़सर उसके साथ एक ही मेज़ पर बैठ गये। जैसा कि स्वाभाविक था, शान्ति के बारे में बातचीत होने लगी। सेना के अधिकांश भाग की तरह ये फ़ौजी अफ़सर, रोस्तोव के ये साथी भी फ़्रीडलैंड की लड़ाई के बाद की गयी इस शान्ति-सन्धि

से नाखुश थे। उन्होंने कहा कि अगर हम कुछ देर तक और डटे रहते तो नेपोलियन का खेल खत्म हो जाता, कि उसकी सेनाओं के पास न तो खाने को कुछ रहा था और न ही गोला-बारूद। निकोलाई रोस्तोव चुपचाप खाना खा रहा था और मुख्यत: तो पी रहा था। उसने अकेले ही शराब की दो बोतलें पी डाली थीं। उसकी मानसिक उथल-पुथल किसी नतीजे पर पहुंचे बिना उसे व्यथित कर ही रही थी। वह अपने विचारों के वशीभूत होने से डरता था और उनसे पिंड भी नहीं छुड़ा पा रहा था। अचानक एक अफ़सर के यह कहने पर कि फ़्रांसीसियों को देखकर शर्म महसूस होती है, रोस्तोव किसी कारण के बिना ही ग़ुस्से से चीखने-चिल्लाने लगा और इसलिये अफ़सरों को बहुत आश्चर्य हुआ।

"आप भला यह फ़ैसला कैसे कर सकते हैं कि क्या बेहतर होता!" वह चिल्ला उठा और उसका चेहरा सहसा लाल-सुर्ख़ हो गया। "सम्राट के कार्य-कलापों को आप भला-बुरा कैसे कह सकते हैं, हमें ऐसा निर्णय करने का अधिकार ही कहां है?! हम तो सम्राट के उद्देश्यों, उनके कार्य-कलापों को समझ ही नहीं सकते!"

"लेकिन मैंने तो सम्राट के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा," अफ़सर ने अपनी सफ़ाई पेश की जो रोस्तोव के इस तरह भड़क उठने का इसके सिवा कोई और कारण नहीं समझ सका कि वह नशे में था।

किन्तु रोस्तोव ने उसकी बात पर कान नहीं दिया।

"हम कूटनीतिक कर्मचारी-बाबू नहीं, फ़ौजी हैं और इससे अधिक कुछ नहीं," वह कहता गया। "हमें अगर मरने का हुक्म मिलता है तो मर जाते हैं। अगर सज़ा दी जाती है तो इसका मतलब है कि हम क़ुसूरवार हैं – भले-बुरे का फ़ैसला करना हमारा काम नहीं। अगर हमारे सम्राट, बोनापार्ट को सम्राट मानना और उसके साथ एकता-सन्धि करना चाहते हैं तो इसका मतलब है कि ऐसा ही होना चाहिये। अगर हम सभी चीज़ों के बारे में निर्णय और तर्क-वितर्क करने लगेंगे तो कुछ भी पवित्र-पावन नहीं रह जायेगा। ऐसे तो हम यह भी कह सकते हैं कि भगवान नहीं हैं, कुछ भी नहीं है," निकोलाई मेज़ पर घूंसा मारकर चिल्ला उठा। उसके सहभाषियों को उसके ये शब्द बिल्कुल असंगत लग रहे थे, किन्तु उसके अपने विचारक्रम की दृष्टि से सर्वथा सुसंगत थे।

"हमारा काम अपना कर्त्तव्य पूरा करना, लड़ना-मरना है, सोचना-विचारना नही। बस, बात ख़त्म," उसने निष्कर्ष निकाला।

"और पीना भी," एक अफ़सर ने कहा जो झगड़े से बचना चाहता था।

"हां, और पीना भी," निकोलाई ने उसका समर्थन किया। "अरे, ओ बैरे! एक बोतल और लाओ!" वह ज़ोर से चिल्लाया।

# भाग ३

# १

सम्राट अलेक्सान्द्र सम्राट नेपोलियम से पुन: मिलने के लिये सन् १८०८ में एर्फ़र्ट गये। पीटर्सबर्ग की ऊंची सोसाइटी में बड़ी समारोही धूमधामवाले इस मिलन की भव्यता की बहुत चर्चा होती रही।

सन् १८०९ में संसार के इन दो भाग्य-विधाताओं (जैसा कि नेपोलियन और अलेक्सान्द्र के बारे में कहा जाता था) की घनिष्ठता इस हद तक बढ़ी कि इस वर्ष जब नेपोलियन ने आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की तो रूसी सेनायें अपने भूतपूर्व शत्रु बोनापार्ट की सहायता करने तथा भूतपूर्व मित्र, आस्ट्रिया के सम्राट के विरुद्ध लड़ने के लिये विदेश गयीं। यह घनिष्ठता इस हद तक बढ़ी कि ऊंची सोसाइटी में सम्राट अलेक्सान्द्र की एक बहन की नेपोलियन के साथ शादी के बारे में भी बातें होती रहीं। किन्तु विदेश-नीति से सम्बन्धित समस्याओं के अतिरिक्त रूसी समाज का ध्यान ख़ास तौर पर उन अन्दरूनी परि-वर्तनों पर केन्द्रित था जो इस समय शासन के सभी भागों-विभागों में हो रहे थे।

इसी बीच जीवन – स्वास्थ्य, रोगों, श्रम, विश्राम की महत्त्वपूर्ण रुचियों तथा चिन्तन, विज्ञान, कविता, संगीत, प्रेम, मैत्री, घृणा और भावावेशों की अपनी दिलचस्पियों का वास्तविक जीवन – हमेशा की तरह चलता जा रहा था और उसे इस बात से कुछ लेना-देना नहीं था कि नेपोलियन बोनापार्ट के साथ घनिष्ठता बढ़ती है या शत्रुता होती है या फिर कैसे और किन परिवर्तनों की सम्भावना है।

प्रिंस अन्द्रेई लगातार दो साल तक गांव में ही अपना समय बिताता रहा। प्येर ने अपनी जागीरों के बारे में जो योजनायें बनायी थीं और जिनमें से किसी को भी वह इस कारण कोई अमली शक्ल नहीं दे पाया था कि निरन्तर एक को छोड़कर दूसरी को शुरू करता रहता था, उन सभी योजनाओं को प्रिंस अन्द्रेई ने चुपचाप और किसी तरह के विशेष श्रम के बिना अपनी जागीरों पर व्यावहारिक रूप दे दिया।

व्यावहारिकता की पकड़ के जिस गुण का प्येर में अभाव था, प्रिंस अन्द्रेई के चरित्र में वही उच्चतम स्तर तक पहुंचा हुआ था और यही गुण उसके किसी प्रकार के विशेष झंझट और प्रयास के बिना उसके कामों को आगे बढ़ाता जाता था।

उसकी एक जागीर के तीन सौ भूदास मुक्त किसान बना दिये गये थे (यह रूस का एक पहला उदाहरण था) और दूसरी जागीरों पर बेगार को ख़त्म करके पट्टेदारी के लगान की व्यवस्था कर दी गयी थी। बोगुचारोवो में उसी के ख़र्च पर एक प्रशिक्षित नर्स प्रसूति के समय किसान औरतों की सहायता करती थी और एक पादरी किसानों तथा नौकरों-चाकरों के बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाता था।

प्रिंस अन्द्रेई अपना आधा समय पिता और बेटे के साथ, जो अभी तक धायों की देख-रेख में था, बिताता और आधा समय बोगुचारोवो आश्रम में, जैसा कि उसके पिता इस गांव को कहते थे। इस चीज़ के बावजूद कि प्येर के सामने उसने बहुत ज़ोर देकर यह कहा कि दुनिया की दूसरी जगहों पर होनेवाली घटनाओं में उसकी कोई दिल-चस्पी नहीं है, वह बड़ी लगन से उनपर कड़ी नज़र रखता था, अनेक पुस्तकें मंगवाकर पढ़ता था और उसे इस बात की बड़ी हैरानी होती थी कि जब कभी सीधे पीटर्सबर्ग से, जीवन की भारी हलचल से सम्बन्ध रखनेवाले लोग उसके पास या उसके पिता के पास आते तो रूस की अन्दरूनी और बाहरी नीति के क्षेत्र में हो रही घटनाओं की दृष्टि से उसकी तुलना में, जो लगातार गांव में ही रह रहा था, उनका ज्ञान कहीं पिछड़ा हुआ होता था।

जागीरों में गहरी रुचि लेने, तरह-तरह की किताबों के सामान्य अध्ययन के अतिरिक्त प्रिंस अन्द्रेई इस समय हमारे पिछले दो असफल युद्ध-अभियानों का आलोचनात्मक विवेचन करने और हमारे सैनिक नियमों तथा क़ानून-क़ायदों में परिवर्तन की योजना बनाने में भी व्यस्त रहता था।

सन् १८०६ के वसन्त में प्रिंस अन्द्रेई अपने बेटे के सरपरस्त के नाते उसकी र्याज़ान प्रदेश की जागीरों पर गया।

वसन्त की धूप की गर्माहट का आनन्द लेता हुआ वह बग्घी में बैठा जा रहा था, घास की पहली पत्तियों, भोज-वृक्ष की पहली कोंपलों और उज्ज्वल, नीलाकाश में दौड़ रहे वसन्त के पहले सफ़ेद बादलों

को देख रहा था। वह कुछ भी सोच-विचार नहीं रहा था, प्रफुल्ल और निश्चिन्त मन से इधर-उधर देख रहा था।

उसी बड़ी नाव पर सवार होकर, जिसपर एक साल पहले उसने प्येर से बातचीत की थी, प्रिंस अन्द्रेई पार पहुंचा। गन्दा-सा गांव, खलिहान, जाड़े में बोयी गयी रई के हरे-भरे खेत, पुल के पास बची-बचायी बर्फ़ से ढकी ढाल, मिट्टीवाले कच्चे रास्तों की चढ़ाई, डण्ठलों की पट्टियों और जहां-तहां हरी हो गयी झाड़ियों को पीछे छोड़ती हुई बग्घी ऐसे रास्ते पर पहुंच गयी जिसके दोनों ओर भोज-वृक्षों का जंगल था। जंगल में लगभग गर्मी थी, हवा बिल्कुल महसूस नहीं होती थी। चिपचिपी, हरी कोंपलों से ढके भोज-वृक्ष ज़रा भी हिल-डुल नहीं रहे थे, घास की पहली पत्तियां पिछले साल के पत्तों को ऊपर उठाती हुई फूट रही थी, बैंगनी पुष्प निकल रहे थे। भोज-वृक्षों के बीच जहां-तहां बिखरे हुए फ़र-वृक्ष अपनी तुच्छ, स्थायी हरियाली से जाड़े की याद दिलाते थे। वन में दाखिल होने पर घोड़े हिनहिनाने लगे और उनके बदन पर स्पष्ट रूप से पसीना झलकने लगा।

प्योत्र नाम के नौकर ने कोचवान से कुछ कहा, कोचवान ने सहमति प्रकट की। किन्तु उसके लिये सम्भवतः कोचवान की सहमति ही काफ़ी नही थी, इसलिये उसने कोचवान की बग़ल में अपनी सीट पर से प्रिंस अन्द्रेई की ओर मुड़कर बड़े आदर से मुस्कराते हुए कहा:

"हुज़ूर, कितना प्यारा है!"

"क्या प्यारा है?"

"बहुत प्यारा है, हुज़ूर।"

"यह क्या कह रहा है?" प्रिंस अन्द्रेई ने सोचा। "हां, शायद वसन्त के बारे में कह रहा है," उसने दायें-बायें नज़र दौड़ाते हुए सोचा। "सचमुच सभी जगह हरियाली छा गयी है... सो भी इतनी जल्दी! भोज, जंगली चेरी और आल्डर के वृक्षों पर भी कोंपलें फूटने लगी हैं... मगर शाहबलूत कही नज़र नहीं आ रहा। हां, वह रहा शाह-बलूत।"

रास्ते के सिरे पर एक शाहबलूत खड़ा था। भोज-वृक्षोंवाले इस जंगल के हर वृक्ष से सम्भवतः उसकी दस गुनी अधिक आयु थी, उसका तना दस गुना मोटा था और वह दुगना ऊंचा था। यह दो मनुष्यों की बाहों में समा सकनेवाला ऐसा भीमकाय शाहबलूत था जिसपर जहां-

तहां पुरानी गांठें उभरी हुई थीं और साफ़ नज़र आ रहा था कि उसकी टहनियां-शाखायें बहुत पहले ही टूट चुकी थीं और उसकी छाल फट चुकी थी। अपने अटपटे, एंडे-बैंड़े ढंग से फैले हुए छालवाले हाथों तथा उंगलियों के साथ वह मुस्कराते हुए भोज-वृक्षों के बीच एक बूढ़े, झल्लाये और घृणासूचक दानव की तरह खड़ा था। केवल वही वसन्त के सौन्दर्य को स्वीकारना नही चाहता था, वसन्त और धूप की ओर से आंखें मूंदे था।

"वसन्त, प्रेम और सुख!" यह शाहबलूत मानो कह रहा था। "और इस एक ही मूर्खतापूर्ण और अर्थहीन भ्रमजाल से तुम उकताते भी नहीं! लगातार यही रट और यही आत्म-प्रवंचना! नहीं, न तो कोई वसन्त, न चमकता सूर्य और न सुख है। उधर देखिये, उन कुचले तथा मृतप्राय फ़र-वृक्षों को जो हमेशा एक जैसे ही रहते हैं। और मुझपर भी नज़र डालिये, मैं अपनी टूटी, छालहीन उंगलियों के साथ – जो पीठ पर, बग़लों में, मनमाने ढंग से उग आयी हैं – खड़ा हूं और आपकी किसी भी तरह की उम्मीदों और फ़रेबों पर एतबार नहीं करता हूं।"

वन को लांघते हुए प्रिंस अन्द्रेई ने कई बार मुड़-मुड़कर इस शाहबलूत की तरफ़ देखा मानो वह इससे किसी सन्देश की आशा कर रहा हो। घास और फूल तो शाहबलूत के नीचे भी थे, किन्तु वह उसी तरह भृकुटि चढ़ाये, निश्चल, भोंडा और ढीठ-सा उनके बीच खड़ा था।

"हां, शाहबलूत का यह पेड़ सही, हज़ार बार सही है," प्रिंस अन्द्रेई ने सोचा, "बेशक दूसरे, जवान लोग फिर से इस धोखे के शिकार हो जायें, लेकिन हम तो जीवन की हक़ीक़त जानते हैं – हमारा जीवन तो समाप्त हो चुका!" इस शाहबलूत के संबंध में प्रिंस अन्द्रेई के मन में अनेक निराशाजनक, किन्तु मधुर उदासी लिये हुए बहुत-से विचार उमड़ आये। इस यात्रा के दौरान उसने अपने सारे जीवन पर मानो फिर से चिन्तन किया और पहले की तरह मन को शान्ति देनेवाले तथा उसी निराशाजनक निष्कर्ष पर पहुंचा कि उसे नया कुछ भी आरम्भ नहीं करना चाहिये, कि कोई बुराई किये बिना, किसी चीज़ से डरे-घबराये बिना तथा किसी चीज़ की कामना किये बिना अपनी बाक़ी ज़िन्दगी बितानी चाहिये।

## २

र्याज़ान प्रदेश की जागीर की सरपरस्ती के सिलसिले में प्रिंस अन्द्रेई को इलाक़े के कुलीन-मुखिया के पास जाना पड़ा। कुलीन-मुखिया थे काउंट इल्या अन्द्रेयेविच रोस्तोव। प्रिंस अन्द्रेई मई के मध्य में उनसे मिलने गया।

वसन्त के हल्के गर्म दिनों का समय था। वन-वृक्षों पर पूरी तरह पत्ते निकल आये थे, धूल उड़ रही थी और इतनी गर्मी थी कि पानी के निकट से गुज़रते हुए नहाने को मन होता था।

उदास और इन विचारों में खोया-उलझा हुआ प्रिंस अन्द्रेई कि उसे फ़लां-फ़लां मामले के बारे में कुलीन-मुखिया से बातचीत करनी होगी, रोस्तोव-परिवार के ओतरादनोये गांव में स्थित घर की ओर जानेवाले संकरे रास्ते से अपनी बग्घी में जा रहा था। दायीं ओर के पेड़ों के पीछे से उसे नारी-कण्ठ की उल्लासपूर्ण चीख़ सुनायी दी और अपनी बग्घी के सामने से लड़कियों का एक दल भागता दिखाई दिया। दूसरी लड़कियों से आगे-आगे और बग्घी के अधिक निकट से छींट का पीला फ़्रॉक पहने एक बहुत ही दुबली-पतली तथा काली आंखों और काले बालोंवाली लड़की भागती हुई आ रही थी। वह अपने बालों पर सफ़ेद रूमाल बांधे थी जिसके नीचे से संवरे बालों की लटें बाहर निकली हुई थीं। लड़की कुछ चिल्ला रही थी, किन्तु किसी अजनबी को आते देखकर उसपर नज़र डाले बिना ही खिलखिलाकर हंसती हुई वापस भाग गयी।

प्रिंस अन्द्रेई को किसी कारण अचानक कसक-सी अनुभव हुई। दिन इतना प्यारा था, धूप इतनी तेज़ थी, सभी ओर हंसी-ख़ुशी का ऐसा वातावरण था, मगर यह दुबली-पतली और प्यारी-सी लड़की उसके अस्तित्व के बारे में नहीं जानती थी, जानना भी नहीं चाहती थी और अपनी किसी दूसरी, निश्चय ही मूर्खतापूर्ण, किन्तु प्रफुल्लता और ख़ुशी भरी ज़िन्दगी से सन्तुष्ट और उसमें मस्त थी। "किसलिये वह इतनी ख़ुश है? किस चीज़ के बारे में सोच रही है? ज़ाहिर है, सैनिक नियमों के बारे में नहीं, र्याज़ान के किसानों के पट्टेदारी के लगान के बारे में नहीं। किस चीज़ के बारे में वह सोच रही है? किसलिये वह इतनी ख़ुश है?" प्रिंस अन्द्रेई ने बरबस जिज्ञासापूर्वक अपने से यह पूछा।

काउंट इल्या अन्द्रेयेविच सन् १८०६ में भी हमेशा की तरह ही ओतरादनोये में अपनी ज़िन्दगी बिता रहे थे यानी अपने यहां लगभग सारे इलाक़े से आनेवाले मेहमानों का शिकारों, थियेटरों, दावतों और वादकों-संगीतज्ञों से मनोरंजन करते रहते थे। हर नये मेहमान की भांति उन्हें प्रिंस अन्द्रेई के आने पर भी बहुत ख़ुशी हुई और लगभग ज़बर्दस्ती ही उन्होंने उसे अपने यहां रात बिताने के लिये रोक लिया।

ऊब भरे दिन के दौरान, जब घर के बुज़ुर्ग मेज़बान और उनके सर्वाधिक सम्मानित अतिथि, जो निकट आ रहे किसी के जन्मदिन के सिलसिले में बड़ी संख्या में यहां एकत्रित थे, प्रिंस अन्द्रेई को अपनी बातों में उलझाये रहे, उसका युवा लोगों में किसी कारण हंसती और ख़ुश होती हुई नताशा की तरफ़ बरबस ध्यान गया और वह अपने से यह पूछे बिना न रह सका: "वह किस बारे में सोच रही है? किसलिये वह इतनी ख़ुश है?"

रात को नयी जगह पर अकेला रह जाने पर उसे बहुत देर तक नींद नही आयी। वह कुछ पढ़ता रहा, इसके बाद उसने मोमबत्ती बुझा दी और उसे फिर से जला लिया। कमरे में, जिसकी भीतर की झिल-मिलियां बन्द थी, गर्मी थी। उसे इस बुद्धू बुड्ढे पर (काउंट रोस्तोव को वह यही संज्ञा देता था) झल्लाहट आ रही थी जिसने यह विश्वास दिलाते हुए उसे रोक लिया था कि शहर से अभी ज़रूरी काग़ज़ात नहीं आये हैं, उसे अपने पर खीझ आ रही थी कि यहां रुक गया है।

प्रिंस अन्द्रेई खिड़की खोलने के लिये उसके पास गया। जैसे ही उसने झिलमिलियां ऊपर उठायीं, वैसे ही चांदनी, जो मानो खिड़की के क़रीब बहुत देर से इसी की प्रतीक्षा कर रही थी, कमरे में छा गयी। उसने खिड़की खोली। ताज़गी लिये रात शान्त और उजली थी। खिड़की के बिल्कुल सामने कटी फुनगियोंवाले कई वृक्ष खड़े थे जो एक ओर काले और दूसरी ओर से रुपहले-आलोकित नज़र आ रहे थे। वृक्षों के नीचे कुछ रसीले, गीले और घने पौधे उगे हुए थे जिनके पत्ते तथा डंठल कहीं-कहीं से रुपहले थे। काले-काले वृक्षों के आगे ओसकणों से चमकती हुई एक छत थी, दायीं ओर को अत्यधिक सफ़ेद तने तथा अनेक शाखाओंवाला बहुत बड़ा और घने पत्तों से ढका हुआ एक वृक्ष था। इस वृक्ष के ऊपर उजले, लगभग तारकहीन, वसन्तकालीन आकाश में क़रीब-क़रीब पूरा चांद चमक रहा था। प्रिंस अन्द्रेई ने

खिड़की के दासे पर अपनी कोहनी टिका दी और उसकी आंखें आकाश पर जम गयी।

प्रिंस अन्द्रेई का कमरा बीच की मंज़िल पर था। उसके ऊपरवाले कमरों में भी लोग थे और वे भी नहीं सो रहे थे। उसने अपने ऊपर से किसी लड़की को यह कहते सुना :

"बस, एक बार और।" प्रिंस अन्द्रेई ने यह आवाज़ फ़ौरन पहचान ली।

"तुम सोओगी कब ?" दूसरी लडकी ने पूछा।

"मैं नहीं सोऊंगी, मैं क्या करूं, मैं सो ही नही सकती ! अच्छा, आओ आख़िरी बार ..."

दो लड़कियों की आवाजों में किसी गाने का अन्तिम पद, अन्तिम भाग गूंज उठा।

"ओह, यह सब कितना अद्भुत है ! ख़ैर, अब हम सोयेंगी, क़िस्सा ख़त्म !"

"तुम सो जाओ, मगर मैं नहीं सो सकती," पहली आवाज़ ने खिड़की के पास आते हुए उत्तर दिया। उसने सम्भवतः खिड़की से अपने को लगभग बाहर निकाल लिया था, क्योंकि उसके फ़ॉक की सरसराहट और सांस की आवाज़ भी सुनायी दे रही थी। सभी चीज़ों ने, चांद, उसकी चांदनी और परछाइयों ने दम साध लिया था, वे सब जड़ हो गयी थीं। प्रिंस अन्द्रेई भी हिलने-डुलने से घबरा रहा था, ताकि उसकी उपस्थिति का, जो सर्वथा अनभिप्रेत थी, भंडाफोड़ न हो जाये।

"सोन्या, सोन्या !" फिर से पहली आवाज़ सुनायी दी। "तुम सो ही कैसे सकती हो ! तुम देखो तो, कैसी ग़ज़ब की रात है ! ओह, कैसी प्यारी रात है ! तुम जाग भी जाओ, सोन्या," उसने लगभग रुआंसी आवाज़ में कहा। "ऐसी ग़ज़ब की रात तो लगभग कभी, कभी थी ही नहीं।"

सोन्या ने मन मारकर कोई उत्तर दिया।

"तुम देखो तो सही कि चांद कितना प्यारा है ! ओह, कैसा अनूठा सौन्दर्य है ! तुम यहां आओ। मेरी प्यारी, मेरी अच्छी सोन्या, यहां आओ। कहो, देखती हो न ? मैं तो ऐसे उकड़ूं बैठ जाती, इस तरह, बांहों को घुटनों के गिर्द बांध लेती, पूरे ज़ोर से, जितने ज़ोर

ओतरादनोये गांव में नताशा।

से कसना सम्भव होता, कस लेती और आकाश में उड़ जाती। इस तरह!"

"सम्भलकर, वरना नीचे गिर जाओगी।"

दोनों लड़कियों के बीच खींचातानी और सोन्या की नाराज़गी भरी आवाज़ सुनायी दी:

"रात के एक से भी अधिक का समय हो चुका है।"

"ओह, तुम तो मेरा सारा मज़ा ही किरकिरा किये दे रही हो। तो जाओ, जाओ बिस्तर पर।"

फिर से ख़ामोशी छा गयी, लेकिन प्रिंस अन्द्रेई यह जानता था कि वह अभी भी यहां बैठी है, कभी-कभी उसे हल्की सरसराहट, धीरे से आह भरने की आवाज़ सुनायी दे जाती थी।

"हे भगवान! हे भगवान! यह सब क्या है!" वह अचानक चिल्ला उठी। "सोना ही है तो सोया जाये!" और उसने ज़ोर से खिड़की बन्द कर दी।

"उसे कोई सरोकार नहीं है मेरे यहां होने या न होने से!" उसकी बातें सुनते और न जाने क्यों, कुछ आशा करते और साथ ही इस बात से डरते हुए कि वह उसके बारे में कुछ कह न दे, प्रिंस अन्द्रेई ने मन ही मन सोचा। "फिर से वह यहां है! और मानो जान-बूझकर!" उसके दिमाग़ में ख़्याल आया। उसके समूचे जीवन के प्रतिकूल उसकी आत्मा में अचानक यौवन से परिपूर्ण विचारों और आशाओं की ऐसी उथल-पुथल मच गयी कि वह यह अनुभव करते हुए कि इस मानसिक स्थिति को स्वयं अपने को स्पष्ट नहीं कर पायेगा, तुरन्त सो गया।

## ३

अगले दिन महिलाओं के बाहर आने की प्रतीक्षा किये बिना और केवल काउंट से विदा लेकर प्रिंस अन्द्रेई वापस रवाना हो गया।

प्रिंस अन्द्रेई जब अपने घर की ओर लौट रहा था तो जून का महीना शुरू हो चुका था। उसकी बग्घी फिर से भोज-वृक्षों के जंगल में से गुज़री जिसमें शाहबलूत के टेढ़े-मेढ़े वृक्ष ने उसे इतने अजीब तथा

ओतरादनोये गांव मे पुराना शाहबलूत।

स्मरणीय ढंग से आश्चर्यचकित कर दिया था। डेढ़ महीने पहले की तुलना में घंटियों की टनटन अब और भी दबी-घुटी आवाज़ पैदा कर रही थी, क्योंकि पेड़ों पर और अधिक पत्ते आ चुके थे, सब कुछ अधिक छायादार और घना-घना हो चुका था। इस वन में जहां-तहां बिखरे हुए फ़र-वृक्ष भी उसके सामान्य सौन्दर्य को गड़बड़ा नही रहे थे और सामान्य वातावरण के अनुरूप बनते हुए अपनी फूली-फूली नयी शाखाओं की कोमल हरियाली की छटा दिखा रहे थे।

दिन भर खासी गर्मी बनी रही। कहीं पर बादल उमड़-घुमड़ रहे थे, कहीं घन गरजन हो रहा था, मगर यहां तो छोटी-सी बदली ने रास्ते की धूल और हरे-भरे पत्तों पर कुछ छीटे ही गिराये। वन का बायां भाग छाया में था, काला-काला लग रहा था और दायां गीला तथा चिकना था, धूप में चमक तथा हवा से कुछ-कुछ हिल-डुल रहा था। सभी ओर बहार का रंग छाया था, कभी निकट तो कभी दूर बुलबुलों के तराने सुनायी दे रहे थे।

"हां, यहीं, इसी जंगल में वह शाहबलूत था जिसके साथ मैं सहमत था," प्रिंस अन्द्रेई ने सोचा। "लेकिन वह कहां है?" प्रिंस अन्द्रेई ने रास्ते के बायीं ओर नज़र डालते, खुद यह न जानते, उसी शाहबलूत को न पहचानते, जिसे वह ढूंढ़ रहा था, और उसी पर मुग्ध होते हुए सोचा। बूढ़े शाहबलूत का मानो कायाकल्प हो गया था, रसीले, गहरे हरे रंग के पत्तों का चंदवा-सा फैलाये हुए वह सन्ध्याकालीन सूर्य की किरणों में ऊंघ और धीरे-धीरे हिल-डुल रहा था। अब न तो उसकी टेढ़ी-मेढ़ी उंगलियां थीं, न उसपर गांठें नज़र आती थीं और न उसपर पहले जैसा अविश्वास और दुख-क्षोभ ही छाया था – कुछ भी तो नहीं था। सौ वर्ष पुरानी, कठोर छाल में से टहनियों के बिना ही ऐसे रसीले और नये-नये पत्ते फूट निकले थे कि यह विश्वास करना कठिन हो रहा था कि इस बूढ़े ने ही इन्हें जन्म दिया है। "हां, यह तो वही शाहबलूत है," प्रिंस अन्द्रेई ने सोचा और अचानक, अकारण ही उसके तन-मन पर खुशी तथा नवजीवन की वसन्तकालीन भावना छा गयी। सहसा उसे अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ क्षण एकबारगी याद हो आये। ऊंचे आकाशवाला आउस्टेरलिट्ज़ का युद्ध-क्षेत्र, मृत पत्नी का भर्त्सना करता हुआ चेहरा, बड़ी नाव पर प्येर के साथ हुई बातचीत, रात के सौन्दर्य से भाव-विह्वल लड़की, वह रात, वह चांद – अचानक

उसे यह सभी कुछ याद हो आया।

"नहीं, इकतीस वर्ष की उम्र में जीवन समाप्त नहीं हुआ," प्रिंस अन्द्रेई ने सहसा निर्णायक और अन्तिम रूप से यह तय कर लिया। इतना ही काफ़ी नहीं कि मेरे अन्तर में जो कुछ है, उसे मैं जानता हूं, बल्कि उसे सभी को जानना चाहिये – प्येर को, उस लड़की को जो आकाश में उड़ जाना चाहती थी। सभी को इसलिये जानना चाहिये कि मेरी ज़िन्दगी सिर्फ़ मेरे लिये ही न हो, कि उस लड़की की तरह वे सभी मेरे जीवन से अलग न रहें, कि सभी के जीवनों पर मेरे जीवन का प्रभाव पड़े और यह कि वे सभी मेरे साथ हिल-मिल कर रहें! "

इस यात्रा से लौटने के बाद प्रिंस अन्द्रेई ने पतझर के दिनों में पीटर्सबर्ग जाने का निर्णय किया और इस निर्णय के लिये उसने विभिन्न कारण ढूंढ़ निकाले। उसके लिये क्यों पीटर्सबर्ग जाना और वहां फिर से सैन्य-सेवा करना भी ज़रूरी है, इसका समर्थन करनेवाले समझदारी के तथा तर्कसंगत अनेक कारण हर क्षण उसके दिमाग़ में आते रहते थे। वह तो अब यह तक समझने में असमर्थ था कि कैसे जीवन में बहुत ही सक्रिय भाग लेने के बारे में उसके मन में कोई दुविधा हो सकती थी, ठीक उसी तरह, जैसे एक महीना पहले वह यह समझने में असमर्थ था कि कैसे उसके मन में गांव से जाने का विचार आ सकता था। उसे यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता था कि यदि वह अपने जीवन के अनुभवों का किसी काम के लिये उपयोग नहीं करेगा और जीवन में सक्रिय भाग नहीं लेगा तो वे सभी बेकार और बेमानी होकर रह जायेंगे। वह तो यह समझने में भी असमर्थ था कि कैसे ऐसी घटिया दलीलों के आधार पर उसने ऐसा मान लिया था कि ज़िन्दगी से मिले सबक़ों के बावजूद यदि वह यह विश्वास करेगा कि किसी तरह उपयोगी हो सकता है और जीवन में सुख तथा प्यार पा सकता है तो केवल अपने को अपनी नज़रों में नीचे ही गिरायेगा। अब उसकी सूझ-बूझ उससे दूसरी ही बात कहती थी। इस यात्रा के बाद प्रिंस अन्द्रेई को गांव में ऊब महसूस होने लगी थी, पहले के कामों में उसका मन नहीं लगता था और अपने कमरे में अकेला बैठा हुआ वह अक्सर दर्पण के सामने जा खड़ा होता और देर तक अपने चेहरे को देखता रहता। इसके बाद

वह मुड़ता और अपनी दिवंगता पत्नी लीज़ा के छविचित्र पर नज़र डालता जो यूनानी ढंग से अपने घुंघराले बालों को संवारे हुए चित्र के सुनहरे चौखटे से प्यार तथा प्रसन्नता से उसकी ओर देखती प्रतीत होती। अब वह पति को मानो पहलेवाले भयानक शब्द नही कहती थी, केवल प्रफुल्लता और जिज्ञासा से उसकी तरफ़ देखती थी। और प्रिंस अन्द्रेई पीठ के पीछे हाथ बांधे कभी त्योरी चढ़ाता, कभी मुस्कराता हुआ कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाता रहता और प्येर, यश-कीर्ति, खिड़की में खड़ी रहनेवाली लड़की, शाहबलूत, नारी-सौन्दर्य तथा प्यार से सम्बन्धित उन अनर्गल, अभिव्यक्तिहीन, अपराध की भांति गुप्त विचारों के बारें में सोचता रहता जिन्होंने उसके पूरे जीवन को ही बदल डाला था। ऐसे क्षणों में यदि कोई उसके कमरे में आ जाता तो वह उसके साथ विशेष रूप से रुखाई, कठोर दृढ़ता और अप्रिय बेतुकेपन से पेश आता।

"भाई साहब," ऐसे क्षण में प्रिंसेस मरीया कभी उसके कमरे में आकर कहती, "नन्हे निकोलाई को आज हवाखोरी के लिये बाहर नही भेजना चाहिये। बेहद ठण्ड है।"

"अगर ठण्ड न होती," ऐसे क्षणों में प्रिंस अन्द्रेई खास रुखाई से अपनी बहन को जवाब देता, "तो एक क़मीज़ में ही उसे बाहर भेजा जा सकता था। मगर चूंकि ठण्ड है, इसलिये उसे गर्म कपड़े पहनाने चाहिये जो इसी उद्देश्य से वनाये गये हैं। ठण्ड होने पर यही करना चाहिये, न कि यह कि बच्चे को घर में ही रखा जाये, जबकि उसे हवा मिलनी चाहिये," वह विशेष तर्कसंगतता से कहता मानो किसी को अपने अन्तर में हो रही गुप्त और तर्कहीन हलचल के लिये सज़ा दे रहा हो। प्रिंसेस मरीया ऐसे क्षणों में यह सोचती कि बौद्धिक कार्य पुरुषों को कितना रूखा वना देता है।

## ४

प्रिंस अन्द्रेई अगस्त १८०९ में पीटर्सबर्ग पहुंचा। यह वह समय था जब जवान स्पेरान्स्की * की ख्याति अपने शिखर पर पहुंची हुई थी और उसके सुधारों को बड़े जोश के साथ अमली शक्ल दी जा रही थी। अगस्त के इसी महीने में सम्राट बग्घी में जाते हुए नीचे गिर गये, उनके पांव पर चोट आ गयी, वह तीन हफ़्तों तक पीटर्सहोफ़ में ही बने रहे और हर दिन सिर्फ़ स्पेरान्स्की से ही मुलाक़ात करते थे। इसी समय न केवल रूसी समाज के लिये इतने महत्त्वपूर्ण और परेशानी पैदा करनेवाले दरबारी पदों की समाप्ति तथा कौंसिलरों और स्टेट कौंसिलरों के पदों से सम्बन्धित परीक्षाओं की व्यवस्था के दो आदेश जारी किये गये, बल्कि एक पूरे राजकीय विधान पर सोच-विचार किया जा रहा था जिसे राजकीय परिषद से ज़िले के प्रशासन तक रूस के तत्कालीन अदालती, प्रशासनिक तथा वित्तीय व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन करने थे। अब उन अस्पष्ट और उदारतावादी सपनों को साकार रूप दिया जाने लगा था जिन्हें मन में संजोकर सम्राट अलेक्सान्द्र सत्तारूढ़ हुए थे, जिन्हें उन्होंने अपने सहायकों – चार्तो-रीज़्की, नोवोसीलत्सेव, कोचुबेई और स्त्रोगानोव की मदद से अमली शक्ल देनी चाही थी और जिन्हें खुद मज़ाक़ में समाज-रक्षा-समिति का नाम दिया था।

अब इन सबकी जगह नागरिक या असैनिक सुधार के सभी मामले स्पेरान्स्की को सौंप दिये गये और सैनिक मामले अराकचेयेव को। पीटर्सबर्ग आने के फ़ौरन बाद प्रिंस अन्द्रेई दरबारी होने के नाते दरबार में और सम्राट के सामने हाज़िर हुआ। सम्राट से उसकी दो बार भेंट हुई, मगर सम्राट ने उससे एक शब्द भी नहीं कहा। प्रिंस अन्द्रेई को पहले भी हमेशा ऐसा प्रतीत होता रहा था कि सम्राट को वह अच्छा नहीं लगता, कि उसका चेहरा और पूरा व्यक्तित्व ही उन्हें नापसन्द

---

* मिख़ाईल स्पेरान्स्की (१७७२–१८३९) १८०३ से १८०७ तक गृह-मन्त्रालय का विभागाध्यक्ष था और १८०८ से गृह-मन्त्रालप के प्रश्नों के बारे में सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम का विश्वासपात्र बन गया था और सम्राट के आदेश पर उसने राजकीय पुनर्गठन का ममविदा तैयार किया जिसका उद्देश्य रूस की राजकीय व्यवस्था को यूरोपीय बुर्जुआ रूप देना था। – सं०

है। सम्राट ने जिस रूखी और अपने से दूर हटाती हुई नज़र से उसकी तरफ़ देखा, उससे उसके इस पहलेवाले विचार की पुष्टि हुई। दरबारियों ने प्रिंस अन्द्रेई के प्रति सम्राट के उपेक्षा भाव का यह स्पष्टीकरण दिया कि वह उससे इसलिये नाखुश थे कि उसने १८०५ से सैन्य-सेवा नहीं की थी।

"किसी को पसन्द या नापसन्द करने के मामले में हम कितने लाचार होते हैं, यह तो मैं खुद भी जानता हूं", प्रिंस अन्द्रेई ने सोचा, "और इसलिये यह सोचने में कोई तुक नहीं कि सैनिक नियमावली के बारे में अपने लिखित विचार मैं स्वयं सम्राट के सामने पेश करूं, किन्तु मेरे विचार खुद ही अपना महत्त्व स्पष्ट कर देंगे।" उसने पिता जी के दोस्त, एक बूढ़े फ़ील्ड-मार्शल से अपनी नियमावली की चर्चा की। फ़ील्ड-मार्शल ने उसे मिलने का वक़्त दिया, प्यार से उसका स्वागत किया और वचन दिया कि वह उस नियमावली को सम्राट के सामने पेश कर देगा। कुछ दिन बाद प्रिंस अन्द्रेई को सूचित किया गया कि वह युद्ध-मन्त्री, काउंट अराकचेयेव से मिल सकता है।

नियत दिन पर सुबह के नौ बजे प्रिंस अन्द्रेई काउंट अराकचेयेव के प्रतीक्षा-कक्ष में पहुंचा।

प्रिंस अन्द्रेई व्यक्तिगत रूप में काउंट अराकचेयेव से परिचित नहीं था, उसने उसे कभी देखा नहीं था, किन्तु उसके बारे में जो कुछ सुना था, वह सब इस व्यक्ति के प्रति उसके दिल में बहुत कम ही इज़्ज़त पैदा करता था।

"वह – युद्ध-मन्त्री है, सम्राट उसपर भरोसा करते हैं, उसके व्यक्तिगत लक्षणों से किसी को कोई मतलब नहीं होना चाहिये। मेरी नियमावली उसके पास समीक्षा के लिये भेजी गयी है – इसका मतलब है कि सिर्फ़ वही उसे स्वीकार करवा सकता है," प्रिंस अन्द्रेई अनेक महत्त्वपूर्ण और महत्त्वहीन लोगों के बीच काउंट अराकचेयेव के प्रतीक्षा-कक्ष में बैठा हुआ सोच रहा था।

प्रिंस अन्द्रेई अपनी सैनिक सेवा, मुख्यतः एडजुटेंट के रूप में अपनी नौकरी के दौरान बहुत-से महत्त्वपूर्ण लोगों के प्रतीक्षा-कक्ष देख चुका था और इन प्रतीक्षा-कक्षों के विभिन्न लक्षण उसे बिल्कुल स्पष्ट थे। काउंट अराकचेयेव के प्रतीक्षा-कक्ष का अपना एक विशेष लक्षण था। काउंट अराकचेयेव से मिलने की अपनी बारी का इन्तज़ार करते हुए

महत्त्वहीन लोगों के चेहरों पर घबराहट और जी हुज़ूरी का भाव था। अधिक ऊंचे पदवालों के चेहरों पर सामान्य रूप से अटपटेपन का भाव था जिसे वे अपनी बेतकल्लुफ़ी और ख़ुद पर तथा अपने पद तथा उस व्यक्ति का मज़ाक़ उड़ाने की कोशिश की ओट में छिपा रहे थे जिससे मिलनेवाले थे। कुछ मुलाक़ाती सोच में डूबे इधर-उधर आ-जा रहे थे, कुछ खुसर-फुसर करते हुए हंस रहे थे और प्रिंस अन्द्रेई को अराकचेयेव का उपनाम "लौह-पुरुष अन्द्रेइच" तथा ये शब्द सुनाई दिये: "चाचा जान ख़ूब ख़बर लेंगे"। एक जनरल ( महत्त्वपूर्ण व्यक्ति ) सम्भवत: इस कारण अपने को अपमानित मानते हुए कि उसे इतनी देर तक इन्तज़ार करना पड़ रहा है, कभी दायीं तो कभी बायीं टांग को एक-दूसरी पर रखता था और अपने आप पर तिरस्कारपूर्वक मुस्कराता हुआ यहां बैठा था।

किन्तु जैसे ही दरवाज़ा खुलता, सभी के चेहरों पर फ़ौरन एक ही भाव – भय का भाव झलक उठता। प्रिंस अन्द्रेई ने ड्यूटी-अफ़सर से यह अनुरोध किया कि युद्ध-मन्त्री को उसके बारे में दूसरी बार सूचना दे दी जाये। किन्तु उसकी ओर खिल्ली उड़ाती नज़र से देखा गया और यह कहा गया कि अपने वक़्त पर ही उसकी बारी आयेगी। एडजुटेंट द्वारा मन्त्री के कमरे में कई लोगों के भीतर भेजे और बाहर लाये जाने के बाद एक ऐसे फ़ौजी अफ़सर से उस भयानक दरवाज़े से अन्दर जाने को कहा गया जिसके दयनीय और डरे-सहमे चेहरे से प्रिंस अन्द्रेई चकित रह गया। इस अफ़सर की मुलाक़ात देर तक चलती रही। अचानक दरवाज़े के पीछे से कर्ण-कटु आवाज़ की गरज सुनायी दी। पीले चेहरे तथा कांपते होंठों के साथ फ़ौजी अफ़सर बाहर आया और हाथों में सिर थामकर प्रतीक्षा-कक्ष से बाहर चला गया।

इस फ़ौजी अफ़सर के फ़ौरन बाद प्रिंस अन्द्रेई की बारी आ गयी और ड्यूटी-अफ़सर ने फुसफुसाकर कहा: "दायीं ओर, खिड़की की तरफ़।"

प्रिंस अन्द्रेई साधारण ढंग से सजे, साफ़-सुथरे कमरे में दाखिल हुआ और मेज़ के सामने उसे लम्बी कमर, लम्बे सिर तथा छोटे-छोटे बालों, मोटी-मोटी झुर्रियों, बादामी-हरे रंग की जड़ आंखों के ऊपर चढ़ी हुई भृकुटि और पिलपिली लाल नाकवाला कोई चालीस वर्षीय

व्यक्ति बैठा दिखाई दिया। अराकचेयेव ने प्रिंस अन्द्रेई की ओर देखे बिना अपना सिर उसकी तरफ़ घुमाया।

"आप किस चीज़ के लिये याचना कर रहे हैं?"

"मैं तो किसी भी चीज़ के लिये... याचना नहीं कर रहा हूं, हुज़ूर," प्रिंस अन्द्रेई ने धीरे से उत्तर दिया। काउंट अराकचेयेव ने उसकी तरफ़ देखा।

"बैठिये," अराकचेयेव ने कहा, "प्रिंस बोल्कोन्स्की।"

"मैं तो किसी भी चीज़ की याचना नहीं कर रहा हूं। बात यह है कि सम्राट महोदय ने वह नोट आपके पास भेजने की कृपा की है जो मैंने पेश किया था..."

"मैं आपको यह सूचित करने की अनुमति चाहता हूं, जनाब," अराकचेयेव ने उसे टोका, उसके चेहरे की ओर देखे बिना केवल प्रारम्भिक शब्द स्नेहपूर्वक कहे और इसके बाद वह अधिकाधिक बड़बड़ाहट तथा तिरस्कार का अन्दाज़ अपनाता गया। "आप नये सैनिक नियम प्रस्तावित करते हैं? नियम तो बहुत हैं, मगर पुराने नियमों को पूरे करनेवाला ही कोई नही। आजकल सभी नियम लिखते हैं, उन्हें लिखना तो उनका पालन करने से कहीं अधिक आसान है।"

"मैं तो सम्राट महोदय की इच्छानुसार आप हुज़ूर से यह जानने आया हूं कि मेरे नोट के बारे में आपकी क्या राय है?" प्रिंस अन्द्रेई ने शिष्टतापूर्वक पूछा।

"आपके नोट पर मैंने अपना निर्णय लिखकर उसे समिति को भेज दिया है। मैं इसका अनुमोदन **नहीं** करता हूं," अराकचेयेव ने उठते और मेज़ से एक कागज़ उठाकर उसे देते हुए कहा। "यह लीजिये," उसने प्रिंस अन्द्रेई को काग़ज़ दे दिया।

इस काग़ज़ के आर-पार बड़े प्रारम्भिक वर्णों, सही हिज्जों और पूर्ण विरामों के बिना पेंसिल से यह लिखा हुआ था: "फ़्रांसीसी सैनिक नियमावली की नक़ल करते हुए निराधार रूप से तैयार किया गया अनावश्यक ढंग से हमारे सैनिक अनुच्छेद की अवहेलना करता है।"

"मेरा नोट किस समिति को भेजा गया है?" प्रिंस अन्द्रेई ने पूछा।

"सैनिक नियमावली की समिति को और मैंने यह भी प्रस्तावित किया है कि आप महानुभाव को इस समिति का सदस्य बना लिया

जाये। किन्तु वेतन के बिना।"

प्रिंस अन्द्रेई मुस्कराया।

"मुझे तो इसकी चाह भी नहीं।"

"वेतन के बिना, सदस्य," अराकचेयेव ने दोहराया। "आपके लिये शुभ कामना करता हूं! अरे! बुलाओ! वहां और कौन है?" प्रिंस अन्द्रेई की ओर सिर झुकाकर विदा लेते हुए युद्ध-मन्त्री ने अपने एडजुटेंट को पुकारा।

## ५

समिति का सदस्य बनाये जाने के बारे में सूचना की प्रतीक्षा करते हुए प्रिंस अन्द्रेई ने अपनी पुरानी जान-पहचानवालों, ख़ास तौर पर ऐसे लोगों के साथ फिर से अपने सम्बन्ध क़ायम कर लिये जो, जैसा कि वह जानता था, सत्ता-क्षेत्रों में महत्त्व रखते थे और जिनकी उसे आवश्यकता हो सकती थी। अब पीटर्सबर्ग में उसे उसी तरह की अनुभूति हो रही थी जैसी लड़ाई की पूर्ववेला में हुई थी, जब उसे चैन न देनेवाली जिज्ञासा परेशान करती रही थी और वह अदम्य रूप से ऊंचे क्षेत्रों की ओर खिंचता था, जहां लाखों-करोड़ों के भाग्य का निर्णय करनेवाला भविष्य निर्धारित किया जा रहा था। वह बुज़ुर्गों की खीझ, जानकारी न रखनेवालों की जिज्ञासा और जानकारों की संयतता, सभी की हड़बड़ी तथा चिन्ता, असंख्य समितियों और आयोगों के आधार पर, जिनके अस्तित्व का उसे हर दिन पता चलता था, यह अनुभव करता था कि सन् १८०९ में, यहां पीटर्सबर्ग में कोई बहुत बड़ी असैनिक लड़ाई होने जा रही है जिसका प्रधान सेनापति था स्पेरान्स्की – उससे अपरिचित, मगर रहस्यपूर्ण तथा उसके मस्तिष्क में कल्पित मेधावी व्यक्ति। परिवर्तन, जिसका उसे बड़ा अस्पष्ट आभास था, तथा इसकी मुख्य प्रेरक-शक्ति यानी स्पेरान्स्की में वह इतनी अधिक दिलचस्पी लेने लगा कि जल्द ही सैनिक नियमावली का मामला उसके लिये गौण बनता चला गया।

प्रिंस अन्द्रेई इस चीज़ के लिये अनुकूलतम स्थिति में था कि उस समय की पीटर्सबर्ग की सोसाइटी के विभिन्नतम और उच्चतम क्षेत्रों में उसका हार्दिक स्वागत-सत्कार किया जाये। परिवर्तन या सुधार के पक्षधर इसलिये सहर्ष उसका स्वागत करते और उसे अपनी ओर खींचते

थे कि वह समझदार और बहुत ही पढ़ा-लिखा व्यक्ति माना जाता था और इसलिये भी कि भूदासों को मुक्त करके उसने उदारतावादी होने की ख्याति प्राप्त कर ली थी। अप्रसन्न बूढ़े, जो सुधार के विरुद्ध थे, यह मानते हुए कि वह अपने पिता के समान है, उसकी सहानुभूति पाने के लिये उसका समर्थन करते। औरतों के हलक़े और **ऊंची सोसाइटी** में इसलिये उसके आने से ख़ुशी होती थी कि वह अच्छा वर था, धनी और जाना-माना तथा लगभग नया व्यक्ति था और उसके साथ उसकी झूठी मौत का रोमांस तथा पत्नी की दुखद मृत्यु की चर्चा जुड़ी हुई थी। इसके अतिरिक्त उसे पहले से जाननेवाले सभी लोगों का यह सामान्य मत था कि पिछले पांच वर्षों में वह कहीं बेहतर व्यक्ति बन गया है, उसके स्वभाव में नर्मी आ गयी है, उसका चरित्र अधिक मर्दाना हो गया है, कि उसमें पहले जैसा बनावटीपन, घमण्ड और उपहासात्मक व्यंग्य नहीं रहा और वर्षों के साथ प्राप्त होनेवाला धीरज आ गया है। सभी उसकी चर्चा करने और उसमें दिलचस्पी लेने लगे तथा सभी उससे मिलना चाहते थे।

काउंट अराकचेयेव से मुलाक़ात के अगले दिन प्रिंस अन्द्रेई शाम को काउंट कोचुबेई के यहां गया। उसने "लौह-पुरुष अन्द्रेइच" (कोचुबेई ने इसी नाम और कुछ अस्पष्ट उपहासजनक इसी अन्दाज़ में अराकचेयेव का उल्लेख किया था और जिसकी ओर युद्ध-मन्त्री के प्रतीक्षा-कक्ष में अन्द्रेई का ध्यान गया था) के साथ अपनी भेंट का वर्णन किया।

"मेरे प्यारे, इस मामले में भी मिख़ाईल मिख़ाइलोविच स्पेरान्स्की के बिना आपका काम नहीं चलेगा। वह तो हर मामले का उस्ताद है। मैं उससे बात करूंगा। उसने आज शाम को यहां आने का वादा किया है..."

"स्पेरान्स्की को सैनिक नियमावली से क्या लेना-देना है?" प्रिंस अन्द्रेई ने पूछा।

कोचुवेई ने मुस्कराकर सिर हिलाया मानो बोल्कोन्स्की के भोलेपन पर हैरान हो रहा हो।

"अभी कुछ ही दिन पहले हम दोनों ने आपकी चर्चा की थी," कोचुवेई कहता गया, "आपके मुक्त भूदास किसानों की..."

"अरे हां, प्रिंस, यह तो आपने ही अपने भूदासों को मुक्त किया है न?" वोल्कोन्स्की की ओर तिरस्कारपूर्वक देखते हुए सम्राज्ञी येकते-

रीना के ज़माने के एक बूढ़े ने पूछा।

"छोटी-सी जागीर से कोई आमदनी-वामदनी नहीं होती थी," प्रिंस अन्द्रेई ने अपने इस कार्य का महत्त्व कम करने का प्रयास करते हुए कहा ताकि बूढ़े को व्यर्थ ही नाराज़ न कर दे।

"डरते हैं कि कहीं दूसरों से पीछे न रह जायें," बूढ़े ने कोचुबेई की तरफ़ देखते हुए फ़्रांसीसी में कहा।

"एक बात मेरी समझ में नहीं आती," बूढ़ा कहता गया, "अगर भूदासों को मुक्त कर दिया जाये तो ज़मीन कौन जोतेगा? क़ानून बनाना आसान है, मगर शासन चलाना मुश्किल। इसी तरह मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं, काउंट, कि जब सभी को परीक्षायें देनी होंगी तो विभागों के अध्यक्ष कौन होंगे?"

"मेरे ख़्याल में वही जो परीक्षाओं में सफल हो जायेंगे," कोचुबेई ने टांग पर टांग रखते और अपने इर्द-गिर्द देखते हुए जवाब दिया।

"मेरे यहां प्रयानिच्निकोव काम करता है, बहुत ही बढ़िया, बिल्कुल सोने जैसा आदमी है। मगर उसकी उम्र साठ साल है। भला वह परीक्षा में बैठने जायेगा? .."

"हां, ऐसी मुश्किल तो सामने आयेगी, क्योंकि शिक्षा का बहुत प्रचार नहीं है, लेकिन..." काउंट कोचुबेई अपना वाक्य पूरा किये बिना उठा और प्रिंस अन्द्रेई का हाथ अपने हाथ में लेकर लम्बे, गंजे, सुनहरे बालों, खुले, चौड़े मस्तक और असाधारण, अजीब-से गोरेपन और लम्बोतरे चेहरेवाले कोई चालीसेक साल के मेहमान के स्वागत के लिये बढ़ गया। नवागन्तुक अतिथि नीला फ़्रॉक-कोट पहने था, उसके गले में सलीब लटक रही थी और वक्ष के बायीं ओर एक सितारा-पदक लगा हुआ था। यह स्पेरान्स्की था। प्रिंस अन्द्रेई ने उसे फ़ौरन पहचान लिया और उसका दिल ऐसे धड़क उठा जैसे कि जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षणों में धड़क उठता है। यह धड़कन सम्मान, ईर्ष्या या प्रत्याशा की थी – उसे यह मालूम नहीं था। स्पेरान्स्की के पूरे व्यक्तित्व में ही कोई ऐसी ख़ास बात थी कि उसे फ़ौरन पहचाना जा सकता था। प्रिंस अन्द्रेई जिस समाज में रहता था, उसके किसी भी व्यक्ति में उसने अटपटी और भद्दी गति-विधियों के बावजूद ऐसी शान्ति और आत्मविश्वास नहीं देखा था, किसी में भी उसने अधमुंदी और कुछ-कुछ तरल आंखों की ऐसी दृढ़ तथा साथ ही कोमल दृष्टि नहीं देखी थी, कुछ भी व्यक्त न करनेवाली मुस्कान

की ऐसी दृढ़ता नही देखी थी, ऐसी नाजुक, मृदु और धीमी आवाज़ नहीं सुनी थी तथा सबसे बढ़कर तो यह कि चेहरे का, ख़ास तौर पर हाथों का ऐसा गोरापन नहीं देखा था जो कुछ अधिक चौड़े होते हुए भी असाधारण रूप से गुदगुदे, कोमल और गोरे थे। चेहरे की ऐसी गौरता तथा कोमलता प्रिंस अन्द्रेई ने देर तक अस्पताल में रहनेवाले सैनिकों में ही देखी थीं। यह राजकीय सेक्रेटरी, एर्फ़ुर्ट में सम्राट का प्रवक्ता और साथी स्पेरान्स्की था जो वहां कई बार नेपोलियन से बातचीत कर चुका था।

स्पेरान्स्की ने अपनी नज़रों को जल्दी-जल्दी एक चेहरे से दूसरे चेहरे की तरफ़ नही घुमाया, जैसा कि बहुत-से लोगों के बीच आने पर हम अनचाहे ही करते हैं और उसने बोलने के मामले में भी कोई उतावली नही की। वह धीरे-धीरे और इस विश्वास के साथ बोलता था कि उसकी बात पर कान दिया जायेगा और केवल उसी व्यक्ति के चेहरे की ओर देखता था जिससे बात करता था।

प्रिंस अन्द्रेई तो स्पेरान्स्की के हर शब्द, उसकी हर गति-विधि की ओर ख़ास ध्यान दे रहा था। जैसा कि लोगों के साथ, ख़ास तौर पर ऐसे लोगों के साथ अक्सर होता है जो अपने निकटवर्तियों को बहुत कड़ी कसौटी पर परखते हैं, प्रिंस अन्द्रेई भी किसी नये व्यक्ति, विशेषत: स्पेरान्स्की जैसे व्यक्ति से मिलने पर, जिसे वह उसकी ख्याति के आधार पर जानता था, हमेशा उसमें मानवीय गुणों का पूर्ण रूप देख पाने की आशा करता था।

स्पेरान्स्की ने कोचुबेई से कहा कि उसे इस बात का बड़ा अफ़सोस है कि वह इस वक़्त से पहले नहीं आ सका, क्योंकि उसे महल में रोक लिया गया था। उसने यह नहीं कहा कि सम्राट ने उसे रोक लिया था। प्रिंस अन्द्रेई ने नम्रता के इस दिखावे की ओर भी ध्यान दिया। कोचुबेई ने जब प्रिंस अन्द्रेई का परिचय करवाया तो स्पेरान्स्की ने अपनी दृष्टि को धीरे से बोल्कोन्स्की की ओर घुमा लिया और उसी मुस्कान को क़ायम रखते हुए उसे चुपचाप देखने लगा।

"आपसे मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई। मैंने भी, जैसे कि सभी ने, आपके बारे में सुना है," उसने कहा।

कोचुबेई ने संक्षिप्त रूप से यह बताया कि अराकचेयेव के साथ बोल्कोन्स्की की भेंट कैसी रही थी। स्पेरान्स्की की मुस्कान ज़रा और फैल गयी।

"सैनिक नियमावली के आयोग का डायरेक्टर – श्रीमान माग्नी-त्स्की, मेरा अच्छा दोस्त है," स्पेरान्स्की ने हर अक्षर और हर शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा। "अगर आप ऐसा चाहेंगे तो मैं आपको उससे मिला दूंगा।" (वह पूर्ण-विराम पर चुप हो गया।) "मुझे आशा है कि विवेक की हर बात के लिये आप उसमें सहानुभूति और सहयोग करने की इच्छा पायेंगे।"

स्पेरान्स्की के इर्द-गिर्द फ़ौरन लोगों का एक दल जमा हो गया और उसी बूढ़े ने, जिसने अपने कर्मचारी प्रयानिच्निकोव की चर्चा की थी, स्पेरान्स्की से एक प्रश्न पूछ लिया।

प्रिंस अन्द्रेई बातचीत में भाग न लेते हुए स्पेरान्स्की की हर गति-विधि को बहुत ध्यान से देखता रहा। यह व्यक्ति कुछ समय पहले तक धार्मिक विद्यालय का तुच्छ विद्यार्थी था और अब, जैसा कि बोल्कोन्स्की सोचता था, अपने इन गुदगुदे तथा गोरे हाथों में रूस के भाग्य की बाग-डोर सम्भाले था। स्पेरान्स्की जिस असाधारण घृणापूर्ण शान्ति से बूढ़े को जवाब दे रहा था, प्रिंस अन्द्रेई उससे दंग रह गया। वह तो मानो अपरिमित ऊंचाई से उससे अपने कृपा-शब्द कह रहा था। जब बूढ़ा बहुत ही ऊंचे-ऊंचे बोलने लगा तो स्पेरान्स्की मुस्करा दिया और बोला कि सम्राट जो कुछ लाभदायक या हानिकारक मानते हैं, उसके लिये उसका निर्णय करना सम्भव नहीं।

लोगों के साझे हलक़े में कुछ देर तक बातचीत करने के बाद स्पे-रान्स्की प्रिंस अन्द्रेई के पास गया और उसे कमरे के दूसरे कोने में अपने साथ ले गया। स्पष्ट था कि वह बोल्कोन्स्की के साथ अलग से बातचीत करना चाहता था।

"प्रिंस, उस सजीव बातचीत के दौरान जिसमें उस आदरणीय बुजुर्ग ने मुझे घसीट लिया था, मैं आपसे कोई बात नहीं कर सका," उसने विनम्र, तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ कहा और इस मुस्कान से मानो यह ज़ाहिर कर दिया कि वह और प्रिंस अन्द्रेई उन लोगों की तुच्छता को समझते हैं जिनके साथ वे कुछ देर पहले बातें करते रहे थे। ऐसे अन्दाज़ से प्रिंस अन्द्रेई को चापलूसी भरी ख़ुशी हुई। "मैं आपको बहुत अरसे से जानता हूं – सबसे पहले तो भूदासों को मुक्त करने के आपके कार्य से। यह पहली मिसाल है और कितना अच्छा हो कि दूसरे भी इसका अनुकरण करें। दूसरे, इसलिये जानता

हूं कि आप उन दरबारियों में से हैं जो दरबारी पदों के बारे में नये आदेश से, जिसको लेकर इतनी बहस और चर्चा हो रही है, नाराज़ नही हुए।"

"हां," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा, "मेरे पिता जी यह नहीं चाहते थे कि मैं इस अधिकार से लाभ उठाऊं। मैंने छोटे पदों से काम करना शुरू किया।"

"सम्भवतः आपके पिता पुरानी पीढ़ी से सम्बन्ध रखते हुए भी हमारे समकालीनों से ऊंचे स्तर पर हैं जो इस क़दम की इतनी कटु आलोचना करते हैं, जबकि यह क़दम केवल स्वाभाविक न्याय की ही पुष्टि करता है।"

"फिर भी मेरे ख़्याल में ऐसी आलोचना के लिये कुछ आधार तो है ही," प्रिंस अन्द्रेई ने स्पेरान्स्की के प्रभाव से, जिसे वह अनुभव करने लगा था, मुक्ति पाने का यत्न करते हुए कहा। स्पेरान्स्की की हर बात के साथ सहमत होना उसे अच्छा नहीं लग रहा था, वह उसका विरोध करना चाहता था। सामान्यतः सहजता और अच्छे ढंग से बात करनेवाले प्रिंस अन्द्रेई को स्पेरान्स्की से बातचीत करते हुए अपने को अभिव्यक्त करने में कठिनाई अनुभव हो रही थी। वह इस प्रसिद्ध व्यक्ति के व्यक्तित्व को देखने-समझने में इतना अधिक खोया हुआ था।

"शायद व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा ही नये आदेश की आलोचना का आधार हो," स्पेरान्स्की ने धीरे से अपनी बात कही।

"कुछ हद तक राज्य का हित भी इसका आधार है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा।

"क्या मतलब है आपका?.." स्पेरान्स्की ने नज़रें झुकाये हुए धीमी आवाज़ में प्रश्न किया।

"मैं मोंटेस्क्ये* का प्रशंसक हूं। उनका यह विचार कि प्रतिष्ठा राजतन्त्रवाद का आधार है, मुझे निर्विवाद लगता है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि कुलीनों के कुछ अधिकारों और विशेषाधिकारों को बनाये रखना इस भावना को सुरक्षित रखने का आधार है," प्रिंस अन्द्रेई ने फ़्रांसीसी में कहा।

---

* फ्रांसीसी दार्शनिक शार्ल लुई मोंटेस्क्ये (१६८९–१७५५) से अभिप्राय है। – सं०

स्पेरान्स्की के चेहरे से मुस्कान ग़ायब हो गयी और इससे उसका चेहरा कहीं अधिक अच्छा लगने लगा। सम्भवत: प्रिंस अन्द्रेई का विचार उसे दिलचस्प लगा।

"यदि आप इस मामले को इस दृष्टि से देखते हैं," उसने स्पष्टत: कुछ कठिनाई से फ्रांसीसी में जवाब देते और रूसी की तुलना में और अधिक धीरे-धीरे, लेकिन बड़े इतमीनान से बोलते हुए कहा तथा अपनी बात आगे बढ़ाते हुए बोला कि प्रतिष्ठा, l'honneur को सरकारी सेवा के लिये हानिकारक विशेषाधिकारों से नहीं बनाये रखा जा सकता, कि प्रतिष्ठा या तो निन्दनीय कार्य न करने की नकारात्मक धारणा है या फिर वह उसे अभिव्यक्ति देनेवाली प्रशंसा और पुरस्कारों की प्राप्ति के लिये होड़ का बुरा स्रोत बन जाती है।

स्पेरान्स्की के निष्कर्ष नपे-तुले, सीधे-सादे और स्पष्ट थे।

"इस प्रतिष्ठा का समर्थन करनेवाली और होड़ का स्रोत बननेवाली संस्था महान सम्राट नेपोलियन की Légion d'Honneur* संस्था के समान है जो सरकारी सेवा के लिये बाधा न बनकर उसमें योग देती है, किन्तु वह श्रेणीगत या दरबारी श्रेष्ठता नहीं है।"

"मैं आपकी बात का खण्डन नहीं करता, मगर इस चीज़ से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि दरबारी श्रेष्ठता या विशेषाधिकारों ने भी यही लक्ष्य प्राप्त किया है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा, "हर दरबारी उचित ढंग से अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति के लिये अपने को बाध्य मानता है।"

"किन्तु प्रिंस, आपने तो उन विशेषाधिकारों से लाभ नहीं उठाना चाहा," स्पेरान्स्की ने कहा और अपनी मुस्कान द्वारा यह ज़ाहिर कर दिया कि वह अपने सहभाषी के साथ हो रहे इस अटपटे विवाद को शिष्टतापूर्वक समाप्त करना चाहता है। "अगर आप बुधवार को मेरे यहां आकर मुझे सम्मानित करेंगे तो मैं माग्नीत्स्की से बातचीत करके आपको वह बता सकूंगा जिसमें आपकी दिलचस्पी हो सकती है। इसके

---

* मई १८०२ में सम्राट नेपोलियन ने एक केन्द्रिय संस्था – सम्मानित लीजन – बनायी थी जिसके सदस्य "स्वतन्त्रता संग्राम" में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण सेवा करनेवाले सेना के लोगो या "जनतन्त्रीय आधार की स्थापना और रक्षा के लिये योगदान करनेवाले" असैनिको में से चुने जाते थे। इस संस्था का अध्यक्ष स्वयं नेपोलियन था। – स०

अलावा मुझे आपके साथ कुछ अधिक विस्तार से बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।" उसने आंखें मूंदकर सिर झुकाया और फ़्रांसीसी ढंग से किसी से विदा लिये बिना और इस बात की कोशिश करते हुए कि उसकी ओर किसी का भी ध्यान न जाये, हॉल से बाहर चला गया।

## ६

पीटर्सबर्ग में अपने आवास के पहले कुछ समय में प्रिंस अन्द्रेई ने यह अनुभव किया कि उसके चिन्तन-मनन का वह ढंग, जिसका उसने गांव के एकान्त जीवन में विकास किया था, उन छोटी-मोटी चिन्ताओं के कारण बुरी तरह गड़बड़ हो गया है जिनसे वह पीटर्सबर्ग में घिरा रहता था।

घर लौटने पर हर शाम को ही वह अपनी नोटबुक में किसी विशेष समय के लिये नियत चार या पांच मुलाक़ातों को नोट करता। ज़िन्दगी का रंग-ढंग या दिन का कार्यक्रम इस बात की मांग करता कि सभी जगह ठीक वक़्त पर पहुंचने के लिये वह अपनी अधिकतम शक्ति ख़र्च करे। वह कुछ भी न करता, कुछ भी न सोचता-विचारता और इसके लिये समय भी न मिलता, सिर्फ़ बातें करता और बहुत सफलतापूर्वक वह सब कुछ कहता जिसपर गांव में चिन्तन कर चुका था।

कभी-कभी इस बात की ओर ध्यान जाने पर उसे दुख होता कि एक ही दिन के दौरान विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में एक ही बात दोहराता था। किन्तु वह इतना व्यस्त रहता था कि यह तक नहीं सोच पाता था कि किसी चीज़ के बारे में कुछ भी चिन्तन नहीं करता है।

कोचुबेई के घर पर स्पेरान्स्की के साथ हुई पहली मुलाक़ात की तरह बुधवार को स्पेरान्स्की के यहां होनेवाली भेंट ने भी, जहां वह देर तक और विश्वासपूर्वक बोल्कोन्स्की के साथ बात करता रहा, प्रिंस अन्द्रेई के मन पर गहरा प्रभाव डाला।

प्रिंस अन्द्रेई बहुत अधिक लोगों को तिरस्कार की दृष्टि से देखता था, उन्हें तुच्छ प्राणी मानता था, वह किसी अन्य व्यक्ति में पूर्णता का वह सजीव आदर्श रूप देखने को इतना अधिक इच्छुक था और

स्वयं वैसा ही बनने को यत्नशील था कि उसने बहुत आसानी से यह विश्वास कर लिया कि स्पेरान्स्की में उसे उस सर्वथा विवेकशील तथा नेक आदमी का आदर्श रूप मिल गया है। अगर स्पेरान्स्की समाज के उसी तबक़े से सम्बन्ध रखता होता जिससे प्रिंस अन्द्रेई का सम्बन्ध था, अगर उसकी वैसी ही शिक्षा-दीक्षा और वैसे ही नैतिक रंग-ढंग होते तो वह बहुत जल्द ही उसके दुर्बल, मानवीय और उदात्तताहीन पक्षों को ढूंढ़ लेता, किन्तु अजीब तथा तर्कसंगत बुद्धिवाला यह व्यक्ति इसलिये भी उसमें आदर की भावना पैदा करता था कि वह उसे पूरी तरह समझ नहीं पाता था। इसके अलावा या तो इसलिये कि स्पेरान्स्की ने प्रिंस अन्द्रेई की योग्यता का ऊंचा मूल्यांकन किया था या इसलिये कि उसने उसे अपना पक्षधर बनाना ज़रूरी समझा, वह उसके सामने अपनी धीर-गम्भीर तथा शान्त बुद्धि की झलक दिखाता और आत्म-विश्वास से घुली-मिली उसकी ऐसी सूक्ष्म चापलूसी करता जो उस मूक स्वीकृति की द्योतक होती है कि अपने सहभाषी समेत वही दोनों ही शेष **सभी की** मूर्खता और अपने विचारों की समझदारी तथा गहनता समझने की क्षमता रखते हैं।

बुधवार की शाम को उनके बीच हुई बातचीत के दौरान स्पेरान्स्की ने कई बार ऐसे वाक्य कहे:" **हमारे** यहां लीक से हटनेवाली हर बात की तरफ़ ध्यान दिया जाता है..." या फिर उसने मुस्कराते हुए यह कहा: "किन्तु **हम** चाहते हैं कि सांप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे..." या फिर यह: "**वे लोग** यह नहीं समझ सकते..." और ये सभी बातें ऐसे अन्दाज़ से कहीं जो मानो यह कहता प्रतीत होता था: "हम, आप और मैं, हम समझते हैं कि **वे** क्या हैं और **हम** कौन हैं।"

स्पेरान्स्की के साथ इस पहली लम्बी बातचीत ने प्रिंस अन्द्रेई के दिल में उस भावना को और अधिक पुष्ट ही किया जो उसके साथ प्रथम भेंट के समय उसने अनुभव की थी। उसे स्पेरान्स्की के रूप में एक ऐसा समझदार, बहुत ही सटीक चिन्तन करनेवाला तथा प्रखर बुद्धि का व्यक्ति दिखायी दिया जिसने अपनी कर्मशक्ति और दृढ़ता से सत्ता प्राप्त की तथा जो केवल रूस की भलाई के लिये उसका उपयोग करता था। प्रिंस अन्द्रेई की दृष्टि में स्पेरान्स्की ही ऐसा व्यक्ति था जैसा कि वह ख़ुद बनना चाहता था और जो जीवन की सारी घटनाओं

को बौद्धिक आधार पर स्पष्ट करता था, बुद्धि की कसौटी पर खरी उतरनेवाली चीज़ों की ही हक़ीक़त मानता था और हर चीज़ को बुद्धि के मापदण्ड से ही मापता था। स्पेरान्स्की की व्याख्या में सब कुछ इतना सीधा-सादा और स्पष्ट प्रतीत होता था कि प्रिंस अन्द्रेई बरबस उसके साथ सहमत हो जाता था। अगर वह कोई आपत्ति या बहस करता था तो जान-बूझकर और केवल इसलिये कि अपने को स्वतन्त्र प्रकट कर सके और पूरी तरह से स्पेरान्स्की के विचारों के अधीन न हो जाये। सब कुछ ठीक था, सब कुछ अच्छा था, किन्तु एक चीज़ प्रिंस अन्द्रेई को खटकती थी – यह थी स्पेरान्स्की की कठोर, दर्पण जैसी भावनाहीन दृष्टि जो किसी को भी उसकी आत्मा में नही झांकने देती थी और उसके गोरे, गुदगुदे हाथ जिनकी ओर प्रिंस अन्द्रेई अनचाहे ही उसी तरह देखने लगता था जैसे सामान्यतः लोग सत्ताधारी हाथों की तरफ़ देखा करते हैं। न जाने क्यों, दर्पण जैसी यह दृष्टि और गुदगुदे हाथ प्रिंस अन्द्रेई के मन में झल्लाहट पैदा करते। लोगों के प्रति स्पेरान्स्की में पायी जानेवाली अत्यधिक तिरस्कार-भावना और अपने विचारों की पुष्टि के लिये उसके द्वारा प्रमाणस्वरूप काम में लाये जानेवाले साधनों की विविधता ने भी प्रिंस अन्द्रेई को कटुतापूर्वक आश्चर्यचकित किया। वह तुलना को छोड़कर हर सम्भव बौद्धिक अस्त्र का उपयोग करता और जैसा कि प्रिंस अन्द्रेई को प्रतीत होता था, बड़े साहस से एक अस्त्र को छोड़कर दूसरा अस्त्र अपने हाथ में ले लेता था। कभी वह व्यावहारिक गति-विधियों के आधार पर सपनों की दुनिया में खोये रहनेवालों की आलोचना करता, कभी व्यंग्य-परिहास का दामन थामकर विरोधियों की खिल्ली उड़ाता, कभी एकदम तर्कसंगत हो जाता तो अचानक आध्यात्मिकता के क्षेत्र में ऊंची उड़ानें भरने लगता (अपने तर्कों को प्रमाणित करने के लिये वह इस अस्त्र का अक्सर इस्तेमाल करता)। वह प्रश्न को आध्यात्मिक ऊंचाई पर ले जाता, दिशा, काल और विचार की व्याख्या में खो जाता तथा वहां से खण्डनात्मक निष्कर्ष निकालकर फिर से बहस के धरातल पर लौट आता।

स्पेरान्स्की की बुद्धिमत्ता के जिस मुख्य लक्षण ने प्रिंस अन्द्रेई को चकित किया, वह था – बुद्धि की शक्ति और उसके प्रभुत्व में उसका पूर्ण तथा अटल विश्वास। यह स्पष्ट था कि स्पेरान्स्की के दिमाग़ में प्रिंस अन्द्रेई के मस्तिष्क में आनेवाला यह सामान्य विचार कभी नहीं

आता था कि अपने सभी विचारों को अभिव्यक्ति देना सम्भव नहीं और इस बारे में भी उसके मन में कोई सन्देह नहीं पैदा होता था कि वह ख़ुद जो कुछ सोचता है और जिसमें विश्वास करता है, वह सब बकवास हो सकता है? स्पेरान्स्की की बुद्धि का यह लक्षण ही प्रिंस अन्द्रेई को उसकी ओर सबसे अधिक खींचता था।

स्पेरान्स्की के साथ परिचय के प्रारम्भिक समय में प्रिंस अन्द्रेई उसके प्रति वैसा ही प्रशंसा भाव अनुभव करता था, जैसा कभी बोना-पार्ट के प्रति महसूस करता रहा था। यह तथ्य कि स्पेरान्स्की एक पादरी का बेटा था और इसलिये एक तुच्छ सामाजिक श्रेणी के सदस्य के नाते उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखा जा सकता था, जैसा कि बहुत-से लोगों ने किया भी, इसी चीज़ ने प्रिंस अन्द्रेई को स्पेरान्स्की के प्रति अपनी भावना को अधिक सहेजने के लिये विवश किया और अचेतन रूप से वह अधिक सशक्त हुई।

स्पेरान्स्की के साथ बितायी गयी पहली शाम को स्पेरान्स्की ने क़ानून-संहिता के सुधार के लिये बनाये गये आयोग की चर्चा करते हुए प्रिंस अन्द्रेई को व्यंग्यपूर्वक यह बताया कि इस आयोग को बने पचास साल हो गये, इसपर लाखों-करोड़ों रूबल ख़र्च हो चुके हैं कि इसने कुछ भी नहीं किया, कि रोज़ेनकाम्फ़ ने तुलनात्मक धाराओं पर लेबल ही लगा दिये हैं।

"बस, इसी के लिये राज्य ने लाखों-करोड़ों रूबल ख़र्च किये हैं," स्पेरान्स्की ने कहा। "हम सिनेट को नयी न्याय-सत्ता देना चाहते हैं, लेकिन हमारे पास क़ानून नहीं हैं। इसीलिये तो, प्रिंस, अब आप जैसे लोगों का सरकारी नौकरी में न होना पाप है।"

प्रिंस अन्द्रेई ने कहा कि इसके लिये विधिशास्त्र की शिक्षा ज़रूरी है जो उसके पास नहीं है।

"वह तो किसी के पास भी नहीं है। इसलिये क्या किया जाये? यह तो दुष्चक्र है जिसे हमें अपनी शक्ति से तोड़ना होगा।"

एक हफ़्ते बाद प्रिंस अन्द्रेई सैनिक नियमावली के आयोग का सदस्य बन गया, और जिस चीज़ की उसने आशा ही नहीं की थी, उसे क़ानून बनानेवाली शाखा का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया गया। स्पेरान्स्की के अनुरोध पर उसने उस समय बनायी जा रही दीवानी क़ानून-संहिता का पहला भाग अपने हाथ में ले लिया और नेपोलियन की क़ानून-

संहिता तथा रोम के सम्राट जुस्टीनियन प्रथम (४८२–५६५) द्वारा सन् ५२९ में पुष्टित संहिता के आधार पर उसका पहला भाग – व्यक्तिगत अधिकार – तैयार करने लगा।

७

दो साल पहले सन् १८०८ में अपनी जागीरों के दौरे के बाद पीटर्सबर्ग लौटने पर प्येर अनचाहे ही पीटर्सबर्ग के फ़्री मेसन संगठन का अध्यक्ष बन गया। वह इस संगठन की शाखाओं के सहभोजों और अन्तिम संस्कारों से सम्बन्धित भोजो का आयोजन करता, नये सदस्यों को दीक्षा देता, विभिन्न शाखाओं को सूत्रबद्ध करने और प्रामाणिक नियमों की प्राप्ति के लिये यत्न करता। वह इस संगठन की इमारतों के निर्माण के लिये अपने पैसे देता और जिस हद तक उसके लिये सम्भव होता, दान की कम पड़नेवाली धनराशि को पूरा करता जिसके मामले में अधिकतर सदस्य कंजूस और टाल-मटोल करनेवाले थे। वह लगभग अकेला ही इस संगठन द्वारा पीटर्सबर्ग में बनाये गये ग़रीबख़ाने का सारा ख़र्च देता था।

इस बीच उसका जीवन पहले की भांति, उसी तरह के मनोरंजनों और भोग-विलास में बीत रहा था। ख़ूब बढ़िया खाना और डटकर शराब पीना उसे अच्छा लगता था और यद्यपि इस चीज़ को अनैतिक तथा अपमानजनक मानता था, छड़ों-अविवाहितों के हलक़ों में, जहां वह जाता रहता था, रंग-रलियां मनाने के मोह से नही बच पाता था।

अपनी सारी व्यस्तताओं और मनोरंजनों के हंगामे के बावजूद प्येर ने एक साल बीतते न बीतते यह महसूस करना शुरू कर दिया कि फ़्री मेसनरी की वह ज़मीन, जिसपर वह खड़ा था, उसके पांवों के नीचे से उतनी ही अधिक खिसकती जाती है जितनी अधिक मज़बूती से वह उसपर खड़ा रहने की कोशिश करता है। साथ ही वह यह भी अनुभव करता कि जिस ज़मीन पर वह खड़ा था, वह जितनी अधिक उसके पैरों के नीचे से खिसकती जाती थी, वह अनिच्छापूर्वक उसके साथ उतना ही अधिक जुड़ता जाता था। जब वह फ़्री मेसन भ्रातृ-संघ का सदस्य बना था तो उसने दलदल की समतल सतह पर

विश्वासपूर्वक अपना पांव टिकानेवाले व्यक्ति जैसी भावना अनुभव की थी। किन्तु पांव टिकाने पर वह नीचे धंस गया था। कुछ ऐसा हुआ कि जिस ज़मीन पर वह खड़ा था, उसके ठोस होने का पूरा विश्वास करने के लिये वह उसपर दूसरा पांव टिका देता और पहले से भी अधिक धंस जाता, उसमें फंसकर रह जाता और न चाहते हुए भी घुटनों तक दलदल में धंसा रहने को विवश हो जाता।

ओसिप अलेक्सेयेविच बाज़्देयेव पीटर्सबर्ग में नहीं था। (पिछले कुछ समय से वह पीटर्सबर्ग की शाखा के मामलों में दिलचस्पी नहीं लेता था और मास्को में ही बना रहता था।) शाखा के सभी सदस्यों, सभी बन्धुओं को प्येर वास्तविक जीवन में अच्छी तरह से जानता था और उसके लिये उन्हें केवल फ़्री मेसन के बन्धुओं के रूप में ही देखना और प्रिंस 'ब' या इवान वसील्येविच 'द' के रूप में न देखना सम्भव नहीं था जिन्हें हर दिन के जीवन में वह अधिकतर दुर्बल तथा तुच्छ चरित्रवाले लोगों के नाते जानता था। फ़्री मेसनों के उनके पेश-बन्दों तथा चिह्नों के नीचे उसे उनकी वर्दियां और वे पदक-तमग़े नज़र आते थे जिन्हें वे वास्तविक जीवन में बड़े यत्न से प्राप्त करते थे। दसेक सदस्यों से, जिनमें से आधे उसी की भांति धनी थे, दान के बीस-तीस रूबल जमा करने पर (इनमें से अधिकांश नक़द नहीं दिये जाते थे, बल्कि वायदे ही होते थे) प्येर को फ़्री मेसन भ्रातृ-संघ की यह प्रतिज्ञा याद आ जाती कि हर बन्धु अपनी सारी सम्पत्ति अपने निकटवर्ती को देने के लिये वचनबद्ध होता है और उसके मन में ऐसे सन्देह सिर उठाने लगते जिनकी ओर से वह आंखें मूंदे रहने का प्रयत्न करता।

अपने परिचित बन्धुओं को वह चार श्रेणियों में विभाजित करता था। पहली श्रेणी में वे बन्धु शामिल थे जो न तो शाखा की गति-विधियों और न मानवीय कार्यों में सक्रिय भाग लेते थे, बल्कि इस संगठन की केवल रहस्यात्मक विद्या – भगवान के तीन नामकरणों या तीन प्रारम्भिक तत्वों – गन्धक, पारा और नमक, अथवा चतुर्भुज और सोलोमोन के मन्दिर की सभी मूर्तियों के महत्त्व के प्रश्नों में ही व्यस्त रहते थे। बन्धुओं की इस श्रेणी का, जिसमें अधिकतर बुज़ुर्ग बन्धु तथा प्येर के मतानुसार स्वयं ओसिप अलेक्सेयेविच बाज़्देयेव भी शामिल था, वह आदर करता था, मगर उनकी रुचियों में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। फ़्री मेसनरी के रहस्यात्मक पक्ष की ओर

उसका मन नही खिचता था।

दूसरी श्रेणी में प्येर अपनी और अपने जैसे उन बन्धुओ को शामिल करता था जो खोजते और डांवाडोल होते थे, जिन्हें फ़ी मेसनरी में अभी तक सीधा और स्पष्ट मार्ग नही मिला था, मगर जो ऐसा मार्ग पाने की आशा रखते थे।

तीसरी श्रेणी मे वह ऐसे बन्धुओ की गणना करता था (इनकी संख्या ही सबसे अधिक थी) जो फ़ी मेसनरी के बाहरी स्वरूप और अनुष्ठानो को ही मानते थे, इन्ही के कड़ाई से पालन किये जाने में विश्वास रखते थे और इसके सार तथा महत्त्व की तरफ़ कोई ध्यान नही देते थे। विल्लास्र्की और मुख्य शाखा के अध्यक्ष भी ऐसे ही लोग थे।

चौथी श्रेणी के बन्धुओं की संख्या भी बहुत अधिक थी, खास तौर पर ऐसे लोगों की जो पिछले कुछ समय में भ्रातृ-संघ के सदस्य बने थे। प्येर के निरीक्षण के अनुसार ये ऐसे लोग थे जिनकी न तो किसी चीज़ में आस्था थी, जो न ऐसी कोई चाह ही रखते थे और केवल इसी-लिये फ़ी मेसन बने थे कि युवा, धनी और सम्पर्कों तथा पदों के कारण अत्यधिक शक्तिशाली ऐसे बन्धुओं के निकट हो सकें जिनकी इस संगठन में कुछ कमी नही थी।

प्येर को अपनी गति-विधियों से असन्तोष की अनुभूति होने लगी। फ़ी मेसनरी, कम से कम वह फ़ी मेसनरी, जिससे वह यहां परिचित था, कभी-कभी केवल बाहरी रूप पर आधारित प्रतीत होती। फ़ी मेसनरी पर अविश्वास करने की बात ही उसके दिमाग़ में नहीं आई, मगर यह सन्देह उसके मन में आता कि रूस की फ़ी मेसनरी ने ग़लत रास्ता अपना लिया है और अपने मूल स्रोत से दूर हट गयी है। इसी-लिये इस वर्ष के अन्त में इस संगठन की गहरी जानकारी पाने के लिये प्येर विदेश चला गया।

प्येर १८०६ की गर्मी में पीटर्सबर्ग लौटा। विदेश में रहनेवाले फ़ी मेसनों के साथ हमारे फ़ी मेसनों के पत्रव्यवहार से यह मालूम हो चुका था कि बेजूखोव ने विदेश में अनेक ऊंचे सचालकों का विश्वास प्राप्त कर लिया है, वह बहुत-से रहस्यों की गहराई में पहुंच गया है, उसे उच्च कोटि प्रदान कर दी गयी है और रूस में फ़ी मेसनरी की

सामान्य भलाई के लिये वह अपने साथ बहुत कुछ ला रहा है। पीटर्सबर्ग के सभी फ़्री मेसन उससे मिलने आये, उन्होंने उसकी चापलूसी की और सभी को ऐसे प्रतीत हुआ कि वह उनसे कुछ छिपा रहा है और किसी चीज़ की तैयारी कर रहा है।

दूसरे दर्जे की शाखा की विधिवत् सभा बुलायी गयी जिसमें प्येर ने वह सब बताने का वचन दिया जो उच्च संचालकों ने पीटर्सबर्ग के बन्धुओं को सूचित करने को कहा था। सभा में खूब भीड़ थी। सामान्य रस्मों के बाद प्येर उठा और उसने अपना भाषण शुरू किया।

"प्यारे बन्धुओ," उसने घबराहट से लाल होते, हकलाते और लिखा हुआ भाषण हाथ में लिये हुए कहना शुरू किया। "हमारी शाखाओं की नीरवता में अपने रहस्यों को व्यावहारिक रूप देते जाना ही पर्याप्त नहीं – हमें सक्रिय होना चाहिये... सक्रिय होना चाहिये। हम निद्रामग्न हैं, जबकि हमें सक्रिय होना चाहिये।" प्येर ने कापी लेकर भाषण पढ़ना शुरू किया। "वास्तविक सचाई के प्रसार-प्रचार तथा नेकी की जीत के लिये हमें लोगों को पूर्वाग्रहों से मुक्त करना चाहिये, युग-भावना के अनुरूप नियमों का प्रचार करना चाहिये, युवाजन के शिक्षण का भार अपने ऊपर लेना चाहिये, सर्वाधिक बुद्धिमान लोगों के साथ अपने को अटूट सूत्रों से जोड़ना चाहिये, साहस और साथ ही सूझ-बूझ से अन्धविश्वास, अनास्था और मूर्खता पर विजय प्राप्त करनी चाहिये, एक ही ध्येय से आपस में जुड़े और सत्ता तथा शक्ति रखनेवाले हमारे प्रति निष्ठावान लोगों को संगठित करना चाहिये।

"इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये बुराई की तुलना में भलाई का पलड़ा भारी होना चाहिये, हमें यह कोशिश करनी चाहिये कि ईमानदार आदमी को इसी दुनिया में उसकी नेकी का पुरस्कार मिल जाये। किन्तु अनेक वर्तमान राजनीतिक संस्थायें हमारे सभी महान इरादों में बाधायें डालती हैं। ऐसी स्थिति में हम क्या करें? क्रान्तियों का स्वागत करें, सब कुछ उलट-पलट दें, शक्ति से शक्ति का सामना करें? नहीं, हम इस सब से बहुत दूर हैं। हर प्रकार का हिंसात्मक सुधार इसलिये निन्दनीय है कि जब तक लोग वैसे ही रहेंगे, जैसे वे हैं, वे बुराई को ज़रा भी दूर नहीं कर पायेंगे और इसलिये भी कि बुद्धिमत्ता को हिंसा की आवश्यकता नहीं।

"हमारे संगठन की सारी योजना इस बात पर आधारित होनी चाहिये कि हम दृढ़ संकल्पवाले, नेक और एक ही विश्वास, इस विश्वास से आपस में सूत्रबद्ध लोगों को तैयार करें जो यह मानें कि वे हर जगह और अपनी पूरी शक्ति से बुराई तथा बेवक़ूफ़ी का विरोध करेंगे और प्रतिभा तथा भलाई को प्रोत्साहन देंगे, योग्य लोगों को धूल से ऊपर उठाकर हमारे बन्धुत्व में शामिल करेंगे। तभी हमारे संगठन में ऐसी शक्ति आयेगी कि वह अव्यवस्था फैलानेवालों के हाथ बांध सके और ऐसे चुपचाप उनका संचालन कर पाये कि उन्हें इसका पता भी न चले। संक्षेप में यह कि हमें व्यापक प्रभुत्ववाली एक ऐसी शासन-प्रणाली बनानी होगी जो नागरिक सम्बन्धों को नष्ट न करे, और जिसके अन्तर्गत प्रशासन-निकाय, केवल एक चीज़ को छोड़कर जो हमारे संगठन के महान लक्ष्य यानी बुराई पर भलाई की विजय में बाधा डालती है, अपने सभी सामान्य कर्त्तव्य पूरे करते रहें। ईसाई धर्म का भी यही लक्ष्य है। उसने लोगों को बुद्धिमान तथा दयालु बनने और इस बात की शिक्षा दी कि उन्हें अपने हित में ही सर्वश्रेष्ठ तथा सबसे अधिक बुद्धिमान लोगों के उदाहरण और उनके बताये पथ का अनुकरण करना चाहिये।

"जब सभी कुछ अन्धकार में डूबा हुआ था, तब, ज़ाहिर है, कि केवल शिक्षा देना ही काफ़ी था – सचाई की नवीनता ही उसे विशेष बल प्रदान कर देती थी। किन्तु अब हमें इसके लिये कहीं अधिक शक्तिशाली साधनों की आवश्यकता है। अब इस बात की ज़रूरत है कि अपनी भावनाओं से संचालित व्यक्ति भलाई में अपनी भावनाओं के अनुरूप सौन्दर्य अनुभव कर सके। इच्छाओं का उन्मूलन सम्भव नहीं, हमें केवल उन्हें उदात्त लक्ष्य की ओर निर्देशित करना चाहिये। इसलिये ज़रूरी है कि हर कोई नेकी की सीमाओं में रहते हुए अपनी इच्छायें पूरी कर सके और हमारे संगठन को इसके लिये साधनों की व्यवस्था करनी चाहिये।

"जैसे ही हर राज्य में हमारे इस तरह के कुछ व्यक्ति हो जायेंगे और उनमें से प्रत्येक ऐसे अन्य दो को तैयार कर लेगा और वे सभी घनिष्ठ रूप में आपस में सूत्रबद्ध हो जायेंगे, वैसे ही हमारे संगठन के लिये सब कुछ करना सम्भव हो जायेगा जो मानवजाति के कल्याण के लिये गुप्त ढंग से अभी भी बहुत कुछ कर चुका है।"

प्येर के इस भाषण ने गहरा प्रभाव ही नहीं डाला, बल्कि शाखा की सभा में बड़ी हलचल भी पैदा कर दी। अधिकांश बन्धुओं ने इस भाषण में जर्मन इल्युमिनिज़्म * के भयानक विचारों को अनुभव करते हुए इसके प्रति उदासीनता दिखायी जिससे प्येर को बड़ी हैरानी हुई। अध्यक्ष ने इसके विरुद्ध टीका-टिप्पणी आरम्भ कर दी। प्येर अधिकाधिक जोश में आते हुए अपने विचारों की विस्तृत व्याख्या करने लगा। बहुत अरसे से ऐसी तूफ़ानी सभा नहीं हुई थी। लोगों के कई दल बन गये – कुछ प्येर की आलोचना करने लगे, उसपर इल्युमिनिज़्म के अनुकरण का आरोप लगाने लगे। दूसरों ने उसका समर्थन किया। इसी सभा में प्येर को पहली बार इस बात का आश्चर्य हुआ कि मानवीय मस्तिष्क, उसके चिन्तन के ढंग में कितनी विविधता है जिसके कारण दो व्यक्तियों को कोई भी सचाई एक जैसी प्रतीत नहीं होती। यहां तक कि वे सदस्य भी, जो मानो उसका पक्ष ले रहे थे, उसे अपने ढंग से, कुछ शर्तों और परिवर्तनों के साथ समझ रहे थे जिनके साथ वह सहमत नहीं हो सकता था, क्योंकि प्येर का मुख्य उद्देश्य तो अपने विचार को दूसरों तक इसी तरह पहुंचाना था जिस तरह वह उसे ख़ुद समझता था।

सभा के अन्त में अध्यक्ष ने प्येर बेज़ूख़ोव के जोश की यह कहकर दुर्भावना तथा व्यंग्यपूर्वक आलोचना की कि केवल भलाई के प्यार ने ही नहीं, बल्कि झगड़ा पैदा करने की इच्छा ने ही उसे इस तरह की बहस के लिये प्रेरित किया है। प्येर ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया और सिर्फ़ इतना ही पूछा कि उसके सुझाव को स्वीकार किया जायेगा या नहीं। उसे जवाब मिला कि स्वीकार नहीं किया जायेगा और वह सामान्य औपचारिकताओं की समाप्ति तक प्रतीक्षा किये बिना यहां से उठकर घर चला गया।

---

* इल्युमिनिज़्म का अनुकरण करनेवाली जर्मन फ़्री मेसनों की संस्था १७७६ में बनी। इसका गुप्त लक्ष्य राजतन्त्र की जगह प्रजातंत्रवादी शासन-प्रणाली स्थापित करना था। किन्तु फ़्री मेसन तो अपने कार्यक्रम के अनुसार इस बात की पुष्टि करते थे कि वे सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। सरकार ने जर्मन संस्था को १७८४–१७८५ मे गैरक़ानूनी घोषित कर दिया था। – स०

प्येर पर फिर से वह उदासी हावी हो गयी जिससे वह इतना अधिक डरता था। फ़्री मेसनों की शाखा में भाषण देने के बाद वह तीन दिनों तक घर पर ही रहा, सोफ़े पर लेटा रहा, किसी से नहीं मिला और कहीं भी नहीं गया।

इन्हीं दिनों में उसे बीवी का ख़त मिला। उसने प्येर से अनुरोध किया कि वह उसे उससे मिलने की अनुमति दे, उसके लिये तड़प और यह इच्छा ज़ाहिर की कि वह अपना सारा जीवन उसे समर्पित करना चाहती है।

पत्र के अन्त में उसने प्येर को सूचित किया था कि कुछ ही दिनों में वह विदेश से पीटर्सबर्ग लौटेगी।

यह पत्र मिलने के बाद एक फ़्री मेसन बन्धु ने, जिसकी दूसरों की तुलना में प्येर कहीं कम इज़्ज़त करता था, उसके इस एकान्तवास में खलल डाल दिया और प्येर के दाम्पत्य जीवन की चर्चा चलाते हुए बन्धु के नाते सलाह के रूप में यह विचार व्यक्त किया कि पत्नी के प्रति उसकी कठोरता अन्यायपूर्ण है और प्रायश्चित करनेवाले को क्षमादान न देकर वह फ़्री मेसनरी के मूलभूत नियमों की भी अव-हेलना कर रहा है।

इसी वक़्त उसकी सास, प्रिंस वसीली की बीवी ने भी उसे बुलवा भेजा, यह मिन्नत की कि बहुत ही महत्त्वपूर्ण मामले पर बातचीत करने के लिये बेशक कुछ ही मिनट को वह उसके पास आ जाये। प्येर ने महसूस किया कि उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा गया है, कि ये लोग पत्नी के साथ उसकी सुलह करवा देना चाहते हैं और उसकी जो मनोदशा थी, उसमें उसे यह कुछ बुरा भी नहीं लगा। उसके लिये सब बराबर था – प्येर जीवन में किसी भी मामले को बहुत महत्त्व का नहीं मानता था और उदासी का जो मूड इन दिनों उसपर छाया हुआ था, उसमें उसे न तो अपनी स्वतन्त्रता की कोई परवाह थी और न ही पत्नी को दंडित करने के अपने हठ की।

"न तो कोई ग़लत है और न कोई सही। इसका यह मतलब हुआ कि वह भी दोषी नहीं है," वह सोच रहा था। यदि प्येर ने पत्नी के साथ फ़ौरन सुलह करने की सहमति प्रकट नहीं की तो केवल

इसलिये कि उदासी की जिस मनःस्थिति में वह इस वक़्त था, उसमें वह कोई भी क़दम उठाने में समर्थ नहीं था। अगर पत्नी उसके पास आ जाती तो उसने अब उसे बाहर न निकाला होता। प्येर जिन ख़्यालों में इन दिनों डूबा हुआ था, उनकी तुलना में उसके लिये क्या यह सर्वथा महत्त्वहीन नहीं था कि वह बीवी के साथ रहता है या नहीं रहता है?

पत्नी और सास को कोई उत्तर दिये बिना प्येर एक रात को काफ़ी देर से ओसिप अलेक्सेयेविच से मिलने के लिये मास्को रवाना हो गया। उसने अपनी दैनिकी में यह लिखा:

"मास्को, १७ नवम्बर।

"अभी-अभी मैं अपने हितैषी के यहां से लौटा हूं और जल्दी से वह सब लिख लेना चाहता हूं जो मैंने इस भेंट के समय अनुभव किया। ओसिप अलेक्सेयेविच ग़रीबी की ज़िन्दगी बिताता है और पिछले तीन सालों से मूत्राशय के यातनापूर्ण रोग से पीड़ित है। किसी ने कभी भी उसे कराहते या शिकवा-शिकायत करते नहीं सुना। उस वक़्त को छोड़कर, जब वह बहुत मामूली-सा भोजन करता है, वह सुबह से शाम तक अपने वैज्ञानिक अध्ययन में लगा रहता है। उसने बड़ी कृपालुता से मेरा स्वागत किया और मुझे उसी पलंग पर बिठा लिया जिस पर लेटा हुआ था। मैंने पूरब के सूरमाओं और जेरुसलीम का निशान बनाया*, उसने भी उत्तर में ऐसा ही किया और ज़रा मुस्कराकर मुझसे यह पूछा कि प्रशा और स्कॉटलैंड की फ़्री मेसन शाखाओं में मैंने क्या जानकारी हासिल की और क्या कुछ सीखा। मेरे लिये जैसे सम्भव हुआ, मैंने उसे सब कुछ बताया और उन प्रस्तावों की चर्चा की जो मैंने पीटर्सबर्ग की हमारी शाखा के सामने पेश किये थे, यह सूचित किया कि मेरे इन प्रस्तावों का कैसा बुरा स्वागत हुआ तथा कैसे मेरे और बन्धुओं के सम्बन्धों के बीच दरार पड़ गयी है। ओसिप अलेक्सेयेविच ने काफ़ी देर तक चुप रहने और इस सारी बात पर सोचने के बाद मेरे सामने अपना दृष्टिकोण रखा जिसने क्षण भर में वह सब, जो हुआ था और मेरा आगे का मार्ग भी स्पष्ट कर दिया। उसने यह पूछकर मुझे हैरानी में डाल दिया कि हमारे संगठन के ये तीन लक्ष्य मुझे याद

---

* फ़्री मेसनरी के निशान। – स०

हैं या नहीं: १) रहस्य को सुरक्षित रखना और जानना; २) इस रहस्य को ग्रहण करने के लिये आत्म-सुधार और आत्म-शुद्धि; ३) ऐसी आत्म-शुद्धि के प्रयास द्वारा मानवजाति का सुधार। इनमें से कौन-सा प्रमुख और प्रथम लक्ष्य है? ज़ाहिर है कि आत्म-सुधार तथा आत्म-शुद्धि। सभी तरह की परिस्थितियों के बावजूद हम केवल इसी लक्ष्य की दिशा में यत्नशील रह सकते हैं। किन्तु साथ ही यही लक्ष्य तो हमसे कहीं अधिक साधना की मांग करता है। इसीलिये अभिमान द्वारा गुमराह होकर हम इस लक्ष्य की अवहेलना करते हुए या तो अपने को 'रहस्य' की खोज में लगा देते हैं जिसे अपनी आत्मा के शुद्ध न होने के कारण ग्रहण करने में असमर्थ होते हैं या फिर मानवजाति के सुधार में जुट जाते हैं, जबकि खुद भ्रष्टता और पतन के उदाहरण होते हैं। इल्युमिनिज़्म इसीलिये शुद्ध विद्या नहीं है कि उसने सामाजिक सक्रियता को अपना अंग बना लिया है और वह अभिमान से ओत-प्रोत है। इस आधार पर ओसिप अलेक्सेयेविच बाज़्देयेव ने मेरे भाषण और सारी गति-विधियों की भर्त्सना की। अपने मन की गहराई में मैं उसके साथ सहमत था। मेरे पारिवारिक मामलों की चर्चा आ जाने पर उसने कहा: 'सच्चे फ़्री मेसन का मुख्य कर्त्तव्य, जैसा कि मैं आपसे कह चुका हूं, आत्म-शुद्धि है, अपने को अनिन्द्य बनाना है। किन्तु बहुधा हम ऐसा सोचते हैं कि हमारे जीवन की सभी कठिनाइयों से अपने को मुक्त करके हम अधिक जल्दी से अपना यह लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। इसके विपरीत, मेरे हुज़ूर,' उसने मुझसे कहा, 'सांसारिक चिन्ताओं के बीच ही हम तीन मुख्य लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं: १) आत्मज्ञान, क्योंकि मानव केवल तुलना से ही अपने को जान सकता है; २) अधिकाधिक आत्म-परिष्कार जो केवल संघर्ष द्वारा ही प्राप्त होता है और ३) मुख्य गुण – मृत्यु-प्रेम की प्राप्ति। केवल जीवन के उतार-चढ़ाव ही हमें उसकी असारता प्रकट कर सकते हैं और मृत्यु या पुनर्जन्म के हमारे जन्मजात प्रेम को तीव्र बना सकते हैं।' ये शब्द इसलिये भी विलक्षण हैं कि अपने शारीरिक कष्ट के बावजूद ओसिप अलेक्सेयेविच कभी जीवन से नहीं ऊबता है और मृत्यु को प्यार करता है, जिसके लिये इतने अधिक आत्मिक परिष्कार और उच्चता के होते हुए भी वह अपने को पर्याप्त रूप से तैयार अनुभव नहीं करता। इसके बाद मेरे हितैषी ने मुझे सृष्टि के महान चतुर्भुज का महत्त्व समझाया और बताया कि तीन

और सात का अंक ही सब कुछ का आधार है। उसने मुझे सलाह दी कि मैं पीटर्सबर्ग के बन्धुओं से अपना नाता न तोड़ूं और शाखा में दूसरे दर्जे का दायित्व निभाते हुए बन्धुओं को अभिमान के फेर में पड़ने से बचाने का प्रयास और उन्हें आत्मज्ञान तथा आत्म-परिष्कार के सच्चे मार्ग की ओर निर्देशित करूं। इसके अतिरिक्त ख़ुद मेरे लिये उसने मुझे यह सुझाव दिया कि मैं अपना कड़ा जायज़ा लेता रहूं और इस हेतु उसने मुझे एक कापी दी, वही कापी, जिसमें मैं यह लिख रहा हूं और भविष्य में अपने सारे कार्य-कलापों के बारे में लिखता रहूंगा।"

"पीटर्सबर्ग, २३ नवम्बर।

"मैं फिर से अपनी पत्नी के साथ रह रहा हूं। मेरी सास आंसू बहाती हुई मेरे पास आयी और बोली कि एलेन वापस आ गयी है और अनुरोध करती है कि उसकी बात सुन ली जाये, कि वह निर्दोष है, कि मेरे उसे त्याग देने से बहुत दुखी है और ऐसी ही अनेक अन्य बातें कहीं। मैं जानता था कि अगर मैं एक बार उससे मिलने को राज़ी हो जाऊंगा तो फिर मेरे लिये उससे मुंह मोड़ना सम्भव नहीं होगा। अपनी इस दुविधा में मैं यह नही समझ पा रहा था कि किसकी सहायता और सलाह लूं। अगर मेरा हितैषी यहां होता तो वह मुझे रास्ता दिखा देता। मैं अपने कमरे में चला गया, मैंने ओसिप अलेक्सेयेविच के पत्रों को फिर से पढ़ा, मुझे उसके साथ हुई बातचीत याद आई और इस सब से मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि मुझे प्रार्थी को इन्कार नहीं करना चाहिये, हर किसी की ओर मदद का हाथ बढ़ाना चाहिये, ख़ास तौर पर ऐसे व्यक्ति की ओर जो मेरे साथ इतने घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है और मेरी क़िस्मत में जो कुछ लिखा है, उसे बर्दाश्त करना चाहिये। किन्तु यदि भलाई करने के लिये ही मैं उसे क्षमा कर देता हूं तो उसके साथ मेरे पुनर्मिलन का केवल आत्मिक ध्येय होना चाहिये। मैंने ऐसा निर्णय किया और ओसिप अलेक्सेयेविच को यही लिख दिया। मैंने पत्नी से कहा कि उससे सभी पुरानी बातें भूलने, उसके सम्मुख मैं जिन भी चीज़ों के लिये दोषी हो सकता हूं, उन सभी को क्षमा करने का अनुरोध करता हूं और मुझे तो उसे किसी भी चीज़ के लिये क्षमा नहीं करना है। उससे यह सब कहने से मुझे ख़ुशी हुई। यही अच्छा होगा कि उसे कभी यह मालूम न हो कि उससे

पुनर्मिलन मेरे लिये कितना दुखद था। मैं इस बड़े घर के ऊपरवाले कमरों में रहता हूं और आत्मोत्थान की सुखद भावना अनुभव करता हूं।"

## ६

हमेशा की भांति इस समय भी ऊंची सोसाइटी के लोग, जो दरबार और बड़े-बड़े बॉल-नृत्यों में मिलते-जुलते थे, कई मण्डलों में बंटे हुए थे और हर मण्डल का अपना कोई विशेष लक्षण था। इनमें सबसे बड़ा काउंट रुम्यान्त्सेव और कोलेनकूर* का वह मण्डल था जो नेपोलियन के साथ एकजुटता का समर्थन करता था। इस मण्डल में एलेन ने, जैसे ही वह पति के साथ पीटर्सबर्ग में रहने लगी, एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया। उसके यहां फ़्रांसीसी दूतावास के महानुभाव और अपनी बुद्धिमत्ता तथा मंजे हुए शिष्टाचार के लिये विख्यात तथा इस मण्डल के अनुरूप रुझान रखनेवाले बहुत-से लोग आते।

रूसी और फ़्रांसीसी सम्राटों की प्रसिद्ध भेंट के समय एलेन एर्फ़ुर्ट में थी और वहीं से नेपोलियन का समर्थन करनेवाले यूरोप के जाने-माने लोगों के साथ अपने सम्बन्ध-सूत्र लेकर आई थी। एर्फ़ुर्ट में उसने अपने रूप की ख़ूब धाक जमाई थी। ख़ुद नेपोलियन ने भी एक बार उसे थियेटर में देखकर यह पूछा था कि वह कौन है और उसकी सुन्दरता की प्रशंसा की थी। सुन्दर और सजीली-सुरुचिपूर्ण नारी के रूप में उसकी ख्याति से प्येर को कोई आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि सालों के बीतने के साथ वह पहले से भी अधिक सुन्दर हो गयी थी। किन्तु उसे हैरानी इस बात से हुई कि इन दो सालों के दौरान उसकी पत्नी ने

---

* निकोलाई रुम्यान्त्सेव (१७५४–१८२६) – रूसी राजकीय कार्यकर्त्ता और राजनयिक, १८०७ से विदेश-मन्त्री और १८१० से राजकीय परिषद का अध्यक्ष।

अरमा दे कोलेनकूर (१७७३–१८२७) – नेपोलियन का एक निकटवर्ती सहायक। १८०७–१८११ में वह रूस में फ़्रांस का राजदूत रहा और रूस के साथ मित्रता की नीति का पालन करता था। – सं०

'd'une femme charmante, aussi spirituelle, que belle'* की ख्याति प्राप्त कर ली थी। प्रसिद्ध प्रिंस दे लीन ** उसे बारह-बारह पृष्ठों के लम्बे-लम्बे पत्र लिखता था। बिलीबिन अपने फड़कते हुए वाक्यों को इसलिये अपने मन में सहेजे रखता कि उन्हें काउंटेस बेज़ूखोवा की उपस्थिति में ही पहली बार कहे। काउंटेस बेज़ूखोवा के यहां आमन्त्रित किया जाना बुद्धिमत्ता का प्रमाणपत्र माना जाता था। एलेन के यहां पार्टी में जाने से पहले जवान लोग किताबें पढ़ते थे ताकि वहां कुछ कह सकें। दूतावास के सेक्रेटरी, यहां तक कि राजदूत भी उससे कूटनीतिक रहस्यों की चर्चा करते और इस तरह एलेन एक तरह से राजनीतिक महत्त्व भी रखती थी। प्येर, जो यह जानता था कि वह बड़ी बुद्धू है, परेशानी और भय की अजीब भावना अनुभव करते हुए कभी-कभी उसकी पार्टियों और दावतों में हिस्सा लेता जहां राजनीति, कविता और दर्शन की चर्चा हुआ करती थी। ऐसी पार्टियों में उसे उस जादूगर जैसी अनुभूति होती जो अपने खेल-तमाशे दिखाते हुए हर बार ही आशंकित रहता है कि उसके धोखे की अभी कलई खुली कि खुली। लेकिन या तो इस कारण कि ऐसी पार्टियों के लिये इसी तरह की मूर्खता की आवश्यकता थी या फिर इस कारण कि धोखे के शिकार होनेवालों को इस धोखे में मज़ा आता था, इसका कभी भंडाफोड़ नहीं हुआ और "जितनी रूपवती, उतनी ही बुद्धिमति अद्भुत नारी" के रूप में एलेन बेज़ूखोवा की ख्याति इतनी दृढ़ हो गयी कि वह तुच्छ से तुच्छ और अधिक से अधिक मूर्खतापूर्ण बातें कह सकती थी और सभी उसके हर शब्द पर मुग्ध होते थे और उसमें ऐसा गहन अर्थ खोजते थे जिसकी स्वयं उसने कल्पना तक नहीं की होती थी।

प्येर ठीक उसी तरह का पति था, जिस तरह के पति की इस ऊंची सोसाइटी की शानदार महिला को ज़रूरत थी। वह ऐसा बेध्यान और अजीब-सा grand seigneur *** पति था जो न केवल किसी के मामले में टांग नहीं अड़ाता था और ड्राइंगरूम के उच्च स्तरीय रंग-ढंग

---

* अद्भुत नारी, जितनी रूपवती उतनी ही बुद्धिमति। (फ़्रांसीसी)

** प्रिंस शार्ल जोज़ेफ़ दे लीन (१७३५-१८१४) – बेल्जियम का राजनीतिक कार्यकर्त्ता और लेखक। – सं०

*** बड़ा रईस। (फ़्रांसीसी)

के सामान्य प्रभाव को नहीं बिगाड़ता था, बल्कि पत्नी के सजीलेपन तथा व्यवहारकुशलता के मुक़ाबले में उसके लिये अच्छी पृष्ठभूमि का भी काम देता था। इन दो सालों के दौरान फ़्री मेसनरी के गूढ़ विषयों में निरन्तर व्यस्त रहने और अन्य सभी चीज़ों के प्रति सच्ची घृणा पैदा हो जाने के फलस्वरूप प्येर ने पत्नी की सोसाइटी की ओर, जिसमें उसकी कोई रुचि नहीं थी, उदासीनता, लापरवाही और सभी के लिये सद्भावना का वह अन्दाज़ अपना लिया जिसे कृत्रिम ढंग से नहीं अपनाया जा सकता और जो इसीलिये अपने आप ही आदर की भावना पैदा करता है। वह पत्नी के ड्राइंगरूम में एक थियेटर की तरह जाता था, सभी से परिचित था, सभी से मिलकर उसे एक जैसी ख़ुशी होती और सभी के प्रति वह समान रूप से उदासीन रहता। कभी-कभी वह अपने लिये दिलचस्पी रखनेवाली बातचीत में हिस्सा लेने लगता और उस समय इस बात की परवाह न करते हुए कि वहां "दूतावास के महानुभाव" उपस्थित हैं या नहीं, बुदबुदाते हुए अपने मत व्यक्त कर देता जो कई बार उस समय के मतों के अनुरूप नहीं होते थे। किन्तु सोसाइटी "पीटर्सबर्ग की सबसे विलक्षण महिला" के अजीब-से पति की ऐसे आदी हो गयी थी कि कोई भी उसकी सनकों को गम्भीरता से ग्रहण नहीं करता था।

एलेन के घर में हर दिन आनेवाले अनेक जवान लोगों में बोरीस द्रुबेत्स्कोई, जिसने नौकरी में काफ़ी तरक़्क़ी कर ली थी, एलेन के एर्फ़ुर्ट से लौटने के बाद, उसका एक सबसे क़रीबी आदमी था। एलेन उसे "अपना चाकर" कहती और उसके साथ बच्चे जैसा व्यवहार करती। वह उसकी ओर देखकर भी उसी तरह से मुस्कराती जैसे अन्य सभी की ओर, किन्तु कभी-कभी इस मुस्कान को देखकर प्येर का मन बुरा हो जाता। बोरीस प्येर के साथ विशेष, औचित्यपूर्ण और उदासी भरे आदर से पेश आता। उसके व्यवहार में आदर की इस झलक से भी प्येर को परेशानी होती। तीन साल पहले प्येर पत्नी द्वारा किये गये अपमान से इतना अधिक संतप्त हुआ था कि अब वह अपने को ऐसे तिरस्कार की सम्भावना से बचाता था, सबसे पहले तो इस तरह कि अब वह अपनी पत्नी का पति नहीं था और दूसरे इस तरह कि अपने मन में सन्देह को सिर नहीं उठाने देता था।

"नहीं, अब 'नीली जुराब'* बन जाने पर उसने पहलेवाली रंग-रेलियों से हमेशा के लिये अपना नाता तोड़ लिया है," वह अपने आप-से कहता। "ऐसा तो एक भी उदाहरण नहीं है कि कोई 'नीली जुराब' इश्क-मुहब्बत के फेर में पड़ी हो," न जाने कहां से लिये गये इस स्वतःसिद्ध नियम को वह मन ही मन दोहराता और इसपर पूरी तरह विश्वास करता। किन्तु अजीब बात थी कि पत्नी के ड्राइंगरूम में बोरीस की उपस्थिति (और वह लगभग हर दिन ही यहां होता था) उसपर शारीरिक ढंग से प्रभाव डालती – वह उसके अंग-अंग को पंगु बना देती, उसकी गति-विधियों की सारी स्वाभाविकता और सहजता में जड़ता ला देती।

"ऐसी अजीब नफ़रत," प्येर सोचता, "लेकिन पहले तो वह मुझे अच्छा भी लगता था।"

सोसाइटी की नज़र में प्येर एक बड़ा रईस था, एक विख्यात महिला का कुछ अन्धा और हास्यास्पद पति था, समझदार तथा अजीब-सा आदमी था, जो निठल्ला रहता था, किन्तु किसी के साथ कोई बुराई नहीं करता था, भला और नेक व्यक्ति था। इसी पूरे वक़्त में प्येर की आत्मा में आन्तरिक विकास की जटिल और कठिन प्रक्रिया चलती जा रही थी जिसने बहुत-सी चीज़ों पर से परदा हटाया और अनेक आत्मिक सन्देहों तथा ख़ुशियों को जन्म दिया।

## १०

प्येर अपनी दैनिकी लिखता रहा और इस बीच उसने इसमें यह लिखा:

"२४ नवम्बर।

"आठ बजे सोकर उठा, धर्म-ग्रन्थ पढ़ा, उसके बाद काम पर गया (अपने हितैषी की सलाह के मुताबिक़ प्येर एक सरकारी कमेटी में काम करने लगा था), भोजन के समय घर लौटा, अकेले ही भोजन

---

* ऐसी औरत जो सिर्फ़ राजनीति और विज्ञान में ही दिलचस्पी रखती है। – सं०

किया ( काउंटेस के यहां बहुत-से ऐसे मेहमान हैं जो मुझे अच्छे नहीं लगते ), संयत ढंग से खाया-पिया और भोजन के बाद बन्धुओं के लिये धर्म-ग्रन्थ के कुछ अंश नक़ल किये। शाम को काउंटेस के ड्राइंगरूम में गया और 'ब' के बारे में एक विनोदपूर्ण क़िस्सा सुनाया और जब सभी ज़ोर से हंस पड़े, तभी यह याद आया कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये था।

"बड़े चैन और सुखी मन से बिस्तर पर जाता हूं। हे प्रभु, मुझे अपने मार्गों पर चलने में सहायता दीजिये: १) क्रोध को शान्ति और नम्रता से जीत सकूं, २) वासना को आत्म-संयम और उपेक्षा से, ३) संसार की निस्सार दौड़-धूप से बच सकूं, किन्तु (क) नौकरी से सम्बन्धित राजकीय काम-काज, (ख) पारिवारिक कर्त्तव्यों, (ग) मित्रों के साथ अच्छे सम्बन्धों और (घ) अपने आर्थिक मामलों की अवहेलना न करूं।"

"२७ नवम्बर।

"देर से जागा और जागने के बाद सुस्ती के कारण बहुत समय तक बिस्तर पर लेटा रहा। हे प्रभु! मेरी सहायता कीजिये और मुझे शक्ति दीजिये कि आपके मार्गों पर चल सकूं। धर्म-ग्रन्थ को पढ़ा, किन्तु उचित भावना के बिना। बन्धु उरूसोव आया और हमने संसार की सारहीन दौड़-धूप की चर्चा की। उसने सम्राट की नयी योजनाओं का उल्लेख किया। मैं आलोचना करने ही वाला था, किन्तु उसी क्षण मुझे अपने नियम और हमारे हितैषी के ये शब्द याद हो आये कि एक सच्चे फ़्री मेसन को राज्य के काम में तभी बड़ी सक्रियता से भाग लेना चाहिये, जब उससे इसकी मांग की जाये और ऐसी अपेक्षा न होने पर उसे मूक दर्शक रहना चाहिये। मेरी ज़बान – मेरी दुश्मन है। बन्धु 'ग', 'ब' और 'ओ' मेरे पास आये और हमने एक नये सदस्य को संगठन में शामिल करने के बारे में प्रारम्भिक बातचीत की। वे चाहते हैं कि मैं दीक्षक का कर्त्तव्य पूरा करूं। मैं अपने को दुर्बल और इसके योग्य अनुभव नहीं करता हूं। इसके बाद मन्दिर की सात पैड़ियों और स्तम्भों: सात विद्याओं, सात भलाइयों, सात बुराइयों और पावन परमात्मा के सात गुणों की व्याख्या होने लगी। बन्धु 'ओ' ने बड़ी वाक्पटुता दिखाई। शाम को नया सदस्य बनाया गया। इमारत की नयी सज-धज ने दृश्य को अद्भुत बनाने में बड़ा योग दिया। बोरींस द्रुबेत्स्कोई

को संगठन में शामिल किया गया। मैंने ही उसका नाम प्रस्तुत किया और मैं ही दीक्षक बना। अन्धेरे कमरे में उसके साथ रहने के पूरे वक़्त ही एक अजीब-सी भावना मुझे विह्वल करती रही। उसके प्रति मैंने अपने हृदय में घृणा की भावना अनुभव की जिसे दबाने की मैं व्यर्थ कोशिश करता रहा। इसीलिये तो मैं सच्चे दिल से उसे बुराई के रास्ते से बचाना और भलाई के मार्ग पर लाना चाहता था, किन्तु उसके बारे में बुरे विचार मेरा पिंड ही नहीं छोड़ रहे थे। मेरा मन कहता था कि भ्रातृ-संघ में उसके शामिल होने का उद्देश्य केवल यही था कि वह हमारी शाखा के लोगों के नज़दीक हो जाये, उनका कृपापात्र बन जाये। इस चीज़ के अलावा कि उसने कई बार मुझसे यह पूछा कि 'न' और 'स' हमारी शाखा में हैं या नहीं (जिसका मैं कोई जवाब नहीं दे सकता) और यह कि मेरे निरीक्षण के अनुसार उसमें हमारे पवित्र संगठन के प्रति आदर-भावना नहीं हो सकती, वह अपने बाहरी व्यक्तित्व में इतना अधिक व्यस्त तथा उससे इस सीमा तक सन्तुष्ट है कि आत्मिक उत्थान की बात नहीं सोच सकता, मेरे पास उसके बारे में सन्देह करने का कोई अन्य आधार नहीं था। किन्तु वह मुझे निष्कपट नहीं लगता था और उस सारे वक़्त के दौरान, जब मैं अन्धेरे कमरे में उसके साथ अकेला खड़ा था, मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि वह मेरे शब्दों पर तिरस्कारपूर्वक मुस्करा रहा है और वास्तव में ही मेरा मन करता था कि उस तलवार को उसकी नंगी छाती में झोंक दूं जिसे मैं उसकी छाती के साथ सटाये खड़ा था। मैं वाक्पटु नहीं हो सका और बन्धुओं तथा अध्यक्ष के सामने ईमानदारी से अपने सन्देह व्यक्त नहीं कर पाया। इस सृष्टि के महान स्रष्टा, सच्चा मार्ग ढूंढ़ने, भूलभुलैयां से निकलने में मेरी सहायता करें।"

इसके बाद दैनिकी में तीन पृष्ठ खाली छोड़ दिये गये थे और फिर यह लिखा हुआ था:

"बन्धु 'व' के साथ एकान्त में मेरी लम्बी और शिक्षाप्रद बातचीत हुई। उसने यह सलाह दी कि मैं बन्धु 'अ' का दामन थामे रहूं। मुझे बहुत-सी बातों का ज्ञान हुआ, यद्यपि मैं उनके योग्य नहीं हूं। संसार के रचयिता का नाम अदोनाई है। विश्व-संचालक का नाम एलोइम है। तीसरा नाम, वह नाम जो अकथ्य है, उसका अर्थ है – **समस्त**। बन्धु 'व' के साथ मेरी वार्ताएं मुझे शक्ति और ताज़गी

देती हैं और भलाई के मार्ग पर मेरे क़दम मज़बूत करती हैं। उसकी उपस्थिति में सन्देह-दुविधा की गुंजाइश नहीं रहती। मेरे लिये सामाजिक शास्त्रों की तुच्छ शिक्षा और हमारी पावन सर्वांगीण शिक्षा का अन्तर स्पष्ट है। मानवीय विद्यायें सभी कुछ का इसलिये विच्छेदन करती हैं कि उसे समझ पायें और विश्लेषण करने के लिये सभी कुछ की हत्या करती हैं। हमारे संगठन की पावन विद्या में सब कुछ एक है, सभी कुछ सम्पूर्ण रूप और जीवन में ही जाना जाता है। जीवन के तीन आरम्भिक तत्त्व हैं—गन्धक, पारा और नमक। गन्धक नरम और अग्निमय है। नमक के साथ मिलकर गन्धक का अग्नि गुण नमक में तीव्र इच्छा पैदा करता है जिसके माध्यम से पारा आकर्षित होता है, वश में आता है और मिलकर अन्य पदार्थों को जन्म देता है। पारा तरल और वाष्पशील आत्मिक सार है—ईसा मसीह, पावन आत्मा, 'वह' हैं।"

"३ दिसम्बर।

"देर से सोकर उठा, बाइबल को पढ़ा, मगर बेमन से। इसके बाद अपने कमरे से निकला और देर तक हॉल में इधर-उधर चक्कर लगाता रहा। मैं चिन्तन करना चाहता था, मगर दिमाग़ में चार साल पहले घटी एक घटना घूमने लगी। द्वन्द्व-युद्ध के बाद श्रीमान दोलोख़ोव एक बार मास्को में मुझसे मिला और बोला कि पत्नी की अनुपस्थिति के बावजूद अब तो मैं पूरा मानसिक चैन अनुभव करता हूंगा। उस वक़्त मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया था। अब मुझे उसके साथ हुई अपनी इस भेंट के सभी ब्योरे याद हो आये और मैंने मन ही मन उसे कटु से कटु और तीखे से तीखे जवाब दिये। मैं सम्भला और इस विचार से केवल तभी निजात हासिल कर पाया, जब मैंने अपने को आग-बबूला होते महसूस किया। लेकिन मैंने इसके लिये काफ़ी पश्चाताप नहीं किया। कुछ देर बाद बोरीस द्रुबेत्स्कोई आ गया और तरह-तरह के अपने कारनामे सुनाने लगा। मेरा तो उसके आते ही मूड ख़राब हो गया था और मैंने कोई भद्दी-सी बात कह दी। उसने जवाब में कुछ कहा। मैं भड़क उठा और मैंने ढेर सारी कड़वी-कसैली, यहां तक कि गुस्ताख़ी भरी बातें भी कह दीं। वह चुप रहा और मुझे इसका तभी एहसास हुआ, जब तीर कमान से निकल चुका था। हे भगवान, उसके साथ तो मेरी पटरी बैठती ही नहीं। इसका कारण मेरा घमण्ड

है। मैं अपने को उससे श्रेष्ठ मानता हूं और इसलिये उसकी तुलना में कहीं बुरा हो जाता हूं, क्योंकि वह मेरी अशिष्टता के प्रति नम्रता दिखाता है और इसके विपरीत, मैं उसके प्रति तिरस्कार की भावना अनुभव करता हूं। हे भगवान, मुझे ऐसी शक्ति दीजिये कि उसकी उपस्थिति में मैं अपनी तुच्छता को कहीं अधिक देखूं और ऐसा व्यवहार करूं कि उसे भी उससे लाभ हो। दिन के भोजन के बाद मैं सो गया और जब मेरी आंख लग रही थी तो मुझे अपने बायें कान में ये स्पष्ट शब्द सुनाई दिये: 'तुम्हारा दिन है यह।'

"सपने में मैंने देखा कि मैं अन्धेरे में चला जा रहा हूं, अचानक कुत्ते मुझे घेर लेते हैं, मगर मैं बेधड़क बढ़ता जाता हूं। सहसा एक छोटा-सा कुत्ता अपने दांतों से मेरी बायीं जांघ पकड़ लेता है और उसे छोड़ता नही। मैं हाथों से उसका गला घोंटने लगता हूं। मैं अपने को उससे छुड़ाता ही हूं कि दूसरा, उससे बड़ा कुत्ता मेरी छाती दबोच लेता है। मैंने उसे दूर हटाया कि तीसरा, उनसे अधिक कुत्ता मुझे काटने लगता है। मैं उसे ऊपर उठाने लगता हूं और जैसे-जैसे ऊपर उठाता हूं, वह अधिकाधिक बड़ा और भारी होता जाता है। अचानक बन्धु 'अ' आता है और मेरा हाथ थामकर मुझे अपने साथ ले चलता है और ऐसी इमारत के पास ले जाता है जिसमें दाखिल होने के लिये एक संकरे तख़्ते पर से गुज़रना ज़रूरी था। मैं तख़्ते पर पांव रखता ही हूं कि वह झुक जाता है, और गिर जाता है। मैं उस बाड़ पर चढ़ने लगता हूं जिसे बड़ी मुश्किल से हाथों से पकड़ पाता हूं। बहुत कोशिश करके मैं ऐसे ऊपर चढ़ने में सफल होता हूं कि मेरी टांगें एक तरफ़ लटकती रह जाती हैं और धड़ दूसरी ओर लटक जाता है। मैं मुड़कर देखता हूं और मुझे यह दिखाई देता है कि बन्धु 'अ' बाड़ पर खड़ा है तथा चौड़ी वीथी और बाग़ की ओर संकेत कर रहा है। बाग़ में एक बड़ी और सुन्दर इमारत थी। मेरी आंख खुल गयी। हे प्रभु, संसार के महान स्रष्टा! मुझे अपने को मनोविकार रूपी कुत्तों से, विशेषत: अन्तिम कुत्ते से जिसमें पहले के सभी मनोविकारों की समूची शक्ति निहित है, मुक्त होने तथा भलाई के उस मन्दिर में प्रवेश करने में सहायता दें जिसकी मुझे सपने में झलक मिली थी।"

"७ दिसम्बर।

"मैंने सपने में देखा मानो ओसिप अलेक्सेयेविच बाज़्देयेव मेरे कमरे

में बैठा है, मैं बहुत प्रसन्न हूं और उसकी ख़ातिरदारी करना चाहता हूं। सपने में मानो मैं दूसरे लोगों के साथ लगातार बतियाता जाता हूं और अचानक मुझे ध्यान आता है कि यह उसे अच्छा नहीं लगेगा और मैं उसके नज़दीक होना तथा उसका आलिंगन करना चाहता हूं। किन्तु जैसे ही उसके निकट होता हूं तो देखता हूं कि उसका चेहरा बदल गया है, जवान हो गया है और वह हमारे संगठन की शिक्षा से धीरे-धीरे, इतना धीरे-धीरे मुझे कुछ बताने लगता है कि मैं सुन नहीं पाता हूं। इसके बाद हम सभी मानो कमरे से बाहर आ जाते हैं और एक अजीब-सी बात हो जाती है। हम फ़र्श पर बैठे या लेटे हुए हैं। वह मुझसे कुछ कहता है। मैं मानो उसे अपनी संवेदनशीलता दिखाना चाहता हूं और उसकी बातों पर कान न देकर अपने भीतर के व्यक्ति की स्थिति और अपने पर भगवान द्वारा की गयी कृपा को समझने की कोशिश करने लगता हूं। मेरी आंखों में आंसू आ जाते हैं और मुझे इस बात की ख़ुशी होती है कि उनकी तरफ़ उसका भी ध्यान जाता है। किन्तु उसने झल्लाहट से मेरी तरफ़ देखा और अपनी बात अधूरी छोड़ते हुए उछलकर खड़ा हो गया। मैं सहम गया और मैंने पूछा कि वह जो कुछ कह रहा था, क्या उसका मुझसे ही तो सम्बन्ध नहीं था। लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया, मेरी ओर स्नेहपूर्वक देखा। कुछ देर बाद हम दोनों अचानक मेरे सोने के कमरे में दिखाई दिये जहां दोहरा पलंग बिछा हुआ है। वह पलंग के सिरे पर लेट जाता है और मैं मानो उसे अपना प्यार देने की बड़ी इच्छा से उसकी बग़ल में ही लेट जाता हूं। वह मानो मुझसे पूछता है: 'मुझे सच-सच बताइये कि आपका मुख्य मनोविकार क्या है? आप उसे जान गये? मैं समझता हूं कि आप उसे जान चुके हैं।' उसके इस प्रश्न से परेशान होते हुए मैं जवाब देता हूं कि काहिली ही मेरा सबसे बड़ा मनोविकार है। वह विश्वास न करते हुए सिर हिलाता है। मैं और भी ज़्यादा परेशान होते हुए यह उत्तर देता हूं कि उसकी सलाह के मुताबिक़ बेशक मैं अपनी पत्नी के साथ रहता हूं, मगर उसके पति की तरह नहीं। इसपर वह कहता है कि मुझे पत्नी को अपने प्यार से वंचित नहीं रखना चाहिये, यह एहसास कराता है कि उसे प्यार करना मेरा फ़र्ज़ है। लेकिन मैं जवाब देता हूं कि ऐसा करते हुए मुझे लज्जा अनुभव होगी। अचानक सब कुछ ओझल हो गया। मेरी आंख खुल गयी और मुझे अपने दिमाग़

में बाइबल के ये शब्द घूमते प्रतीत हुए : **जीवन है मानव का प्रकाश, प्रकाश आलोकित होता है अन्धकार में और अन्धकार ने नहीं ग्रहण किया उसे।** ओसिप अलेक्सेयेविच का चेहरा अधिक जवान और चमकता हुआ था। इसी दिन मुझे अपने हितैषी-चिन्तक का पत्र मिला जिसमें उसने दाम्पत्य जीवन के कर्त्तव्यों की चर्चा की थी।"

"९ दिसम्बर।

"ऐसा सपना देखा जिसके बाद मैं धड़कते दिल से जागा। मैंने देखा मानो मैं मास्को के अपने घर के बड़े दीवानखाने में हूं और ड्राइंगरूम में से ओसिप अलेक्सेयेविच बाहर आता है। मैं तो मानो फ़ौरन यह जान जाता हूं कि उसके आत्मोत्थान की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है और मैं उसकी तरफ़ लपकता हूं। मैं उसे, उसके हाथों को चूमता हूं और वह मुझसे कहता है : 'तुमने इस बात की ओर ध्यान दिया कि मेरा चेहरा अब दूसरा हो गया है?' उसे अपनी बांहों में भरे हुए ही मैं उसकी ओर देखता हूं और मानो मुझे ऐसा दिखाई देता है कि उसका चेहरा जवान हो गया है, किन्तु सिर पर बाल नहीं हैं और नाक-नक़्शा बिल्कुल दूसरा है। मैं मानो उससे कहता हूं : 'अगर आपके साथ संयोग से ही मेरी भेंट हो जाती तो भी मैंने आपको पहचान लिया होता।' और साथ ही मन में यह भी सोचता हूं : 'मैंने यह सच कहा है?' सहसा क्या देखता हूं कि वह मुरदे की तरह लेटा हुआ है। कुछ क्षण बाद उसे होश आता है और बड़े आकार की ड्राइंग-बुक हाथ में लिये हुए मेरे साथ मेरे कमरे में दाखिल होता है। मैं मानो उससे कहता हूं : 'ये चित्र मैंने बनाये हैं।' वह सिर झुकाकर सहमति प्रकट करता है। मैं ड्राइंग-बुक खोलता हूं और उसके सभी पृष्ठों पर बहुत सुन्दर चित्र देखता हूं। मैं मानो जान जाता हूं कि ये सभी चित्र अपने प्रियतम के साथ आत्मा की प्रेम-लीला के चित्र हैं। ड्राइंग-बुक के पृष्ठों पर मानो मैं पारदर्शी पोशाक में पारदर्शी शरीरवाली युवती देखता हूं जो बादलों की ओर उड़ती जाती है। मैं मानो पहचान लेता हूं कि यह युवती तो 'गीतों का गीत'* का ही एक चित्र है। इसे देखते हुए मानो मैं यह अनुभव करता हूं कि बुरा काम कर रहा हूं, मगर अपने को ऐसा करने

---

* बाइबल का वह खण्ड जिसमें ऐसे गीत संकलित हैं जो बहुत ही आवेगपूर्ण, सभी बाधाओं को लांघनेवाले प्रेम की तीव्र अभिव्यक्ति के लिये उल्लेखनीय हैं। – सं०

से रोक नहीं पाता। हे भगवान, मेरी सहायता करें! प्रभु, यदि आपने ही जान-बूझकर मुझे बेसहारा छोड़ दिया है तो आपकी इच्छा पूरी हो। किन्तु यदि यह मेरी करनी है तो मुझे राह दिखाइये, यह बताइये कि मैं क्या करूं। अगर आप मुझे बिल्कुल बेसहारा छोड़ देंगे तो अपनी भ्रष्टता के कारण मैं बिल्कुल नष्ट हो जाऊंगा।"

## ११

रोस्तोव-परिवार ने गांव में जो दो साल बिताये, उनके दौरान उसकी माली हालत नहीं सुधरी।

इस चीज़ के बावजूद कि निकोलाई रोस्तोव अपने इरादे पर दृढ़ता से क़ायम रहते हुए और अपेक्षाकृत बहुत कम खर्च करते हुए किसी दूर की रेजिमेंट में चुपचाप काम करता रहा, फिर भी ओतरादनोये के जीवन का कुछ ऐसा रंग-ढंग था, खास तौर पर मीत्या कुछ इस तरह से प्रबन्ध करता था कि रोस्तोव-परिवार के क़र्ज़ हर साल बढ़ते ही जाते थे। बुजुर्ग काउंट को इस स्थिति से उबरने का एकमात्र यही सम्भव रास्ता दिखाई दिया कि कोई सरकारी नौकरी कर लें और वह नौकरी ढूंढ़ने के लिये पीटर्सबर्ग चले गये। नौकरी ढूंढ़ने के लिये, और साथ ही, जैसा कि वह कहते थे, इस इरादे से भी कि लड़कियां आखिरी बार मौज कर लें। रोस्तोव-परिवार के पीटर्सबर्ग आने के कुछ ही समय बाद बेर्ग ने वेरा के साथ विवाह करने का प्रस्ताव किया और यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

यह सही था कि मास्को में रोस्तोव-परिवार की ऊंची सोसाइटी में गिनती की जाती थी, यद्यपि इसके सदस्यों को न तो यह ज्ञात था और न ही उन्होंने कभी इस बारे में विचार किया था कि उन्हें किस सोसाइटी में गिना जाता है, पीटर्सबर्ग में इस परिवार की जान-पहचान के लोगों का दायरा अनिश्चित और मिला-जुला था। पीटर्सबर्ग में वे प्रांतीय लोग थे और वही लोग, जिनका रोस्तोव-परिवारवाले यह पूछे बिना कि उनका सोसाइटी के किस तबक़े से सम्बन्ध है, मास्को में अपने घर पर आतिथ्य-सत्कार करते थे, उनसे कन्नी काटते थे।

मास्को की तरह पीटर्सबर्ग में भी रोस्तोव-परिवार के दरवाज़े मेहमानों के लिये खुले रहते थे और डिनर की मेज़ पर यहां तरह-तरह के लोग होते थे – ओतरादनोये गांव के पड़ोसी, बेटियों के साथ बूढ़े और निर्धन ज़मींदार, सम्राज्ञी की सेविका-संगिनी मदाम पेरोन्स्काया, प्येर बेज़ूख़ोव, इसके ज़िले के पोस्टमास्टर का बेटा, जो पीटर्सबर्ग के किसी दफ़्तर में काम करता था। पीटर्सबर्ग में बोरीस, प्येर, जिससे बुज़ुर्ग काउंट की सड़क पर भेंट हो गयी थी और जिसे वह अपने साथ घर खींच लाये थे तथा बेर्ग, जो दिन भर यहीं बना रहता था और बड़ी बेटी यानी काउंटेस वेरा के इर्द-गिर्द विवाह का प्रस्ताव करने का इरादा रखनेवाले नौजवान की तरह मंडराया करता था, बहुत जल्द ही घर जैसे लोग बन गये।

बेर्ग व्यर्थ ही आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई में घायल हुआ अपना दायां हाथ लोगों को नहीं दिखाता था और बायें में सर्वथा अनावश्यक तलवार नहीं उठाये रहता था। वह लगातार और इतने महत्त्वपूर्ण ढंग से हर किसी को यह घटना सुनाता था कि सभी इसे करने लायक़ काम और उचित मानने लगे तथा बेर्ग को आउस्टेरलिट्ज़ के लिये दो पदक मिल गये।

फ़िनलैंड की लड़ाई में भी उसने एक मार्का मार लिया। वह उस हथगोले का एक टुकड़ा उठाकर, जिसने प्रधान सेनापति के पास खड़े एडजुटेंट की जान ले ली थी, अपने कमांडर के पास ले गया था। ठीक उसी तरह, जैसे कि उसने आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई के बाद किया था, वह लम्बे अरसे तक और इस तरह लगातार यह घटना सुनाता रहा कि सभी ने यह यक़ीन कर लिया कि ऐसा ही किया जाना चाहिये था – और फ़िनलैंड की लड़ाई के लिये भी बेर्ग को दो पदक मिल गये। सन् १८०६ में वह गार्ड-सेना का कप्तान था और पीटर्सबर्ग में उसने कुछ विशेष लाभदायक पद सम्भाल रखे थे।

बेशक यह सही है कि जब शक्की मिज़ाजवाले लोगों से बेर्ग के गुणों की चर्चा की जाती तो वे मुस्करा देते, फिर भी इस बात से सहमत हुए बिना नहीं रहा जा सकता था कि बेर्ग अनुशासित और बहादुर अफ़सर था, बड़े अफ़सरों की नज़र में चढ़ा हुआ था, पदोन्नति की बड़ी सम्भावनाओं, यहां तक कि सोसाइटी में अच्छी, भरोसे लायक़ स्थितिवाला भला नौजवान था।

चार साल पहले मास्को के एक थियेटर में जर्मन साथी से भेंट होने पर उसने वेरा रोस्तोवा की ओर इशारा करके उससे जर्मन भाषा में कहा था: "यह मेरी बीवी बनेगी," और उसी समय उससे शादी करने का निर्णय कर लिया था। अब, पीटर्सबर्ग में रोस्तोव-परिवार तथा अपनी स्थिति पर विचार करके उसने तय किया कि विवाह-प्रस्ताव करने का वक़्त आ गया है।

शुरू में बेर्ग का प्रस्ताव ऐसी झिझक के साथ स्वीकार किया गया जो उसके लिये प्रशंसनीय नहीं हो सकती थी। शुरू में तो यह बड़ा अजीब-सा लगा कि लिवोनिया क्षेत्र* के किसी अज्ञात कुलीन का बेटा काउंटेस रोस्तोवा से विवाह का प्रस्ताव करे। किन्तु बेर्ग के स्वभाव का सबसे बड़ा गुण तो भोली-भाली और ख़ुशमिज़ाजी से भरी हुई ऐसी स्वार्थ-भावना थी कि रोस्तोव-परिवारवालों ने अनचाहे ही यह सोचा कि अगर ख़ुद उसे इसका यक़ीन है तो ऐसा करना अच्छा ही होगा, अच्छा ही नहीं, बल्कि बहुत ही अच्छा होगा। इसके अलावा रोस्तोव-परिवार की माली हालत बहुत बिगड़ी हुई थी जिसकी विवाह-प्रार्थी को ज़रूर जानकारी होगी और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वेरा चौबीस साल की हो गयी थी, सोसाइटी के अनेक आयोजनों में आती-जाती रही थी तथा इस चीज़ के बावजूद कि वह सुन्दर और समझदार थी, किसी ने भी अभी तक उससे विवाह का प्रस्ताव नहीं किया था। इसलिये इस रिश्ते के लिये सहमति दे दी गयी।

"बात यह है," बेर्ग ने अपने दोस्त से कहा, जिसे वह केवल इसलिये दोस्त कहता था कि सभी लोगों के दोस्त होते हैं। "बात यह है कि मैंने इस सारे मामले पर अच्छी तरह से सोच-विचार कर लिया है और अगर मैंने इस मामले के सभी पहलुओं पर ग़ौर न किया होता या कुछ कठिनाइयां होतीं तो मैं शादी करता ही नहीं। अब तो इसके विपरीत स्थिति ऐसी है कि मेरे माता-पिता आर्थिक दृष्टि से निश्चिन्त हैं, मैंने उनके लिये बाल्टिक तटवर्ती क्षेत्र में नियमित आय की व्यवस्था कर दी है और मैं अपने वेतन, बीवी की कुछ सम्पत्ति और अपनी तरीक़े की ज़िन्दगी की बदौलत बीवी के साथ पीटर्सबर्ग में रह सकता हूं। अच्छे ढंग से रहा जा सकता है। मैं पैसे के लिये शादी नहीं करने

---

* बाल्टिक तटवर्ती। इस क्षेत्र में जर्मन रहते थे। – सं०

जा रहा हूं, ऐसा करना अच्छा नहीं समझता, लेकिन पत्नी को अपना हिस्सा और पति को अपना हिस्सा लाना चाहिये। मेरी नौकरी है – उसके अच्छे सम्बन्ध और कुछ सम्पत्ति है। हमारे ज़माने में इस सबका कुछ महत्त्व तो है न? सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह सुन्दर और इज़्ज़त-आबरूवाली लड़की है और मुझे प्यार करती है..."

बेर्ग के चेहरे पर लाली दौड़ गयी और वह मुस्कराया।

"और मैं भी उसे प्यार करता हूं। इसलिये कि वह समझदार है, उसका स्वभाव बहुत अच्छा है। उसकी बहन, बेशक वे दोनों एक ही परिवार की हैं, बिल्कुल दूसरे ढंग की है, स्वभाव भी अच्छा नहीं, उसके जैसी अक़्ल भी नहीं और जानते हैं कि कुछ इस तरह की है? – मुझे पसंद नहीं... लेकिन मेरी मंगेतर... आप हमारे यहां आया कीजियेगा..." बेर्ग कहता गया। वह कहना चाहता था कि भोजन करने के लिये, लेकिन उसने अपना विचार बदल लिया और कहा: "चाय पीने के लिये," तथा जल्दी से अपनी ज़बान को गोलाकार बनाते हुए धुएं का एक छोटा-सा छल्ला हवा में उड़ा दिया जो उसके सुख-स्वप्न का साकार रूप था।

बेर्ग के विवाह-प्रस्ताव से रोस्तोव-दम्पति के दिल में पैदा होनेवाली हिचक की पहली भावना के बाद परिवार में जशन और ख़ुशी का वैसा ही आलम छा गया जैसा कि ऐसे अवसरों पर सामान्यतः पाया जाता है। किन्तु यह ख़ुशी सच्ची नहीं थी, सतही थी। इस शादी के मामले में सगे-सम्बन्धियों में परेशानी और शर्म की भावना को अनुभव किया जा सकता था। उन्हें तो मानो अब इस बात के लिये शर्म आ रही थी कि वे वेरा को कम प्यार करते थे और ख़ुशी से उसे विदा करने को तैयार थे। बुज़ुर्ग काउंट ही सबसे ज़्यादा परेशान थे। वह सम्भवतः अपनी परेशानी का कारण नहीं बता सकते थे, लेकिन कारण था – उनकी माली हालत। वह बिल्कुल नहीं जानते थे कि उनके पास कितना पैसा है, उन्हें कितना क़र्ज़ चुकाना है और वेरा को दहेज के रूप में वह क्या दे पायेंगे। जब बेटियों का जन्म हुआ था तो उन्होंने उन दोनों के लिये तीन-तीन सौ भूदासोंवाले गांव दहेज में देने का निर्णय किया था। किन्तु इनमें से एक गांव बिक चुका था, दूसरा रेहन रखा हुआ था और लम्बे अरसे तक उसे न छुड़ाने के कारण सूद की रक़म इतनी अधिक बढ़ गयी थी कि उसका बिकना लाज़िमी था। इसलिये यह

जागीर देना सम्भव नहीं था। नक़द रक़म भी उनके पास नहीं थी।

बेर्ग के विवाह-प्रस्ताव को स्वीकार किये हुए एक महीने से अधिक समय बीत चुका था, शादी होने में सिर्फ़ एक हफ़्ता बाक़ी रह गया था, मगर काउंट ने अभी तक न तो अपने दिल में दहेज का मामला तय किया था और न ही पत्नी से इसकी चर्चा चलायी थी। काउंट कभी तो वेरा को र्याज़ान की जागीर देने की सोचते, कभी जंगल बेचने का विचार मन में लाते तो कभी हुंडी लिखकर क़र्ज़ लेने का इरादा बनाते। शादी के कुछ दिन पहले एक सुबह को बेर्ग काउंट के कमरे में आया और होंठों पर मधुर मुस्कान लिये हुए उसने बहुत आदरपूर्वक अपने भावी ससुर से यह बताने को कहा कि काउंटेस वेरा के लिये क्या दहेज दिया जायेगा। इस प्रश्न से, जिसकी वह काफ़ी पहले से कल्पना कर रहे थे, काउंट इतने परेशान हो उठे कि उन्होंने कुछ भी सोचे-समझे बिना वही कह दिया जो उनके दिमाग़ में उसी वक़्त आ गया।

"मुझे साफ़-साफ़ बात करने का यह कामकाजी ढंग पसंद है, पसंद है। तुम अपने को संतुष्ट अनुभव करोगे..."

और वह बेर्ग का कन्धा थपथपाकर इस इच्छा से खड़े हो गये कि यह बातचीत यहीं समाप्त हो जाये। किन्तु बेर्ग ने मधुरता से मुस्कराकर यह स्पष्ट किया कि अगर उसे सही तौर पर यह मालूम नहीं होगा कि वेरा को क्या दहेज मिलेगा और उसके लिये तय किये गये दहेज का कम से कम कोई भाग उसे पहले से नहीं मिल जायेगा तो वह इन्कार करने को मजबूर हो जायेगा।

"कारण स्पष्ट है। आप ख़ुद ही सोचिये, काउंट, अगर मैं अपनी पत्नी के रहन-सहन के लिये पर्याप्त साधनों की व्यवस्था किये बिना अभी शादी कर लेता हूं तो यह घटियापन होगा..."

इस बातचीत का अन्त ऐसे हुआ कि काउंट ने दरियादिली दिखाने और नये अनुरोधों से बचने की इच्छा से यह कह दिया कि वह अस्सी हज़ार की हुंडी दे देंगे। बेर्ग विनीत भाव से मुस्कराया, उसने काउंट का कन्धा चूमा और कहा कि वह बहुत अभारी है, लेकिन तीस हज़ार रूबल नक़द पाये बिना नये जीवन के लिये आवश्यक व्यवस्था नहीं कर सकता।

"या कम से कम बीस हज़ार तो मिलने चाहिये, काउंट," उसने

इतना और जोड़ दिया, "उस हालत में हुंडी सिर्फ़ साठ हज़ार की रह जायेगी।"

"हां, हां, ठीक है," काउंट ने जल्दी से जवाब दिया, "किन्तु, मेरे दोस्त, तुम मुझे इस बात की अनुमति दे दो कि मैं तुम्हें बीस हज़ार नक़द और उनके अलावा अस्सी हज़ार की हुंडी भी दे दूं। ऐसे ठीक रहेगा। तो अब तुम मुझे चूमो।"

## १२

नताशा सोलह साल की हो गयी थी और अब १८०६ का वही साल आ गया था जिसे चार वर्ष पहले बोरीस को चूमने के बाद उसने उंगलियों पर गिना था। तब से वह बोरीस को एक बार भी नहीं देख पायी थी। सोन्या और मां के सामने जब कभी बोरीस की चर्चा चल पड़ती तो वह किसी तरह की झिझक के बिना इस मामले का बीती बात के रूप में उल्लेख करती और इसे बचपना मानती जिसका ज़िक्र भी बेकार था और जिसे कभी का भुलाया जा चुका था। किन्तु मन की गुप्त गहराइयों में यह प्रश्न उसे व्यथित करता रहता कि बोरीस के प्रति उसका दायित्व केवल मज़ाक़ था या ऐसा संजीदा वायदा था जिसे उसे पूरा करना चाहिये।

सन् १८०५ में मास्को से सेना में जाने के बाद वह कभी भी रोस्तोव-परिवारवालों से नहीं मिला था। इस बीच वह कई बार मास्को आया, ओतरादनोये गांव के पास से गुज़रा, मगर एक बार भी इनसे मिलने नहीं आया था।

नताशा के दिमाग़ में कभी-कभी यह ख़्याल आता कि वह उससे मिलना नहीं चाहता और घर के बुज़ुर्ग लोग उदासी भरे जिस अन्दाज़ में बोरीस की चर्चा करते, उससे उसके इस अनुमान की पुष्टि हो जाती।

"आज के ज़माने में पुराने दोस्तों को कोई याद नहीं रखता," बोरीस का ज़िक्र आने पर काउंटेस कहतीं।

पिछले अरसे में आन्ना मिख़ाइलोव्ना भी रोस्तोव-परिवारवालों के यहां कम ही आती थी। वह भी अपनी ख़ास शान दिखाती और हर

बार ही बड़े उल्लास तथा कृतज्ञता से अपने बेटे के गुणों और इस बात का उल्लेख करती कि वह कितने शानदार कैरियर की तरफ़ बढ़ रहा है। रोस्तोव-परिवारवालों के पीटर्सबर्ग आने पर वह उनसे मिलने आया।

उनके यहां जाते हुए वह मन में बेचैनी महसूस किये बिना नहीं रह सका। नताशा से जुड़ी स्मृतियां उसके जीवन की सबसे काव्यमयी स्मृतियां थीं। किन्तु इसके साथ ही वह यह पक्का इरादा बनाकर जा रहा था कि नताशा और उसके माता-पिता को साफ़ तौर पर यह एहसास करा देगा कि उन दोनों के बचपन के सम्बन्ध उन्हें किसी चीज़ के लिये भी वचनबद्ध नहीं करते हैं। काउंटेस बेज़ूख़ोवा के साथ घनिष्ठ सम्बन्धों की बदौलत सोसाइटी में उसकी शानदार जगह थी, एक महत्त्व-पूर्ण व्यक्ति की सरपरस्ती की बदौलत, जिसका वह बड़ा विश्वासपात्र था, नौकरी के मामले में भी उसकी बहुत बढ़िया स्थिति थी और वह पीटर्सबर्ग की एक बहुत ही धनी वारिस से शादी करने की योजनायें बना रहा था। बोरीस जब रोस्तोव-परिवारवालों के ड्राइंगरूम में दा-ख़िल हुआ तो नताशा अपने कमरे में थी। उसके आने की ख़बर सुनकर वह लज्जारुण होती और लगभग भागती हुई ड्राइंगरूम में आई, उसके चेहरे पर मैत्रीपूर्ण मुस्कान से कहीं अधिक ख़ुशी की चमक दिखाई दे रही थी।

बोरीस को तो चार साल पहले की उसी नताशा की याद थी जो लड़कियों जैसा फ़्रॉक पहने रहती थी, घुंघराले बालों के नीचे जिसकी काली-काली आंखें चमका करती थीं और जिसकी हंसी बालिका की तरह ख़ुशी से छलछलाती हुआ करती थी। इसलिये जब बिल्कुल दूसरी ही नताशा सामने आई तो वह भौचक्का-सा रह गया और उसके चेहरे पर उल्लासपूर्ण आश्चर्य झलक उठा। उसके चेहरे के इस भाव से नताशा को ख़ुशी हुई।

"कहो, बचपन की अपनी इस चंचल सहेली को पहचान लिया?" काउंटेस ने प्रश्न किया। बोरीस ने नताशा का हाथ चूमा और कहा कि उसमें हुए परिवर्तन से वह हैरान रह गया है।

"कितनी सुन्दर हो गयी हैं आप!"

"मैं भी ऐसा ही समझती हूं!" नताशा की हंसती हुई आंखें मानो कह रही थीं।

"क्या पापा बुढ़ा गये हैं?" उसने पूछा। नताशा बैठ गयी और

बोरीस तथा काउंटेस की बातचीत में दखल दिये बिना और चुप रहते हुए बचपन के अपने इस दूल्हे को बहुत ग़ौर से देखने लगी। बोरीस टकटकी बांधकर उसे परख रही इस स्नेहपूर्ण दृष्टि को अनुभव कर रहा था और जब-तब नताशा की ओर देख लेता था।

बोरीस की वर्दी, उसकी एड़ें, टाई और केश-विन्यास – सब कुछ नवीनतम फ़ैशन के अनुरूप और खासा अच्छा था। नताशा पहली नज़र में ही यह सब ताड़ गयी। वह काउंटेस के पास आरामकुर्सी पर ज़रा तिरछा बैठा, दायें हाथ से बायें हाथ पर पहने बहुत ही साफ़-सुथरे तथा कसे दस्ताने को ठीक करता हुआ और अजीब ढंग से होंठों को भींचे हुए पीटर्सबर्ग की ऊंची सोसाइटी की रंग-रेलियों तथा हल्के-से व्यंग्य से मास्को में बीते दिनों और मास्को के परिचितों की चर्चा कर रहा था। नताशा से यह बात छिपी न रही कि उच्च कुलीनों का उल्लेख करते हुए उसने संयोगवश ही राजदूत के यहां आयोजित उस बॉल-नृत्य का ज़िक्र नहीं किया था जिसमें उसने हिस्सा लिया था और यह कि उसे फलां-फलां के यहां निमन्त्रित किया गया था।

नताशा लगातार चुपचाप बैठी और कनखियों से उसे देखती रही। उसकी यह दृष्टि बोरीस को अधिकाधिक बेचैन और परेशान करती जा रही थी। वह बार-बार नताशा की तरफ़ देखता और अपनी बात को अधूरी ही छोड़ देता। कोई दसेक मिनट तक बैठने के बाद वह उठा और उसने सिर झुकाकर विदा ली। वही जिज्ञासु, चुनौती देती और कुछ-कुछ मज़ाक़ उड़ाती-सी आंखें उसकी ओर देखती रहीं। पहली बार यहां आने के बाद बोरीस ने अपने आपसे कहा कि नताशा पहले की तरह ही उसका मन छूती है, लेकिन उसे इस भावना को अपने पर हावी नहीं होने देना चाहिये, क्योंकि उससे – सम्पत्तिहीन लड़की – से शादी करने का मतलब उसके कैरियर का अन्त होगा। साथ ही शादी करने के उद्देश्य के बिना उसके साथ पहले जैसे सम्बन्ध क़ायम करना घटिया काम होगा। बोरीस ने अपने लिये यह फ़ैसला कर लिया कि वह नताशा से भेंट होने से बचा करेगा, मगर ऐसे फ़ैसले के बावजूद कुछ ही दिनों बाद फिर यहां आ गया, अक्सर आने और पूरा-पूरा दिन रोस्तोव-परिवार में बिताने लगा। वह सोचता कि उसे नताशा से साफ़-साफ़ बात कर लेनी चाहिये, उससे कह देना चाहिये कि अतीत की सारी चीज़ों को भुला देना चाहिये और सभी कुछ के बावजूद...

वह कभी उसकी पत्नी नहीं बन सकेगी, कि उसके पास धन-दौलत नहीं है और उसके साथ उसकी कभी शादी नहीं की जायेगी। किन्तु वह ऐसा नहीं कर पाता था और यह बातचीत शुरू करते हुए उसे अटपटापन-सा महसूस होता। हर दिन वह इस मामले में अधिकाधिक उलझता जाता था। काउंटेस और सोन्या के मतानुसार नताशा पहले की तरह ही बोरीस को प्यार करती थी। वह बोरीस के मनपसन्द गीत गाती, उसे अपना एलबम दिखाती, उसे उसमें लिखने को मजबूर करती, अतीत को याद न करने देती और इस तरह यह एहसास करवाती कि नया, वर्तमान जीवन कितना अच्छा है। हर दिन ही वह कुहासे से घिरा हुआ लौटता, जो कुछ कहने का इरादा रखता था, वह न कह पाता, यह समझने में आसमर्थ रहता कि वह क्या कर रहा है, किसलिये वह यहां आया करता है और इस सबका कैसे अन्त होगा। बोरीस ने एलेन के यहां जाना बन्द कर दिया, हर दिन ही उसे एलेन के भर्त्सनापूर्ण रुक़्क़े मिलते और फिर भी वह पूरा-पूरा दिन रोस्तोव-परिवार में ही बिता देता।

## १३

एक रात को बूढ़ी काउंटेस जब ड्रेसिंग-जाकेट और नक़ली घुंघराले बालों के बिना सोने के वक्त की छींट की सफ़ेद टोपी पहने, जिसके नीचे से उनके थोड़े-से बालों का छोटा-सा जूड़ा बाहर झांक रहा था, हांफती और हाय-वाय करती हुई क़ालीन पर ज़मीन तक झुक झुककर रात की प्रार्थना कर रही थीं, उनके कमरे का दरवाज़ा चरमराया और नताशा भागती हुई कमरे में आई। वह भी ड्रेसिंग-जाकेट और नंगे पांवों में स्लीपर पहन थी तथा उसके बालों में उन्हें घुंघराले बनाने-वाले काग़ज़ लगे थे। काउंटेस ने मुड़कर देखा और उनके माथे पर बल पड़ गये। वह प्रार्थना के अन्तिम शब्द कह रही थीं: "क्या मेरी शय्या ही मृत्यु-शय्या बनेगी?" उनका प्रार्थना का मूड खराब हो गया था। लाली से चमकते गालोंवाली और उत्साह से ओत-प्रोत नताशा मां को प्रार्थना करते देखकर अचानक ठिठक गयी, ज़रा झुकी और मानो खुद

अपने को धमकाते हुए अनजाने ही उसने ज़बान बाहर निकाली। यह देखकर कि मां की प्रार्थना जारी है, वह दबे पांव बिस्तर की तरफ़ भाग गयी, जल्दी से अपने एक छोटे-से पांव से दूसरे पांव का स्लीपर उतारकर उस शय्या पर कूद गयी जिसके बारे में काउंटेस को यह डर था कि कहीं वह उनकी मृत्यु-शय्या न बन जाये। यह शय्या ऊंची, रोयों के गद्देवाली थी और उसपर एक-दूसरे से छोटे आकारवाले पांच तकिये रखे थे। नताशा उछली, रोयोंवाले गद्दे में धंस गयी, दीवार की तरफ़ लुढ़क गयी और ढंग से लेटने के लिये रज़ाई के नीचे हिलने-डुलने, घुटनों को ठोड़ी तक मोड़ने और फिर टांगों को झटके के साथ सीधा करने लगी। वह कभी तो धीरे से हंसती, कभी रज़ाई में मुंह-सिर छिपा लेती और कभी मां की ओर देखती। काउंटेस ने प्रार्थना समाप्त की और चेहरे को कठोर बनाये हुए पलंग के पास आयीं। किन्तु यह देखकर कि नताशा ने रज़ाई के नीचे सिर छिपा रखा है, अपनी उदारतापूर्ण और हल्की-सी मुस्कान से मुस्करा दीं।

"बस, बस, यह सब नाटक काफ़ी है," काउंटेस ने कहा।

"अम्मां, आपसे बातचीत कर सकती हूं न?" नताशा ने पूछा। "गर्दन को एक और बार चूम लेने दीजिये, और बस।" इतना कहकर उसने मां की गर्दन में बांहें डाल दीं और ठोड़ी के नीचे चुम्बन लिया। मां के साथ नताशा के व्यवहार में बाहरी तौर पर कुछ उद्धतता भी होती थी, मगर वह हमेशा ऐसी चतुराई और दक्षता से काम लेती थी कि मां को न तो दर्द हो, न बुरा और बेहूदा लगे।

"तो आज क्या बातचीत होगी?" मां ने तकियों पर सिर टिकाते और इस बात का इन्तज़ार करते हुए पूछा कि नताशा एक-दो बार इधर-उधर हिलने-डुलने के बाद अपनी बांहें सीधी करके एक ही रज़ाई के नीचे उसके पास आराम से लेट जाये और गम्भीर हो जाये।

काउंट के क्लब से लौटने के पहले नताशा का इस तरह रात के वक़्त मां के साथ बिताया जानेवाला वक़्त मां-बेटी के लिये सबसे अधिक सुखद होता था।

"तो आज क्या बातचीत होगी? मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूं..."

नताशा ने मां के मुंह पर हाथ रख दिया।

"बोरीस के बारे में... मैं जानती हूं," उसने गम्भीरता से कहा,

"मैं भी इसी के लिये आयी हूं। आप कुछ नहीं कहें, मैं सब जानती हूं। लेकिन नहीं, कहिये!" उसने मां के मुंह पर से हाथ हटा लिया। "तो कहिये, अम्मां। वह प्यारा है न?"

"नताशा, तुम सोलह साल की हो गयी हो। तुम्हारी उम्र में मेरी शादी हो चुकी थी। तुम कहती हो कि बोरीस प्यारा है। हां, बहुत प्यारा है और मैं उसे बेटे की तरह प्यार करती हूं। लेकिन तुम चाहती क्या हो?.. तुम्हारे दिमाग़ में क्या है? मैं देख रही हूं कि तुमने उसे बिल्कुल पागल कर डाला है..."

यह कहते हुए काउंटेस ने बेटी पर दृष्टि डाली। नताशा सीधी और निश्चल लेटी हुई पलंग के सिरों पर खुदे स्फ़िन्क्सों में से एक पर अपने सामने नज़र टिकाये थी और इसलिये काउंटेस बेटी के चेहरे को एक पहलू से ही देख पायीं। इस चेहरे पर अंकित गम्भीरता तथा एकाग्रता के भाव से काउंटेस चकित रह गयीं।

नताशा मां की बात सुन और सोच रही थी।

"तो क्या हुआ?" नताशा ने जानना चाहा।

"तुमने उसे बिल्कुल पागल कर दिया है, किसलिये? तुम उससे क्या चाहती हो? तुम्हें मालूम ही है कि तुम उससे शादी नहीं कर सकतीं।"

"भला क्यों?" पहले की तरह लेटे रहकर नताशा ने प्रश्न किया।

"इसलिये कि वह अभी बिल्कुल जवान है, इसलिये कि ग़रीब है, इसलिये कि रिश्तेदार है... इसलिये कि तुम खुद उसे प्यार नहीं करती हो।"

"आपको यह कैसे मालूम है?"

"मुझे मालूम है। यह अच्छी बात नहीं है, मेरी लाड़ली।"

"लेकिन अगर मैं ऐसा चाहती हूं तो..." नताशा बोली।

"बेवक़ूफ़ी की बातें नहीं करो," मां ने जवाब दिया।

"लेकिन अगर मैं ऐसा चाहती हूं तो..."

"नताशा, मैं गम्भीरता से बात..."

नताशा ने मां को अपना वाक्य पूरा नहीं करने दिया, काउंटेस के बड़े-से हाथ को अपनी तरफ़ खींच लिया, उसके ऊपरी भाग को चूमा, इसके बाद हथेली का चुम्बन लिया, इसके पश्चात फिर से उसे उलटा करके उंगली के ऊपरी पोर, पोरों के बीच की जगह, फिर से पोर

को चूमा और साथ ही फुसफुसाकर: "जनवरी, फ़रवरी, मार्च, अप्रैल, मई," कहती गयी।

"अम्मां, बोलिये न, आप चुप क्यों हैं? बोलिये न," उसने मां की तरफ़ देखते हुए कहा जो बड़े प्यार से बेटी को निहार रही थीं और ऐसा करने के कारण वह सब भूल गयी थीं जो बेटी से कहना चाहती थीं।

"यह सब नहीं चलेगा, मेरी बिटिया। सभी यह नहीं समझ पायेंगे कि तुम्हारी ऐसी घनिष्ठ मैत्री बचपन से चली आ रही है और तुम्हें उसके साथ ऐसे घुलते-मिलते देखकर उन जवान लोगों के मन में ग़लत धारणा बन सकती है जो हमारे यहां आते हैं। फिर सबसे बड़ी बात तो यह है कि तुम व्यर्थ ही उसे सता रही हो। सम्भव है कि वह अपने अनुकूल कोई अमीर लड़की चुन लेता, किन्तु अब अपनी सुध-बुध भूल रहा है।"

"सुध-बुध भूल रहा है?" नताशा ने दोहराया।

"मैं तुम्हें अपने बारे में बताती हूं। मेरा एक चचेरा भाई था..."

"मुझे मालूम है – किरील्ल मत्वेइच। लेकिन वह तो बूढ़ा है?"

"वह हमेशा तो बूढ़ा नहीं था। तो सुनो, नताशा, मैं बोरीस से बात करूंगी। उसे हमारे यहां इतना अधिक नहीं आना चाहिये।"

"अगर वह चाहता है तो किसलिये न आये?"

"इसलिये कि मैं जानती हूं – इसका कुछ नतीजा नहीं निकलेगा।"

"आप यह कैसे जानती हैं? नहीं, अम्मां, आप उससे यह नहीं कहियेगा। कैसी बेतुकी बात है!" नताशा ने ऐसे व्यक्ति के अन्दाज़ में कहा जिसकी दूसरे लोग मानो कोई सम्पत्ति छीनना चाहते हों। "ठीक है, मैं उससे शादी नहीं करूंगी, लेकिन अगर उसे और मुझे ख़ुशी मिलती है तो वह यों ही आता रहे।" नताशा मुस्कराते हुए मां को देखती रही।

"शादी नहीं करूंगी, **यों ही** आता रहे," नताशा ने दोहराया।

"तुम्हारा क्या मतलब है, मेरी बिटिया?"

"बस, **यों ही** आता रहे। कोई बात नहीं कि उससे शादी नहीं करूंगी, लेकिन... **यों ही** आता रहे।"

"यों ही, यों ही आता रहे," काउंटेस ने दोहराया और अपनी दयालु, बुढ़ापे के अनुरूप तथा अप्रत्याशित हंसी से सारे पलंग को हि-

लाते हुए ज़ोर से हंस पड़ीं।

"बस, बस, हंसना बंद कीजिये," नताशा चिल्ला उठी, "आप तो पूरे पलंग को हिलाये दे रही हैं। आप तो बिल्कुल मेरे जैसी, एकदम मेरी तरह ही हंसोड़ हैं... ज़रा रुकिये..." उसने काउंटेस के दोनों हाथ पकड़ लिये, कानी उंगली के एक पोर को "जून" कहकर चूमा और "जुलाई" तथा "अगस्त" कहते हुए दूसरे हाथ की उंगलियों के पोरों को चूमना जारी रखा। "अम्मां, क्या बहुत ही प्यार करता है वह मुझे? आपका क्या ख़्याल है? क्या आपको भी कोई ऐसे प्यार करता था? वह बहुत प्यारा, बहुत, बहुत ही प्यारा है! किन्तु मेरी पसन्द के मुताबिक़ नहीं – वह ऐसा संकरा-सा है, खाने के कमरे की घड़ी की तरह... आप समझीं नहीं?.. संकरा, यों कहिये कि भूरा, फीके, हल्के-से रंग का है..."

"यह तुम कैसी बेसिर-पैर की बातें कर रही हो!" काउंटेस बोलीं।

नताशा ने अपनी बात जारी रखा: "क्या सचमुच आप मेरी बात नहीं समझतीं? निकोलाई समझ गया होता... बेज़ूख़ोव – वह नीला है, गहरा नीला-लाल और चौकोर।"

"तुम तो उसके साथ भी चोचलेबाज़ी किया करती हो," काउंटेस ने हंसते हुए कहा।

"नहीं, मैंने मालूम कर लिया है कि वह फ़्री मेसन है। वह बहुत अच्छा आदमी है, गहरा नीला-लाल, कैसे आपको समझाऊं..."

"प्यारी काउंटेस," दरवाज़े के पीछे से काउंट की आवाज़ सुनायी दी। "तुम सो तो नहीं रहीं?" नताशा नंगे पांव ही उछलकर खड़ी हुई, उसने स्लीपर हाथ में उठाये और अपने कमरे में भाग गयी।

नताशा बहुत देर तक नहीं सो पायी। वह लगातार यही सोचती रही कि कोई भी वह सब नहीं समझता जो वह समझती है और जो कुछ उसमें था।

"सोन्या?" उसने बिल्ली की भांति गुड़ी-मुड़ी होकर सो रही बहुत बड़ी चोटीवाली सोन्या की ओर देखकर सोचा। "नहीं, उसके लिये यह समझ पाना सम्भव नहीं। वह तो नेकी का साकार रूप है। वह निकोलाई को प्यार करती है और इससे अधिक कुछ भी जानना-समझना नहीं चाहती। अम्मां भी नहीं समझतीं। यह तो कमाल की बात है, मैं कितनी समझदार हूं और... वह कितनी प्यारी है," वह यह कल्पना

करते हुए कि कोई बहुत बुद्धिमान, सर्वाधिक बुद्धिमान और सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति उसके बारे में ऐसा कह रहा है, अन्य पुरुष में अपनी चर्चा करती गयी... "इसमें किसी, किसी भी चीज़ की कमी नहीं," यह पुरुष कहता जा रहा था, "असाधारण रूप से समझदार, प्यारी और फिर सुन्दर, असाधारण रूप से सुन्दर तथा चतुर है–तैरना जानती है, बहुत बढ़िया घुड़सवारी करती है और फिर इसकी आवाज़! कहा जा सकता है कि अद्भुत आवाज़ है!" उसने केरूबीनी* ऑपेरा की अपनी एक मनपसन्द पंक्ति गायी, बिस्तर पर जा पड़ी, ख़ुशी भरे इस ख़्याल से हंस दी कि आन की आन में उसे नींद आ जायेगी। उसने बत्ती बुझाने के लिये दुन्याशा को पुकारा और दुन्याशा अभी कमरे से बाहर भी नहीं गयी थी कि वह दूसरे, सपनों के अधिक सुखद संसार में पहुंच गयी जहां वास्तविक जीवन की भांति सब कुछ सरल और सुखद था, लेकिन इससे भी बेहतर क्योंकि भिन्न था।

अगले दिन काउंटेस ने बोरीस को अपने पास बुलवाकर उससे बातचीत की और इसके बाद उसने यहां आना बन्द कर दिया।

## १४

३१ दिसम्बर १८१० को, नववर्ष की पूर्ववेला में सम्राज्ञी येकतेरीना के ज़माने के एक जाने-माने कुलीन ने अपने यहां दावत और बॉल-नृत्य का आयोजन किया। इस बॉल-नृत्य में राजनयिक और सम्राट भी आनेवाले थे।

इंगलिश घाट पर इस कुलीन की मशहूर हवेली अनगिनत रोशनियों से जगमगा रही थी। प्रकाश से ख़ूब चमचमाते दरवाज़े के पास, जिसके सामने लाल क़ालिन बिछी हुई थी, पुलिसवाले और फ़ौजी पुलिसवाले ही नहीं, बल्कि पुलिस का अध्यक्ष और दर्जनों पुलिस अफ़सर खड़े

---

* यहां जन्म से इतालवी एक प्रमुखतम स्वरकार लुईजी केरूबीनी (१७३०–१८४२) के ऑपेरा की ओर संकेत है।–सं०

थे। कुछ बग्घियां यहां से लौटतीं और नयी आतीं जिनपर लाल वर्दियां पहने नौकर तथा टोपियों पर कलगियां लगाये अर्दली खड़े होते। बग्घियों में से तरह-तरह की वर्दियां पहने, तमग़े-पदक और रिबन लगाये पुरुष बाहर आते, साटिन तथा अरमाइन फ़र से सजी पोशाकें पहने महिलायें उनके लिये खड़खड़ाहट के साथ बिछाये जानेवाले पायदानों पर सावधानी से नीचे उतरतीं और जल्दी-जल्दी तथा किसी तरह की आहट किये बिना लाल क़ालीन पर बढ़ जातीं।

लगभग हर नयी बग्घी के आने पर भीड़ में फुसफुसाहट होती और टोपियां उतार ली जातीं।

"सम्राट हैं?.. नहीं, मन्त्री ... प्रिंस ... राजदूत ... क्या कलगी नहीं देख रहे?.." भीड़ में से सुनायी देता। भीड़ के दूसरे लोगों की तुलना में अधिक अच्छे कपड़े पहने एक आदमी मानो सभी को जानता था और उस वक़्त की सभी जानी-मानी हस्तियों के नाम बताता जाता था।

इस बॉल-नृत्य में आमन्त्रित एक-तिहाई अतिथि आ भी चुके थे, जबकि रोस्तोव-परिवार के सदस्य (उन्हें भी यहां आना था) जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने में व्यस्त थे।

इस बॉल को लेकर रोस्तोव-परिवारवालों ने बहुत सोच-विचार किया था, बड़ी तैयारियां की थीं, बहुत बार उनके मन में ये शंकायें पैदा हुई थीं कि उन्हें आमन्त्रित नहीं किया जायेगा, पोशाकें तैयार नहीं होंगी और सब कुछ वैसे ही नहीं होगा, जैसे होना चाहिये।

काउंटेस की सहेली और रिश्तेदार मरीया इग्नात्येव्ना पेरोन्स्काया रोस्तोव-परिवारवालों के साथ इस बॉल में जानेवाली थी। सम्राज्ञी मरीया फ़्योदोरोव्ना की सेविका-संगिनी रह चुकनेवाली दुबली-पतली और पीले चेहरेवाली यह महिला पीटर्सबर्ग की ऊंची सोसाइटी में मास्को से आये रोस्तोव-परिवारवालों का मार्ग-दर्शन कर रही थी।

रोस्तोव-परिवारवालों को रात के दस बजे मरीया इग्नात्येव्ना को अपने साथ लेने के लिये तावरीचेस्की बाग़ में, जो पीटर्सबर्ग के केन्द्र में था, उसके घर पर पहुंचना था। मगर दस बजने में पांच मिनट रह जाने पर भी लड़कियां तैयार नहीं हो पायी थीं।

नताशा अपने जीवन में पहली बार ऐसे बड़े बॉल में जा रही थी। इस दिन वह सुबह के आठ बजे उठी और दिन भर अत्यधिक उत्तेजित

और क्रियाशील रही। सुबह से ही वह इस बात के लिये भरसक यत्न कर रही थी कि वे सभी – खुद वह, अम्मां और सोन्या – यथाशक्ति खूब ही बन-ठनकर बॉल में जायें। सोन्या और काउंटेस ने अपने को पूरी तरह से उसके हाथों में सौंप दिया था। काउंटेस को गहरे लाल रंग का मखमली गाउन पहनना था और उन दोनों को गुलाबी रंग के रेशमी साये और चोली पर पारदर्शी बढ़िया मलमल के फ़्रॉक पहनने थे जिनके वक्षीय भाग पर सजावटी गुलाब लगे थे। इन्हें यूनानी ढंग का केश-विन्यास करना था।

सभी ज़रूरी काम पूरे किये जा चुके थे – पांवों, हाथों, गर्दन और कानों को बॉल के अनुरूप बहुत ही अच्छी तरह धोया और इत्र से तर कर लिया गया था, इनपर पाउडर लगा दिया गया था। जालीदार लम्बी रेशमी जुराबें और रिबनोंवाले सफ़ेद रेशमी जूते पहने जा चुके थे, केश-विन्यास भी लगभग समाप्त हो गये थे। सोन्या ने कपड़े पहन लिये थे, काउंटेस ने भी। लेकिन सभी की ओर ध्यान देनेवाली नताशा पीछे रह गयी थी। दुबले-दुबले कन्धों पर लबादा डाले वह अभी तक दर्पण के सामने बैठी थी। कपड़े पहने हुए सोन्या कमरे के बीचोंबीच खड़ी थी और दर्द महसूस करते तथा अपनी छोटी-सी उंगली से हल्की आवाज़ पैदा करते हुए रिबन-बो में अन्तिम पिन खोंस रही थी।

"ऐसे नहीं, ऐसे नहीं, सोन्या!" नताशा ने केश-विन्यास के दौरान उसकी ओर सिर घुमाते और दोनों हाथों से बालों को थामते हुए कहा जिन्हें बाल संवार रही नौकरानी फ़ौरन छोड़ नहीं पायी थी। "यह बो ठीक नहीं बनी, इधर आओ।" सोन्या उसके क़रीब जाकर नीचे बैठ गयी। नताशा ने दूसरे ढंग से रिबन में पिन लगा दिया।

"बुरा नहीं मानिये, कुमारी जी, लेकिन मैं इस तरह तो बाल नहीं संवार सकती," नताशा के बालों को हाथों में पकड़े हुए नौकरानी ने कहा।

"हे भगवान, तो ज़रा रुक जाओ! ऐसे, अब ठीक है, सोन्या।"

"तुम दोनों जल्दी ही तैयार हो जाओगी या नहीं?" काउंटेस की आवाज़ सुनायी दी। "दस बज रहे हैं।"

"अभी, अभी। आप तैयार हो गयीं, अम्मां?"

"सिर्फ़ बालों पर पिन लगाना है।"

"मेरे बिना ऐसा नहीं कीजिये," नताशा ने पुकारकर कहा, "आप

ठीक तरह से नहीं कर सकेंगी!"

"लेकिन दस बज गये हैं।"

बॉल में साढ़े दस बजे पहुंचने का फ़ैसला किया गया था, मगर अभी नताशा को कपड़े पहनने थे और मरीया इग्नात्येव्ना को साथ लेने के लिये तावरीचेस्की बाग़ भी जाना था।

केश-विन्यास समाप्त होने पर नताशा छोटे पेटीकोट में, जिसके नीचे से उसके बॉल-नृत्य के जूते दिखायी दे रहे थे, तथा मां की ड्रेसिंग-जाकेट पहने भागती हुई सोन्या के पास गयी, बहुत ग़ौर से उसका मुआयना किया और फिर मां के पास भाग गयी। मां के सिर को दायें-बायें हिलाते-डुलाते हुए उसने बालों पर पिन लगाया, पके बालों को जल्दी से चूमा और फिर से नौकरानियों की तरफ़ भाग गयी जो उसके फ़्रॉक को छोटा कर रही थीं।

नताशा के फ़्रॉक के कारण, जो बहुत ही लम्बा था, देर हो रही थी। दो नौकरानियां उसे मोड़कर छोटा कर रही थीं और टांके लगाती हुई जल्दी-जल्दी धागा कुतर रही थीं। तीसरी नौकरानी मुंह में पिन भरे हुए काउंटेस और सोन्या के बीच इधर-उधर दौड़ रही थी। चौथी नौकरानी एक हाथ को ऊंचा उठाये हुए उसपर फ़्रॉक लटकाये थी।

"माव्रूशा, जल्दी करो, मेरी प्यारी!"

"वहां से मुझे अंगुश्ताना देने की कृपा करें, कुमारी जी।"

"तुम लोग कभी तैयार भी हो जाओगी या नहीं?" काउंट ने कमरे में आकर कहा। "तुम तो अभी इत्र-फुलेल के चक्कर में पड़ी हो। पेरोन्स्काया तो इन्तज़ार करते-करते थक गयी होगी।"

"लीजिये, तैयार हो गया, कुमारी जी," नौकरानी ने मलमल के छोटे किये गये फ़्रॉक को दो उंगलियों से उठाते, उसपर फूंक मारते और झाड़ते हुए कहा और इस तरह यह ज़ाहिर किया कि वह जो कुछ हाथ में लिये है, वह कितना हल्का-फुल्का और साफ़-सुथरा है।

नताशा फ़्रॉक पहनने लगी।

"अभी, अभी तैयार हो जाती हूं! पापा, आप भीतर नहीं आइये!" उसने दरवाज़े पर खड़े पिता से मलमल के उस फ़्रॉक के नीचे से कहा जो उसका चेहरा ढके था। सोन्या ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। एक मिनट बाद उन्होंने काउंट को कमरे में आ जाने दिया। वह नीला फ़्रॉक-कोट, लम्बी जुराबें और बकलसवाले जूते पहने थे, इत्र से महक रहे

थे, बालों पर पोमेड लगाये थे।

"ओह पापा, आप कितने सुन्दर लग रहे हैं, एकदम लाजवाब!" कमरे के बीचोंबीच खड़ी और फ़्रॉक की सिलवटें ठीक कर रही नताशा ने कहा।

"कृपा मुझे ठीक करने दीजिये, मुझे ठीक करने दीजिये, कुमारी जी," घुटनों के बल खड़ी नौकरानी ने फ़्रॉक को खींचकर सीधा करते और मुंह में पिनों को ज़बान से दायें-बायें घुमाते हुए कहा।

"तुम चाहे कुछ भी कहो," सोन्या ने नताशा के फ़्रॉक को देखते हुए निराशा से ऊंची आवाज़ में कहा, "तुम चाहे कुछ भी कहो, फ़्रॉक अभी भी लम्बा है!"

नताशा बड़े दर्पण में अपने को देखने के लिये उसके सामने जा खड़ी हुई।

"कुमारी जी , क़सम भगवान की, बिल्कुल लम्बा नहीं है," नताशा के पीछे-पीछे फ़र्श पर रेंगती हुई माव्रूशा ने कहा।

"अगर लम्बा है तो हम कुछ टांके और लगा देती हैं, एक मिनट में ही कुछ और छोटा किये देती हैं," दुन्याशा ने वक्ष के दुपट्टे में खोंसी हुई सुई निकालते और फिर से फ़र्श पर बैठकर काम शुरू करते हुए कहा।

इसी क्षण मखमल का फ़्रॉक पहने और बालों में पिन लगाये शर्माती हुई काउंटेस दबे क़दमों से कमरे में आयीं।

"अरे वाह! मेरी सुन्दरी!" काउंट चिल्ला उठे। "तुम सभी से बढ़-चढ़कर हो!.." काउंट ने काउंटेस का आलिंगन करना चाहा, किन्तु वह लजाते हुए एक तरफ़ को हट गयीं ताकि उनके फ़्रॉक पर सिलवटें न पड़ जायें।

"अम्मां, आपके पिन को थोड़ा-सा एक तरफ़ को और करना चाहिये," नताशा ने कहा। "मैं ठीक कर देती हूं," – और मां की तरफ़ लपक चली। किन्तु उसके फ़्रॉक को टांके लगाकर छोटा करनेवाली नौकरानियां इतनी ही तेज़ी से उसके पीछे-पीछे न बढ़ सकीं और नतीजा यह हुआ कि मलमल का एक टुकड़ा खिंचकर फट गया।

"हे भगवान! यह क्या हो गया? सच कहती हूं, इसमें मेरा कोई कुसूर नहीं..."

"कोई बात नहीं, मैं टांके लगा दूंगी, नज़र नहीं आयेंगे।"

"ओह, मेरी महारानी जैसी सुन्दर बिटिया!" आया ने कमरे में दाख़िल होते हुए कहा। "और सोन्या भी कितनी प्यारी लग रही है, कैसी सुन्दरियां हैं!.."

आख़िर सवा दस बजे ये लोग बग्घी में बैठकर रवाना हुए। किन्तु अभी इन्हें तावरीचेस्की बाग़ के पास से पेरोन्स्काया को भी साथ लेना था।

पेरोन्स्काया बिल्कुल तैयार थी। सुन्दरता के अभाव और बुढ़ापे के बावजूद उसके यहां भी वही सब कुछ हुआ था जो रोस्तोव-परिवार में। हां, यह सही है कि उस तरह की हड़बड़ी में नहीं, क्योंकि उसके लिये यह आम बात थी। उसके बुढ़ापे के और असुन्दर शरीर को उसी तरह ख़ूब अच्छी तरह से धोया गया था, उसपर इत्र-फुलेल और पाउडर लगाया गया था और कानों के पीछेवाले हिस्से को रगड़-रगड़कर साफ़ किया गया था। इतना ही नहीं, जब वह पीला गाउन पहने और सम्राज्ञी की सेविका-संगिनी का चिह्न लगाये ड्राइंगरूम में आयी तो उसकी बूढ़ी नौकरानी भी रोस्तोव-परिवार की बूढ़ी आया की भांति अपनी मालकिन के बनाव-सिंगार पर मुग्ध हुई थी। पेरोन्स्काया ने रोस्तोवों की पोशाकों की प्रशंसा की।

रोस्तोवों ने उसकी पसन्द और पोशाक को सराहा और अपने केश-विन्यास तथा पोशाकों के बारे में बहुत सावधान रहते हुए रात के ग्यारह बजे ये बग्घियों में बैठकर रवाना हो गये।

## १५

इस दिन नताशा को सुबह से ही एक मिनट की भी फ़ुरसत नहीं मिली थी और एक बार भी वह यह नहीं सोच पायी थी कि उसके सामने क्या कुछ आनेवाला है।

नम, ठण्डी हवा, हिचकोले खाती तंग और कुछ-कुछ अंधेरी बग्घी में ही उसने पहली बार यह सजीव कल्पना की कि वहां बॉल में बड़े-बड़े जगमगाते हॉलों में उसके सामने क्या कुछ होगा – संगीत, ढेरों फूल, नाच, सम्राट, पीटर्सबर्ग के सभी चुने हुए युवा लोग। उसके सामने

जो कुछ आनेवाला था, वह इतना लाजवाब था कि उसे इसके यथार्थ रूप लेने का विश्वास नहीं हो रहा था – यह सब ठण्ड, तथा बग्घी में तंग जगह और अन्धेरे से पैदा होनेवाली अनुभूति से इतना अधिक मेल नहीं खाता था। उसके सामने जो कुछ आनेवाला था, उसे वह केवल तभी समझ पायी जब दरवाज़े के पास बिछी लाल क़ालिन को लांघकर वह ड्योढ़ी में दाखिल हुई, उसने अपना फ़र-कोट उतारा और सोन्या के साथ तथा मां के आगे-आगे फूलों के बीच से जगमगाते ज़ीने पर चढ़ चली। केवल इसी समय उसे यह याद आया कि बॉल के वक़्त उसे किस तरह का व्यवहार करना चाहिये और उसने वह गरिमा-पूर्ण मुद्रा धारण करने का प्रयास किया जो उसके मतानुसार एक युवती को शोभा देती थी। लेकिन खुशक़िस्मती ही कहिये कि उसने अपनी आंखों को चौंधियायी-सी अनुभव किया – वह स्पष्ट रूप से कुछ भी नहीं देख पा रही थी, उसकी नब्ज़ एक मिनट में एक सौ की रफ़्तार से चलने लगी, दिल ज़ोर से धड़कने लगा। वह उस तरह का अन्दाज़ न अपना सकी जो उसे उपहास-पात्र बना देता और उत्तेजना से लगभग बेसुध होती तथा पूरी शक्ति से केवल इसे छिपाने का यत्न करती हुई चलती जा रही थी। यही अन्दाज़ तो उसे सबसे ज़्यादा जंचता था। इनके आगे-पीछे, इसी तरह से धीरे-धीरे बातचीत करते और बॉल की पोशाकें पहने हुए अन्य मेहमान ज़ीने पर चढ़ रहे थे। ज़ीने पर लगे आईनों में सफ़ेद, आसमानी और गुलाबी रंग की पोशाकें पहने और उघाड़ी बांहों पर तथा गले में हीरों तथा मोतियों की झलक देती महिलायें प्रतिबिम्बित हो रही थीं।

नताशा दर्पणों में अपने को देख रही थी और अपनी छाया को दूसरों के प्रतिबिम्बों से अलग करने में असमर्थ थी। सभी एक शानदार जुलूस के रूप में आपस में गड्डमड्ड हो गये थे। पहले हॉल में प्रवेश करने पर बातचीत, पांवों की आवाज़ों और अभिवादन के शब्दों की लगातार एक जैसी भनभनाहट से नताशा के कान बहरे हो गये। रोशनी और चमक-दमक से उसकी आंखें पहले से ज़्यादा चौंधिया गयीं। दरवाज़े के पास आध घण्टे से खड़े और सभी का एक ही तरह के शब्दों : "आपके आने से बहुत, बहुत खुशी हुई," – से स्वागत कर रहे मेज़बान-दम्पति ने रोस्तोवों और पेरोन्स्काया का भी इसी तरह स्वागत किया।

सफ़ेद फ़्रॉक पहने और काले बालों में एक जैसे गुलाब लगाये दोनों

युवतियों ने एक ही ढंग से झुककर अभिवादन किया, किन्तु गृह-स्वामिनी की नज़र अनचाहे ही अधिक देर तक दुबली-पतली नताशा पर टिकी रह गयी। उसने बहुत ध्यान से नताशा की तरफ़ देखा और गृह-स्वामिनी की सामान्य मुस्कान के अलावा उसके लिये एक और ख़ास मुस्कान अपने होंठों पर ले आयी। नताशा को देखते हुए उसे सम्भवतः अपनी जवानी का सुनहरा, कभी न लौटनेवाला वक़्त और पहला बॉल याद हो आया था। गृह-स्वामी की दृष्टि भी नताशा पर टिकी रह गयी और उसने काउंट से पूछा कि उनकी बेटी कौन-सी है?

"लाजवाब!" उसने उंगलियों के सिरों को चूमते हुए कहा।

मेहमान हॉल में खड़े थे और सम्राट की राह देखते हुए दरवाज़े के क़रीब जमघट लगाये थे। काउंटेस इस भीड़ की पहली क़तारों में खड़ी हो गयीं। नताशा ने कुछ लोगों को अपने बारे में पूछते सुना और अपनी तरफ़ देखते अनुभव किया। वह समझ गयी कि अपनी तरफ़ ध्यान देनेवाले लोगों को वह अच्छी लगी है और इस चेतना से वह कुछ शान्त हो गयी।

"यहां हमारे जैसे भी हैं और हमसे कुछ बुरे भी," उसने सोचा।

पेरोन्स्काया बॉल में आनेवाले सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कुछ लोगों के बारे में काउंटेस को बता रही थी।

"यह हॉलैंड का राजदूत है, देखती हैं न, पके बालोंवाला," पेरोन्स्काया ने घने, सफ़ेद, घुंघराले बालोंवाले एक वृद्ध की ओर संकेत करते हुए कहा जिसे औरतें घेरे थीं और जो उन्हें कोई दिलचस्प क़िस्सा सुनाकर हंसा रहा था।

"और यह लीजिये, पीटर्सबर्ग की महारानी आ गयी," उसने प्रवेश कर रही एलेन की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

"कितनी सुन्दर है! मरीया अन्तोनोव्ना* से किसी तरह उन्नीस नहीं। देखती हैं न कि क्या बूढ़े और क्या जवान, कैसे सभी उसके गिर्द मंडरा रहे हैं। सुन्दर भी है और समझदार भी... सुनने में आया कि एक राजकुमार तो इसका दीवाना है। और इन दोनों को देखिये, बेशक सुन्दर नहीं हैं, फिर भी कहीं ज़्यादा लोग इनके गिर्द मंडरा रहे हैं।"

---

* ज़ार अलेक्सान्द्र प्रथम की मनपसन्द महिला। – सं०

उसने बहुत ही साधारण रंग-रूपवाली बेटी के साथ हॉल में से जा रही महिला की ओर संकेत किया।

"यह लाखों के दहेजवाली भावी दुलहन है," पेरोन्स्काया ने कहा। "और यह लीजिये, इसके चाहनेवाले भी आ गये।"

"यह काउंटेस बेजूखोवा का भाई अनातोल कुरागिन है," उसने भारी घुड़सेना के सुन्दर अफ़सर की ओर संकेत किया जो बहुत तना और महिलाओं के सिरों के ऊपर से किसी चीज़ की तरफ़ देखता हुआ इनके क़रीब से गुज़रा। "क्यों, है न बांका जवान? सुनने में आया है कि इस धनी युवती से इसकी शादी की जा रही है। आपका रिश्ते-दार, द्रुबेत्स्कोई भी तो इससे शादी करने का इच्छुक है। कहते हैं कि लाखों की स्वामिनी है यह... हां, हां, यह तो फ़्रांसीसी राजदूत है," काउंटेस के प्रश्न के उत्तर में उसने कोलेनकूर के बारे में बताया। "देखिये तो, जैसे कोई बादशाह हो। कुछ भी कहिये, फ़्रांसीसी बहुत प्यारे, बहुत ही प्यारे होते हैं। सोसाइटी में इनसे ज़्यादा प्यारा और कोई नहीं होता। और लीजिये, वह भी आ गयी! नहीं, मरीया अन्तोनोव्ना की बराबरी कोई नहीं कर सकती! कितनी सादा पोशाक पहने है। बहुत ख़ूब!"

"और यह चश्माधारी मोटा, यह तो फ़्री मेसन है," प्येर बेजूखोव की तरफ़ इशारा करते हुए पेरोन्स्काया बोली। "इसे बीवी के पास खड़ा कर दो तो विदूषक लगेगा!"

प्येर अपनी भारी-भरकम देह को इधर-उधर झुलाता, भीड़ को चीरता, दायें-बायें सिर झुकाता ऐसी लापरवाही और ख़ुशमिज़ाजी से चला जा रहा था मानो किसी मेले-ठेले की भीड़ में से जा रहा हो। वह सम्भवतः किसी को ढूंढ़ता हुआ भीड़ में से गुज़र रहा था।

नताशा बहुत ख़ुश होकर प्येर के, पेरोन्स्काया के शब्दों में इस विदूषक के चेहरे को देख रही थी और जानती थी कि इस भीड़ में वह उन्हें, ख़ास तौर पर उसे ढूंढ़ रहा था। प्येर ने उसे वचन दिया था कि वह बॉल में आयेगा और उसके लिये नृत्य-साथी ढूंढ़ देगा।

किन्तु इनके निकट पहुंचने के पहले वह सफ़ेद वर्दी पहने काले बालों और मंझोले क़दवाले एक बहुत ही सुन्दर व्यक्ति के क़रीब रुक गया। यह व्यक्ति खिड़की के नज़दीक खड़ा हुआ लम्बे क़दवाले एक आदमी से बातें कर रहा था जिसके वक्ष पर रिबन और पदक लगे थे। नताशा

सफ़ेद वर्दी पहने मंझोले क़द के इस जवान आदमी को फ़ौरन पहचान गयी – यह बोल्कोन्स्की था जो उसे पहले की तुलना में कहीं अधिक जवान, प्रसन्न-प्रफुल्ल और सुन्दर प्रतीत हुआ।

"हमारा एक और परिचित है यहां पर – बोल्कोन्स्की। देख रही हैं अम्मां?" प्रिंस अन्द्रेई की ओर मां का ध्यान आकर्षित करते हुए नताशा ने कहा। "आपको याद है न, वह ओतरादनोये गांव में हमारे यहां एक रात ठहरा था।"

"अरे, आप उसे जानते हैं?" पेरोन्स्काया ने पूछा। "फूटी आंखों नहीं सुहाता यह आदमी मुझे। आजकल सब उसके दीवाने हैं। उसके घमण्ड की तो कोई हद ही नहीं! अपने बाप जैसा ही निकला है। स्पेरान्स्की के साथ उसकी गहरी छनती है, ये दोनों कुछ परियोजनायें तैयार करते रहते हैं। देखिये तो, महिलाओं के साथ कैसा बर्ताव करता है! वह उसके साथ बात कर रही है, मगर उसने मुंह भी फेर लिया," उसने बोल्कोन्स्की की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। "अगर वह मेरे साथ इसी तरह से पेश आता जैसे उन महिलाओं के साथ, तो मैंने इसकी अक़्ल ठिकाने कर दी होती।"

## १६

अचानक हलचल हुई, भीड़ में फुसफुसाहट सुनायी दी, वह आगे बढ़ी, फिर पीछे हटी और दो क़तारों में बंटते हुए उसने बीच में रास्ता बना दिया। इसी क्षण आर्केस्ट्रा बज उठा, सम्राट पधारे और इस बीच के रास्ते पर आगे बढ़ने लगे। उनके पीछे-पीछे मेज़बान-दम्पति आ रहे थे। सम्राट दायें-बायें सिर झुकाते हुए तेज़ी से चल रहे थे ताकि प्रारम्भिक औपचारिकता के इन क्षणों से जल्दी से जल्दी निजात पा लें। आर्केस्ट्रावाले उस प्राचीन, समारोही, पोलैंडी नृत्य की धुन बजा रहे थे जो उन दिनों उसके साथ जोड़ दिये गये शब्दों के कारण प्रसिद्ध था। ये शब्द ऐसे आरम्भ होते थे: "अलेक्सान्द्र, येलिज़ावेता*, बलि-बलि जायें हम आप पर।" सम्राट ड्राइंगरूम में

---

* सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम और उनकी पत्नी येलिज़ावेता से अभिप्राय है। – सं०

चले गये, भीड़ दरवाज़े की तरफ़ लपकी। कुछ लोग, जिनके चेहरों के भाव बदले हुए थे, तेज़ी से आगे-पीछे आये-गये। भीड़ एक बार फिर दरवाज़े से पीछे हट गयी जहां गृह-स्वामिनी के साथ बातचीत करते हुए सम्राट दिखाई दिये थे। एक खोया-खोया-सा नौजवान महिलाओं से पीछे हट जाने का अनुरोध करते हुए उनकी तरफ़ लपका। कुछ महिलायें, जिनके चेहरे यह ज़ाहिर कर रहे थे कि वे सोसाइटी के सभी तौर-तरीक़े भूल गयी हैं, अपनी पोशाकों को बिगाड़ती और रेल-पेल करती हुई आगे बढ़ रही थीं। पुरुष महिलाओं के पास आने लगे और पोलैंडी बॉल-नृत्य के जोड़े बनने लगे।

सभी पीछे हट गये और सम्राट मुस्कराते हुए गृह-स्वामिनी का हाथ थामे, किन्तु संगीत की लय का अनुकरण न करते हुए ड्राइंगरूम से बाहर आये। उनके पीछे-पीछे मरीया अन्तोनोव्ना नारीशकिना का हाथ थामे गृह-स्वामी, राजदूत, मन्त्री, भिन्न जनरल आगे बढ़े। पेरोन्स्काया लगातार इनके नाम बताती जा रही थी। आधी से अधिक महिलाओं को उनके नृत्य-साथी मिल गये थे और वे नाच के लिये या तो तैयार हो गयी थीं या तैयार हो रही थीं। नताशा अनुभव कर रही थी कि मां और सोन्या के साथ वह कम संख्यावाली उन महिलाओं में रह गयी है जिन्हें दीवार के क़रीब धकेल दिया गया था और पोलैंडी नाच के लिये नृत्य-संगिनी नहीं बनाया गया था। उसकी पतली-पतली बांहें दायें-बायें लटकी हुई थीं, छोटे-छोटे उरोज लयबद्ध ढंग से ऊपर उठ रहे थे और वह दम साधे तथा चमकती एवं सहमी-सहमी नज़रों से अपने सामने देख रही थी। उसके चेहरे का भाव कह रहा था कि वह अपार सुख तथा अपार दुख के लिये पूरी तरह तैयार है। सम्राट और उन महत्त्वपूर्ण लोगों में उसे कोई दिलचस्पी महसूस नहीं हो रही थी जिनके बारे में पेरोन्स्काया बता रही थी। उसके दिमाग़ में तो एक ही ख़्याल घूम रहा था: "क्या सचमुच कोई भी मुझे नाचने के लिये निमन्त्रित करने नहीं आयेगा, क्या मैं सबसे पहले नाचनेवालों में नहीं रहूंगी, क्या इन सभी पुरुषों में से किसी की भी नज़र मुझपर नहीं पड़ेगी? लगता है कि वे तो अब मुझे देख ही नहीं रहे और अगर देखते भी हैं तो ऐसे मानो कह रहे हों: 'अरे! यह वह नहीं जिसकी हमें तलाश है, इसलिये क्या तुक है इसकी तरफ़ देखने में।' नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!" वह सोच रही थी। "उन्हें यह तो

मालूम ही होना चाहिये कि मेरा नाचने को कितना मन हो रहा है, मैं कितना बढ़िया नाचती हूं और मेरे साथ नाचनेवालों को कितना मज़ा आयेगा।"

खासी देर से बज रही पोलैंडी नाच की धुन नताशा के कानों में उदासी भरी स्मृति की तरह गूंजने लगी। उसका मन हो रहा था कि रो पड़े। पेरोन्स्काया इनके पास से हट गयी थी। काउंट हॉल के दूसरे सिरे पर थे। काउंटेस, सोन्या और नताशा मानो जंगल में, अजनबी लोगों की इस भीड़ में अकेली खड़ी थीं जिनमें न तो किसी की कोई दिलचस्पी थी और जिनकी न किसी को ज़रूरत थी। प्रिंस अन्द्रेई किसी महिला के साथ इनके पास से गुज़रा और सम्भवतः उसने इन्हें नहीं पहचाना। सुन्दर अनातोल ने, जो मुस्कराते हुए उस महिला से कुछ कह रहा था, जिसकी बांह में बांह डाले नृत्य-संगिनी के रूप में अपने साथ ले जा रहा था, नताशा की तरफ़ ऐसे देखा जैसे कोई दीवार को देखता है। बोरीस दो बार इनके पास से गुज़रा और दोनों बार ही उसने मुंह फेर लिया। पत्नी के साथ बेर्ग, जो नाच नहीं रहे थे, इनके पास आये।

यहां बॉल के वक़्त परिवार के लोगों के इकट्ठे हो जाने से नताशा जल-भुन गयी मानो पारिवारिक बातचीत के लिये बॉल के अतिरिक्त कोई दूसरी जगह ही न हो। उसने अपने हरे फ़ॉक की चर्चा कर रही वेरा की न तो बात सुनी और न उसकी तरफ़ देखा ही।

आखिर सम्राट अपनी अन्तिम नृत्य-संगिनी (सम्राट तीन महिलाओं के साथ बारी-बारी से नाचे थे) के निकट रुक गये, संगीत बन्द हो गया। चिन्तित एडजुटेंट भागता हुआ रोस्तोवों के पास आया और उसने उनसे अनुरोध किया कि वे पीछे हट जायें, यद्यपि वे तो पहले ही दीवार से सटी खड़ी थीं। इसी क्षण बाल्कनी से वाल्ज़ की स्पष्ट, नपी-तुली, लयबद्ध और मधुर ध्वनियां गूंज उठीं। सम्राट ने मुस्कराते हुए हॉल पर दृष्टि डाली। एक मिनट बीत गया – किसी ने भी नाचना आरम्भ नहीं किया था। नृत्य-व्यवस्थापक एडजुटेंट काउंटेस बेज़ूखोवा के पास गया और उसने उसे अपने साथ नाचने के लिये निमन्त्रित किया। काउंटेस बेज़ूखोवा ने मुस्कराकर हाथ ऊपर उठाया और एडजु-टेंट की तरफ़ देखे बिना उसे उसके कंधे पर रख दिया। अपने फ़न का माहिर नृत्य-व्यवस्थापक एडजुटेंट अपनी नृत्य-संगिनी को अच्छी

तरह आलिंगन में कसकर बड़े विश्वास, धीरे-धीरे और लयबद्ध ढंग से पहले तो चक्र के किनारे-किनारे मानो तैरता-सा चला गया, हॉल के सिरे पर पहुंचकर उसने उसका बायां हाथ थाम लिया, उसे घुमाया और इसके बाद तो संगीत की निरन्तर तेज़ होती हुई ध्वनियों के अतिरिक्त एड़ों की खनक ही सुनायी देती थी जो एडजुटेंट ने अपने तेज़ और फुरतीले पांवों में पहन रखे थे तथा हर तीसरी ताल पर जब उसकी संगिनी घूमती तो उसका मख़मली फ़्रॉक मानो चमकता हुआ फूल जाता। नताशा इन्हें देख रही थी और यह सोचचर रोने को तैयार थी कि वह पहला वाल्ज़ नहीं नाच रही थी।

घुड़सेना के कर्नल की सफ़ेद वर्दी, लम्बी जुराबें और नाच के बकलसवाले जूते पहने प्रिंस अन्द्रेई चक्र की पहली क़तारों में तथा रोस्तोवों के क़रीब ही बड़ा सजीव और प्रफुल्ल-सा खड़ा था। बैरन फ़ीरहोफ़ उसके साथ राज्य-परिषद की उस बैठक की चर्चा कर रहा था जो सम्भवतः अगले दिन होनेवाली थी। स्पेरान्स्की के बहुत क़रीबी और क़ानून बनानेवाले आयोग के काम में भाग लेनेवाले के नाते प्रिंस अन्द्रेई अगले दिन की बैठक के बारे में विश्वसनीय सूचना दे सकता था जिसको लेकर तरह-तरह की अफ़वाहें फैली हुई थीं। किन्तु प्रिंस अन्द्रेई फ़ीरहोफ़ की बातें नहीं सुन रहा था और कभी तो सम्राट और कभी उन पुरुषों की ओर देख रहा था जो नाचने को तैयार थे, मगर आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे।

प्रिंस अन्द्रेई सम्राट की उपस्थिति में घबरा रहे इन पुरुषों और नाच के लिये आमन्त्रित किये जाने की तीव्र इच्छा के कारण बेहद बेचैन महिलाओं को ध्यान से देख रहा था।

प्येर प्रिंस अन्द्रेई के पास आया और उसने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"आप तो हमेशा नाच में हिस्सा लिया करते हैं। यहां मेरी एक संरक्षिता है, नवयुवती रोस्तोवा, उसे आमन्त्रित कर लीजिये," उसने कहा।

"कहां है?" बोल्कोन्स्की ने पूछा। "मैं माफ़ी चाहता हूं," उसने बैरन से कहा, "इस बातचीत को हम किसी दूसरी जगह ख़त्म कर लेंगे, बॉल में तो हमें नाचना चाहिये।" इतना कहकर वह उधर चला गया जिधर प्येर ने इशारा किया था। नताशा के निराश और हताश

चेहरे पर उसकी नज़र पड़ी। उसने उसे पहचान लिया, उसने उसकी मनोदशा का अनुमान लगा लिया, यह समझ लिया कि वह पहली बार ऐसे शानदार बॉल में आयी है, उसे सोन्या के साथ खिड़की के क़रीब हुई उसकी बातचीत याद आ गयी और वह खिले हुए चेहरे से काउंटेस रोस्तोवा के पास गया।

"मैं आपसे अपनी बेटी का परिचय कराने की अनुमति चाहती हूं," काउंटेस ने लज्जा से लाल होते हुए कहा।

"अगर आप मुझे भूली नहीं तो मैं कह सकता हूं कि मुझे आपकी बेटी से परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है," प्रिंस अन्द्रेई ने बड़ी शिष्टता से और सिर को काफ़ी नीचे झुकाकर कहा। उसका ऐसा व्यवहार पेरोन्स्काया द्वारा उसकी अशिष्टता के बारे में दी गयी टिप्पणी से बिल्कुल भिन्न था। उसने नताशा के पास जाकर नाच के लिये निमन्त्रण के शब्द पूरे करने के पहले ही उसकी कमर पर अपना हाथ रख दिया। उसने सुझाव दिया कि वे वाल्ज़ नाचें। नताशा के चेहरे का वह भाव जो ज़ाहिर कर रहा था कि उसका दिल बैठा जा रहा है, और कि वह परम निराशा और परम उल्लास के लिये तैयार है, अचानक प्रसन्नता तथा आभार व्यक्त करनेवाली बालिका जैसी मुस्कान से चमक उठा।

"बहुत देर से तुम्हारा इन्तज़ार था मुझे," प्रिंस अन्द्रेई के कंधे पर हाथ रखते हुए छलकने के लिये तैयार आंसुओं के बीच से चमक उठनेवाली इस सहमी और प्रसन्न युवती की मुस्कान मानो कह रही थी। नाच के घेरे में आनेवाला यह दूसरा जोड़ा था। प्रिंस अन्द्रेई अपने वक़्त का एक सर्वश्रेष्ठ नर्तक था। नताशा बहुत ही बढ़िया नाचती थी। नृत्य के मख़मली जूतों में उसके पांव बड़ी तेज़ी और फुर्ती से तथा अपने आप ही थिरक रहे थे और उसके चेहरे पर उल्लास की चमक थी। उसकी नंगी गर्दन और बांहें दुबली-पतली और असुन्दर थीं। एलेन के कंधों की तुलना में उसके कंधे दुबले, उरोज अविकसित और हाथ पतले-पतले थे, किन्तु एलेन के शरीर पर उसकी थाह लेनेवाली हज़ारों आंखों की मानो पालिश चढ़ी हुई थी, जबकि नताशा उस लड़की के समान थी जिसके बदन को मानो पहली बार नंगा किया गया था और जिसे, यदि यह विश्वास न दिलाया जाता कि ऐसा करना ज़रूरी है, बहुत शर्म महसूस हुई होती।

नताशा के प्रथम बॉल-नृत्य की झलक।

प्रिंस अन्द्रेई को नाचना पसन्द था और जल्दी से जल्दी उन राजनीतिक तथा बुद्धिमत्तापूर्ण बातों से निजात पाने के लिये, जिनमें सभी उसे खींचते थे, और झेंप-घबराहट के उस बोझल वातावरण को भी शीघ्रता से समाप्त करने की तीव्र इच्छा से, जो सम्राट की उपस्थिति के कारण बना हुआ था, वह नाचने को तैयार हो गया और उसने नताशा को इसलिये अपनी संगिनी चुना कि प्येर ने ऐसा करने का अनुरोध किया था तथा इस कारण भी कि वही उसके सामने आनेवाली पहली सुन्दर लड़की थी। किन्तु जैसे ही उसने इस दुबली-पतली, थिरकती आकृति की कमर में अपनी बांह डाली और यह आकृति उसके इतनी अधिक निकट हिलने-डुलने तथा इतनी अधिक निकट होकर मुस्कराने लगी, वैसे ही वह उसके सौन्दर्य की मदिरा का नशा अनुभव करने लगा। जब वह नताशा के साथ नाचना बन्द करके सांस लेने को रुका और खड़ा रहकर नाचनेवाले अन्य जोड़ों को देखने लगा तो उसने अपने को पहले से कहीं अधिक अनुप्राणित और जवान अनुभव किया।

## १७

प्रिंस अन्द्रेई के बाद बोरीस नताशा के पास आया और उसने उसे अपने साथ नाचने के लिये आमन्त्रित किया। उसके बाद वह एडजुटेंट आया जिसने बॉल आरम्भ किया था और फिर दूसरे जवान लोग आते गये और नताशा अपने साथ नाचने के फालतू इच्छुकों को सोन्या को देते हुए गालों पर लाली लिये तथा बहुत ही ख़ुश-ख़ुश लगातार नाचती रही। उसने न तो उन चीज़ों की ओर कोई ध्यान दिया और न कुछ देखा ही जिनमें इस बॉल में उपस्थित अन्य सभी लोग दिलचस्पी ले रहे थे। उसका तो न केवल इस बात की तरफ़ ही ध्यान नहीं गया कि सम्राट फ़्रांसीसी राजदूत के साथ बहुत देर तक बात करते रहे थे, कैसे उन्होंने एक महिला के साथ ख़ास तौर पर बहुत अच्छे ढंग से बातचीत की थी, कैसे फ़लां-फ़लां राजकुमार और फ़लां-फ़लां महानुभाव ने यह किया और यह कहा, कैसे एलेन की ख़ूब धूम रही और फ़लां व्यक्ति ने उसमें विशेष रुचि ली, बल्कि उसने तो सम्राट की तरफ़

भी नहीं देखा और सिर्फ़ इसी कारण उसे सम्राट के चले जाने का पता चला कि उनके जाने के बाद बॉल में ज़्यादा रंगीनी आ गयी। भोजन के पहले नाचे जानेवाले एक उल्लासपूर्ण कोटीलियोन नाच में प्रिंस अन्द्रेई फिर से नताशा के साथ नाचा। उसने नताशा को याद दिलाया कि कैसे ओतरादनोये जागीर की वीथि में उनकी पहली भेंट हुई थी, कैसे वह उस चांदनी रात में सो नहीं पा रही थी और कैसे अनचाहे ही उसने उसके शब्द सुन लिये थे। इस बात के याद दिलाये जाने पर नताशा शर्म से लाल हो गयी और अपनी सफ़ाई पेश करने की कोशिश करने लगी मानो उन शब्दों में, जिन्हें प्रिंस अन्द्रेई ने संयोग से सुन लिया था, कुछ लज्जाजनक हो।

ऊंची सोसाइटी के वातावरण के आदी हो गये सभी लोगों की भांति प्रिंस अन्द्रेई को भी सोसाइटी में ऐसे व्यक्ति से मिलकर ख़ुशी होती थी जिसपर सोसाइटी की आम छाप न अंकित हो। अपनी हैरानी, ख़ुशी और भीरुता, यहां तक कि फ़्रांसीसी भाषा की ग़लतियों के साथ नताशा ऐसी ही थी। वह बहुत ही मृदुलता और सावधानी से नताशा के साथ पेश आता था, बातचीत करता था। उसके पास बैठे हुए, बहुत ही मामूली और साधारण चीज़ों के बारे में बातें करते हुए प्रिंस अन्द्रेई उसकी आंखों और मुस्कान की ख़ुशी भरी चमक को, जिसका उनकी बातों से नहीं, बल्कि उसके आन्तरिक सुख से सम्बन्ध होता था, मुग्ध होकर देखता रहता था। जब नताशा को नाचने के लिये आमन्त्रित किया जाता और वह मुस्कराती हुई उठती तथा हॉल में नाचती तो उसका सहमा-सा सजीलापन प्रिंस अन्द्रेई का मन मोह लेता। कोटीलियोन नाच के मध्य में एक मुद्रा पूरी करने के बाद हांफती हुई नताशा अपनी जगह पर लौट रही थी। उसी वक़्त एक अन्य नृत्य-इच्छुक ने उसे आमन्त्रित कर लिया। वह थकी हुई थी, हांफ रही थी और सम्भवतः उसने इन्कार करना चाहा, किन्तु उसी क्षण ख़ुशी से उसके कंधे पर अपना हाथ रख दिया और प्रिंस अन्द्रेई की ओर देखकर मुस्करा दी।

"मुझे आपके पास बैठकर और थोड़ा आराम करके ख़ुशी होती, मैं थक गयी हूं। लेकिन आप देख रहे हैं कि वे कैसे मुझसे नाचने का अनुरोध करते रहते हैं और मैं इससे ख़ुश हूं, सुखी हूं, मैं सभी को प्यार करती हूं और हम दोनों यह सब कुछ समझते हैं," नताशा

की मुस्कान यही नहीं, इसके अलावा और बहुत कुछ भी कहती प्रतीत हो रही थी। उसका नृत्य-साथी जब उसे वापस छोड़ गया तो नताशा नृत्य-मुद्रा के लिये दो महिलायें चुनने को हॉल में से भागती चली गयी।

"अगर वह पहले अपनी चचेरी बहन के पास जायेगी और फिर दूसरी महिला के पास, तो मेरी पत्नी बनेगी," प्रिंस अन्द्रेई ने नताशा की ओर देखते हुए सर्वथा अप्रत्याशित ही अपने आपसे कहा। नताशा अपनी चचेरी बहन के पास ही पहले गयी।

"कैसी बेसिर-पैर की बातें कभी-कभी दिमाग़ में आती हैं!" प्रिंस अन्द्रेई ने सोचा। "लेकिन एक बात बिल्कुल पक्की है कि यह लड़की इतनी प्यारी है, दूसरी लड़कियों से इतनी भिन्न है कि यहां एक महीना भी नहीं नाच पायेगी और इसकी शादी हो जायेगी... यहां ऐसी लड़की एकदम दुर्लभ है," प्रिंस अन्द्रेई उस वक़्त सोच रहा था, जब नताशा चोली पर ज़रा नीचे खिसक आये गुलाब को ठीक करती हुई उसकी बग़ल में बैठ रही थी।

कोटीलियोन नाच के ख़त्म होने पर नीला फ़ॉक-कोट पहने बुज़ुर्ग काउंट नाचनेवालों के पास आये। उन्होंने प्रिंस अन्द्रेई को अपने यहां आने की दावत दी और बेटी से यह पूछा कि उसे मज़ा आ रहा है या नहीं? नताशा ने कोई जवाब नहीं दिया और ऐसे मुस्करा दी मानो भर्त्सना करते हुए कह रही हो: "आप ऐसा सवाल पूछ ही कैसे सकते हैं?"

"इतना मज़ा तो मुझे ज़िन्दगी में कभी भी नहीं आया!" उसने कहा और प्रिंस अन्द्रेई ने देखा कि कैसे जल्दी से उसकी पतली-पतली बांहें पिता का आलिंगन करने के लिये ऊपर उठीं तथा उसी क्षण नीचे चली गयीं। नताशा ने अपनी ज़िन्दगी में इतनी अधिक ख़ुशी कभी महसूस नहीं की थी। वह सुख के उस चरम-बिन्दु पर पहुंची हुई थी, जब व्यक्ति पूरी तरह से दयालु और नेक हो जाता है तथा बुराई, दुर्भाग्य और दुख के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करता।

प्येर ने पहली बार अपने को उस स्थिति से अपमानित अनुभव किया जो ऊंचे दरबारी हलक़ों में उसकी पत्नी को प्राप्त थी। वह उदास और खोया-खोया-सा था। उसके पूरे माथे पर एक चौड़ी रेखा

खिंची थी और वह खिड़की के क़रीब खड़ा हुआ अपने चश्मे में से देख रहा था, मगर किसी को भी नहीं देखता था।

भोजन के लिये जाती हुई नताशा उसके क़रीब से गुज़री।

प्येर का उदास, दुखी चेहरा देखकर उसे हैरानी हुई। वह उसके सामने रुक गयी। वह उसकी मदद करना चाहती थी, अपनी छलछलाती ख़ुशी का एक हिस्सा उसे देना चाहती थी।

"कितना मज़ा आ रहा है, काउंट," उसने कहा। "ठीक है न?"

प्येर अन्यमनस्क-सा मुस्करा दिया। सम्भवतः जो कुछ उससे कहा गया था, वह उसकी समझ में नहीं आया था।

"हां, मैं बहुत खुश हूं," उसने जवाब दिया।

"लोग भला कैसे किसी चीज़ से नाख़ुश हो सकते हैं," नताशा सोच रही थी। "ख़ास तौर पर बेज़ूख़ोव जैसा कोई भला आदमी?" नताशा को बॉल में उपस्थित सभी लोग समान रूप से दयालु, मधुर और बहुत अच्छे लग रहे थे और यह कि वे एक-दूसरे को प्यार करते हैं। कोई भी किसी दूसरे के दिल को ठेस नहीं लगा सकता था और इसलिये सभी को सुखी-सौभाग्यशाली होना चाहिये।

## १८

अगले दिन प्रिंस अन्द्रेई को पिछली रात के बॉल का ध्यान आया, मगर उसने बहुत देर तक उसके बारे में नहीं सोचा: "हां, बहुत ही बढ़िया बॉल था। और... नताशा रोस्तोवा बहुत प्यारी है। उसमें ताज़गी है, उसे पीटर्सबर्ग के लोगों से भिन्न बनानेवाली कोई ख़ास बात है।" उसने पिछली रात के बॉल के बारे में सिर्फ़ इतना ही सोचा और चाय पीकर अपना काम करने बैठ गया।

किन्तु या तो थकान या उनींदेपन के कारण काम में उसका मन नहीं लग रहा था और उसके किये कुछ भी नहीं हो रहा था। जैसा कि उसके साथ अक्सर होता था, वह ख़ुद ही अपने काम की आलोचना कर रहा था और जब उसे यह बताया गया कि कोई उससे मिलने आया है, तो उसे ख़ुशी हुई।

आगन्तुक बीत्स्की था। यह व्यक्ति विभिन्न आयोगों में काम करता था, पीटर्सबर्ग के सभी सामाजिक क्षेत्रों में आता-जाता था, नये विचारों और स्पेरान्स्की का बड़ा भगत, पीटर्सबर्ग का एक बड़ा उत्साही समाचारवाहक और ऐसे लोगों में से था जो फ़ैशन के मुताबिक़ चुनी जानेवाली पोशाक की भांति अपना मत चुनते हैं और जो इसीलिये उस मत के सबसे ज़ोरदार समर्थक प्रतीत होते हैं। वह टोप उतारते ही बड़े जोश से प्रिंस अन्द्रेई के कमरे में भाग गया और फ़ौरन अपनी बात कहने लगा। उसे कुछ ही देर पहले राज्य-परिषद की बैठक की कार्रवाई की तफ़सीलों का पता चला था जिसका उस सुबह को सम्राट ने उद्घाटन किया था। वह बड़े उत्साह से यही चर्चा करने लगा। सम्राट का भाषण असाधारण था। यह एक ऐसा भाषण था जो केवल संवैधानिक शासक ही देते हैं। "सम्राट ने साफ़-साफ़ ही यह कहा कि राज्य-परिषद और सीनेट को राजकीय प्रणाली में **सारभूत स्थान** प्राप्त है और मनमानी नहीं, बल्कि **ठोस उसूलों को** शासन का आधार होना चाहिये। सम्राट ने कहा कि वित्त-व्यवस्था का पुनर्गठन तथा बजट को लोगों के सामने पेश करना चाहिये," बीत्स्की ने ख़ास शब्दों पर ज़ोर देते और आंखों को महत्त्वपूर्ण ढंग से बेहद फैलाते हुए बताया।

"हां, आज की घटनायें एक युग के समान हैं, हमारे इतिहास में एक महान युग हैं," उसने निष्कर्ष निकाला।

प्रिंस अन्द्रेई ने राज्य-परिषद के उद्घाटन के बारे में यह सब सुना। वह इस उद्घाटन का इतनी बेसब्री से इन्तज़ार करता तथा बड़ा महत्त्व देता रहा था और उसे हैरानी हुई कि अब, जब यह घटना घट ही गयी थी तो इसने न केवल उसके दिल को छुआ ही नहीं था, बल्कि सर्वथा महत्त्वहीन प्रतीत हुई थी। उसने मूक व्यंग्य से बीत्स्की की यह उल्लासपूर्ण चर्चा सुनी। उसके दिमाग़ में बहुत ही सीधा-सादा विचार आया: "भला मुझे और बीत्स्की को, हमें उससे क्या लेना-देना है जो सम्राट ने राज्य-परिषद में कहा? क्या यह मुझे अधिक सुखी और बेहतर बना सकता है?"

इस साधारण-से विचार ने ही अचानक रूस में किये जा रहे सुधारों-परिवर्तनों में प्रिंस अन्द्रेई की पहलेवाली दिलचस्पी नष्ट कर दी। इस दिन प्रिंस अन्द्रेई को स्पेरान्स्की के यहां "मित्र-मण्डली" में, जैसा कि मेज़बान ने उसे निमन्त्रित करते हुए कहा था, दिन का

भोजन करना था। उस व्यक्ति के यहां, जिसका प्रिंस अन्द्रेई बहुत बड़ा प्रशंसक था, पारिवारिक तथा अन्तरंग मित्रों के दायरे में भोजन करने के ख़्याल में प्रिंस अन्द्रेई को पहले बहुत दिलचस्पी महसूस हुई थी, ख़ास तौर पर इसलिये कि उसने स्पेरान्स्की को अभी तक उसके घरेलू वातावरण में नहीं देखा था, मगर अब उसका वहां जाने को मन नहीं हो रहा था।

ऐसा होने के बावजूद प्रिंस अन्द्रेई ने नियत समय पर तावरीचेस्की बाग़ में स्पेरान्स्की के छोटे-से निजी घर में प्रवेश किया। असाधारण सफ़ाई के लिये उल्लेखनीय (जो मठ जैसी सफ़ाई की याद दिलाता था) इस छोटे-से घर के तख़्तियों के फ़र्शवाले भोजन-कक्ष में प्रिंस अन्द्रेई ने, जो कुछ देर से पहुंचा था, स्पेरान्स्की की पूरी "मित्र-मण्डली" को पांच बजे ही एकत्रित पाया। स्पेरान्स्की की छोटी-सी बेटी (जिसका बाप से मिलता-जुलता लम्बोतरा चेहरा था) और उसकी शिक्षिका के अतिरिक्त इस मण्डली में कोई भी महिला नहीं थी। मेहमान थे – जेरवे, माग्नीत्स्की और स्तोलीपिन।* प्रिंस अन्द्रेई को ड्योढ़ी में ही ऊंची-ऊंची आवाज़ें और गूंजता हुआ ज़ोरदार ठहाका सुनायी दिया था – वैसा ही ठहाका जैसा कि रंगमंच पर सुना जा सकता है। स्पेरान्स्की जैसी आवाज़ में कोई बहुत स्पष्ट रूप से हा-हा-हा करते हुए हंस रहा था। प्रिंस अन्द्रेई ने स्पेरान्स्की की हंसी कभी नहीं सुनी थी और राजपुरुष की इस गूंजती तथा पतली-सी आवाज़वाली हंसी से उसे अजीब क़िस्म की हैरानी हुई।

प्रिंस अन्द्रेई भोजन-कक्ष में दाख़िल हुआ। सभी लोग दो खिड़कियों के बीच उस मेज़ के पास खड़े थे जिसपर हलके-फुल्के जलपान की व्यवस्था की गयी थी। भूरा फ़ॉक-कोट पहने और छाती पर पदक लगाये तथा सम्भवतः उसी सफ़ेद जाकेट और ऊंची सफ़ेद टाई में, जिनमें उसने राज्य-परिषद की प्रसिद्ध बैठक में भाग लिया था, मेज़ के क़रीब खड़ा था और उसका चेहरा खिला हुआ था। मेहमान उसे घेरे हुए थे। स्पेरान्स्की को सम्बोधित करते हुए माग्नीत्स्की कोई दिल-

---

* अ० जेरवे – स्पेरान्स्की का रिश्तेदार। वह विदेश और वित्त मन्त्रालय में काम करता था। माग्नीत्स्की (१७७८–१८५५) – स्पेरान्स्की का एक विश्वास-पात्र। स्तोलीपिन (१७७८–१८२५) – लेखक, सिनेटर। – सं०

चस्प क़िस्सा सुना रहा था। माग्नीत्स्की जो कुछ कहने जा रहा था, स्पेरान्स्की यह सुनते हुए और उसकी कल्पना करते हुए पहले से ही हंस रहा था। प्रिंस अन्द्रेई ने जब कमरे में प्रवेश किया तो माग्नीत्स्की के शब्द फिर से हंसी में दबकर रह गये। पनीर का सैंडविच चबाते हुए स्तोलीपिन भारी आवाज़ में ज़ोर से हंसा, जेरवे ने हंसी की धीमी-सी सिसकारी छोड़ी और स्पेरान्स्की ने बारीक, ऊंची आवाज़ में ठहाका लगाया।

स्पेरान्स्की ने हंसते-हंसते ही प्रिंस अन्द्रेई की ओर अपना गोरा और नाज़ुक हाथ बढ़ा दिया।

"आपके आने से बहुत ख़ुशी हुई, प्रिंस," उसने कहा। "ज़रा रुकिये," उसने माग्नीत्स्की को सम्बोधित करते और उसके क़िस्से में बाधा डालते हुए कहा। "हमने यह तय किया है कि आज के भोजन के दौरान हम सिर्फ़ मन बहलायेंगे और काम-काज के बारे में एक शब्द भी नहीं कहेंगे।" और क़िस्सा सुनानेवाले की तरफ़ फिर से ध्यान देते हुए हंसने लगा।

प्रिंस अन्द्रेई आश्चर्य और निराशापूर्ण उदासी से उसकी हंसी सुन रहा था और हंस रहे स्पेरान्स्की की तरफ़ देख रहा था। प्रिंस अन्द्रेई को लगा कि यह स्पेरान्स्की नहीं, कोई दूसरा ही व्यक्ति है। स्पेरान्स्की में उसे पहले जो कुछ रहस्यपूर्ण और आकर्षक प्रतीत होता था, वह सब अचानक स्पष्ट तथा अनाकर्षक हो गया।

भोजन के दौरान बातचीत एक मिनट के लिये भी बन्द नहीं हुई और वह मानो हास्यपूर्ण क़िस्से-कहानियों का एक संकलन थी। माग्नी-त्स्की ने अभी अपना क़िस्सा ख़त्म भी नहीं किया था कि कोई दूसरा उसके क़िस्से से भी ज़्यादा मज़ाक़िया क़िस्सा सुनाने को उतावला हो रहा था। अधिकतर क़िस्से-कहानियों का ताल्लुक अगर दफ़्तरी दुनिया से नहीं तो इस दुनिया में काम करनेवाले लोगों से था। ऐसे प्रतीत होता था कि इस मित्र-मण्डली में दफ़्तरी लोगों की तुच्छता को ऐसे निर्णायक रूप से स्वीकार कर लिया गया था कि उनके प्रति ख़ुशमिज़ाजी के मज़ाक़िया रवैये के सिवा कोई दूसरा रवैया हो ही नहीं सकता था। स्पेरान्स्की ने यह बताया कि राज्य-परिषद की आज सुबह की बैठक में एक ऊंचे पदाधिकारी से जब यह पूछा गया कि उसकी क्या राय है तो उसने जवाब दिया कि उसकी भी वैसी ही राय है। जेरवे

ने विस्तारपूर्वक निरीक्षण से सम्बन्धित एक क़िस्सा सुनाया जिसकी ख़ास ख़ूबी यही थी कि वह दफ़्तरी बाबुओं की जड़बुद्धि को अच्छी मिसाल पेश करता था। स्तोलीपिन ने हकलाते हुए बातचीत में दख़ल दिया और पहले से विद्यमान व्यवस्था की बुराइयों की बड़े जोश से चर्चा करने लगा और इस तरह उसने बातचीत को संजीदा मोड़ देने का अन्देशा पैदा कर दिया। माग्नीत्स्की स्तोलीपिन के जोश का मज़ाक़ उड़ाने लगा। जेरवे ने झटपट कोई चुटकला सुना दिया और बातचीत में फिर से हंसी-ख़ुशी का पहलेवाला रंग आ गया।

स्पेरान्स्की को कठोर श्रम के बाद सम्भवतः मनोरंजन करना और मित्र-मण्डली में अपना मन बहलाना अच्छा लगता था और उसके सभी मेहमान उसकी इच्छा को समझते हुए उसका तथा अपना भी मन ख़ुश करने का भरसक प्रयास कर रहे थे। किन्तु प्रिंस अन्द्रेई को इनका यह आमोद-प्रमोद बोझल और निरानन्द प्रतीत हो रहा था। स्पेरा-न्स्की की तीखी आवाज़ उसे कर्णकटु लगती थी और उसके लगातार गूंजनेवाले ठहाके में बनावटीपन की झलक न जाने किसलिये प्रिंस अन्द्रेई की भावना को ठेस लगा रही थी। प्रिंस अन्द्रेई हंस नहीं रहा था और उसे शंका हो रही थी कि यह मित्र-मण्डली उसे रंग में भंग डालनेवाला अनुभव करेगी। किन्तु कोई भी इस चीज़ की तरफ़ ध्यान नहीं दे रहा था कि उसका रंग-ढंग यहां व्याप्त मनःस्थिति के अनुरूप नहीं था। ऐसे लगता था कि सभी ख़ूब आनन्द-विभोर हो रहे हैं।

प्रिंस अन्द्रेई ने कई बार इनकी बातचीत में हिस्सा लेना चाहा। किन्तु हर बार ही उसके शब्द ऐसे अलग फेंक दिये गये जैसे पानी कार्क को बाहर फेंक देता है और वह इनके साथ मिलकर हंसी-मज़ाक़ नहीं कर पाया।

इन लोगों की बातों में कुछ भी बुरा या अटपटा नहीं था। सभी कुछ में बड़ी सूझ-बूझ थी और ये बातें हास्यपूर्ण भी हो सकती थीं। किन्तु इनमें न केवल वही चटपटापन नहीं था जिसे हंसी-मज़ाक़ का सार कहा जाता है, बल्कि उन्हें इसका ज्ञान तक नहीं था कि ऐसा कुछ होता भी है।

भोजन के बाद स्पेरान्स्की की बेटी और उसकी शिक्षिका उठकर खड़ी हो गयीं। स्पेरान्स्की ने अपने गोरे हाथ से बेटी को सहलाया और उसे चूमा। प्रिंस अन्द्रेई को उसका ऐसा करना भी कृत्रिम लगा।

मर्द लोग पोर्टवाइन पीते हुए अंग्रेज़ी ढंग से मेज़ पर बैठे रहे। स्पेन में नेपोलियन के कार्य-कलापों की चर्चा के दौरान, जिनका सभी ने अनुमोदन किया था, प्रिंस अन्द्रेई इनके मत का खण्डन करने लगा। स्पेरान्स्की मुस्कराया और सम्भवतः इस इरादे से कि मज़ाक़िया बातचीत का वातावरण न बिगड़ जाये, उसने एक दिलचस्प क़िस्सा सुना दिया जिसका स्पेन में नेपोलियन की गति-विधियों से कोई सम्बन्ध नहीं था। कुछ क्षण तक सभी ख़ामोश रहे।

थोड़ी देर तक मेज़ पर बैठे रहने के बाद स्पेरान्स्की ने शराब की बोतल बन्द की और यह कहकर कि "अच्छी शराब आजकल महंगी है" बोतल नौकर को पकड़ा दी और मेज़ से उठ गया। सभी उठकर खड़े हो गये और इसी तरह ऊंचे-ऊंचे बातें करते हुए ड्राइंगरूम में चले गये। स्पेरान्स्की को सन्देशवाहक द्वारा लाये गये दो लिफ़ाफ़े दिये गये। वह इन्हें लेकर अपने कमरे में चला गया। उसके जाते ही सामान्य हास-परिहास बन्द हो गया और मेहमान धीरे-धीरे तथा गम्भीरता से एक-दूसरे से बातें करने लगे।

"तो अब कविता-पाठ होगा!" स्पेरान्स्की ने अपने कमरे से बाहर आते हुए कहा। "अद्भुत प्रतिभा का धनी है!" उसने प्रिंस अन्द्रेई से कहा। माग्नीत्स्की इसी वक़्त एक विशेष मुद्रा बनाकर खड़ा हो गया और पीटर्सबर्ग के कुछ जाने-माने लोगों के बारे में फ़्रांसीसी में स्वरचित मज़ाक़िया कवितायें सुनाने लगा। प्रशंसकों ने उसे दाद देते हुए कई बार बीच में रोका। कविता-पाठ समाप्त होने पर प्रिंस अन्द्रेई विदा लेने के लिये स्पेरान्स्की के पास गया।

"इतनी जल्दी आप कहां चल दिये?" स्पेरान्स्की ने पूछा।

"मैंने एक पार्टी में जाने का वादा कर रखा है..."

ये दोनों ख़ामोश हो गये। प्रिंस अन्द्रेई ने निकटना से स्पेरान्स्की की दर्पण जैसी अभेद्य आंखों में झांका और इस ख़्याल से उसे हंसी आई कि कैसे उसने स्पेरान्स्की और उसके साथ सम्बन्धित अपनी गति-विधियों से किसी परिणाम की आशा की थी और कैसे उसने उसे महत्त्वपूर्ण मान लिया था जो स्पेरान्स्की कर रहा था। स्पेरान्स्की के यहां से रवाना होने के काफ़ी देर बाद तक उसकी यह नपी-तुली और ऊंची हंसी उसके कानों में गूंजती रही।

घर लौटने पर प्रिंस अन्द्रेई पीटर्सबर्ग में बिताये गये इन चार महीनों के जीवन पर ऐसे विचार करने लगा मानो यह कुछ नया हो। उसे अपनी दौड़-धूप, लोगों से मेल-जोल बढ़ाने के प्रयासों, सैनिक नियमों मे सुधारों की अपनी परियोजना का स्मरण हो आया जिसे ले तो लिया गया था, मगर जिसकी केवल इसलिये उपेक्षा करने की कोशिश की जा रही थी कि कोई दूसरी, बहुत बुरी परियोजना पहले से तैयार और सम्राट के सामने पेश की जा चुकी थी। उसे उस कमेटी की बैठकों की याद हो आयी जिसका बेर्ग भी सदस्य था। उसे याद आया कि कैसे इन बैठकों में इनके आकार और कार्य-विधि के बारे में बड़े विस्तार और बहुत देर तक विचार-विमर्श होता था तथा कैसे असली महत्त्व की चीज़ों की बड़े यत्न और जल्दी से अवहेलना कर दी जाती थी। उसे वैधानिक-सुधार से सम्बन्धित अपने काम और इस बात का ध्यान आया कि कैसे उसने बड़ी मेहनत से रोम और फ़्रांस की विधि-संहिताओं की धाराओं का रूसी में अनुवाद किया था और उसे अपने पर शर्म आई। इसके बाद उसकी कल्पना में बोगुचारोवो जागीर सजीव हो उठी, उसे गांव में अपनी गति-विधियों, र्‍याज़ान की यात्रा, किसान और द्रोन नाम के मुखिया की याद आयी और मन ही मन व्यक्तिगत अधिकारों के अनुच्छेद को, जिसे उसने पैराग्राफ़ों में बांट दिया था, इनपर लागू करके वह इस बात से आश्चर्यचकित रह गया कि कैसे वह व्यर्थ के कामों में इतना समय नष्ट करता रहा था।

## १९

अगले दिन प्रिंस अन्द्रेई कुछ ऐसे घरों में लोगों से मिलने-जुलने गया, जहां वह अभी तक नहीं गया था। इन लोगों में रोस्तोव-परिवारवाले भी शामिल थे जिनके साथ पिछले बॉल के वक़्त फिर से जान-पहचान हो गयी थी। शिष्टता के नियमों के अतिरिक्त, जिनके अनुसार उसे रोस्तोवों से मिलना ही चाहिये था, प्रिंस अन्द्रेई उस ख़ास, उत्साह से उमगती लड़की को उसके घरेलू वातावरण में देखना चाहता था जिसने उसके मन पर बड़ी मधुर छाप छोड़ी थी।

सबसे पहले प्रिंस अन्द्रेई के सामने आनेवालों में नताशा भी थी। वह हर दिन का नीला फ़ॉक पहने थी जिसमें वह प्रिंस अन्द्रेई को बॉल की पोशाक की तुलना में भी ज़्यादा प्यारी लगी। नताशा और पूरे रोस्तोव-परिवार ने एक पुराने मित्र के रूप में बड़ी सहजता और ख़ुशी से उसका स्वागत-सत्कार किया। सारा परिवार ही, जिसकी प्रिंस अन्द्रेई ने पहले कड़ी टीका-टिप्पणी की थी, अब उसे बहुत ही अच्छे, सीधे-सादे और दयालु लोगों का परिवार प्रतीत हुआ। बुज़ुर्ग काउंट की मेहमाननेबाज़ी और ख़ुशमिज़ाजी, जो पीटर्सबर्ग में ख़ास तौर पर मधुर और चकित करनेवाली लगती थीं, कुछ ऐसी थीं कि प्रिंस अन्द्रेई दिन का खाना यहीं खाने से इन्कार नहीं कर सका। "हां, ये दयालु तथा बहुत अच्छे लोग हैं," बोल्कोन्स्की सोच रहा था, "और स्पष्ट है कि इन्हें इस बात की रत्ती भर भी चेतना नहीं है कि नताशा के रूप में इनके पास कैसा बढ़िया हीरा है। किन्तु ये भले लोग इस चीज़ के लिये बहुत अच्छी पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हैं कि यह अत्यधिक काव्यमयी, जीवन के उत्साह से ओत-प्रोत और प्यारी लड़की अपने पूरे अलग रूप में उभरकर सामने आ सके।

प्रिंस अन्द्रेई यह अनुभव करता था कि नताशा के अन्तर में उसके लिये अजनबी, कोई ख़ास और ऐसी ख़ुशियों से भरपूर एक ऐसी दुनिया विद्यमान है जिससे वह सर्वथा अनजान है। वही अजनबी दुनिया जिसने तब, ओतरादनोये गांव की वीथी और चांदनी रात में खिड़की के पास ही इसमें इतना अधिक आकर्षण पैदा कर दिया था। यह दुनिया अब उसके दिल में आकर्षण पैदा नहीं करती थी, उसके लिये अजनबी नहीं रही थी। वह ख़ुद अब इस दुनिया में आ गया था और ख़ुद अपने लिये एक नयी ख़ुशी महसूस करने लगा था।

भोजन के बाद प्रिंस अन्द्रेई के अनुरोध पर नताशा क्लावीकॉर्ड बजाते हुए गाने लगी। प्रिंस अन्द्रेई खिड़की के पास खड़ा हुआ महि-लाओं के साथ बातचीत कर रहा था और नताशा का गाना सुन रहा था। एक वाक्य के मध्य में प्रिंस अन्द्रेई चुप हो गया और उसने अचानक यह महसूस किया कि उसका गला आंसुओं से रुंधा जा रहा है। उसके साथ कुछ ऐसा भी हो सकता है, उसने यह कभी सम्भव नहीं माना था। उसने गा रही नताशा की ओर देखा और उसे अपनी आत्मा में किसी नयी तथा सुखद चीज़ की अनुभूति हुई। उसने अपने को ख़ुश

और साथ ही उदास भी महसूस किया। उसके लिये रोने का बिल्कुल कोई कारण नहीं था, फिर भी वह रोने को तैयार था। किस चीज़ के लिये? अपने अतीत के प्यार के लिये? टुइयां-सी प्रिंसेस के लिये? अपनी निराशाओं के लिये? अपनी भावी आशाओं के लिये?.. हां, और नहीं। मुख्यतः तो वह इसलिये रोना चाहता था कि सहसा उसे उस अन्तर की सजीव चेतना हुई थी जो वह अपने भीतर विद्यमान असीम रूप से महान तथा अपार और अपने तथा नताशा के भी सीमित, दैहिक अस्तित्व में अनुभव करता था। इस अन्तर ने नताशा के गाने के वक़्त उसे व्यथित भी किया और प्रसन्नता भी प्रदान की।

गाना समाप्त करते ही नताशा उसके पास आई और उससे पूछा कि उसे उसकी आवाज़ कैसी लगी। उसने यह पूछा और पूछने के फ़ौरन बाद इस चीज़ को समझते हुए कि यह पूछने की ज़रूरत नहीं थी, झेंप गयी। प्रिंस अन्द्रेई उसकी ओर देखते हुए मुस्कराया और बोला कि उसे उसका गाना भी उसी तरह से पसन्द है, जैसे अन्य सभी कुछ जो वह करती है।

प्रिंस अन्द्रेई रात को काफ़ी देर से रोस्तोवों के यहां से घर लौटा। वह आदत के मुताबिक़ बिस्तर पर चला गया, मगर जल्द ही उसने यह अनुभव किया कि सो नहीं सकता। वह कभी तो मोमबत्ती जलाकर बिस्तर पर बैठ जाता, कभी उठकर खड़ा हो जाता और कभी फिर से लेट जाता तथा इस अनिद्रा से ज़रा भी परेशानी न महसूस करता। वह अपनी आत्मा में ऐसी ख़ुशी और ताज़गी अनुभव कर रहा था मानो किसी उमस भरे कमरे से खुली हवा में बाहर आ गया हो। यह बात तो उसके दिमाग़ में ही नहीं आ रही थी कि उसे नताशा से प्रेम हो गया है। वह उसके बारे में सोचता नहीं था। अपने मन में केवल उसकी कल्पना ही करता था और परिणामस्वरूप उसे अपना सारा जीवन ही एक नये प्रकाश में दिखाई देता था। "किसलिये मैं डरता हूं, किसलिये इस तंग, बन्द घेरे में छटपटाता हूं, जबकि जीवन, अपनी सारी ख़ुशियों के साथ जीवन, मेरे सामने खुला पड़ा है?" उसने अपने आपसे कहा। और लम्बे अरसे के बाद उसने पहली बार भविष्य की सुखद योजनायें बनानी शुरू कीं। उसने मन ही मन यह तय कर लिया कि उसे बेटे की शिक्षा-दीक्षा की ओर ध्यान देना चाहिये, उसके लिये शिक्षक ढूंढ़कर उसे उसके हाथों में सौंपना चाहिये,

इसके बाद नौकरी से इस्तीफ़ा देकर विदेश जाना चाहिये – इंगलैंड, स्विटज़रलैंड और इटली को देखना चाहिये। "जब तक मैं अपने में इतनी शक्ति और जवानी अनुभव करता हूं, मुझे अपनी आज़ादी का अधिकतम लाभ उठाना चाहिये," उसने अपने आपसे कहा। "प्येर का यह कहना बिल्कुल ठीक था कि सुखी होने के लिये सुख की सम्भावना में विश्वास करना चाहिये और मैं अब उसमें विश्वास करता हूं। मुर्दे मुर्दों की फ़िक्र करते रहें, लेकिन मैं जब तक ज़िन्दा हूं, मुझे जीना और सुखी होना चाहिये," वह सोच रहा था।

## २०

एक सुबह को कर्नल अदोल्फ़ बेर्ग लक़दक़ और बिल्कुल नयी वर्दी पहने तथा सम्राट अलेक्सान्द्र पाव्लोविच के ढंग से कनपटियों पर अपने बाल संवारे हुए प्येर के पास आया। प्येर उसे वैसे ही जानता था जैसे कि मास्को और पीटर्सबर्ग में अन्य सभी को जानता था।

"मैं अभी-अभी काउंटेस यानी आपकी पत्नी के यहां से आ रहा हूं और मुझे इस बात का बहुत अफ़सोस है कि उन्होंने मेरी प्रार्थना को स्वीकार नहीं किया। काउंट, मैं उम्मीद करता हूं, कि आपके यहां मेरी क़िस्मत मेरा ज़्यादा साथ देगी," उसने मुस्कराते हुए कहा।

"आप क्या चाहते हैं, कर्नल? मैं आपकी खिदमत में हाज़िर हूं।"

"काउंट, अपने नये फ़्लैट में मैंने अब अच्छी तरह से अपनी घर-गिरस्ती जमा ली है," बेर्ग ने सूचित किया। वह सम्भवतः अपने मन में यह मानता था कि यह समाचार सुनकर काउंट को ज़रूर खुशी होगी। "इसलिये अपनी और अपनी पत्नी की जान-पहचान के कुछ लोगों की एक छोटी-सी पार्टी करने की सोच रहा हूं। (वह और अधिक मधुरता से मुस्कराया।) मैं काउंटेस और आपसे अनुरोध करना चाहता था कि आप हमारे यहां चाय और... डिनर के लिये आकर हमें सम्मानित करें।"

सिर्फ़ काउंटेस एलेन ही किन्हीं बेर्ग-दम्पति की संगत को अपनी शान के ख़िलाफ़ मानते हुए ऐसे निमन्त्रण से इन्कार करने की क्रूरता

दिखा सकती थी। बेर्ग ने इतने अच्छे ढंग से यह स्पष्ट किया कि क्यों वह अपने यहां थोड़े-से, किन्तु अच्छे लोगों को आमन्त्रित करना चाहता है, क्यों उसे इससे ख़ुशी होगी, क्यों उसे जुए और दूसरे बुरे कामों पर पैसा बरबाद करना पसन्द नहीं, किन्तु अच्छे लोगों की संगत के लिये कुछ ख़र्च करने को तैयार है कि प्येर इन्कार नहीं कर सका और उसने उसके यहां जाने का वचन दे दिया।

"लेकिन मैं यह अनुरोध करने की अनुमति चाहता हूं कि आने में बहुत देर नहीं कीजिये, काउंट। यह प्रार्थना करने की जुर्रत करता हूं कि आठ बजने में कोई दस मिनट बाक़ी रह जाने पर आ जाइये। ताश की कुछ बाज़ियां खेलेंगे। हमारे जनरल भी आयेंगे। वह मुझपर बहुत मेहरबान हैं। कुछ खाना-पीना हो जायेगा। तो पधारने की कृपा कीजिये।"

हमेशा देर से पहुंचने की अपनी आदत के विपरीत, आठ बजने में दस मिनट रह जाने के बजाय प्येर पौने आठ बजे ही बेर्ग-दम्पति के घर पहुंच गया।

बेर्ग-दम्पति पार्टी के लिये सारा ज़रूरी प्रबन्ध करने के बाद मेहमानों के स्वागत के लिये तैयार हो गये थे।

बेर्ग और उसकी पत्नी मूर्त्तियों, चित्रों तथा नये फ़र्नीचर से सजे नये, साफ़-सुथरे और रोशन कमरे में बैठे थे। नयी वर्दी के बटन बन्द किये पत्नी की बग़ल में बैठा हुआ बेर्ग उसे यह समझा रहा था कि हमेशा अपने से ऊंचे दर्जे के लोगों से जान-पहचान करना सम्भव है और ऐसा ही करना चाहिये, क्योंकि तभी जान-पहचान से ख़ुशी हासिल होती है।

"आदमी उनकी किसी चीज़ की नक़ल कर सकता है, उनसे किसी बात का अनुरोध कर सकता है। तुम देखो तो कि पहले पद से मेरी ज़िन्दगी कैसे आगे बढ़ी है," (बेर्ग अपनी ज़िन्दगी का सालों में नहीं, बल्कि पदोन्नतियों में हिसाब लगाता था)। "मेरे साथी आज भी जहां के तहां हैं, जबकि मैं पहली जगह ख़ाली होते ही रेजिमेंट-कमांडर बन जाऊंगा। मुझे आपका पति होने का सौभाग्य प्राप्त है," (वह खड़ा हो गया और उसने वेरा का हाथ चूमा, किन्तु उसकी तरफ़ बढ़ते हुए उसने रास्ते में क़ालीन का वह सिरा भी ठीक कर दिया जो मुड़ गया था)। "और मैंने यह सब कैसे हासिल किया? मुख्यतः

जान-पहचान के अच्छे लोग चुनने की अपनी क्षमता से। कहना न होगा कि आदमी को नेक और तौर-तरीक़े का होना चाहिये।"

बेर्ग दुर्बल नारी की तुलना में अपनी श्रेष्ठता की चेतना से मुस्करा दिया और यह सोचकर चुप हो गया कि उसकी यह प्यारी पत्नी आख़िर तो दुर्बल नारी है जो ein Mann zu sein—* मर्द होने की शान जैसी चीज़ के असली महत्त्व को नहीं समझ सकती। इसी समय वेरा भी अपने नेक तथा अच्छे पति की तुलना में अपनी श्रेष्ठता की चेतना से मुस्करा दी कि अन्य सभी पुरुषों की भांति ( वेरा की धारणा के अनुसार ) उसका पति भी जीवन को ग़लत ढंग से समझता है। अपनी पत्नी को कसौटी बनाते हुए बेर्ग सभी नारियों को दुर्बल और बुद्धू मानता था। वेरा भी केवल अपने पति के आधार पर, और इसी से सामान्य निष्कर्ष निकालते हुए यह मानती थी कि सभी मर्द सिर्फ़ अपने को ही समझदार मानते हैं, जबकि वास्तव में कुछ भी नहीं समझते, और घमण्डी तथा स्वार्थी होते हैं।

बेर्ग खड़ा हुआ और अपनी पत्नी का सावधानी से आलिंगन करते हुए, ताकि उसके लेसवाले दुपट्टे में सिलवटें न पड़ जायें जिसके लिये उसने काफ़ी क़ीमत अदा की थी, उसके होंठों को मध्य में चूमा।

"मैं इतना ज़रूर चाहता हूं कि हमारे यहां बच्चे जल्दी से न हो जायें," उसने विचारों के आपसी सम्बन्ध की चेतना के बिना कहा।

"हां," वेरा ने उत्तर दिया, "मैं तो बिल्कुल यह नहीं चाहती हूं। हमें सोसाइटी के लिये जीना चाहिये।"

"प्रिंसेस युसूपोवा के कंधों पर भी एकदम ऐसा ही दुपट्टा था," बेर्ग ने सन्तोष और ख़ुशी से मुस्कराते तथा दुपट्टे की ओर संकेत करते हुए कहा।

इसी समय काउंट बेज़ूख़ोव के आने की घोषणा की गयी। पति-पत्नी ने आत्म-सन्तोष से मुस्कराते हुए एक-दूसरे की तरफ़ देखा और दोनों ने ही इस अतिथि के आगमन का अपने को श्रेय दिया।

"तो ऐसा सुफल मिलता है जान-पहचान करने की क्षमता का," बेर्ग ने सोचा, "ऐसा अच्छा नतीजा सामने आता है दूसरों के साथ ढंग से पेश आने का!"

---

* मर्द होना। ( जर्मन )

"लेकिन तुम इतनी मेहरबानी करना कि जब मैं मेहमानों से बात-चीत करूं," वेरा ने कहा, "तो तुम मुझे टोकना नहीं, क्योंकि मैं जानती हूं कि किस चीज़ में उनकी दिलचस्पी हो सकती है और किन-किन लोगों से क्या कहना चाहिये।"

बेर्ग भी मुस्कराया।

"मगर कभी तो मर्दों के साथ मर्दोंवाली बातचीत भी होनी चाहिये," उसने कहा।

प्येर का नये ड्राइंगरूम में स्वागत किया गया जहां क्रम, सफ़ाई और सुव्यवस्था को कुछ हद तक गड़बड़ाये बिना कहीं भी बैठना सम्भव नही था। इसलिये यह समझना बिल्कुल सम्भव और स्वाभाविक था कि बेर्ग बड़ी उदारता से प्यारे अतिथि के लिये आरामकुर्सियों या सोफ़ों का क्रम बिगाड़ने को तैयार हो गया और सम्भवतः दुखी होते तथा यह न समझ पाते हुए कि क्या करे, उसने स्वयं अतिथि को ही यह सवाल को हल करने का मौक़ा दे दिया। प्येर ने एक कुर्सी अपनी तरफ़ खींचकर इस क्रमबद्धता को गड़बड़ कर दिया और बेर्ग तथा वेरा ने एक-दूसरे को टोकते और मेहमान के लिये बातचीत को दिलचस्प बनाने की कोशिश करते हुए पार्टी शुरू कर दी।

वेरा मन ही मन यह तय करके कि प्येर को फ़्रांसीसी दूतावास की बातों में दिलचस्पी होनी चाहिये, फ़ौरन इसी विषय की चर्चा करने लगी। बेर्ग ने यह तय करते हुए कि कोई मर्दाना बात भी होनी चाहिये, पत्नी को टोक दिया और आस्ट्रिया के साथ जंग के मसले का ज़िक्र करने लगा तथा अनजाने ही सामान्य बातचीत से उन प्रस्तावों के बारे में, जो इस जंग में हिस्सा लेने के लिये उसके सामने पेश किये गये थे, अपने व्यक्तिगत विचार प्रकट करने और वे कारण बताने लगा जिनके आधार पर उसने उन्हें ठुकरा दिया था। इस चीज़ के बावजूद कि बातचीत ढंग से नहीं चल रही थी और पति द्वारा मर्दाना तत्त्व को बीच में घसीट लाना वेरा को अच्छा नहीं लगा था, दोनों ख़ुश थे कि केवल एक अतिथि के होने पर भी उनकी **पार्टी** की अच्छी शुरुआत हुई थी और वह इस तरह की किसी भी दूसरी पार्टी से एकदम मिलती-जुलती थी, इसमें वैसी ही बातचीत हो रही थी, वैसा ही चायपान था और उसी तरह से मोमबत्तियां जल रही थीं।

कुछ देर बाद बेर्ग का पुराना साथी बोरीस आ गया। बेर्ग और

वेरा के साथ उसके व्यवहार में कुछ श्रेष्ठता और संरक्षण की झलक थी। बोरीस के बाद पत्नी के साथ कर्नल, फिर ख़ुद जनरल और रोस्तोव-परिवारवाले आ गये तथा यह पार्टी पूरी तरह से दूसरी पार्टियों जैसी बन गयी। ड्राइंगरूम में मेहमानों को इधर-उधर आते-जाते देखकर, उनके असम्बद्ध वाक्यों की ध्वनि और पोशाकों की सरसराहट सुनते तथा हर तरफ़ से अभिवादन के शब्द सुनते हुए बेर्ग-दम्पति अपनी हर्षपूर्ण मुस्कान छिपाने में असमर्थ थे। सब कुछ दूसरों के घर होनेवाली पार्टियों जैसा था। जनरल तो ख़ास तौर पर ऐसा ही व्यवहार कर रहा था। उसने फ़्लैट की तारीफ़ की, बेर्ग का कंधा थपथपाया और पिता-तुल्य अधिकार से ताश के बोस्टन नामक खेल के लिये अपनी निगरानी में मेज़ लगवायी। अपने बाद काउंट रोस्तोव को सबसे अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति मानते हुए जनरल उनके निकट बैठ गया। बुज़ुर्ग बुज़ुर्गों और जवान जवानों के नज़दीक जमा हो गये तथा गृह-स्वामिनी चाय की मेज़ के पास बैठ गयी जहां चांदी की तश्तरी में वैसे ही बिस्कुट रखे थे, जैसे पानिन-परिवार की पार्टी में थे। सब कुछ बिल्कुल दूसरों की पार्टियों जैसा ही था।

## २१

एक प्रतिष्ठित अतिथि के नाते प्येर को 'बोस्टन' खेल के समय काउंट रोस्तोव, जनरल और कर्नल के साथ खेलने के लिये बैठना पड़ा। वह जहां बैठा था, वहां से नताशा उसके बिल्कुल सामने बैठी नज़र आ रही थी और बॉल के दिन के बाद से उसमें जो परिवर्तन हुआ था, उससे वह आश्चर्यचकित रह गया। नताशा गुमसुम थी और न केवल उतनी प्यारी ही नहीं लग रही थी, जितनी बॉल के वक़्त थी, बल्कि यदि उसके चेहरे पर विनम्रता और उदासीनता का भाव न होता तो असुन्दर भी लगती।

"इसे क्या हुआ है?" नताशा को ध्यान से देखते हुए प्येर ने सोचा। वह वेरा के पास चाय की मेज़ के क़रीब बैठी थी और अपने नज़दीक आ बैठनेवाले बोरीस की तरफ़ देखे बिना मन मारकर उसके

साथ बातचीत कर रही थी। एक ही रंग के सारे पत्ते चलने और पांच चालों में सफलता प्राप्त करने पर, जिससे उसके खेल के साथी को प्रसन्नता हुई, उसे अभिवादन के शब्द और पत्ते उठाने के वक़्त कमरे में किसी के आने की आवाज़ सुनायी दी और उसने फिर से नताशा की तरफ़ देखा।

"क्या हो गया है इसे?" उसने पहले से भी ज़्यादा हैरान होते हुए अपने आपसे पूछा।

प्यार और अपनत्व की झलक लिये प्रिंस अन्द्रेई नताशा के सामने खडा था और उससे कुछ कह रहा था। नताशा ने अपना सिर ऊपर उठा रखा था, उसके गालों पर लाली दौड़ गयी थी और सम्भवतः वह तेज़ हो रही सांसों को वश में करते हुए उसकी ओर देख रही थी। और पहले बुझी हुई किसी आन्तरिक अग्नि का प्रकाश फिर से उसके भीतर चमक उठा था। उसका मानो कायाकल्प हो गया था। असुन्दर लगने के बजाय वह फिर से वैसी ही हो गयी, जैसी कि बॉल के वक़्त थी।

प्रिंस अन्द्रेई प्येर के पास आया और प्येर को अपने मित्र के चेहरे पर भी एक नया और जवानी का भाव दिखाई दिया।

खेल के दौरान प्येर ने कई बार अपनी जगह बदली। वह कभी तो नताशा के सामने होता और कभी उसकी पीठ नताशा की तरफ़ होती और खेल के छः दौरों (अठारह बाज़ियों) में वह लगातार नताशा और अपने मित्र प्रिंस अन्द्रेई को ग़ौर से देखता रहा।

"इनके बीच कोई बहुत महत्त्वपूर्ण चीज़ हो रही है," प्येर ने सोचा और प्रसन्नता तथा साथ ही कटुता की भावना ने उसे विह्वल होने और खेल को भूलने के लिये विवश कर दिया।

खेल के छः दौर पूरे होने पर जनरल यह कहते हुए उठकर खड़ा हो गया कि इस तरह से खेलना सम्भव नहीं और प्येर को खेल से मुक्त कर दिया गया। नताशा सोन्या और बोरीस के साथ कोई बात कर रही थी। होंठों पर रहस्यपूर्ण-सी मुस्कान लिये हुए वेरा प्रिंस अन्द्रेई से किसी विषय की चर्चा कर रही थी। प्येर अपने दोस्त के पास गया और यह पूछकर कि उनके बीच कोई राज़ की बात तो नहीं हो रही, उनके पास ही बैठ गया। नताशा में प्रिंस अन्द्रेई की दिल-चस्पी को ध्यान में रखते हुए वेरा को लगा कि पार्टी में, एक असली

पार्टी में यह बिल्कुल ज़रूरी है कि प्रेम-प्यार की भावना की तरफ़ हल्के-से इशारे किये जायें। इसलिये उस वक़्त, जब प्रिंस अन्द्रेई अकेला था, उसने उसके साथ भावनाओं की सामान्य और अपनी बहन नताशा की विशेष रूप से चर्चा शुरू कर दी। वह अनुभव कर रही थी कि ऐसे बुद्धिमान अतिथि (जैसा कि वह प्रिंस अन्द्रेई को मानती थी) के साथ बात करते हुए उसे अपनी पूरी व्यवहारकुशलता से काम लेना होगा।

प्येर जब इनके पास आया तो उसने देखा कि वेरा बड़ी आत्म-तुष्टि अनुभव करती हुई अपनी बातों की तरंग में बही जा रही है और प्रिंस अन्द्रेई (जैसा कि उसके साथ बहुत कम ही होता था), कुछ घबराया-सा प्रतीत हो रहा है।

"आपका क्या ख़्याल है?" वेरा रहस्यमयी मुस्कान के साथ कह रही थी। "प्रिंस, आपका, जो लोगों को आर-पार देख लेते हैं और एक ही नज़र में आदमी के चरित्र को समझ जानते हैं, नताशा के बारे में आपका क्या ख़्याल है? क्या वह अपनी प्रेम-भावनाओं के मामले में स्थायी रह सकती है? दूसरी औरतों की तरह (वेरा का अपने से अभिप्राय था) एक बार किसी को प्यार करके ज़िन्दगी भर उसके प्रति निष्ठा बनाये रह सकती है? मैं तो इसे ही सच्चा प्यार मानती हूं। आपका क्या ख़्याल है, प्रिंस?"

"आपकी बहन को मैं इतनी अच्छी तरह से नहीं जानता," प्रिंस अन्द्रेई ने उपहासात्मक मुस्कान के साथ, जिसकी ओट में उसने अपनी घबराहट को छिपाना चाहा, उत्तर दिया, "कि ऐसे नाज़ुक सवाल को हल कर सकूं। इसके अलावा मैंने यह भी देखा है कि औरत जितनी कम अच्छी लगती है, उतनी ही ज़्यादा वफ़ादार बनी रहती है," उसने इतना और कह दिया और इसी वक़्त इन दोनों के नज़दीक आनेवाले अपने दोस्त प्येर की तरफ़ देखा।

"हां, यह सच है, प्रिंस। हमारे ज़माने में," वेरा कहती गयी (सीमित सूझ-बूझ रखनेवाले लोग यह समझते हुए हमारे ज़माने का उल्लेख करना पसन्द करते हैं कि वे हमारे ज़माने के लक्षणों को समझ गये हैं और उन्होंने उसका मूल्यांकन कर लिया है और यह कि मान-वीय प्रकृति समय के साथ बदलती रहती है), "हमारे ज़माने में लड़की को इतनी अधिक आज़ादी हासिल है कि लोगों के उसपर फ़िदा होने की ख़ुशी अक्सर उसमें सच्ची प्रेम-भावना का अन्त कर देती है।

और यह मानना होगा कि नताशा पर इस चीज़ का बहुत जल्द ही असर पड़ता है।" बातचीत में फिर से नताशा की ओर लौटने पर प्रिंस अन्द्रेई के माथे पर अप्रसन्नता से बल पड़ गये। उसने उठना चाहा, किन्तु वेरा ने और भी अधिक रहस्यमयी मुस्कान के साथ अपनी बात जारी रखी।

"मेरे ख़्याल में तो किसी दूसरी लड़की के पीछे तो कभी इतने लोग नहीं भागे होंगे," वेरा ने कहा, "लेकिन उसे अभी कुछ ही वक़्त पहले तक कभी कोई पसन्द नहीं आया। आप तो जानते ही हैं, काउंट," उसने प्येर को सम्बोधित किया, "यहां तक कि हमारा प्यारा, चचेरा भाई बोरीस भी, जो (यह बात हमारे बीच ही रहनी चाहिये) प्रेम-प्रदेश में बहुत दूर तक चला गया था..." उसने उन दिनों प्यार के बारे में बोलने का अन्दाज़ अपनाते हुए कहा।

प्रिंस अन्द्रेई नाक-भौंह सिकोड़े हुए ख़ामोश रहा।

"आपकी तो बोरीस के साथ दोस्ती है न?" वेरा कह उठी।

"हां, मैं उसे जानता हूं..."

"उसने तो सम्भवतः आपसे नताशा के प्रति अपने बचपन के प्रेम की चर्चा की होगी?"

"लेकिन बचपन का ऐसा कोई प्यार था भी?" प्रिंस अन्द्रेई ने सहसा शर्म से लाल होते हुए पूछा।

"हां, था। बात यह है कि चचेरे-ममेरे भाई-बहनों की निकटता अक्सर प्यार का रूप ले लेती है। यह बड़ा ख़तरनाक रिश्ता है। मैं ठीक कह रही हूं न?"

"ओह, बिल्कुल ठीक कह रही हैं," प्रिंस अन्द्रेई ने जवाब दिया और अचानक बनावटी ढंग से ज़िन्दादिल होते हुए वह प्येर के साथ यह मज़ाक़ करने लगा कि कैसे उसे मास्को में अपनी पचासवर्षीया चचेरी बहनों के साथ अपने व्यवहार में सतर्क रहना चाहिये। इस मज़ाक़िया बातचीत के दौरान ही वह उठा और प्येर की बांह में बांह डालकर उसे एक तरफ़ को ले गया।

"तो?" प्येर ने अपने मित्र की इस अजीब सजीवता को आश्चर्य से देखते और उसकी उस नज़र की ओर ध्यान देते हुए पूछा जो उसने उठते वक़्त नताशा पर डाली थी।

"मुझे तुमसे एक ज़रूरी बात करनी है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा।

"तुम उन ज़नाना दस्तानों को तो जानते हो न," (वह औरतों के उन दस्तानों की चर्चा कर रहा था जो फ़्री मेसन संगठन के नये सदस्य को अपनी प्रेयसी को भेंट करने के लिये दिये जाते थे)। "मैं... नहीं, नहीं, मैं बाद में तुमसे बातचीत करूंगा..." और आंखों में अजीब-सी चमक लिये तथा अपनी गति-विधि में बेचैनी-सी ज़ाहिर करते हुए वह नताशा के क़रीब जाकर बैठ गया। प्येर ने देखा कि कैसे प्रिंस अन्द्रेई ने नताशा से कुछ पूछा और कैसे उसने लज्जारुण होते हुए उत्तर दिया।

किन्तु इसी वक़्त बेर्ग प्येर के पास आया और बहुत ज़ोर देते हुए यह अनुरोध करने लगा कि वह स्पेन के मामलों के बारे में जनरल और कर्नल के बीच हो रही बहस में भाग ले।

बेर्ग बहुत सन्तुष्ट और ख़ुश था। उसके चेहरे पर लगातार ख़ुशी की मुस्कान बनी हुई थी। पार्टी बहुत अच्छी और बिल्कुल उन पार्टियों जैसी ही थी, जो उसने दूसरी जगहों पर देखी थीं। सब कुछ उसी ढंग का था। महिलाओं की नफ़ासत भरी बातचीत, ताश की बाज़ियां, ताश खेलते हुए जनरल का ऊंचे-ऊंचे बोलना, समोवार और बिस्कुट। लेकिन एक चीज़ की कमी थी जो उसने हमेशा दूसरी पार्टियों में देखी थी और जिसकी वह नक़ल करना चाहता था। मर्दों के बीच ऊंची आवाज़ में होनेवाली बातचीत और कोई महत्त्वपूर्ण तथा बुद्धिमत्तापूर्ण बहस। जनरल ने ऐसी बातचीत शुरू कर दी और बेर्ग इसी में हिस्सा लेने के लिये प्येर को बुला ले गया।

## २२

काउंट रोस्तोव के निमंत्रण पर प्रिंस अन्द्रेई अगले दिन उनके यहां लंच के लिये गया और उसने सारा दिन वहीं बिताया।

रोस्तोव-परिवार के सभी लोग इस बात को समझ रहे थे कि प्रिंस अन्द्रेई किस की ख़ातिर आया है और प्रिंस अन्द्रेई ने भी इस चीज़ को न छिपाते हुए दिन भर नताशा के साथ ही रहने का प्रयास किया। न केवल नताशा, जो डरी-सहमी होने के बावजूद बहुत ख़ुश

और आनन्द-विभोर थी, बल्कि घर के सभी लोग किसी बहुत ही महत्त्व-पूर्ण घटना की प्रत्याशा करते हुए भय-सा अनुभव कर रहे थे। प्रिंस अन्द्रेई जिस वक़्त नताशा से बात करता होता तो काउंटेस कारुणिक और गम्भीर-कठोर दृष्टि से प्रिंस अन्द्रेई की तरफ़ देखती रहतीं और जैसे ही वह उसकी ओर देखने लगता, वैसे ही डरते-डरते तथा बनावटी ढंग से किसी मामूली बात की चर्चा करने लगतीं। सोन्या नताशा से दूर हटते हुए घबराती थी और जब वह इन दोनों के साथ होती तो इस ख़्याल से घबराहट महसूस करती रहती कि कहीं वह इनके बीच बाधा न बन जाये। नताशा जब क्षण भर को भी प्रिंस अन्द्रेई के साथ अकेली रह जाती तो प्रत्याशा के भय से उसके चेहरे का रंग उड़ जाता। नताशा प्रिंस अन्द्रेई की संकोचशीलता से चकित हो रही थी। वह अनुभव कर रही थी कि प्रिंस अन्द्रेई उससे कुछ कहना चाहता है, मगर ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर पा रहा है।

शाम को प्रिंस अन्द्रेई के जाने के बाद काउंटेस नताशा के पास आयीं और उन्होंने फुसफुसाते हुए बेटी से पूछा :

"तो क्या क़िस्सा रहा ?"

"अम्मां, भगवान के लिये अब मुझसे कुछ न पूछिये। मेरे लिये यह बताना सम्भव नहीं," नताशा ने जवाब दिया।

ऐसा जवाब देने के बावजूद नताशा इसी रात को कभी उत्तेजित होती और कभी घबराती हुई तथा अपने सामने दृष्टि जमाये हुए मां के बिस्तर पर लेटी रही। उसने मां को यह बताया कि कैसे प्रिंस अन्द्रेई ने उसकी प्रशंसा की थी, कि वह विदेश जायेगा, कि उसने जानना चाहा था कि इस गर्मी में रोस्तोव-परिवारवाले कहां रहेंगे और यह कि उसने बोरीस के बारे में पूछ-ताछ की थी।

"किन्तु ... इस तरह की अनुभूति तो मुझे पहले कभी कभी नहीं हुई थी!" उसने कहा। "हां, इतना ज़रूर है कि उसके सामने मुझे डर लगता है, हमेशा डर महसूस होता है। इसका क्या मतलब है? क्या यह मतलब है कि यही असली प्यार है? अम्मां, आप सो रही हैं क्या ?"

"नहीं, मेरी बिटिया, मुझे तो ख़ुद भी डर महसूस होता है," मां ने जवाब दिया। "अब जाओ, अपने कमरे में।"

"नींद तो मुझे किसी हालत में भी नहीं आयेगी। सोने में क्या

तुक है! अम्मां, प्यारी अम्मां, मेरी ऐसी हालत तो पहले कभी नहीं हुई थी!" उसने उस भावना से चकित और भयभीत होते हुए कहा जिसके अस्तित्व की उसे अपने अन्तर में चेतना थी। "और क्या हम कभी इसकी कल्पना भी कर सकती थीं!.."

नताशा को लग रहा था कि ओतरादनोये गांव में प्रिंस अन्द्रेई को पहली बार देखने पर ही उसे उससे प्रेम हो गया था। उसे इस अजीब और अप्रत्याशित ख़ुशी के कारण डर महसूस हो रहा था कि जिसे उसने तब अपने लिये चुना था ( उसे इस बात का पक्का यक़ीन था ) उसी से अब फिर उसकी भेंट हो गयी है और जैसे कि लग रहा था, वह भी उसके प्रति उदासीन नहीं था। "उसे भी मानो जान-बूझकर इसी वक़्त पीटर्सबर्ग में आना था, जब हम यहां हैं। और उस बॉल में हमारी मुलाक़ात का होना भी ज़रूरी था। यह सब क़िस्मत का खेल है। ज़ाहिर है कि यह सब क़िस्मत का ही खेल है कि ऐसा होना चाहिये था। उस वक़्त ही, जब मैंने उसे पहली बार देखा था, मुझे एक ख़ास अनुभूति हुई थी।"

"और क्या कुछ कहा था उसने तुमसे? यह कविता क्या है? मुझे सुनाओ..." मां ने सोचते हुए उस कविता के बारे में पूछा जो प्रिंस अन्द्रेई ने नताशा के एलबम में लिखी थी।

"अम्मां, यह तो कोई लज्जा की बात नहीं कि वह विधुर है?"

"कैसी बात कह रही हो, नताशा। भगवान का नाम लो। शादियां तो ईश्वर के घर में ही तय होती हैं।" काउंटेस ने फ़ांसीसी में कहा।

"मेरी प्यारी, मेरी अच्छी अम्मां, कितना प्यार करती हूं मैं आपको, कितनी ख़ुश हूं मैं!" ख़ुशी और विह्वलता के आंसू बहाती तथा मां का आलिंगन करती हुई नताशा ज़ोर से कह उठी।

इसी वक़्त प्रिंस अन्द्रेई अपने दोस्त प्येर के पास बैठा हुआ नताशा के प्रति अपने प्यार और इस बात की चर्चा कर रहा था कि वह उसके साथ शादी करने का पक्का इरादा रखता है।

इस दिन काउंटेस एलेन के यहां पार्टी थी जिसमें फ़ांसीसी राजदूत, सम्राट-परिवार का वह राजकुमार, जो पिछले कुछ समय से काउंटेस के यहां अक्सर आने लगा था, और अनेक अन्य प्रतिष्ठित महिलायें तथा पुरुष पार्टी में भाग लेने के लिये आये हुए थे। प्येर नीचे आ

गया, वह कमरों में चक्कर लगाता रहा और उसके विचारमग्न, खोये-खोये और उदास चेहरे से सभी मेहमान चकित रह गये।

बॉल के दिन से प्येर यह अनुभव कर रहा था कि मानसिक विषाद का मूड उसपर फिर से हावी होनेवाला है और वह उससे बचने के लिये अपना पूरा ज़ोर लगा रहा था। राजकुमार के साथ उसकी पत्नी की घनिष्ठता बढ़ने के बाद उसे अचानक ही ऊंचा दरबारी पद दे दिया गया था और इसी वक़्त से वह दरबारी हलक़ों में अपने मन पर एक बोझ तथा शर्म महसूस करने लगा था और उसके दिमाग़ में अक्सर सभी मानवीय चीज़ों की निस्सारता के बारे में पहलेवाले उदासी भरे विचार आने लगे थे। इसी समय अपनी संरक्षिता नताशा और प्रिंस अन्द्रेई के बीच बढ़ती प्रेम-भावना की ओर उसका ध्यान गया तथा अपनी स्थिति और अपने मित्र की स्थिति की तुलना से उसकी खिन्नता का यह मूड और ज़्यादा ख़राब हो गया। वह अपनी पत्नी, नताशा और प्रिंस अन्द्रेई के बारे में समान रूप से न सोचने का प्रयास करता। फिर से शाश्वतता की तुलना में उसे शेष सभी कुछ तुच्छ प्रतीत होने लगा, फिर से उसके सामने यह प्रश्न आने लगा: "आख़िर इस सब में तुक ही क्या है?" और वह इस शैतानी भावना को अपने से दूर भगाने की आशा करते हुए दिन-रात अपने को फ़्री मेसनों की रचनाओं पर काम करने के लिये मजबूर करने लगा। रात के ग्यारह बजने के बाद प्येर काउंटेस के कमरों से ऊपर आया, वह नीची छतवाले तथा तम्बाकू के धुएं से भरे कमरे में पुराना-धुराना ड्रेसिंग गाउन पहने मेज़ के सामने बैठा हुआ स्कॉटलैंड के फ़्री मेसनों की मूल नियमावली की नक़ल उतार रहा था, जब किसी ने उसके कमरे में प्रवेश किया। यह प्रिंस अन्द्रेई था।

"अरे, यह आप हैं?" प्येर ने खोयी-खोयी और असन्तोषपूर्ण मुख-मुद्रा में कहा। "मैं तो काम कर रहा हूं," उसने ऐसे दुखी लोगों के भाव से कापी की ओर संकेत करते हुए कहा जो काम को अपनी ज़िन्दगी की मुसीबतों से मुक्ति पाने का साधन मानते हैं।

प्रिंस अन्द्रेई चमकते, उल्लासपूर्ण और जीवन के प्रति नूतन उत्साह से ओत-प्रोत चेहरे के साथ प्येर के सामने आकर खड़ा हो गया और उसके मुख पर अंकित दुख की ओर कोई ध्यान दिये बिना अपने सुख के कारण स्वार्थी ढंग से मुस्करा दिया।

"तो, मेरे प्यारे दोस्त," उसने कहा, "मैं कल तुमसे कुछ कहना चाहता था और इसी के लिये आज तुम्हारे यहां आया हूं। इस तरह की अनुभूति मुझे आज तक पहले कभी नहीं हुई थी। मुझे मुहब्बत हो गयी है, मेरे दोस्त।"

प्येर ने अचानक गहरी सांस ली और अपनी भारी-भरकम देह को प्रिंस अन्द्रेई की बग़ल में सोफ़े पर फैलाते हुए बोला :

"नताशा रोस्तोवा से? ठीक है न?"

"हां, हां, और किससे हो सकती है? मैंने कभी भी इस चीज़ का यक़ीन न किया होता, लेकिन यह भावना मुझसे अधिक प्रबल है। कल मैं यातना सहता रहा, व्यथित होता रहा, किन्तु इस व्यथा-वेदना को भी मैं दुनिया की किसी भी चीज़ से बदलने को तैयार नहीं हूं। आज तक मैं जिया ही नहीं। मैं तो केवल अभी जी रहा हूं, मगर मैं उसके बिना नहीं जी सकता। लेकिन क्या वह भी मुझे प्यार कर सकती है? .. मैं उससे उम्र में कहीं बड़ा हूं... तुम कुछ कहते क्यों नही? .."

"मैं? मैं? मैंने आपसे क्या कहा था?" प्येर सोफ़े से उठते और कमरे में चक्कर लगाना शुरू करते हुए सहसा कह उठा। "मैं हमेशा यही सोचता रहा हूं... यह लड़की तो ऐसा क़ीमती हीरा है, ऐसा क़ीमती... यह तो दुर्लभ लड़की है... मेरे प्यारे दोस्त, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप ज़्यादा सोच-विचार के फेर में नहीं पड़ें, शंका के शिकार नहीं हों, उससे शादी कर लें, शादी कर लें, शादी कर लें... और मुझे यक़ीन है कि आपसे ज़्यादा ख़ुशक़िस्मत और कोई आदमी नहीं होगा।"

"लेकिन वह?"

"वह आपको प्यार करती है।"

"फ़जूल की बात नहीं करो..." प्रिंस अन्द्रेई ने मुस्कराते और प्येर की आंखों में झांकते हुए कहा।

"मैं जानता हूं, वह प्यार करती है," प्येर झल्लाकर चिल्ला उठा।

"नहीं, तुम मेरी बात सुनो," प्रिंस अन्द्रेई ने उसका हाथ पकड़कर उसे रोकते हुए कहा। "तुम्हें मालूम है कि इस वक़्त मेरी कैसी हालत है? मुझे ज़रूर किसी से यह सब कुछ कहना चाहिये।"

"हां, हां, कहिये, मुझे बेहद ख़ुशी है," प्येर ने जवाब दिया और वास्तव में ही उसका चेहरा बदल गया, माथे पर पड़ा हुआ बल ग़ायब हो गया और वह बड़ी ख़ुशी से प्रिंस अन्द्रेई की बात सुनने लगा। प्रिंस अन्द्रेई बिल्कुल दूसरा, नया व्यक्ति प्रतीत होता था और वास्तव में ऐसा ही था भी। कहां थी उसकी उदासी, जीवन के प्रति उसकी घृणा, उसकी निराशा? प्येर ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसके सामने उसने अपना दिल खोलने का निर्णय किया और उसने उससे वह सब कुछ ही कह दिया जो उसके मन में था। कभी तो वह ख़ुशी और दिलेरी से भविष्य में बहुत दूर तक जानेवाली योजनायें बनाता और यह कहता रहा कि कैसे वह पिता की सनकों के लिये अपनी ख़ुशी की क़ुर्बानी नहीं कर सकता, कैसे वह पिता को इस विवाह के लिये सहमत होने और नताशा को प्यार करने को मजबूर कर देगा वरना उनकी सहमति के बिना ही काम चला लेगा और कभी उस अजीब, परायी तथा अपने पर हावी हो जानेवाली प्रेम-भावना के बारे में सोचकर हैरान होता जिसपर उसका कोई ज़ोर नहीं चलता था।

"अगर कोई मुझसे यह कहता कि मैं इस तरह से प्यार कर सकता हूं तो मैंने कभी इस बात का यक़ीन न किया होता," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "यह तो उस भावना से बिल्कुल भिन्न है जो पहले मुझमें थी। अब मेरे लिये सारी दुनिया दो हिस्सों में बंट गयी है – एक हिस्से में वह है और वहां सारा सुख-सौभाग्य, आशा तथा प्रकाश है। दूसरा हिस्सा वह है जिसमें वह नहीं है और वहां विषाद और अन्धेरा ही अन्धेरा है..."

"अन्धेरा ही अन्धेरा और विषाद है," प्येर ने उसके शब्द दोह-राये, "हां, हां, मैं इसे समझता हूं।"

"मैं प्रकाश को प्यार किये बिना नहीं रह सकता, इसमें मेरा कोई क़सूर नहीं। और मैं बेहद ख़ुश हूं। तुम मेरी बात समझ रहे हो न? मैं जानता हूं कि तुम मेरी ख़ुशी से ख़ुश हो।"

"हां, हां," प्येर ने द्रवित और उदास आंखों से अपने मित्र की ओर देखते हुए पुष्टि की। प्रिंस अन्द्रेई का भाग्य उसे जितना प्रकाश-पूर्ण प्रतीत हो रहा था, अपना भाग्य उतना ही अन्धकारमय।

## २३

शादी करने के लिये पिता की अनुमति ज़रूरी थी और इसी उद्देश्य से प्रिंस अन्द्रेई अगले दिन गांव को रवाना हो गया।

पिता ने बाहरी तौर पर शान्त रहते, किन्तु आन्तरिक झल्लाहट अनुभव करते हुए बेटे का यह समाचार सुना। उनके लिये यह समझ पाना कठिन था कि कैसे कोई उनके जीवन को बदलना चाहता था, उसमें कोई नयी चीज़ लाना चाहता था, जबकि वह उनके लिये लगभग समाप्त हो चुका था। "जैसे मैं चाहता हूं, मुझे वैसे ही कुछ दिन और जी लेने दें और उसके बाद जो भी चाहें, करते रहें," बुज़ुर्ग प्रिंस ने अपने आपसे कहा। किन्तु बेटे के साथ उन्होंने उस व्यवहारकुशलता से काम लिया जिसका वह महत्त्वपूर्ण स्थितियों में ही उपयोग करते थे। शान्त लहजा अपनाते हुए उन्होंने सारे मामले पर विचार-विमर्श किया।

पहली बात तो यह है कि धन-दौलन और कुलीनता की दृष्टि से यह रिश्ता बहुत बढ़िया नहीं रहेगा। दूसरे, प्रिंस अन्द्रेई अपनी चढ़ती जवानी में नहीं था और उसकी सेहत अच्छी नहीं थी (बुज़ुर्ग ने इस बात पर ख़ास ज़ोर दिया), और लड़की बहुत जवान थी। तीसरे, उसका बेटा था जिसे एक छोकरी के हाथों में सौंपना ठीक नहीं होगा। चौथी, और अन्तिम बात यह है, पिता ने बेटे को व्यंग्यपूर्वक देखते हुए कहा, "मैं तुमसे अनुरोध करता हूं कि इस मामले को एक साल के लिये स्थगित कर दो, विदेश हो आओ, इलाज करवा लो, जैसा कि तुम चाहते हो अपने बेटे, प्रिंस निकोलाई के लिये कोई जर्मन शिक्षक ढूंढ़ लो और इसके बाद अगर प्यार, चाहत, ज़िद्द, तुम उसे कुछ भी कह लो, इतनी ही अधिक बनी रहेगी तो शादी कर लेना। यह मेरा आख़िरी फ़ैसला है, आख़िरी फ़ैसला है..." बुज़ुर्ग प्रिंस ने ऐसे लहजे में बात ख़त्म की जो यह ज़ाहिर करता था कि वह किसी भी हालत में अपना फ़ैसला नहीं बदलेंगे।

प्रिंस अन्द्रेई स्पष्ट रूप से यह समझ रहा था कि बुज़ुर्ग पिता ऐसी आशा कर रहे थे कि या तो उसकी या उसकी भावी पत्नी की प्रेम-भावना एक वर्ष की परीक्षा-कसौटी पर खरी नहीं उतरेगी या फिर बुज़ुर्ग प्रिंस इस वक़्त तक ख़ुद दुनिया से कूच कर जायेंगे और इसलिये

उसने पिता की इच्छा पूरी करने का निर्णय कर लिया। उसने तय किया कि विवाह-प्रस्ताव करके एक वर्ष के लिये विवाह को स्थगित कर देगा।

रोस्तोवों के यहां अन्तिम बार जाने के तीन सप्ताह बाद वह पीटर्सबर्ग लौटा।

मां के साथ हुई बातचीत के प्रश्चात नताशा ने अगले दिन सुबह से रात तक बोल्कोन्स्की की प्रतीक्षा की, किन्तु वह नहीं आया। दूसरे और तीसरे दिन भी यही हुआ। प्येर का आना भी नहीं हुआ और नताशा यह न जानते हुए कि प्रिंस अन्द्रेई अपने पिता के पास चला गया है, यह समझने में असमर्थ थी कि उसकी इस अनुपस्थिति का क्या अर्थ लगाया जाये।

इसी तरह से तीन हफ़्ते बीत गये। नताशा का कहीं भी आने-जाने को मन नहीं होता था, उदास-उदास और खोयी-खोयी-सी वह कमरों के चक्कर लगाती रहती, शामों को छिप-छिपकर रोती और रातों को मां के पास न आती। वह लगातार झेंपती और झुंझलाती रहती। उसे लगता कि सभी उसकी इस निराशा से परिचित हैं, उसपर हंसते तथा तरस खाते हैं। अत्यधिक मानसिक पीड़ा के अतिरिक्त उसके अहं पर होनेवाली यह चोट उसके दुख को और अधिक बढ़ा देती थी।

एक दिन वह काउंटेस के पास आयी, उसने कुछ कहना चाहा और अचानक रो पड़ी। उसके आंसू ऐसे रूठे हुए बालक के आंसू थे जिसे यह न मालूम हो कि उसे किस कारण सज़ा दी गयी है।

काउंटेस नताशा को तसल्ली देने लगीं। नताशा शुरू में मां के शब्दों को सुनती रही और फिर अचानक टोकते हुए कह उठी:

"बस, अब और कुछ नहीं कहिये, अम्मां। मैं कुछ भी नहीं सोचती हूं और कुछ भी सोचना नहीं चाहती! वह यों ही यहां आता रहा और फिर उसने आना बन्द कर दिया, आना बन्द कर दिया..."

उसकी आवाज़ कांपी, वह रुआंसी हो गयी, मगर सम्भली और शान्त भाव से कहती गयी:

"मैं तो शादी करना ही नहीं चाहती। और फिर मैं उससे डरती हूं। अब मैं पूरी तरह, पूरी तरह शान्त हो गयी हूं..."

इस बातचीत के अगले दिन नताशा ने अपना वह पुराना फ़्रॉक पहन लिया जो, जैसा कि उसे अच्छी तरह से मालूम था, सुबह के

वक़्त उसे विशेष प्रसन्नता प्रदान करता था और उसने सुबह से ही अपनी वह दिनचर्या शुरू कर दी जिसकी बॉल के बाद अवहेलना करती रही थी। चाय पीकर वह हॉल में चली गयी जो आवाज़ की ज़ोरदार गूंज के लिये उसे बहुत पसन्द था और गाने का अभ्यास करने लगी। प्रारम्भिक अभ्यास के बाद उसने हॉल के बीचोंबीच खड़ी होकर गाने की एक पंक्ति को, जो उसे विशेषतः बहुत पसन्द थी, दोहराया। वह हॉल के सारे शून्य को भर देने और धीरे-धीरे शान्त हो जानेवाली ध्वनियों के माधुर्य को ( मानो यह उसके लिये अप्रत्याशित हो ) आत्म-विभोर होकर सुनती रही और सहसा उसका मन खिल उठा : "इस बारे में अधिक सोचने में भी क्या रखा है। यों भी सब कुछ अच्छा है," उसने अपने आपसे कहा और आवाज़ पैदा करनेवाले तख़्तों के फ़र्श पर सामान्य ढंग से क़दम न रखते, बल्कि पहले एड़ी और फिर पंजे टिकाते हुए ( वह अपने नये और मनपसन्द जूते पहने थी ) हॉल मे इधर-उधर आने-जाने और अपने गाने की गूंजती ध्वनियों की भांति ही बहुत ख़ुश होकर एड़ी की लयबद्ध खटखट और पंजे की चीं-चर्र सुनने लगी। दर्पण के पास से गुज़रते हुए उसने उसमें अपने को निहारा। "यह रही मैं!" अपने प्रतिबिम्ब को देखने पर उसके चेहरे का भाव मानो यह कह रहा था। "ख़ैर, सब कुछ ठीक है। मुझे किसी की भी ज़रूरत नहीं।"

नौकर ने सफ़ाई करने के लिये हॉल में जाना चाहा, मगर नताशा ने उसे ऐसा नहीं करने दिया, उसे मना करके फिर से दरवाज़ा बन्द कर लिया और हॉल में इधर-उधर आना-जाना जारी रखा। इस सुबह को उसकी अपने को चाहने, अपने पर मुग्ध होने की मनपसन्द मानसिक स्थिति फिर मे लौट आयी थी। "क्या लाजवाब है यह नताशा!" उसने मानो अपने लिये सभी पुरुषों की ओर से किसी एक पुरुष द्वारा कहे गये ये शब्द पुनः दोहराये। "सुन्दर है, बढ़िया गाती है, जवान है और वह किसी के आड़े नहीं आती, उसे चैन लेने दीजिये।" किन्तु उसे चाहे कितने भी चैन की स्थिति में क्या न छोड़ दिया जाये, उमके लिये चैन पाना सम्भव नही था और उसने फ़ौरन यह महसूस कर लिया। ड्योढ़ी का दरवाज़ा खुला और किसी ने पूछा : "मालिक लोग घर पर हैं?" और इसके बाद किसी के क़दमों की आवाज़ सुनायी दी। नताशा अपने को आईने में निहार रही थी, मगर ख़ुद को देख नहीं

रही थी। उसके कान ड्योढ़ी से आ रही आवाज़ पर लगे थे। जब उसने अपने को देखा तो चेहरे का रंग उड़ा हुआ पाया। यह **वही** था। उसे इस बात का पूरा यक़ीन था, यद्यपि दरवाज़ा बन्द होने के कारण उसे उसकी आवाज़ ज़रा ही सुनायी दी थी।

डरी-सहमी और पीला चेहरा लिये हुए नताशा ड्राइंगरूम में भाग गयी।

"अम्मां, बोल्कोन्स्की आ गया है!" उसने कहा। "अम्मां, यह तो भयानक बात है, मेरी बर्दाश्त के बाहर है! मैं... यातना सहन नहीं करना चाहती! मैं क्या करूं?.."

काउंटेस के जवाब देने के पहले ही चेहरे पर कुछ व्याकुलता तथा गम्भीरता का भाव लिये हुए प्रिंस अन्द्रेई ने ड्राइंगरूम में प्रवेश किया। किन्तु नताशा को देखते ही उसका चेहरा खिल उठा। उसने काउंटेस और नताशा का हाथ चूमा और सोफ़े के क़रीब बैठ गया...

"बहुत दिनों से हमें आपको देखने का सौभाग्य..." काउंटेस ने कहना शुरू किया, मगर प्रिंस अन्द्रेई ने काउंटेस के प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्हें टोक दिया। वह सम्भवतः जल्दी से अपनी बात कह देना चाहता था।

"इतने दिनों तक मैं इसलिये आपके यहां नहीं आ सका कि पिता जी से मिलने गया था – मुझे एक बहुत ही ज़रूरी मामले पर उनसे बातचीत करनी थी। मैं कल रात ही लौटा हूं," उसने नताशा की ओर देखते हुए कहा। "मुझे आपसे कुछ बात करनी है, काउंटेस," क्षण भर चुप रहने के बाद उसने इतना और कह दिया।

काउंटेस ने गहरी सांस लेकर नज़रें झुका लीं।

"मैं आपकी बात सुनने को तैयार हूं," उन्होंने उत्तर दिया।

नताशा जानती थी कि उसे यहां से चले जाना चाहिये, मगर वह ऐसा नहीं कर पायी – उसे अपने गले में कोई फांस-सी महसूस हो रही थी और शिष्टाचार की परवाह न करते हुए वह आंखें फाड़-फाड़कर प्रिंस अन्द्रेई की तरफ़ देख रही थी।

"क्या अभी? इसी क्षण ही!.. नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!" वह सोच रही थी।

प्रिंस अन्द्रेई ने फिर से उसकी तरफ़ देखा और इस दृष्टि ने उसे यह विश्वास दिला दिया कि उसका अनुमान ग़लत नहीं है। हां, अभी,

इसी क्षण उसके भाग्य का निर्णय हो जायेगा।

"नताशा, तुम जाओ, मैं तुम्हें बुलवा भेजूंगी," काउंटेस ने फ़ुसफ़ुसाकर कहा।

नताशा ने सहमी-सहमी, गिड़गिड़ाती नज़र से प्रिंस अन्द्रेई और मां की तरफ़ देखा और बाहर चली गयी।

"काउंटेस, मैं आपकी बेटी के साथ अपने विवाह का प्रस्ताव करने के लिये आया हूं," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा।

काउंटेस के चेहरे पर लाली दौड़ गयी, मगर वह ख़ामोश रहीं।

"आपका प्रस्ताव..." काउंटेस ने गम्भीरता से कहना आरम्भ किया। प्रिंस अन्द्रेई काउंटेस की आंखों में देखते हुए चुप रहा। "आपका प्रस्ताव... (वह घबरा गयीं) हमारे लिये सुखद है और... मैं इसे स्वीकार करती हूं, बहुत खुश हूं। मुझे आशा है कि... मेरे पति भी... लेकिन इसका अन्तिम निर्णय तो वह स्वयं ही करेगी..."

"आपकी स्वीकृति पाने के बाद मैं उससे यह बात कहूंगा... तो आप मुझे अपनी स्वीकृति देती हैं न?" प्रिंस अन्द्रेई ने पूछा।

"हां," काउंटेस ने उत्तर दिया और उसकी तरफ़ अपना हाथ बढ़ा दिया। प्रिंस अन्द्रेई जब उनका हाथ चूमने के लिये झुका तो उन्होंने परायेपन और स्नेह की मिली-जुली भावना से उसके माथे को चूम लिया। वह बेटे की तरह उसको प्यार करना चाहती थीं, मगर उन्होंने अनुभव किया कि वह पराया और ऐसा व्यक्ति है जो उनके दिल में दहशत भी पैदा करता है।

"मुझे विश्वास है कि मेरे पति सहमत होंगे," काउंटेस ने कहा, "किन्तु आपके पिता..."

"मेरे पिता जी ने, जिन्हें मैं अपने इरादे से सूचित कर चुका हूं, अपनी स्वीकृति के साथ एक ज़रूरी शर्त लगा दी है कि शादी एक साल से पहले नहीं होनी चाहिये। मैं आपको यह भी बताना चाहता था," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा।

"यह सच है कि नताशा अभी छोटी उमर की है, मगर—एक साल तो बहुत लम्बा अरसा है।"

"दूसरा कोई रास्ता ही नहीं," प्रिंस अन्द्रेई ने आह भरते हुए उत्तर दिया।

"मैं उसे आपके पास भेज देती हूं," काउंटेस ने कहा और कमरे

से बाहर चली गयीं।

"हे भगवान, हम पर अपनी दया दृष्टि बनाये रखिये," बेटी को ढूंढ़ते हुए वह लगातार दोहराती जा रही थीं। सोन्या ने उन्हें बताया कि नताशा अपने सोने के कमरे में है। नताशा अपने पलंग पर बैठी थी, उसका चेहरा फक था, आंखें सूखी थीं, वह देव-प्रतिमा की ओर देख रही थी और अपने ऊपर जल्दी-जल्दी सलीब का निशान बनाते हुए कुछ फुसफुसा रही थी। मां को देखते ही वह उछलकर खड़ी हुई और उनकी ओर लपकी।

"तो क्या बातचीत हुई, अम्मां? क्या?"

"जाओ, उसके पास जाओ। वह तुम्हारे साथ शादी करने का प्रस्ताव कर रहा है," काउंटेस ने कुछ रुखाई से कहा, जैसा कि नताशा को प्रतीत हुआ ... "जाओ ... जाओ," बेटी के भागने पर मां उदासी और भर्त्सना से कह उठीं और उन्होंने गहरी सांस ली।

नताशा को इस बात की कोई सुध-बुध नहीं थी कि कैसे वह ड्राइंगरूम में पहुंची। दरवाज़े में दाखिल होने और अन्द्रेई को देखने पर वह रुक गयी।

"क्या यह अजनबी आदमी ही अब मेरा **सर्वस्व** बन गया है?" उसने अपने आपसे पूछा और तुरन्त उत्तर दिया: "हां, सर्वस्व बन गया है। अब दुनिया में मुझे इससे अधिक कुछ भी प्यारा नहीं।" प्रिंस अन्द्रेई नज़रें झुकाये हुए उसके निकट आया।

"मैं तो आपको देखते ही प्यार करने लगा था। क्या मैं आशा कर सकता हूं?"

प्रिंस अन्द्रेई ने नताशा की तरफ़ देखा और उसके चेहरे के गम्भीर तथा उद्वेगपूर्ण भाव से हैरान रह गया। उसका चेहरा मानो कह रहा था: "किसलिये यह पूछ रहे हैं? किसलिये उसके बारे में सन्देह प्रकट कर रहे हैं जो यों ही आपको स्पष्ट है? किसलिये शब्दों से काम लिया जाये, जब शब्द उसे व्यक्त नहीं कर सकते जो हम अनुभव करते हैं?"

नताशा उसके क़रीब जाकर रुक गयी। प्रिंस अन्द्रेई ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर चूमा।

"आप मुझे प्यार करती हैं?"

"हां, हां," नताशा ने मानो खीझते हुए उत्तर दिया, ज़ोर से सांस ली, फिर से ऐसा किया, अधिकाधिक जल्दी-जल्दी सांस लेने

लगी और सिसक उठी।

"क्या बात है? क्या हुआ है आपको?"

"ओह, मैं इतनी खुश हूं कि बता नहीं सकती," उसने जवाब दिया, आंसुओं के बीच ही मुस्करा दी, उसकी तरफ़ झुक गयी, क्षण भर को कुछ सोचती रही मानो अपने आपसे पूछ रही हो कि ऐसा करे या न करे और उसे चूम लिया।

प्रिंस अन्द्रेई उसके हाथ थामे था, उसकी आंखों में देख रहा था और अपनी आत्मा में उसके प्रति पहले जैसा प्यार अनुभव नहीं कर रहा था। उसकी आत्मा में अचानक कोई बड़ा परिवर्तन हो गया था – चाहत का पहले जैसा काव्यमय और रहस्यपूर्ण आकर्षण नहीं रहा था, उसकी नारी और बालिका-सुलभ दुर्बलता के लिये दया की भावना ने उसकी जगह ले ली थी, उसकी अनुरक्ति और सहज विश्वस्तता के लिये भय अनुभव हो रहा था तथा जीवन भर के लिये उसे उसके साथ जोड़नेवाली बोझल, किन्तु साथ ही मधुर कर्त्तव्य-चेतना की अनुभूति हो रही थी। यह नयी भावना पहले जैसी आकर्षक और काव्यमयी न होते हुए भी गम्भीर तथा अधिक सशक्त थी।

"अम्मां ने आपको यह बता दिया कि एक साल से पहले यह नहीं हो सकता?" नताशा की आंखों में झांकते हुए ही प्रिंस अन्द्रेई ने पूछा।

"क्या सचमुच मैं, मैं, कल की छोकरी (सभी मेरे बारे में यही कहते हैं)," नताशा सोच रही थी, "क्या सचमुच मैं अब, इस क्षण से **पत्नी** बन गयी हूं, इस पराये, बुद्धिमान व्यक्ति के बराबर हो गयी हूं जिसकी मेरे पिता भी इतनी इज़्ज़त करते हैं? क्या यह सच है? क्या यह सच है कि अब मैं ज़िन्दगी को हंसी-खेल नहीं समझ सकती, कि बड़ी हो गयी हूं और अपनी हर गति-विधि तथा हर शब्द के लिये उत्तरदायी हो गयी हूं? अरे हां, क्या पूछा था उसने मुझसे?"

"नहीं," नताशा ने उत्तर दिया, किन्तु उसने उसके प्रश्न को नहीं समझा था।

"मैं माफ़ी चाहता हूं," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा, "लेकिन आप अभी बहुत कमउम्र हैं और मैं जीवन में बहुत कुछ अनुभव कर चुका हूं। मुझे आपके लिये डर महसूस होता है। आप अपने को नहीं जानतीं।"

नताशा बहुत ध्यान से प्रिंस अन्द्रेई की बात सुन रही थी, उसके

शब्दों का अर्थ समझने की कोशिश कर रही थी, मगर समझ नहीं पा रही थी। "मेरी ख़ुशी को मुझसे दूर रखनेवाला यह एक साल मेरे लिये कितना ही बोझल क्यों न हो," प्रिंस अन्द्रेई कहता गया, "इस अरसे में आपको अपनी भावनाओं का विश्वास हो जायेगा। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि एक वर्ष बाद आप मुझे सौभाग्यशाली बनायें, किन्तु साथ ही आप आज़ाद हैं – हमारी यह सगाई गुप्त रहेगी। अगर आपको यह यक़ीन हो जायेगा कि आप मुझे प्यार नहीं करतीं या फिर किसी दूसरे को प्यार करने लगेंगी..." प्रिंस अन्द्रेई ने ज़बर्दस्ती मुस्कराते हुए कहा।

"किसलिये आप ऐसा कह रहे हैं?" नताशा ने उसे टोक दिया। "आप जानते हैं कि जब आप पहली बार ओतरादनोये आये थे, मैं तो तभी आपको प्यार करने लगी थी," उसने पूरी तरह से यह विश्वास करते हुए कि वह सच बोल रही है, यह कहा।

"एक साल में आप अपने को समझ जायेंगी..."

"पूरा एक... साल!" नताशा केवल अभी यह समझ पाते हुए कि शादी को वर्ष भर के लिये स्थगित कर दिया जायेगा, अचानक कह उठी। "किसलिये साल भर तक? किसलिये?.." प्रिंस अन्द्रेई उसे इस देर के कारण स्पष्ट करने लगा। नताशा उसकी बात नहीं सुन रही थी। "क्या और कोई रास्ता नहीं है?" उसने पूछा। प्रिंस अन्द्रेई ने कोई जवाब नहीं दिया, किन्तु उसके चेहरे का भाव यह कह रहा था कि इस निर्णय को बदलना सम्भव नहीं।

"यह भयानक बात है! बहुत भयानक, बहुत भयानक बात है!" नताशा सहसा कह उठी और फिर से सिसकने लगी। "साल भर तक इन्तज़ार करते हुए तो मेरा दम निकल जायेगा – यह असम्भव है, यह भयानक बात है।" उसने अपने वर की तरफ़ देखा और उसे उसके चेहरे पर सहानुभूति और उलझन दिखाई दी।

"नहीं, नहीं, मैं सब कुछ करने को तैयार हूं," उसने आंसुओं पर अचानक क़ाबू पाते हुए कहा, "मैं बेहद ख़ुश हूं!"

नताशा के माता-पिता ड्राइंगरूम में आये और उन्होंने दोनों को आशीर्वाद दिया।

इस दिन से प्रिंस अन्द्रेई नताशा के भावी पति के रूप में रोस्तोव-परिवार में आने-जाने लगा।

## २४

सगाई की रस्म अदा नहीं की गयी और किसी को भी इसके बारे में नहीं बताया गया। प्रिंस अन्द्रेई ने ऐसा करने का इसरार किया। उसने कहा कि चूंकि वही शादी में इस देर के लिये ज़िम्मेदार है, इसलिये उसे ही इसकी सारी व्यथा बर्दाश्त करनी चाहिये। उसका कहना था कि उसने अपने को तो जीवन भर के लिये वचनबद्ध कर दिया है, किन्तु वह नताशा को किसी भी तरह के बन्धन में नहीं बांधना चाहता था, उसे पूरी आज़ादी देना चाहता था। अगर छः महीने बाद नताशा को यह महसूस हो कि वह उसे प्यार नहीं करती तो उसे उसका विवाह-प्रस्ताव ठुकराने का पूरा अधिकार होगा। ज़ाहिर है कि न तो नताशा और न उसके माता-पिता ही यह सुनना चाहते थे, मगर प्रिंस अन्द्रेई अपनी बात पर अड़ा रहा। प्रिंस अन्द्रेई हर दिन रोस्तोवों के यहां आता था, किन्तु नताशा के साथ अपनी मंगेतर जैसा व्यवहार नहीं करता था। वह उसे **आप** कहकर सम्बोधित करता और केवल उसके हाथों को ही चूमता। विवाह-प्रस्ताव करने के दिन के बाद प्रिंस अन्द्रेई और नताशा के बीच पहले की तुलना में बिल्कुल दूसरे, मैत्रीपूर्ण और सीधे-सादे सम्बन्ध स्थापित हो गये थे। ऐसे लगता था मानो वे अभी तक एक-दूसरे को जानते ही नहीं थे। इन दोनों को यह याद करना अच्छा लगता था कि जब उनके बीच कोई भी सम्बन्ध नहीं था तो वे दोनों कैसे महसूस करते थे। अब दोनों एक-दूसरे को बिल्कुल भिन्न व्यक्तियों के रूप में अनुभव करते थे – तब दिखावा करते थे, किन्तु वे अब सीधे-सादे और निश्छल-निष्कपट थे। शुरू-शुरू में रोस्तोव-परिवार प्रिंस अन्द्रेई के साथ अपने व्यवहार में अटपटापन महसूस करता था, उसे वह किसी दूसरी ही दुनिया का आदमी प्रतीत होता था। इसलिये नताशा को अपने घरवालों को प्रिंस अन्द्रेई का अभ्यस्त बनाने में काफ़ी वक़्त लगा। वह बड़े गर्व से सभी को यह विश्वास दिलाती कि प्रिंस अन्द्रेई तो केवल ख़ास आदमी लगता ही है, कि वह सभी के जैसा है, कि वह उससे बिल्कुल नहीं डरती और किसी को भी उससे नहीं डरना चाहिये। कुछ दिनों बाद परिवार के सभी लोग उसके आदी हो गये, किसी तरह की घबराहट महसूस किये बिना पहले की तरह जीवन बिताने लगे जिसमें वह भी हिस्सा लेता था। वह काउंट के साथ

खेती-बारी की, काउंटेस तथा नताशा के साथ पोशाकों तथा फ़ैशनों और सोन्या के साथ एलबमों तथा कढ़ाई की चर्चा करता। रोस्तोव-परिवारवाले कभी आपस में और कभी प्रिंस अन्द्रेई के सामने ही इस बात से हैरान होते कि यह सब कैसे हुआ और किस तरह पहले से ही इसके लक्षण नज़र आ रहे थे – प्रिंस अन्द्रेई का ओतरादनोये में आना, इनका पीटर्सबर्ग आना, नताशा और प्रिंस अन्द्रेई की समानता, जिसकी ओर प्रिंस अन्द्रेई के पहली बार आने पर आया ने ध्यान दिया था, सन १८०५ में प्रिंस अन्द्रेई और निकोलाई की मुलाक़ात तथा अनेक अन्य ऐसे लक्षणों का उल्लेख किया जाता जो यह संकेत करते थे कि ऐसा होकर रहेगा।

घर में रोमानी और ख़ामोशी का वह वातावरण छाया रहता था जो सगाई के रिश्ते में बंधे हुए दो व्यक्तियों की उपस्थिति में हमेशा होता है। अक्सर सभी एकसाथ बैठे हुए मौन धारण किये रहते। कभी-कभी वे प्रिंस अन्द्रेई और नताशा को अकेले छोड़ते हुए उठकर चले जाते और तब भी इन दोनों का मौन उसी तरह से बना रहता। ये दोनों बहुत कम ही अपने भविष्य के बारे में बातचीत करते। प्रिंस अन्द्रेई को यह चर्चा करते हुए डर लगता, शर्म महसूस होती। नताशा उसकी इस भावना को उसी तरह से स्वीकार करती, जैसे अन्य भावनाओं को, जिन्हें वह निरन्तर पहले से ही भांपती रहती थी। एक दिन नताशा उससे उसके बेटे के बारे में पूछने लगी। प्रिंस अन्द्रेई के चेहरे पर लाली दौड़ गयी, जैसा कि अब उसके साथ अक्सर होता था, और जो नताशा को ख़ास तौर पर बहुत अच्छा लगता था, तथा यह उत्तर दिया कि उसका बेटा उनके साथ नहीं रहेगा।

"भला क्यों?" नताशा ने घबराकर पूछा।

"मैं उसे उसके दादा से अलग नहीं कर सकता और इसके अलावा..."

"ओह, कितना अधिक प्यार करती मैं उसे!" नताशा ने फ़ौरन उसके मनोभाव का अनुमान लगाते हुए कहा। "लेकिन मैं यह जानती हूं कि आप ऐसा नहीं चाहते कि किसी को हमें कोई दोष देने का कारण मिले।"

बुज़ुर्ग काउंट कभी-कभी प्रिंस अन्द्रेई के पास आते, उसे चूमते, पेत्या की शिक्षा-दीक्षा और निकोलाई की नौकरी के बारे में उससे

सलाह लेते। बूढ़ी काउंटेस प्रिंस अन्द्रेई और नताशा को देखकर आहें भरतीं। सोन्या हर वक़्त यही सोचकर डरती रहती कि कहीं वह उनके आड़े न आये और उन्हें अकेले छोड़ने का बहाना ढूंढ़ती रहती, जबकि उन्हें उसकी ज़रूरत नहीं होती थी। प्रिंस अन्द्रेई जब कोई बात सुनाता (उसे इस कला में कमाल हासिल था) तो नताशा बड़े गर्व से उसकी बातें सुनती। जब नताशा किसी बात की चर्चा करती तो भयभीत और ख़ुश होती हुई इस चीज़ की तरफ़ ध्यान देती कि वह बहुत ग़ौर से तथा पैनी नज़र से उसकी तरफ़ देख रहा है। वह उलझन में पड़ती हुई अपने आपसे पूछती: "वह मुझमें क्या खोज रहा है? उसकी नज़र मुझमें क्या पाना चाहती है? अपनी नज़र से वह मुझमें जो कुछ ढूंढ़ रहा है, अगर वह मुझमें नहीं है, तो?" कभी-कभी वह अपने पागलपन और ख़ुशी के उस मूड में होती, जो उसका चारित्रिक लक्षण था और उस समय उसे प्रिंस अन्द्रेई को हंसते देखना और उसकी आवाज़ सुनना ख़ास तौर पर बहुत अच्छा लगता था। प्रिंस अन्द्रेई बहुत कम हंसता था, मगर जब हंसता था तो अपनी हंसी में खोकर पूरे मन से हंसता था और उसकी ऐसी हंसी के बाद हर बार ही वह अपने को उसके निकट अनुभव करती। अगर प्रिंस अन्द्रेई के साथ नज़दीक आते जा रहे जुदाई के समय का ख़्याल उसे भयभीत न करता तो नताशा अपने को बहुत ही ख़ुश महसूस करती।

पीटर्सबर्ग से रवाना होने की पूर्ववेला में प्रिंस अन्द्रेई प्येर को भी अपने साथ ले आया जो बॉल के बाद एक बार भी रोस्तोवों के यहां नहीं आया था। प्येर अनमना और परेशान-सा लग रहा था। वह काउंटेस के साथ बातें कर रहा था। सोन्या को साथ लेकर नताशा शतरंज की मेज़ पर जा बैठी और इस तरह उसने प्रिंस अन्द्रेई को भी अपने पास आने को निमन्त्रित किया। वह उनके नज़दीक गया।

"आप तो बहुत अरसे से बेज़ूख़ोव को जानती हैं न?" उसने पूछा। "वह आपको अच्छा लगता है?"

"हां, वह बहुत अच्छा, मगर बहुत हास्यास्पद है।"

और नताशा प्येर की चर्चा करते हुए हमेशा की तरह उसकी अन्यमनस्कता के क़िस्से सुनाने लगी, जिनमें से कुछ तो लोगों ने अपने मन से ही उसके बारे में गढ़ लिये थे।

"जानती हैं, मैंने उसे हमारा राज़ बता दिया है," प्रिंस अन्द्रेई

ने कहा। "मैं उसे बचपन से जानता हूं। सोने का दिल है उसका। मैं आपसे अनुरोध करता हूं, नताशा," वह अचानक गम्भीर होकर कहता गया, "मैं तो चला जाऊंगा और कौन जाने कि यहां क्या हो जाये। अगर आपको मुझसे प्यार न रहे... लेकिन मैं जानता हूं कि मुझे यह बात नहीं कहनी चाहिये। केवल इतना ही कहूंगा – जब मैं यहां न रहूं तो आपके साथ चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये..."

"हो ही क्या सकता है?"

"कोई भी दुख-मुसीबत क्यों न आ जाये," प्रिंस अन्द्रेई कहता गया। "सोन्या, मैं आपसे भी अनुरोध करता हूं, चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये, सिर्फ़ प्येर से ही सलाह-मशविरा और मदद लीजिये। वह बहुत ही खोया-खोया रहनेवाला और हास्यास्पद व्यक्ति है, मगर उसका दिल सोने का है।"

न तो पिता, न माता, न सोन्या और न प्रिंस अन्द्रेई ही इस बात का पूर्वानुमान लगा सका कि उसके जाने का नताशा के दिल पर क्या असर पड़ेगा। तमतमाया चेहरा, बड़ी बेचैन और सूखी आंखें – नताशा इसी रूप में इस दिन घर में इधर-उधर चक्कर काटती रही, व्यर्थ के कामों में उलझती रही मानो यह न समझ पा रही हो कि उसके साथ क्या बीतनेवाली है। वह तो उस वक़्त भी नहीं रोयी, जब प्रिंस अन्द्रेई ने उससे विदा लेते हुए अन्तिम बार उसका हाथ चूमा।

"नहीं जाइये!" नताशा ने कुछ ऐसी आवाज़ में सिर्फ़ इतना ही कहा कि उसके इन शब्दों ने उसे यह सोचने के लिये विवश कर दिया कि क्या सचमुच ही वह रुक न जाये और ये शब्द बाद में भी बहुत देर तक उसकी स्मृति में बने रहे। उसके चले जाने पर भी वह नहीं रोयी। किन्तु रोये-धोये बिना वह कई दिनों तक अपने कमरे में बैठी रही, उसने किसी भी चीज़ में कोई दिलचस्पी नहीं ली और कभी-कभी केवल इतना ही कह देती थी: "ओह, किसलिये चला गया वह!"

हां, प्रिंस अन्द्रेई के जाने के दो हफ़्ते बाद वह अपने घरवालों को आश्चर्यचकित करते हुए ऐसे अचानक ही अपनी इस मानसिक स्थिति से मुक्त होकर पहले जैसी ही हो गयी। किन्तु उसके चेहरे के नैतिक रूप में ठीक वैसा ही परिवर्तन हो गया था जैसा कि लम्बी बीमारी के बाद बिस्तर छोड़नेवाले बच्चे के चेहरे पर नज़र आता है।

## २५

बेटे के विदेश जाने के बाद पिछले एक साल में बुज़ुर्ग प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच का स्वास्थ्य और स्वभाव – दोनों ही बहुत ख़राब हो गये थे। उनका चिड़चिड़ापन पहले से भी कहीं ज़्यादा बढ़ गया था और प्रिंसेस मरीया को ही किसी कारण के बिना उनके अचानक भड़क उठनेवाले गुस्से का अधिकतर शिकार होना पड़ता था। वह तो मानो जान-बूझकर उसकी दुखती रग को ढूंढ़ते रहते थे, ताकि उसे अधिक से अधिक मानसिक यातना दे सकें। प्रिंसेस मरीया के दो अनुराग-बिन्दु और इसलिये दो ही ख़ुशियां थीं – नन्हा भतीजा निकोलाई और धर्म। इन दोनों को लेकर ही बुज़ुर्ग प्रिंस प्रिंसेस मरीया पर तीखे कटाक्ष करते और उसका मज़ाक़ उड़ाते। किसी भी विषय की चर्चा क्यों न होती, वह बातचीत को बूढ़ी चिरकुमारियों के अन्ध-विश्वासों और लाड़-प्यार से बच्चों को बिगाड़ने की ओर मोड़ देते। "तुम नन्हे निकोलाई को भी अपने समान चिरकुमारी जैसा बनाना चाहती हो। बड़ी बेतुकी बात है – प्रिंस अन्द्रेई को बेटे की ज़रूरत है, चिरकुमारी की नहीं।" या फिर प्रिंसेस मरीया के सामने ही वह कुमारी बुर्येन से पूछते कि उसे स्थानीय पादरी और देव-प्रतिमायें कैसी लगती हैं और उनका मज़ाक़ उड़ाते ...

बुज़ुर्ग प्रिंस लगातार अपनी बेटी के दिल को गहरी ठेस लगाते रहते, किन्तु बेटी को उन्हें क्षमा करने के लिये कोशिश भी नहीं करनी पड़ती थी। क्या वह उसके सामने कभी दोषी हो भी सकते थे? क्या उसके पिता, जो, जैसा कि वह जानती थी, उसे अवश्य प्यार करते हैं, उसके प्रति अन्यायपूर्ण हो सकते थे? और फिर न्यायशीलता है भी क्या चीज़? प्रिंसेस मरीया ने इस गर्वीले "न्यायशीलता" शब्द के बारे में कभी सोचा ही नहीं था। मानवजाति के सभी जटिल नियम उसके लिये एक सीधे-सादे और स्पष्ट नियम में संकेन्द्रित होकर रह गये थे—प्यार और आत्म-बलिदान के नियम में जिसे स्वयं भगवान ने बनाया था जो मानवजाति के लिये प्यार और त्याग की भावना से ओत-प्रोत थे। उसे दूसरे लोगों के न्याय और अन्याय से क्या लेना-देना था? उसे तो स्वयं कष्ट सहना तथा प्यार करना था और यही वह कर रही थी।

जाड़े में प्रिंस अन्द्रेई लीसिये गोरि आया था। उस वक़्त वह इतना ख़ुश, विनम्र-विनीत और स्नेहशील था जितना प्रिंसेस मरीया ने उसे एक मुद्दत से नहीं देखा था। उसने अनुभव किया कि ज़रूर किसी कारण उसमें कोई परिवर्तन हुआ है, मगर प्रिंस अन्द्रेई ने प्रिंसेस मरीया से अपने प्यार की कोई चर्चा नहीं की। रवाना होने के पहले प्रिंस अन्द्रेई की पिता के साथ किसी विषय पर बहुत देर तक बातचीत होती रही और विदा के समय वे दोनों एक-दूसरे से अप्रसन्न थे।

प्रिंस अन्द्रेई के जाने के कुछ ही समय बाद प्रिंसेस मरीया ने लीसिये गोरि से अपनी सहेली यूलिया करागिना को पत्र लिखा। जैसे कि लड़कियां हमेशा सपने संजोया करती हैं, प्रिंसेस मरीया यह सपना संजोये थी कि यूलिया को अपने भाई की पत्नी बनाये। यही यूलिया इस समय तुर्की में अपने भाई के जंग में खेत रहने के कारण शोकग्रस्त थी।

"मेरी प्यारी और मृदुल सहेली यूलिया, ऐसे लगता है कि दुख तो अब हमारा साझा भाग्य है।

"आपकी क्षति इतनी भयानक है कि मैं भगवान की विशेष कृपा के अतिरिक्त, जो आपको प्यार करते हुए आपकी तथा आपकी बहुत अच्छी मां की परीक्षा लेना चाहते हैं, अपने लिये कोई दूसरा स्पष्टीकरण देखने में असमर्थ हूं। ओह, मेरी प्यारी, धर्म और केवल धर्म ही न सिर्फ़ हमें तसल्ली दे सकता है, बल्कि हताश होने से भी बचा सकता है। केवल धर्म ही हमें वह स्पष्ट कर सकता है जिसे उसकी सहायता के बिना मानव समझ ही नहीं सकता। भला किस कारण दयालु, उदात्त, जीवन में सुख पाने में समर्थ, किसी के साथ कोई बुराई न करनेवाले, बल्कि दूसरों के सुख-सौभाग्य के लिये आवश्यक प्राणियों को भगवान के पास बुला लिया जाता है, जबकि बुरे, निकम्मे, हानिकारक या फिर ऐसे लोग इस दुनिया में बने रहते हैं जो ख़ुद अपने तथा दूसरों के लिये भी बोझ होते हैं। मैंने जो पहली मृत्यु देखी और जिसे मैं कभी नहीं भूल सकूंगी, वह मेरी प्यारी भाभी लीज़ा की थी। इस मृत्यु ने मेरे मन पर इसी तरह की छाप छोड़ी। जैसे आप भाग्य से यह पूछती हैं कि आपके बहुत ही अच्छे भाई को क्यों मौत ने आपसे छीन लिया, ठीक ऐसे ही मैं भी यह पूछती थी कि उस फ़रिश्ते जैसी लीज़ा को किसलिये छीन लिया गया जिसने न केवल कभी किसी

के साथ कोई बुराई नहीं की थी, बल्कि जिसकी आत्मा में दयालुता के अतिरिक्त कभी कोई दूसरी भावना ही नहीं आयी थी। और आप कल्पना कर सकती हैं, मेरी प्यारी सहेली, लीज़ा की मृत्यु के बाद पांच साल बीत चुके हैं, और अपनी तुच्छ बुद्धि से मैं अब यह स्पष्ट रूप से समझने लगी हूं कि उसे किसलिये मरना चाहिये था और किस तरह से यह मृत्यु स्रष्टा की असीम दयालुता की ही एक अभिव्यक्ति थी। उसी स्रष्टा की, जिनके सभी कार्य-कलाप, बेशक जिनमें से अधिकांश को हम समझ नहीं पाते, अपनी सृष्टि के प्रति असीम प्यार की ही अभिव्यक्ति होते हैं। मैं अक्सर यह सोचती हूं कि शायद वह फ़रिश्ते के समान इतनी अधिक मासूम थी कि मां के सभी कर्त्तव्य अच्छी तरह से पूरे न कर पाती। युवा पत्नी के रूप में वह अनिन्द्य थी, लेकिन शायद वह इतनी अच्छी मां न बन सकती। अब, वह न केवल हमारे, विशेषतः प्रिंस अन्द्रेई के दिल में निर्मलतम शोक-भावना और स्मृति छोड़ गयी है, बल्कि उस दुनिया में उसे सम्भवतः वह स्थान प्राप्त है जिसकी मैं अपने लिये आशा करने का साहस तक नहीं कर सकती। किन्तु बात सिर्फ़ उसी की नहीं, सारे दुख-शोक के बावजूद इस अकाल और भयानक मृत्यु का मुझपर और मेरे भाई पर बहुत कल्याणकारी प्रभाव पड़ा। उस वक़्त, क्षति के उस क्षण में ये विचार मेरे मन में नहीं आ सकते थे, तब तो मैंने भयभीत होकर इन्हें अपने दिल-दिमाग़ से खदेड़ दिया होता, किन्तु अब वे सर्वथा स्पष्ट और निर्विवाद हैं। मेरी प्यारी सहेली, मैं आपको बाइबल की इस सच्चाई का, जो मेरे लिये जीवन का अकाट्य नियम बन गयी है, विश्वास दिलाने के लिये यह सब कुछ लिख रही हूं कि भगवान की इच्छा के बिना कहीं एक पत्ता तक नहीं हिलता। और भगवान की इच्छा हमारे प्रति असीम प्यार से ही अनुप्रेरित होती है तथा इसलिये हमारे साथ जो कुछ भी होता है, सब हमारी भलाई के लिये ही होता है। आपने पूछा है कि हम अगला जाड़ा मास्को में बितायेंगे या नहीं? आपसे मिलने की अत्यधिक चाह के बावजूद मैं इसकी कोई सम्भावना नहीं देखती और ऐसा चाहती भी नहीं। और आपको हैरानी होगी कि इसका कारण बोनापार्ट है। मैं आपको इसका कारण बताती हूं – मेरे पिता जी का स्वास्थ्य काफ़ी बिगड़ता जा रहा है, किसी तरह की आपत्तियों को तो वह सहन ही नहीं कर सकते और झल्ला उठते हैं। जैसा कि आप जानती हैं, उनकी

इस झल्लाहट का मुख्य कारण तो राजनीतिक मामले हैं। वह इस बात को अपने गले से नीचे नहीं उतार सकते कि बोनापार्ट यूरोप के सभी सम्राटों, ख़ास तौर पर हमारे, महान सम्राज्ञी येकतेरीना के पोते, सम्राट अलेक्सान्द्र के साथ बराबरी के स्तर पर व्यवहार करता है! जैसा कि आपको मालूम है, राजनीतिक मामलों में मेरी बिल्कुल दिलचस्पी नही। किन्तु पिता जी के शब्दों और मिख़ाईल इवानोविच के साथ उनकी बातचीत के आधार पर मुझे दुनिया में हो रही सभी चीज़ों का ज्ञान है और बोनापार्ट को मिलनेवाले मान-सम्मान के बारे में तो मैं विशेष रूप से जानती हूं। मुझे लगता है कि हमारी पूरी धरती पर लीसिये गोरि ही अब एक ऐसी जगह है, जहां उसे फ़्रांस का सम्राट मानने की बात तो दूर, महान व्यक्ति भी नहीं माना जाता। और मेरे पिता जी से यह सब बर्दाश्त ही नहीं होता। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि राजनीतिक मामलों के बारे में अपने विचारों के कारण ही पिता जी मास्को जाने के मामले में कोई उत्साह नहीं दिखाते। उन्हें पहले से ही उन टकरावों की चेतना है जो किसी की भी परवाह किये बिना धड़ल्ले से अपना मत व्यक्त करने के उनके स्वभाव के फलस्वरूप होंगे। वहां उन्हें इलाज से जो लाभ होगा, वह बोनापार्ट से सम्बन्धित अनिवार्य वाद-विवादों के कारण चौपट हो जायेगा। ख़ैर, इस मामले के तय होने में अब बहुत समय नहीं लगेगा। हमारा जीवन पुराने ही ढंग से चल रहा है, सिर्फ़ इतना ही फ़र्क़ है कि भाई अन्द्रेई यहां है। जैसा कि मैं आपको पहले लिख चुकी हूं, पिछले कुछ समय में वह बहुत बदल गया है। पत्नी की मृत्यु के गहरे दुख के बाद वह अभी, केवल इसी वर्ष, मानसिक रूप से स्वस्थ हुआ है। वह फिर से वैसा ही हो गया है, जैसा मैं उसे बचपन से जानती हूं – दयालु, स्नेहशील, सोने के उसी दिलवाला जिसकी मैं किसी से भी तुलना नहीं कर सकती। मुझे लगता है उसकी समझ में यह बात आ गयी है कि उसके लिये जीवन की इति नहीं हो गयी। मानसिक दृष्टि से वह स्वस्थ हुआ है, किन्तु उसका स्वास्थ्य पहले से गिर गया है। पहले की तुलना में वह दुबला हो गया है और जल्दी से उत्तेजित हो उठता है। मुझे उसकी चिन्ता रहती है और मैं ख़ुश हूं कि वह इलाज करवाने के लिये विदेश चला गया जिसके लिये डाक्टर बहुत पहले से ही आग्रह कर रहे थे। मैं आशा करती हूं कि इससे उसकी सेहत अच्छी हो जायेगी।

आपने लिखा कि पीटर्सबर्ग में उसकी एक बहुत ही क्रियाशील, सुशिक्षित और बुद्धिमान युवा व्यक्ति के रूप में चर्चा की जाती है। एक बहन के नाते इस बात का गर्व करने के लिये क्षमा चाहती हूं – मेरे मन में इसके बारे में कभी सन्देह ही पैदा नहीं हुआ था। अपने किसानों से लेकर कुलीनों तक के साथ यहां उसने जो भलाइयां की हैं, उनकी तो गणना ही नहीं की जा सकती। पीटर्सबर्ग में उसे वही मिला है जिसके वह योग्य है। मुझे बड़ी हैरानी होती है कि पीटर्सबर्ग से मास्को तक अफ़वाहें कैसे पहुंच जाती हैं, ख़ास तौर पर ऐसी झूठी अफ़वाह कि मेरे भाई की नताशा रोस्तोवा से सगाई हो गयी है। मैं ऐसा सोच ही नहीं सकती कि अन्द्रेई कभी किसी से शादी करेगा और उसके साथ तो किसी हालत में भी नहीं। इसका पहला कारण तो यह है कि बेशक वह अपनी दिवंगता पत्नी की बहुत कम चर्चा करता है, फिर भी मैं यह जानती हूं कि इस क्षति के दुख ने उसके दिल में इतनी गहरी जड़ जमा रखी है कि वह किसी अन्य नारी को उसका स्थान देने या हमारे नन्हे फ़रिश्ते के लिये विमाता लाने की बात ही नहीं सोच सकता। दूसरा कारण यह है कि जहां तक मैं जानती हूं, यह लड़की प्रिंस अन्द्रेई को पसन्द आ सकनेवाली औरतों में से नहीं है। मेरा ख्याल नहीं कि प्रिंस अन्द्रेई उसे अपनी पत्नी के रूप में चुनेगा और खुलकर स्वीकार करती हूं कि खुद मैं भी ऐसा नहीं चाहूंगी। लेकिन मैं तो लिखने की अपनी तरंग में ही बह गयी और अब दूसरा पृष्ठ समाप्त हो रहा है। तो समाप्त करती हूं, मेरी प्यारी सहेली, आप पर प्रभु की कृपादृष्टि बनी रहे। मेरी प्यारी सखी, कुमारी बुर्येन, आपको चूमती है।

**मरीया।"**

## २६

गर्मी के मध्य में प्रिंसेस मरीया को स्विटज़रलैंड से प्रिंस अन्द्रेई का अनायास ही एक पत्र मिला, जिसमें उसने एक अजीब और अप्रत्याशित सूचना दी थी। प्रिंस अन्द्रेई ने नताशा रोस्तोवा के साथ अपनी सगाई की घोषणा की थी। सारा पत्र अपनी मंगेतर के प्रति उल्लासपूर्ण प्यार और बहन के प्रति कोमल तथा स्नेहपूर्ण विश्वास से ओत-प्रोत था। उसने लिखा था कि वह जैसे अब प्यार करता है,

वैसे उसने पहले कभी नहीं किया था और यह कि उसने ज़िन्दगी को केवल अभी जाना-समझा है। उसने बहन से इस बात के लिये क्षमा-याचना की थी कि जब वह लीसिये गोरि आया था तो इस निर्णय की उससे चर्चा नहीं की थी, यद्यपि पिता जी के साथ उसकी इस सम्बन्ध में बातचीत हुई थी। ऐसा न करने का कारण उसने यह बताया था कि प्रिंसेस मरीया पिता जी से अपनी स्वीकृति देने का अनुरोध करने लगेगी, अपने इस उद्देश्य में सफल न होकर पिता जी को भड़का देगी और उसे ही उनकी सारी नाराज़गी की मुसीबत झेलनी पड़ेगी। इसके अलावा, उसने यह भी लिखा था कि तब यह मामला इस वक़्त की तरह पक्के तौर पर तय नहीं हुआ था। "तब पिता जी ने इसे एक वर्ष के लिये टालने को कहा था। अब छः महीने यानी आधी अवधि बीत चुकी है और मेरा इरादा पहले से भी ज़्यादा मज़बूत हो गया है। अगर डाक्टर मुझे खनिज जल-चिकित्सा के लिये यहां न रोकते तो मैं रूस आ गया होता। लेकिन अब मुझे इसे तीन महीने के लिये और स्थगित करना होगा। तुम मुझे और पिता जी के साथ मेरे सम्बन्धों को जानती हो। मुझे उनसे कुछ भी नहीं चाहिये, मैं हमेशा स्वावलम्बी रहा हूं और रहूंगा। किन्तु उनकी इच्छा के विरुद्ध कोई क़दम उठाकर, उन्हें नाराज़ करके, जबकि शायद वह बहुत समय तक हमारे बीच ही न रहें, मेरी आधी ख़ुशी नष्ट हो जायेगी। मैं अब इसी सम्बन्ध में उन्हें पत्र लिख रहा हूं और तुमसे अनुरोध करता हूं कि तुम कोई अच्छा मौक़ा देखकर उन्हें यह पत्र दे देना और मुझे सूचित करना कि उनका कैसा रवैया है और क्या यह आशा की जा सकती है कि वह नियत अवधि को तीन महीने के लिये कम करने को राज़ी हो जायेंगे।"

बहुत देर तक दुविधा और असमंजस की स्थिति में रहने तथा ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद प्रिंसेस मरीया ने भाई का पत्र पिता जी को दे दिया। अगले दिन बुज़ुर्ग प्रिंस ने उससे शान्तिपूर्वक कहा :

"भाई को लिख दो कि वह मेरे मरने तक इन्तज़ार कर ले... बहुत इन्तज़ार नहीं करना पड़ेगा – जल्द ही मुक्त कर दूंगा उसे..."

प्रिंसेस ने कोई आपत्ति करनी चाही, किन्तु पिता ने उसे बोलने नहीं दिया और ग़ुस्से से अपनी आवाज़ को अधिकाधिक ऊंचा करते चले गये। "कर लो, कर लो शादी, मेरे प्यारे... क्या बढ़िया रिश्तेदार चुने

हैं!.. बड़े बुद्धिमान लोग हैं न? ख़ूब पैसेवाले हैं न? हां, नन्हे निकोलाई की बड़ी अच्छी सौतेली मां होगी। तुम उसे लिख दो कि बेशक कल ही शादी कर ले। नन्हे निकोलाई के लिये वह सौतेली मां बनेगी और मैं बुर्येन से शादी कर लूंगा!.. हा, हा, हा, ताकि वह भी सौतेली मां के बिना न रह जाये! लेकिन एक बात याद रहे कि अपने घर में मैं अब और किसी औरत को क़दम नहीं रखने दूंगा। बेशक शादी कर ले और जैसे चाहे जिये। शायद तुम भी उसी के पास जाकर रहना चाहोगी?" उन्होंने प्रिंसेस मरीया से पूछा। "बड़ी ख़ुशी से जाओ, बड़ी ख़ुशी से, बड़ी ख़ुशी से... बड़ी ख़ुशी से!.."

इस तरह से फट पड़ने के बाद बुज़ुर्ग प्रिंस ने फिर एक बार भी इस मामले की चर्चा नहीं की। किन्तु बेटे की संकल्पहीनता से सम्बन्धित संयत खीझ बेटी के साथ पिता के व्यवहार में व्यक्त हुई। उनके व्यंग्य-बाण चलाने के अब तक विद्यमान विषयों में एक और की वृद्धि हो गयी—विमाता की चर्चा तथा कुमारी बुर्येन की प्रशंसा।

"भला क्यों न शादी करूं मैं उससे?" वह बेटी से कहते। "बहुत अच्छी प्रिंसेस बनेगी वह!" और पिछले कुछ समय में प्रिंसेस मरीया ने परेशान तथा हैरान होते हुए इस बात की तरफ़ ध्यान दिया कि पिता जी वास्तव में ही इस फ़्रांसीसी महिला के साथ अधिकाधिक घनिष्ठता बढ़ाने लगे थे। प्रिंसेस मरीया ने भाई को लिख भेजा कि उसके पत्र की पिता जी पर कैसी प्रतिक्रिया हुई, किन्तु साथ ही यह आशा बंधवाते हुए कि वह पिता जी को इस बात के लिये राज़ी कर लेगी, उसे तसल्ली भी दी।

नन्हा निकोलाई और उसका पालन-शिक्षण, अन्द्रेई और धर्म—प्रिंसेस मरीया के लिये सान्त्वना और सुख के यही स्रोत थे। किन्तु इनके अतिरिक्त, जैसे कि हर व्यक्ति की अपनी निजी आशायें-आकांक्षायें होती हैं, प्रिंसेस मरीया के दिल की गहराई में भी एक सपना, एक आशा छिपी हुई थी जो उसके जीवन की प्रमुख सान्त्वना थी। "भगवान के बन्दों", झक्की भविष्यवक्ताओं और तीर्थ-यात्रियों ने जो बुज़ुर्ग प्रिंस की नज़र बचाकर उसके पास आते रहते थे, उसे यह सान्त्वनापूर्ण सपना और आशा प्रदान की थी। प्रिंसेस मरीया जितना अधिक जी रही थी, जीवन का जितना अधिक अनुभव प्राप्त कर रही थी, उसका जितना अधिक निरीक्षण कर रही थी, उसे उन लोगों की अदूरदर्शिता

से उतना ही अधिक आश्चर्य होता था जो इस दुनिया में ख़ुशी तथा सुख-सौभाग्य पाना चाहते थे। वे असम्भव, भ्रान्तिपूर्ण और पाप का सुख-सौभाग्य पाने के लिये श्रम करते थे, दुख-संताप सहते थे, संघर्ष करते थे, एक-दूसरे के साथ बुराई करते थे। "प्रिंस अन्द्रेई अपनी पत्नी को प्यार करता था, वह मर गयी, उसके लिये इतना ही काफ़ी नहीं, वह एक अन्य औरत के साथ अपने सुख-सौभाग्य की डोर बांधना चाहता है। पिता ऐसा नहीं चाहते, क्योंकि वह अन्द्रेई के लिये ज़्यादा नामी और धनी परिवार की पत्नी लाने को इच्छुक हैं। ये सभी लोग संघर्ष करते हैं, दुख-दर्द सहते हैं, एक-दूसरे को यातना देते हैं और अपनी आत्मा, अपनी अमर आत्मा को क्षणिक सुख के लिये भ्रष्ट करते हैं। न सिर्फ़ यही कि हम ख़ुद यह जानते हैं, बल्कि भगवान के बेटे – ईसा मसीह – ने भी धरती पर आकर हमें यह बताया कि हमारा यह जीवन तो क्षणिक है, यह हमारा परीक्षा-काल है, किन्तु हम सब इसी से चिपक रहे हैं और इसी में सुख-सौभाग्य पाना चाहते हैं। क्यों कोई भी इस बात को नहीं समझता?" प्रिंसेस मरीया सोच रही थी। "इन तिरस्कृत 'भगवान के बन्दों' के अतिरिक्त, जो कंधों पर थैले लटकाये हुए बुज़ुर्ग प्रिंस की नज़र से बचने के लिये पिछले दरवाज़े से मेरे पास आते हैं, कोई भी यह नहीं समझता। और वे इस कारण ऐसा नहीं करते कि बुज़ुर्ग प्रिंस के कोप-भाजन न बन जायें, बल्कि इसलिये कि उन्हें पाप करने से बचायें। ये लोग अपना परिवार, घर-बार और सांसारिक सुख की सारी चिन्तायें छोड़कर तथा मोह-ममता के सभी बन्धन तोड़कर चिथड़े पहने, झूठे नाम रखे जगह-जगह घूमते रहते हैं, किसीके साथ कोई बुराई नहीं करते और सभी–दुतकारने तथा आश्रय देनेवाले – सभी लोगों के लिये दुआ मांगते रहते हैं – इस सचाई और इस जीवन से बढ़कर न तो कोई सचाई और न कोई जीवन है!"

फ़ेदोस्या नाम की एक पचासवर्षीया, नाटी, शान्त और चेचकरू तीर्थ-यात्री थी जो पिछले तीस साल से अधिक समय से नंगे पांव और बेड़ियां पहने घूम रही थी। प्रिंसेस मरीया उसे ख़ास तौर पर बहुत चाहती थी। एक दिन अंधेरे कमरे में, जहां केवल देव-प्रतिमा के सामने एक दीपक ही जल रहा था, फ़ेदोस्या ने प्रिंसेस मरीया को अपनी जीवन-कथा सुनायी। इसे सुनते हुए प्रिंसेस मरीया के दिमाग़ में बहुत ही प्रबल यह विचार आया कि सिर्फ़ फ़ेदोस्या ही जीवन का सही मार्ग ढूंढ़ पायी

है और उसने स्वयं भी तीर्थ-यात्री बन जाने का निर्णय कर लिया। फ़ेदोस्या जब सोने के लिये बिस्तर पर चली गयी तो प्रिंसेस मरीया बहुत देर तक इस मामले पर विचार करती रही और आख़िर उसने तय कर लिया कि बेशक यह बड़ी अजीब बात होगी, फिर भी उसे तीर्थ-यात्री बन जाना चाहिये। उसने सिर्फ़ अपने राज़दान एक पादरी, अकीनफ़ी से ही इस इरादे की चर्चा की और पादरी ने उसके इस इरादे का अनुमोदन किया। तीर्थ-यात्रियों को उपहार देने के बहाने प्रिंसेस मरीया ने अपने लिये तीर्थ-यात्री की सारी चीज़ें – गाढ़े की क़मीज़ और कोट, काला दुपट्टा तथा छाल के जूते – तैयार करवा लिये। अक्सर उस अलमारी के पास जाकर, जहां उसकी ये प्यारी चीज़ें रखी थीं, वह इस दुविधा में पड़ी हुई खड़ी रहती कि उसके इरादे को अमली शक्ल देने का वक़्त आ गया या नहीं।

कभी-कभी तीर्थ-यात्रियों के क़िस्से-कहानियां सुनते हुए वह उनकी सीधी-सादी और स्वाभाविक बातों से, जो प्रिंसेस मरीया के लिये बहुत गहन अर्थ से भरपूर होती थीं, इतनी अधिक भाव-विभोर हो जाती थी कि कई बार सब कुछ छोड़-छाड़कर घर से भाग जाने को तैयार हो गयी। अपनी कल्पना में वह अपने को गाढ़े की क़मीज़ पहने, हाथ में डंडा लिये और कंधे पर थैला लटकाये हुए फ़ेदोस्या के साथ ईर्ष्या और सांसारिक प्रेम तथा इच्छा-अभिलाषा के बिना एक सन्त से दूसरे सन्त के मठ की तीर्थ-यात्रा करते हुए धूल भरी सड़क पर जाते देखती और आख़िर वहां पहुंच जाती जहां न दुख-संताप हैं, न आहें हैं और जहां केवल शाश्वत हर्ष तथा परमानंद है।

"एक जगह पर पहुंचूंगी, पूजा-पाठ करूंगी, वहां की अभ्यस्त और उससे लगाव होने के पहले ही वहां से आगे चल दूंगी। मैं तब तक इसी तरह चलती जाऊंगी, जब तक कि मेरी टांगें जवाब नहीं दे जायेंगी और फिर कहीं लेटकर दम तोड़ दूंगी तथा आख़िर ऐसे शाश्वत और शान्त विश्राम-स्थल पर पहुंच जाऊंगी जहां न दुख-संताप हैं, न आहें! .." प्रिंसेस मरीया सोचती।

किन्तु बाद में पिता और ख़ास तौर पर नन्हे निकोलाई को देखकर उसका इरादा ढुलमुल हो जाता, वह छिप-छिपकर रोती और यह अनुभव करती कि वह पापिन है, क्योंकि पिता और भतीजे को भगवान से ज़्यादा प्यार करती है।

# भाग ४

१

बाइबल के एक आख्यान के अनुसार प्रथम मानव के पतन के पहले श्रमहीनता यानी काहिली उसके आनन्द की एक स्थिति थी। पतित मानव में भी काहिली का यह प्यार बना हुआ है, मगर मानव को दिये गये अभिशाप का प्रभाव अभी तक अपना ख़ूब रंग दिखा रहा है। वह केवल इसलिये नहीं कि हमें एड़ी-चोटी का पसीना एक करके अपनी रोज़ी-रोटी कमानी होती है, बल्कि इसलिये भी कि अपने नैतिक स्वभाव के कारण हम काहिल और साथ ही शान्त नहीं रह सकते। कोई गुप्त आवाज़ हमसे यह कहती है कि अगर हम काहिल हैं तो पापी हैं। अगर इन्सान जीने का कोई ऐसा ढंग ढूंढ़ लेता जिसकी बदौलत वह काहिल रहते हुए यह भी अनुभव कर सकता कि उपयोगी है और अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहा है तो उसे आदिकालीन सुख का एक पक्ष प्राप्त हो जाता। हमारे समाज की एक श्रेणी – सैनिक श्रेणी – को ऐसा अनिवार्य और भर्त्सनाहीन सुख प्राप्त है। इसी अनिवार्य और भर्त्सनाहीन काहिली में तो सैनिक सेवा का मुख्य आकर्षण निहित है।

निकोलाई रोस्तोव, जो सन् १८०७ के बाद से पाव्लोग्राद रेजिमेंट में काम कर रहा था और देनीसोव द्वारा छोड़े गये घुड़सवार स्क्वाड्रन का कमांडर था, इस सुख को बहुत अच्छी तरह से अनुभव कर रहा था।

रोस्तोव ज़रा रूखा और ख़ुशमिज़ाज आदमी बन गया था जिसे उसके मास्कोवासी परिचित बुरे रंग-ढंगवाला मानते, मगर जिसको उसके साथी, मातहत और अफ़सर प्यार करते थे, इज़्ज़त देते थे और जो अपनी ज़िन्दगी से बहुत ख़ुश था। सन् १८०९ में पिछले कुछ समय से मां अक्सर अपने पत्रों में इस बात के लिये अफ़सोस ज़ाहिर करती थीं कि उनकी घरेलू हालत बद से बदतर होती जा रही है, कि उसे घर आना और अपने बूढ़े माता-पिता को ख़ुशी तथा चैन देना चाहिये।

इन पत्रों को पढ़ते हुए निकोलाई को यह डर महसूस होता कि उसे उस वातावरण से बाहर खींचने की कोशिश की जा रही है जिसमें

वह दुनिया के सभी झंझटों-झमेलों से बचकर ऐसी शान्त और चैन की ज़िन्दगी बिता रहा है। वह अनुभव करता था कि देर-सबेर उसे परेशानियों और गड़बड़ मामलों, कारिन्दे के हिसाब-किताब, झगड़ों, साज़िशों, सम्पर्कों-सम्बन्धों, ऊंची सोसाइटी, सोन्या के साथ प्यार और उसे दिये गये वचनवाली दुनिया के भंवर में कूदना पड़ेगा। यह सब कुछ बेहद मुश्किल और उलझा हुआ था। इसलिये वह मां के पत्रों का रूखे और औपचारिकतापूर्ण क्लासिकी ढंग से फ़्रांसीसी में जवाब देता : "प्यारी अम्मां" से शुरू करता और "आपका आज्ञाकारी पुत्र" लिखकर समाप्त करता तथा इस बारे में चुप्पी लगा जाता कि कब घर आने का इरादा रखता है। सन् १८१० में उसे घर से मिलनेवाले एक पत्र में बोल्कोन्स्की के साथ नताशा की सगाई की सूचना दी गयी और यह भी बताया गया कि शादी एक साल बाद होगी, क्योंकि बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की सहमत नहीं हैं। इस ख़त से निकोलाई जल-भुन गया, उसके दिल को बड़ी ठेस लगी। पहली बात तो यह थी कि नताशा के, जिसे वह पूरे परिवार में सबसे ज़्यादा प्यार करता था, घर से जाने के विचार से उसे दुख होता था और दूसरे, हुस्सार के अपने दृष्टिकोण के अनुसार उसे इस चीज़ का भी अफ़सोस हुआ कि सगाई के वक़्त वह वहां नहीं था। अगर वह वहां होता तो उस बोल्कोन्स्की को स्पष्ट कर देता कि उसके साथ रिश्तेदारी करना कोई बहुत सम्मान की बात नहीं है और अगर वह नताशा को प्यार करता है तो अपने झक्की पिता की स्वीकृति के बिना भी उसका काम चल सकता है। थोड़ी देर को वह इस दुविधा में रहा कि छुट्टी ले ले, अब नताशा से ऐसी लड़की के रूप में मिले, जिसकी सगाई हो गयी है, मगर उसी समय युद्धाभ्यास सामने आ गया, सोन्या और घर पर हो रही गड़बड़ की हालत के बारे में विचार आये और उसने फिर से अपना जाना स्थगित कर दिया। किन्तु इसी वर्ष के वसन्त में उसे काउंट से छिपाकर लिखा गया मां का एक पत्र मिला और इस पत्र से यह तय हो गया कि उसे घर जाना ही चाहिये। मां ने लिखा था कि अगर वह घर नहीं लौटेगा और मामले को अपने हाथ में नहीं ले लेगा तो पूरी जागीर की नीलामी हो जायेगी और वे बेघर-बार होकर रह जायेंगे। काउंट इरादे के बेहद कच्चे हैं, मीत्या पर बेहद भरोसा करते हैं, बेहद दयालु हैं, सभी उनकी आंखों में इतनी धूल झोंकते हैं कि सब कुछ बद से बदतर होता जा

रहा है। "अगर तुम मुझे और अपने पूरे कुटुम्ब को दुर्भाग्य का शिकार नहीं बनाना चाहते तो भगवान के लिये फ़ौरन आ जाओ, तुम्हारी मिन्नत करती हूं," काउंटेस ने लिखा था।

इस पत्र ने निकोलाई पर अपना रंग दिखाया। उसकी औसत क़िस्म की समझ ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब उसे **क्या** करना चाहिये।

अब उसे यदि सेवा-निवृत्त नहीं होना था, तो छुट्टी लेकर अवश्य घर जाना चाहिये था। किसलिये जाना चाहिये था, यह वह नहीं कह सकता था। किन्तु दिन के भोजन और फिर झपकी लेने के बाद उसने अपने भूरे, बहुत ही गुस्सैल मार्स घोड़े पर ज़ीन कसने का हुक्म दिया जिसपर उसने बहुत दिनों से सवारी नहीं की थी। झाग उगलते और पसीने से तर इस घोड़े पर वापस लौटकर उसने लाव्रूश्का (देनीसोव का यह नौकर रोस्तोव के पास ही रह गया था) और शाम को अपने यहां आनेवाले दोस्तों से यह कहा कि छुट्टी लेकर घर जा रहा है। उसके लिये यह सोचना बेशक बहुत कठिन और अजीब था कि वह मुख्य सैनिक कार्यालय से इतना जाने बिना (उसके लिये यह बहुत महत्त्वपूर्ण था) ही घर चला जायेगा कि उसे कप्तान बना दिया गया या नहीं या फिर अन्तिम युद्धाभ्यास के लिये उसे सेंट आन्ना पदक से सम्मानित किया जायेगा या नही; उसके लिये यह सोचना बेशक बहुत अजीब था कि वह बादामी रंग के अपने तीन घोड़ों को काउंट गोलुख़ोव्स्की को बेचे बिना चला जायेगा जिनके मामले में उसने शर्त बदी थी कि वह उन्हें दो हज़ार रूबलों में बेचेगा; उसके लिये यह कल्पना करना भी कठिन था कि कैसे वह उस बॉल में हिस्सा न लेकर घर चला जायेगा जो उलानों का मुंह चिढ़ाने के लिये, जिन्होंने अपनी सुन्दरी बोर्जोज़ोव्स्काया के सम्मान में बॉल आयोजित किया था, हुस्सार सुन्दरी प्शाज़्देत्स्काया के सम्मान में ऐसा ही बॉल आयोजित कर रहे थे – फिर भी वह जानता था कि उसे अपनी इस उज्ज्वल और प्यारी दुनिया से उस दुनिया में जाना ही होगा, जहां सब कुछ बेहूदा और उलझा-उलझाया था। एक हफ़्ते बाद वह छुट्टी लेकर चला गया। न केवल रेजिमेंट, बल्कि ब्रिगेड के हुस्सार साथियों ने हर आदमी से पन्द्रह रूबल लेकर उसकी ख़ूब बढ़िया दावत की जिसमें दो बैंडों और दो सहगान-मण्डलियों की व्यवस्था की गयी थी। रोस्तोव ने मेजर बासोव के साथ 'त्रेपाक' रूसी नाच नाचा, नशे में धुत्त अफ़सरों ने रोस्तोव को हवा में उछाला और गले लगाया।

तीसरे स्क्वाड्रन के सैनिकों ने उसे एक बार फिर हवा में उछाला और हुर्रा चिल्लाते रहे। इसके बाद वे रोस्तोव को उठाकर ले गये और उन्होंने उसे स्लेज में जा बैठाया तथा पहली घोड़ा-बदल-चौकी तक विदा करने गये।

जैसा कि हमेशा होता है, सफ़र के आधे रास्ते यानी क्रेमेनचूग से कीयेव तक रोस्तोव के सारे विचार अपने स्क्वाड्रन की तरफ़ ही लौटते रहे। किन्तु आधा रास्ता तय करने के बाद वह बादामी रंग के अपने तीन घोड़ों, अपने क्वाटर मास्टर और सुन्दरी बोर्जोज़ोव्स्काया को भूलने और चिन्तित होते हुए अपने से यह पूछने लगा कि ओतरादनोये पहुंचने पर उसे कैसा हाल-चाल दिखाई देगा। वह घर के जितना अधिक निकट पहुंचता जाता था, उतना ही अधिक, कहीं अधिक अपने घर के बारे में सोचता था ( मानो नैतिक भावना भी गुरुत्वाकर्षण के नियमानुसार निकटता के कारण तीव्रतर होती जा रही थी )। ओतरादनोये गांव से पहले अन्तिम घोड़ा-बदल-चौकी पर उसने कोचवान को वोद्का के लिये तीन रूबल इनाम के तौर पर दिये और छोकरे की भांति हांफता हुआ घर के ओसारे की पैड़ियों पर चढ़ता चला गया।

मिलन के उल्लास और असन्तोष की उस अजीब भावना के बाद जो वास्तविकता के प्रत्याशा के अनुरूप न होने के कारण पैदा होती है – "सब कुछ वैसा ही है, फिर किसलिये मैंने इतनी उतावली की!" – निकोलाई अपने घर की पुरानी दुनिया का अभ्यस्त होने लगा। माता-पिता वैसे ही थे, सिर्फ़ ज़रा बुढ़ा गये थे। उनमें नयी बात तो उनकी कुछ-कुछ बेचैनी की हालत थी और कभी-कभी उनमें मतभेद हो जाते थे जो पहले नहीं होते थे। निकोलाई को जल्द ही यह मालूम हो गया कि घर की बुरी आर्थिक स्थिति ही इसका कारण थी। सोन्या को बीसवां साल चल रहा था। उसका रूप अब और नहीं निखर रहा था, जो कुछ उसमें था, उससे और अधिक वह कोई आशा नहीं बंधवाती थी और ऐसे ही काफ़ी खूबसूरत थी। निकोलाई के आने के बाद से उसकी हर सांस में सुख और प्यार की झलक मिलती थी तथा इस लड़की का निष्ठापूर्ण और दृढ़ प्यार उसके दिल को खुशी प्रदान करता था। सबसे अधिक तो पेत्या और नताशा ने उसे आश्चर्यचकित किया। पेत्या तेरह साल का खासा बड़ा, सुन्दर, हंसमुख, समझदार और शरारती लड़का हो गया था और उसकी आवाज़ मर्दों की तरह भारी

होने लगी थी। नताशा को देख-देखकर तो वह बहुत वक़्त तक हैरान होता तथा हंसता रहा।

"पहले जैसी तो बिल्कुल नही हो," वह कहता।

"तो क्या बदसूरत हो गयी हूं?"

"इसके विपरीत, मगर बड़ी अकड़ दिखाने लगी हो। प्रिंसेस!" उसने फुसफुसाकर कहा।

"हां, हां, हां," नताशा ने ख़ुश होते हुए जवाब दिया।

नताशा ने उसे प्रिंस अन्द्रेई के साथ अपने प्रेम की कहानी सुनायी, यह बताया कि कैसे वह ओतरादनोये में आया था और उसका अन्तिम पत्र दिखाया।

"तो तुम ख़ुश हो न?" नताशा ने पूछा। "मेरे मन को तो अब बड़ा चैन हासिल है, मैं बहुत सुखी हूं।"

"बहुत ख़ुश हूं," निकोलाई ने उत्तर दिया। "वह लाजवाब आदमी है। तो तुम उसे बेहद प्यार करती हो?"

"कैसे समझाऊं मैं तुम्हें यह," वह बोली, "प्यार तो मैंने बोरीस को भी किया, संगीत-शिक्षक और देनीसोव को भी, लेकिन यह वैसा नहीं, बिल्कुल दूसरा मामला है। मेरा मन शान्त है, उसमें किसी प्रकार की दुविधा नहीं। मैं जानती हूं कि उससे अच्छे आदमी नहीं होते और अब मैं राहत तथा ख़ुशी महसूस करती हूं। पहले से बिल्कुल भिन्न मामला है यह..."

निकोलाई ने इस चीज़ के लिये नताशा के सामने अपनी अप्रसन्नता प्रकट की कि विवाह को एक वर्ष तक स्थगित कर दिया गया था। लेकिन नताशा यह साबित करते हुए भाई पर बरस पड़ी कि ऐसा ही होना चाहिये था, कि पिता की इच्छा के बिना शादी करना बुरा होता, कि वह ख़ुद ऐसा ही चाहती थी।

"तुम कुछ भी, कुछ भी नही समझते," उसने कहा। निकोलाई ने प्रत्युत्तर में कुछ नहीं कहा और उसके साथ सहमत हो गया।

नताशा को देखते हुए वह अक्सर अचम्भे में पड़ जाता। उसमें मगाई के बन्धन में बंधी और अपने प्रियतम की जुदाई के कारण प्यार में घुलनेवाली लड़की जैसा कुछ भी नहीं था। वह शान्त, स्थिर और पहले की भांति बिल्कुल ख़ुश रहती थी। निकोलाई को इससे हैरानी होती और बोल्कोन्स्की के साथ उसकी सगाई के बारे में उसके मन में

सन्देह भी पैदा होने लगता। उसे यह विश्वास नहीं होता था कि नताशा के भाग्य का निर्णय हो चुका है, ख़ास तौर पर इसलिये कि उसने प्रिंस अन्द्रेई के साथ उसे एक बार भी नहीं देखा था। उसे लगता था कि इस प्रस्तावित विवाह में ज़रूर कहीं कोई गड़बड़ है।

"इतनी देर के लिये विवाह को स्थगित क्यों किया गया? सगाई की रस्म क्यों अदा नहीं की गयी?" वह सोचता। एक दिन मां के साथ बहन की चर्चा करते हुए उसे यह जानकर आश्चर्य और कुछ हद तक सन्तोष भी हुआ कि उसकी भांति मां को भी कभी-कभी अपने दिल की गहराई में इस विवाह के बारे में विश्वास नहीं होता था।

"देखो, उसने लिखा है," मां की उस निहित विद्वेष भावना के साथ, जो बेटी के भावी दाम्पत्य जीवन के सुख के सम्बन्ध में मां के हृदय में हमेशा बनी रहती है, निकोलाई को प्रिंस अन्द्रेई का पत्र दिखाते हुए काउंटेस ने कहा। "उसने लिखा है कि दिसम्बर से पहले नहीं आयेगा। उसके रुकने का क्या कारण हो सकता है? ज़रूर बीमारी ही! उसकी सेहत बहुत कमज़ोर है। तुम नताशा से यह नहीं कहना। वह ख़ुश नज़र आती है, तुम इस बात की तरफ़ ध्यान नहीं दो। यह उसकी किशोरावस्था के अन्तिम दिन हैं। लेकिन मैं जानती हूं कि हर बार ही जब उसका ख़त आता है तो उसकी क्या हालत होती है। ख़ैर, अगर भगवान ने चाहा तो सब कुछ ठीक हो जायेगा," काउंटेस हर बार ऐसे ही अपनी बात ख़त्म करतीं, "वह लाजवाब आदमी है।"

## २

घर आने पर पहले कुछ दिनों तक निकोलाई गम्भीर और उदास-उदास भी रहा। उसे निकट भविष्य में घर के बेहूदा माली मामलों में दख़ल देने की आवश्यकता परेशान कर रही थी जिसके लिये मां ने उसे बुलाया था। जल्दी से जल्दी इस बोझ को अपने कंधे से उतार फेंकने के लिये आगमन के तीसरे दिन वह बहुत झल्लाया-सा, त्योरी चढ़ाये और नताशा के प्रश्न का कोई उत्तर दिये बिना कि कहां जा रहा है, कारिन्दे मीत्या के घर में गया और उससे **पूरा हिसाब** पेश करने

को कहा। **पूरा हिसाब** क्या बला है, निकोलाई ख़ुद भी मीत्या से कहीं कम जानता था जो भयभीत हो गया था और भौचक्का-सा रह गया था। मीत्या के साथ बातचीत और हिसाब की जांच बहुत देर नहीं चली। ड्योढ़ी में इन्तज़ार कर रहे मुखिया, किसान-प्रतिनिधि और गांव के मुंशी ने दहलते तथा ख़ुश होते हुए शुरू में युवा काउंट की ग़ुस्से से लगातार ऊंची होती, गरजती और चीख़ती आवाज़ सुनी और इसके बाद उन्हें एक के बाद एक गालियों के बहुत-से भयानक शब्द सुनायी दिये।

"चोर-लुटेरा! नीच कृतघ्न!.. कुत्ते की बोटी-बोटी काट डालूं-गा... मुझे पापा जैसा नहीं समझना... सब कुछ चुरा लिया!.. आ-दि, आदि।"

बाद में इन लोगों ने पहले जैसी दहशत और ख़ुशी महसूस करते हुए यह देखा कि कैसे ग़ुस्से से आग-बबूला होता तथा दहकती लाल-लाल आंखों के साथ युवा काउंट मीत्या को गरेबान से पकड़कर बाहर घसीट लाया और डांट-डपट के बीच सुविधाजनक अवसर पाकर बड़ी दक्षता से उसके चूतड़ पर पांव और घुटना मारता हुआ चिल्लाया: "दफ़ा हो जा यहां से, कमीने! ख़बरदार जो फिर सूरत दिखायी!"

मीत्या सिर पर पांव रखकर छः पैड़ियां नीचे उतर गया और फूलों की क्यारी में भाग गया। (यह क्यारी ओतरादनोये में अपरा-धियों के छिपने की जानी-पहचानी जगह थी। ख़ुद मीत्या जब शहर से नशे में धुत्त होकर आता तो इसी क्यारी में छिपता और ओतरादनोये के बहुत-से निवासी मीत्या की नज़र से बचने के लिये यहीं शरण लेते और जानते थे कि यह क्यारी उन्हें मुसीबत से बचा लेगी।)

मीत्या की पत्नी और उसकी सालियां डरे-सहमे चेहरे लिये अपने कमरे के दरवाज़े से, जहां साफ़-सुथरे समोवार में पानी उबल रहा था और छोटे-छोटे टुकड़ों को जोड़कर बनायी गयी रज़ाई से ढका हुआ कारिन्दे का ऊंचा पलंग दिखायी दे रहा था, ड्योढ़ी में झांकने लगीं।

हांफता हुआ युवा काउंट उनकी तरफ़ कोई ध्यान दिये बिना दृढ़ क़दमों से उनके क़रीब से गुज़रकर घर में चला गया।

नौकरानियों से फ़ौरन यह क़िस्सा सुनकर काउंटेस को एक तरफ़ तो इस बात का सन्तोष हुआ कि अब उनकी घरेलू व्यवस्था कुछ सुधर जायेगी, किन्तु दूसरी ओर यह चिन्ता भी हुई कि उनके बेटे पर इसका

क्या प्रभाव पड़ेगा। वह कई बार दबे पांव उसके दरवाज़े के निकट गयीं और यह सुनती रहीं कि कैसे वह बार-बार पाइप सुलगाकर कश पर कश खीच रहा था।

अगले दिन बुज़ुर्ग काउंट ने बेटे को एक तरफ़ ले जाकर सहमी-सी मुस्कान के साथ कहा:

"मेरे बेटे, तुम तो व्यर्थ ही आपे से बाहर हो गये। मीत्या ने मुझे सारा क़िस्सा बताया है।"

"मैं जानता था," निकोलाई ने मन में सोचा, "यहां, इस घर के गड़बड़-झाले का कोई सिर-पैर मेरी समझ में नहीं आयेगा।"

"तुम इसलिये बिगड़ उठे कि उसने सात सौ रूबल का पूरा हिसाब दर्ज नही किया था। मगर वह तो उसे अगले पृष्ठ पर ले गया था और उसे तुमने देखा नहीं।"

"पापा जी, मैं जानता हूं कि वह बदमाश और चोर है। मैंने जो कुछ कर दिया, सो कर दिया। अगर आप नहीं चाहते तो मैं उसे कुछ भी नहीं कहूंगा।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है, मेरे लाल।" (काउंट भी परेशान थे। वह महसूस करते थे कि अपनी पत्नी की जागीर का ढंग से प्रबन्ध नहीं करते हैं और बच्चों के सामने क़ुसूरवार हैं, मगर यह नहीं जानते थे कि हालत को ठीक कैसे करें।) "मैं तुमसे अनुरोध करता हूं कि तुम इस मामले को अपने हाथ में ले लो। मैं बूढ़ा हो गया हूं, मैं..."

"नहीं, पापा जी, अगर मैंने आपका दिल दुखाया है तो आप मुझे माफ़ कर दें। मैं तो आपसे भी कहीं कम यह सब कुछ जानता-समझता हूं।"

"भाड़ में जायें ये किसान, पैसों का झंझट और अगले पृष्ठ पर ले जाया जानेवाला हिसाब-किताब," निकोलाई ने सोचा। "जुए के पैसों का हिसाब तो कभी मैं समझता था, मगर अगले पृष्ठ पर हिसाब ले जाने की बात मेरी समझ के बिल्कुल बाहर है," उसने अपने आपसे कहा और इसके बाद उसने घर के माली मामलों में कभी दख़ल नहीं दिया। हां, एक बार काउंटेस ने बेटे को अपने पास बुलवाकर उसे यह बताया कि उनके पास आन्ना मिख़ाइलोव्ना के नाम की दो हज़ार की हुंडी है और निकोलाई से यह पूछा कि उसके ख़्याल में उसका क्या किया जाये।

"तो आप मेरा ख़्याल जानना चाहती हैं," निकोलाई ने जवाब दिया, "और यह भी कहती हैं कि इसका निर्णय मुझपर निर्भर करता है। तो सुनिये, मुझे न तो आन्ना मिखाइलोव्ना पसन्द है और न ही बोरीस। लेकिन वे कभी हमारे मित्र भी थे और ग़रीब हैं। तो यह है मेरा ख़्याल!" और उसने हुंडी फाड़ डाली तथा ऐसा करके बुज़ुर्ग काउंटेस को ख़ुशी के आंसू बहाते हुए सिसकने को विवश कर दिया। इसके बाद युवा काउंट ने जागीर के बन्दोबस्त के किसी भी काम में कोई दिलचस्पी नहीं ली और बड़े उत्साह से अपने लिये एक नये शौक़ में मस्त हो गया। यह शौक़ था शिकारी कुत्तों की मदद से शिकार खेलने का जिसकी बुज़ुर्ग काउंट ने बड़े पैमाने पर व्यवस्था कर रखी थी।

## ३

जाड़ा शुरू भी होने लगा था, सुबह का पाला पतझर की बारिश से बेहद भीगी ज़मीन को कठोर बनाने लगा था। अगले साल के लिये बोया गया अनाज उगने लगा था और पशुओं द्वारा रौंदे गये गर्मी के कटे खेतों के हल्के पीले डंठलों तथा कूटू के लाल-लाल डंठलों की तुलना में अपनी अलग, चटक हरी छटा दिखा रहा था। पहाड़ियां, टीले और वन, जो जाड़े के लिये जोते गये काली मिट्टी के खेतों और डंठलों के बीच अगस्त महीने के अन्त तक हरे-भरे द्वीपों के समान थे, अब नयी हरी फ़सलों के बीच सुनहरे और चटक लाल रंग के द्वीप बन गये थे। भूरे खरहों का आधा समूर बदल चुका था, लोमड़ियों के बच्चे अपनी मांओं से अलग होने लगे थे और युवा भेड़िये कुत्तों से बड़े हो गये थे। शिकार पर जाने के लिये यह सबसे अच्छा वक़्त था। उत्साही जवान रोस्तोव के शिकारी कुत्ते न केवल शिकार के लिये जाने की अच्छी स्थिति में थे, बल्कि इतने तत्पर थे कि शिकारियों की एक बैठक में यह तय किया गया कि उन्हें तीन दिन तक आराम करने दिया जाये और १६ सितम्बर को लम्बी दूरी के शिकार के लिये रवाना हुआ जाये और इसे दुबरावा* से आरम्भ किया जाये जहां भेड़ियों का अड्डा

---

* शाहबलूत का झुरमुट। – अनु०

था और जिनका कभी शिकार नहीं किया गया था।

तो १४ सितम्बर को ऐसी स्थिति थी।

इस पूरे दिन शिकारी कुत्तों को घर पर रखा गया। पाला पड़ रहा था, ठण्डक तन को काटती थी। किन्तु शाम को बादल छा गये और बर्फ़ पिघलने लगी। १५ सितम्बर को ड्रेसिंग गाउन पहने हुए युवा काउंट ने जब खिड़की से बाहर नज़र दौड़ाई तो उसे ऐसी सुबह दिखाई दी, शिकार के लिये जिससे बेहतर सुबह की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। आकाश तो मानो पिघल रहा था और हवा के बिना धरती पर उतरता आ रहा था। हवा में यदि कोई गतिशीलता थी तो केवल आकाश से नीचे आ रहे कुहासे या धुंध के सूक्ष्म कणों की ही। बाग़ के पेड़ों की नंगी-बुच्ची शाखाओं पर पारदर्शी बूंदें लटकी हुई थीं और उसी समय झड़नेवाले पत्तों पर गिर रही थीं। सब्ज़ियों के बगीचे की गीली, चमकती ज़मीन पोस्त के बीजों की तरह काली थी और थोड़े फ़ासले पर ही कुहासे की धुंधली तथा नम चादर में लुप्त हो जाती थी। निकोलाई गीले और कीचड़ से सने ओसारे में बाहर आया। सड़ते पत्तों और कुत्तों की गन्ध फैली थी। चौड़े पुट्ठों, काली चित्तियों और बड़ी-बड़ी काली आंखोंवाली मील्का नाम की कुतिया मालिक को देखकर उठी, उसने तनकर अपनी पिछली टांगें फैला दीं और ख़रगोश की तरह लेट गयी तथा फिर अचानक ऐसे छलांग लगायी कि मालिक की नाक तथा मूंछों को चाटने में सफल हो गयी। बाग़ की पगडंडी पर खड़ा एक अन्य बोरज़ोई शिकारी कुत्ता* मालिक को देखकर क़मान की तरह अपनी पीठ झुकाये हुए ओसारे की तरफ़ लपका और दुम ऊपर उठाकर निकोलाई की टांगों के साथ अपना तन रगड़ने लगा।

इसी क्षण मन्द सप्तक के सबसे निचले और तार सप्तक के सबसे ऊंचे स्वरों को एकसाथ मिलानेवाला शिकारी का अनूठा आह्वान "ओ-हो!" सुनायी दिया और घर के कोने के पीछे से कुत्तों की देखभाल और उनका प्रशिक्षण करनेवाला बड़ा शिकारी दानीलो

---

* बोरज़ोई – एक क़िस्म का शिकारी कुत्ता जिसका रूस में बड़े पैमाने पर शिकार के लिये इस्तेमाल किया जाता है। उसकी टांगें लम्बी और पतली, बदन छरहरा, थूथन लम्बी होती है और वह बहुत तेज़ दौड़ता है। – सं०

सामने आया। उसके पके, सफ़ेद बाल उक्रइनी ढंग से कटे थे, हाथ में मुड़ा हुआ लम्बा कोड़ा था और झुर्रियोंवाले चेहरे पर आज़ादी तथा दुनिया की हर चीज़ के प्रति तिरस्कार का ऐसा भाव था जिसे केवल शिकारियों के चेहरे पर ही देखा जा सकता है। उसने मालिक के सामने अपनी समूर की ऊंची टोपी उतारी और उसकी ओर तिरस्कार-पूर्वक देखा। किन्तु मालिक के लिये यह तिरस्कार अपमानजनक नहीं था क्योंकि निकोलाई जानता था कि तिरस्कार से सभी कुछ को देखने और अपने को दूसरों से बढ़-चढ़कर माननेवाला यह दानीलो उसका नौकर और शिकारी है।

"अरे, दानीलो!" निकोलाई ने शिकार के इस अच्छे मौसम, कुत्तों और शिकारी को देखते और झेंपते मन से यह अनुभव करते हुए कि उसपर शिकार की वह भावना हावी हो गयी है जब आदमी अपने पहले के इरादों को वैसे ही भूल जाता है, जैसे प्रेयसी की उप-स्थिति में उसे किसी बात की सुध-बुध नहीं रहती, उसे सम्बोधित किया।

"क्या हुक्म है, हुज़ूर?" बड़े डीकन जैसी भारी और ललकार-पुकार के कारण खरखरी हो गयी आवाज़ में उसने पूछा और चुप हो गये मालिक को अपनी दो काली-काली तथा चमकती आंखों से उदासी से देखा। "शिकार की तीव्र चाह पर क़ाबू तो नहीं पा सकोगे?" उसकी आंखें मानो कह रही थीं।

"बढ़िया दिन है न? शिकार के लिये और घुड़सवारी के लिये भी?" निकोलाई ने मील्का को उसके कानों के पीछे सहलाते हुए कहा।

दानीलो ने कोई जवाब नहीं दिया और आंखें मिचमिचायीं।

"पौ फटने पर मैंने उवार्का को भेड़ियों की आवाज़ें सुनने के लिये भेजा था," क्षण भर चुप रहने के बाद उसने भारी आवाज़ में जवाब दिया। "लौटकर उसने बताया कि वह उन्हें ओतरादनोये के जंगल में **ले गयी**, वे वहां हूंक रहे थे। ('ले गयी' से यह अभिप्राय था कि वह मादा-भेड़िया, जिसके बारे में ये दोनों जानते थे, अपने बच्चों को ओतरादनोये के छोटे-से जंगल में ले गयी है जो इनके घर से दो किलोमीटर से कुछ अधिक दूर था।)

"तो चलना चाहिये न?" निकोलाई ने पूछा। "उवार्का को साथ लेकर मेरे पास आ जाओ।"

"जो हुक्म !"

"तो अब तुम कुत्तों को खिलाओ-पिलाओ नहीं।"

"अच्छी बात है, हुज़ूर।"

पांच मिनट बाद दानीलो और उवार्का निकोलाई के बड़े कमरे में आकर खड़े हो गये। दानीलो बेशक लम्बा-तड़ंगा नहीं था, फिर भी उसे देखकर कुछ ऐसी ही अनुभूति होती थी जैसे फ़र्नीचर और लोगों के रहन-सहन के वातावरण में फ़र्श पर घोड़े या भालू को देखकर होती है। दानीलो ख़ुद ऐसा महसूस करता था, हमेशा की तरह दरवाज़े के पास खड़ा था, धीरे-धीरे बोलने और इस बात की कोशिश कर रहा था कि हिले-डुले नहीं ताकि मालिकों की कोई चीज़ न तोड़ दे और जल्दी से जल्दी बात ख़त्म करके बाहर विस्तार में, छत के नीचे से खुले आकाश की छाया में चला जाये।

पूछ-ताछ करने और दानीलो का यह मत जानने के बाद कि कुत्ते अच्छी हालत में हैं (दानीलो ख़ुद शिकार के लिये जाने को बेक़रार था) निकोलाई ने घोड़े पर ज़ीन कसने का हुक्म दिया। लेकिन दानीलो ने जैसे ही जाना चाहा, वैसे ही नताशा बड़ी तेज़ी से कमरे में आयी। उसने अभी तक बाल नहीं संवारे थे, कपड़े नहीं बदले थे और वह आया का दुपट्टा कंधों पर डाले थी। उसके साथ-साथ पेत्या भी भागता हुआ कमरे में दाखिल हुआ।

"तो तुम शिकार के लिये जा रहे हो?" नताशा ने पूछा। "मैं जानती थी कि तुम ऐसा ही करोगे! सोन्या कह रही थी कि नहीं जाओगे, लेकिन मुझे मालूम था कि आज ऐसा अच्छा दिन है कि तुम ज़रूर जाओगे।"

"हां, हम लोग जा रहे हैं," निकोलाई ने मन मारकर कहा, क्योंकि आज वह बड़ी संजीदगी से शिकार करने का इरादा रखता था और इसलिये नताशा तथा पेत्या को अपने साथ नहीं ले जाना चाहता था। "हां, जा रहे हैं सिर्फ़ भेड़ियों का शिकार करने। तुम्हें ऊब महसूस होगी।"

"जानते हो, यही शिकार तो मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द है," नताशा ने जवाब दिया। "यह तो बड़ी बुरी बात है कि ख़ुद जा रहे हो, घोड़े पर ज़ीन कसने को भी कह दिया और हमें बताया तक नहीं।"

"रूसी आदमी का सीधा रास्ता, वह बाधा नहीं जानता! तो

हम भी चल रहे हैं!" पेत्या चिल्ला उठा।

"मगर तुम्हें तो नहीं जाना चाहिये, अम्मां ने कहा है कि तुम्हारा जाना ठीक नहीं," निकोलाई ने नताशा से कहा।

"नहीं, मैं जाऊंगी, ज़रूर जाऊंगी," नताशा ने दृढ़ता से जवाब दिया। "दानीलो, हमारे घोड़ों को तैयार करने और मिख़ाईल से मेरे शिकारी कुत्ते लाने को कह दो," उसने बड़े शिकारी को सम्बोधित किया।

दानीलो को तो अब कमरे में अपना उपस्थित होना ही अशिष्ट और अटपटा-सा लग रहा था, लेकिन जवान मालकिन के साथ भी उसका कोई वास्ता पड़ सकता है, यह तो वह सम्भव ही नहीं मानता था। उसने नज़रें झुका लीं और ऐसे जल्दी से बाहर चला गया मानो उसका इस मामले से कोई सम्बन्ध ही न हो। जाते हुए उसने इस बात का बहुत ही ध्यान रखा कि कहीं भूल से जवान मालकिन के साथ टकरा न जाये।

## ४

बुज़ुर्ग काउंट ने अपने यहां हमेशा ही बड़े पैमाने पर शिकार की सभी सुविधाओं की व्यवस्था बनाये रखी थी और अब यह सब कुछ बेटे को सौंप दिया था। आज यानी १५ सितम्बर को वह ख़ुद भी बड़े रंग में थे और शिकार पर जाने को तैयार हो गये।

एक घण्टे बाद वे सभी, जिन्हें शिकार पर जाना था, ओसारे के पास जमा हो गये। निकोलाई गम्भीर और कठोर मुद्रा बनाये तथा इस तरह यह ज़ाहिर करते हुए कि व्यर्थ की बातों के लिये उसके पास वक़्त नहीं है, नताशा और पेत्या के क़रीब से, जो उसे कुछ बताना चाहते थे, आगे निकल गया। उसने शिकार की सारी तैयारी की ख़ुद जांच की, कुछ शिकारियों और शिकारी कुत्तों के एक दल को विपरीत दिशा से शिकार में भाग लेने को भेज दिया, दोन नस्ल के अपने कुम्मैत घोड़े पर सवार हुआ, सीटी बजाकर अपने शिकारी कुत्तों को बुलाया और खलिहान के पास

से गुज़रते हुए घोड़े को ओतरादनोये के रक्षित वन की ओर ले जानेवाले खेत की तरफ़ बढ़ा ले चला। बुजुर्ग काउंट के वीफ़ल्यान्का नाम के लालीमायल भूरे रंग के बधिया घोड़े को उनके सईस ने सम्भाला और स्वयं काउंट को तो टमटम में बैठकर उनके लिये नियत शिकार की जगह पर पहुंचना था।

शिकारी कुत्तों को सधाने और उनका नियन्त्रण करनेवाले छः व्यक्तियों के साथ शिकार का पीछा करनेवाले चौवन कुत्ते थे। रोस्तोव-परिवार के लोगों के अलावा आठ कुत्तापालक भी इस दल में थे और उनके पीछे चालीस से अधिक बोरज़ोई शिकारी कुत्ते भाग रहे थे। इस तरह रोस्तोव परिवार के कुत्तों के साथ लगभग एक सौ तीस शिकारी कुत्ते और घोड़ों पर सवार बीसेक शिकारी खेतों में निकले।

हर कुत्ता अपने मालिक को और यह जानता था कि उसे किस नाम से पुकारा जाता है। हर शिकारी को अपना काम, स्थान और यह मालूम था कि उसे क्या करना है। बाड़ से आगे निकलते ही सभी किसी तरह के शोर-गुल और बातचीत के बिना बड़े ढंग और शान्ति से ओतरादनोये जंगल की ओर ले जानेवाले रास्ते और खेत में फैल गये।

घोड़े खेत में ऐसे चल रहे थे मानो मोटे क़ालीन पर बढ़ रहे हों और कभी-कभी रास्ते को लांघते हुए डबरों में छप-छप की आवाज़ पैदा करते। धुंध से ढका आकाश मानो अदृश्य रूप से और धीरे-धीरे धरती पर उतरता आता था। वातावरण शान्त, गुनगुना और नीरव था। कभी-कभार किसी शिकारी की सीटी, चाबुक की सटकार या अपनी जगह से भटक जानेवाले कुत्ते की चीख़ सुनायी देती।

एक किलोमीटर से कुछ अधिक दूर जाने पर धुंध की चादर में से कुत्तों के साथ पांच अन्य घुड़सवार सामने से प्रकट हुए। इनके आगे-आगे ताज़गी लिये, बड़ी-बड़ी सफ़ेद मूंछोंवाला एक सुन्दर बुजुर्ग था।

"नमस्ते, चाचा," बुजुर्ग के नज़दीक आ जाने पर निकोलाई ने कहा।

"यह है मज़े की बात!.. मैं जानता था," चाचा कह उठे (यह दूर के रिश्तेदार और रोस्तोवों के मामूली हैसियतवाले पड़ोसी थे)। "मैं जानता था कि तुमसे सब्र नहीं हो सकेगा और ठीक ही

है कि शिकार पर निकल पड़े। यह है मज़े की बात! (यह चाचा का तकिया-कलाम था।) अभी जाकर शिकार कर लो, वरना मेरा गीरचिक यह ख़बर लाया है कि इलागिन परिवारवाले भी शिकार के लिये कोर्निकी में पहुंचे हुए हैं। वे तुम्हारे देखते-देखते ही – यह है मज़े की बात! – भेड़ियों को मार ले जायेंगे।"

"मैं उधर ही तो जा रहा हूं। तो क्या हम कुत्तों का एक ही दल बना दें?" निकोलाई ने पूछा। "इन्हें एकसाथ कर दें..."

शिकारी कुत्तों का एक ही दल बना दिया गया और चाचा तथा निकोलाई साथ-साथ अपने घोड़े बढ़ा ले चले। शॉलों में लिपटी-लिपटायी नताशा, मगर जिसका उत्साहपूर्ण, चमकती आंखोंवाला चेहरा साफ़ दिखाई दे रहा था, अपने घोड़े को तेज़ी से इनके पास दौड़ा लाई। हमेशा उसके साथ और कभी भी पीछे न रहनेवाला पेत्या तथा शिकारी-सईस मिख़ाईल भी, जिसे नताशा की देख-भाल का काम सौंपा गया था, अपने घोड़ों को इनके क़रीब ले आये। पेत्या किसी बात पर हंस रहा था, अपने घोड़े पर चाबुक बरसा तथा उसकी लगाम को झटक रहा था। नताशा अपने अराबचिक नाम के मुश्की घोड़े पर बड़ी होशियारी से सवारी कर रही थी और उसने किसी तरह के प्रयास के बिना दृढ़ता से उसकी लगाम खींचकर उसे रोका।

चाचा ने नापसन्दगी से पेत्या और नताशा की तरफ़ देखा। उन्हें शिकार जैसे संजीदा मामले में बचकाना बातें पसन्द नहीं थीं।

"नमस्ते, चाचा जी, हम भी जा रहे हैं," पेत्या चिल्लाया।

"नमस्ते, नमस्ते, कहीं कुत्तों को नहीं कुचल देना।" चाचा ने कड़ाई से कहा।

"भैया निकोलाई, त्रुनीला कितना अच्छा कुत्ता है! उसने मुझे पहचान लिया," नताशा ने शिकार का पीछा करनेवाले अपने प्यारे कुत्ते के बारे में कहा।

"पहली बात तो यह है कि त्रुनीला कुत्ता नहीं, शिकारी कुत्ता है," निकोलाई ने सोचा और बहन को यह महसूस कराने की कोशिश करते हुए कि इस वक़्त इन दोनों के बीच कितना फ़ासला होना चाहिये, कड़ाई से देखा। नताशा इस बात को समझ गयी।

"चाचा जी, आप यह नहीं सोचियेगा कि हम किसी के आड़े आयेंगे," नताशा ने कहा। "हमारे लिये नियत जगहों पर हम खड़े

हो जायेंगे और वहीं खड़े रहेंगे।"

"और ऐसा करना ही ठीक भी होगा, प्यारी काउंटेस," चाचा ने कहा। "लेकिन घोड़े से नहीं गिर जाइयेगा," उन्होंने और जोड़ दिया, "वरना – यह है मज़े की बात! – सहारा लेने को तो कुछ है नहीं।"

ओतरादनोये का छोटा-सा जंगल दो सौ मीटर से कुछ अधिक दूरी पर दिखाई दिया और शिकारी उसके निकट पहुंच रहे थे। रोस्तोव ने चाचा के साथ अन्तिम रूप से यह तय करके कि वे शिकार का पीछा करनेवाले शिकारी कुत्तों को किस जगह शिकार की तलाश में छोड़ें और नताशा को ऐसी जगह दिखाकर, जहां किसी हालत में भी कोई जानवर नहीं आ सकता था, खड्ड के किनारे-किनारे अपना घोड़ा बढ़ा दिया।

"तो भतीजे, तुम तो बड़े भेड़िये का ही शिकार करोगे," चाचा ने कहा, "कहीं वह तुम्हें चकमा न दे जाये।"

"देखा जायेगा," रोस्तोव ने उत्तर दिया। "काराई, आओ मेरे पीछे!" उसने अपने शिकारी कुत्ते को पुकारते हुए चाचा की बात का जवाब दिया। यह लम्बे-लम्बे रोयों और थूथनी पर घने बालोंवाला बूढ़ा तथा बदसूरत और इस बात के लिये मशहूर शिकारी कुत्ता था कि उसने अकेले ही कभी बड़े भेड़ियों को दबोच लिया था। सभी अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो गये।

शिकार के बारे में बेटे के जोश से परिचित बुजुर्ग काउंट ने उतावली की कि कहीं उन्हें देर न हो जाये और शिकारी अभी अपनी जगह पर पहुंचे ही थे कि वह दो मुश्की घोड़ोंवाली टमटम में हरे-भरे खेतों को लांघकर अपनी जगह पर पहुंच गये। काउंट बहुत ख़ुश नज़र आ रहे थे, उनके चेहरे पर लाली थी और गाल कुछ सिहर रहे थे। उन्होंने अपना समूरी ओवरकोट ठीक-ठाक किया और शिकार के साज़-सामान से लैस होकर अपने मुलायम-चिकने, हृष्ट-पुष्ट, शान्त और दयालु वीफ़ल्यान्का घोड़े पर सवार हो गये जिसके बाल मालिक की तरह ही सफ़ेद होने लगे थे। टमटम को वापस भेज दिया गया। बुजुर्ग काउंट मन से शिकारी न होते हुए भी शिकार के सभी नियमों को बहुत अच्छी तरह से जानते थे। वह अपने घोड़े को उन झाड़ियों के सिरे पर ले गये जिनके सामने खड़े थे, उन्होंने लगाम को ठीक-ठाक किया, ज़ीन

पर ढंग से आसन जमा लिया और अपने को तैयार अनुभव करते तथा मुस्कराते हुए इधर-उधर देखा।

उनका अर्दली सेम्योन चेकमार, जो बड़ा अनुभवी घुड़सवार था, मगर जिसमें अब घुड़सवारी का पहले जैसा फुर्तीलापन नहीं रहा था, उनके क़रीब खड़ा था। वह तीन बड़े शिकारी कुत्तों की, जो अपने मालिक और घोड़े की तरह ही मोटे हो गये थे, डोरी पकड़े थे। दो बूढ़े और समझदार शिकारी कुत्ते डोरी के बिना ही लेटे हुए थे। कोई एक सौ क़दमों की दूरी पर काउंट का दूसरा सईस, जांबाज़ घुड़सवार और जोशीला शिकारी मीत्या खड़ा था। पुरानी परम्परा के अनुसार काउंट ने शिकार के पहले चांदी के चषक को मसालेवाली ब्रांडी से भरकर पिया, कुछ खाया और फिर अपनी मनपसन्द लाल शराब की आधी बोतल पी।

शराब पीने और सवारी करने के फलस्वरूप काउंट इल्या अन्द्रेयेविच के चेहरे पर थोड़ी लाली आ गयी थी, उनकी कुछ-कुछ नम आंखें विशेष रूप से चमक रही थीं और समूर में लिपटे-लिपटाये तथा घोड़े पर सवार वह उस बालक जैसे लग रहे थे जिसे हवाखोरी के लिये बाहर ले जाने के लिये तैयार किया गया हो।

दुबला-पतला और धंसे हुए गालोंवाला चेकमार अपने सारे काम निपटाकर मालिक की तरफ़ देखता जा रहा था। वह बड़ी आत्मीयता से काउंट के साथ तीस साल बीता चुका था और जानता था कि मालिक के अच्छे मूड का मतलब है कि कुछ प्यारी बातचीत होगी। एक अन्य व्यक्ति बड़ी सावधानी से (सम्भवतः उसे पहले से ही ऐसा करने को कह दिया गया था) जंगल से बाहर आया और आकर काउंट के पास खड़ा हो गया। यह सफ़ेद दाढ़ीवाला बूढ़ा व्यक्ति औरतों का गाउन पहने था और उसके सिर पर ऊंची, नुकीली टोपी थी। यह विदूषक था जिसे औरत के नास्तास्या इवानोव्ना के नाम से बुलाया जाता था।

"सुनो, नास्तास्या इवानोव्ना," काउंट ने मज़ाक़ से आंख मारते हुए फुसफुसाकर उससे कहा, "अगर तुम जानवर को डराकर भगा दोगे तो दानीलो तुम्हारी खूब खबर लेगा।"

"मैं कोई दूध पीता बच्चा नहीं हूं," नास्तास्या इवानोव्ना ने जवाब दिया।

"श शी!" काउंट ने सिसकारी भरकर उसे चुप कराते हुए सेम्योन को सम्बोधित किया।

"नताशा को देखा है?" उन्होंने सेम्योन से पूछा। "वह कहां है?"

"वह तो पेत्या के साथ जारोव के पासवाली ऊंची घास में खड़ी हैं," सेम्योन ने मुस्कराते हुए जवाब दिया। "वह हैं तो महिला, मगर शिकार में बड़ी दिलचस्पी रखती हैं।"

"और क्या तुम्हें उसके घुड़सवारी करने के ढंग से हैरानी नहीं होती, सेम्योन?" काउंट ने पूछा। "वह तो किसी भी मर्द की बराबरी कर सकती है!"

"हैरानी कैसे नहीं होगी, हुज़ूर? बड़ी दिलेर, बड़ी फुर्तीली हैं!"

"और निकोलाई कहां है? ल्यादोव के टीले के पास?" काउंट फुसफुसाकर ही यह सब कुछ पूछ रहे थे।

"जी, वहीं हैं। वह तो जानते हैं कि उन्हें कहां खड़े होना चाहिये। वह तो घुड़सवारी की ऐसी बारीकियां से परिचित हैं कि मैं और दानीलो कभी-कभी दांतों तले उंगली दबाकर रह जाते हैं," सेम्योन ने यह जानते हुए कहा कि मालिक को किस तरह की बातों से खुशी होगी।

"खूब बढ़िया घुड़सवारी करता है न? घोड़े पर बैठा हुआ कैसा लगता है?"

"जैसे तस्वीर खींच दी गयी हो! अभी कुछ ही दिन पहले वह लोमड़ी को ज़ावारज़िन्स्क झाड़ियों में से कैसे बाहर लाये। वह उसका पीछा करते हुए घोड़े को घने जंगल से ऐसे उड़ाते हुए बाहर लाये कि कुछ न पूछिये – घोड़ा एक हज़ार रूबल का, मगर घुड़सवार अमूल्य! ऐसा बांका जवान ढूंढ़ पाना आसान नहीं!"

"ढूंढ़ पाना आसान नहीं..." काउंट ने ये शब्द दोहराये। सम्भवतः उन्हें इस बात का अफ़सोस हो रहा था कि सेम्योन ने उनके बेटे की यह प्रशंसा इतनी जल्दी क्यों समाप्त कर दी। "ढूंढ़ पाना आसान नहीं," उन्होंने समूर के ओवरकोट का पल्लू एक ओर को हटाकर नासदानी निकालते हुए कहा।

"कुछ दिन पहले छोटे मालिक अपने सभी तमग़े-पदक लगाये

हुए दिन की प्रार्थना के बाद गिरजाघर से बाहर आ रहे थे कि मिख़ाईल सीदोरिच ..." सेम्योन ने शान्त हवा में स्पष्ट रूप से शिकार का पीछा कर रहे दो या तीन शिकारी कुत्तों का भूंकना सुनकर वाक्य को अधूरा ही छोड़ दिया। उसने उस तरफ़ सिर झुकाकर तथा कान लगाकर भूंक को सुना और चुप रहते हुए उंगली दिखाकर मालिक को चेतावनी दी। "उन्होंने भेड़िये के बच्चे को घेर लिया है..." वह फुसफुसाया, "सीधे ल्यादोव के टीले की ओर ले आये हैं।"

होंठों पर मुस्कान चस्पां किये हुए ही काउंट अपने सामनेवाली वन की संकरी रेखा को बहुत ध्यान से देखने लगे और नसवार सूंघे बिना ही नासदानी को हाथ में लिये रहे। शिकारी कुत्तों की भूंक के फ़ौरन बाद भेड़िये के शिकार के लिये ललकारनेवाली दानीलो की सींगी की भारी-भरकम आवाज़ सुनायी दी। शिकारी कुत्तों का बड़ा दल पहले तीन कुत्तों के साथ मिल गया और कुत्ते पूरे ज़ोर से ऐसी आवाज़ में भौंकने लगे जो यह ज़ाहिर करती है, कि भेड़िये का पीछा किया जा रहा है। घुड़सवार शिकारी अब "हो-हो" नहीं, बल्कि "लो-लो" (यानी भेड़िये को दबोचो) चिल्ला रहे थे और इन सब आवाज़ों में दानीलो की आवाज़ सबसे ज़्यादा ऊंची सुनाई दे रही थी और वह कभी भारी और कभी चीख़ती-सी पतली हो जाती थी। दानीलो की आवाज़ तो मानो सारे जंगल में गूंज रही थी, जंगल से बाहर निकलकर दूर खेतों में भी गूंजती थी।

कुछ क्षण तक यह शोर चुपचाप सुनने के बाद काउंट और उनके सईस को यह विश्वास हो गया कि कुत्ते दो दलों में बंट गये हैं। एक – बड़ा और ख़ास तौर पर बहुत ज़ोर से भूंकता दल दूर होने लगा और दूसरा दल जंगल के साथ-साथ काउंट की ओर बढ़ता आ रहा था और इसी दल के साथ दानीलो का हांका सुनाई दे रहा था। दोनों दलों की आवाज़ें मिल गयीं, फिर अलग हो गयीं और दूर चली गयीं। सेम्योन ने गहरी सांस ली और उस ज़ंजीर को ठीक करने के लिये झुका जिसमें जवान बोरज़ोई शिकारी कुत्ता उलझ गया था। काउंट ने भी गहरी सांस ली और अपने हाथ में नासदानी देखकर उसे खोला और नसवार की चुटकी भर ली।

"वापस आओ!" सेम्योन ने उस बोरज़ोई कुत्ते को ज़ोर से पुकारा जो वन-छोर से आगे चला गया था। काउंट कांपे और उनके

हाथ से नासदानी गिर गयी। नास्तास्या इवानोव्ना घोड़े से उतरकर उसे उठाने लगा।

काउंट और सेम्योन उसकी तरफ़ देख रहे थे। जैसा कि अक्सर होता है, शिकार का शोर क्षण भर में अचानक ही नज़दीक आ गया और ऐसे प्रतीत होने लगा कि भूंकते कुत्ते और हांक लगाता दानीलो बिल्कुल उनके सामने ही हों।

काउंट ने इधर-उधर नज़र दौड़ाई और उन्हें अपने दायीं ओर मीत्या दिखाई दिया जो आंखें फाड़-फाड़कर काउंट की तरफ़ देख रहा था। उसने अपनी टोपी ऊपर उठाकर काउंट का ध्यान सामने की ओर दूसरी दिशा में आकर्षित किया।

"सावधान!" वह ऐसी आवाज़ में चिल्लाया जो यह ज़ाहिर करती थी कि यह शब्द बहुत देर से उसकी ज़बान पर घूम रहा था और बाहर आने को बेचैन था। उसने बोरज़ोई शिकारी कुत्तों को छोड़ दिया और घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए काउंट की तरफ़ आने लगा।

काउंट और सेम्योन घोड़े दौड़ाते हुए वन-छोर से आगे आये और उन्हें अपने बायीं ओर भेड़िया दिखाई दिया जो हल्के-हल्के, दायें-बायें डोलता और छोटी-छोटी कुलांचें भरता हुआ उनके बायीं ओर से उसी वन-छोर की तरफ़ जा रहा था जहां वे खड़े रहे थे। गुस्से में आये हुए कुत्ते बहुत ज़ोर से गुर्रा उठे और डोरी तुड़ाकर घोड़ों की टांगों के पास से गुज़रते हुए भेड़िये की ओर लपक चले।

भेड़िया दौड़ता-दौड़ता रुक गया, दमे के रोगी की तरह बड़े अटपटे ढंग से उसने अपना भारी सिर कुत्तों की ओर घुमाया और पहले की तरह हल्के-हल्के, दायें-बायें डोलते हुए उसने एक, फिर दूसरी छलांग लगायी और पूंछ को सरसराता हुआ झाड़ियों में ग़ायब हो गया। इसी क्षण सामनेवाले वन-छोर से रुदन की तरह चीखते और चकराये हुए से एक के बाद एक, तीन शिकारी कुत्ते सामने आये तथा कुत्तों का पूरा दल खेत को लांघकर तेज़ी से उधर ही दौड़ चला, जिधर भेड़िया भाग गया था। शिकारी कुत्तों के पीछे-पीछे ही जंगली बादामों की झाड़ियों के बीच से दानीलो का भूरा, पसीने के कारण काला दिखाई देनेवाला घोड़ा सामने आया। आगे की ओर झुका हुआ दानीलो उसकी लम्बी पीठ पर गुड़ी-मुड़ी बना बैठा था। उसके सिर पर टोपी नहीं थी और उसके लाल, पसीने से तर चेहरे के ऊपर सफ़ेद,

अस्त-व्यस्त बाल लहरा रहे थे।

"घेर लो, घेर लो! .." वह चिल्ला रहा था। जब उसने काउंट को देखा तो उसकी आंखों में बिजली-सी कौंध गयी।

"छि..! " वह ऊपर उठे चाबुक से काउंट को धमकाते हुए चिल्लाया।

"भेड़िये को... निकल जाने दिया न! .. बड़े शिकारी बने फिरते हैं!" और मानो चकराये तथा डरे-सहमे काउंट पर शब्दों को बरबाद करना बेकार मानते हुए उसने काउंट के विरुद्ध पूरी घृणा से चाबुक को ऊपर उठाया और पसीने से तर और बुरी तरह हांफते घोड़े की बग़लों पर पूरे ज़ोर से बरसाया तथा उसे तेज़ी से शिकारी कुत्तों के पीछे बढ़ा ले गया। काउंट तो पिटे हुए व्यक्ति की तरह वहां खड़े रह गये और होंठों पर मुस्कान लाने की कोशिश करते हुए अपनी ऐसी स्थिति में सेम्योन की सहानुभूति पाने के लिये उन्होंने मुड़कर उसकी तरफ़ देखा। मगर सेम्योन वहां नहीं था। वह घोड़े को झाड़ियों के गिर्द सरपट दौड़ाता हुआ भेड़िये के परिरक्षित वन में घुसने का रास्ता काट रहा था। शिकारी भी दोनों ओर से भेड़िये का पीछा कर रहे थे। मगर भेड़िया झाड़ियों में घुस गया और कोई भी उसे दबोच नहीं पाया।

## ५

इसी बीच निकोलाई रोस्तोव भेड़िये का इन्तज़ार करता हुआ अपनी जगह पर खड़ा था। शिकार के शोर के नज़दीक आने और दूर जाने, शिकारी कुत्तों की जानी-पहचानी भूंक, शिकारियों की आवाज़ों की निकटता और दूरी तथा उनके ऊंची हो जाने से वह यह महसूस कर रहा था कि छोटे वन में क्या हो रहा है। उसे मालूम था कि इस लघु-वन में जवान और बूढ़े भेड़िये हैं, वह जानता था कि पीछा करनेवाले शिकारी कुत्ते दो दलों में बंट गये हैं, कि कहीं शिकार को घेर लिया गया था और कहीं कोई गड़बड़ हो गयी थी। वह किसी भी क्षण शिकार के अपनी तरफ़ आने की आशा कर रहा था। वह इस बारे में तरह-

तरह के हज़ारों अनुमान लगा रहा था कि कैसे और किस दिशा से भेड़िया भागता हुआ आयेगा और वह किस तरह से उसे घेरेगा। उसके मन पर कभी आशा और कभी हताशा छा जाती। अनेक बार उसने भगवान से यह प्रार्थना की कि भेड़िया उसके सामने आ जाये। उसने भगवान की ऐसे मिन्नत-समाजत करते और सच्चे मन से प्रार्थना की जैसे लोग तुच्छ कारणों पर आधारित अत्यधिक उत्तेजना के क्षणों में करते हैं। "मेरे लिये ऐसा कर देना तो तुम्हारे बायें हाथ का खेल है!" उसने भगवान से कहा। "जानता हूं कि तुम महान हो और तुमसे ऐसी चीज़ के लिये प्रार्थना करना पाप है। लेकिन हे भगवान, ऐसा कर दो कि कोई बड़ा भेड़िया मेरे सामने आ जाये और चाचा की आंखों के सामने ही, जो वहां से देख रहे हैं, मेरा काराई नाम का शिकारी कुत्ता उसकी गर्दन दबोच ले।" निकोलाई रोस्तोव ने इस आध घण्टे में एस्प के नौउम्र वृक्षों के झुरमुट के ऊपर खड़े दुबले-पतले दो शाहबलूतोंवाले वन-छोर, पानी द्वारा बहा दिये गये कगारवाली खाई और दायीं ओर झाड़ियों के पीछे से ज़रा-सी दिखाई देनेवाली चाचा की टोपी को टकटकी बांधकर, तनावपूर्ण और बेचैन दृष्टि से देखा।

"नहीं, मुझे ऐसा सौभाग्य प्राप्त नहीं होगा," रोस्तोव सोच रहा था, "और भगवान के लिये ऐसा कर देना कितनी मामूली बात है! लेकिन ऐसा नहीं होगा! क्या जुए में, क्या जंग में, मेरी तो हमेशा ही तक़दीर फूटी रही है।" उसके मस्तिष्क में बहुत तेज़ी और बड़ी स्पष्टता से आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई तथा दोलोखोव के साथ जुए में हारे गये तैंतालीस हज़ार रूबल के दृश्य घूम गये। "जीवन में बस, एक बार ही एक बड़े भेड़िये को मार लूं, इससे अधिक मैं और कुछ नहीं चाहता!" अपने कानों और आंखों पर ज़ोर डालते, बायीं, और फिर से दायीं ओर देखते तथा शिकार के शोर के मामूली से मामूली परिवर्तन को भी बहुत ध्यान से सुनते हुए वह मन ही मन सोच रहा था। उसने फिर से दायीं ओर दृष्टि डाली और खुले मैदान में से किसी चीज़ को अपनी ओर भागे आते देखा। "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!" रोस्तोव ने उसी तरह से गहरी सांस लेते हुए सोचा जैसे वह व्यक्ति गहरी सांस लेता है जिसकी चिरप्रतीक्षित मनोकामना पूरी हो जाती है। रोस्तोव को उसके जीवन की सबसे बड़ी खुशी मिल गयी

थी और वह भी इतनी आसानी और सीधे-सरल ढंग से, किसी तरह के शोर, चमक-दमक और धूम-धड़ाके के बिना। रोस्तोव को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था और उसका यह सन्देह एक पल से अधिक समय तक बना रहा। भेड़िया आगे भागा आ रहा था और उसने अपने रास्ते में आ जानेवाली खाई को भद्दे ढंग से लांघा। यह सफ़ेद पीठ, पके बालों और बड़े, लाल पेटवाला बूढ़ा भेड़िया था। वह स्पष्टतः यह विश्वास करते हुए कि कोई भी उसे नहीं देख रहा है, बड़े इतमीनान से दौड़ रहा था। रोस्तोव ने दम साधे हुए मुड़कर कुत्तों पर नज़र डाली। भेड़िये को देखे बिना और कुछ भी समझे बिना उनमें से कुछ लेटे हुए थे, कुछ खड़े थे। बूढ़ा काराई नाम का शिकारी कुत्ता सिर पीछे को मोड़े और पीले दांत निकाले हुए झुंझलाहट से पिस्सू की तलाश कर रहा था और पिछली टांगों को दांतों से काट रहा था।

"हुश, हुश," रोस्तोव ने होंठ फुलाकर फुसफुसाते हुए कहा। शिकारी कुत्ते पट्टों के छल्ले खनखनाते और कान ऊपर उठाते हुए उछलकर खड़े हुए। काराई ने अपनी पिछली टांग को खुजला लिया, कान ऊपर उठाकर खड़ा हुआ और उसने धीरे से अपनी पूंछ हिलाई जिसपर बालों के कुछेक गोले लटक रहे थे।

"कुत्तों को छोड़ूं या नहीं छोड़ूं?" निकोलाई ने उस समय अपने आपसे यह प्रश्न किया, जब भेड़िया जंगल से दूर होता हुआ उसकी तरफ़ आ रहा था। अचानक भेड़िये की पूरी सूरत ही मानो बदल गयी। अपने ऊपर जमी हुई इन्सानी आंखों को देखकर, जिन्हें उसने शायद अब तक कभी नहीं देखा था, वह सिहरा, उसने शिकारी की तरफ़ ज़रा अपना सिर घुमाया, रुका और सम्भवतः यह सोचा: "पीछे लौटूं या आगे जाऊं? अरे, कुछ भी हो, आगे ही बढ़ूंगा!.." शायद उसने अपने आपसे यह कहा और पीछे मुड़कर देखे बिना हल्की-हल्की, धीमी-धीमी, सहज, किन्तु दृढ़तापूर्ण छलांगें मारता हुआ आगे बढ़ चला।

"हुश, हुश!.." निकोलाई परायी-सी आवाज़ में चिल्ला उठा और उसका बढ़िया घोड़ा टीले से सरपट नीचे दौड़ चला, वह रास्ते में आनेवाले गहरे गड्ढे को लांघ गया और बिल्कुल भेड़िये की सीध में बढ़ने लगा। बोरज़ोई शिकारी कुत्ते घोड़े से भी अधिक तेज़ दौड़ते

और उसे पीछे छोड़ते हुए आगे जा रहे थे। निकोलाई न तो अपनी चीख़ें सुन रहा था, न यह अनुभव कर रहा था कि वह बहुत तेज़ी से घुड़सवारी कर रहा है, न तो कुत्तों और न उस जगह को ही देख रहा था जिसपर उसका घोड़ा तूफ़ानी तेज़ी से बढ़ा जा रहा था। वह तो केवल भेड़िये को ही देख रहा था जो अपनी दिशा बदले बिना पहले से अधिक तेज़ी से छलांगें मारता हुआ घाटी में से भागा जा रहा था। काली चित्तियों और चौड़ी पीठवाली मील्का ही सबसे पहले भेड़िये के क़रीब पहुंची और उसके अधिकाधिक निकट होने लगी। अधिक निकट, और अधिक निकट ... लो, वह उसके बिल्कुल नज़दीक पहुंच गयी। किन्तु भेड़िये ने कनखियों से ज़रा उसकी तरफ़ देखा और मील्का उसपर झपटने के बजाय, जैसा कि वह हमेशा करती थी, अचानक अपनी पूंछ ऊपर उठाकर अगले पंजों पर रुकने लगी।

"हुश, हुश!" निकोलाई चिल्लाया।

लाल रंग का ल्युबीम नाम का शिकारी कुत्ता मील्का के पीछे से आगे लपका, तेज़ी से भेड़िये पर झपटा और उसने उसकी पिछली टांगों को पकड़ लिया, किन्तु उसी क्षण भयभीत होकर दूसरी तरफ़ भाग गया। भेड़िया बैठ गया, उसने अपने दांत किटकिटाये, उठा और फिर से छलांगें मारता हुआ आगे बढ़ चला। कोई एक मीटर की दूरी पर सभी शिकारी कुत्ते उसका पीछा कर रहे थे, मगर उसके नज़दीक जाने की हिम्मत नहीं करते थे।

"तो यह हाथ से निकल जायेगा! नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिये," फटी आवाज़ में चिल्लाना जारी रखते हुए निकोलाई ने सोचा।

"काराई! हुश! .." वह बूढ़े शिकारी कुत्ते को, जो अब उसकी एकमात्र आशा था, नज़रों से ढूंढ़ते हुए चिल्लाया। काराई अपनी बूढ़ी हड्डियों का पूरा ज़ोर लगाता, भेड़िये को देखता हुआ उससे थोड़ा हटकर, ताकि उससे आगे निकलकर उसपर झपटे, बोझल ढंग से छलांगें मारता बढ़ा जा रहा था। किन्तु भेड़िये की तेज़ और कुत्ते की धीमी छलांगों से यह स्पष्ट था कि काराई का अनुमान ग़लत था। निकोलाई को थोड़ी दूरी पर ही अपने सामने अब वह वन दिखाई दे रहा था जहां पहुंचने पर भेड़िया सम्भवतः हाथ से निकल जा सकता था। इसी समय उसे अपने सामने शिकारी कुत्ते और घोड़े पर शिकारी दिखाई दिया जो भेड़िये की तरफ़ लगभग सीधा ही लपक रहा था।

अभी भी कुछ आशा बाक़ी थी। कोई पराया, काली धारियोंवाला कत्थई रंग का जवान, लम्बा, बोरज़ोई शिकारी कुत्ता बड़ी तेज़ी से भेड़िये पर झपटा और उसने उसे लगभग नीचे गिरा दिया। लेकिन भेड़िया ऐसी तेज़ी से, जैसी कि उससे उम्मीद नहीं की जा सकती थी, उठा, कत्थई रंग के इस जवान कुत्ते पर झपटा और उसने उसके बदन में अपने दांत गड़ा दिये – बग़ल से बहते ख़ून में लथपथ होते इस कुत्ते ने ज़ोर से चीख़ते हुए मिट्टी में अपना सिर घुसेड़ दिया।

"प्यारे काराई! मेरे अच्छे, बूढ़े कुत्ते!.." निकोलाई रोते हुए चिल्लाया...

पिछली टांगों के ऊपर पूंछ के बालों के गोले लहराता हुआ बूढ़ा शिकारी कुत्ता काराई कुछ देर के विराम की बदौलत भेड़िये के क़रीब पहुंचने का फ़ासला कम करने में सफल हो गया था और उससे सिर्फ़ पांच क़दमों की दूरी पर था। भेड़िये ने मानो ख़तरे को महसूस करते हुए कनखियों से काराई की तरफ़ देखा, अपनी पूंछ को टांगों के बीच और अधिक दबा लिया तथा अधिक तेज़ी से दौड़ने लगा। किन्तु इसी क्षण – निकोलाई केवल इतना ही देख पाया कि काराई के साथ मानो कुछ हुआ था – वह पलक झपकते ही भेड़िये पर झपटा और उसके साथ जूझता हुआ उस गहरे गड्ढे में जा गिरा जो उनके सामने था।

निकोलाई ने गहरे गड्ढे में जिस क्षण शिकारी कुत्तों को भेड़िये से उलझते देखा, जब उसे उनके नीचे से भेड़िये का पके-सफ़ेद बालोंवाला समूर, उसकी फैली हुई पिछली टांग, दबे कान तथा डरा-सहमा तथा मुश्किल से सांस ले पाता हुआ सिर दिखाई दिया (काराई उसका गला दबोचे था), तो यह क्षण, जब निकोलाई ने यह सब देखा, उसके जीवन का सुखदतम क्षण था। उसने भेड़िये के बदन में खंजर घोंपने के लिये घोड़े से नीचे उतरने के विचार से ज़ीन का सिरा भी थाम लिया था कि अचानक भेड़िये का सिर कुत्तों के इस दल के ऊपर दिखाई दिया और इसके बाद उसकी टांगें गड्ढे के सिरे पर टिकी हुई नज़र आयीं। उसने अपने दांत किटकिटाये (काराई अब उसका गला नहीं दबोचे था), वह पिछली टांगों के सहारे गड्ढे के बाहर कूदा और पूंछ को टांगों के बीच दबाये तथा कुत्तों से अलग होता हुआ आगे भाग चला। काराई, जिसके बाल तने हुए थे, जिसे सम्भवतः चोट लग गयी थी या जो घायल हो गया था, बमुश्किल गड्ढे से बाहर निकला।

"हे भगवान! भला ऐसा क्यों हुआ है?" निकोलाई बहुत दूखी मन से चिल्ला उठा।

चाचा के दल का एक शिकारी दूसरी ओर से सरपट घोड़ा दौड़ाता और भेड़िये का रास्ता काटता हुआ आया तथा उसके कुत्तों ने फिर से भेड़िये को रोक लिया, फिर से घेर लिया।

निकोलाई, उसका सईस, चाचा और उसका शिकारी चीखते-चिल्लाते तथा कुत्तों को उकसाते हुए भेड़िये के इर्द-गिर्द मंडरा रहे थे और जब-जब वह रुककर बैठता, उसे घेर लिया जाता तो उसी क्षण घोड़ों से नीचे कूदने को तैयार हो जाते। किन्तु हर बार ही जब वह कुत्तों से मुक्त होकर जंगल की तरफ़ तेज़ी से भागने लगता, जहां उसकी जान बच सकती थी, तो वे फिर से अपने घोड़ों को उसके पीछे दौडाने लगते।

भेड़िये को घेरने के इस शोर के आरम्भ में ही शिकारियों की हुश-हुश की आवाज़ें सुनकर दानीलो वन-छोर पर आ गया था। उसने देखा था कि कैसे काराई ने भेड़िये को दबोच लिया था और यह मानते हुए अपने घोड़े को आगे नहीं बढ़ाया था कि क़िस्सा ख़त्म हो गया। किन्तु जब शिकारी घोड़ों से नीचे नहीं उतरे, भेड़िया कुत्तों से मुक्त होकर फिर तेज़ी से दौड़ने लगा तो दानीलो पुनः अपने घोड़े को भेड़िये की तरफ़ नहीं, बल्कि सीधे वन की तरफ़ सरपट दौड़ाने लगा, ताकि उससे आगे निकलकर उसका उसी तरह रास्ता रोके जैसे काराई ने किया था। इसी दिशा में बढ़ने की बदौलत उसका घोड़ा उस वक़्त भेड़िये के पास पहुंच गया, जब चाचा के कुत्तों ने उसे दूसरी बार रोका।

दानीलो किसी तरह का शोर मचाये बिना चुपचाप अपने घोड़े को ताबड़-तोड़ दौड़ाता रहा था, उसके बायें हाथ में नंगा खंजर था और वह दायें हाथ से अपने बुरी तरह हांफते भूरे घोड़े की बग़लों पर ऐसे चाबुक की मूठ मारता जाता था मानो वह मूसल हो।

निकोलाई उस वक़्त तक न तो दानीलो को देख सका, न उसे उसकी कोई आवाज़ ही सुनायी दी, जब तक कि उसका ज़ोर से सांस लेता और बेहद हांफता हुआ भूरा घोड़ा उसके पास से आगे नहीं निकल गया और उसे किसी के गिरने की आवाज़ नहीं सुनायी दी। उसी समय उसने यह देखा कि कुत्तों के बीच दानीलो भेड़िये के कान पकड़ने

की कोशिश करते हुए उसकी पीठ पर गिरा हुआ है। कुत्तों, शिकारियों और भेड़िये के लिये भी अब यह स्पष्ट था कि मामला ख़त्म हो गया। डर के मारे कान दबाये हुए भेड़िये ने उठने की कोशिश की, मगर कुत्तों ने उसे नीचे दबा दिया। दानीलो ज़रा उठा, मानो ठोकर खाते हुए गिरा और जैसे कि सांस लेने के लिये लेट रहा हो, वह अपने पूरे वज़न के साथ भेड़िये के ऊपर गिर गया और उसने उसके कान पकड़ लिये। निकोलाई ने भेड़िये के बदन में खंजर घोंपना चाहा, लेकिन दानीलो फुसफुसाया: "ऐसा नहीं करो, हम इसका मुंह बन्द करके इसे रस्सों से बांध देंगे।" – और अपनी स्थिति बदलकर उसने भेड़िये की गर्दन पर अपना पांव टिका दिया। भेड़िये के जबड़े में डंडा फंसा दिया गया, उसे ऐसे कसा गया मानो लगाम पहनायी गयी हो, उसकी टांगें बांध दी गयीं और दानीलो ने उसे दो बार दायें-बायें लुढ़काया।

ख़ुशी से खिले और थके-हारे चेहरोंवाले शिकारियों ने ज़िन्दा भेड़िये को डरकर पीछे हटते और नथुने फरफराते घोड़े पर लाद दिया तथा गुर्राते कुत्तों को साथ लिये हुए पहले से नियत मिलने की जगह पर पहुंचे। शिकार का पीछा करनेवाले कुत्तों ने दो तथा बोरज़ोई कुत्तों ने तीन जवान भेड़ियों को दबोचा था। शिकारी अपने-अपने शिकार दिखाने और क़िस्से सुनाने के लिये जमा हुए। सभी बड़े भेड़िये को देखने आते थे जो कुतरा हुआ डंडा मुंह में दबाये, अपना बड़ा-सा सिर नीचे लटकाये अपने इर्द-गिर्द जमा कुत्तों और लोगों की इस भीड़ को अपनी बड़ी-बड़ी तथा शीशे जैसी चमकती आंखों से देख रहा था। जब कोई उसे छूता तो वह अपनी बंधी हुई टांगों को कंपकंपाते हुए हिंस्र और साथ ही सरल दृष्टि से सब की तरफ़ देखता।

काउंट इल्या अन्द्रेयेविच ने भी इसके पास आकर इसे छुआ।

"ओह, कितना बड़ा है," उन्होंने कहा। "बहुत बड़ा है न?" उन्होंने उसके पास खड़े दानीलो से पूछा।

"हां, बहुत बड़ा है, हुज़ूर," दानीलो ने जल्दी से टोपी उतारते हुए जवाब दिया।

बुजुर्ग काउंट को याद हो आया कि कैसे उन्होंने भेड़िये को हाथ से निकल जाने दिया था और कैसे दानीलो ने इसके लिये उन्हें डांट पिलाई थी।

"वैसे भैया मेरे, तुम हो तो बड़े ग़ुस्सैल," काउंट ने कहा। दानीलो ने कोई उत्तर नहीं दिया और केवल शर्माते हुए बाल-सुलभ विनम्रता तथा मधुरता से मुस्करा दिया।

## ६

बुजुर्ग काउंट घर चले गये। नताशा और पेत्या यह वादा करके कि जल्द ही घर लौट जायेंगे, शिकारी-दल में ही रुके रहे। चूंकि अभी थोड़ा ही वक़्त बीता था, इसलिये शिकारी-दल आगे चल दिया। दोपहर को शिकारियों ने अपने कुत्तों को लम्बे और गहरे खड्ड के उस भाग में छोड़ दिया, जहां नौउम्र वृक्षों का घना जंगल उगा हुआ था। कटे हुए खेत में खड़े निकोलाई को अपने सभी शिकारी दिखाई दे रहे थे।

निकोलाई के सामने हरा-भरा खेत था और वहां उसका एक शिकारी जंगली बादामों की उभरी हुई झाड़ी के पीछे खड़ा था। शिकारी कुत्तों को अभी-अभी छोड़ा गया था और निकोलाई को अपने सुपरिचित वोल्तोर्न कुत्ते के जब-तब भौंकने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। दूसरे कुत्ते उसका साथ देते, कभी चुप हो जाते और कभी फिर से भौंकने लगते। एक मिनट बाद जंगल की ओर से इस बात का संकेत देनेवाली आवाज़ सुनाई दी कि लोमड़ी का पीछा किया जा रहा है और पूरा शिकारी-दल इकट्ठा होकर निकोलाई से दूर हटता तथा खड्ड के सिरे पर भागता हुआ हरे-भरे खेतों की तरफ़ बढ़ चला।

निकोलाई को नौउम्र वृक्षों से ढके खड्ड के किनारे-किनारे लाल टोपियां पहने और सरपट घोड़े दौड़ाते शिकारी, यहां तक कि शिकारी कुत्ते भी दिखाई दे रहे थे और वह दूसरी, हरे-भरे खेतोंवाली दिशा में किसी भी क्षण लोमड़ी के नज़र आने की आशा कर रहा था।

गड्ढे में खड़े हुए शिकारी ने अपने घोड़े को दौड़ाया और कुत्तों को छोड़ दिया। निकोलाई को लाल, छोटे क़द की और अजीब-सी एक लोमड़ी दिखाई दी जो अपनी पूंछ फैलाये हुए बड़ी तेज़ी से हरे-भरे खेतों में से भागी जा रही थी। शिकारी कुत्ते उसका पीछा करने लगे। लीजिये, वे ( कुत्ते ) उसके क़रीब पहुंच गये, लीजिये, लोमड़ी अपनी

फूली पूंछ को घुमाते हुए उनके बीच अधिकाधिक तेज़ी से चक्कर काटने लगी, लीजिये, किसी का सफ़ेद कुत्ता उसपर झपट पड़ा, उसके बाद काला कुत्ता भी, सब कुछ गड्डमड्ड हो गया और ज़रा-ज़रा हिलते-डुलते कुत्ते, एक-दूसरे के साथ अपने पुट्ठों को सटाकर तथा सितारे जैसा आकार बनाकर खड़े हो गये। दो शिकारी अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए कुत्तों के पास पहुंचे। उनमें से एक के सिर पर लाल टोपी थी और दूसरा, किसानों का हरा कुरता पहने कोई पराया शिकारी था।

"यह क्या क़िस्सा है?" निकोलाई सोचने लगा। "यह शिकारी कहां से आ गया? यह तो चाचा का शिकारी भी नहीं है।"

शिकारियों ने लोमड़ी को कुत्तों से झपट लिया और उसे ज़ीन के पीछे पेटी से बांधने के बजाय देर तक वही खड़े रहे। उनके क़रीब ही लम्बी लगामों और ज़ीनों की झलक देते घोड़े खड़े थे तथा कुत्ते लेटे हुए थे। शिकारी हाथों को हिला रहे थे और लोमड़ी के साथ कुछ कर रहे थे। वहीं से लड़ाई-झगड़े का संकेत करनेवाली सींगी की आवाज़ सुनाई दी।

"यह इलागिन का शिकारी है जो हमारे इवान के साथ किसी बात के लिये झगड़ा कर रहा है," निकोलाई के सईस ने कहा।

निकोलाई ने सईस को नताशा तथा पेत्या को अपने पास बुला लाने के लिये भेज दिया और खुद घोड़े को क़दम-क़दम चलाता हुआ उधर बढ़ गया जहां शिकारी अपने कुत्तों को जमा कर रहे थे। कुछ शिकारी झगड़े की जगह की तरफ़ अपने घोड़ों को सरपट दौड़ा ले गये।

निकोलाई घोड़े से नीचे उतरा और नताशा तथा पेत्या के साथ, जो उसके पास पहुंच गये थे, शिकारी कुत्तों के क़रीब खड़ा होकर यह समाचार पाने की प्रतीक्षा करने लगा कि मामला कैसे ख़त्म हुआ। वह शिकारी, जिसके साथ इलागिन के शिकारी का झगड़ा हुआ था, अपने घोड़े के ज़ीन के पीछे लोमड़ी को बांधे हुए वन-छोर से बाहर निकला और जवान मालिक के निकट आया। उसने दूर से ही अपनी टोपी उतार ली और आदर से बात करने की कोशिश की। मगर उसका रंग उड़ा हुआ था, वह हांफ रहा था और उसके चेहरे पर क्रोध झलक रहा था। उसकी आंख के पास चोट का निशान दिखाई दे रहा था, मगर उसे शायद इसका एहसास नहीं था।

"वहां किस बात के लिये झगड़ा हो गया था?" निकोलाई ने पूछा।

"झगड़ा कैसे नहीं होगा, वह हमारे शिकारी कुत्तों के सामने से शिकार को मार ले जाना चाहता था। लोमड़ी को दबोचा तो मेरी धूसर रंग की कुतिया ने था। जाओ, जाकर बिगाड़ लो मेरा जो बिगाड़ सकते हो! लोमड़ी को छीन लेना चाहता था! मैंने उसपर एक हाथ जमा दिया। वह बंधी हुई है मेरी काठी के पीछे। इसका मज़ा चखना चाहते हो?" शिकारी ने खंजर की तरफ़ इशारा और शायद अभी भी यह कल्पना करते हुए कहा कि वह अपने दुश्मन से बात कर रहा है।

शिकारी के साथ और अधिक बात न करके निकोलाई ने बहन नताशा तथा भाई पेत्या से अनुरोध किया कि वे यहीं उसका इन्तज़ार करें और ख़ुद उधर घोड़ा बढ़ा ले चला जहां इलागिन का यह शत्रु-तापूर्ण शिकारी-दल था।

झगड़े में जीत हासिल करनेवाला शिकारी अपने घोड़े को शिका-रियों के बीच ले गया और वहां अपने सहानुभूतिपूर्ण जिज्ञासुओं को अपनी वीरता का क़िस्सा सुनाने लगा।

बात यह थी कि इलागिन, जिसके साथ रोस्तोवों की अनबन थी और मुक़दमा चल रहा था, उन जगहों पर शिकार के लिये आता था जिन्हें परम्परा के अनुसार रोस्तोवों की जगहें माना जाता था। उसने अब मानो जान-बूझकर अपने लोगों को उस वन के क़रीब भेज दिया था, जहां रोस्तोव-परिवारवाले शिकार कर रहे थे और उसने अपने शिकारी को पराये कुत्तों का शिकार छीन लेने की अनुमति दी थी।

निकोलाई ने इलागिन को कभी नहीं देखा था, मगर उसने इस ज़मींदार की उद्दंडता और झगड़ालूपन के बारे में बहुत-सी अफ़वाहें सुनी थीं। चूंकि अपनी राय और भावनाओं के मामले में वह हमेशा अति की सीमा तक जाता था, इसलिये इलागिन को भी जी-जान से नफ़रत करता था और उसे अपना सबसे बड़ा दुश्मन मानता था। वह ग़ुस्से से उबलता हुआ, अपने चाबुक की मूठ को कसकर हाथ में पकड़े तथा अपने शत्रु के विरुद्ध दृढ़ और भयानकतम कार्रवाई करने के लिये तैयार होकर अपने घोड़े को उसकी तरफ़ ले जा रहा था।

निकोलाई वन के छोर से थोड़ा ही आगे गया था कि उसे दो

सईसों को साथ लिये, ऊदबिलाव के समूर की टोपी पहने और बढ़िया मुश्की घोड़े पर सवार एक मोटा-सा कुलीन अपनी ओर आता दिखाई दिया।

दुश्मन की जगह इलागिन के रूप में निकोलाई ने अपने सामने एक प्रभावपूर्ण और शिष्ट कुलीन को पाया जो जवान काउंट के साथ जान-पहचान करने को बहुत उत्सुक था। निकोलाई रोस्तोव के क़रीब पहुंचने पर उसने ऊदबिलाव के समूर की टोपी ऊपर उठा ली, यह कहा कि जो घटना हो गयी थी, उसके लिये उसे बड़ा अफ़सोस है, कि वह पराये कुत्तों के शिकार को छीनने की कोशिश करनेवाले शिकारी को सज़ा देने का हुक्म देगा, काउंट से परिचित होने का अनुरोध किया और यह पेशकश की कि वह उसके वन में शिकार करने चले।

नताशा इस बात से डरते हुए कि भाई कोई ख़तरनाक हरकत न कर दे, बेचैन होती हुई कुछ फ़ासले पर अपने घोड़े को उसके पीछे-पीछे बढ़ाती जा रही थी। यह देखकर कि शुत्र मैत्री-भाव से एक-दूसरे का अभिवादन कर रहे हैं, वह अपने घोड़े को उनके पास ले गयी। इलागिन ने ऊदबिलाव के समूर की अपनी टोपी को पहले से भी अधिक ऊपर उठाकर नताशा का अभिवादन किया और मधुरता से मुस्कराते हुए कहा कि काउंटेस शिकार के प्रति अपने उत्साह और सुन्दरता की दृष्टि से भी, जिसके बारे में उसने बहुत कुछ सुना था, डियाना* का मूर्त्त रूप हैं।

अपने शिकारी की बदतमीज़ी का बुरा असर दूर करने के लिये इलागिन ने बहुत ज़ोर देकर रोस्तोव से यह अनुरोध किया कि वह उसके टीले के पासवाले वन में चले जो एक किलोमीटर से कुछ अधिक दूर था, जिसे उसने अपने लिये ही सुरक्षित रखा था और जो, उसके शब्दों में, ख़रगोशों से भरा पड़ा था। निकोलाई मान गया और शिकारी-दल पहले की तुलना में दुगुना बड़ा होकर आगे चल दिया।

इलागिन के टीले का रास्ता खेतों में से जाता था। शिकारी एक क़तार में बढ़ने लगे। मालिक लोग साथ-साथ घोड़े बढ़ा रहे थे। चाचा, रोस्तोव और इलागिन यह कोशिश करते हुए कि उनमें से कोई यह ताड़ न ले, चोरी-छिपे एक-दूसरे के कुत्तों को देख रहे थे और विह्वल

---

* रोम की पौराणिक कथा के अनुसार शिकार की देवी। – सं०

होते हुए दूसरों के कुत्तों में अपने कुत्तों की टक्कर के कुत्ते ढूंढ़ रहे थे।

इलागिन के शिकारी कुत्तों में छोटी-सी, बढ़िया नसल की, नाज़ुक-सी, मगर इस्पाती-सी मांस-पेशियों, पतली-सी थूथन और बड़ी-बड़ी आंखों तथा सफ़ेद चित्तियोंवाली लालीमायल कत्थई रंग की कुतिया के सौन्दर्य ने रोस्तोव को विशेष रूप से चकित किया। उसने इलागिन के कुत्तों की फुर्ती, उनकी बढ़िया शिकार-क्षमता के बारे में सुना था और यह सुन्दर कुतिया उसे अपनी मील्का की प्रतिद्वंद्विनी प्रतीत हुई।

इस वर्ष की फ़सल के बारे में गम्भीर बातचीत के दौरान, जिसे इलागिन ने शुरू किया था, निकोलाई ने उसकी सफ़ेद चित्तियोंवाली लालीमायल कत्थई कुतिया की ओर संकेत किया।

"आपकी यह कुतिया अच्छी है!" उसने लापरवाही से कहा। "फुर्तीली है?"

"यह? हां, अच्छी है, कुछ शिकार कर ही लेती है," इलागिन ने येरज़ा नामक अपनी इस कुतिया के बारे में उदासीनता से जवाब दिया जिसे ख़रीदने के लिये उसने एक साल पहले अपने पड़ोसी को भूदासों के तीन परिवार दिये थे। "तो काउंट, आपके यहां भी फ़सल कोई ख़ास अच्छी नहीं हुई?" उसने दोनों के बीच चल रही बातचीत को जारी रखते हुए कहा। और यह उचित मानते हुए कि जवान काउंट द्वारा की गयी उसकी कुतिया की प्रशंसा के जवाब में उसे भी पीछे नहीं रहना चाहिये, उसने उसके कुत्तों पर नज़र डाली और मील्का को चुना जो अपने चौड़े पुट्ठों के लिये उसे जंची थी।

"आपकी यह काली चित्तियोंवाली कत्थई रंग की कुतिया ख़ासी अच्छी है – बढ़िया है," उसने कहा।

"हां, बुरी नहीं, कुछ दौड़ लेती है," निकोलाई ने जवाब दिया। "काश, खेत में कोई बड़ा ख़रगोश भागता नज़र आ जाये, तब मैं तुम्हें दिखाऊं कि कैसी है मेरी यह कुतिया!" निकोलाई ने मन ही मन सोचा और मुड़कर अपने सईस से कहा कि वह उस आदमी को एक रूबल इनाम देगा जो खेत में छिपे किसी बड़े ख़रगोश को ढूंढ़ निकालेगा।

"यह चीज़ मेरी समझ से बाहर है," इलागिन कहता गया, "कि जानवरों और कुत्तों के मामले में क्यों दूसरे शिकारी इतने ईर्ष्यालु होते हैं। मैं आपसे अपनी बात कहता हूं, काउंट। मुझे तो शिकार खेलने

से ही खुशी हासिल हो जाती है। इस तरह के लोगों का साथ हो... इससे अधिक आदमी और क्या चाह सकता है," (उसने ऊदबिलाव के समूर की अपनी टोपी फिर से नताशा के सामने ऊपर उठा ली)। "लेकिन कितने जानवरों का शिकार कर लिया गया, मैं ऐसी गिनती के फेर में कभी नहीं पड़ता। मुझे इससे कोई मतलब नहीं!"

"सो तो है ही।"

"या यह कि दूसरे के कुत्ते ने शिकार को दबोच लिया, मेरे कुत्ते ने नहीं – मुझे तो बस, शिकार देखने का मज़ा मिल जाये। मैं ठीक कह रहा हूं न, काउंट? इसके अलावा मैं यह मानता हूं..."

"हो-हो-हो!" इसी वक़्त पीछे रुक गये एक शिकारी की लम्बी आवाज़ सुनायी दी। वह चाबुक ऊपर उठाये हुए एक कटे खेतवाले छोटे-से टीले पर खड़ा था तथा उसने फिर से लम्बी आवाज़ में "हो-हो-हो" की पुकार दोहरायी। (इस आवाज़ और ऊपर उठे हुए चाबुक का यह अर्थ था कि वह अपने सामने एक लेटा हुआ ख़रगोश देख रहा है।)

"लगता है कि उसे ख़रगोश नज़र आ गया है," इलागिन ने लापरवाही से कहा। "तो क्या ख़्याल है, हम चलें उसका शिकार करने, काउंट?"

"हां, चलना चाहिये... लेकिन क्या मिलकर ही ऐसा करें?" निकोलाई ने इलागिन की येरज़ा नामक कुतिया और चाचा के रुगाई नामक कुत्ते की ओर देखते हुए कहा जिनके साथ उसे अपने कुत्तों की होड़ करने का कभी अवसर नहीं मिला था। "अगर ये मेरी मील्का से बाज़ी मार ले गये तो?" चाचा और इलागिन के साथ-साथ ख़रगोश की तरफ़ घोड़ा बढ़ाते हुए वह सोच रहा था।

"ख़रगोश बड़ा है न?" इलागिन ने ख़रगोश को देखनेवाले शिकारी के नज़दीक पहुंचते हुए पूछा और कुछ उत्तेजित होकर इधर-उधर देखा तथा सीटी बजाकर येरज़ा को अपने पास बुला लिया...

"और आप, मिख़ाईल नीकानोरिच?" इलागिन ने चाचा से पूछा। चाचा नाक-भौंह सिकोड़े थे।

"मेरे टांग अड़ाने में क्या तुक है! आपके कुत्ते तो ऐसे हैं – यह है मज़े की बात! – जिनके लिये एक-एक गांव देकर हरेक को ख़रीदा गया है, वे तो हज़ारों रूबलों के हैं। आप दोनों अपने-अपने कुत्तों

का मुक़ाबला करवायें और मैं तमाशा देखता रहूंगा।"

"रुगाई! हे, हे!" चाचा ने अपने कुत्ते को आवाज़ दी। "मेरे प्यारे रुगाई!" उन्होंने ये शब्द और जोड़ दिये और इस तरह इस कुत्ते के प्रति अपने प्यार तथा उस आशा को अभिव्यक्ति दी जो वह अपने इस लाल कुत्ते से रखते थे। नताशा इन दो बुज़ुर्गों और उसके भाई द्वारा मन में छिपायी जानेवाली विह्वलता को देख और अनुभव कर रही थी तथा स्वयं भी बेचैन हो रही थी।

चाबुक ऊपर उठाये हुए शिकारी छोटे-से टीले पर खड़ा था और मालिक लोग अपने घोड़ों को क़दम-क़दम बढ़ाते हुए उसके क़रीब पहुंच रहे थे। क्षितिज के पास चल रहे शिकारी कुत्ते और घोड़ों पर सवार शिकारी भी, मगर मालिक लोग नहीं, ख़रगोश से दूर हटते जा रहे थे। पूरा शिकारी-दल धीरे-धीरे और शान्ति से आगे बढ़ रहा था।

"उसका सिर किधर है?" ख़रगोश को देखनेवाले शिकारी की तरफ़ कोई सौ क़दम बढ़ आने पर निकोलाई ने पूछा। किन्तु शिकारी के जवाब देने के पहले ही अगले दिन के पाले का अनुमान लगानेवाला ख़रगोश उछलकर बैठ गया। शिकार का पीछा करनेवाले बंधे कुत्तों का बड़ा दल ज़ोर से भौंकता तथा बड़ी तेज़ी से टीले से नीचे भागता हुआ ख़रगोश का पीछा करने लगा। बोरज़ोई शिकारी कुत्ते, जो खुले थे, सभी ओर से पीछा करनेवाले कुत्तों तथा ख़रगोश के पीछे लपके। जान-बूझकर अपने घोड़ों को धीरे-धीरे बढ़ा रहे छोटे-बड़े शिकारी "रुको!" चिल्लाते और इस तरह कुत्तों को ग़लत दिशा में जाने से रोकते तथा बोरज़ोई कुत्तों के शिकारी "हो-हो!" चिल्लाकर उनका निर्देशन करते हुए अपने घोड़ों को मैदान में सरपट दौड़ाने लगे। शान्त इलागिन, निकोलाई, नताशा और चाचा यह न समझ पाते हुए कि कैसे और किधर जा रहे थे, अपने घोड़ों को उड़ाये लिये जाते थे और उन्हें सिर्फ़ एक ही बात की चिन्ता थी कि कहीं पल भर को भी शिकार पर से उनकी नज़र न चूक जाये। ख़रगोश ख़ासा बड़ा-तगड़ा और फुर्तीला था। उठकर बैठने के बाद वह फ़ौरन ही नहीं भाग चला। उसने अचानक सभी तरफ़ से गूंज उठनेवाली आवाज़ों और घोड़ों की टापों को कान लगाकर सुना। इसके बाद उसने कोई दसेक बार धीरे-धीरे छलांगें लगायीं, कुत्तों को अपने नज़दीक आ जाने

दिया और आख़िर अपने लिये दिशा चुनकर तथा ख़तरे को समझकर उसने कान दबाये और सिर पर पांव रखकर भाग चला। वह कटे हुए खेत में लेटा रहा था, मगर अब उसके सामने हरा-भरा खेत था और वहां दलदली, गीली ज़मीन थी। ख़रगोश को देखनेवाले शिकारी के ही दो कुत्ते ख़रगोश के सबसे ज़्यादा नज़दीक थे, उन्हीं की ख़रगोश पर सबसे पहले नज़र पड़ी और वही उसका पीछे करने लगे। किन्तु वे अभी उसके निकट नहीं पहुंच पाये थे कि इसी क्षण इलागिन की सफ़ेद चित्तियोंवाली लालमायल कत्थई येरज़ा उसके बिल्कुल क़रीब पहुंच गयी, ख़रगोश की पूंछ पर नज़र टिकाकर वह बड़े ज़ोर से उसपर झपटी और यह समझते हुए कि उसने उसे दबोच लिया है, लट्टू की तरह घूमती हुई नीचे लुढ़क गयी। ख़रगोश ने अपनी पीठ को कमान की तरह तान लिया और पहले से अधिक तेज़ी से दौड़ने लगा। येरज़ा के पीछे-पीछे चौड़े पुट्ठोंवाली मील्का बहुत ज़ोर से भागती हुई आई और बड़ी तेज़ी से ख़रगोश का पीछा करने लगी।

"मेरी लाड़ली! मेरी प्यारी!" निकोलाई की ख़ुशी से छलकती ऊंची आवाज़ सुनाई दी। ऐसे प्रतीत हुआ कि मील्का अभी उसपर झपटेगी और उसे दबोच लेगी। मगर वह ख़रगोश के बराबर जा पहुंची और उससे आगे निकल गयी। ख़रगोश अचानक रुककर बैठ गया था। सुन्दर येरज़ा फिर से उसका पीछा करने लगी, ख़रगोश की पूंछ के क़रीब बनी रही मानो फ़ासले का अनुमान लगा रही हो ताकि इस बार ग़लती न हो जाये और वह उसकी पिछली टांग को पकड़ लेने में सफल रहे।

"मेरी प्यारी, मेरी अच्छी येरज़ा!" इलागिन मानो परायी-सी आवाज़ में विलाप कर रहा था। किन्तु येरज़ा उसकी इस विनती पर कान नहीं दे रही थी। ठीक इसी क्षण, जब यह आशा की जा सकती थी कि वह उसे दबोच लेगी, ख़रगोश मुड़ गया और तेज़ी से हरे-भरे तथा कटे खेत की मेंड़ पर भागने लगा। फिर से येरज़ा और मील्का एकसाथ जुते दो घोड़ों की तरह अग़ल-बग़ल दौड़ती हुई ख़रगोश का पीछा करने लगीं। किन्तु ख़रगोश के लिये मेंड़ पर भागना ज़्यादा आसान था और कुत्ते इतनी तेज़ी से उसके पास नहीं पहुंच पा रहे थे।

"रुगाई! मेरे प्यारे रुगाई! यह है मज़े की बात!" इसी क्षण यह नयी, ऊंची आवाज़ सुनाई दी और चाचा का लाल, कुबड़ी

पीठवाला शिकारी कुत्ता अपनी पीठ को कमान की तरह तानकर ख़ूब तेज़ी से दौड़ता हुआ अपने आगे जा रही दोनों कुतियों के बराबर हो गया, उनसे आगे निकल गया। वह अपनी सुध-बुध भूलकर ख़रगोश पर लपका, उसने उसे मेंड़ पर से हरे-भरे खेत में धकेल दिया, पहले से भी ज़्यादा ग़ुस्से से तथा घुटनों तक कीचड़ में धंसता हुआ दूसरी बार ख़रगोश पर झपटा और तब सिर्फ़ इतना ही दिखाई दिया कि कैसे कीचड़ से लथपथ उसकी पीठ ख़रगोश के साथ लोट-पोट होती चली गयी। कुत्ते उसके गिर्द सितारा-सा बनाये हुए थे। क्षण भर बाद सभी लोग कुत्तों की भीड़ के पास जा खड़े हुए। बेहद ख़ुश चाचा ही घोड़े से उतरे और उन्होंने ख़रगोश के दोनों पिछले पंजे काट डाले*। ख़रगोश को झटकते हुए ताकि ख़ून निकल जाये, चाचा उत्तेजना से बेचैन आंखों और हाथों-पैरों को अटपटे ढंग से हिलाते-डुलाते अपने इर्द-गिर्द देख रहे थे और स्वयं यह न समझते हुए कि किससे तथा क्या कह रहे हैं, कुछ बोलते जा रहे थे। "यह है मज़े की बात... यह है कुत्ता जो... सभी से बाज़ी मार ले गया – हज़ारों रूबलोंवालों और एक रूबलवालों से भी – यह है मज़े की बात!" वह हांफते और ग़ुस्से से इर्द-गिर्द देखते हुए कहते जा रहे थे मानो किसी को डांट-डपट रहे हों, मानो सभी उनके दुश्मन हों, सभी उनका अपमान करते हों और आख़िर अब तो उन्हें सबका घमण्ड चूर करने में सफलता मिल गयी हो। "तो ऐसे हैं तुम्हारे ये हज़ारों रूबलोंवाले – यह है मज़े की बात!"

"रुगाई, यह लो पंजा!" उन्होंने कीचड़ से सना ख़रगोश का कटा हुआ पंजा अपने कुत्ते के सामने फेंकते हुए कहा। "तुम इसके लायक़ हो। यह है मज़े की बात!"

"वह बेदम हो गयी थी, तीन बार अकेली ने ही उसे जा घेरा था," निकोलाई भी किसी की बात न सुनते और यह परवाह न करते हुए कि कोई उसके शब्दों पर कान दे रहा है या नहीं, बोलता जा रहा था।

"एक तरफ़ से जाकर उसपर झपटी!" इलागिन का सईस कह रहा था।

---

* शिकारियों में ऐसी परम्परा है कि वे ख़रगोश का एक पिछला पंजा शिकार करनेवाले कुत्ते को पुरस्कारस्वरूप खाने को दे देते हैं। – सं०

"जब एक बार उसे भूल हुई तो उसके बाद तो कोई घटिया-सा कुत्ता भी उसे दबोच सकता था," तेज़ सवारी और उत्तेजना के कारण सुर्ख़ चेहरेवाला और बुरी तरह से हांफता हुआ इलागिन इसी समय कह रहा था। इसी वक़्त नताशा सांस लिये बिना छलकती ख़ुशी और उल्लास के कारण इतने ज़ोर से चीख़ रही थी कि सब के कान बज उठे। इस चीख़ से उसने उस भावना को अभिव्यक्ति दी जिसे बाक़ी सभी शिकारी एकसाथ बोलते हुए व्यक्त कर रहे थे। यह चीख़ इतनी अजीब थी कि अगर कोई दूसरा वक़्त होता तो ऐसी प्रचण्ड चीख़ से ख़ुद वह भी लज्जित हुई होती और दूसरे भी हैरान रह जाते। चाचा ने स्वयं बड़े फुर्तीले और अच्छे ढंग से ख़रगोश को ज़ीन के पीछे पेटी से बांधा, ऐसा करते हुए मानो सबकी भर्त्सना की और ऐसे अन्दाज़ में जैसे कि वह किसी से बात ही न करना चाहते हों, अपने लाखी रंग के घोड़े पर सवार होकर आगे चल दिये। चाचा को छोड़कर बाक़ी सभी उदास और खिन्न मन से अपने घोड़ों को आगे बढ़ाने लगे और बहुत देर बाद ही अपनी पहले जैसी दिखावटी उदासीनता की मनः-स्थिति को लौटा पाये। बहुत समय तक ये सभी लाल रंग के रुगाई नाम के कुत्ते को देखते रहे जो कीचड़ से सनी, कुबड़ी पीठ के साथ, पट्टे के छल्ले को खनखनाता तथा विजेता की शान्त-गम्भीर मुद्रा बनाये हुए चाचा के घोड़े के पीछे-पीछे भागता चला जा रहा था।

"जब तक किसी जानवर को दबोचने का प्रश्न सामने नहीं आता, मुझे भी दूसरे कुत्तों जैसा ही कुत्ता समझो। लेकिन ऐसा मौक़ा आने पर मेरे दूसरे ही तेवर होते हैं!" निकोलाई को लग रहा था कि इस कुत्ते की मुद्रा मानो यही कह रही थी।

बहुत देर बाद जब चाचा अपने घोड़े को निकोलाई के घोड़े के क़रीब लाकर उससे बात करने लगे तो निकोलाई को इसी बात से बड़ी ख़ुशी हुई कि जो कुछ हुआ था, उसके बाद भी चाचा ने उसके साथ बात करने की मेहरबानी की थी।

## ७

शाम के वक़्त जब इलागिन निकोलाई से विदा लेकर चला गया

तो निकोलाई ने अपने को घर से इतनी दूर पाया कि उसने चाचा का यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया कि वह अपने शिकारी-दल को चाचा के मिख़ाइलोवका गांव में रात बिताने के लिये छोड़ दे।

"और अगर आप लोग भी कुछ देर को मेरे यहां चलें – यह है मज़े की बात! तब तो बहुत ही अच्छा रहे," चाचा बोले। "देखिये न, मौसम नम है, थोड़ा आराम कर लीजिये, और फिर आप छोटी काउंटेस को टमटम में घर ले जा सकते हैं," चाचा ने कहा। यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया, एक शिकारी को टमटम लाने के लिये ओतरादनोये भेज दिया गया और निकोलाई, नताशा तथा पेत्या चाचा के यहां चल दिये।

चाचा के पांच-छः छोटे-बड़े नौकर मालिक का स्वागत करने के लिये घर के मुख्य-द्वार पर भागे आये। दसियों बूढ़ी, छोटी और बड़ी भूदास औरतें घोड़ों पर आ रहे शिकारियों को देखने के लिये पिछले दरवाज़े के पास जमा हो गयीं। नताशा के रूप में एक कुलीना को घोड़े पर आते देखकर इन भूदास औरतों की जिज्ञासा इस हद तक बढ़ गयी कि वे उसकी उपस्थिति के कारण किसी प्रकार की लज्जा अनुभव किये बिना उसके क़रीब जाकर उसे घूरने और उसके सामने ही ऐसे टीका-टिप्पणी करने लगीं मानो वह इन्सान न होकर कोई बेजान अजूबा हो जो उसके बारे में कही जानेवाली बातों को न तो सुन सकती हो, न समझ सकती हो।

"अरी, अरीनका, देख तो यह कैसे एक ही तरफ़ दोनों टांगें लटकाये बैठी है! ख़ुद तो बैठी है, लेकिन उसके स्कर्ट का पल्लू कहां जा रहा है... यह देख, सींगी भी है!"

"बाप, रे बाप, खंजर भी है!.."

"ज़रूर तातार है!"

"अरी, तू नीचे क्यों नहीं गिरी?" इनमें सबसे ज़्यादा दबंग औरत ने नताशा से सीधे-सीधे ही पूछ लिया।

चाचा झाड़-झंखाड़ से ढके बगीचे में खड़े लकड़ी के मकान के ओसारे के सामने घोड़े से नीचे उतरे, नौकरों पर नज़र डालकर हुक्म देते हुए चिल्लाये कि फालतू लोग चलते बनें और सम्मानित मेहमानों तथा शिकारी-दल के स्वागत-सत्कार के लिये सभी आवश्यक प्रबन्ध किये जायें।

सभी भूदास नौकर इधर-उधर भाग गये। चाचा ने सहारा देकर नताशा को घोड़े से नीचे उतारा और उसका हाथ थामकर ओसारे की लकड़ी की हिलती-डुलती पैड़ियों पर से घर में ले गये। प्लस्तर के बिना लट्ठों की दीवारोंवाला घर बहुत साफ़-सुथरा नहीं था। इसमें रहनेवालों का उद्देश्य इसे इतना अधिक साफ़ रखना नहीं था कि कहीं कोई दाग़-धब्बा नज़र न आये, बल्कि यह कि वह उपेक्षित न लगे। ड्योढ़ी में ताज़ा सेबों की महक थी और भेड़ियों तथा लोमड़ियों की खालें लटकी हुई थीं।

ड्योढ़ी के बाद चाचा अपने मेहमानों को साथ लिये हुए एक छोटे-से हॉल में गये जिसमें तह होनेवाली मेज़ और लाल कुर्सियां रखी थीं, इसके बाद दीवानखाने में गये जिसमें भोज की लकड़ी की गोल मेज़ और सोफ़ा रखा था तथा इसके पश्चात अपने कमरे में पहुंचे जिसमें फटा हुआ सोफ़ा था, खस्ताहाल क़ालीन बिछा था और सुवोरोव, चाचा के माता-पिता तथा फ़ौजी वर्दी में स्वयं उनका अपना छविचित्र भी नज़र आ रहा था। इस कमरे में तम्बाकू और कुत्तों की तेज़ गन्ध बसी हुई थी।

चाचा ने इसी कमरे में मेहमानों से बैठने का अनुरोध करते हुए कहा कि वे अपने को यहां अपने घर की तरह महसूस करें और खुद बाहर चले गये। कीचड़ से सनी पीठ के साथ रुगाई कमरे में आया, सोफ़े पर लेट गया और ज़बान तथा दांतों से अपनी पीठ साफ़ करने लगा। इस कमरे से जुड़ा हुआ एक दालान था जिसे लकड़ी की ओट से विभाजित किया गया था और ओट पर फटे हुए परदे लटकते नज़र आ रहे थे। ओट के पीछे से औरतों की हंसी तथा खुसर-फुसर सुनाई दे रही थी। नताशा, निकोलाई और पेत्या अपने कोट वग़ैरह उतारकर सोफ़े पर बैठ गये। पेत्या ने कोहनी टिका ली और फ़ौरन सो गया। नताशा और निकोलाई चुपचाप बैठे थे। इनके चेहरे लाल थे, इन्हें बेहद भूख लगी थी और बहुत ही खुश थे। इन्होंने एक-दूसरे की तरफ़ देखा ( शिकार के बाद यहां कमरे में निकोलाई ने बहन के सामने अपनी पुरुषोचित श्रेष्ठता दिखाना आवश्यक नहीं समझा ) ; नताशा ने भाई की ओर देखकर आंख मिचमिचायी और अपने हंसने का कोई कारण सोच पाने के पहले ही दोनों देर तक अपनी हंसी न रोक पाते हुए खिलखिलाकर हंस पड़े।

कुछ समय बाद छोटा कोट, नीला पतलून और टखनों तक के बूट पहने हुए चाचा कमरे में आये और नताशा ने अनुभव किया कि यही सूट, जिसे पहने हुए चाचा जब ओतरादनोये में आये थे तो उसने आश्चर्यचकित होकर इनका मज़ाक़ उड़ाया था, वास्तव में बढ़िया ढंग का सूट था और टेल-कोट या फ़ॉक-कोट से किसी तरह भी उन्नीस नहीं था। चाचा भी बहुत ख़ुश थे। वह न केवल बहन-भाई की हंसी से नाराज़ ही नहीं हुए ( उनके दिमाग़ में यह ख़्याल भी नहीं आ सकता था कि बहन-भाई उनके रहन-सहन के ढंग पर हंस रहे हैं ), बल्कि ख़ुद भी उनकी अकारण हंसी में शामिल हो गये।

"ख़ूब हैं आप भी जवान काउंटेस – यह है मज़े की बात! आपके जैसी कोई दूसरी नहीं देखी!" उन्होंने लम्बी नलीवाली पाइप रोस्तोव की ओर बढ़ाते तथा दूसरी, छोटी और कटी कुतरी नलीवाली पाइप को अभ्यस्त ढंग से तीन उंगलियों के बीच दबाकर सुलगाते हुए कहा।

"दिन भर किसी मर्द के बराबर घुड़सवारी करती रहीं और मानो कोई बात ही नहीं!"

चाचा के कमरे में आने के कुछ देर बाद दरवाज़ा खुला – जिसे, जैसा कि पद-चाप से स्पष्ट था किसी नंगे पांव नौकरानी ने खोला था – और कोई चालीस साल की एक मोटी, लाल गालों, दोहरी ठोड़ी तथा भरे-भरे लाल होंठोंवाली सुन्दर औरत बहुत बड़ी और क़रीने से रखी चीज़ों की ट्रे हाथ में लिये भीतर आई। उसने अपनी आंखों और हर गति-विधि में आतिथ्य-सत्कार का भाव प्रकट करते हुए अतिथियों पर दृष्टि डाली और मधुर मुस्कान के साथ बड़े आदर से उनका अभिवादन किया। सामान्य से कहीं अधिक मुटापे के बावजूद, जो उसे छाती को आगे और सिर को पीछे रखने को मजबूर करता था, यह औरत ( चाचा के घर की भण्डारिन ) बहुत ही फुर्ती से क़दम बढ़ाती थी। मेज़ के पास जाकर उसने ट्रे उसपर रख दी और अपने गोरे-गोरे तथा गुदगुदे हाथों से बोतलों, कलेवे और खाने-पीने की दूसरी चीज़ों को ठीक-ठाक करने लगी। यह करने के बाद वह वहां से हटी और चेहरे पर मुस्कान लिये हुए दरवाज़े के निकट जाकर खड़ी हो गयी। "तो यह मैं हूं, ऐसी हूं मैं! अब आप समझते हैं अपने चाचा को?" उसकी मुद्रा निकोलाई से मानो यह कहती प्रतीत हो रही थी। कैसे नहीं समझेगा अब वह चाचा को। केवल निकोलाई ही नहीं,

बल्कि नताशा भी अनीस्या फ़्योदोरोव्ना के कमरे में प्रवेश करने के समय चाचा को और उनके नाक-भौंह सिकोड़ने तथा उस ख़ुशी भरी, आत्म-तुष्ट मुस्कान का अर्थ समझ गयी जो उनके होंठों पर ज़रा बल डालती-सी झलक उठी थी। ट्रे में शहद और चेरी की ब्रांडी, तरह-तरह की देसी शराबें, अचारी खुमियां, छाछ मिलाकर बनायी गयी रई की रोटियां, छत्तों सहित शहद, पानी, हॉप और मसाले डालकर बनाया गया पेय, सेब, अख़रोट की गिरियां, अख़रोट की भुनी हुई गिरियां तथा शहद में मिली हुई गिरियां थीं। बाद में अनीस्या फ़्योदोरोव्ना शहद और चीनी की चाश्नी में बना मुरब्बा, हैम और उसी वक़्त तली गयी मुर्ग़ी भी ले आयी।

यह सब कुछ अनीस्या फ़्योदोरोव्ना के हाथों का काम था, उसी ने यह सब कुछ चुना और तैयार किया था। इन सब चीज़ों में उसकी सुरुचि और पसन्द की झलक थी। यह सभी कुछ उसके रसीलेपन, स्वच्छता, गौरता और मधुर मुस्कान का परिचायक था।

"इसे चखिये, प्यारी, छोटी काउंटेस," वह नताशा की ओर कभी एक तो कभी दूसरी चीज़ बढ़ाते हुए कहती जा रही थी। नताशा सभी चीज़ें खा रही थी और उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि छाछ मिलाकर बनायी गयी रई की ऐसी रोटियां, ऐसे मुरब्बे, शहद समेत ऐसी गिरियां और ऐसी मुर्ग़ी उसने न तो पहले कहीं देखी और न ही खाई थी। कुछ देर बाद अनीस्या फ़्योदोरोव्ना कमरे से बाहर चली गयी। निकोलाई रोस्तोव और चाचा भोजन के बाद चेरी ब्रांडी पीते हुए अतीत और भविष्य के शिकारों, रुगाई तथा इलागिन के कुत्तों की चर्चा कर रहे थे। सोफ़े पर तनकर बैठी हुई नताशा इनकी बातें सुन रही थी और उसकी आंखें खुशी से चमक रही थीं। उसने पेत्या को कई बार जगाने की कोशिश की, ताकि उसे कुछ खिला दे, लेकिन वह सम्भवतः जागे बिना कुछ अस्पष्ट-से शब्द बोलता रहा। नताशा का मन इतना खिला हुआ था, इस नये वातावरण में उसे इतना अधिक अच्छा लग रहा था कि उसे इसी बात की चिन्ता अनुभव हो रही थी कि उसे घर ले जाने के लिये टमटम बहुत जल्द ही आ जायेगी। अचानक ख़ामोशी छा जाने पर, जैसा कि लगभग हमेशा ही तब होता है, जब हम अपने परिचितों का पहली बार अपने घर पर स्वागत-सत्कार करते हैं, चाचा ने मानो अपने अतिथियों के मन में उठ रहे

विचार के उत्तर में कहा:

"तो ऐसे बिता रहा हूं मैं अपनी ज़िन्दगी के आखिरी दिन... मर जाऊंगा – यह है मज़े की बात! – तो कुछ भी अपने साथ नहीं ले जाऊंगा। किसलिये छल-कपट के फेर में पड़ूं!"

चाचा ने जब ये शब्द कहे तो उनका चेहरा बहुत प्रभावपूर्ण, यहां तक कि सुन्दर भी प्रतीत हुआ। निकोलाई रोस्तोव को बरबस ही वे सब अच्छी बातें याद हो आयीं जो उसने चाचा के बारे में अपने पिता और पड़ोसियों से सुनी थीं। इस सारे क्षेत्र में चाचा उदात्ततम और सर्वथा निस्स्वार्थ सनकी के रूप में विख्यात थे। उन्हें पारिवारिक झगड़ों के निपटारे के लिये बुलाया जाता था, वसीयतनामे को व्यावहारिक रूप देने का कार्यभार सौंपा जाता था, राज़दान बनाया जाता था, न्यायकर्त्ता और दूसरे पदों के लिये चुना जाता था। किन्तु चाचा सार्वजनिक कार्यों से हमेशा दृढ़तापूर्वक इन्कार कर देते थे। पतझर और वसन्त के दिन वह अपने लाखी घोड़े पर सवारी करते हुए खेतों-मैदानों में बिताते, जाड़े में घर में बैठे रहते और गर्मियों में ऊंचे-ऊंचे झाड़-झंखाड़वाले अपने बगीचे में लेटे रहते।

"आप कहीं कोई सरकारी नौकरी क्यों नहीं करते, चाचा?"

"नौकरी की थी, छोड़ दी। वह मेरे बस का रोग नहीं, यह है मज़े की बात! कुछ सिर-पैर मेरी समझ में नहीं आता। यह आप जैसे लोगों का काम है, मेरे पास इसके लिये दिमाग़ नहीं है। शिकार करना – यह दूसरा मामला है – यह है मज़े की बात! यह दरवाज़ा तो खोल दीजिये," चाचा ने पुकारकर कहा। "बन्द किसलिये कर दिया?" दालान (जिसे चाचा दायान कहते थे) के सिरेवाला दरवाज़ा अविवाहित शिकारियों के रहने के कमरे में खुलता था। तेज़, नंगे पैरों की आवाज़ सुनायी दी और किसी अदृश्य हाथ ने शिकारियों के कमरे का दरवाज़ा खोल दिया। दालान में से रूसी लोक-वाद्ययन्त्र बलालाइका के स्पष्ट स्वर सुनाई देने लगे। इस फ़न का कोई अच्छा उस्ताद ही उसे बजा रहा था। नताशा बहुत देर से इन स्वरों को सुन रही थी और अब उन्हें अधिक अच्छी तरह से सुन पाने के लिये दालान में चली गयी।

"यह मेरा कोचवान मीत्या बलालाइका बजा रहा है... मैंने उसे ढंग का बलालाइका ख़रीद दिया है, बहुत अच्छा लगता है मुझे इसे

सुनना," चाचा ने कहा। चाचा के यहां कुछ ऐसा नियम-सा बन गया था कि जब वह शिकार के बाद घर लौटते थे तो शिकारियों के कमरे में मीत्या बलालाइका बजाया करता था। चाचा को यह संगीत सुनना बहुत पसन्द था।

"कितना अच्छा बजा रहा है! सच, बहुत बढ़िया," निकोलाई ने अनचाहे ही कुछ उपेक्षा भाव से कहा मानो उसे यह स्वीकार करते हुए लज्जा अनुभव हो रही हो कि ये स्वर उसे बहुत मधुर लग रहे थे।

"बहुत बढ़िया से क्या मतलब है तुम्हारा?" नताशा ने भाई के इन शब्दों को कहने के अन्दाज़ को महसूस करते हुए भर्त्सनापूर्वक कहा। "बहुत बढ़िया नहीं, एकदम लाजवाब!" नताशा को जिस प्रकार चाचा की खुमियां, शहद और चेरी की ब्रांडी आदि दुनिया में सबसे अच्छे लगे थे, उसी प्रकार बलालाइका पर बजायी जानेवाली यह धुन भी उसे इस क्षण अनुपम-अनूठी प्रतीत हो रही थी।

"और बजाइये, कृपया और वजाइये," बलालाइका के बन्द होते ही नताशा ने दरवाज़े पर आकर कहा। मीत्या ने बाजे को सुर में किया और फिर से 'मेरी प्यारी' गीत की धुन गिटकिरियों और झनझनाते उतार-चढ़ावों के साथ गूंजने लगी। होंठों पर हल्की मुस्कान लिये और एक ओर ज़रा सिर झुकाये चाचा बैठे हुए इसे सुन रहे थे। इस गीत की धुन कोई सौ बार दोहरायी गयी। बलालाइका को कोई सौ बार सुर में किया गया, फिर से वही स्वर झनझना उठे और श्रोताओं ने ऊब अनुभव करने के बजाय इसी धुन को अधिकाधिक बार सुनना चाहा। अनीस्या फ़्योदोरोव्ना भीतर आई और अपनी भारी-भरकम देह को चौखट पर झुकाकर खड़ी हो गयी।

"सुनना अच्छा लग रहा है न, छोटी काउंटेस?" उसने ऐसी मुस्कान के साथ पूछा जो चाचा की मुस्कान से बहुत मिलती-जुलती थी। "हमारे यहां यह बहुत अच्छा बाजा बजाता है," वह बोली।

"लेकिन इस जगह पर उससे बात नहीं बनती," चाचा ने अचानक ज़ोर से हाथ झटकते हुए कहा। "इस जगह पर सुरों को छितराना चाहिये – यह है मज़े की बात – छितराना चाहिये।"

"क्या आप भी यह कला जानते हैं?" नताशा ने पूछा। चाचा कोई जवाब दिये बिना मुस्कराये।

"अनीस्या, ज़रा जाकर देखो तो कि गिटार के तार सही-सलामत

हैं या नहीं? ज़माना हो गया उसे हाथ में लिये हुए–यह है मज़े की बात! बजाना ही छोड़ दिया।"

अनीस्या फ़्योदोरोव्ना अपनी फुर्तीली चाल से सहर्ष अपने मालिक की इच्छा पूरी करने चली गयी और गिटार ले आयी।

चाचा ने किसी की ओर देखे बिना ही फूंक मारकर गिटार पर जमी धूल उड़ा दी, हड़ीली उंगलियों से उसके लकड़ी के ढांचे को ठक-ठकाया, तारों को सुर में किया और आरामकुर्सी पर बैठ गये। उन्होंने बायीं कोहनी को टिकाते हुए कुछ नाटकीय अन्दाज़ में ऊपरी हिस्से से गिटार को हाथों में साधा, अनीस्या फ़्योदोरोव्ना की ओर देखकर आंख मिचमिचायी, एक गूंजता हुआ और सुरीला तार झनझनाया और धीरे-धीरे, शान्त भाव से, किन्तु बड़े विश्वास के साथ 'मेरी प्यारी' नहीं, बल्कि 'चली आ रही बड़ी सड़क पर' गीत की धुन बजाने लगे। इस धुन की लय के साथ निकोलाई और नताशा के हृदय भी गम्भीर प्रसन्नता (जो अनीस्या फ़्योदोरोव्ना के रोम-रोम में समाई हुई थी) से ओत-प्रोत होकर गा उठे। अनीस्या फ़्योदोरोव्ना लज्जारुण हो गयी और रूमाल से मुंह ढंककर हंसती हुई कमरे से बाहर चली गयी। एकदम बदले और प्रेरणा से ओत-प्रोत चाचा उस जगह की ओर देखते हुए, जहां से अनीस्या फ़्योदोरोव्ना गयी थी, सधे सुर में, पूरी तन्मयता, उत्साह और दृढ़ता से इस धुन को बजाते जा रहे थे। उनके चेहरे के एक ओर, पकी मूंछों के नीचे कुछ मुस्करा-सा दिया और धुन ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती गयी, उसकी लय तेज़ होती गयी और उनकी उंगलियों के झटके से कहीं कुछ टूटते-टूटते रह गया, त्यों-त्यों यह मुस्कान भी फैलती गयी।

"कमाल, कमाल कर दिया, चाचा जी! और बजाइये, और बजाइये!" वादन समाप्त होते ही नताशा चिल्ला उठी। वह उछलकर खड़ी हुई, उसने चाचा को गले लगाया और चूमा। "निकोलाई, निकोलाई!" भाई की ओर देखते हुए वह कह उठी और मानो यह पूछ रही हो: कैसे मैं अपनी ख़ुशी की इस भावना को व्यक्त करूं?

निकोलाई को भी चाचा का गिटार-वादन बहुत अच्छा लगा था। चाचा फिर से एक और धुन बजाने लगे। अनीस्या फ़्योदोरोव्ना का मुस्कराता हुआ चेहरा फिर से दरवाज़े के पास दिखाई दिया और उसके पीछे कुछ अन्य चेहरे भी... "शीतल-शीतल निर्झर पर, युवती करे

पुकार, ज़रा ठहर, ज़रा ठहर!" चाचा यह गाना बजा रहे थे, उन्होंने फिर तेज़ी और फुर्ती से उंगलियों को तारों पर दौड़ाकर इसे समाप्त कर दिया और कंधे झटके।

"बजाते जाइये, बजाते जाइये न, प्यारे चाचा," नताशा ने ऐसे गिड़गिडाकर कहा मानो इसी चीज़ पर उसकी ज़िन्दगी निर्भर हो। चाचा उठे और इस तरह, मानो उनके भीतर दो व्यक्ति हों, जिनमें से एक इस ज़िन्दादिल आदमी पर गम्भीरता से मुस्कराया और इस ज़िन्दादिल आदमी ने लोक-नृत्य के लिये सीधी-सादी और औपचारिक मुद्रा बना ली।

"तो नाच हो जाये, भतीजी!" वह नताशा की ओर वह हाथ लहराते हुए ऊंची आवाज़ में कह उठे जिससे उन्होंने कुछ ही क्षण पहले तार झनझनाया था।

नताशा ने वह शॉल उतार दी जिसे अपने गिर्द लपेटे थी, भागकर चाचा के सामने गयी, कमर पर हाथ रख लिये, कंधों को नृत्य के अंदाज़ में हिलाया-डुलाया और खड़ी होकर इन्तज़ार करने लगी।

यह कहना, कठिन है कि इस जवान काउंटेस ने, जिसका प्रवासी फ़्रांसीसी शिक्षिका की देख-रेख में पालन-शिक्षण हुआ था, कहा, कब और कैसे उस रूसी हवा से, जिसमें वह सांस लेती थी, लोक-नृत्य की यह आत्मा ग्रहण कर ली थी, कहां से वे रंग-ढंग सीख लिये थे जिन्हें बहुत पहले ही अतीत की कहानी बन जाना चाहिये था? किन्तु लोक-नृत्य की यह आत्मा और ये रंग-ढंग वैसे ही स्वाभाविक, सिखाये न जा सकनेवाले और ठेठ रूसी थे जिनकी चाचा उससे आशा कर रहे थे। नताशा जैसे ही उठकर खड़ी हुई, आत्म-विश्वास, गर्व और जानकारी की परिचायक चालाकी तथा ख़ुशी भरी मुस्कान से मुस्करायी, वह प्रारम्भिक भय, इस चीज़ का भय जो निकोलाई और वहां उपस्थित अन्य लोगों पर हावी हो गया था कि वह ढंग से नहीं नाच सकेगी, जाता रहा। वे सब तो मुग्ध होकर उसे देखने लगे थे।

नताशा ने वही सब कुछ और उतने ही अच्छे ढंग से किया कि अनीस्या फ़्योदोरोव्ना, जिसने लोक-नृत्य के लिये ज़रूरी रूमाल उसे दे दिया था, इस दुबली-पतली, सजीली, अपने से एकदम भिन्न, रेशम और मख़मल के वातावरण में पली जवान काउंटेस को देखते

रोस्तोव-परिवार के युवा लोग चाचा के यहां।

हुए हंसने के साथ-साथ आंसू भी बहा रही थी। उसी काउंटेस को देखते हुए जो उस सब कुछ को समझने में समर्थ थी जो अनीस्या में था, उसके पिता, उसकी मौसी, उसकी मां और हर रूसी आदमी की आत्मा में रचा-बसा हुआ था।

"शाबाश, छोटी काउंटेस, यह है मज़े की बात!" नाच ख़त्म करके चाचा ने हंसते हुए ख़ुशी से कहा। "बहुत बढ़िया भतीजी! बस, अब तुम्हारे लिये कोई अच्छा-सा दूल्हा चुनना चाहिये, यह है मज़े की बात!"

"वह तो चुना भी जा चुका है," निकोलाई ने मुस्कराकर कहा।

"सच?" चाचा ने हैरान होते और प्रश्नसूचक दृष्टि से नताशा की ओर देखते हुए पूछा। नताशा ने ख़ुशी से मुस्कराकर और हामी भरते हुए सिर झुकाकर इस बात की पुष्टि की।

"और वह भी कैसा!" नताशा ने कहा। किन्तु जैसे ही उसने यह कहा, वैसे ही एक अन्य, नये विचार और भावना-शृंखला ने उसके मन को घेर लिया। "निकोलाई जब यह कहते हुए कि 'वह तो चुना भी जा चुका है' मुस्कराया था तो उसकी मुस्कान का क्या अर्थ था? वह इस बात से ख़ुश है या नहीं? वह तो मानो यह सोचता है कि मेरा बोल्कोन्स्की इस सबका अनुमोदन न करता, हमारी इस ख़ुशी को समझ न पाता। नहीं, वह सब कुछ समझ गया होता। कहां है वह इस वक़्त?" नताशा ने सोचा और अचानक उसका चेहरा संजीदा हो गया। किन्तु ऐसा तो क्षण भर को ही हुआ। "नहीं सोचो, यह सोचने की जुर्रत नहीं करो," उसने अपने आपसे कहा, मुस्कराते हुए फिर से चाचा के पास बैठ गयी और यह अनुरोध करने लगी कि वह गिटार पर कुछ और बजायें।

चाचा ने एक गीत और फिर वाल्ज़ की धुन बजायी। इसके बाद वह थोड़ी देर तक चुप रहे, उन्होंने खांसकर गला साफ़ किया और अपना मनपसन्द, शिकारियों का गाना गाने लगे:

हुआ अन्धेरा, रात घिरी
ख़ूब ज़ोर से वर्फ़ गिरी

चाचा आम लोगों की तरह और इस बात के पूरे तथा भोले-भाले विश्वास के साथ गा रहे थे कि गाने का सारा महत्त्व शब्दों में

ही निहित होता है, कि धुन तो अपने आप बन जाती है, कि धुन का अपना अलग अस्तित्व नहीं होता, कि धुन तो शब्दों को उभारने के लिये ही होती है। इसी कारण विशेष रूप से न सोची गयी, पक्षियों के तराने के समान चाचा का गाना असाधारण रूप से मधुर प्रतीत हुआ। चाचा के इस गाने से नताशा तो आनन्द-विभोर हो उठी। उसने यह तय कर लिया कि अब हार्प बाजा नहीं सीखेगी और सिर्फ़ गिटार ही बजाया करेगी। उसने चाचा से गिटार मांगी और फ़ौरन उसपर इस गाने की धुन निकाल ली।

रात के नौ बजने के बाद नताशा और पेत्या को घर ले जाने के लिये एक बग्घी, टमटम और तीन घुड़सवार यहां पहुंचे जिन्हें इन लोगों को ढूंढ़ने के लिये भेजा गया था। काउंट और काउंटेस को कुछ मालूम नहीं था कि ये लोग कहां हैं और जैसा कि एक घुड़सवार ने बताया, दोनों बहुत चिन्तित थे।

पेत्या को तो मुर्दे की तरह उठाकर लाया गया और बग्घी में लिटा दिया गया। नताशा और निकोलाई टमटम में बैठ गये। चाचा ने नताशा को ख़ूब अच्छी तरह गर्म कपड़ों से ढंक दिया और सर्वथा एक नये ही ढंग के स्नेह से विदा किया। वह इन्हें उस पुल तक पैदल छोड़ने गये, जिसे, उसके गिर्द घूमकर नदी में से गुज़रते हुए पार करना था। चाचा ने शिकारियों को हिदायत की कि वे लालटेनें लिये हुए बग्घी और टमटम के आगे-आगे अपने घोड़े बढ़ायें।

"तो नमस्ते, मेरी प्यारी भतीजी!" अन्धेरे में उनकी ऊंची आवाज़ सुनायी दी। यह वह आवाज़ नहीं थी जिसे नताशा पहले जानती थी, बल्कि वह आवाज़ थी जिसने यह गाया था: "हुआ अन्धेरा, रात घिरी।"

ये लोग जिस गांव में से गुज़रे, उसमें लाल बत्तियां जल रही थीं और धुएं की सुखद गंध फैली हुई थी।

"कैसे लाजवाब हैं यह चाचा!" बड़ी सड़क पर पहुंचने के बाद नताशा ने कहा।

"हां," निकोलाई ने सहमति प्रकट की। "तुम्हें ठण्ड तो नहीं महसूस हो रही?"

"नहीं, सब ठीक है, सब ठीक है। मैं बेहद ख़ुश हूं," ख़ुशी से चकरायी-सी नताशा ने कहा। ये दोनों देर तक ख़ामोश रहे।

रात अन्धेरी और नम थी। घोड़े नज़र नहीं आ रहे थे, अदृश्य कीचड़ में केवल उनके पैरों की छपछपाहट ही सुनायी दे रही थी।

बच्चे जैसी इस अनुभूतिशील आत्मा की इस समय क्या हालत थी जो जीवन की विविधतापूर्ण सभी छापों को इतनी तीव्र चाह से ग्रहण और आत्मसात कर लेती थी? यह सब कुछ इसमें समा कैसे जाता था? लेकिन वह बेहद ख़ुश थी। घर के नज़दीक पहुंचने पर वह अचानक "हुआ अन्धेरा, रात घिरी" गाने की धुन गुनगुनाने लगी। वह रास्ते भर इसी धुन को पकड़ने की कोशिश करती रही थी और आख़िर इसमें कामयाब हो गयी थी।

"तो धुन पकड़ ली?" निकोलाई ने पूछा।

"तुम इस वक़्त क्या सोच रहे थे, निकोलाई?" नताशा ने जानना चाहा। इन दोनों को एक-दूसरे से यह पूछना अच्छा लगता था।

"मैं?" निकोलाई ने याद करते हुए कहा। "बात यह है, शुरू में तो मैं यह सोचता रहा कि लाल कुत्ता रुगाई चाचा से बहुत मिलता-जुलता है और अगर वह इन्सान होता तो चाचा को कभी भी अपने से दूर न जाने देता। अगर शिकार के लिये नहीं तो उनके गुणों के लिये। कितने अच्छे हैं, चाचा! ठीक है न? और तुम क्या सोच रही थीं?"

"मैं? ज़रा याद करने दो, याद करने दो। हां, शुरू में मैंने यह सोचा कि हम टमटम में जा रहे हैं और सोचते हैं कि घर जा रहे हैं, लेकिन भगवान ही जानते हैं कि इस अंधेरे में हम कहां चले जा रहे हैं और अचानक कहीं पहुंचने पर यह देखेंगे कि हम ओतरादनोये में नही, बल्कि किसी जादू-नगरी में पहुंच गये हैं। इसके बाद मैंने यह भी सोचा... नहीं, और कुछ नही सोचा।"

"मैं जानता हूं, सम्भवत: **उसके** बारे में सोचा होगा," निको-लाई ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, जैसे कि नताशा ने उसकी आवाज़ से जान लिया था।

"नहीं," नताशा ने उत्तर दिया, यद्यपि वास्तव में उसने अन्य चीज़ों के साथ प्रिंस अन्द्रेई के बारे में और यह भी सोचा था कि उसे चाचा कैसे लगे। "और इसके अलावा मैं मन ही मन दोहराती रही हूं, रास्ते भर दोहराती रही हूं – अनीस्या की चाल-ढाल कितनी अच्छी, कितनी प्यारी है," नताशा ने कहा। और निकोलाई को नताशा

की गूंजती, अकारण और खुशी भरी हंसी सुनायी दी।

"जानते हो," नताशा अचानक कह उठी, "मुझे मालूम है कि मैं कभी भी अपने को इतनी सुखी और शान्त अनुभव नहीं कर सकूंगी, जितनी इस समय।"

"यह बिल्कुल बेतुकी और बेसिर-पैर की बात कह रही हो तुम," निकोलाई ने कहा और सोचा: "कितनी प्यारी है यह मेरी नताशा! इसके समान न तो कोई मेरा दूसरा मित्र है और न ही कभी होगा। क्या ज़रूरत है इसे शादी करने की? हम दोनों इसी तरह से यात्रा करते रहते!"

"कितना प्यारा है यह निकोलाई!" नताशा सोच रही थी।

"अरे! दीवानखाने में तो अभी भी रोशनी है," नताशा ने रात के नम और मखमली अन्धेरे में बहुत सुन्दर ढंग से चमकती घर की खिड़कियों की ओर संकेत करते हुए कहा।

## ८

काउंट इल्या अन्द्रेयेविच रोस्तोव अब कुलीन-मुखिया नहीं थे, क्योंकि इस पद के लिये उन्हें बहुत ही अधिक खर्च करना पड़ता था। किन्तु इसके बावजूद उनकी माली हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। नताशा और निकोलाई अक्सर माता-पिता को रहस्यपूर्ण तथा चिन्तित ढंग से बातचीत करते देखते और यही सुनते कि मास्को में बाप-दादों की बढ़िया हवेली और मास्को के निकट की जागीर बेच दी जाये। कुलीन-मुखिया न होने पर उन्हें इतनी अधिक दावतें आदि नहीं करनी पड़ती थीं और पहले के वर्षों की तुलना में ओतरादनोये का जीवन कुछ शान्त हो गया था। फिर भी बहुत बड़ा घर और उपभवन लोगों से भरे हुए थे और बीस से ज़्यादा लोग खाने की मेज़ पर बैठते थे। ये सभी, इस घर में रहनेवाले, लगभग परिवार के ही सदस्य या ऐसे लोग थे जिनका, ऐसे प्रतीत होता था, इस घर में रहना ज़रूरी था। संगीतज्ञ डिम्मलेर और उसकी पत्नी, पूरे परिवार के साथ नृत्य-शिक्षक ईओगेल, इसी घर में रहनेवाली कुलीन बुढ़िया बेलोवा और

बहुत-से अन्य लोग भी – पेत्या के शिक्षक, लड़कियों की भूतपूर्व शिक्षिका या ऐसे व्यक्ति जिनके लिये अपने घर के बजाय काउंट के यहां रहना बेहतर या अधिक लाभदायक था। पहले की तरह इतनी अधिक संख्या में लोग नही आते-जाते थे, मगर ज़िन्दगी का रंग-ढंग पहले जैसा ही था और काउंट तथा काउंटेस इसके बिना अपने जीवन की कल्पना नही कर सकते थे। शिकार का ताम-झाम न केवल पहले जैसा ही नही था, बल्कि निकोलाई ने उसमें कुछ और वृद्धि कर दी थी। पहले की तरह ही पचास घोड़े और पन्द्रह सईस, कोचवान थे। जन्म-दिवस पर उसी तरह से क़ीमती उपहार दिये जाते थे और समारोही दावतें की जाती थीं जिनके लिये इलाक़े के सभी कुलीनों को बुलाया जाता था। काउंट पहले की भांति ही ह्विस्ट और बोस्टन खेलते, पत्तों को इस तरह सबके सामने खोले रहते कि सभी को नज़र आ जायें और इस तरह उनके पड़ोसी हर दिन उनसे सैकड़ों रूबल जीत लेते थे और काउंट के साथ जुआ खेलने को अपनी आमदनी का सबसे लाभदायक स्रोत मानते थे।

काउंट तो मानो अपने मामलों के एक बहुत बड़े जाल में फंसे हुए थे। यह विश्वास करने की कोशिश करते हुए कि वह ऐसे जाल में फंसे हुए नहीं हैं, हर क़दम पर और ज़्यादा फंसते जाते थे, यह अनुभव करते थे कि उनमें न तो इस जाल को काटने की शक्ति है और न इससे मुक्त होने की ज़रूरी सावधानी तथा धीरज। काउंटेस का प्यार भरा दिल यह महसूस करता था कि उनके बच्चे तबाह हुए जा रहे हैं, कि इसके लिये काउंट दोषी नहीं हैं, कि वह जैसे हैं, उससे भिन्न नहीं हो सकते, कि वह स्वयं भी अपनी तथा बच्चों की तबाही की चेतना से बड़े व्यथित रहते हैं (यद्यपि इसे छिपाते हैं) और स्थिति को सम्भालने के उपाय ढूंढ़ती थीं। उनके नारी-सुलभ दृष्टिकोण से इसका केवल एक ही उपाय था – किसी अमीर लड़की के साथ निकोलाई की शादी कर दी जाये। वह अनुभव करती थीं कि यह उनकी अन्तिम आशा थी और अगर निकोलाई उस लड़की से, जो उन्होंने उसके लिये ढूंढ़ी थी, शादी करने से इन्कार कर देगा तो अपनी माली हालत सुधारने की सम्भावना को हमेशा के लिये भूल जाना होगा। यह बहुत ही अच्छे, बड़े ही नेक माता-पिता की बेटी यूलिया करागिना थी जिसे रोस्तोव-परिवारवाले बचपन से जानते थे और जो अब, उसके अन्तिम

भाई की मृत्यु के बाद बहुत बड़ी सम्पत्तिवाली भावी दुलहन थी।

काउंटेस ने यूलिया की मां को सीधे मास्को पत्र लिखा और यह सुझाव दिया कि निकोलाई और यूलिया की शादी कर दी जाये। उसे अनुकूल उत्तर मिला। करागिना ने लिखा कि वह खुद तो सहमत है, लेकिन बेटी की इच्छा पर ही सब कुछ निर्भर करता है। उसने निकोलाई को मास्को आमन्त्रित किया।

काउंटेस ने कई बार आंखें गीली करते हुए बेटे से यह कहा कि अब, जब उनकी दोनों बेटियों का भविष्य तय हो चुका है, उनकी एकमात्र यही इच्छा रह गयी है कि उसकी शादी हो जाये। वह कहतीं कि अगर ऐसा हो जाये तो चैन से क़ब्र में जा सकेंगी। इसके बाद वह यह बताती कि एक बहुत ही अच्छी लड़की उनकी नज़र में है और शादी के बारे में बेटे के विचार जानने की कोशिश करतीं।

इधर-उधर की दूसरी बातों के दौरान काउंटेस यूलिया की प्रशंसा करती रहतीं और बेटे को यह सलाह देतीं कि वह पर्व-त्योहार के अवसर पर मनोरंजन के लिये मास्को चला जाये। निकोलाई यह भांप गया था कि उसकी मां की ऐसी बातों का प्रयोजन क्या है और इसी तरह की एक बातचीत के दौरान उसने मां के मुंह से असली बात निकलवा ली। काउंटेस ने कहा कि घर की माली हालत सुधारने की सारी उम्मीदें अब करागिना के साथ उसकी शादी से ही जुड़ी हुई हैं।

"लेकिन अम्मां, अगर मुझे किसी सम्पत्तिहीन लड़की से प्रेम होता तो क्या आप मुझसे सम्पत्ति की खातिर अपनी भावना, अपनी ईमानदारी और मान-मर्यादा की बलि देने की मांग करतीं?" उसने अपने प्रश्न की क्रूरता को न समझते और केवल अपने हृदय की उदात्तता दिखाने के लिये मां से पूछा।

"नहीं, तुम मेरी बात नहीं समझे," काउंटेस ने यह न जानते हुए कि कैसे अपनी सफ़ाई पेश करें, उत्तर दिया। "तुम मेरी बात नही समझे, बेटे। मैं तो तुम्हारे ही सुख की चिन्ता कर रही हूं," उन्होंने इतना और कह दिया तथा अनुभव किया कि वह झूठ बोल रही हैं, मुश्किल में पड़ गयी हैं। वह रोने लगीं।

"अम्मां, रोयें नहीं, सिर्फ़ इतना कह दें कि आप ऐसा चाहती हैं, और आप जानती हैं कि मैं आपके मन के चैन के लिये अपनी ज़िन्दगी, अपना सर्वस्व न्योछावर कर दूंगा," निकोलाई ने कहा।

"आपके लिये मैं सब कुछ, यहां तक कि अपनी भावना को भी क़ुर्बान कर दूंगा।"

किन्तु काउंटेस तो इस मामले को ऐसे पेश नहीं करना चाहती थीं – वह बेटे से किसी भी तरह की क़ुर्बानी नहीं चाहती थीं, ख़ुद उसके लिये सब कुछ क़ुर्बान कर देना कहीं बेहतर समझतीं।

"नहीं, तुम मेरी बात नहीं समझे, हम इसकी चर्चा नहीं करेंगे।" उन्होंने अपने आंसू पोंछते हुए कहा।

"हां, शायद मैं ग़रीब लड़की को प्यार करता भी हूं," निको-लाई ने अपने आपसे कहा, "तो क्या मैं धन-दौलत के लिये अपनी भावना, अपनी ईमानदारी और मान-मर्यादा का ख़ून कर डालूं? मुझे हैरानी हो रही है कि अम्मां ने मुझसे ऐसी बात कही ही कैसे! अगर सोन्या ग़रीब है तो क्या मैं उससे प्रेम नहीं कर सकता," वह सोच रहा था, "उसके सच्चे, निष्ठापूर्ण प्रेम के लिये उसे इसी तरह से प्रेम नहीं कर सकता? यूलिया जैसी किसी गुड़िया की तुलना में सोन्या के साथ मैं ज़रूर कहीं अधिक सुखी हो सकूंगा। अपनी भावना पर तो मेरा बस नहीं," वह अपने आपसे कह रहा था। "अगर मैं सोन्या को प्यार करता हूं तो मेरे लिये मेरी भावना सबसे अधिक महत्त्व रखती है, सबसे बढ़-चढ़कर है।"

निकोलाई मास्को नहीं गया, काउंटेस ने शादी के बारे में उसके साथ फिर से चर्चा नहीं चलाई और वह अपने बेटे तथा दहेजहीन सोन्या के बीच अधिकाधिक बढ़ते प्यार के लक्षणों को उदासी और कभी-कभी क्रुद्ध होते हुए देखती रहतीं। वह अपने को इसलिये धिक्कार-तीं कि सोन्या को कुछ भला-बुरा कहे बिना, उसमें कोई मीन-मेख निकाले बिना नहीं रह पाती थीं, बहुधा अकारण ही उसे रोककर उसे औपचारिक ढंग से "आप" तथा "मेरी प्यारी" कहकर सम्बो-धित करती थीं। दयालु काउंटेस सोन्या पर सबसे ज़्यादा तो इसलिये झल्लाती थीं कि यह काली आंखोंवाली भतीजी इतनी विनम्र-विनीत, इतनी भली थी, अपने उपकारियों के प्रति इतनी कृतज्ञ-आभारी थी और निकोलाई को इतनी निष्ठा, अडिगता तथा निस्स्वार्थ भाव से प्यार करती थी कि किसी भी चीज़ के लिये उसकी भर्त्सना नहीं की जा सकती थी।

छुट्टियां ख़त्म होने तक निकोलाई अपने परिवारवालों के साथ

ही रहा। प्रिंस अन्द्रेई का रोम से चौथा पत्र आया था जिसमें उसने लिखा था कि यदि गर्म जलवायु में अप्रत्याशित ही उसका घाव फिर से हरा न हो जाता, तो वह बहुत पहले ही रूस के लिये रवाना हो गया होता। इसी कारण वह अगले वर्ष के आरम्भ तक अपनी रवानगी को स्थगित करने के लिये विवश है। नताशा अपने भावी पति को पहले की तरह ही प्यार करती थी, इस प्रेम में चैन पाती थी और पहले की भांति ही ज़िन्दगी की सारी ख़ुशियों के प्रति उत्साहपूर्ण थी। किन्तु इन दोनों की जुदाई के चौथे महीने के अन्त में उसके मन पर उदासी हावी होने लगी जिससे जूझना उसके बस की बात नहीं थी। उसे अपने पर दया आती, इस बात का अफ़सोस होता कि उसका यह सारा वक़्त व्यर्थ बरबाद हुआ जा रहा है, किसी के भी कोई काम नहीं आ रही है, जबकि यह जानती थी कि वह किसी को प्यार करने और किसी का प्यार पाने की कितनी अधिक क्षमता रखती है।

रोस्तोव-परिवार में ख़ुशी का वातावरण नहीं था।

## ९

क्रिसमस का त्योहार आया और दिन की गम्भीर प्रार्थना, पड़ोसियों तथा नौकरों-चाकरों की औपचारिक और ऊब पैदा करनेवाली बधाइयों तथा इस चीज़ के अलावा कि सभी ने नयी पोशाकें पहन ली थीं, इस पर्व को मनाने के लिये कोई विशेष आयोजन नहीं किया गया था। किन्तु तेज़ हवा के बिना शून्य से नीचे बीस डिग्री का पाला, दिन के वक़्त तेज़ और आंखें चौंधियाता सूरज तथा रात के वक़्त सितारों से झिलमिलाता जाड़े का आकाश इस बात की मांग करते थे कि इस पर्व को मनाने के लिये विशेष रूप से कुछ न कुछ किया जाना चाहिये।

पर्व के तीसरे रोज़ दिन के भोजन के बाद घर के सभी लोग अपने-अपने कमरों में चले गये। यह दिन का सबसे ज़्यादा उबाऊ वक़्त था। निकोलाई, जो उस सुबह को पड़ोसियों से मिलने-जुलने गया था, अब दीवानख़ाने में सोफ़े पर सो रहा था। बुज़ुर्ग काउंट अपने कमरे में आराम कर रहे थे। ड्राइंगरूम में गोल मेज़ के सामने बैठी

हुई सोन्या बेल-बूटे के एक नमूने की नक़ल उतार रही थी। काउंटेस ताश के पत्तों से अपना मन बहला रही थीं। नास्तास्या इवानोव्ना कहलानेवाला विदूषक रोनी-सी सूरत बनाये हुए दो बुढ़ियों के साथ खिड़की के क़रीब बैठा था। नताशा कमरे में आई, सोन्या के पास जाकर उसने यह देखा कि वह क्या कर रही है और इसके बाद मां के नज़दीक जाकर चुपचाप खड़ी हो गयी।

"तुम किसी बेघर व्यक्ति की तरह इधर-उधर क्यों घूम रही हो?" मां ने पूछा। "तुम्हें क्या चाहिये?"

"मुझे **वह** चाहिये... अभी, इसी क्षण **वह** चाहिये," नताशा ने चमकती आंखों से मुस्कराये बिना कहा। काउंटेस ने सिर ऊपर उठाया और बेटी को एकटक देखती रही।

"मेरी ओर नहीं देखिये, अम्मां, नहीं देखिये, मैं अभी रो पड़ूंगी।"

"बैठो, मेरे पास बैठ जाओ," काउंटेस बोलीं।

"अम्मां, मुझे **वह** चाहिये। किसलिये मैं यह यातना सह रही हूं, अम्मां!.." उसका गला भर आया, आंखों में आंसू आ गये और वह उन्हें छिपाने के लिये तेज़ी से मुड़ी तथा बाहर चली गयी। वह दीवानख़ाने में गयी, थोड़ी देर खड़ी रहकर कुछ सोचती रही और फिर नौकरानियों के कमरे में चली गयी। वहां बूढ़ी नौकरानी एक युवती को डांट रही थी जो भूदासों के घरों से इतनी ठण्ड में भागकर आने के कारण हांफ रही थी।

"बस, अब खेलना बन्द करो," बुढ़िया कह रही थी। "हर चीज़ का वक़्त होता है।"

"इसे खेलने के लिये जाने दो, कोन्द्रात्येव्ना," नताशा ने कहा। "जाओ माव्रूशा, जाओ।"

माव्रूशा को डांट-डपट से बचाने के बाद नताशा हॉल को लांघकर ड्योढी में गयी। वहां एक बूढ़ा और दो जवान नौकर ताश खेल रहे थे। छोटी मालकिन के आने पर वे ताश छोड़कर खड़े हो गये। "इन्हें किस काम के लिये भेजूं?" नताशा सोचने लगी।

"अरे निकीता, कृपया जाकर...—कहां भेजूं मैं इसे?—हां, अहाते में जाकर एक मुर्गा ले आओ। और मीशा, तुम जई।"

"थोड़ी-सी?" मीशा ने बड़ी ख़ुशी और उत्साह प्रकट करते हुए पूछा।

"जाओ, जल्दी से जाओ," बूढ़े ने ज़ोर दिया।

"और फ़्योदोर, तुम मुझे खड़िया ला दो।"

रसोई-भण्डार के पास से गुज़रते हुए उसने समोवार गर्माकर लाने का आदेश दिया, यद्यपि चाय पीने का बिल्कुल वक़्त नहीं था।

बटलर फ़ोका सारे घर में सबसे ज़्यादा गुस्सैल आदमी था। नताशा को उससे अपने हुक्म की तामील करवाना अच्छा लगता था। उसे इस बात का यक़ीन नहीं हुआ और वह उससे यह पूछने गया कि क्या सचमुच उसने ऐसा हुक्म दिया है?

"ओह, यह छोटी मालकिन!" फ़ोका ने नताशा पर त्योरी चढ़ाने का ढोंग-सा करते हुए कहा।

इस घर में कोई भी नताशा की तरह नौकरों-चाकरों को इतना अधिक इधर-उधर नहीं दौड़ाता था और इतने अधिक काम करने को नही कहता था। वह तो लोगों को कहीं न कहीं भेजे बिना रह ही नहीं पाती थी। वह तो मानो यह आज़माती रहती थी कि कोई उसपर झुंझलाता है या नहीं, उनमें से कोई मुंह फुलाता है या नहीं। लेकिन नौकर-चाकर इससे अधिक चाव से और किसी के हुक्म नहीं बजाते थे जितने नताशा के। "मैं क्या करूं? कहां जाऊं?" दालान में से धीरे-धीरे जाते हुए नताशा सोच रही थी।

"नास्तास्या इवानोव्ना, मेरे कैसे बच्चे होंगे?" उसने रोयेंदार छोटी ज़नाना जाकेट पहने सामने से आ रहे मसख़रे से पूछा।

"तुम्हारे तो पिस्सू, व्याध-पतंग और टिड्डे होंगे," विदूषक ने जवाब दिया।

"हे भगवान, हे भगवान, हमेशा एक ही बात! ओह, कहां जाऊं मैं? अपने साथ क्या करूं?" और वह जल्दी-जल्दी, ज़ोर से पांव पटकती और सीढ़ियां चढ़ती हुई ईओगेल के यहां भाग गयी जो अपनी पत्नी के साथ ऊपर की मंज़िल पर रहता था। ईओगेल के कमरे में दो शिक्षिकायें बैठी थीं और मेज़ पर तश्तरियों में किशमिश, अख़-रोट तथा बादाम रखे थे। शिक्षिकायें यह चर्चा कर रही थीं कि मास्को में या ओदेस्सा में रहना ज़्यादा सस्ता है। नताशा इनके पास बैठ गयी, गम्भीर और विचारमग्न मुख-मुद्रा बनाकर इनकी बातें सुनती रही और फिर उठकर खड़ी हो गयी।

"मडागास्कर द्वीप," वह अचानक कह उठी। "मडा-गा...

स्कर," उसने एक-एक अक्षर को स्पष्ट रूप से दोहराया और मदाम शोस्स के इस प्रश्न का उत्तर दिये बिना कि वह क्या कह रही है, कमरे से बाहर चली गयी।

नताशा का छोटा भाई पेत्या भी ऊपर ही था। वह अपनी देख-भाल करनेवाले नौकर के साथ उस आतिशबाज़ी को तैयार कर रहा था जिसे रात के वक़्त छोड़ने का इरादा बनाये हुए था।

"पेत्या! ओ पेत्या!" उसने उसे पुकारा। "मुझे अपनी पीठ पर नीचे ले चलो।" पेत्या भागकर नताशा के पास आया और उसने अपनी पीठ उसके सामने कर दी। वह उछलकर उसकी पीठ पर सवार हो गयी, उसकी गर्दन के गिर्द बांहें डाल दीं और पेत्या उछलते हुए उसे लेकर भागने लगा। "बस, काफ़ी है... मडागास्कर द्वीप," वह कह उठी और उसकी पीठ से उतरकर नीचे चल दी।

नताशा ने मानो अपने राज्य का चक्कर लगाया था, अपनी सत्ता को आज़माया था और उसे यह यक़ीन हो गया था कि किसी की चूं तक करने की हिम्मत नहीं हुई थी। फिर भी उसकी ऊब-उदासी ज्यों की त्यों बनी हुई थी। वह हॉल में चली गयी, उसने गिटार हाथ में ले ली, छोटी-सी अलमारी के पीछे अन्धेरे कोने में जा बैठी और मन्द सप्तक के भारी स्वरों में प्रिंस अन्द्रेई के साथ पीटर्सबर्ग में देखे गये उस ऑपेरा का वह अंश बजाने की कोशिश करने लगी जो उसे याद रह गया था। किसी दूसरे व्यक्ति के लिये उसके द्वारा गिटार पर बजाये जानेवाले सुरों का कोई भी अर्थ नहीं हो सकता था, किन्तु इन ध्वनियों से उसकी कल्पना में एक पूरा स्मृति-संसार सजीव हो उठा। वह रसोई-भण्डार के दरवाज़े से छन रही प्रकाश-रेखा पर नज़र टिकाये अलमारी के पीछे बैठी थी, सुरों को सुन रही थी और याद कर रही थी। वह स्मृतियों की दुनिया में खो गयी थी।

हाथ में गिलासी लिये सोन्या हॉल को लांघती हुई रसोई-भण्डार में गयी। नताशा ने उसकी तरफ़ देखा, रसोई-भण्डार के दरवाज़े की दरार पर नज़र डाली और उसे लगा कि मानो पहले भी ऐसा ही हो चुका है, कि ऐसे ही रसोई-भण्डार की दरार में से रोशनी छन रही थी और सोन्या गिलासी लिये हुए रसोई-भण्डार में गयी थी। "हा, बिल्कुल ऐसा, एकदम ऐसा ही हुआ था," नताशा ने सोचा।

"सोन्या, यह कौन-सी धुन है?" मोटे तार पर सुर निकालते

हुए नताशा ने पुकारकर पूछा।

"अरे, तुम यहां हो!" सोन्या ने चौंककर सिहरते हुए कहा, नताशा के क़रीब गयी और धुन को ध्यान से सुना। "मालूम नहीं। शायद तूफ़ान की धुन है?" उसने डरते हुए कि कहीं ग़लती न हो जाये, सहमी-सी आवाज़ में उत्तर दिया।

"हां, वह ऐसे ही चौंककर सिहरी थी, ठीक इसी तरह से मेरे पास आयी थी और पहले भी जब ऐसा ही हुआ था तो इसी प्रकार भीरु-ता से मुस्करायी थी," नताशा ने सोचा, "और ठीक इसी ढंग से... मैंने तब यह सोचा था कि इसमें किसी चीज़ की कमी है।"

"नही, यह 'पनगाड़ी' ऑपेरा का सहगान है, सुन रही हो?" और नताशा सहगान की धुन गुनगुनाने लगी ताकि सोन्या उसे समझ जाये।

"तुम कहां गयी थीं?" नताशा ने पूछा।

"गिलासी का पानी बदलने के लिये। मैं अभी उस नमूने की पूरी नक़ल उतार लूंगी।"

"तुम हमेशा किसी न किसी काम में व्यस्त रहती हो, लेकिन मैं ऐसा नही कर पाती," नताशा ने कहा। "निकोलाई कहां है?"

"शायद सो रहा है।"

"सोन्या, तुम जाकर उसे जगा दो," नताशा ने कहा। "उससे कहो कि मैं उसे गाने के लिये बुला रही हूं।" वह कुछ देर तक यहीं और बैठी रही, यह सोचती रही कि पहले भी ऐसा ही हुआ था, इसका क्या मतलब है और इस प्रश्न का उत्तर ढूंढ़े बिना तथा इस कारण किसी प्रकार का खेद अनुभव किये बिना फिर से उसी समय की कल्पना करने लगी जब वह उसके साथ थी और वह प्यार भरी नज़रों से उसे देख रहा था।

"काश, वह जल्दी से आ जाये! मैं बहुत डरती हूं कि कभी भी ऐसा नहीं होगा! और सबसे बड़ी बात तो यह है कि मेरी उम्र बीतती जा रही है! मुझमें वह कुछ नहीं रहेगा जो अब है। शायद वह आज आ जाये, अभी आ जाये। शायद आ ही गया है और वहां ड्राइंगरूम में बैठा है। शायद वह कल ही आ गया था और मुझे याद नहीं रहा।" वह उठी, उसने गिटार रख दी और ड्राइंगरूम में चली गयी। घर के सभी लोग, शिक्षक-शिक्षिकायें और अतिथि – सभी चाय

की मेज़ के सामने बैठे थे। नौकर-चाकर मेज़ के गिर्द खड़े थे – लेकिन प्रिंस अन्द्रेई नहीं था और पहले का जीवन उसी भांति चल रहा था।

"लो, यह आ गयी," काउंट ने नताशा को भीतर आते हुए देखकर कहा। "मेरे पास आकर बैठो।" लेकिन नताशा सभी ओर ऐसे नज़र दौड़ाते हुए मानो कुछ ढूंढ़ रही हो, मां के क़रीब ही रुक गयी।

"अम्मां!" वह कह उठी। "**उसे** मुझे दे दो, दे दो अम्मां, जल्दी से, जल्दी से," और फिर बड़ी मुश्किल से उसने अपनी सिसकियां रोकीं।

वह मेज़ के सामने बैठ गयी और बुज़ुर्गों तथा निकोलाई की बातें सुनने लगी। वह भी चाय पीने के लिये आ गया था। "हे भगवान, हे भगवान, वही चेहरे, वही बातें, पापा उसी तरह से प्याला पकड़े हैं और उसी तरह से फूंक मार रहे हैं।" नताशा सोच रही थी और घर के सभी लोगों के लिये हृदय में इस कारण उठनेवाली घृणा की भावना से भयभीत हो गयी कि वे हमेशा जैसे ही थे।

चाय के बाद निकोलाई, सोन्या और नताशा दीवानख़ाने के अपने मनपसन्द कोने में जा बैठे जहां हमेशा ही इनके बीच ख़ूब दिली बातें होती थीं।

## १०

"क्या तुम्हारे साथ भी ऐसा होता है," दीवानख़ाने में इतमीनान से बैठ जाने पर नताशा ने कहना शुरू किया, "क्या तुम्हारे साथ भी ऐसा होता है कि तुम्हें लगता है, अब आगे कुछ भी, कुछ भी नहीं होगा, कि जो कुछ अच्छा था, वह हो चुका है? ऐसे मौक़ों पर ऊब तो नहीं, लेकिन उदासी महसूस होती है?"

"होता है, ख़ूब होता है!" निकोलाई ने जवाब दिया। "मेरे साथ ऐसा भी हुआ है कि जब सब कुछ बहुत अच्छा था, सभी हंसी-ख़ुशी की तरंग में थे, तभी मेरे दिमाग़ में यह ख़्याल आया कि इस सबसे मन उकता गया है और हम सबको मर जाना चाहिये। एक बार क्या हुआ कि रेजिमेंट में मैं वहां नहीं गया जहां संगीत बज रहा था

और लोग मौज मना रहे थे... अचानक मुझे ऐसी उदासी महसूस हुई..."

"ओह, मैं इससे परिचित हूं। जानती हूं, जानती हूं," नताशा ने भाई की बात आगे बढ़ायी। "मैं तब छोटी ही थी, जब मेरे साथ ऐसा हुआ था। तुम्हें याद है कि कैसे एक बार आलूबुखारों के लिये मुझे सज़ा दी गयी थी, तुम सब नाच रहे थे और मैं पढ़ाई के कमरे में बैठी हुई सिसक रही थी – कभी नहीं भूलूंगी यह – मुझे उदासी महसूस हो रही थी, सभी के लिये, अपने लिये, सभी के लिये अफ़सोस हो रहा था। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि मेरा कोई क़ुसूर नहीं था," नताशा ने कहा, "तुम्हें याद है?"

"याद है," निकोलाई ने कहा। "मुझे याद है कि बाद में मैं तुम्हारे पास गया था, मैंने तुम्हें तसल्ली देनी चाही थी, लेकिन, जानती हो, ऐसा करते हुए मैंने झेंप अनुभव की थी। बड़े ही हास्यास्पद थे हम। तब मेरे पास सिर हिलानेवाला एक गुड्डा, ऐसा एक खिलौना था और मैंने उसे तुम्हें देना चाहा था। तुम्हें याद है?"

"और तुम्हें यह याद है," नताशा ने विचारमग्न मुस्कान के साथ कहा, "कैसे बहुत, बहुत ही पहले, जब हम बिल्कुल छोटे-छोटे थे, हमारी देख-भाल करनेवाले नौकर ने हमें एक कमरे में बुलाया था – यह पुराने घर की बात है – हम वहां गये और अचानक हमने अपने सामने किसे खड़ा देखा था..."

"नीग्रो को," निकोलाई ने खुशी से मुस्कराते हुए उसकी बात पूरी की। "भला यह कैसे याद नहीं रहेगा? मैं तो आज भी यह नहीं जानता कि वह नीग्रो था या नहीं या हमने सपने में ऐसा कुछ देखा था या फिर हमें इस तरह का कोई क़िस्सा सुनाया गया था।"

"तुम्हें याद है, वह स्लेटी रंग का था और उसके सफ़ेद-सफ़ेद दांत थे – वहां खड़ा हुआ वह हमारी तरफ़ देख रहा था..."

"आपको याद है, सोन्या?" निकोलाई ने पूछा।

"हां, हां, मुझे भी कुछ तो याद है," सोन्या ने कातरता से उत्तर दिया।

"इस नीग्रो के बारे में मैं पापा और अम्मां से कई बार पूछ चुकी हूं। उनका कहना है कि कोई नीग्रो नहीं था। लेकिन तुम्हें तो यह याद है!"

"बेशक याद है। उसके दांत तो मैं इस वक़्त भी अपने सामने देख रहा हूं।"

"यह कैसी अजीब बात है, मानो सपना देखा हो। मुझे यह अच्छा लगता है।"

"और तुम्हें यह याद है कि कैसे हम ईस्टर के पर्व के अवसर पर हॉल में बैठे हुए पूरे उबले अंडों को घुमा रहे थे और अचानक – दो बुढ़ियां सामने आ गयी तथा क़ालीन पर फिरकी की तरह घूमने लगीं। ऐसा हुआ था या नही? याद है, कितना मज़ा आया था तब?.."

"हां। और तुम्हें याद है कि समूर का नीला कोट पहने हुए पापा ने कैसे ओसारे में खड़े होकर बन्दूक़ से गोली चलायी थी?" ये मुस्कराते और आनन्द-विभोर होते हुए अतीत की स्मृतियों को सजीव कर रहे थे, बुढ़ापे की उदासी भरी स्मृतियों को नहीं, बल्कि तरुणावस्था की काव्यमयी स्मृतियों को, बहुत दूर अतीत की ऐसी छापों को, जब सपने हक़ीक़त से घुलमिल जाते हैं, और धीरे-धीरे हंसते हुए किसी कारण खुश हो रहे थे।

सदा की भांति सोन्या आज भी इन दोनों की तुलना में पीछे रह रही थी, यद्यपि इनकी स्मृतियां साझी थीं।

ये दोनों जो कुछ याद कर रहे थे, सोन्या उसमें से बहुत-सी बातें भूल चुकी थी और जो कुछ उसे याद भी था, वह उसमें वैसी ही काव्य-मयी भावना पैदा नहीं करता था, जैसी ये दोनों अनुभव कर रहे थे। वह तो अपने को इन दोनों की प्रसन्नता के अनुरूप बनाने की कोशिश करती हुई इनकी खुशी से खुश हो रही थी।

उसने तो वास्तव में तभी इन दोनों की बातचीत में दिलचस्पी ली, जब इन्होंने सोन्या के पहली बार रोस्तोव-परिवार में आने की स्मृतियों की चर्चा की। सोन्या ने बताया कि वह निकोलाई से कितनी अधिक डरती थी, क्योंकि उसकी जाकेट पर फ़ीते लगे थे और आया ने उससे कहा था कि उसको ऐसे फ़ीतो को कस दिया जायेगा।

"और मुझे याद है, मुझसे यह कहा गया था कि तुम करमकल्ले के नीचे पैदा हुई थी," नताशा बोली, "और मुझे स्मरण है कि तब मैं इस बात का यक़ीन न करने की जुर्रत नहीं कर पायी थी, लेकिन जानती थी कि यह सच नहीं है और मुझे बड़ा अटपटा-सा लगा था।"

इस बातचीत के समय दीवानखाने के पिछले दरवाज़े से नौकरानी ने भीतर झांकते हुए फुसफुसाकर कहा:

"छोटी मालकिन, मुर्ग़ा आ गया है।"

"मुझे अब उसकी ज़रूरत नहीं रही, पोल्या। कह दो कि वापस ले जाये," नताशा ने जवाब दिया।

दीवानखाने में चल रही इस बातचीत के दौरान डिम्मलेर कमरे में आया और कोने में रखे हार्प बाजे के पास गया। उसने उसपर से ग़िलाफ़ उतारा तो हार्प से एक बेसुरी-सी ध्वनि निकली।

"एडुआर्ड कारलिच, अंग्रेज़ी संगीतकार जॉन फ़ील्ड का मेरा मनपसन्द रोमांस बजाने की कृपा करें," ड्राइंगरूम से बूढ़ी काउंटेस की आवाज़ सुनायी दी।

डिम्मलेर ने स्वर छेड़ा और नताशा, निकोलाई तथा सोन्या को सम्बोधित करते हुए बोला:

"जवान लोग तो बहुत चुपचाप बैठे हैं!"

"हां, हम फ़लसफ़े की बातें कर रहे हैं," नताशा ने क्षण भर को मुड़कर देखते हुए कहा और बातचीत जारी रखी। अब सपनों की चर्चा हो रही थी।

डिम्मलेर हार्प बजाने लगा। नताशा पंजों के बल, बिल्कुल दबे पाव मेज़ के पास गयी, वहां से जलती मोमबत्ती उठाकर बाहर रखकर लौटी और आहट किये बिना ही अपनी जगह पर आकर बैठ गयी। कमरे में, विशेषतः उस सोफ़े पर, जहां ये तीनों बैठे थे, अन्धेरा था, किन्तु बड़ी-बड़ी खिड़कियों से पूनम के चांद की रुपहली चांदनी भीतर आ रही थी।

"जानते हो, मेरा ऐसा ख़्याल है," नताशा ने निकोलाई और सोन्या के निकट खिसकते और फुसफुसाते हुए यह तब कहना शुरू किया, जब डिम्मलेर वादन समाप्त कर चुका था और इस दुविधा में कि वह कुछ और बजाये या न बजाये, सुरों को धीमे-धीमे छेड़ रहा था, "कि अगर हम स्मृतियों को ऐसे सजीव करते रहते हैं, करते रहते हैं तो आख़िर ऐसी अवस्था में पहुंच जाते हैं कि हमें इस दुनिया में जन्म लेने के पहले की बातें भी याद आ जाती हैं..."

"इसे पुनर्जन्म कहते हैं," सोन्या ने कहा जो हमेशा ही अच्छी छात्रा रही थी और जिसे पढ़ा हुआ सब कुछ याद था। "मिस्र के लोग

ऐसा मानते थे कि हमारी आत्मायें जानवरों में थीं और वे फिर से जानवरों में चली जायेंगी।"

"नहीं, मैं यह नहीं मानती कि हम जानवरों में थे," नताशा ने पहले की तरह ही फुसफुसाकर कहा, यद्यपि हार्प-वादन समाप्त हो चुका था, "मैं यक़ीनी तौर पर जानती हूं कि हम किसी दूसरी दुनिया में फ़रिश्ते थे, यहां भी थे और इसीलिये हमें सब कुछ याद है..."

"मैं भी आप लोगों के साथ बैठ जाऊं?" धीरे से इनके पास आकर डिम्मलेर ने पूछा और इनके क़रीब ही बैठ गया।

"अगर हम फ़रिश्ते थे तो किसलिये नीचे स्तर पर आ गये?" निकोलाई ने जानना चाहा। "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!"

"नीचे स्तर पर नहीं, किसने तुमसे यह कहा है कि नीचे स्तर पर आ गये हैं?.. भला मैं यह कैसे जानती हूं कि पहले मैं क्या थी," नताशा ने बड़े विश्वास से आपत्ति की। "आख़िर आत्मा तो अमर तो इसका मतलब है कि अगर मैं सदा जीवित रहूंगी तो पहले भी ज़िन्दा थी, अनन्तकाल से जीवित हूं।"

"किन्तु हमारे लिये अनन्तकाल की कल्पना करना कठिन है," डिम्मलेर ने कहा जो तनिक तिरस्कारपूर्ण मुस्कान लिये हुए इन जवान लोगों के निकट आया था, मगर अब इन्हीं की भांति धीरे-धीरे और गम्भीरता से बोल रहा था।

"किसलिये कठिन है अनन्तकाल की कल्पना करना?" नताशा ने प्रश्न किया। "आज है, कल होगा और यह क्रम आगे भी चलता जायेगा, कल था, परसों था, बरसों था..."

"नताशा! अब तुम्हारी बारी है। मुझे कोई गाना सुनाओ," काउंटेस की आवाज़ सुनायी दी, "तुम लोग तो बिल्कुल षड्यन्त्रकारियों की तरह बैठे हुए हो।"

"अम्मां! मेरा गाने को ज़रा भी मन नहीं है," नताशा ने कहा, लेकिन साथ ही उठकर खड़ी हो गयी।

इन सबको, यहां तक कि अधेड़ उम्र के डिम्मलेर को भी, यह बातचीत बन्द करना और दीवानख़ाने के इस कोने से जाना अच्छा नहीं लग रहा था, लेकिन नताशा उठकर खड़ी हो गयी थी और इसलिये निकोलाई उसकी संगत करने के लिये क्लावीकॉर्ड के सामने जा बैठा। नताशा सदा की भांति हॉल के मध्य में खड़ी होकर और आवाज़

की गूंज के लिये सबसे अच्छी जगह चुनकर अपनी मां का मनपसन्द गाना गाने लगी।

नताशा ने कहा था कि उसका गाने को बिल्कुल मन नहीं है, लेकिन उसने इस शाम को जितना बढ़िया गाया, वैसे न तो इसके बहुत पहले और न बाद में ही बहुत समय तक गाया। काउंट इल्या अन्द्रेयेविच अपने कमरे में, जहां वह कारिन्दे मीत्या से बातचीत कर रहे थे, उसका गाना सुन रहे थे और जल्दी-जल्दी स्कूल का काम ख़त्म करके खेलने के लिये बाहर भाग जाने को उत्सुक छात्र की भांति कारिन्दे को हिदायतें देते हुए शब्दों को गड़बड़ा रहे थे और आखिर चुप हो गये। और मीत्या भी नताशा के गाने को चुपचाप सुनता तथा मुस्कराता हुआ काउंट के सामने खड़ा था। निकोलाई टकटकी बांधकर बहन को देख रहा था और उसके साथ-साथ ही सांस लेता था। नताशा के गाने को सुनती हुई सोन्या यह सोच रही थी कि उसके और उसकी सहेली के बीच ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ है और वह अपनी चचेरी बहन के पासंग भर भी मनमोहिनी नहीं हो सकती। बूढ़ी काउंटेस के होंठों पर सुखद-उदास मुस्कान तथा आंखों में आंसू थे और वह कभी-कभी अपने सिर को हिलाती थीं। वह नताशा और अपनी जवानी तथा इस बारे में सोच रही थी कि प्रिंस अन्द्रेई के साथ निकट भविष्य में होनेवाली उसकी शादी में कुछ अस्वाभाविक और भयानक बात थी।

काउंटेस के क़रीब बैठा हुआ डिम्मलेर आंखें मूंदकर नताशा का गाना सुन रहा था।

"सच मानिये, काउंटेस," आखिर उसने कहा, "इसमें तो यूरोपीय महत्त्व की प्रतिभा है, इसे तो कुछ भी सीखने की आवश्यकता नहीं। इसकी आवाज़ की यह कोमलता, यह मधुरता, यह ज़ोर..."

"ओह! कैसे मेरा दिल डरता है इसके लिये, कैसे डरता है," काउंटेस यह भूलकर कि किससे बात कर रही हैं, कह उठीं। उनका मातृ-सुलभ सहज ज्ञान उनसे यह कह रहा था कि नताशा में ज़रूरत से ज़्यादा ही बहुत कुछ है और इसी कारण वह कभी सुखी नहीं होगी। नताशा ने अभी अपना गाना समाप्त नहीं किया था कि ख़ुशी से उमगता चौदहवर्षीय पेत्या यह ख़बर लेकर दौड़ता हुआ कमरे में आया कि स्वांग भरनेवाले आ गये हैं।

नताशा ने अचानक गाना बन्द कर दिया।

"उल्लू!" वह भाई पर चिल्ला उठी, भागकर कुर्सी पर जा गिरी और ऐसे सिसक-सिसककर रोने लगी कि बाद में बहुत देर तक शान्त नहीं हो पायी।

"नही, अम्मां, सच कहती हूं कि यह तो कोई बात ही नहीं– यों ही पेत्या ने मुझे डरा दिया," उसने मुस्कराने की कोशिश करते हुए कहा। किन्तु उसके आंसू बहते जाते थे और सिसकियों से गला रुंध जाता था।

घर के कुछ भूदास भयानक और हास्यास्पद ढंग से भालू, तुर्क, भटियारखानेवाले और कुलीन महिलाओं का स्वांग भरकर आये थे। अपने साथ बाहर की ठण्ड और हंसी-खुशी का रंग लिये हुए शुरू में वे घबराते-झिझकते-से ड्योढ़ी में एक-दूसरे के साथ सटकर खड़े रहे, फिर एक-दूसरे के पीछे छिपते हुए हॉल में आ गये और इसके बाद पहले गे शर्माते-झेंपते, किन्तु बाद में अधिकाधिक उल्लासपूर्वक तथा हिल-मिलकर गाने, लोक और झूमर नाच नाचने तथा क्रिसमस के खेल खेलने लगे। काउंटेस इन बहुरूपियों के चेहरे पहचानकर तथा उनके स्वांग पर हंसती हुई ड्राइंगरूम में चली गयीं। काउंट इल्या अन्द्रेयेविच खिली मुस्कान लिये हॉल में बैठे थे, खेल-तमाशे करनेवालों को प्रोत्सा-हित कर रहे थे। जवान लोग कही ग़ायब हो गये।

आध घण्टे बाद पहले से उपस्थित स्वांग भरनेवालों के अतिरिक्त फूला हुआ बड़ा घाघरा पहने एक बूढ़ी कुलीन महिला हॉल में प्रकट हुई – यह निकोलाई था। पेत्या तुर्क लड़की बना हुआ था। डिम्मलेर विदूषक के भेस में था, नताशा हुस्सार थी और सोन्या जले कार्क से मूंछें तथा भौंहें बनाकर जार्जियाई चेर्केस जाति का बांका नौजवान बनी हुई थी।

घर के इन भूदासों को, जो स्वांग नही भरे थे, आश्चर्यचकित करने, उनके द्वारा पहचाने न जाने तथा उनकी प्रशंसा पाने के बाद जवान लोगों को यह लगा कि उनकी पोशाकें इतनी अच्छी हैं कि उन्हें किसी और को भी दिखाना चाहिये।

निकोलाई ने, जो बहुत बढ़िया मार्ग पर त्रोइका घोड़ागाड़ी में सभी को सैर कराने के लिये बहुत उत्सुक था, यह सुझाव पेश किया कि स्वांग भरे हुए दस भूदासों को साथ लेकर चाचा के यहां जाया जाये।

"नहीं, उस बूढ़े आदमी को परेशान करने में क्या तुक है!" काउंटेस ने कहा। "इसके अलावा उसके यहां तो तुम लोगों को हिलने-डुलने की जगह भी नहीं मिलेगी। अगर जाना ही है तो मेल्युकोवा-परिवारवालों के यहां जाओ।"

मेल्युकोवा विधवा थी और विभिन्न आयु के बच्चों तथा शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ रोस्तोव-परिवारवालों से चार से अधिक किलो-मीटर की दूरी पर रहती थी।

"यह बड़ी समझदारी की बात कही है तुमने, मेरी प्यारी," बूढ़े काउंट ने उत्साह से कहा। "मैं भी अभी कपड़े पहनकर तैयार हो जाता हूं और तुम लोगों के साथ चलता हूं। ज़रा पेलागेया को भी रंग में ले आऊंगा।"

किन्तु काउंटेस काउंट के जाने के लिये राज़ी नहीं हुईं। पिछले कुछ दिनों से काउंट के पांव में दर्द था। यह तय हुआ कि काउंट नहीं जायेंगे और अगर लुईज़ा इवानोव्ना (मदाम शोस्स) जाने को तैयार हो जाये तो नताशा और सोन्या भी मेल्युकोवा के यहां जा सकती हैं। हमेशा बहुत कातर और लजीली सोन्या ही अन्य सभी से अधिक लुईज़ा इवानोव्ना से यह अनुरोध करने लगी कि वह इन्कार नहीं करे।

सोन्या का स्वांग सबसे बढ़-चढ़कर था। उसकी मूंछें और भौंहें तो उसे ख़ूब ही जंच रही थीं। सभी उससे यह कहते थे कि वह बहुत ही सुन्दर लग रही है और अपने स्वभाव से भिन्न, वह बड़ी सजीव और उत्साहपूर्ण मनःस्थिति में थी। उसके अन्तर में मानो कोई उससे यह कह रहा था कि या तो आज या फिर कभी भी उसके भाग्य का निर्णय नहीं होगा और अपनी मर्दाना पोशाक में वह बिल्कुल दूसरी ही प्रतीत हो रही थी। लुईज़ा इवानोव्ना सहमत हो गयी और आध घण्टे बाद छोटी-बड़ी घण्टियां टनटनाती और पाले से जमी बर्फ़ पर सीटी जैसी तथा ची-ची की आवाज़ पैदा करती हुई चार त्रोइका स्लेज घोड़ागाड़ियां दरवाज़े के सामने आकर खड़ी हो गयीं।

नताशा ने ही सबसे पहले क्रिसमस के हर्ष-उल्लास को अभिव्यक्ति दी और यह ख़ुशी एक व्यक्ति से दूसरे में प्रतिबिम्बित होती हुई बढ़ती चली गयी और उस समय अपने चरम-बिन्दु पर पहुंच गयी, जब सभी कड़ाके की ठण्ड में बाहर आ गये और एक-दूसरे से बातें करते, एक-दूसरे को पुकारते, हंसते तथा शोर मचाते हुए स्लेजों में बैठ गये।

दो त्रोइका घोड़ागाड़ियां मामूली, हर दिन के इस्तेमाल की थीं। तीसरी त्रोइका बुज़ुर्ग काउंट की थी जिसमें बीच का, ओर्लोव नस्ल का बढ़िया, दुलकी चालवाला घोड़ा जुता था। चौथी त्रोइका ख़ुद निकोलाई की थी जिसका बिचला यानी मुख्य घोड़ा नाटा, झबरीला और मुश्की था। कुलीन बुढ़िया की पोशाक और उसपर पेटी समेत हुस्सारों का लबादा पहने निकोलाई लगामें हाथ में लिये हुए अपनी स्लेज के मध्य में खड़ा था।

इतनी अधिक रोशनी थी कि उसे पूरे चांद की चांदनी में लगामों में लगे धातु के छल्ले और घोड़ों की आंखें भी, जो ओसारे की छत के साये में शोर मचा रहे लोगों को कुछ डरे-डरे-से देख रहे थे, बिल्कुल साफ़ दिखाई दे रही थीं।

निकोलाई की स्लेज में नताशा, सोन्या, मदाम शोस्स और दो नौकरानियां बैठीं। बुज़ुर्ग काउंट की स्लेज में डिम्मलेर दम्पति और पेत्या सवार हो गये। बाक़ी दो स्लेजों में स्वांग भरे हुए भूदास बैठ गये।

"ज़ाख़ार, तुम अपनी स्लेज को सबसे आगे बढ़ाओ!" निकोलाई ने पिता के कोचवान से पुकारकर कहा, ताकि रास्ते में उससे आगे निकलने का मौक़ा मिल सके।

बुज़ुर्ग काउंट की त्रोइका, जिसमें डिम्मलेर और स्वांग भरे हुए दूसरे लोग बैठे थे, अपने पटरों को ऐसे चरमराती, मानो वे बर्फ़ के साथ जकड़े हों, तथा भारी आवाज़वाली घण्टी को टनटनाती हुई आगे बढ़ चली। अग़ल-बग़ल के घोड़े बमों से सटकर दौड़ रहे थे, गहरी बर्फ़ में पैर पड़ने पर वे चीनी की तरह सख़्त तथा चमकती उस बर्फ़ को ऊपर उछालते थे।

निकोलाई ने पहली त्रोइका के पीछे अपनी त्रोइका बढ़ायी और उसके पीछे बाक़ी दो त्रोइकायें लोगों के शोर तथा चीं-चर्र की आवाज़ के साथ बढ़ने लगी। शुरू में घोड़े हल्की-दुलकी चाल से तंग रास्ते पर बढ़ते रहे। जब तक ये स्लेजें बाग़ के पास से गुज़रती रहीं, रास्ते पर फैले हुए पातहीन वृक्षों के साये खिली चांदनी को ढंक देते थे, मगर जैसे ही स्लेजें बाड़ से आगे निकलीं, सभी ओर पुनम के चांद की चांदनी में लिपटा हल्की नीली झलक लिये हीरे की तरह चमकता हुआ समतल, निश्चल विस्तार सामने दिखाई देने लगा। सबसे आगे जा रही स्लेज

ने गड्ढे में धचका खाया, पीछे आ रही तीनों स्लेजों के साथ भी ऐसा ही हुआ और फिर साहस से इस्पाती नीरवता को भंग करते हुए एक के बाद एक ये चारों बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ने लगीं।

"ख़रगोश के पैरों के निशान, बहुत-से निशान!" पाले से जकड़ी ठण्डी हवा में नताशा की आवाज़ गूंज उठी।

"कितना उजाला है, निकोलाई!" सोन्या ने कहा। निकोलाई ने मुड़कर सोन्या की तरफ़ देखा और उसके चेहरे को नज़दीक से देखने के लिये उसकी तरफ़ झुक गया। सेबल के समूर के ओवरकोट के बीच से काली भौंहों और मूंछोंवाले एक बिल्कुल नये तथा प्यारे चेहरे ने, जो चांदनी में निकट और दूर भी था, उसकी तरफ़ देखा।

"पहले तो यह सोन्या होती थी," निकोलाई ने सोचा। उसने उसे निकटता से देखा और मुस्करा दिया। "क्या बात है, निकोलाई?"

"कोई बात नहीं," उसने जवाब दिया और फिर से घोड़ों की ओर मुंह कर लिया।

स्लेजों के पटरों से चिकने बने और पूरे चांद की चांदनी में स्पष्ट नज़र आनेवाले नालों के निशानों से भरे साफ़, बड़े मार्ग पर पहुंचते ही घोड़े ख़ुद-ब-ख़ुद लगामों पर ज़ोर डालने और अपनी चाल तेज़ करने लगे। बायीं ओर का घोड़ा सिर झुकाकर तथा सरपट दौड़ता हुआ अपनी जोत को ज़ोर से खींचने लगा। बीच का घोड़ा कनौतियां बदलता हुआ दायें-बायें डोलने लगा मानो पूछ रहा हो: "सरपट दौड़ने लगे या अभी इसका वक़्त नहीं आया?" सामने, काफ़ी दूरी पर सफ़ेद बर्फ़ की पृष्ठभूमि में ज़ाखार के काले घोड़ोंवाली त्रोइका साफ़ नज़र आ रही थी जिसकी भारी घण्टी की आवाज़ लगातार अधिकाधिक दूर होती जाती थी। इस स्लेज से स्वांग भरनेवालों का हो-हल्ला, ठहाके और आवाज़ें सुनाई दे रही थीं।

"तो अब बढ़ चलो, मेरे प्यारो!" निकोलाई ने एक ओर को लगाम खींचते और चाबुक सटकारते हुए चिल्लाकर घोड़ों से कहा। और केवल सामने से आ रही हवा के तेज़ हो जाने और अग़ल-बग़ल के घोड़ों के अधिकाधिक सरपट दौड़ने के कारण लगनेवाले झटकों से ही यह आभास होता था कि अब त्रोइका कैसे हवा से बातें कर रही थी। निकोलाई ने मुड़कर देखा। पीछे आ रही त्रोइकाओं के कोचवान शोर मचाते, चीख़ते-चिल्लाते, चाबुकों को सटकारते और बीच के मुख्य घोड़ों को

भी सरपट दौड़ने के लिये विवश करते हुए उन्हें तेज़ी से बढ़ाते ला रहे थे। बीच का घोड़ा बम के नीचे दृढ़ता से दौड़ता जा रहा था, गति धीमी करने की बात सोचना तो दूर, वह तो ज़रूरत होने पर अपनी रफ़्तार और भी तेज़ करने को तैयार था।

निकोलाई पहली त्रोइका के बराबर जा पहुंचा। ये किसी टीले से नीचे उतर गये और नदी के साथ-साथ चरागाह में से जानेवाले एक चौड़े, पक्के रास्ते पर पहुच गये। "यह हम कहां हैं?" निकोलाई ने सोचा। "हमे होना तो चाहिये कोसोई चरागाह में। लेकिन नहीं, यह तो कोई नई जगह है जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा। यह न तो कोसोई चरागाह है और न ही द्योमकिना पहाड़ी। भगवान ही जानें कि यह क्या है! यह तो कोई नई और जादुई जगह है। ख़ैर, यह चाहे कोई भी जगह क्यों न हो!" और वह अपने घोड़ों को ललकारते हुए पहली त्रोइका से आगे निकलने की कोशिश करने लगा।

ज़ाख़ार ने अपने घोड़ों को कुछ धीमा किया और पाले के कारण भौंहों तक सफ़ेद हो गये अपने चेहरे को घुमाकर पीछे देखा।

निकोलाई ने अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाना शुरू कर दिया। ज़ाख़ार ने अपने हाथों को आगे की ओर फैलाया, घोड़ों को तेज़ करने के लिये मुंह मे पुच-पुच की आवाज़ निकाली और उन्हें ख़ूब तेज़ी से दौड़ाने लगा।

"तो अब सम्भल कर, मालिक," उसने कहा। दोनों त्रोइकायें अब और भी अधिक तेज़ी से एक-दूसरी के साथ-साथ बढ़ने लगीं और सरपट दौड़ते घोड़ों की टांगें अधिकाधिक तीव्रता से ऊपर उठने और नीचे जाने लगीं। ज़ाख़ार ने अपनी फैली हुई बांहों की स्थिति को बदले बिना एक हाथ ऊपर उठाया जिसमें लगामें थी।

"आप आगे नही निकल पायेंगे, मालिक," उसने चिल्लाकर निकोलाई से कहा। निकोलाई अपने तीनों घोड़ों को सरपट दौड़ाने लगा और ज़ाख़ार से आगे निकल गया। तेज़ दौड़ते घोड़ों ने स्लेज में बैठे लोगों के चेहरों को सूखे और सूक्ष्म हिमकणों से ढंक दिया, उन्हें अपने निकट घंटियों की बहुत तीव्र टनटन सुनायी दे रही थी और जिस त्रोइका को पीछे छोड़ा जा रहा था, उन्हें उसके सरपट दौड़ते घोड़ों की टांगों तथा परछाइयों की अस्पष्ट-सी झलक मिल रही थी। सभी ओर से स्लेजों के पटरों की सीटियां तथा औरतों की चीखें सुनायी दे रही थीं।

त्रोइका घोड़ागाड़ी में मेल्युकोव-परिवारवालों के यहां की सैर।

घोड़ों की गति को फिर से कुछ धीमा करके निकोलाई ने अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। चारों ओर चांदनी में डूबा और सितारों से जड़ा हुआ वही अद्भुत विस्तार था।

"ज़ाख़ार पुकारकर कह रहा है कि मैं त्रोइका को बायें मोड़ लूं। लेकिन किसलिये बायें?" निकोलाई सोच रहा था। क्या हम मेल्यु-कोवा-परिवारवालों के यहां जा रहे हैं, क्या यह मेल्युकोव्का है? भगवान ही जानते हैं कि हम कहां जा रहे हैं, भगवान ही जानते हैं कि हमारे साथ क्या हो रहा है – और हमारे साथ जो कुछ भी हो रहा है, बड़ा अजीब तथा बहुत अच्छा है।" उसने मुड़कर स्लेजों में बैठे लोगों की तरफ़ देखा।

"अरे, इसकी तो मूंछें और बरौनियां – सब सफ़ेद हो रही हैं," स्लेज में बैठे पतली-पतली मूंछों और भौंहोंवाले अजीब, प्यारे तथा अजनबी लोगों में से एक ने कहा।

"लगता है कि यह नताशा है," निकोलाई ने सोचा, "और यह मदाम शोस्स है, शायद न भी हो। और यह मूंछोंवाला चेर्केस – मैं नहीं जानता कि यह कौन है, लेकिन मैं इस लड़की को प्यार करता हूं।"

"आप लोगों को ठण्ड तो नहीं लग रही?" निकोलाई ने पूछा। इन लोगों ने कोई जवाब नहीं दिया और हंसने लगीं। पीछे आ रही त्रोइका में बैठे डिम्मलेर ने पुकारकर कुछ कहा, शायद कोई हंसी की बात। लेकिन वह क्या चिल्ला रहा था, सुनना सम्भव नहीं था।

"हां, हां," हंसती हुई आवाज़ों ने जवाब दिया।

फिर भी यह तो गड्डमड्ड होती काली परछाइयों और हीरों की चमक, संगमरमर की सोपान-शृंखला, अद्भुत इमारतों की रुपहली छतों तथा किन्हीं अजीब-से जानवरों की चीख़-चिल्लाहटवाला जादुई वन है। "और अगर यह वास्तव में ही मेल्युकोव्का है तो यह और भी अजीब बात है कि भगवान जानें कि हम कहां से होते हुए यहां मेल्युकोव्का में पहुंच गये," निकोलाई सोच रहा था।

वास्तव में ही यह मेल्युकोव्का था और खिले चेहरे तथा हाथों में मोमबत्तियां लिये हुए नौकर-नौकरानियां दरवाज़े पर भागे आये।

"कौन हैं ये?" किसी ने दरवाज़े पर से पूछा।

"काउंट के स्वांग भरनेवाले। घोड़ों से ही पता चल रहा है," कुछ आवाज़ों ने जवाब दिया।

## ११

अपनी बेटियों से घिरी हुई लम्बी-चौड़ी तथा उत्साही पेलागेया दानीलोव्ना मेल्युकोवा चश्मा चढ़ाये और ढीला-ढाला ड्रेसिंग गाउन पहने ड्राइंगरूम में बैठी थीं। वह यह कोशिश कर रही थीं कि अपनी बेटियों को ऊबने और उदास न होने दें। बेटियां उस वक़्त बड़े चैन से पिघले हुए गर्म मोम को ठण्डे पानी में डालकर और उससे बननेवाली आकृतियों की दीवार पर पड़ती परछाइयों को देखकर अपने भविष्य का अनुमान लगा रही थीं, जब ड्योढ़ी में आगन्तुकों के क़दमों का शोर और आवाज़ें सुनायी दीं।

हुस्सारों, कुलीन महिलाओं, डायनों, विदूषकों और भालुओं का स्वांग भरे लोग खांसकर अपने गले साफ़ करने और चेहरों पर से पाला पोंछने के बाद ड्राइंगरूम में दाख़िल हुए जहां जल्दी-जल्दी मोमबत्तियां जलायी रही थीं। विदूषक डिम्मलेर और कुलीन महिला बने निकोलाई ने लोक-नृत्य शुरू कर दिया। शोर मचाते बालकों से घिरे हुए स्वांग भरनेवालों ने अपने चेहरों को छिपाते तथा आवाज़ों को बदलते हुए गृह-स्वामिनी के सामने सिर झुकाया और जहां-तहां खड़े हो गये।

"अरे, इन्हें तो पहचाना ही नहीं जा सकता! वह तो नताशा है न! देखिये तो वह कैसी लग रही है! सच, किसी की याद दिलाती है! यह डिम्मलेर भी ख़ूब जंच रहे हैं! मैं तो पहचान ही नहीं पायी। कितना बढ़िया नाचते हैं! हाय राम, यह चेर्केस भी ख़ूब है–प्यारी सोन्या इस भेस में बहुत ही अच्छी लग रही है। और यह कौन है? भई वाह, जी ख़ुश कर दिया आप लोगों ने! ओ निकीता, वान्या, तुम लोग जल्दी से मेज़ें तो एक तरफ़ को हटा दो। और हम यहां अब तक चुपचाप बैठी थीं!"

"हा-हा-हा!.. इस हुस्सार, इस हुस्सार को तो देखो! बिल्कुल लड़का लग रहा है, मगर टांगें!.. देखना सम्भव नहीं..." कई आवाज़ें सुनायी दीं।

मेल्युकोवा-परिवार की युवतियों की चहेती नताशा उन्हें अपने साथ लेकर घर के पीछेवाले कमरों में ग़ायब हो गयी। वहां जला हुआ कार्क, तरह-तरह के गाउन और मर्दों की पोशाकें मंगवायी गयीं जिन्हें बन्द

दरवाज़े के पीछे से लड़कियों के नंगे हाथ नौकरों से लेते रहे। दस मिनट के बाद मेल्युकोवा-परिवार की सभी युवतियां स्वांग भरनेवालों में शामिल हो गयीं।

पेलागेया दानीलोव्ना मेहमानों के लिये जगह साफ़ करवाने तथा कुलीनों और नौकरों-चाकरों की मेहमाननेवाज़ी का प्रबन्ध करने के बाद चश्मा चढ़ाये तथा अपनी मुस्कान को कुछ दबाये हुए स्वांग भरनेवालों के बीच आ-जा रही थीं, बहुत नज़दीक से उनके चेहरों को देख रही थी और किसी को भी पहचान नहीं पा रही थीं। वह न केवल रोस्तोवों और डिम्मलेर को ही नहीं, बल्कि अपनी बेटियों तथा अपने दिवंगत पति के ड्रेसिंग गाउनों और उन वर्दियों को भी नहीं पहचान पा रही थीं जो वे पहने थीं।

"और यह कौन है?" उन्होंने बेटियों की शिक्षिका को सम्बोधित करते और क़ज़ान शहर का तातार बनी हुई अपनी बेटी के चेहरे को ग़ौर से देखते हुए पूछा। "लगता है कि रोस्तोवों में से कोई है। और श्रीमान हुस्सार, आप किस रेजिमेंट में काम करते हैं?" गृह-स्वामिनी ने नताशा से पूछा। "इस तुर्क को, इस तुर्क को कुछ मिठाई दे दो, इसके धर्म में इसकी मनाही नहीं है," उन्होंने बटलर से कहा जो खाने-पीने की चीज़ें लिये काउंटेस के साथ चल रहा था।

नाचनेवाले यह मानते हुए कि स्वांग भरे हैं, कि कोई भी उन्हें पहचान नहीं पायेगा और इसलिये जो ज़रा भी झेंप महसूस नहीं कर रहे थे, जब कभी-कभी नाच का कोई अजीब और हास्यास्पद क़दम उठाते तो पेलागेया दानीलोव्ना रूमाल से अपना मुंह ढंक लेतीं और उनका पूरा भारी-भरकम शरीर बुढ़ापे के अनुरूप, प्यारी तथा अदम्य हंसी से हिलने लगता।

"मेरी छोटी-सी साशा को तो देखिये, मेरी छोटी-सी साशा को!" वह कहतीं।

रूसी लोक-नृत्यों और झूमर-नृत्यों के बाद पेलागेया दानीलोव्ना ने सभी नौकरों और कुलीनों को एकसाथ मिलाकर बड़ा घेरा बना लिया। एक अंगूठी, रस्सी और चांदी का रूबल लाया गया तथा सभी मिलकर खेल खेलने लगे।

एक घण्टे बाद सभी की पोशाकों की बुरी हालत हो गयी, उनमें खूब सिलवटें पड़ गयीं। जले हुए कार्क से बनायी गयी मूंछें और भौंहें

पसीने से तर, खेलों के कारण गर्म और लाल तथा खिले चेहरों पर फैल गयी। पेलागेया दानीलोव्ना स्वांग भरनेवालों को पहचानने, यह प्रशंसा करने लगीं कि पोशाकें कितने अच्छे ढंग से बनायी गयी थीं, वे युवतियों पर तो विशेष रूप से कितनी अधिक जंचती थीं और उन्होंने सभी को इस बात के लिये धन्यवाद दिया कि उन्होंने उनका इतना अधिक मन ख़ुश किया है। कुलीन अतिथियों का रात के भोजन के लिये ड्राइंगरूम में आमन्त्रित किया गया, जबकि भूदास नौकरों-चाकरों के लिये हॉल में खाने का प्रबन्ध कर दिया गया।

"नहीं, ग़ुसलख़ाने में जाकर भविष्य का अनुमान लगाने का ढंग बड़ा भयानक है!" भोजन के वक़्त मेल्युकोवा-परिवार में रहनेवाली एक चिर कुमारी ने कहा।

"भला क्यों?" मेल्युकोवा की बड़ी बेटी ने पूछा।

"आप ऐसा करने नहीं जायेंगी, क्योंकि इसके लिये बहुत साहस चाहिये..."

"मैं जाऊंगी," सोन्या ने कहा।

"आप हमें यह तो सुनायें कि उस युवती के साथ वहां क्या हुआ था?" मेल्युकोवा की दूसरी बेटी बोली।

"हुआ यह था कि एक युवती अकेली ही ग़ुसलख़ाने में चली गयी," चिर कुमारी बताने लगी, "वह अपने साथ एक मुर्ग़ ले गयी, उसने दो व्यक्तियों के लिये ढंग से मेज़ लगा दी और बैठ गयी। बैठी रही और कुछ देर बाद उसे अचानक सुनायी दिया कि छोटी-बड़ी घंटियां टनटनाती हुई एक स्लेज बाहर आकर रुकी है। उसे किसी के पांवों की आहट मिली। वह बिल्कुल इन्सान की शक्ल में, एक फ़ौजी अफ़सर की तरह भीतर आया और उसके साथ मेज़ के सामने बैठ गया।

"ओह! ओह!" नताशा डर के मारे दीदे फाड़े हुए चिल्ला उठी। "और क्या वह बोलता भी था?"

"हां, बिल्कुल इन्सान की तरह। ठीक वैसे ही, जैसे आम तौर पर होता है और लगा युवती को मनाने-फुसलाने। युवती को तो मुर्ग़े के बांग देने तक उसे बातों में लगाये रखना चाहिये था। लेकिन वह डर गयी, बस, डर गयी और उसने हाथों से मुंह ढंक लिया। उसी वक़्त उसने युवती को अपनी बांहों में कस लिया। यही ख़ैरियत रही कि इसी क्षण नौकरानियां भागती हुई वहां पहुंच गयीं..."

"रहने दीजिये, क्यों डरा रही हैं इन्हें!" पेलागेया दानीलोव्ना ने कहा।

"अम्मां, ख़ुद आप भी तो इस तरह अपनी क़िस्मत का पता लगाया करती थीं..." बेटी ने कहा।

"खत्ती में किस तरह से क़िस्मत का अनुमान लगाया जाता है?" सोन्या ने पूछा।

"वह ऐसे कि मान लो, कोई इसी वक़्त खत्ती में जाता है और वहां उसे क्या सुनायी देता है—अगर ठक-ठक, टक-टक की आवाज़ सुनायी देती है तो यह बुरी बात है और अगर अनाज खिसकता-सरकता सुनायी देता है तो यह अच्छी बात है। कभी-कभी ऐसा भी होता है..."

"अम्मां, आपके साथ खत्ती में क्या हुआ था, वह सुनाइये न?"

पेलागेया दानीलोव्ना मुस्करायी।

"मैं तो भूल भी गयी..." वह बोली। "तुम में से तो कोई वहां नहीं जायेगी?" – "मैं जाऊंगी। पेलागेया दानीलोव्ना, मुझे अनुमति दे दीजिये, मैं जाऊंगी खत्ती में," सोन्या ने कहा।

"ठीक है, अगर डरती नहीं तो जाओ।"

"लुईज़ा इवानोव्ना, मैं जा सकती हूं?" सोन्या ने शिक्षिका से पूछा।

चाहे ये लोग अंगूठी, रस्सी या चांदी के रूबल के खेल खेलते रहे, चाहे इस वक़्त की तरह बातचीत करते रहे, निकोलाई सोन्या के निकट बना रहा और उसे बिल्कुल नयी ही दृष्टि से देखता रहा। उसे ऐसे लगता था कि जले कार्क से बनायी गयी इन मूंछों की बदौलत वह आज पहली बार ही उसे अच्छी तरह जान पाया है। इस शाम को सोन्या वास्तव में ही इतने रंग में थी, इतनी सजीव और प्यारी लग रही थी, जैसे निकोलाई ने उसे पहले कभी नहीं देखा था।

"तो ऐसी है यह! और मैं कैसा उल्लू हूं!" निकोलाई ने उसकी चमकती आंखों और मूंछों के नीचे से उसके गालों पर गुल बनाती प्रसन्नता तथा उल्लासपूर्ण मुस्कान को देखते हुए सोचा जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था।

"मैं किसी भी चीज़ से नहीं डरती," सोन्या ने कहा। "क्या मैं अभी जा सकती हूं?" वह उठकर खड़ी हो गयी। सोन्या को यह बता दिया गया कि खत्ती कहां है, कि कैसे उसे वहां चुपचाप खड़े रहकर

आवाज़ों को सुनना है और उसे समूर का ओवरकोट दे दिया। ओवरकोट को सिर पर डालकर उसने निकोलाई की तरफ़ देखा।

"कितनी प्यारी है यह लड़की!" निकोलाई अपने आप ही कह उठा। "लेकिन मैं अब तक क्या सोचता रहा हूं!"

खत्ती की तरफ़ जाने के लिये सोन्या दालान में निकली। निकोलाई यह कहते हुए कि उसे गर्मी लग रही है, जल्दी से मुख्य द्वार के ओसारे की ओर चला गया। लोगों की भीड़ के कारण घर में सचमुच गर्मी हो रही थी।

बाहर वही स्थिर-शान्त ठण्डक थी, पूनम का वही चांद था, केवल चांदनी पहले से अधिक उजली हो गयी थी। प्रकाश इतना अधिक था और बर्फ़ पर हिमकणों के इतने अधिक झिलमिलाते सितारे थे कि आकाश की ओर देखने को मन नहीं होता था और असली सितारे तो नज़र ही नहीं आ रहे थे। आकाश काला-काला और ऊबा-ऊबा-सा था, पृथ्वी आनन्द-विभोर थी।

"मैं उल्लू हूं, उल्लू हूं! अब तक किस बात का इन्तज़ार करता रहा हूं?" निकोलाई ने सोचा और ओसारे पर से भागते हुए उसने पिछवाड़े के ओसारे की ओर ले जानेवाली पगडंडी पर घर के गिर्द चक्कर लगाया। उसे मालूम था कि सोन्या यहीं से आयेगी। आधे रास्ते में जलावन की लकड़ियों की बर्फ़ से ढकी छोटी-छोटी टालें थीं। उनका साया ज़मीन पर पड़ रहा था। उनके मध्य और बग़ल से बर्फ़ और पगडंडी पर पुराने तथा पातहीन लाइम पेड़ों की आपस में गुंथी हुई परछाइयां दिख रही थीं। यह पगडंडी खत्ती की ओर जाती थी। खत्ती की लट्ठों की दीवार तथा बर्फ़ से ढकी छत, जो मानो किसी क़ीमती पत्थर से बनी हुई लगती थीं, पूनम के चांद की चांदनी में चमक रही थी। बाग़ में कोई पेड़ पाले से चटका और फिर से गहरी निस्तब्धता छा गयी। निकोलाई को ऐसे लग रहा था कि उसका वक्ष हवा में नहीं, बल्कि चिरयौवन की शक्ति और ख़ुशी में सांस ले रहा है।

पिछवाड़े के ओसारे की पैड़ियों पर क़दमों की आवाज़ सुनायी दी, बर्फ़ से बिल्कुल ढकी आख़िरी पैड़ी पर ऊंची चरमराहट हुई और चिर कुमारी ने ये शब्द कहे:

"कुमारी जी, इस पगडंडी पर सीधी चलती जाइये। सिर्फ़ मुड़कर नहीं देखिये!"

"मैं डरती नहीं हूं," सोन्या ने जवाब दिया और पगडंडी पर, निकोलाई की दिशा में सोन्या के पतले तलेवाले जूतों की चर्र-मर्र तथा कचर-कचर सुनायी देने लगी।

समूर के ओवरकोट में लिपटी हुई सोन्या बढ़ी जा रही थी। निकोलाई से दो क़दम दूर रह जाने पर ही वह उसे नज़र आया। उसे भी वह वैसा ही नही लगा, जैसा कि सोन्या उसको जानती थी और जिससे हमेशा कुछ-कुछ डरती रही थी। वह महिला की पोशाक में था, उसके बाल अस्त-व्यस्त थे और उसके होंठों पर सोन्या के लिये एक नयी और सुखद मुस्कान थी। सोन्या जल्दी से भागकर उसके पास गयी। "वही, किन्तु फिर भी सर्वथा भिन्न," निकोलाई ने पूरी तरह से चांदनी में चमकते उसके चेहरे को देखते हुए सोचा। उसने सोन्या के सिर को ढकनेवाले समूर के ओवरकोट के नीचे से अपने हाथ बढ़ाकर उसे बांहों में भर लिया, दिल के साथ चिपका लिया और उन होंठों को चूमा जिनके ऊपर मूंछें बनी हुई थीं और जिनसे जले कार्क की गन्ध आ रही थी। सोन्या ने होंठों के मध्य में उसका चुम्बन लिया और अपने छोटे-छोटे हाथों को बाहर निकालकर उसके गालों को अपने हाथों में साध लिया।

"सोन्या!.."—"निकोलाई!.." इन दोनों ने सिर्फ़ इतना ही कहा। ये दोनों खत्ती की तरफ़ भाग गये और फिर अपने-अपने ओसारे से घर में वापस लौट आये।

## १२

जब ये सभी लोग पेलागेया दानीलोव्ना के यहां से लौट रहे थे तो नताशा ने, जो सब कुछ ताड़ जाती थी और जिसकी नज़र से कभी कोई चीज़ छिपी नहीं रहती थी, स्लेजों में बैठने की कुछ ऐसी व्यवस्था की कि लुईज़ा इवानोव्ना और वह खुद तो डिम्मलेर के साथ बैठ गयीं तथा सोन्या और नौकरानियां निकोलाई के साथ। घर लौटते वक़्त निकोलाई घोड़ों को सरपट नहीं, बल्कि सामान्य गति से हांक रहा था और चांद की इस अजीब तथा सब कुछ बदल देनेवाली रोशनी में सोन्या के चेहरे को लगातार ग़ौर से देखता हुआ भौंहों और मूंछों

के नीचे से अपनी पहलेवाली तथा इस समय की सोन्या को खोजने की कोशिश कर रहा था जिससे कभी भी अलग न होने का उसने निर्णय कर लिया था। वह बहुत ध्यान से उसे देखता रहा और जब उसने पहलेवाली तथा इस समय की सोन्या को पहचान लिया और उसे जले हुए कार्क की गन्ध के साथ मिली चुम्बन की अनुभूति की याद आई तो उसने गहरी सांस लेकर ठंडी-ठिठुरी हवा को अपने भीतर भर लिया और पीछे छूटती जाती धरती तथा आकाश की ओर देखते हुए अपने को फिर से किसी अद्भुत, जादुई जगत में अनुभव किया।

"सोन्या, **तुम** खुश हो?" वह कभी-कभी यह पूछ लेता।

"हां," वह जवाब देती। "और **तुम**?"

आधा रास्ता तय हो जाने पर निकोलाई ने लगामें कोचवान को पकड़ा दीं, थोड़ी देर के लिये नताशा की स्लेज की तरफ़ भाग गया और स्लेज के पहलू पर खड़ा हो गया।

"नताशा," उसने फुसफुसाकर फ़्रांसीसी में उससे कहा, "जानती हो, मैंने सोन्या के बारे में फ़ैसला कर लिया है।"

"तुमने उससे कह दिया?" अचानक खुशी से चमक उठते हुए नताशा ने पूछा।

"ओह, इन मूंछों और भौंहों के कारण तुम कैसी अजीब-सी लग रही हो, नताशा! तुम खुश हो?"

"मैं बेहद, बेहद खुश हूं! मुझे तो तुमपर गुस्सा भी आने लगा था। मैंने तुमसे यह कहा नहीं, लेकिन उसके साथ तुम्हारा व्यवहार अच्छा नहीं था। कितना अच्छा दिल पाया है उसने, निकोलाई, कितनी अधिक खुश हूं मैं! कभी-कभी मैं बड़ी बुरी हो जाती हूं, लेकिन सोन्या के बिना अकेली ही सुखी होते हुए मुझे लज्जा अनुभव होती थी," नताशा कहती गयी। "अब मैं बहुत खुश हूं! तो भाग जाओ उसके पास!"–"नहीं, ज़रा रुको! ओह, हंसी आती है तुम्हें देखकर!" निकोलाई ने बहन को लगातार ग़ौर से देखते और उसमें भी कुछ नया, असाधारण और मुग्धकारी मनोहरता अनुभव करते हुए कहा। उसने बहन में पहले कभी यह सब कुछ नहीं देखा था। "नताशा, यह सब तो परी-जगत जैसा लग रहा है। ठीक है न?"

"हां," नताशा ने जवाब दिया, "तुमने बहुत ही अच्छा किया।"

"अगर मैंने उसे पहले इसी रूप में देखा होता, जैसी वह अब है,"

निकोलाई सोच रहा था, "तो मैंने बहुत पहले ही उससे यह पूछ लिया होता कि मैं क्या करूं, वह जो भी कहती, मैंने सब किया होता और सब कुछ बहुत बढ़िया होता।"

"तो तुम खुश हो, और मैंने अच्छा किया है?"

"ओह, बहुत ही अच्छा किया है! कुछ ही दिन पहले इसी बात पर मेरा तो अम्मां से भी झगड़ा हो गया था। अम्मां ने कहा कि वह तुम्हें फांस रही है। कैसे कोई ऐसी बात कह सकता है! अम्मां के साथ मेरी तू-तू मैं-मैं होती-होती रह गयी। मैं कभी किसी को उसके बारे में कुछ भी बुरा कहने या सोचने नहीं दूंगी, क्योंकि उसमें सिर्फ़ अच्छाई ही अच्छाई है।"

"तो मैंने ठीक किया है न?" निकोलाई ने यह जानने के लिये एक बार फिर बहुत ध्यान से बहन के चेहरे के भाव पर दृष्टि डाली कि वह सच कह रही है या नहीं और गमबूटों को चरमराता हुआ नताशा की स्लेज के पहलू से कूदकर अपनी स्लेज की तरफ़ भाग गया। सेबल के समूर के ओवरकोट के हुड के नीचे से उसकी ओर देखता हुआ छोटी-छोटी मूंछों और चमकती आंखों तथा खुशी से खिले तथा मुस्कराते चेहरेवाला वही चेर्केस वहां बैठा था। सोन्या ही चेर्केस थी। वही सोन्या जो ज़रूर उसकी भावी, सुखी और प्यार करनेवाली पत्नी थी।

घर लौटने पर अम्मां को यह बताने के बाद कि मेल्युकोवों के यहां उन्होंने कितना अच्छा वक़्त बिताया, दोनों लड़कियां अपने कमरे में चली गयीं। कपड़े बदलकर, किन्तु जले कार्क से बनायी गयी मूंछों को साफ़ किये बिना ये दोनों बैठी हुई अपने सुख-सौभाग्य की चर्चा करती रहीं। इन्होंने एक-दूसरी से यह कहा कि पत्नियां बनने के बाद इनका जीवन कैसा होगा, इनके पतियों के बीच कैसे दोस्ती होगी और वे कैसे सुखी जीवन बितायेंगी। नौकरानी दुन्याशा ने भविष्य जानने के लिये पिछली शाम से ही दो दर्पण नताशा की मेज़ पर रख दिये थे।

"लेकिन यह सब कब होगा? मेरा दिल डरता है कि शायद यह कभी भी नहीं होगा... अगर ऐसा हो जाये तो बहुत ही अच्छा हो!" नताशा ने उठते और दर्पणों के निकट जाते हुए कहा।

"नताशा, दर्पणों के सामने जा बैठो, सम्भव है कि तुम उसे देख पाओ," सोन्या बोली। नताशा मोमबत्तियां जलाकर दर्पणों के

सामने बैठ गयी। "मुझे तो कोई मूंछोंवाला दिखाई दे रहा है," नताशा ने अपना चेहरा देखकर कहा।

"छोटी मालकिन, मज़ाक़ नहीं उड़ाना चाहिये," दुन्याशा बोली।

सोन्या और नौकरानी की सहायता से नताशा दर्पणों के सामने ठीक स्थिति में बैठ गयी। उसके चेहरे पर गम्भीरता का भाव आ गया और वह मौन हो गयी। वह देर तक दर्पणों में प्रतिबिम्बित होती और दूर जाती मोमबत्तियों की क़तार को इस आशा से देखती रही (सुने हुए क़िस्से-कहानियों के मुताबिक़) कि उसे ताबूत नज़र आयेगा, या फिर अन्तिम, अस्पष्ट और धुंधले वर्गभुज में **उसको** यानी प्रिंस अन्द्रेई को देख पायेगी। किन्तु छोटे-से धब्बे को ही मानव या ताबूत का बिम्ब मानने को बिल्कुल तैयार होने पर भी वह कुछ नहीं देख पायी। उसकी आंखें तेज़ी से झपकने लगीं और वह दर्पण से दूर हट गयी।

"भला ऐसा क्यों है कि दूसरे लोग देख पाते हैं और मुझे कुछ भी नज़र नहीं आता?" नताशा ने कहा। "अब तुम बैठो, सोन्या, आज तो तुम्हें ज़रूर ऐसा करना चाहिये! मेरी ख़ातिर ही... आज मेरा दिल बहुत डर रहा है!"

सोन्या आईने के क़रीब जा बैठी, ठीक स्थिति में हो गयी और देखने लगी। "सोन्या जी ज़रूर ही देख पायेंगी," दुन्याशा ने फुसफुसाकर कहा, "और आप तो मज़ाक़ ही उड़ाती रहती हैं।"

सोन्या ने नौकरानी के ये शब्द और फिर नताशा को भी फुसफुसाकर यह कहते सुना:

"मैं भी जानती हूं कि वह देख पायेगी। उसे तो पिछले वर्ष भी कुछ दिखाई दिया था।"

तीन मिनट तक ये तीनों बिल्कुल ख़ामोश रहीं। "ज़रूर ही!" नताशा फुसफुसायी और अपना वाक्य पूरा नहीं कर पायी... सोन्या ने अचानक वह दर्पण एक तरफ़ हटा दिया जिसे थामे थी और हाथ से आंखें ढंक लीं। "ओह, नताशा!" वह कह उठी।

"तुमने देखा? देखा? क्या देखा?" नताशा ने चिल्लाकर पूछा।

"तो मैंने कहा था न," दुन्याशा दर्पण को पकड़े हुए बोली।

सोन्या को कुछ भी दिखाई नहीं दिया था। वह उस वक़्त आंखें झपकाकर उठने को ही थी जब उसे नताशा के "ज़रूर ही" शब्द सुनाई दिये... वह न तो दुन्याशा और न नताशा को ही धोखा देना

चाहती थी, लेकिन उसके लिये और अधिक बैठे रहना कठिन हो रहा था। वह खुद नहीं जानती थी कि कैसे और किस कारण उस वक़्त ज़ोर से "ओह, नताशा!" कह उठी थी, जब उसने हाथ से आंखें ढंक ली थीं।

"उसको देखा है?" नताशा ने सोन्या का हाथ पकड़ते हुए पूछा।

"हां। ज़रा रुको... मैंने... मैंने उसे देखा है," सोन्या ने यह भी न जानते हुए अनचाहे ही कह दिया कि **उसको** से नताशा का किसकी ओर संकेत था – निकोलाई या अन्द्रेई की ओर।

"किसलिये मैं यह न कह दूं कि मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया था? आख़िर दूसरे लोगों को तो कुछ नज़र आता ही है। फिर कौन यह मालूम कर सकता है कि मैंने कुछ देखा है या नहीं देखा है?" सोन्या के दिमाग़ में यह विचार कौंधा।

"हां, मुझे वह दिखाई दिया है," सोन्या ने कहा।

"कैसा था वह? कैसा था? खड़ा था या लेटा हुआ?"

"नहीं, मुझे यह दिखाई दिया... शुरू में तो कुछ भी नहीं था और फिर अचानक मुझे यह दिखाई दिया कि वह लेटा हुआ है।"

"अन्द्रेई लेटा हुआ है? वह बीमार है?" डरी-सहमी दृष्टि से अपनी सहेली को एकटक देखते हुए नताशा ने पूछा।

"नहीं, इसके उलट, इसके विपरीत – उसका चेहरा खुशी से खिला हुआ था और उसने मेरी तरफ़ मुंह किया," इस क्षण, जब वह यह कह रही थी तो खुद उसे भी ऐसा ही लगा कि जो कुछ कह रही थी, उसने वह सचमुच देखा था।

"इसके बाद क्या हुआ, सोन्या?"

"इसके बाद मैं साफ़ तौर पर देख नहीं पायी, कोई नीली-नीली और लाल-लाल चीज़ थी..."

"सोन्या! वह कब लौटेगा? कब मैं उसे देख सकूंगी? हे भगवान! मेरा दिल कितना डरता है उसके लिये, अपने लिये, हर चीज़ के लिये..." नताशा कह उठी और सोन्या द्वारा दी जानेवाली सान्त्वना के उत्तर में एक भी शब्द कहे बिना बिस्तर पर चली गयी और मोमबत्ती के बुझा दिये जाने के बहुत देर बाद तक आंखें खोले हुए निश्चेष्ट लेटी तथा पाले से जकड़े खिड़की के शीशों के पार ठिठुरी चांदनी को देखती रही।

# १३

क्रिसमस के कुछ ही समय बाद निकोलाई ने मां को यह बता दिया कि वह सोन्या को बहुत प्यार करता है और उससे शादी करने का पक्का इरादा बना चुका है। काउंटेस ने, जो बहुत पहले से ही सोन्या और निकोलाई के बढ़ते प्यार की तरफ़ ध्यान दे रही थीं और शीघ्र ही उसके ऐसी चर्चा करने की प्रतीक्षा कर रही थीं, चुपचाप बेटे की बात सुनी और फिर बोलीं कि वह बेशक किसी से भी शादी कर सकता है, लेकिन न तो वह ख़ुद और न काउंट ही उसे ऐसे विवाह के लिये आशीर्वाद देंगे। निकोलाई ने जीवन में पहली बार यह अनुभव किया कि मां उससे नाराज़ हैं और इस चीज़ के बावजूद कि उसे बहुत प्यार करती हैं, वह इस शादी के लिये राज़ी नहीं होंगी। काउंटेस ने कठोर मुद्रा बनाये और बेटे की तरफ़ देखे बिना पति को बुलवा भेजा। काउंट के आने पर उन्होंने निकोलाई की उपस्थिति में ही रूखे तथा थोड़े-से शब्दों में उन्हें स्थिति स्पष्ट करनी चाही, मगर अपने को वश में नहीं रख पायीं, ग़ुस्से से रो पड़ीं और कमरे से बाहर चली गयीं। बुज़ुर्ग काउंट ढुलमुल ढंग से बेटे को समझाने और उससे यह अनुरोध करने लगे कि वह अपना इरादा बदल ले। निकोलाई ने उत्तर दिया कि वह अपने दिये हुए वचन को वापस नहीं ले सकता और पिता ने गहरी सांस लेकर तथा सम्भवतः परेशानी महसूस करते हुए बहुत जल्द अपनी बात बीच में ही छोड़ दी और काउंटेस के पास चले गये। बेटे के साथ अपने सभी झगड़ों के वक़्त काउंट को हमेशा अपने इस अपराध की चेतना बनी रहती थी कि उन्होंने ही घर की ऐसी बुरी माली हालत कर दी है और इसलिये वह बेटे के बड़ी सम्पत्तिवाली अमीर लड़की से शादी करने के बजाय दहेजहीन सोन्या को चुनने के निर्णय पर नाराज़ नहीं हो सकते थे। लेकिन इस वक़्त उन्हें इस बात का बहुत ही एहसास हुआ कि अगर घर की माली हालत इतनी ज़्यादा ख़राब न होती तो निकोलाई के लिये सोन्या से बेहतर किसी बीवी की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी और घर की ऐसी पतली हालत का कारण वह ख़ुद तथा मीत्या और उनकी वे बुरी आदतें हैं जिनसे किसी भी तरह निजात नहीं पा सकते हैं।

माता-पिता ने इस बारे में बेटे से फिर कभी कोई बातचीत नहीं

की। किन्तु कुछ दिनों के बाद काउंटेस ने सोन्या को अपने पास बुलवाया और ऐसी निर्दयता से, जिसकी दोनों ने ही आशा नहीं की थी, काउंटेस ने भतीजी को इस बात के ताने दिये कि उसने निकोलाई को अपने जाल में फांस लिया है और वह बड़ी कृतघ्न है। सोन्या नज़रें झुकाये तथा चुप रहते हुए काउंटेस की जली-कटी बातें सुनती रही और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उससे किस चीज़ की अपेक्षा की जा रही है। अपने उपकारियों के लिये वह सभी कुछ क़ुर्बान करने को तैयार थी। आत्म-बलिदान का विचार उसका प्रिय विचार था। किन्तु इस मामले में वह यह नहीं समझ पा रही थी कि वह किसके लिये और किस चीज़ की बलि दे। वह काउंटेस और पूरे रोस्तोव-परिवार को प्यार किये बिना नहीं रह सकती थी, मगर साथ ही निकोलाई को न प्यार करना और यह न जानना भी उसके बस की बात नहीं थी कि निकोलाई का सुख-सौभाग्य इसी प्यार पर निर्भर करता है। वह गुमसुम और उदास-सी खड़ी रही और उसने कोई जवाब नहीं दिया। निकोलाई को लगा कि उसके लिये इस स्थिति को और अधिक बर्दाश्त करना मुमकिन नहीं और इसलिये मामले को साफ़ करने की ख़ातिर वह मां के पास गया। उसने पहले तो मां की मिन्नत-समाजत की कि वह उसे तथा सोन्या को क्षमा कर दें और उनके विवाह की स्वीकृति दे दें और फिर यह धमकी दी कि अगर सोन्या को सताया जायेगा तो वह उसी वक़्त गुप्त ढंग से उससे विवाह कर लेगा।

काउंटेस ने ऐसी रुखाई से, जैसी बेटे ने पहले कभी नहीं देखी थी, यह जवाब दिया कि वह बालिग़ है, कि प्रिंस अन्द्रेई अपने पिता की सहमति के बिना शादी करनेवाला था और वह भी ऐसा ही कर सकता है, मगर वह इस **तिकड़मबाज़** को अपनी बेटी कभी नहीं मानेंगी।

**तिकड़मबाज़** शब्द से निकोलाई बौखला उठा, उसने गुस्से से चिल्लाते हुए मां से यह कहा कि उसने ऐसी आशा कभी नहीं की थी कि वह उसे अपनी भावनायें बेचने को विवश करेंगी और अगर ऐसी बात है तो वह आख़िरी बार यह कहता है... किन्तु निकोलाई अपने ये निर्णायक शब्द नहीं कह पाया जिनकी उसके चेहरे के भाव को देखते हुए काउंटेस धड़कते दिल से सुनने की राह देख रही थीं और जो शायद हमेशा के लिये उनके बीच एक क्रूर-कटु स्मृति बनकर रह जाते। वह ये शब्द इसलिये नहीं कह पाया कि एकदम पीला और

गम्भीर चेहरा लिये नताशा दरवाज़े के पास से, जहां खड़ी हुई इनकी बातें सुन रही थी, कमरे में आ गयी।

"निकोलाई, तुम फ़ुजूल की बातें कर रहे हो, चुप हो जाओ, चुप हो जाओ! मैं तुमसे कह रही हूं कि चुप हो जाओ!.." वह लगभग चिल्ला रही थी ताकि भाई की आवाज़ को दबा दे।

"अम्मां, प्यारी अम्मां, यह सब कुछ ऐसे नहीं है... मेरी प्यारी, मेरी बेचारी अम्मां," उसने मां को सम्बोधित किया जो यह महसूस करते हुए कि बेटे के साथ सम्बन्ध टूटने जा रहे हैं, बहुत भयभीत होकर उसकी तरफ़ देख रही थीं, मगर ज़िद्द और झगड़े की गर्मागर्मी में झुकना नही चाहती थीं तथा झुक भी नहीं सकती थीं।

"निकोलाई, मैं तुम्हें सब कुछ समझा दूंगी, तुम जाओ यहां से... आप मेरी बात सुनें, मेरी प्यारी अम्मां," उसने मां से कहा।

नताशा के शब्द बेमानी-से थे, किन्तु उन्होंने वह लक्ष्य प्राप्त कर लिया जो वह चाहती थी।

बहुत ज़ोर से सिसकती-सुबकती काउंटेस ने बेटी के वक्ष में अपना मुंह छिपा लिया, जबकि निकोलाई उठा, उसने दोनों हाथों में अपना सिर थाम लिया और कमरे से बाहर चला गया।

नताशा मां-बेटे के बीच सुलह करवाने की कोशिश करने लगी तथा इस हद तक सफल हो गयी कि मां ने बेटे को वचन दिया कि सोन्या को किसी प्रकार भी सताया नहीं जायेगा और बेटे ने यह वादा किया कि वह माता-पिता से छिपाकर कोई क़दम नहीं उठायेगा।

निकोलाई इस बात का पक्का इरादा बनाकर कि रेजिमेंट में अपने सभी कामकाज समाप्त करके, सेवानिवृत्त होकर यहां लौट आयेगा, सोन्या से शादी कर लेगा, वह उदास और गम्भीर, माता-पिता के साथ मतभेद लिये, किन्तु, जैसा कि उसे प्रतीत हुआ, प्यार में दीवाना बना-सा जनवरी महीने के आरम्भ में अपनी रेजिमेंट में वापस चला गया।

निकोलाई के जाने के बाद रोस्तोव-परिवार में पहले किसी भी समय की तुलना में कहीं अधिक उदासी छा गयी। मानसिक परेशानी के कारण काउंटेस बीमार हो गयीं।

सोन्या निकोलाई से जुदाई तथा उस शत्रुतापूर्ण अन्दाज़ के कारण जो काउंटेस उसके प्रति अपनाये बिना नहीं रह सकती थीं, और भी अधिक दुखी रहती थी। काउंट पहले किसी भी वक़्त के मुक़ाबले में

अपने माली मामलों में उलझे हुए थे जो निर्णायक उपायों की मांग करते थे। मास्को का घर और मास्को के निकट की जागीर बेचना ज़रूरी था और ऐसा करने के लिए मास्को जाना आवश्यक था। किन्तु काउंटेस की बीमारी उन्हें हर दिन अपनी रवानगी स्थगित करने को विवश कर देती थी।

प्रिंस अन्द्रेई के साथ अपनी जुदाई को आसानी, यहां तक कि प्रफुल्लता से सहन करनेवाली नताशा अब दिन-प्रति-दिन विह्वल और बेचैन होती जा रही थी। यह विचार कि उसके जीवन का सबसे अच्छा समय, जो उसे प्यार करने में बीत सकता था, व्यर्थ बरबाद हो रहा है, उसे लगातार यातना देता रहता था। प्रिंस अन्द्रेई के पत्रों से उसे अधिकतर तो झल्लाहट ही होती थी। इस ख़्याल से उसके मन को ठेस लगती कि इधर वह तो उसी की याद में जीती है और उधर वह असली ज़िन्दगी बिता रहा था, नयी जगहें देखता था और नये दिलचस्प लोगों से मिलता-जुलता था। प्रिंस अन्द्रेई के पत्र जितने अधिक रोचक होते, नताशा को उतनी ही ज़्यादा खीझ महसूस होती। प्रिंस अन्द्रेई के नाम अपने पत्रों से उसे न केवल कोई सान्त्वना ही न मिलती, बल्कि वे उसे ऊब भरे और बनावटी कर्त्तव्य-पूर्त्ति जैसे लगते। वह पत्र लिखना नहीं जानती थी, क्योंकि पत्र में उसका एक हज़ारवां भाग भी सच्चे ढंग से व्यक्त करने की सम्भावना नहीं पाती थी जो अपनी आवाज़, मुस्कान और दृष्टि से अभिव्यक्त करने की आदी थी। वह प्रिंस अन्द्रेई को औपचारिक, एक ही ढंग के रूखे पत्र लिखती जिन्हें ख़ुद भी कोई महत्त्व नहीं देती थी और जिनके कच्चे मसविदों में काउंटेस उसकी हिज्जों की ग़लतियां ठीक करती थीं।

काउंटेस के स्वास्थ्य में सुधार नहीं हो रहा था, किन्तु मास्को जाना अब और अधिक स्थगित नहीं किया जा सकता था। नताशा का दहेज तैयार करना और मकान बेचना ज़रूरी था तथा इसके अलावा प्रिंस अन्द्रेई के मास्को आने की भी आशा थी, जहां उसके पिता जाड़ा बिता रहे थे। नताशा को विश्वास था कि वह वहां आ भी गया है।

काउंटेस गांव में ही रह गयीं और सोन्या तथा नताशा को अपने साथ लेकर काउंट जनवरी के अन्त में मास्को चले गये।

# भाग ५

१

प्रिंस अन्द्रेई और नताशा का रिश्ता हो जाने के बाद प्येर ने किसी स्पष्ट कारण के बिना अचानक यह अनुभव किया कि उसके लिये पहले जैसी ज़िन्दगी बिताते जाना सम्भव नहीं। उसके संरक्षक द्वारा उद्घाटित सत्यों में उसकी चाहे कितनी भी गहरी आस्था क्यों न थी, आन्तरिक आत्म-परिष्कार के कार्य से, जिसमें वह इतने उत्साह से जुटा था, आरम्भ में प्राप्त होनेवाली ख़ुशी चाहे कितनी ही अधिक क्यों न थी – प्रिंस अन्द्रेई और नताशा की सगाई तथा ओसिप अलेक्सेयेविच बाज़्देयेव की मृत्यु के बाद, जिसकी उसे लगभग इसी वक़्त ख़बर मिली – इस पहलेवाले जीवन के बारे में उसका सारा उत्साह अचानक लुप्त हो गया। इस जीवन का तो खोखला ढांचा ही शेष रह गया – अब किसी बहुत ही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की कृपापात्र बन जानेवाली अतीव सुन्दर पत्नी और अपना घर, सारे पीटर्सबर्ग से जान-पहचान और ऊब भरी सभी औपचारिकताओं के साथ राज-दरबार में अपने पद से सम्बन्धित कर्त्तव्यों की पूर्ति – यह ज़िन्दगी प्येर को अचानक बहुत घिनौनी प्रतीत होने लगी। उसने अपनी दैनिकी लिखनी बन्द कर दी, वह फ़्री मेसन बन्धुओं की संगत से कतराने लगा, फिर से क्लब जाने और बेहद पीने लगा, फिर से अविवाहितों के साथ समय बिताने और इस तरह की ज़िन्दगी जीने लगा कि काउंटेस बेज़ूखोवा उसकी कड़ी लानत-मलामत किये बिना न रह सकी। यह महसूस करते हुए कि काउंटेस की भर्त्सना उचित थी और इसलिये कि उसे अटपटी स्थिति में न डाले, प्येर मास्को चला गया।

मास्को में जैसे ही वह अपनी बहुत बड़ी हवेली में पहुंचा, जहां प्रिंसेसें मुरझा चुकी थीं या मुरझा रही थीं, जहां ढेरों नौकर-चाकर थे और जैसे ही उसने बग्घी में बैठकर नगर में से जाते हुए ईवेर्स्की नामक बड़ा गिरजा देखा जिसके देव-प्रतिमाओं के सुनहरे चौखटों के सामने अनगिनत मोमबत्तियां जल रही थीं, क्रेमलिन के सामनेवाला

चौक देखा जहां किसी के पांवों ने बर्फ़ को नहीं रौंदा था, कोचवान तथा मास्को के केन्द्रीय भाग – सीवत्सेव व्राजेक गली – के छोटे-छोटे घर देखे, मास्को के बूढ़ों पर नज़र डाली जिनकी न तो कोई इच्छा रही थी और जो कहीं भी जाने की उतावली न करते हुए अपने दिन पूरे कर रहे थे, बुढ़ियों और मास्को के बॉल-नृत्य तथा मास्को का इंग्लिश क्लब देखा – वैसे ही उसने अपने को सर्वथा अनुकूल और चैन के वातावरण में अनुभव किया। मास्को में उसे ऐसी ही शान्ति, ऐसा ही चैन मिला, जैसा कि गन्दा और पुराना ड्रेसिंग गाउन पहनकर मिलता है।

बुढ़ियों से लेकर बच्चों तक मास्को की सारी सोसाइटी ने एक चिर-प्रतीक्षित अतिथि की तरह, जिसका यहां हमेशा स्थान बना रहा था, उसका स्वागत किया। मास्को की सोसाइटी के लिये प्येर एक सबसे प्यारा, दयालु, बुद्धिमान, खुशमिज़ाज और उदारमना झक्की था, पुराने ढंग का खोया-खोया तथा सौहार्दपूर्ण असली रूसी कुलीन था। उसका बटुआ हमेशा खाली होता था, क्योंकि सभी के लिये खुला रहता था।

कलाकारों, भद्दे चित्रों, मूर्त्तियों, उपकारी संस्थाओं, जिप्सियों, स्कूलों, चन्दे की दावतों, शराब की पार्टियों, फ़्री मेसनों, गिर-जाघरों और किताबों – वह किसी भी व्यक्ति तथा किसी भी चीज़ के लिये पैसे देने से इन्कार नहीं करता था। अगर उससे बड़े क़र्ज़ लेनेवाले उसके दो मित्र अब उसकी सरपरस्ती न करते तो उसने सब कुछ बांट दिया होता। क्लब की हर दावत और हर पार्टी में वह उपस्थित रहता। बढ़िया शराब की दो बोतलें पीने के बाद वह जैसे ही सोफ़े पर अपनी जगह पर जा बैठता, वैसे ही लोग उसे घेर लेते, विचार-विनिमय, वाद-विवाद और हंसी-मज़ाक़ शुरू हो जाते। जहां झगड़ा हो जाता, वहां वह अपनी मधुर मुस्कान और जंचते हुए किसी चुटकुले से ही सुलह करवा देता। उसके शिरकत न करने पर फ़्री मेसनों के डिनर नीरस और ऊब भरे होते।

छड़े जवानों के साथ डिनर के बाद खुशी से उमगते इन लोगों के अनुरोध पर जब वह स्नेह और मधुरता से मुस्कराता हुआ इनके साथ जाने को खड़ा हो जाता तो ये लोग प्रसन्नता तथा विजयोल्लास से चिल्ला उठते। अगर नाचनेवाले मर्दों की कमी होती तो बॉल-नृत्यों

में वह नाचता भी। युवा विवाहित महिलायें और युवतियां उसे इसलिये पसन्द करती थीं कि वह किसी एक की ओर विशेष ध्यान दिये बिना सभी के साथ समान रूप से अच्छी तरह पेश आता था, खासकर डिनर के बाद। "यह बहुत प्यारा व्यक्ति है, अच्छा साथी है" वे प्येर के बारे में कहतीं।

प्येर मास्को में रहनेवाले राज-दरबार के उन सैकड़ों अवकाशप्राप्त उच्च पदाधिकारियों में से था जो बड़ी ख़ुशमिज़ाजी से अपना जीवन बिता रहे थे।

अगर सात साल पहले, जब वह विदेश से लौटा ही था, कोई उससे यह कहता कि उसे कुछ भी ढूंढ़ने और कुछ भी सोचने-विचारने की ज़रूरत नहीं है, कि उसकी ज़िन्दगी का रास्ता बहुत पहले से ही तथा हमेशा के लिये तय हो चुका है, कि वह चाहे कितनी ही दौड़-धूप क्यों न करे, वह तो वही बनेगा जो उसकी स्थिति में दूसरे थे तो उसके दिल को कितना बड़ा धक्का लगा होता। वह इस बात का विश्वास ही न कर पाता। क्या यह वही नहीं था जिसने पूरे मन से रूस में प्रजातन्त्र की स्थापना करनी चाही थी, तो क्या उसी ने नेपोलियन, दार्शनिक, रणनीतिज्ञ और नेपोलियन पर जीत हासिल करनेवाला नहीं बनना चाहा था? क्या उसने ही भ्रष्ट हुई मानवजाति के कायाकल्प की सम्भावना और ऐसा करने की इच्छा अनुभव नहीं की थी तथा अपने को पूर्णता के उच्चतम स्तर तक पहुंचाना नहीं चाहा था? क्या उसी ने स्कूल और अस्पताल नहीं खोले थे और भूदासों को मुक्त नहीं किया था?

लेकिन इस सब कुछ के बजाय वह बेवफ़ा बीवी का अमीर पति और अवकाश-प्राप्त उच्च राज-दरबारी था, खाने-पीने का शौक़ीन तथा कोट के बटन खोलकर सरकार को थोड़ा कोसनेवाला, मास्को के इंग्लिश क्लब का सदस्य और मास्को की सोसाइटी का सभी का चहेता व्यक्ति था। वह बहुत समय तक इस बात को स्वीकार नहीं कर सका कि ख़ुद भी मास्को का वैसा ही अवकाश-प्राप्त उच्च राज-दरबारी है जिनको सात साल पहले वह तिरस्कार की दृष्टि से देखा करता था।

कभी-कभी वह यह कहकर अपने दिल को तसल्ली देता कि यह तो फ़िलहाल, यों ही वक़्ती तौर पर इस तरह की ज़िन्दगी बिता रहा है। लेकिन बाद में इस ख़्याल से उसका दिल दहल उठता कि उसी की

तरह बहुत-से लोग वक़्ती तौर पर पूरे दांतों और बालों के साथ इस तरह की ज़िन्दगी तथा इस क्लब में दाख़िल हुए और एक भी दांत तथा एक भी बाल के बिना यहां से बाहर गये।

जब वह घमण्ड के क्षणों में अपनी स्थिति के बारे में सोचता तो उसे लगता कि वह बिल्कुल दूसरा, अवकाश-प्राप्त उन उच्च राज-दरबारियों से बिल्कुल भिन्न है जिन्हें वह पहले तिरस्कार की दृष्टि से देखता था – कि वे तुच्छ और बुद्धू थे, अपनी स्थिति से सन्तुष्ट तथा ख़ुश थे, "लेकिन मैं तो अभी भी सन्तुष्ट नहीं हूं, मानवजाति के लिये कुछ करना चाहता हूं," घमण्ड के क्षणों में वह अपने आपसे कहता। "लेकिन ऐसा भी तो हो सकता है कि मेरे ये सभी साथी भी मेरी ही तरह जीवन में अपनी कोई नयी राह ढूंढ़ने की कोशिश करते रहे हों और मेरी भांति ही परिस्थितियों, सोसाइटी तथा जन्म-सम्बन्धी सीमाओं और प्रकृति की उस अन्धी शक्ति के कारण, जिसके विरुद्ध मानव संघर्ष करने में असमर्थ है, आख़िर वहीं जा पहुंचे हों, जहां आज मैं हूं," नम्रता के क्षणों में वह अपने आपसे कहता। कुछ समय तक मास्को में रहने के बाद अपने ही जैसे भाग्यवाले साथियों को तिरस्कार की दृष्टि से देखने के बजाय वह उन्हें प्यार करने, उनका आदर करने तथा उनपर तरस खाने लगा।

पहले की भांति प्येर अब निराशा, ऊब और जीवन के प्रति घृणा के दौरों का शिकार नहीं होता था। किन्तु यही बीमारी, जो पहले उग्र दौरों के रूप में व्यक्त होती थी, अब उसके भीतर चली गयी थी और क्षण भर को भी उसका पिंड नहीं छोड़ती थी। "किस कारण? किसलिये? यह सब क्या हो रहा है दुनिया में?" वह चकराया हुआ सा दिन में कई बार अपने से यह प्रश्न पूछता, अनचाहे ही इस दुनिया में हो रही घटनाओं के अर्थ के बारे में सोचने लगता, किन्तु अनुभव से यह जानते हुए कि इस तरह के प्रश्नों के कुछ भी उत्तर नहीं हो सकते, वह जल्दी से उन्हें भुलाने की कोशिश करता, कोई किताब पढ़ने लगता या तुरन्त क्लब अथवा शहर की अफ़वाहों-चुग़लियों के बारे में बातचीत करने के लिये अपोल्लोन निकोलायेविच के यहां चला जाता।

"एलेन, जिसने अपने शरीर के सिवा कभी किसी और चीज़ को प्यार नहीं किया और जो दुनिया की एक सबसे मूर्ख औरत है,"

प्येर सोचता, "लोगों को बहुत ही समझदार और सुसंस्कृत प्रतीत होती है और वे उसकी प्रशंसा करते नहीं थकते। नेपोलियन बोनोपार्ट जब तक महान था, तब सभी उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे। किन्तु जैसे ही वह दयनीय विदूषक-सा बन गया है – वैसे ही आस्ट्रिया का सम्राट फ़ांसिस अपनी बेटी को उसकी अवैध पत्नी बनाने की कोशिश कर रहा है। स्पेनी लोग कैथोलिक चर्च के ज़रिये भगवान को इस बात के लिये धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने १४ जून को फ़ांसीसियों पर विजय प्राप्त कर ली और इसी प्रकार फ़ांसीसी भी उसी कैथोलिक चर्च के द्वारा भगवान के प्रति आभार प्रकट करते हैं कि उन्होंने १४ जून को स्पेनियों को जीत लिया। फ़्री मेसन बन्धु अपनी जान की क़सम खाकर यह कहते हैं कि दूसरे लोगों के लिये सब कुछ क़ुर्बान करने को तैयार हैं, मगर ग़रीबों के लिये एक रूबल का चन्दा भी नहीं देते और पीटर्सबर्ग की 'आस्त्रेया' शाखा 'मान्ना खोजियों' की शाखा के विरुद्ध षड्यन्त्र रचती है और वे असली स्कॉटलैंडी क़ालीन तथा घोषणापत्र के लिये संघर्ष करती हैं जिसका अर्थ उसकी नक़ल करनेवाला भी नहीं समझता और जिसकी किसी को ज़रूरत नहीं। हम सब ईसाई धर्म के इस उसूल को मानते हैं कि दूसरों द्वारा हमारे दिलों को लगायी गयी ठेसों के लिये हम उन्हें क्षमा करें, सभी को प्यार करें और इसी उसूल का अनुकरण करते हुए हमने मास्को में ढेरों गिरजे बनवा दिये हैं, लेकिन कल फ़ौज से भागनेवाले एक फ़ौजी की कोड़े मार-मारकर जान ले ली गयी और प्यार तथा क्षमा के इसी उसूल के सेवक यानी पादरी ने ऐसे कठोर मृत्यु-दंड के पहले इस फ़ौजी को सलीब चूमने को दी।" प्येर इस तरह से सोचता था और यह सामान्य, सभी के द्वारा मान्य झूठ, जिसका वह चाहे कितना ही अभ्यस्त क्यों न हो चुका था, हर बार ही उसे ऐसे आश्चर्यचकित करता मानो वह कोई नयी बात हो। "मैं इस झूठ और गड़बड़ी को समझता हूं," वह सोचता, "लेकिन इन लोगों को वह सब कैसे बताऊं जो मैं समझता हूं? मैं आज़माकर देख चुका हूं और हमेशा मुझे यही मालूम हुआ है कि वे भी अपने दिलों में वही कुछ समझते हैं जो मैं समझता हूं, मगर उसे अनदेखा करने की कोशिश करते हैं। मतलब यह कि ऐसा करना ही ठीक है! लेकिन मैं, मैं क्या करूं?" प्येर सोचता। वह अनेक लोगों, विशेषकर रूसियों की भलाई और सचाई को देखने और उसमें विश्वास करने की दुर्भाग्य-

पूर्ण क्षमता अनुभव करता था, मगर साथ ही जीवन की बुराई तथा झूठ को इतनी अधिक स्पष्टता से देखता था कि उसमें गम्भीरता से कोई भाग लेना उसके बस की बात नहीं थी। उसकी दृष्टि में जीवन का हर कार्य-क्षेत्र बुराई और झूठ से जुड़ा हुआ था। उसने जो कुछ भी बनना चाहा, जिस किसी भी काम में हाथ डाला – बुराई और झूठ ने उसमें अरुचि पैदा कर दी और उसकी क्रियाशीलता के सभी मार्ग बन्द कर दिये। फिर भी उसे जीना था, उसके लिये किसी चीज़ में व्यस्त रहना तो ज़रूरी था। जीवन के कभी भी हल न होनेवाले इन प्रश्नों के बोझ तले दबे रहना बहुत ख़तरनाक था और इसलिये इन्हें भूलने की ख़ातिर उसने अपने को अपने सामने आकस्मिक ही आ जानेवाले सांयोगिक मनबहलावों को समर्पित कर दिया। वह हर तरह की सोसाइटी में जाता, बेहद पीता, चित्र ख़रीदता, निर्माण करवाता और सबसे अधिक तो यह कि ख़ूब पढ़ता।

प्येर पढ़ता, उसके हाथ में पढ़ने को जो कुछ भी आ जाता, उसे ही पढ़ने लगता। वह इस तरह पढ़ता कि घर लौटने पर नौकर-चाकर जब उसके कपड़े बदलते होते तो उस वक़्त भी किताब उठा लेता और पढ़ने लगता। वह पढ़ते-पढ़ते ही सो जाता, सोने के बाद ड्राइंगरूमों और क्लबों में गपशप करता, गपशप के बाद डटकर पीता तथा औरतों के यहां जाता, पिलाई के बाद फिर से गपशप करता, फिर पठन तथा शराब का दौर चलता। सुरापान उसके लिये अधिकाधिक शारीरिक और साथ ही मानसिक आवश्यकता बनता जाता था। डाक्टरों के चेतावनी देने के बावजूद कि उसके मोटापे को ध्यान में रखते हुए शराब उसके लिये ख़तरनाक थी, वह बेहद पीता था। वह केवल उसी समय अपने को बहुत अच्छे मूड में महसूस करता था जब यन्त्रवत् शराब के कुछ गिलास अपने गले से नीचे उतार लेता था, जब उसे अपने शरीर में हल्की-सी गर्माहट की अनुभूति होती थी, सभी लोगों के प्रति उसके मन में स्नेह उमड़ने लगता था और उसका मस्तिष्क किसी भी विचार की गहराई में पैठे बिना सतही तौर पर उसके बारे में अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करने को तैयार होता था। एक या दो बोतलें पीने के बाद ही उसे धुंधला-सा यह एहसास होता कि ज़िन्दगी की उलझी हुई भयानक गांठ, जो उसे पहले इतनी अधिक भयभीत करती थी, उतनी भयानक तो नहीं है जितनी प्रतीत होती थी। भनभनाता

सिर लिये, बोलते-बतियाते, दूसरों की बातें सुनते या लंच और डिनर के बाद पढ़ते समय, उसे लगातार यह गांठ, इस गांठ का कोई पहलू दिखाई देता रहता। केवल शराब के नशे में होने पर ही वह अपने आपसे कहता: "ख़ैर, यह कोई बात नहीं। मैं इस गांठ को खोल लूंगा – मेरे पास इसका हल तो तैयार भी है। लेकिन अभी तो इसके लिये वक़्त नहीं है – बाद में मैं इस सारे मामले पर सोच-विचार कर लूंगा!" लेकिन यह **बाद में** कभी नहीं आता था।

सुबह को, जब वह ख़ाली पेट होता, तो पहलेवाले सवाल फिर से भयानक और ऐसे लगते जिनका कोई हल नहीं हो सकता और प्येर झटपट कोई किताब उठाकर पढ़ने लगता और इस वक़्त अगर कोई उससे मिलने आ जाता तो उसे बड़ी ख़ुशी होती।

कभी-कभी प्येर को लोगों से सुनी हुई यह बात याद हो आती कि गोलाबारी के समय ख़न्दकों में निठल्ले बैठे हुए सैनिक कैसे बड़े यत्न से अपने को व्यस्त करने के लिये कोई काम ढूंढ़ते हैं ताकि ख़तरे की चेतना को अधिक आसानी से बर्दाश्त कर सकें। प्येर को सभी लोग जीवन से अपने को बचानेवाले ऐसे सैनिक ही प्रतीत होते थे। कोई महत्त्वाकांक्षा, कोई जुए, कोई क़ानून-रचना, कोई औरतों, कोई खेल-खिलौनों, कोई घोड़ों, कोई राजनीति, कोई शिकार, कोई शराब और कोई राजकीय काम-काजों की बदौलत अपने को बचाता था। "न तो कुछ तुच्छ है, न महत्त्वपूर्ण, सब एक समान है। मुझे जीवन से जितना भी अधिक सम्भव हो, अपने को बचाना चाहिये!" प्येर सोचता। "बस, मैं **इसे**, इस भयानक **इसे** को न देखूं।"

## २

जाड़े के शुरू में बुज़ुर्ग प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच बोल्कोन्स्की अपनी बेटी के साथ मास्को आ गये। अतीत की ख्याति, अपनी बुद्धिमत्ता और मौलिकता, ख़ास तौर पर इस वक़्त तक सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम के सत्ताकाल के बारे में उत्साह के कम हो जाने तथा मास्को के लोगों में विद्यमान फ़्रांस-विरोधी तथा देशभक्तिपूर्ण भावना का बोल-

बाला होने के फलस्वरूप प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच फ़ौरन ही मास्कोवासियों की विशेष श्रद्धा के पात्र और मास्को के सरकार-विरोधियों के केन्द्र-बिन्दु बन गये।

इस वर्ष में प्रिंस बहुत बुढ़ा गये थे। उनमें बुढ़ापे के उग्र लक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे थे – वह अचानक ही ऊंघ जाते, कुछ ही समय पहले की घटनाओं को भूल जाते, जबकि उन्हें बहुत पुरानी बातें याद रहतीं और इसी प्रकार उनका बाल-सुलभ घमण्ड भी एक ऐसा ही लक्षण था जिससे वह मास्को के सरकार-विरोधियों के नेता की भूमिका निभाते थे। ऐसा होने के बावजूद यह बुज़ुर्ग गर्म जाकेट पहने और बालों में पाउडर लगाये हुए शाम की चाय पीने के लिये जब ड्राइंगरूम में आते और किसी अतिथि द्वारा आरम्भ की गयी अतीत की चर्चा का रुक-रुककर विवेचन आरम्भ करते या फिर वर्त्तमान की किसी घटना पर और भी अधिक रुक-रुककर तथा उग्र टीका-टिप्पणी करने लगते तो वह अपने सभी अतिथियों में समान रूप से आदर की भावना पैदा करते। अतिथियों के लिये आदमक़द आईनों, १७८९–१७९४ की महान फ़्रांसीसी क्रांति के पहले के फ़र्नीचर, बालों में पाउडर लगाये नौकरों, ख़ुद भी अतीत के चिह्न बन चुके अक्खड़ तथा बुद्धिमान बुज़ुर्ग और उनके प्रति श्रद्धाभाव रखनेवाली विनम्र-विनीत बेटी एवं सुन्दर फ़्रांसीसी कुमारीवाला यह घर भव्य-मधुर दृश्य प्रस्तुत करता था। किन्तु आगन्तुक यह नहीं सोचते थे कि इन दो-तीन घण्टों के अतिरिक्त, जब वे अपने मेज़बानों को देखते थे, रात-दिन में ऐसे बाईस घण्टे और भी थे जिनके दौरान इस घर की अन्दरूनी और उनकी नज़रों से छिपी हुई ज़िन्दगी चलती रहती थी।

पिछले कुछ अरसे से मास्को में यह अन्दरूनी ज़िन्दगी प्रिंसेस मरीया के लिये बहुत कठिन हो गयी थी। मास्को में वह अपनी सबसे प्यारी ख़ुशियों से वंचित हो गयी थी – यहां वह तीर्थ-यात्रियों से बातें नहीं कर पाती थी और उसे लीसिये गोरिवाला वह एकान्त नहीं मिलता था जो उसे ताज़गी देता था। साथ ही उसे राजधानी जैसे बड़े मास्को शहर के लाभ और ख़ुशियां भी हासिल नहीं होती थीं। ऊंची सोसाइटी में वह आती-जाती नहीं थी। सभी को यह मालूम था कि उसके पिता अपने बिना उसे कहीं भी जाने नहीं देते हैं और वह ख़ुद बीमारी के कारण कहीं जाते नहीं हैं। इसलिये प्रिंसेस मरीया को डिनरों या दावतों

के लिये आमन्त्रित नहीं किया जाता था। शादी हो जाने की उम्मीद वह पूरी तरह से छोड़ चुकी थी। बुज़ुर्ग प्रिंस जिस रुखाई-कठोरता और झल्लाहट से ऐसे जवान लोगों का अपने घर पर स्वागत तथा उन्हें विदा करते थे जो उसके वर बन सकते थे, प्रिंसेस की नज़र से यह बात छिपी न रहती थी। प्रिंसेस मरीया की सहेलियां तो थीं ही नहीं। इस बार मास्को आने पर उसे अपने दो घनिष्ठतम व्यक्तियों से बड़ी निराशा हुई थी। एक तो कुमारी बुर्येन से, जिसके साथ वह पहले भी पूरी तरह से अपना दिल नहीं खोल पाती थी, अब उसे अप्रिय प्रतीत होने लगी थी और वह कुछ कारणोंवश उसे अपने से दूर रखने लगी। दूसरी निराशा हुई थी यूलिया से जो मास्को में ही थी और जिसके साथ प्रिंसेस मरीया पांच सालों से लगातार पत्र-व्यवहार करती आयी थी। प्रिंसेस मरीया जब मास्को में उससे व्यक्तिगत रूप से मिली तो वह एकदम परायी-सी लगी। भाइयों की मृत्यु हो जाने के कारण यूलिया मास्को की एक सबसे धनी भावी दुलहन बन गयी थी और खूब जी भरकर ऊंची सोसाइटी की ज़िन्दगी के मज़े लूट रही थी। वह जवान मर्दों से घिरी रहती थी, जो जैसा कि उसे लगता था, अब उसका सही मूल्य आंकने लगे थे। यूलिया अब ऊंची सोसाइटी की ऐसी अविवाहित युवती की अवस्था में थी जिसकी जवानी ढलने लगती है और जो यह महसूस करती है कि उसके शादी करने की सम्भावना का अन्तिम समय आ गया है और या तो अब या फिर कभी भी उसके भाग्य का निर्णय नहीं हो पायेगा। प्रिंसेस मरीया हर बृहस्पतिवार को उदासी से मुस्कराते हुए यह याद करती कि अब उसके लिये पत्र लिखने को कोई नहीं रहा, क्योंकि यूलिया, वह यूलिया मास्को में है, जिसकी उपस्थिति से उसे कोई खुशी नहीं हासिल होती थी और जिसके साथ वह हर हफ़्ते मिलती थी। उस बूढ़े प्रवासी की भांति, जिसने उस महिला से, जिसके साथ उसने बरसों तक अपनी शामें बितायी थीं, इस कारण शादी करने से इन्कार कर दिया था कि फिर वह अपनी शामें कहां बितायेगा, प्रिंसेस मरीया को इस बात का अफ़सोस होता कि यूलिया मास्को में थी और अब वह किसी को पत्र नहीं लिख सकती थी। मास्को में कोई भी तो ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसके साथ प्रिंसेस मरीया बात कर सकती, जिसे अपने दुख-दर्द का भागीदार बना सकती और इस अरमे में उसके जीवन में बहुत-से नये दुख-दर्द आ गये थे। प्रिंस अन्द्रेई

के लौटने और शादी करने का वक़्त नज़दीक आता जा रहा था और उसके द्वारा पिता जी को तैयार करने का कार्यभार न केवल पूरा ही नहीं हुआ था, बल्कि इसके विपरीत, मामला बिल्कुल बिगड़ ही गया लगता था। बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की, जो यों भी अधिकतर खीझे-खीझे रहते थे, नताशा रोस्तोवा का नाम सुनते ही आपे से बाहर हो जाते। पिछले कुछ समय में प्रिंसेस मरीया के लिये वे पाठ एक और नयी मुसीबत बन गये थे जो वह अपने छः वर्षीय भतीजे को देती थी। भतीजे के साथ अपने सम्बन्धों के मामले में ख़ुद अपने में पिता जैसा चिड़चिड़ापन अनुभव करके वह स्तम्भित रह गयी। वह बेशक अपने से कितना ही यह क्यों न कहती कि भतीजे को पढ़ाते समय गुस्से में नही आयेगी, फिर भी हर बार ही जब वह निर्देश-छड़ी हाथ में लेकर उसे फ़्रांसीसी भाषा के अक्षरों का ज्ञान करवाने बैठती तो बहुत जल्दी और बहुत आसानी से अपना ज्ञान बालक के दिमाग़ में डाल देना चाहती, जबकि बालक को हर वक़्त यही डर महसूस होता रहता था कि बूआ किसी भी क्षण ग़ुस्से में आ जायेंगी। बालक के ज़रा भी बेध्यान होने पर वह कांपने लगती, जल्दी करती, भड़क उठती, चीख़ने लगती, कभी-कभी उसका हाथ पकड़कर झंझोड़ती और सज़ा देने के रूप में कोने में खड़ा कर देती। उसे कोने में खड़ा करके वह अपने क्रोधपूर्ण और बुरे स्वभाव पर रोने लगती। नन्हा प्रिंस निकोलाई बूआ की भांति ही सिसकते हुए तथा उसकी आज्ञा लिये बिना कोने से निकलकर उसके पास जाता, आंसू-भीगे हाथों को चेहरे पर से हटाता और उसे तसल्ली देता। किन्तु पिता जी का चिड़चिड़ापन, जो हमेशा बेटी को अपना निशाना बनाता था और पिछले कुछ अरसे से क्रूरता की हद तक पहुंच गया था, उसके मन पर भारी बोझ, सबसे बड़ा बोझ बन गया था। यदि वह उसे सारी-सारी रात घुटनों के बल होकर पूजा-पाठ करने को विवश करते, उसे पीटते, लकड़ी और पानी ढोने को मजबूर करते तो उसके दिमाग़ में यह ख़्याल तक न आता कि उसकी ज़िन्दगी मुश्किल है। किन्तु यह प्यार करनेवाले सन्तापक पिता – जो इसीलिये इतने अधिक कठोर थे कि उसे चाहते थे, न केवल जान-बूझकर उसका अपमान और तिरस्कार ही करते थे, बल्कि उसे यह महसूस भी करवाते थे कि हमेशा और हर चीज़ में उसी का दोष होता था। पिछले कुछ समय में पिता जी में एक नया ही लक्षण नज़र आने लगा था जो प्रिंसेस

मरीया को सबसे अधिक यातना देता था। यह लक्षण था – कुमारी बुर्येन के साथ उनकी बढ़ती हुई घनिष्ठता। बेटे अन्द्रेई के शादी करने के इरादे की ख़बर मिलने पर मज़ाक़ के रूप में उनके दिमाग़ में आनेवाला यह विचार कि अगर बेटा शादी करेगा तो वह ख़ुद भी कुमारी बुर्येन से शादी कर लेंगे, सम्भवतः उन्हें अच्छा लगा और पिछले कुछ वक़्त में वह सिर्फ़ बेटी के दिल को ठेस लगाने के लिये (प्रिंसेस मरीया को ऐसा ही प्रतीत हुआ), कुमारी बुर्येन के प्रति विशेष स्नेह प्रदर्शित करते थे और बुर्येन के प्रति स्नेह जताकर बेटी को यह दिखाते थे कि वह उससे नाख़ुश हैं।

मास्को में एक दिन प्रिंसेस मरीया की उपस्थिति में बुज़ुर्ग प्रिंस ने कुमारी बुर्येन का हाथ चूमा और उसे अपने साथ सटाते तथा सहलाते हुए उसका आलिंगन किया (उसे लगा कि पिता जी ने जान-बूझकर ऐसा किया है)। प्रिंसेस मरीया गुस्से से लाल हो गयी और कमरे से बाहर भाग गयी। कुछ मिनट बाद कुमारी बुर्येन मुस्कराती और अपनी प्यारी आवाज़ में प्रफुल्लता से कुछ बताती हुई प्रिंसेस मरीया के कमरे में आयी। प्रिंसेस मरीया ने झटपट अपने आंसू पोंछे, दृढ़ता से क़दम बढ़ाती हुई बुर्येन के पास गयी और सम्भवतः यह न जानते हुए कि वह क्या कर रही है, क्रोधपूर्ण उतावली और टूटती आवाज़ में बुर्येन पर चीख़ने लगी :

"दुर्बलता से लाभ उठाना नीचता, कमीनापन और क्रूरता है..." वह अपना वाक्य पूरा न कर पायी। "मेरे कमरे से दफ़ा हो जाइये," वह चिल्ला उठी और फूट-फूटकर रोने लगी।

अगले दिन बुज़ुर्ग प्रिंस ने बेटी से एक भी शब्द नहीं कहा, मगर इस बात की तरफ़ उसका बरबस ध्यान गया कि दिन के भोजन के वक़्त उन्होंने कुमारी बुर्येन के सामने ही सबसे पहले खाना परोसने का आदेश दिया है। भोजन के अन्त में नौकर ने जब पहले की आदत के मुताबिक़ प्रिंसेस मरीया के सामने ही सबसे पहले कॉफ़ी पेश कर दी तो बुज़ुर्ग प्रिंस अचानक आग-बबूला हो उठे, छड़ी लेकर बटलर फ़िलीप पर झपटे और उसी क्षण उसे फ़ौज में भेज देने का हुक्म दे दिया।

"मेरी हुक्म उदूली... दो बार कह चुका हूं!.. मेरी हुक्म उदूली। यही इस घर में सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है – यह मेरी सबसे अच्छी

मित्र है," प्रिंस चिल्ला रहे थे। "अगर तुमने फिर कभी ऐसी हरकत की," प्रिंसेस मरीया को पहली बार सम्बोधित करते हुए उन्होंने ग़ुस्से से चीख़ते हुए कहा, "अगर तुमने फिर कभी कल जैसी हरकत करने की जुर्रत की... उसके सामने अपने को भूल जाओगी तो मैं तुम्हें यह दिखाऊंगा कि इस घर का मालिक कौन है! जाओ! मेरी नज़र से दूर हो जाओ। इससे माफ़ी मांगो!"

प्रिंसेस मरीया ने कुमारी बुर्येन और पिता जी से अपनी तथा फ़िलीप की ओर से भी माफ़ी मांगी जिसने ऐसा करने का अनुरोध किया था।

ऐसे क्षणों में प्रिंसेस मरीया की आत्मा में बलिदान के गर्व जैसी भावना उमड़ पड़ती। किन्तु सहसा ऐसे ही क्षणों में उसके यही पिता, जिनकी वह भर्त्सना करती थी, इनके नज़दीक ही हाथों से टटोलते हुए अपना चश्मा ढूंढ़ते और उसे न देख पाते, या फिर इसी समय हुई कोई बात भूल जाते या फिर दुर्बल टांगों से लड़खड़ाता डग भरते और घूमकर यह देखते कि उनकी इस शारीरिक दुर्बलता को किसी ने देखा तो नहीं या फिर सबसे बुरा यह होता कि अगर खाने की मेज़ पर उन्हें बातों में लगाये रखनेवाले मेहमान न होते तो वह अचानक ऊंघ जाते, नेपकिन नीचे गिर जाता और उनका कांपता हुआ सिर प्लेट पर झुक जाता। "वह बूढ़े और कमज़ोर हैं और मैं उनकी आलोचना करने की हिम्मत करती हूं।" ऐसे क्षणों में अपने प्रति घृणा अनुभव करते हुए वह सोचती।

## ३

सन् १८११ में मास्को में एक लम्बा-तड़ंगा, बहुत सुन्दर, सभी फ़्रांसीसियों की तरह बड़ा मिलनसार और जैसा कि उसके बारे में कहा जाता था, असाधारण योग्यतावाला मेतिव्ये नाम का एक फ़्रांसीसी डाक्टर रहता था। बहुत जल्द ही मास्को में उसकी धूम मच गयी। ऊंची सोसाइटी के घरों में डाक्टर के रूप में ही नहीं, बल्कि बराबरी के नाते उसका स्वागत-सत्कार होता था।

बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की ने, जो हमेशा चिकित्साशास्त्र की खिल्ली उड़ाया करते थे, कुमारी बुर्येन की सलाह पर पिछले कुछ समय से इस डाक्टर को अपने यहां बुलाना शुरू कर दिया था और उसके आदी हो गये थे। मेतिव्ये हफ़्ते में दो बार बुज़ुर्ग प्रिंस के यहां आता था।

बुज़ुर्ग प्रिंस के जन्म-दिन पर मानो सारा मास्को ही उन्हें बधाई देने के लिये उनके दरवाज़े पर उमड़ पड़ा, किन्तु उन्होंने आदेश दे दिया कि किसी को भी उनके पास अन्दर न भेजा जाये। केवल कुछ ही लोगों के लिये ऐसी अनुमति दी गयी थी। प्रिंस ने प्रिंसेस मरीया को उनकी सूची दे दी थी और उन्हें खाने पर बुलाने को कह दिया था।

मेतिव्ये सुबह ही बधाई देने के लिये आया और डाक्टर के नाते, जैसा कि उसने प्रिंसेस मरीया से कहा, उसने प्रिंस के हुक्म का ज़बर्दस्ती उल्लंघन करना उचित समझा और बुज़ुर्ग प्रिंस के कमरे में चला गया। कुछ ऐसा हुआ कि अपने जन्म-दिन की इसी सुबह को बुज़ुर्ग प्रिंस अपने सबसे बुरे मूड में थे। सारी सुबह वह घर में इधर-उधर आते-जाते हुए हर किसी पर टीका-टिप्पणी और यह ज़ाहिर करते रहे थे कि उनसे जो कुछ कहा जाता है, वह उनकी समझ में नहीं आता और उनकी बातों को भी कोई नहीं समझता। प्रिंसेस मरीया अपने पिता जी के धीरे-धीरे और परेशानी से बड़बड़ाने के इस मूड से बहुत ही अच्छी तरह परिचित थी जिसका सामान्यतः गुस्से के विस्फोट के रूप में अन्त होता था और इसलिये सारी सुबह वह भरी हुई तथा पूरी तरह से तैयार बन्दूक़ से अवश्य ही गोली छूटने की आशंका लिये घर में आती-जाती रही थी। डाक्टर के आने तक सुबह ख़ैरियत से बीत गयी। डाक्टर के पिता जी के कमरे में जाने के बाद प्रिंसेस मरीया किताब लेकर ड्राइंगरूम के दरवाज़े के पास बैठ गयी जहां से वह पिता जी के कमरे में होनेवाली सारी बातचीत सुन सकती थी।

शुरू में उसे मेतिव्ये की आवाज़ सुनायी दी, फिर पिता जी की, और फिर दोनों आवाज़ें एक साथ सुनायी दीं। इसके बाद फटाक से दरवाज़ा खुला और माथे पर लहराती, काली ज़ुल्फ़वाली डाक्टर की सहमी-सी आकृति और उसके पीछे-पीछे चौकोर टोपी तथा ड्रेसिंग गाउन पहने और गुस्से से विकृत चेहरे तथा विस्फारित आंखोंवाली बुज़ुर्ग प्रिंस की आकृति चौखट पर नज़र आयी।

"तो तुम नही समझते?" प्रिंस चिल्ला रहे थे। "लेकिन मैं

समझता हूं! फ़्रांसीसी जासूस। बोनापार्ट का गुलाम, जासूस, मैं कहता हूं कि दफ़ा हो जाओ मेरे घर से!" और उन्होंने ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर दिया।

मेतिव्ये कन्धे झटककर कुमारी बुर्येन के पास गया जो बुज़ुर्ग प्रिंस का चीख़ना सुनकर बग़ल के कमरे से भागी आयी थी।

"प्रिंस की तबीयत बहुत अच्छी नहीं है, पित्त का प्रकोप है और रक्त तेज़ी से दिमाग़ की ओर दौड़ रहा है। ख़ैर चिन्ता की कोई बात नही, मैं कल फिर आऊंगा," मेतिव्ये ने फ़्रांसीसी में कहा और अपने होंठों पर उंगली रखकर तथा इस तरह चुप रहने का संकेत करके जल्दी से बाहर चला गया।

बुज़ुर्ग प्रिंस के कमरे के दरवाज़े के पीछे से स्लीपर पहने बुज़ुर्ग प्रिंस के इधर-उधर आने-जाने की आहट और उनका ज़ोर से यह चिल्लाना सुनाई दे रहा था: "जासूस, ग़द्दार, हर तरफ़ ग़द्दार! अपने घर में ही पल भर को चैन नहीं!"

डाक्टर मेतिव्ये के जाने के बाद बुज़ुर्ग प्रिंस ने बेटी को अपने पास बुलवाया और उसी पर अपना सारा गुस्सा निकाला। यह उसी का क़ुसूर था कि वह जासूस उनके कमरे में आ गया था। उन्होंने तो कह दिया था, उससे कह दिया था कि वह सूची तैयार कर ले और सूची में जिनका नाम नहीं था, उन्हें अन्दर न आने दिया जाये। इस कमीने को भीतर क्यों आने दिया गया था! इसके लिये वही दोषी थी। "आपके साथ तो मुझे एक पल को भी चैन नहीं मिलता, शान्ति से मर भी नहीं सकता," उन्होंने कहा।

"नहीं, देवी जी, हमें अलग हो जाना चाहिये, अलग हो जाना चाहिये। आप यह जानती हैं, जानती हैं! मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता," उन्होंने कहा और कमरे से बाहर चले गये। और मानो इस बात से डरते हुए कि प्रिंसेस मरीया किसी तरह अपने दिल को तसल्ली न दे ले, वह उसकी ओर लौटे तथा शान्त मुद्रा बनाने का यत्न करते हुए बोले: "ऐसा नहीं सोचियेगा कि मैंने गुस्से के क्षण में ऐसा कह दिया था। मैं बिल्कुल शान्त हूं, मैंने इस बात पर अच्छी तरह से सोच-विचार कर लिया है और यह होकर रहेगा – हमें अलग होना ही होगा, आप अपने लिये कोई जगह ढूंढ़ लीजिये!.." किन्तु वह अपने को वश में नही रख सके और ऐसे गुस्से से जो केवल प्यार करनेवाले व्यक्ति

में ही हो सकता है तथा सम्भवतः खुद भी व्यथित होते हुए उन्होंने बेटी को घूंसे दिखाये और चिल्ला उठे:

"काश कोई उल्लू इसे अपनी बीवी बना ले!" उन्होंने फटाक से दरवाज़ा बन्द कर दिया, कुमारी बुर्येन को अपने पास बुलवा लिया और कमरे में जाकर शान्त हो गये।

दिन के दो बजे चुने हुए छः व्यक्ति भोजन के लिये बुजुर्ग प्रिंस के यहां आ गये। प्रसिद्ध काउंट रस्तोपचिन, अपने भतीजे के साथ प्रिंस लोपुख़ीन, बुजुर्ग प्रिंस के युद्ध-क्षेत्र के पुराने साथी जनरल चातरोव तथा जवान लोगों में से प्येर और बोरीस द्रुबेत्स्कोई – ड्राइंगरूम में बैठे हुए ये मेहमान प्रिंस का इन्तज़ार कर रहे थे।

कुछ ही दिन पहले छुट्टी पर आनेवाले बोरीस ने बुजुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की से मिलने की बड़ी तीव्र इच्छा प्रकट की और इस हद तक उनका कृपापत्र बन गया कि बुजुर्ग प्रिंस ने उन अविवाहित जवान लोगों में से, जिन्हें वह अपने यहां नहीं आने देते थे, उसके मामले में ही अपवाद से काम लिया था।

बुजुर्ग प्रिंस का घर ऐसा तो नहीं था जिसे फ़ैशनेबुल कहा जाता है, लेकिन यह एक ऐसी छोटी-सी मण्डली का केन्द्र-बिन्दु था जिसकी शहर में बेशक कोई खास चर्चा नहीं थी, फिर भी जिसमें स्थान पाना कहीं अधिक सम्मान की बात थी। इस चीज़ को बोरीस एक हफ़्ते पहले उस वक़्त समझ गया था, जब काउंट रस्तोपचिन ने मास्को के मुख्य सेनापति द्वारा उसी दिन, जिस दिन बुजुर्ग का जन्म-दिन था, खाने पर आने के निमन्त्रण को अस्वीकार करते हुए यह कहा था:

"उस दिन तो मैं हमेशा ही बुजुर्ग प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने जाता हूं।"

"ओह, सो तो ठीक ही है, ठीक ही है। कैसे हैं वह?.."

ऊंची छत के पुराने ढंग तथा पुराने फ़र्नीचरवाले इस ड्राइंगरूम में डिनर के पहले एकत्रित थोड़े-से मेहमान मानो अदालत में जमा धीर-गम्भीर लोगों के समान लग रहे थे। सब ख़ामोश थे और अगर बोलते भी थे तो बहुत धीमे-धीमे। बुजुर्ग प्रिंस बहुत संजीदा और गुमसुम-से कमरे में आये। प्रिंसेस मरीया तो हर दिन की तुलना में कहीं अधिक चुप और सहमी-सहमी-सी प्रतीत हो रही थी। अतिथि मन मारकर उससे कोई बात करते थे, क्योंकि देख रहे थे कि वह उनकी

बातों में कोई दिलचस्पी नहीं ले रही थी। सिर्फ़ काउंट रस्तोपचिन ही कभी शहर की और कभी राजनीति की नवीनतम ख़बरें सुनाते हुए बातचीत का सिलसिला जारी रख रहे थे।

लोपुख़ीन और बूढ़े जनरल तो बातचीत में बहुत ही कम हिस्सा ले रहे थे। बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की तो मानो बड़े जज की तरह उनके सामने पेश की जा रही रिपोर्ट सुन रहे थे और ख़ामोश रहकर या कभी-कभी हां-हूं करते हुए एकाध शब्द कहकर यह ज़ाहिर कर देते थे कि उन्हें जो कुछ बताया जा रहा है, वह उसकी तरफ़ ध्यान दे रहे हैं। बातचीत का अन्दाज़ ऐसा था जिससे यह समझ में आ जाता था कि राजनीति के क्षेत्र में जो कुछ हो रहा था, वह किसी को भी पसन्द नहीं था। ऐसी घटनाओं का उल्लेख किया जा रहा था जो स्पष्टतः इस बात की पुष्टि करती थीं कि सब कुछ बद से बदतर होता जा रहा है। किन्तु सभी घटनाओं के वर्णन और टीका-टिप्पणियों में हैरान करनेवाली एक बात यह थी कि चर्चा करनेवाला या तो ख़ुद हर बार उस सीमा पर आकर रुक जाता था या उसे रोक दिया जाता था जहां उसकी राय स्वयं सम्राट के व्यक्तित्व से जुड़ सकती थी।

भोजन के वक़्त नवीनतम राजनीतिक समाचारों की चर्चा चल पड़ी – कि कैसे नेपोलियन ने ओल्डेनबर्ग के ड्यूक की जागीर पर क़ब्ज़ा कर लिया था और यह कि रूस ने यूरोप के सभी दरबारों को नेपो-लियन-विरोधी एक नोट भेजा था।*

"बोनापार्ट यूरोप के साथ वैसा ही बर्ताव कर रहा है जैसा कोई समुद्री डाकू क़ब्ज़े में लिये गये जहाज़ के साथ करता है," काउंट रस्तोपचिन ने अपने द्वारा पहले भी कई बार कहे गये इस वाक्य को दोहराया। "मुझे तो सम्राटों के इतने ज़्यादा सब्र या अन्धेपन से हैरानी होती है। अब मामला रोम के पोप तक पहुंच रहा है। बोनापार्ट बड़ी बेहयाई से अब कैथोलिक चर्च के अध्यक्ष का तख़्ता उलट देना चाहता है और सब मुंह बन्द किये बैठे हैं। सिर्फ़ हमारे ही सम्राट ने

---

* यहां उस नोट से अभिप्राय है जो ओल्डेनबर्ग के बड़े ड्यूक के क्षेत्र पर नेपो-लियन द्वारा १८१० में अधिकार कर लेने पर रूसी सम्राट ने यूरोप के सभी शासकों को भेजा था। यह तिलज़ीत की १८०७ की सन्धि का उल्लंघन था जिसके अनुसार ओल्डेनबर्ग की जागीर की स्वाधीनता को स्वीकार किया गया था। – सं०

ओल्डेनबर्ग के ड्यूक की जागीर पर नेपोलियन के क़ब्ज़े का विरोध किया है। और वह भी..." काउंट रस्तोपचिन यह महसूस करते हुए चुप हो गये कि वह उस सीमा-रेखा पर खड़े हैं जिसके आगे टीका-टिप्पणी नहीं की जा सकती।

"ओल्डेनबर्ग की जागीर की जगह ड्यूक के सामने दूसरी जागीर पेश की गयी है," बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की ने कहा, "वह तो ड्यूकों के साथ वैसा ही व्यवहार कर रहा है जैसे मैं अपने भूदासों को लीसिये गोरि से बोगुचारोवो और र्याज़ान की जागीरों पर भेज दूं।"

"ओल्डेनबर्ग के ड्यूक अद्भुत चारित्रिक दृढ़ता और धीरज से अपने दुर्भाग्य को सहन कर रहे हैं," बोरीस ने आदरपूर्वक बातचीत में शामिल होते हुए फ़्रांसीसी में कहा। उसने इसलिये ऐसा कहा था कि पीटर्सबर्ग से आते समय उसे रास्ते में ड्यूक से भेंट करने का सम्मान प्राप्त हुआ था। बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की ने जवान बोरीस की ओर ऐसे देखा मानो उसके इस वाक्य के जवाब में कुछ कहना चाहते हों, लेकिन इसके लिये उसे बहुत ही कमउम्र मानते हुए उन्होंने अपना इरादा बदल लिया।

"ओल्डेनबर्ग के मामले के बारे में मैंने हमारा विरोध-पत्र पढ़ा है और मैं इस बात से हैरान रह गया कि उसे कितने भद्दे ढंग से लिखा गया है," काउंट रस्तोपचिन ने ऐसे व्यक्ति के लापरवाही के अन्दाज़ में कहा जो उस चीज़ को बहुत अच्छी तरह से जानता है जिसपर टीका-टिप्पणी करता है।

प्येर ने यह न समझ पाते हुए कि रस्तोपचिन को विरोध-पत्र के बुरे ढंग से लिखे जाने के कारण क्यों परेशानी हो रही है, भोले-भाले आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

"अगर विरोध-पत्र का सार ज़ोरदार है तो इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि वह किस ढंग से लिखा गया है, काउंट?" प्येर ने जानना चाहा।

"मेरे प्यारे, पांच लाख की सेना रखते हुए अच्छी शैली एक आसान बात होनी चाहिये," काउंट रस्तोपचिन ने उत्तर दिया। प्येर समझ गया कि काउंट रस्तोपचिन को विरोध-पत्र की अच्छी शैली के बारे में क्यों परेशानी हो रही थी।

"लगता है कि आजकल क़लम-घसीटुओं की तो बाढ़ ही आ गयी है," बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की बोले, "पीटर्सबर्ग में तो सभी लिखने

के काम में जुटे हुए हैं, केवल नोट ही नहीं, सभी नये क़ानून-क़ायदे लिखते हैं। मेरे अन्द्रेई ने वहां रूस के लिये क़ानूनों का पूरा पोथा ही लिख डाला है। आजकल सभी लिखते हैं!" और वह बनावटी ढंग से हंस दिये।

क्षण भर को बातचीत बन्द हो गयी। वृद्ध जनरल ने खांसकर अपनी ओर ध्यान आकर्षित किया।

"पीटर्सबर्ग में फ़ौजी परेड के वक़्त की आखिरी घटना सुनी है आपने? नये फ़्रांसीसी राजदूत ने वहां अपने को किस रंग में पेश किया?"

"क्या हुआ था वहां? हां, मैंने कुछ सुना तो था – राजदूत ने सम्राट के सामने ही कोई अटपटी बात कह दी थी।"

"हमारे सम्राट ने ग्रेनेडियर डिवीज़न और समारोही मार्च की तरफ़ राजदूत का ध्यान आकर्षित किया," वृद्ध जनरल कहते गये, "राजदूत ने मानो इसकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया और मानो यह कहने की धृष्टता की कि फ़्रांस में हम ऐसी मामूली बातों की तरफ़ कोई ध्यान नहीं देते हैं। सम्राट ने जवाब में कुछ नहीं कहा। सुनने में आया है कि अगली परेड में सम्राट ने उसकी बिल्कुल अवहेलना कर दी।"

सभी खामोश रहे। चूंकि इस चर्चा का व्यक्तिगत रूप से सम्राट से सम्बन्ध था, इसलिये इसपर टीका-टिप्पणी करने का कोई प्रश्न ही नहीं पैदा होता था।

"गुस्ताख लोग हैं!" प्रिंस ने कहा। "मेतिव्ये को तो जानते हैं न? मैंने आज उसे अपने घर से निकाल दिया। वह यहां आया था। मेरे बहुत अनुरोध करने पर भी कि किसी को भीतर न आने दिया जाये, उसे मेरे पास आ जाने दिया गया," बुज़ुर्ग प्रिंस ने गुस्से से बेटी की तरफ़ देखते हुए कहा। इसके बाद उन्होंने फ़्रांसीसी डाक्टर के साथ हुई अपनी सारी बातचीत सुनायी और यह बताया कि किन कारणों से उन्हें इस बात का यक़ीन हो गया है कि मेतिव्ये जासूस है। ये कारण बेशक अपर्याप्त और अस्पष्ट थे, फिर भी किसी ने कोई आपत्ति नहीं की।

मांस के गर्म पकवान के बाद शेम्पेन पेश की गयी। मेहमान बुज़ुर्ग प्रिंस को बधाई देने के लिये उठकर खड़े हो गये। प्रिंसेस मरीया भी उनके पास आयी।

बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की ने कठोर और क्रोधपूर्ण दृष्टि से बेटी की तरफ़ देखा और चुम्बन पाने के लिये अपना झुर्रीदार तथा हजामत बना गाल उसकी तरफ़ बढ़ा दिया। उनके चेहरे का पूरा भाव प्रिंसेस से यही कहता प्रतीत हो रहा था कि सुबह की बातचीत को वह भूले नहीं हैं, कि उनका निर्णय पहले की तरह ही अटल है और मेहमानों की उपस्थिति के कारण ही वह अब उससे यह कह नहीं रहे हैं।

कॉफ़ी पीने के लिये ड्राइंगरूम में जाने पर बुज़ुर्ग लोग इकट्ठे बैठ गये।

प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच बोल्कोन्स्की कुछ रंग में आ गये थे और वह निकट भविष्य में होनेवाले युद्ध के बारे में अपने विचार प्रकट करने लगे।

उन्होंने कहा कि जब तक हम जर्मनों के साथ गठबन्धन करने की कोशिश करते रहेंगे और यूरोपीय मामलों में टांग अड़ाते रहेंगे, जिनमें तिलज़ीत की शान्ति-सन्धि ने हमें घसीट लिया था, तब तक बोनापार्ट के साथ होनेवाली लड़ाइयों में मुंह की खाते रहेंगे। हमें न तो आस्ट्रिया के हक़ में और न उसके ख़िलाफ़ ही लड़ना चाहिये था। हमारी सारी राजनीतिक दिलचस्पी पूरब में ही है और जहां तक बोनापार्ट का सम्बन्ध है तो हमें सिर्फ़ इतना ही करना चाहिये कि अपनी सीमा पर सेना तैनात कर दें तथा उसके प्रति दृढ़ नीति अपनायें। तब वह कभी भी रूसी सीमा पर क़दम रखने की हिम्मत नहीं करेगा जैसी उसने सन् १८०७ में की थी।

"लेकिन प्रिंस, भला हम क्या लड़ेंगे फ़्रांसीसियों के ख़िलाफ़!" काउंट रस्तोपचिन ने कहा। "क्या हम अपने गुरुओं और आराध्य-देवताओं के विरुद्ध मोर्चा ले सकते हैं? हमारे नवयुवकों और नवयुवतियों पर दृष्टि तो डालिये! फ़्रांसीसी हमारे भगवान हैं और पेरिस हमारा स्वर्ग है।"

काउंट सम्भवतः इसीलिये ऊंचे-ऊंचे बोलने लगे कि सभी उनकी बातें सुन लें।

"हमारे सूट-बूट फ़्रांसीसी हैं, विचार फ़्रांसीसी हैं और भावनायें फ़्रांसीसी हैं! आपने तो आज इस मेतिव्ये को इसलिये घर से निकाल दिया कि वह फ़्रांसीसी और कमीना है, लेकिन हमारी महिलायें उसके

सामने नाक रगड़ती हैं। कल मैं एक पार्टी में गया था जिसमें उपस्थित पांच महिलाओं में से तीन कैथोलिक थीं और हमारे प्राच्य ईसाई धर्म द्वारा इतवार के दिन काम की मनाही की अवहेलना करते हुए रोम के पोप की अनुमति से कसीदाकारी करती थीं। और आपकी इजाज़त से मैं यह भी कहना चाहूंगा कि खुद वे हमारे हम्मामों के साइनबोर्डों पर चित्रित औरतों की तरह लगभग नंगी बैठी थीं। ओह, जब हम अपने युवजन को देखते हैं, प्रिंस, तो यही मन होता है कि संग्रहालय से पीटर महान का पुराना डंडा लेकर रूसी ढंग से उनकी खूब हड्डिया-पसलियां तोड़ी जायें ताकि उनके दिमाग़ से सभी तरह की ऊल-जलूल बातें निकल जायें!"

सब चुप रहे। बुजुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की ने मुस्कराते हुए रस्तोपचिन की ओर देखा और अनुमोदन करते हुए सिर हिलाया।

"तो अब जाने की इजाज़त दीजिये, हुजूर! अपनी सेहत का ख़्याल रखिये," रस्तोपचिन ने अपनी स्वाभाविक द्रुत गति-विधि के अनुरूप जल्दी से उठते और बुज़ुर्ग प्रिंस की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"नमस्ते, मेरे प्यारे... आपके शब्द तो मधुर तराने जैसे होते हैं," बुज़ुर्ग प्रिंस ने काउंट रस्तोपचिन का हाथ अपने हाथ में थामे और चुम्बन पाने के लिये अपना गाल काउंट की ओर बढ़ाते हुए कहा। रस्तोपचिन के साथ ही बाक़ी मेहमान भी विदा लेने के लिये उठकर खड़े हो गये।

## ४

प्रिंसेस मरीया ड्राइंगरूम में बुज़ुर्गों के पास बैठी हुई उनकी बातें तथा टीका-टिप्पणियां सुनती रही, मगर उसने जो कुछ भी सुना, उसका एक शब्द भी उसके पल्ले नहीं पड़ा। वह तो यही सोचती जा रही थी कि सभी मेहमान उसके प्रति पिता के शत्रुतापूर्ण रवैये को भांप रहे हैं या नहीं। भोजन के पूरे वक़्त के दौरान बोरीस द्रुबे-त्स्कोई ने, जो इस घर में आज तीसरी बार आया था, उसके प्रति

जो विशेष सौजन्य और हार्दिकता दिखाई थी, उसने तो उसकी तरफ़ भी ध्यान नहीं दिया था।

बुजुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की के ड्राइंगरूम से जाने के बाद जब प्रिंसेस मरीया आखिरी मेहमान यानी प्येर के साथ वहां अकेली रह गयी और जब वह हाथ में टोप लिये तथा मुस्कराता हुआ उसके पास आया, तो उसने खोये-खोये और प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी तरफ़ देखा।

"कुछ देर और बैठ सकता हूं?" अपने भारी-भरकम शरीर को प्रिंसेस मरीया के क़रीब रखी आरामकुर्सी में धंसाते हुए प्येर ने पूछा।

"हां, हां," प्रिंसेस ने जवाब दिया। "क्या आपका किसी बात की ओर ध्यान नहीं गया?" प्रिंसेस की दृष्टि मानो पूछ रही थी।

प्येर भोजन के बादवाले अपने बहुत अच्छे मूड में था। वह अपने सामने देखते हुए धीरे-धीरे मुस्करा रहा था।

"प्रिंसेस, इस नौजवान को क्या आप बहुत समय से जानती हैं?" प्येर ने प्रश्न किया।

"किस नौजवान को?"

"बोरीस द्रुबेत्स्कोई को।"

"नहीं, थोड़े ही समय से..."

"वह आपको अच्छा लगता है?"

"हां, वह प्यारा नौजवान है... आप किसलिये मुझसे यह पूछ रहे हैं?" प्रिंसेस मरीया ने पिता के साथ हुई अपनी सुबह की बात-चीत के बारे में सोचना जारी रखते हुए जानना चाहा।

"इसलिये कि मैंने इस बात की ओर ध्यान दिया है कि जब कोई जवान आदमी छुट्टी पर पीटर्सबर्ग से मास्को आता है तो आम तौर पर उसका एक ही उद्देश्य होता है कि किसी धनी लड़की से शादी कर ले।"

"तो आपने इस बात की ओर ध्यान दिया है?" प्रिंसेस मरीया ने कहा।

"हां," प्येर मुस्कराते हुए कहता गया, "और इस नौजवान ने कुछ ऐसा सिलसिला बना रखा है कि जहां शादी के लायक़ कोई लड़की होती है, वह वहीं पहुंच जाता है। मैं तो एक खुली किताब की तरह उसे पढ़ लेता हूं। वह अब इस दुविधा में है कि किस पर झपटे – आप पर या कुमारी यूलिया करागिना पर। वह उसकी तरफ़ बहुत

ध्यान देता है," प्येर ने अन्तिम वाक्य फ़्रांसीसी में कहा।

"वह उसके यहां जाता है?"

"हां, अक्सर। और आपको मालूम है कि प्रणय-निवेदन का अब नया ढंग क्या है?" प्येर ने खुशी से छलछलाती मुस्कान के साथ पूछा। इस समय वह सम्भवतः खुशमिज़ाजी के उस मज़ाक़िया रंग में था जिसके लिये वह दैनिकी में अक्सर अपनी भर्त्सना करता था।

"नहीं," प्रिंसेस मरीया ने जवाब दिया।

"अब तो मास्को की लड़कियों को पसन्द आने के लिये उदास-उदास-सा बने रहना चाहिये। वह यूलिया के सामने बहुत उदास-सा बना रहता है," प्येर ने फिर से फ़्रांसीसी में कहा।

"सच?" प्रिंसेस मरीया ने प्येर के दयालु चेहरे को देखते और अपने ही दुख के बारे में सोचना जारी रखते हुए फ़्रांसीसी में ही पूछा। "अगर मैं किसी को अपना राज़दान बनाने का फ़ैसला कर लेती और वह सब कह देती जो अनुभव करती हूं तो मेरे मन से कुछ बोझ हट जाता। मैं तो प्येर से ही सब कुछ कहना चाहती। वह इतना दयालु और नेक है। मेरा मन हल्का हो जाता। वह मुझे कोई सलाह दे देता!" वह सोच रही थी।

"आप उससे शादी करने को राज़ी हो जातीं?" प्येर ने जानना चाहा।

"ओह, मेरे भगवान! कुछ ऐसे क्षण भी होते हैं काउंट, जब मैं किसी से शादी करने को तैयार हो जाती," प्रिंसेस मरीया ने अचानक और अपने लिये ही अप्रत्याशित तथा रुआंसी आवाज़ में जवाब दिया। "ओह, अपने किसी अत्यधिक प्रिय व्यक्ति को प्यार करना और साथ ही यह महसूस करना कितना यातनाप्रद होता है (वह कांपती आवाज़ में कहती गयी) कि उसे दुख देने के सिवा हम कुछ नहीं कर सकते और जब यह भी मालूम हो कि इस स्थिति को बदलना हमारे बस की बात नहीं है। तब एक ही रास्ता बाक़ी रह जाता है – हम वहां से चले जायें। लेकिन मैं कहां जाऊं?"

"क्या बात है, यह आपको क्या हुआ है प्रिंसेस?"

किन्तु प्रिंसेस और कुछ कहे बिना रो पड़ी।

"मालूम नहीं कि आज मुझे क्या हो गया है। मेरी बातों की तरफ़ ध्यान नहीं दीजिये, मैंने जो कुछ कहा है, उसे भूल जाइये।"

प्येर की सारी ख़ुशी हवा हो गयी। वह परेशान होते हुए प्रिंसेस से पूछने, यह अनुरोध करने लगा कि उसे सब कुछ बता दे, उसे अपने दुख-दर्द का भागी बना ले। लेकिन प्रिंसेस यही दोहराती रही कि उसने जो कुछ कहा है, प्येर उसे भूल जाये, कि उस परेशानी के सिवा, जिसे वह जानता है, यानी प्रिंस अन्द्रेई की शादी से बाप-बेटे के बीच झगड़े – की सम्भावना – उसे और कोई परेशानी नहीं है।

"रोस्तोवों के बारे में आपने कुछ सुना है?" प्रिंसेस मरीया ने बातचीत का विषय बदलने के लिये पूछा। "मुझे बताया गया है कि वे जल्द ही यहां आनेवाले हैं। अन्द्रेई का भी मैं हर दिन ही इन्त-ज़ार करती रहती हूं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि उनकी यहां मुलाक़ात हो जाये।"

"इस मामले के बारे में अब उनका कैसा रवैया है?" प्येर ने पूछा। **उनका** से उसका बुज़ुर्ग प्रिंस से अभिप्राय था। प्रिंसेस मरीया ने निराशा से सिर हिलाया।

"लेकिन क्या किया जाये? साल ख़त्म होने में कुछ ही महीने बाक़ी रह गये हैं। यह होना तो अनिवार्य है। मैं तो सिर्फ़ भाई को शुरू के कठिन क्षणों के झंझट से बचाना चाहती हूं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि रोस्तोव-परिवारवाले जल्दी से जल्दी यहां आ जायें। मुझे आशा है कि मैं नताशा के साथ हेल-मेल बढ़ा सकूंगी ... आप तो उन्हें बहुत समय से जानते हैं," प्रिंसेस मरीया ने कहा, "अपने दिल पर हाथ रखकर मुझे बिल्कुल सच सच बताइये कि कैसी है यह लड़की और इसके बारे में आपकी क्या राय है? लेकिन सब कुछ बिल्कुल सच सच, क्योंकि आप तो समझते ही हैं कि पिता जी की इच्छा के विरुद्ध ऐसा करके अन्द्रेई कितनी बड़ी जोखिम उठा रहा है। इसलिये मैं यह जानना चाहूंगी ..."

अस्पष्ट सहज वृत्ति ने प्येर को यह बता दिया कि प्रिंसेस मरीया के सारे स्पष्टीकरणों और उसके बार बार **सब कुछ सच सच** कहने के अनुरोधों में अपनी भावी भाभी के प्रति दुर्भावना व्यक्त हो रही है, कि वह यह चाहती है कि प्येर प्रिंस अन्द्रेई के चुनाव का अनुमोदन न करे। किन्तु प्येर ने वही कहा जो सोचने की तुलना में वह कहीं अधिक अनुभव कर रहा था।

"मैं नहीं जानता कि आपके प्रश्न का कैसे उत्तर दूं," उसने शर्म

से लाल होते और खुद इसका कारण न जानते हुए कहा। "मैं तो बिल्कुल नहीं जानता कि यह लड़की कैसी है–मैं तो उसका किसी प्रकार भी विश्लेषण नहीं कर सकता। वह बड़ी मनमोहिनी है। क्यों ऐसी है, मुझे यह मालूम नहीं। उसके बारे में सिर्फ़ इतना ही कहा जा सकता है।" प्रिंसेस मरीया ने गहरी सांस ली और उसके चेहरे का भाव यह कहता प्रतीत हुआ: "हां, मुझे ऐसी ही आशा थी और इसी कारण डरती थी।"

"वह समझदार है?" प्रिंसेस मरीया ने पूछा। प्येर सोचने लगा।

"मेरे ख़्याल में तो नहीं," उसने जवाब दिया, "वैसे शायद–है भी। वह समझदारी को बहुत महत्त्व नही देती... ओह नहीं, वह बड़ी मनमोहिनी है और इससे अधिक कुछ नहीं।" प्रिंसेस मरीया ने फिर निराशा से सिर हिलाया...

"ओह, मैं कितना अधिक प्यार करना चाहती हूं उसे! अगर मुझसे पहले आपकी उससे भेंट हो जाये तो उससे यह कह दीजिये।"

"मैंने सुना है कि वे लोग कुछ ही दिनों में यहां आ जायेंगे," प्येर ने कहा।

प्रिंसेस मरीया ने प्येर को अपनी यह योजना बतायी कि रोस्तोवों के मास्को आते ही वह अपनी भावी भाभी के साथ मेल-मिलाप बढ़ा लेगी और बुज़ुर्ग प्रिंस को उसका अभ्यस्त बनाने का प्रयत्न करेगी।

## ५

बोरीस द्रुबेत्स्कोई पीटर्सबर्ग में किसी धनी लड़की से शादी नही कर सका और अब इसी उद्देश्य से मास्को आया था। मास्को में बोरीस इस दुविधा में था कि यूलिया और प्रिंसेस मरीया–इन सबसे धनी दो लड़कियों में से किस की तरफ़ ज़्यादा ध्यान दे। बेशक कुरूप होने के बावजूद प्रिंसेस मरीया उसे यूलिया से अधिक आकर्षक लगती थी, फिर भी, न जाने क्यों, प्रिंसेस मरीया के सम्मुख प्रेम-प्रदर्शन करते हुए वह अटपटा-सा महसूस करता था। बुज़ुर्ग प्रिंस के जन्म-दिन पर अपनी पिछली भेंट के समय अपनी भावनाओं की चर्चा करने के उसके

सभी प्रयासों के उसने असंगत उत्तर दिये और सम्भवतः वह उसकी बातों पर कान ही नहीं दे रही थी।

इसके विपरीत, यूलिया उसके प्रेम-प्रदर्शन को बडी ख़ुशी से स्वीकार करती थी, यद्यपि अपनी इस तत्परता को अपने एक ख़ास ढंग से अभिव्यक्ति देती थी।

यूलिया सत्ताईस साल की थी। अपने भाइयों की मृत्यु के बाद वह बहुत धनी हो गयी थी। अब वह बिल्कुल सुन्दर नहीं रही थी, मगर ऐसा समझती थी कि वह न केवल पहले की तरह ही सुन्दर है, बल्कि कहीं अधिक आकर्षक हो गयी है। उसके इस भ्रम में रहने का पहला कारण तो यह था कि वह बहुत धनी, भावी दुलहन थी और दूसरा यह कि ज्यों-ज्यों उसकी उम्र बढ़ती जाती थी, वह पुरुषों के लिये उतनी ही कम ख़तरनाक बनती जा रही थी और वे किसी भी तरह की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लिये बिना कहीं अधिक आज़ादी से उसके साथ मिल-जुल सकते थे, उसके यहां होनेवाली दावतों, पार्टियों और दिलचस्प महफ़िलों का मज़ा ले सकते थे। दस साल पहले मर्द लोग जिस घर में इस कारण हर दिन जाते हुए घबराते थे कि वहां सत्रह वर्षीया युवती थी और वे ऐसा करके उसे बदनाम न कर दें या उसके साथ अपना भाग्य जोड़ने को मजबूर न हो जायें, अब वे बेझिझक हर दिन उसके यहां जाते थे और उसके साथ भावी दुलहन जैसा नहीं, बल्कि लिंग की दृष्टि से महत्त्वहीन परिचिता का सा व्यवहार करते थे।

इस जाड़े में करागिनों का घर मास्को में सबसे अधिक रुचिकर तथा आतिथ्यपूर्ण था। विशेष रूप से आयोजित समारोहों और दावतों के अलावा हर शाम को यहां बहुत-से लोग, ख़ास तौर पर मर्द लोग जमा होते जो रात के बारह बजे खाना खाते और सुबह के तीन बजे तक यहीं बने रहते। यूलिया सभी बॉल-नृत्यों और सैर-सपाटों में भाग लेती, थियेटर देखने जाती। उसकी पोशाकें हमेशा सबसे ज़्यादा फ़ैशनदार होतीं। किन्तु इन सब बातों के बावजूद यूलिया सभी चीज़ों से निराश हो चुकी प्रतीत होती, हर किसी से यही कहती कि उसका मैत्री, प्यार और जीवन की किसी भी तरह की ख़ुशियों में कोई विश्वास नहीं रहा और वह केवल **वहां** यानी क़ब्र में ही चैन पाने की उम्मीद रखती है। उसने ऐसी लड़की का सा अन्दाज़ अपना लिया था जिसे

जीवन में बहुत बड़ी निराशा का मुंह देखना पड़ा हो, जो मानो अपना प्रियतम खो बैठी हो या जिसके प्रियतम ने उसे बड़ी निर्दयता से धोखा दिया हो। बेशक ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था, लेकिन उसकी तरफ़ ऐसे ही देखा जाता था और वह खुद भी यही मानती थी कि उसने जीवन में बहुत ही दुख-दर्द सहे हैं। उसकी यह उदासी उसके द्वारा ज़िन्दगी के मज़े लूटने और उसके यहां आनेवाले जवान लोगों के साथ खूब दिलचस्प वक़्त बिताने में बाधक नही होती थी। यहां आनेवाला हर मेहमान गृह-स्वामिनी के उदासी में डूबे इस मूड के प्रति अपनी सहानुभूति की भावना व्यक्त करता, इसके बाद ऊंची सोसाइटी की गपशप करता, नाचता, बौद्धिक खेल खेलता और अचानक दी जानेवाली कविता-पंक्तियों पर कवितायें रचता। इस प्रकार की कवितायें रचने का करागिनों के यहां बहुत चलन था। केवल कुछ जवान लोग ही, जिनमें बोरीस भी था, यूलिया के इस उदासी के मूड की गहराई में उतरते थे और इन्हीं के साथ वह संसार की हर चीज़ की निस्सारता के बारे में लम्बी और अन्तरंग बातें करती थी और इन्हें ही अपना वह एलबम दिखाती थी जिसमें उसने विषादपूर्ण रेखाचित्र बना रखे थे, सूक्तियां और कवितायें लिख रखी थीं।

बोरीस के प्रति यूलिया विशेष स्नेहशील थी। वह जीवन से उसके बहुत जल्द ही निराश हो जाने पर अफ़सोस ज़ाहिर करती और मित्र के नाते उसे ऐसी सान्त्वनायें देने का प्रयास करती जो स्वयं बहुत व्यथा-वेदना सहन कर चुकनेवाले व्यक्ति के रूप में दे सकती थी। उसने अपना एलबम खोलकर उसके सामने रख दिया। बोरीस ने एल-बम में दो वृक्षों के रेखाचित्र बनाये और यह लिखा: "गांव के वृक्षो, तुम्हारी धुंधली शाखायें मुझपर अन्धकार और उदासी की छाया डालती हैं।"

दूसरे पृष्ठ पर उसने समाधि बनायी और ये पंक्तियां लिखीं:

मौत हमें दे चैन,<br>
हमें तो केवल मौत बचाये,<br>
इसके सिवा न दुख-दर्दों से,<br>
मुक्ति कभी मिल पाये।

यूलिया ने कहा कि ये तो बहुत ही सुन्दर पंक्तियां हैं।

"उदासी भरी मुस्कान में कोई असीम मोहिनी है," यूलिया ने किसी पुस्तक से नक़ल किये गये ये शब्द बोरीस के सामने दोहरा दिये।

"छाया में प्रकाश की किरण, अवसाद और हताशा के बीच सूक्ष्म अन्तर की रेखा ही सान्त्वना की सम्भावना देती है।"

इसके उत्तर में बोरीस ने कविता की ये पंक्तियां लिखीं:

संवेदन, भावुक अन्तर का विष-पोषण
जिसके बिना नही सुख पाये मेरा मन,
ओ, कोमल अवसाद, चैन दो तुम आकर
दुख में डूबा, एकाकी मन बहलाकर,
सतत बहे जो मेरी आंखों से निर्झर
उसमें घोलो रस यह अपना गुप्त, मधुर।

यूलिया ने बोरीस के लिये सर्वाधिक अवसादपूर्ण निराशापूर्ण गीतों की धुनें हार्प पर बजायीं।

बोरीस ने "बेचारी लीज़ा"* पुस्तक ऊंचे-ऊंचे पढ़कर सुनायी और ऐसा करते समय भाव-विह्वलता से उसका गला रुंध गया और उसे बीच में ही रुकना पड़ा। यूलिया और बोरीस जब ऊंची सोसाइटी में मिलते तो एक-दूसरे की ओर ऐसे देखते मानो इस दुनिया में समान आत्माओंवाले वे ही दो व्यक्ति थे जो एक-दूसरे को बहुत अच्छी तरह से समझते थे।

बोरीस की मां, आन्ना मिखाइलोव्ना, अक्सर करागिनों के यहां जाती, यूलिया की मां के साथ ताश की बाज़ियां खेलती और बातों ही बातों में यह मालूम करने की कोशिश करती कि यूलिया को दहेज में क्या कुछ मिलनेवाला है (उसे पेंज़ा की दोनों जागीरें और नीज्नी नोवगोरोद के वन दहेज में मिलनेवाले थे)। आन्ना मिखाइलोव्ना अपने बेटे को धनी यूलिया के साथ सूत्रबद्ध करनेवाले सूक्ष्म अवसाद को बहुत भावुक और श्रद्धा से ओत-प्रोत होकर प्रभु की इच्छा मानती।

"हमारी प्यारी यूलिया तो सदा की भांति ही सुन्दर और अवसाद-

---

* रूसी लेखक निकोलाई करामज़ीन (१७६६–१८२६) की उपन्यासिका जिसमे लीज़ा नाम की एक युवती के भाग्य की कहानी कही गयी है जिसके जीवन को एक कुलीन नौजवान ने बरबाद कर डाला था। – सं०

पूर्ण है," वह बेटी से कहती। "बोरीस का कहना है कि आपके घर में उसे हार्दिक सुख मिलता है। बहुत अधिक निराशाओं का सामना करना पड़ा है उसे और बहुत ही संवेदनशील है वह," आन्ना मिखाइ-लोव्ना यूलिया की मां से कहती।

"ओह, मेरे बेटे, मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि पिछले कुछ समय में मैं यूलिया को कितना अधिक चाहने लगी हूं!" वह बेटे से कहती। "फिर कौन नहीं चाहेगा उसे? वह बिल्कुल फ़रिश्ता है! ओह, बोरीस, बोरीस!" वह थोड़ी देर को चुप हो जाती। "और उसकी मां पर मुझे कितना तरस आता है," वह अपनी बात जारी रखती, "आज उसने मुझे पेंज़ा से मिलनेवाला हिसाब-किताब और पत्र दिखाये (उनकी बहुत बड़ी जागीर है), और उस बेचारी को अकेले ही सब कुछ करना पड़ता है। कैसे धोखा देते हैं वे लोग उसे!"

मां की बात सुनते हुए बोरीस के होंठों पर हल्की-सी मुस्कान झलक उठती। वह मां की इस भोली-भाली चालाकी पर मन ही मन हंसता, मगर पूरी बात सुन लेता और कभी-कभी बड़े ध्यान से उससे पेंज़ा तथा नीज्नी नोवगोरोद की जागीरों के बारे में पूछ-ताछ करता।

यूलिया बहुत पहले से ही अपने इस अवसादपूर्ण आराधक की ओर से विवाह-प्रस्ताव की आशा कर रही थी और उसे स्वीकारने को तैयार थी। किन्तु यूलिया के प्रति कोई गुप्त अरुचि, उसकी विवाह करने की उत्कट इच्छा, उसकी कृत्रिमता और सच्चा प्यार पाने की सम्भावना से वंचित हो जाने का भय बोरीस को अभी तक ऐसा करने से रोक रहा था। उसकी छुट्टियां ख़त्म होने को थीं। वह अपना हर दिन और पूरा-पूरा दिन करागिनों के यहां बिताता तथा हर दिन मन ही मन विचार करते हुए अपने आपसे कहता कि कल वह विवाह-प्रस्ताव कर देगा। किन्तु यूलिया की उपस्थिति में, उसके लाल चेहरे और लगभग हमेशा ही पाउडर से पुती ठोड़ी, आर्द्र आंखों और चेहरे के भाव को देखते हुए, जो हमेशा अवसाद की जगह तुरन्त ही दाम्पत्य जीवन के सौभाग्य के अस्वाभाविक उल्लास में बदल जाने की तत्परता प्रकट करता था, बोरीस निर्णायक शब्द नहीं कह पाता था, यद्यपि अपनी कल्पना में वह बहुत पहले से ही अपने को पेंज़ा और नीज्नी नोवगोरोद की जागीरों का स्वामी मानता था और यह भी तय कर चुका था कि उनकी आमदनी का वह कैसे इस्तेमाल करेगा। बोरीस

के इस ढुलमुलपन की ओर यूलिया का ध्यान जाता और कभी-कभी उसके मन में यह विचार आता कि वह उसे अच्छी नहीं लगती है। किन्तु नारी का गर्व उसे सान्त्वना देता और वह अपने आपसे कहती कि बोरीस प्यार के कारण ही शर्माता रहता है। फिर भी उसकी उदासी झल्लाहट में बदलने लगी और बोरीस के जाने के कुछ समय पहले उसने अपनी कार्रवाई की एक ठोस योजना बना ली। उसी समय, जब बोरीस की छुट्टियां ख़त्म होनेवाली थीं, अनातोल कुरागिन मास्को आ गया और, ज़ाहिर है, कि वह यूलिया के ड्राइंगरूम में भी पहुंचा। यूलिया अचानक अपनी उदासी को भूल-भालकर बहुत ख़ुश रहने तथा अनातोल की ओर बहुत ध्यान देने लगी।

"मेरे बेटे," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने बोरीस से कहा, "मुझे विश्वसनीय स्रोतों से पता चला है कि प्रिंस वसीली ने अपने बेटे अनातोल को यूलिया से शादी करने के इरादे से ही मास्को भेजा है। मैं इतना अधिक प्यार करती हूं यूलिया को कि मुझे उसके लिये दुख होगा। तुम्हारा क्या विचार है, बेटे?" आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने पूछा।

बेवक़ूफ़ बनकर रह जाने और इस विचार से बोरीस के मन को बड़ी ठेस लगी कि वह व्यर्थ ही एक महीने तक यूलिया के सामने अव-साद का बोझल नाटक करता रहा और यह कि पेंज़ा की जागीरों की सारी आमदनी, जिसका वह ढंग से उपयोग करने की पूरी योजना भी बना चुका था, अब किसी दूसरे आदमी, ख़ास तौर पर, मूर्ख अनातोल के हाथों में चली जायेगी। वह सगाई-विवाह का प्रस्ताव करने का पक्का इरादा बनाकर करागिनों के यहां गया। यूलिया ने चहकते और लापरवाही-सी दिखाते हुए उसका स्वागत किया, मानो संयोगवश ही यह बताया कि पिछली शाम के बॉल-नृत्य में उसे कितना मज़ा आया था और यह पूछा कि वह कब पीटर्सबर्ग जा रहा है। बोरीस बेशक अपने प्यार की चर्चा करने का इरादा बनाकर आया था और इसलिये मीठी-मीठी बातें करना चाहता था, लेकिन वह ऐसा न करके खीझते हुए नारी के स्वभाव की चंचलता और इस बात का ज़िक्र करने लगा कि औरतें कितनी आसानी से उदासी की जगह ख़ुशी के रंग में आ सकती हैं और उनका मूड इस बात पर निर्भर करता है कि कौन उनके प्रति प्यार जताता है। यूलिया बुरा मान गयी, उसने जवाब दिया कि वह ठीक कहता है, कि औरत विविधता चाहती है

और एक ही बात की रट लगाये रहने पर तो किसी का भी मन ऊब सकता है।

"तो इसके लिये मैं आपको यह सलाह दूंगा ..." बोरीस ने कोई तीखा-सा व्यंग्य-बाण चलाने के लिये कहना शुरू किया। किन्तु इसी क्षण उसके मन में यह कटु विचार कौंध गया कि वह अपना लक्ष्य प्राप्त किये बिना और अपनी सारी मेहनत यों ही बरबाद करके (जैसा कि उसके साथ पहले कभी नहीं हुआ था) मास्को से चला जायेगा। उसने अपना वाक्य अधूरा ही छोड़ दिया, आंखें झुका लीं ताकि यूलिया का झल्लाया तथा दुविधा में पड़ा हुआ चेहरा न देखे और बोला: "मैं आपके साथ झगड़ा करने के लिये यहां नहीं आया हूं। इसके विपरीत ..." उसने इस बात का विश्वास कर लेने के लिये कि वह अपनी बात जारी रख सकता है या नहीं, यूलिया की तरफ़ देखा। उसकी सारी झल्लाहट आन की आन में अचानक ग़ायब हो गयी, उसकी विह्वल और चमकती हुई आंखें उत्सुकतापूर्ण प्रत्याशा में बोरीस के चेहरे पर जमी हुई थीं। "मैं हमेशा ऐसी व्यवस्था कर सकता हूं कि इससे बहुत कम मिलूं-जुलूं," बोरीस ने सोचा, "लेकिन शुरू किया हुआ काम सिरे चढ़ाना चाहिये!" भाव-विह्वलता से उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी, उसने नज़र ऊपर उठाकर यूलिया की तरफ़ देखा और बोला: "आपके प्रति मेरी क्या भावनायें हैं, यह तो आप जानती ही हैं!" इससे अधिक कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी – यूलिया का चेहरा विजयोल्लास और आत्म-सन्तोष से चमक उठा। किन्तु उसने बोरीस से वह सब कहलवा लिया जो ऐसे मौक़ों पर कहा जाता है यानी यह कि वह उसे प्यार करता है और उसने कभी किसी औरत को उससे ज़्यादा प्यार नहीं किया। वह जानती थी कि पेंज़ा की जागीरों और नीज्नी नोवगोरोद के जंगलों के लिये वह इसकी मांग कर सकती है और उसने जो कुछ चाहा, उसे वह मिल गया।

भावी पति-पत्नी अन्धकार और उदासी की छाया डालनेवाले वृक्षों को अब पूरी तरह से भूल-भालकर पीटर्सबर्ग में एक शानदार घर की व्यवस्था करने की योजनायें बनाने लगे, लोगों से मिलने-जुलने को आने-जाने लगे तथा बहुत ही ठाठदार शादी की तैयारियों में जुट गये।

६

जनवरी के अन्त में काउंट इल्या अन्द्रेयेविच रोस्तोव नताशा और सोन्या को अपने साथ लेकर मास्को आ गये। काउंटेस अभी भी अस्वस्थ थीं, यात्रा करने के लायक़ नहीं थीं और उनके स्वस्थ होने तक इन्तज़ार करना मुमकिन नहीं था – प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की किसी भी दिन मास्को आ सकता था। इसके अलावा दहेज की चीज़ें ख़रीदना, मास्को के निकटवाली जागीर को बेचना तथा बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की की मास्को में उपस्थिति से लाभ उठाना और उनकी भावी पुत्र-वधू को उनके सामने पेश करना चाहिये था। मास्को में रोस्तोवों का घर गर्माया नहीं गया था, इसके अलावा ये लोग थोड़े ही समय के लिये यहां आये थे, काउंटेस भी साथ में नहीं थीं, इसलिये काउंट ने मास्को में मरीया द्मीत्रियेव्ना अख़्रोसिमोवा के यहां ठहरने का निर्णय किया जो बहुत अरसे से काउंट से अपना आतिथ्य ग्रहण करने का अनुरोध कर रही थी।

एक रात को काउंट रोस्तोव की चार स्लेज घोड़ा-गाड़ियां स्ताराया कोन्यूशेन्नाया सड़क पर मरीया द्मीत्रियेव्ना के घर के अहाते में दाखिल हुईं। मरीया द्मीत्रियेव्ना अकेली ही रहती थी। वह अपनी बेटी की शादी कर चुकी थी और उसके सभी बेटे मास्को से बाहर नौकरी करते थे।

मरीया द्मीत्रियेव्ना अब भी पहले की तरह ख़ूब तनी रहती थी, उसी तरह सबके सामने अपना दो टूक, ऊंची आवाज़ में तथा दृढ़ता से मत प्रकट करती थी और अपने पूरे तन-मन से सभी तरह की मानवीय दुर्बलताओं, मनोविकारों और भटकावों के लिये, जिनके अस्तित्व को वह मानने को ही तैयार नहीं थी, मानो सबकी भर्त्सना करती थी। गर्म अस्तरवाली खुली-सी जाकेट पहनकर वह घर के काम-काज की देख-भाल करती, धार्मिक पर्वों के अवसरों पर गिरजे की प्रार्थना में भाग लेने जाती और वहां से जेलों तथा क़ैदख़ानों में पहुंचती जहां उसे कुछ ख़ास काम होता था जिसकी वह कभी किसी से चर्चा नहीं करती थी। सामान्यतः वह हर सुबह को तैयार होने के बाद अपने यहां आनेवाले सभी सामाजिक श्रेणियों के आवेदकों से भेंट तथा यथा-सम्भव उनकी सहायता करती। इसके बाद दिन का खाना खाती। खाने

की मेज़ पर पौष्टिक तथा ज़ायक़ेदार व्यंजन तथा तीन-चार मेहमान होते। दिन के भोजन के बाद वह ताश के बोस्टन खेल की एक बाज़ी खेलती, रात को किसी से अख़बार और किताबें पढ़वाकर सुनती और ख़ुद कुछ बुनती रहती। अपनी इस दिनचर्या में वह तभी कोई परिवर्तन करती, जब किसी के यहां मेहमान जाती और अगर मेहमान जाती तो सिर्फ़ शहर के सबसे महत्त्वपूर्ण लोगों के यहां ही।

रोस्तोव-परिवारवालों के यहां पहुंचने और उनके नौकरों-चाकरों के साथ प्रवेश-कक्ष में दाख़िल होने के समय तक, जिसके दरवाज़े की चूल उनके भीतर आने पर चरमरा उठी थी, मरीया द्मीत्रियेव्ना बिस्तर पर नहीं गयी थी। वह सिर पीछे की ओर किये हुए हॉल के दरवाज़े के पास खड़ी थी, उसका चश्मा नाक पर नीचे खिसक आया था और वह कठोर तथा झल्लायी-सी दृष्टि से आगन्तुकों की ओर देख रही थी। अगर वह इसी वक़्त अपने नौकरों को बहुत ध्यान से ये हिदायतें न देती होती कि मेहमानों को कहां ठहराया जाये और उनकी चीज़ें कहां रखी जायें, तो ऐसा सोचा जा सकता था कि वह मेहमानों के आने से बहुत नाख़ुश है और अभी उन्हें बाहर निकाल देगी।

"ये काउंट के सूटकेस हैं? इन्हें इधर ले आओ," उसने सूटकेसों की तरफ़ इशारा करते और किसी का अभिवादन किये बिना नौकर को आदेश दिया। "ये सूटकेस लड़कियों के हैं, इन्हें इधर, बायीं ओर रख दो। तुम यहां खड़ी-खड़ी क्या मुंह ताक रही हो!" वह नौकरानियों पर बरस पड़ी। "जाकर समोवार गर्म करो! तो तुम्हारा बदन कुछ भर गया, पहले से अधिक सुन्दर हो गयी," वह ठंड के कारण लाल हुए गालोंवाली नताशा का हुड पकड़कर उसे अपने साथ सटाते हुए कह उठी। "छिः, बर्फ़ की तरह ठण्डी हो!" – "जल्दी से जाकर कपड़े बदल लो," उसने ऊंची आवाज़ में काउंट से कहा जो उसका हाथ चूमने के लिये उसके क़रीब आना चाहते थे। "तुम तो ज़रूर ठिठुर गये होगे। चाय के साथ रम भी लायी जाये! प्यारी सोन्या, bonjour,"* उसने सोन्या से कहा और फ़्रांसीसी के इस अभिवादन द्वारा सोन्या के प्रति ज़रा तिरस्कार, मगर साथ ही स्नेह के अपने रवैये को अभिव्यक्ति दी।

---

* नमस्ते। (फ़्रांसीसी)

काउंट रोस्तोव, नताशा और सोन्या जब सफ़र के कपड़ों की जगह दूसरे कपड़े पहनकर तथा कुछ बन-संवर कर चाय पीने के लिये आये तो मरीया द्मीत्रियेव्ना ने सभी को बारी-बारी से चूमा।

"मुझे तुम लोगों के आने और मेरे यहां ठहरने से दिली ख़ुशी हो रही है," उसने कहा। "वैसे तो कुछ पहले ही आ जाना चाहिये था," वह अर्थपूर्ण दृष्टि से नताशा की ओर देखते हुए बोली... "बुज़ुर्ग बोल्कोन्स्की मास्को में हैं और उनका बेटा भी किसी दिन आ सकता है। बुज़ुर्ग से जान-पहचान करनी चाहिये। ख़ैर, हम इसकी बाद में चर्चा करेंगे," उसने सोन्या की तरफ़ ऐसी नज़र से देखते हुए कहा जो यह ज़ाहिर कर रही थी कि वह उसकी उपस्थिति में इस मामले का ज़िक्र नहीं करना चाहती। "अब यह बताओ," उसने काउंट को सम्बोधित किया, "तुम कल क्या कुछ करने की सोच रहे हो? किस-किसको बुलवा भेजोगे? शिनशिन को?" उसने गिनती करते हुए एक उंगली मोड़ी। "रोनी सूरत आन्ना मिख़ाइलोव्ना को?" उसने दूसरी उंगली मोड़ी। "वह बेटे के साथ यहां है। बेटा तो शादी करने जा रहा है। शायद बेज़ूख़ोव को? वह भी पत्नी के साथ यहां है। वह तो बीवी से भाग आया था, मगर बीवी सरपट घोड़े दौड़ाती हुई मास्को आ गयी। बुधवार को वह मेरे यहां खाने पर आया था। और इन्हें," उसने लड़कियों की तरफ़ इशारा किया, "कल मैं इन्हें पहले तो ईवेर्स्की गिरजे में और उसके बाद ओबेर-शेल्मा* के यहां ले जाऊंगी। शायद सारे नये कपड़े ही बनवायेंगे? मेरी इस पोशाक की तरफ़ ध्यान नहीं दो – आजकल तो बहुत बड़ी-बड़ी आस्तीनों का फ़ैशन है। कुछ ही दिन पहले जवान प्रिंसेस इरीना वसीलियेव्ना मेरे यहां आयी थी – उसे देखकर डर लगता था मानो बांहों पर पीपे पहन रखे हों। आजकल तो हर दिन ही नये फ़ैशन निकलते रहते हैं। ख़ुद तुम्हें क्या-क्या काम करने हैं?" उसने कड़ाई से काउंट से पूछा।

"बहुत-से काम करने हैं," काउंट ने जवाब दिया। "कपड़े-लत्ते ख़रीदने हैं और साथ ही मास्को के बाहरवाली जागीर तथा मास्को के मकान के ख़रीददार से बातचीत करनी है। अगर आपकी मेहरबानी

---

* १९वीं शताब्दी के आरम्भ में मास्को में फ़ैशनदार पोशाकों की दुकान और दर्ज़ीख़ाने के 'धूर्त-मक्कार' उपनामवाली स्वामिनी से अभिप्राय है। – स०

होगी तो मैं एक दिन के लिये अपनी जागीर पर हो आऊंगा और अपनी इन छोकरियों को आपके पास छोड़ दूंगा।"

"ठीक है, ठीक है, यहां इनका बाल भी बांका नहीं होगा। ये तो संरक्षण-परिषद में होने की तरह सुरक्षित रहेंगी। जहां-जहां ज़रूरी होगा, मैं इन्हें वहां-वहां ले जाऊंगी, डांट-डपट दूंगी और प्यार भी करूंगी," मरीया द्मीत्रियेव्ना ने अपने बड़े हाथ से अपनी लाड़ली और धर्मपुत्री नताशा का गाल थपथपाते हुए जवाब दिया।

अगले दिन मरीया द्मीत्रियेव्ना नताशा और सोन्या को ईवेर्स्की गिरजे में और फिर मदाम ओबेर-शेल्मा की दुकान पर ले गयी। मदाम ओबेर-शेल्मा मरीया द्मीत्रियेव्ना से इतनी अधिक डरती थी कि उससे जल्दी से जल्दी पिंड छुड़ाने के लिये घाटे पर भी चीज़ें बेच देती थी। मरीया द्मीत्रियेव्ना ने लगभग पूरे दहेज का यहीं आर्डर दे दिया। घर लौटने पर उसने नताशा के अलावा सभी को अपने कमरे से बाहर भेज दिया और अपनी चहेती को अपनी आरामकुर्सी के पास बुलाया।

"तो अब हम बातें कर सकती हैं। वर चुनने के लिये बधाई देती हूं। भले आदमी को फांसा है! मैं तुम्हारे लिये ख़ुश हूं। मैं उसे तब से जानती हूं, जब वह इत्ता-सा था।" (उसने अपना हाथ फ़र्श से थोड़ा ऊपर उठाया)। नताशा के चेहरे पर ख़ुशी की लाली दौड़ गयी। "मुझे वह और पूरा बोल्कोन्स्की परिवार पसन्द है। अब मेरी बात सुनो। तुम्हें तो यह मालूम ही है कि बुज़ुर्ग प्रिंस यह नहीं चाहते कि बेटा शादी करे। वह ज़रा टेढ़े मिज़ाज के आदमी हैं। ज़ाहिर है कि प्रिंस अन्द्रेई कोई बच्चा नहीं है और बाप के बिना भी उसका काम चल सकता है। लेकिन पिता की इच्छा के विरुद्ध तुम्हारा उस परिवार में प्रवेश करना अच्छा नहीं होगा। शान्ति और प्यार-मुहब्बत से ऐसा करना चाहिये। तुम समझदार हो, यह जानती हो कि ऐसी हालत में क्या करना चाहिये। तुम प्यार और अक़्लमन्दी से काम लो। तब सब कुछ ठीक हो जायेगा।"

नताशा चुप रही, किन्तु झेंप के कारण नहीं, जैसा कि मरीया द्मीत्रियेव्ना समझ रही थी, बल्कि वास्तव में तो इसलिये कि उसे प्रिंस अन्द्रेई के साथ अपने प्यार के मामले में किसी का भी दख़ल देना पसन्द नहीं था। उस मामले में, जिसे वह सभी मानवीय मामलों से इतना भिन्न और ख़ास मानती थी कि उसकी धारणा के अनुसार कोई

भी उसे समझ नहीं सकता था। वह प्रिंस अन्द्रेई को प्यार करती थी और उसे केवल उसी से मतलब था। प्रिंस अन्द्रेई उसे प्यार करता था और कुछ दिनों में वह यहां आयेगा और उसे अपने साथ ले जायेगा। इससे अधिक उसे और कुछ नहीं चाहिये था।

"बात यह है कि मैं उसे बहुत अरसे से जानती हूं और तुम्हारी ननद मरीया भी मुझे बहुत अच्छी लगती है। ननदें आम तौर पर जली-कटी होती हैं, लेकिन यह तो किसी जीव-जन्तु को दुख देने की नही सोच सकती। उसने मुझसे अनुरोध किया है कि मैं तुम दोनों का हेल-मेल करा दूं। तुम अपने पापा के साथ कल उसके यहां जाओगी, उसके साथ बहुत प्यार से पेश आना – तुम उससे छोटी हो। जब वह तुम्हारा प्रियतम आयेगा तो यह पायेगा कि तुम उसकी बहन और पिता से परिचित हो और वे तुम्हें चाहते हैं। ठीक है न? यही सबसे अच्छा होगा न?"

"हां, यही सबसे अच्छा होगा," नताशा ने मन मारकर कहा।

## ७

मरीया द्मीत्रियेव्ना की सलाह के मुताबिक़ काउंट इल्या अन्द्रेयेविच और नताशा बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की के यहां गये। काउंट अनिच्छा से इसके लिये तैयार हुए, उन्हें अपने दिल में दहशत महसूस हो रही थी। बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की के साथ सेना में भर्ती के वक़्त अपनी पिछली मुलाक़ात को वह भूले नहीं थे, जब भोजन के लिये अपने निमन्त्रण के जवाब में सैनिकों की पर्याप्त भरती न करने के कारण उन्हें करारी डांट सुनने को मिली थी। दूसरी ओर नताशा, जिसने अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहन ली थी, बहुत ही ख़ुश थी। "ऐसा हो ही नहीं सकता कि वे मुझे प्यार न करने लगें," वह सोच रही थी, "मुझे तो हमेशा सभी ने प्यार किया है। मैं तो उनके लिये वह सभी कुछ करने को तैयार हूं जो वे चाहेंगे। बुज़ुर्ग पर अपना स्नेह लुटाने को तैयार हूं, क्योंकि वह उसके पिता हैं, प्रिंसेस के प्रति स्नेहमयी होने को तत्पर हूं, क्योंकि वह बहन है। फिर क्या कारण हो सकता है कि वे मुझे न चाहें!"

पिता-पुत्री बग्घी में बैठकर व्ज़द्वीजेन्की सड़क पर स्थित बोल्कोन्स्की-परिवार के पुराने और उदास-से मकान पर पहुंचे और ड्योढ़ी में दाख़िल हुए।

"हे भगवान, दया दीजिये," काउंट ने कुछ मज़ाक़ और कुछ संजीदगी से कहा। किन्तु नताशा से यह बात छिपी न रह सकी कि प्रवेश-कक्ष में जाते हुए उसके पिता ने उतावली की और धीरे-धीरे तथा सहमे-सहमे-से अन्दाज़ में यह पूछा कि प्रिंस और प्रिंसेस घर पर हैं या नहीं। इनके आने की सूचना देने के बाद प्रिंस के नौकरों में कुछ घबराहट-सी फैल गयी। पिता-पुत्री के नामों की घोषणा करने के लिये भागकर जानेवाले नौकर को एक दूसरे नौकर ने ड्राइंगरूम में रोक लिया और वे कुछ खुसर-फुसर करते रहे। नौकरानी भागती हुई ड्राइंगरूम में आयी और उसने भी प्रिंसेस मरीया का उल्लेख करते हुए जल्दी-जल्दी कुछ कहा। आख़िर एक बूढ़ा और चिड़चिड़ा-सा नज़र आनेवाला नौकर काउंट रोस्तोव और नताशा के पास आया और बोला कि प्रिंस तो मेहमानों से नहीं मिल सकते, मगर प्रिंसेस को आपसे मिलकर ख़ुशी होगी। अतिथियों के स्वागत के लिये कुमारी बुर्येन ही सबसे पहले बाहर आयी, उसने बहुत तपाक से पिता-पुत्री का स्वागत किया और उन्हें प्रिंसेस के पास ले गयी। विह्वल तथा घबरायी-सी प्रिंसेस, जिसके चेहरे पर लाल धब्बे उभर आये थे, तेज़ी से बोझल क़दम बढ़ाती तथा शान्त और प्रसन्न होने का व्यर्थ प्रयास करती हुई मेहमानों के स्वागत को आयी। नताशा तो उसे पहली ही नज़र में अच्छी नहीं लगी। प्रिंसेस को वह बहुत ही ज़्यादा बनी-ठनी, चंचल-चपल और घमण्डी प्रतीत हुई। प्रिंसेस मरीया यह नहीं जानती थी कि अपनी भावी भाभी से मिलने के पहले ही उसकी सुन्दरता, जवानी और सौभाग्य तथा अपने भाई के प्रति प्यार के कारण ईर्ष्या अनुभव करते हुए उसके मन में अनचाहे ही नताशा के विरुद्ध गांठ पड़ गयी थी। नताशा के प्रति इस अदम्य विद्वेष भावना के अतिरिक्त प्रिंसेस मरीया इस वक़्त इस कारण भी उत्तेजित थी कि काउंट रोस्तोव और नताशा के आने की सूचना मिलने पर बुज़ुर्ग प्रिंस चिल्ला उठे थे कि उन्हें इनकी कोई जरूरत नहीं है, कि अगर प्रिंसेस चाहती है तो इनसे मिल सकती है, कि इन्हें उनके पास किसी हालत में भी न भेजा जाये। प्रिंसेस मरीया ने इनसे मिलने का निर्णय कर लिया, किन्तु यह सोचकर लगातार

घबरा रही थी कि बुज़ुर्ग प्रिंस कोई उलटी-सीधी हरकत न कर दें, क्योंकि काउंट रोस्तोव और नताशा के आने से वह बहुत झल्ला उठे थे।

"तो प्यारी प्रिंसेस, मैं अपनी इस बुलबुल को आपके पास ले आया हूं," काउंट ने पांव रगड़ते और सिर झुकाते तथा बेचैनी से इधर-उधर देखते हुए कहा मानो डर रहे हों कि बुज़ुर्ग प्रिंस तो यहां नहीं आ जायेंगे। "कितना खुश हूं मैं कि आप दोनों का परिचय हो गया... बहुत अफ़सोस है, बहुत अफ़सोस है कि बुज़ुर्ग प्रिंस की तबीयत अभी भी अच्छी नहीं," और इसी तरह के कुछ अन्य आम वाक्य कहने के बाद वह उठकर खड़े हो गये। "प्रिंसेस, अगर आप इजाज़त दें तो मैं कोई पन्द्रह मिनट के लिये अपनी बिटिया को आपके पास छोड़कर यहां से दो क़दम की दूरी पर कुत्ता चौक* में आन्ना सेम्योनोव्ना से मिल आता हूं और फिर नताशा को ले जाऊंगा।"

काउंट रोस्तोव ने व्यवहारकुशलता की यह चालाकी इसलिये सोची कि भावी ननद-भाभी को एक-दूसरी से अच्छी तरह परिचित होने का अवसर दे सकें (जैसा कि उन्होंने अपनी बेटी को बाद में बतलाया), और इस कारण भी कि बुज़ुर्ग प्रिंस से भेंट होने की सम्भावना से बच सकें, क्योंकि वह उनसे डरते थे। उन्होंने बेटी को यह नहीं बताया, किन्तु नताशा अपने पिता के भय और घबराहट को समझ गयी तथा उसने अपने को अपमानित अनुभव किया। पिता के कारण वह शर्म से लाल हो गयी, इस वजह से और भी खीझ उठी कि शर्म से लाल हो गयी थी और उसने ऐसी साहसपूर्ण तथा चुनौती देती दृष्टि से प्रिंसेस को देखा जो मानो यह कह रही थी कि वह किसी से भी नहीं डरती। प्रिंसेस ने काउंट से कहा कि उसे बहुत खुशी हो रही है और यह अनुरोध किया कि आन्ना सेम्योनोव्ना के यहां वह अधिक देर लगायें। काउंट चले गये।

इस चीज़ के बावजूद कि प्रिंसेस मरीया ने, जो नताशा के साथ एकान्त में बातचीत करना चाहती थी, बार-बार कुमारी बूर्येन की ओर बेचैनी से देखा, वह कमरे से बाहर नहीं गयी और मास्को के मनोरंजनों तथा थियेटरों की चर्चा करती रही। प्रवेश-कक्ष में नौकरों के बीच हुई

---

* पुराने मास्को के केन्द्र में एक चौक। —सं०

परेशानी, अपने पिता की घबराहट और प्रिंसेस के बनावटी अन्दाज़ के कारण, जो, जैसा कि नताशा को लग रहा था, उससे मिलकर बड़ी मेहरबानी कर रही थी, उसने अपने को अपमानित महसूस किया था। इसलिये उसे हर चीज़ ही बुरी लग रही थी। प्रिंसेस मरीया उसे अच्छी नहीं लगी। उसे वह कुरूप, ढोंगी और शुष्क प्रतीत हुई। नताशा अचानक अपने में ही सिकुड़ गयी और उसने अनजाने ही लापरवाही का ऐसा अन्दाज़ अपना लिया जिससे प्रिंसेस मरीया उसके लिये और भी अधिक दूर हो गयी। पांच मिनट तक किसी तरह घसीटी जानेवाली बोझल और बनावटी बातचीत के बाद स्लीपर पहने हुए किसी व्यक्ति के तेज़ी से पास आते क़दमों की आवाज़ सुनायी दी। प्रिंसेस मरीया के चेहरे पर भय व्यक्त हो रहा था, कमरे का दरवाज़ा खुला और रात के वक़्त की सफ़ेद टोपी और ड्रेसिंग गाउन पहने हुए बुज़ुर्ग प्रिंस कमरे में आये।

"ओह, श्रीमती जी," वह कह उठे, "श्रीमती जी, काउंटेस... अगर मैं भूल नहीं करता तो आप काउंटेस रोस्तोवा हैं... क्षमा कीजिये, क्षमा कीजिये... मुझे मालूम नहीं था, देवी जी। भगवान साक्षी हैं, मुझे मालूम नहीं था कि आपने हमारे यहां पधारने की कृपा की है। मैं तो इस तरह के कपड़े पहने हुए बेटी के पास चला आया था। क्षमा चाहता हूं... भगवान साक्षी हैं, मुझे मालूम नहीं था," उन्होंने भगवान शब्द पर ज़ोर देते हुए इतने बनावटी और अप्रिय ढंग से यह दोहराया कि प्रिंसेस मरीया आंखें झुकाये हुए खड़ी रही और वह न तो पिता और न नताशा की तरफ़ देखने की हिम्मत कर पा रही थी। खड़ी होने और फिर बैठ जानेवाली नताशा की समझ में भी नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। केवल कुमारी बुर्येन ही मधुरता से मुस्कराती रही।

"क्षमा चाहता हूं, क्षमा चाहता हूं! भगवान साक्षी हैं, मुझे मालूम नहीं था!" बुज़ुर्ग बुदबुदाये और नताशा को बहुत ग़ौर से सिर से पांव तक देखकर कमरे से बाहर चले गये। इस दृश्य के बाद कुमारी बुर्येन ही सबसे पहले सम्भली और बुज़ुर्ग प्रिंस के बुरे स्वास्थ्य की चर्चा करने लगी। नताशा और प्रिंसेस मरीया एक-दूसरी को चुपचाप देखती रहीं और जितनी अधिक देर तक वे एक-दूसरी से वह कहे बिना, जो उन्हें कहना चाहिये था, ख़ामोश रहीं, उतने ही अधिक विद्वेष से वे एक-दूसरी के बारे में सोचती रहीं।

काउंट के लौटने पर नताशा ने अशिष्टता की हद तक अपनी

प्रसन्नता प्रकट की और जाने की उतावली दिखायी। इस क्षण वह काफ़ी उम्र की इस शुष्क-सी प्रिंसेस से लगभग नफ़रत कर रही थी जिसने उसे ऐसी अटपटी स्थिति में डाल दिया था और जिसने प्रिंस अन्द्रेई के बारे में कुछ भी कहे बिना उसके साथ आध घण्टा बिता दिया था। "आख़िर मैं तो फ़्रांसीसी लड़की के सामने उसके बारे में बातचीत शुरू नहीं कर सकती थी," नताशा सोच रही थी। इसी बीच प्रिंसेस मरीया भी इसी कारण व्यथित हो रही थी। वह जानती थी कि उसे नताशा से इसकी चर्चा करनी चाहिये थी, मगर वह ऐसा नहीं कर पा रही थी, कि कुमारी बुर्येन बाधा बनी हुई थी और इसलिये भी कि उसके लिये इस विवाह की बात शुरू करना बहुत कठिन था, यद्यपि वह इसका कारण नहीं जानती थी। काउंट जब कमरे से बाहर जा रहे थे तो प्रिंसेस मरीया तेज़ी से नताशा के पास आयी, उसने नताशा का हाथ अपने हाथ में ले लिया और गहरी सांस लेकर कहा: "ज़रा रुकिये, मुझे आपसे..." नताशा ने मज़ाक़ उड़ाती-सी दृष्टि से उसकी तरफ़ देखा, यद्यपि स्वयं नहीं जानती थी कि उसने ऐसा क्यों किया।

"प्यारी नताशा," प्रिंसेस मरीया ने कहा, "जानती हैं, मैं ख़ुश हूं कि मेरे भाई को अपनी ख़ुशी मिल गयी है..." वह यह अनुभव करते हुए कि सच नहीं कह रही है, रुक गयी। नताशा ने इस विराम की तरफ़ ध्यान दिया और इसके कारण का अनुमान लगा लिया।

"प्रिंसेस, मेरे ख़्याल में तो अब इस बात की चर्चा करना ठीक नहीं होगा," नताशा ने बाहरी तौर पर अपनी गरिमा बनाये रखते हुए रुखाई से कहा, गो वह यह महसूस कर रही थी कि आंसुओं से उसका गला रुंधा जा रहा है।

"मैंने क्या कह दिया, यह क्या किया मैंने?" कमरे से बाहर आते ही उसने सोचा।

इस दिन बहुत देर तक नताशा दोपहर के खाने की मेज़ पर नही आयी। वह अपने कमरे में बैठी नाक सिनकती तथा सिसकियां भरती हुई बच्चे की तरह रोती रही। उसके पास खड़ी हुई सोन्या उसके बालों को चूम रही थी।

"नताशा, तुम किसलिये रो रही हो?" वह कह रही थी। "तुम्हें उनसे क्या लेना-देना है? सब ठीक हो जायेगा, नताशा।"

"काश, तुम जानतीं कि यह कितना अपमानजनक था... जैसे कि मैं..."

"तुम इसकी चर्चा नहीं करो, नताशा, तुम्हारा तो कोई क़ुसूर नहीं है, तुम किसलिये परेशान हो रही हो? लो, मुझे चूमो," सोन्या ने कहा।

नताशा ने सिर ऊपर उठाया, अपनी सहेली के होंठों को चूमा और अपना आंसुओं से भीगा हुआ मुंह उसके मुंह के साथ सटा दिया।

"मैं कुछ नहीं कह सकती, कुछ नहीं जानती। कोई भी क़ुसूरवार नहीं," नताशा ने कहा, "मेरा ही क़ुसूर है। लेकिन इस सब से दिल को बुरी तरह ठेस तो लगती ही है। ओह, वह आता क्यों नहीं!.."

देर तक रोने के कारण लाल आंखें लिये हुए वह खाने की मेज़ पर आयी। मरीया द्मीत्रियेव्ना, जो यह जानती थी कि बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की ने काउंट और नताशा का कैसा स्वागत किया था, यह ज़ाहिर करते हुए कि नताशा के व्यथित चेहरे की तरफ़ उसका ध्यान ही नहीं गया, काउंट और दूसरे मेहमानों के साथ दृढ़ता से तथा ऊंची आवाज़ में ख़ूब हंसी-मज़ाक़ करती रही।

## ८

इस शाम को नताशा और सोन्या के साथ काउंट रोस्तोव ऑपेरा देखने गये जिसके लिये मरीया द्मीत्रियेव्ना ने टिकट हासिल किये थे।

नताशा ऑपेरा देखने को जाना नहीं चाहती थी, मगर मरीया द्मीत्रियेव्ना के इतने अधिक स्नेह की अवहेलना नहीं की जा सकती थी जिसने नताशा के लिये ही ख़ास तौर पर ये टिकट मंगवाये थे। जब वह तैयार होकर पिता का इन्तज़ार करने के लिये ड्राइंगरूम में आ गयी और उसने अपने को बड़े दर्पण में निहारा तथा यह देखा कि वह सुन्दर, बहुत सुन्दर है तो उसका मन और भी ज़्यादा उदास हो गया। मगर यह मधुर और प्यारी-प्यारी उदासी थी।

"हे भगवान, अगर वह इस वक़्त यहां होता तो मैंने पहले की तरह वह मूर्खतापूर्ण झेंप महसूस करते हुए नहीं, बल्कि एक नये ढंग

से उसके गले में अपनी बांहें डाल दी होतीं, उसके साथ चिपक जाती, मैंने उसे उन खोजती और जिज्ञासापूर्ण आंखों से अपने को देखने को विवश कर दिया होता जिनसे वह अक्सर मुझे देखा करता था और फिर उसे उसी तरह हंसने को मजबूर कर दिया होता जैसे वह तब हंसा करता था। और उसकी वे आंखें – कैसे मैं साफ़-साफ़ देख रही हूं उन आंखों को!" नताशा सोच रही थी। "मुझे क्या लेना-देना है उसके पिता से, उसकी बहन से – मैं तो सिर्फ़ उसी को प्यार करती हूं, उसी को, उसी को, उस चेहरे और उन आंखों, उस मुस्कान को जो एक मर्द की मुस्कान के साथ-साथ एक बच्चे जैसी मुस्कान भी है... नहीं, यही बेहतर होगा कि मैं उसके बारे में न सोचूं, न सोचूं, भूल जाऊं, इस वक़्त के लिये बिल्कुल भूल जाऊं। मुझसे यह प्रतीक्षा सहन नहीं होगी और मैं अभी रो पड़ूंगी," और वह अपने आंसुओं को वश में करती हुई दर्पण के सामने से हट गयी। "यह सोन्या किस तरह ऐसे चुपचाप और शान्ति से निकोलाई को प्यार कर सकती है, इतने धीरज से और इतने लम्बे समय तक इन्तज़ार कर सकती है!" उसने पूरी तरह तैयार तथा हाथ में पंखा लिये कमरे में आनेवाली सोन्या को देखते हुए सोचा। "नहीं, वह मुझसे बिल्कुल भिन्न है। मैं ऐसा नही कर सकती!"

नताशा ने इस क्षण अपने अन्तर में प्यार और कोमल भावनाओं की ऐसी ज्वार-सी अनुभव की कि उसके लिये प्यार करना और यह जानना ही काफ़ी नहीं था कि उसे कोई प्यार करता है – अब, इस क्षण तो वह यह चाहती थी कि अपने प्रियतम को गले लगाये, उससे बातें करे, उससे प्यार के वे शब्द सुने जिनसे उसका हृदय भरा हुआ था। जब तक वह पिता की बग़ल में बग्घी में बैठी तथा अपने विचारों में खोयी-खोयी-सी ठण्ड से जमी खिड़की में प्रतिबिम्बित होती सड़क की बत्तियों को देखती रही, अपने को और भी ज़्यादा उदास तथा प्रेम में डूबी अनुभव करने लगी और यह भूल गयी कि वह किसके साथ तथा कहां जा रही है। इनकी बग्घी भी दूसरी बग्घियों की क़तार में शामिल हो गयी और बर्फ़ पर अपने पहियों से धीमी-धीमी चीं-चर्र की आवाज़ पैदा करती हुई थियेटर के सामने पहुंच गयी। अपने स्कर्टों को ऊपर उठाये हुए नताशा और सोन्या झटपट बग्घी से बाहर आ गयीं। नौकरों का सहारा लेकर काउंट नीचे उतरे

और भीतर जा रहे पुरुषों-महिलाओं तथा कार्यक्रम बेचनेवालों की भीड़ के बीच से दालान को लांघते हुए अपने बॉक्स की तरफ़ बढ़ गये। बन्द दरवाज़ों के पीछे से संगीत सुनायी दे रहा था।

"नताशा, तुम्हारे बाल!" सोन्या फ़्रांसीसी में फ़ुसफ़ुसायी। थियेटर के एक कर्मचारी ने बड़ी शिष्टता से झटपट महिलाओं से आगे बढ़कर इनके बॉक्स का दरवाज़ा खोल दिया। संगीत अधिक ऊंचा सुनायी देने लगा, रोशनी से चमचमाते बॉक्सों में महिलाओं के नंगे कंधों और बांहों तथा नीचेवाली, शोर से गूंजती सामने की क़तारों में चमकती-दमकती वर्दियों की झलक मिलने लगी। बग़ल के बॉक्स में दाखिल होती महिला ने नताशा को नारी-सुलभ ईर्ष्या की दृष्टि से देखा। परदा अभी नहीं उठा था और प्रस्तावना-संगीत बज रहा था। अपनी पोशाक को ठीक करके सोन्या के साथ नताशा बॉक्स में गयी और बैठकर सामनेवाले चमचमाते बॉक्सों को देखने लगी। बहुत अरसे से अनुभव न होनेवाली यह अनुभूति कि सैकड़ों आंखें उसकी नंगी बांहों तथा गर्दन पर जमी हुई हैं, अचानक मधुरता और कटुता के साथ उसके मन पर हावी हो गयी और इससे सम्बन्धित ढेरों स्मृतियां, इच्छायें तथा भावनायें सजीव हो उठीं।

बहुत सुन्दर, बड़ी प्यारी लड़कियों – नताशा तथा सोन्या – और काउंट रोस्तोव ने, जो बहुत समय से मास्को में नज़र नहीं आये थे, सभी का ध्यान आकृष्ट किया। इसके अलावा सभी को इस बात का धुंधला-सा आभास भी था कि नताशा की प्रिंस अन्द्रेई के साथ सगाई हो चुकी है, कि तब से रोस्तोव-परिवार गांव में रह रहा है और सारे रूस के एक सर्वश्रेष्ठ वर की भावी पत्नी को बड़ी जिज्ञासा से देख रहे थे।

जैसाकि सभी नताशा से कहते थे, गांव में रहते हुए उसके रंग-रूप में निखार आ गया था और अपनी मानसिक उत्तेजना की स्थिति के कारण इस शाम को वह विशेष रूप से सुन्दर लग रही थी। जीवन के उत्साह और अपनी सुन्दरता तथा साथ ही इर्द-गिर्द की दुनिया के प्रति अपनी उदासीनता से वह सभी को चकित करती थी। उसकी काली आंखें किसी को भी न ढूंढ़ती हुई लोगों को देख रही थीं, उसकी कोहनी तक उघाड़ी, पतली-सी बांह बॉक्स के मख़मली सिरे पर टिकी थी और वह सम्भवतः अनजाने ही संगीत की लय के साथ अपनी मुट्ठी को खोलती

तथा बन्द करती हुई कार्यक्रम को मरोड़ती जा रही थी।

"देखो, वह अलेनीना है," सोन्या ने कहा, "लगता है उसकी मां भी साथ में है।"

"हे भगवान! मिखाईल किरीलिच तो और भी मोटा हो गया!" बूढ़े काउंट ने कहा।

"हमारी आन्ना मिखाइलोव्ना को तो देखिये। वह सिर पर क्या पहने है!"

"करागिना मां-बेटी भी यहां हैं और बोरीस भी उनके साथ है। अब तो साफ़ नज़र आ रहा है कि वे भावी वर-वधू हैं।"

"द्रुबेत्स्कोई ने विवाह-प्रस्ताव कर दिया है! हां, हां, आज ही मालूम हुआ है मुझे!" शिनशिन ने रोस्तोवों के बॉक्स में दाखिल होते हुए कहा।

काउंट जिधर देख रहे थे, नताशा ने भी उसी दिशा में देखा तो उसे यूलिया नज़र आयी जो अपनी मोटी, लाल गर्दन के गिर्द (नताशा को मालूम था कि उसपर पाउडर लगा है) मोतियों का हार डाले अपनी मां के पास खुश-सी बैठी थी। इनके पीछे मुस्कराते, यूलिया की ओर झुके बोरीस का सुन्दर तथा ढंग से संवरे बालोंवाला सिर दिखायी दे रहा था। वह भौंहें चढ़ाये रोस्तोवों की ओर देख रहा था और मुस्कराते हुए अपनी मंगेतर से कुछ कह रहा था।

"वे हमारी, मेरी और उसकी चर्चा कर रहे हैं!" नताशा ने सोचा। "वह शायद मेरे प्रति अपनी मंगेतर की ईर्ष्या को शान्त कर रहा है। व्यर्थ ही परेशान हो रहे हैं। काश इन्हें मालूम होता कि मुझे इन दोनों में ही कोई दिलचस्पी नहीं है।"

इनके पीछे सिर पर हरे रंग की टोपी-सी पहने, चेहरे पर भगवान की इच्छा के सम्मुख आत्मसमर्पण, किन्तु प्रसन्नता और उल्लास का भाव लिये आन्ना मिखाइलोव्ना बैठी थी। इनके बॉक्स में सगाई-सूत्र में बंधे व्यक्तियों का वह वातावरण व्याप्त था जिससे नताशा बहुत अच्छी तरह से परिचित थी और जिसे वह प्यार करती थी। उसने मुंह दूसरी ओर कर लिया और अचानक सुबह के वक़्त बुज़ुर्ग बोल्कोन्स्की के यहां जाने पर उसे जो कुछ अपमानजनक लगा था, वह सब याद हो आया।

"मुझे अपने परिवार में न लेने का उसे क्या अधिकार है? ओह, इसके बारे में न सोचना, उसके आने तक न सोचना ही ज़्यादा अच्छा

नताशा और सोन्या थियेटर में।

होगा।" उसने अपने आपसे कहा और हॉल की कुर्सियों पर बैठे परिचित और अपरिचित चेहरों को देखने लगी। पहली क़तार के मध्य में, आर्केस्ट्रा के जंगले से पीठ सटाये तथा ईरानी ढंग की पोशाक पहने दोलोख़ोव खड़ा था। उसने अपने घुंघराले बालों का गुच्छा-सा बना रखा था। यह जानते हुए कि दूसरों का ध्यान आकर्षित करता है, वह ऐसी जगह पर खड़ा था जहां सभी उसे देख सकें और अपने को ऐसे ही मज़े में अनुभव कर रहा था मानो अपने कमरे में खड़ा हो। मास्को के सबसे अच्छे नौजवान उसके गिर्द भीड़ लगाये थे तथा वह सम्भवतः उनका मुखिया था।

काउंट इल्या अन्द्रेयेविच ने सोन्या के इस भूतपूर्व प्रेमी की तरफ़ इशारा किया और हंसते हुए लज्जारुण होती सोन्या की कोहनी मारी।

"पहचाना उसे?" उन्होंने सोन्या से पूछा। "वह कहां से आ टपका?" उन्होंने शिनशिन को सम्बोधित किया, "सुनने में आया था कि वह तो कहीं ग़ायब हो गया है?"

"हां, ग़ायब हो गया था," शिनशिन ने जवाब दिया। "काकेशिया में रहा, वहां से भाग गया और लोगों का कहना है कि ईरान में किसी शासक शाहज़ादे का मन्त्री रहा, वहां उसने शाह के भाई की हत्या कर दी। मास्को की सारी औरतें उसकी दीवानी हैं। आख़िर तो वह 'ईरानी दोलोख़ोव' ठहरा। हमारे यहां तो आजकल दोलोख़ोव के नाम की तूती बोलती है – उसी के नाम की क़समें खायी जाती हैं, उससे मिलने के लिये लोगों को ऐसे बुलाया जाता है मानो किसी बढ़िया मछली का पकवान पेश किया जा रहा हो," शिनशिन ने कहा। "दोलोख़ोव और अनातोल कुरागिन ने तो हमारी सारी औरतों को पागल कर दिया है।"

बालों की बहुत बड़ी चोटी, बेहद नंगे, गोरे-गोरे, गुदगुदे कंधों तथा गुदगुदी गर्दनवाली ऊंचे क़द की एक अत्यधिक सुन्दर महिला ने बग़ल के बॉक्स में प्रवेश किया। वह गले में बड़े-बड़े मोतियों की दो लड़ियोंवाला हार पहने थी। उसने बैठने में काफ़ी देर लगायी और इस बीच उसकी भारी, रेशमी पोशाक सरसराती रही।

नताशा की दृष्टि अनजाने ही इस गर्दन, कन्धों, मोतियों और केशविन्यास की ओर खिंच गयी तथा वह मुग्ध होकर कंधों और मोतियों के सौन्दर्य को देखती रही। नताशा जब दूसरी बार उसकी तरफ़ देख रही थी तो महिला ने रोस्तोवों की ओर देखा, काउंट से उसकी नज़र

मिली, उसने सिर झुकाकर अभिवादन किया और मुस्करायी। यह प्येर की पत्नी काउंटेस बेजूख़ोवा थी। ऊंची सोसाइटी के सभी लोगों को जाननेवाले काउंट रोस्तोव आगे की ओर झुककर उससे बात करने लगे।

"बहुत दिन हो गये क्या आपको मास्को में आये काउंटेस?" उन्होंने पूछा। "हां, हां, आऊंगा, आऊंगा, आपका हाथ चूमता हूं। मैं तो काम-काज के सिलसिले में आया था और अपनी इन बेटियों को भी साथ लेता आया। कहते हैं कि अभिनेत्री सेम्योनोवा तो बहुत ही कमाल का अभिनय करती है," इल्या अन्द्रेयेविच कहते गये। काउंट प्येर तो हमें कभी नहीं भूलते हैं। वह भी आये हैं?"

"हां, वह कुछ देर को यहां आने का इरादा रखते हैं," एलेन ने कहा और बहुत ध्यान से नताशा को देखा।

काउंट रोस्तोव फिर से अपनी जगह पर बैठ गये।

"सुन्दर है न?" उन्होंने फुसफुसाकर बेटी से पूछा।

"एकदम अद्भुत!" नताशा ने जवाब दिया। "बरबस प्यार हो सकता है इससे!"

इसी वक़्त प्रस्तावना-संगीत के अन्तिम स्वर गूंजे और आर्केस्ट्रा-निर्देशक ने अपनी छड़ी से टक-टक की आवाज़ की। देर से आनेवाले पुरुष झटपट अपनी जगहों पर जा बैठे और परदा उठा।

जैसे ही परदा उठा, वैसे ही बॉक्सों और स्टालों में सभी ख़ामोश हो गये तथा बूढ़े और जवान, फ़ौजी वर्दियां या असैनिक पोशाकें पहने सभी पुरुषों तथा नंगे अंगों पर रत्नों-हीरों के आभूषणों की लौ देती सभी महिलाओं ने अत्यधिक जिज्ञासा से रंगमंच पर अपनी नज़रें जमा दीं। नताशा भी उधर ही देखने लगी।

## ९

रंगमंच के मध्य में समतल तख़्ते थे, अग़ल-बग़ल वृक्षों को ज़ाहिर करनेवाले रंगे हुए गत्ते थे और पीछे की ओर तख़्तों पर मोटा-सा कपड़ा फैला था। मंच के मध्य में लाल चोलियां और सफ़ेद स्कर्ट पहने लड़कियां बैठी थीं। सफ़ेद, रेशमी पोशाक पहने एक बहुत ही मोटी लड़की एक

कम ऊंची बेंच पर, जिसके पीछे हरा गत्ता चिपका हुआ था, अलग बैठी थी। ये सभी कुछ गा रही थीं। यह गाना समाप्त होने पर सफ़ेद पोशाक पहने लड़की अनुबोधक के बॉक्स के पास चली गयी और इसी वक़्त मोटी-मोटी टांगों पर कसा हुआ रेशमी पतलून पहने, टोपी में क़लगी लगाये तथा बग़ल में खंजर लटकाये एक पुरुष उसके निकट आया तथा गाने और हाथों को इधर-उधर हिलाने-डुलाने लगा।

कसा हुआ पतलून पहने पुरुष पहले तो अकेला ही गाता रहा और इसके बाद लड़की गाने लगी। इसके पश्चात ये दोनों चुप हो गये, आर्केस्ट्रा बजने लगा और पुरुष सम्भवतः ताल के आने की प्रतीक्षा करता हुआ, ताकि सफ़ेद पोशाक पहने लड़की के साथ मिलकर गाना शुरू कर सके, अपनी उंगलियों से उसके हाथ को धीरे-धीरे छूने लगा। इन दोनों ने मिलकर कुछ गाया, थियेटर में बैठे सभी लोग तालियां बजाते तथा वाह वाह करते हुए चिल्लाने लगे और मंच पर खड़ा पुरुष तथा युवती, जो प्रेमियों का अभिनय कर रहे थे, मुस्कराने और बांहों को फैलाकर सिर झुकाने लगे।

गांव के बाद, और जिस गम्भीर मनःस्थिति में नताशा इस वक़्त थी, उसे यह सब अजीब और असामान्य-सा लग रहा था। वह ऑपेरा के कथानक का अनुकरण करने में असमर्थ थी, संगीत भी नहीं सुन पा रही थी। वह तो केवल रंगे हुए गत्ते और अजीब-सी पोशाकें पहने नारियों-पुरुषों को देख रही थी जो बहुत ही तेज़ रोशनी में अजीब ढंग से चल-फिर, बोल-बतिया और गा रहे थे। नताशा जानती थी कि इस सब के माध्यम से क्या व्यक्त किया जा रहा है, किन्तु यह सभी कुछ इतना अधिक बनावटी और कृत्रिम था कि उसे कभी तो अभिनेताओ के लिये शर्म आने लगती और कभी उनपर हंसी आती। वह अपने इर्द-गिर्द बैठे दर्शकों के चेहरों पर दृष्टि डालती और उपहासजनक तथा अटपटेपन की वही भावना ढूंढ़ने की कोशिश करती जो वह स्वयं अनुभव कर रही थी। किन्तु सभी के चेहरे ऐसा ज़ाहिर कर रहे थे कि पूरी तरह उसी को देखने में लीन हैं जो रंगमंच पर हो रहा है और, नताशा को लगा, कि वे बनावटी प्रशंसा व्यक्त कर रहे हैं। "शायद ऐसा ही होना चाहिये!" नताशा ने सोचा। वह बारी-बारी से कभी तो पोमेड लगाकर संवारे गये बालोंवाले हॉल में बैठे पुरुषों तो कभी अपने अंगों को उघाड़े बॉक्सों में बैठी महिलाओं, विशेषकर बग़ल के बॉक्स में

बहुत हद तक नंगी बैठी एलेन की तरफ़ देखती जो होंठों पर शान्त और गम्भीर मुस्कान लिये सारे हॉल में फैले प्रखर प्रकाश तथा लोगों की भीड़ के कारण ज़रा-ज़रा गर्म हवा को अनुभव करते हुए रंगमंच पर नज़र जमाये थी। नताशा पर धीरे-धीरे नशे जैसी वह हालत तारी होने लगी जिसे उसने बहुत अरसे से महसूस नहीं किया था। उसे इस बात की सुध ही नही रही कि वह कौन है, कहां है और उसके सामने क्या हो रहा है। वह देख रही थी और सोच रही थी तथा अप्रत्याशित ही बड़े अजीब और बिखरे-बिखरे विचार उसके मस्तिष्क में कौंधने लगे। कभी उसके दिमाग़ में यह तरंग आती कि वह भागकर फुट-लाइटों के पास चली जाये और वह प्रेम-गीत गाये जो अभिनेत्री गा रही थी, कभी यह ख़्याल आता कि क़रीब ही बैठे एक बूढ़े के सिर को अपने पंखे से धीरे-से थपथपाये और कभी यह ख़्याल आता कि एलेन की ओर झुककर उसे गुदगुदाये।

एक ऐसे क्षण में, जब अगले प्रेम-गीत के आरम्भ होने के पहले मंच पर पूरी ख़ामोशी छा गयी थी, हॉल का उस ओर का दरवाज़ा धीरे-से चरमराया जहां रोस्तोवों का बॉक्स था और देर से आनेवाले एक पुरुष के क़दमों की आवाज़ सुनायी देने लगी। "लो, कुरागिन आ गया!" शिनशिन फुसफुसाया। काउंटेस बेज़ूख़ोवा ने मुस्कराते हुए आगन्तुक की तरफ़ देखा। नताशा ने भी काउंटेस बेज़ूख़ोवा की दृष्टि की दिशा में ही नज़र घुमायी और उसे असाधारण रूप से सुन्दर चेहरे पर आत्मविश्वास, किन्तु साथ ही शिष्टता का भाव लिये एक एडजुटेंट अपने बॉक्स की तरफ़ आता दिखायी दिया। यह अनातोल कुरागिन था जिसे उसने पीटर्सबर्ग के एक बॉल में बहुत पहले देखा था और उसकी ओर ध्यान दिया था। इस वक़्त वह एक स्कन्धिका और एक डोरीवाली एडजुटेंट की वर्दी में था। वह संयत, मगर बड़े बांकपन से चल रहा था जो, अगर वह इतना ख़ूबसूरत न होता और अगर उसके चेहरे पर ख़ुशमिज़ाजी तथा प्रसन्नता का ऐसा भाव न होता, तो हास्यास्पद लगता। इस चीज़ के बावजूद कि मंच पर कार्यक्रम चल रहा था, वह अपनी एड़ियों और तलवार को ज़रा खनखनाता बड़े इतमीनान और सधे क़दमों तथा इत्र से महकते अपने सुन्दर सिर को ताने हुए ढालू होते और क़ालीन से ढके फ़र्श पर बढ़ता आ रहा था। नताशा पर नज़र डालकर वह बहन के क़रीब गया, दस्ताना पहने हाथ उसने उसके

बॉक्स के सिरे पर टिका दिया, सिर को झुकाकर उसका अभिवादन किया और आगे की ओर झुकते तथा नताशा की ओर संकेत करते हुए कुछ पूछा।

"बहुत, बहुत ही प्यारी है!" उसने स्पष्टतः नताशा के बारे में फ़्रांसीसी में कहा। नताशा ने इन शब्दों को साफ़ तौर पर सुना नहीं, लेकिन अनातोल के होंठों के हिलने-डुलने से यह अनुमान लगा लिया कि उसने क्या कहा है। इसके बाद वह उसी दोलोख़ोव को, जिसकी युवाजन इतनी चापलूसी करते थे, दोस्ताना और लापरवाही के अन्दाज़ में कोहनियाते हुए उसके क़रीब पहली क़तार में जा बैठा। उसने प्रफ़ुल्लता से उसे आंख मारी, मुस्कराया और आर्केस्ट्रा के स्क्रीन पर पांव टिका लिया।

"ये भाई-बहन कितने मिलते-जुलते हैं!" काउंट ने कहा। "और कितने सुन्दर हैं दोनों।"

शिनशिन फुसफुसाते हुए मास्को में कुरागिन के किसी षड्यन्त्र की चर्चा करने लगा जिसे नताशा केवल इसलिये सुनने लगी कि उसने उसे "बहुत, बहुत ही प्यारी" कहा था।

ऑपेरा का पहला अंक समाप्त हुआ, हॉल में बैठे सभी लोग उठकर खड़े हो गये, आपस में घुल-मिल गये, इधर-उधर तथा बाहर जाने लगे।

बोरीस रोस्तोवों के बॉक्स में आया, बहुत ही सीधे-सादे ढंग से उसने उनकी बधाई स्वीकार की और भौंहें चढ़ाकर तथा खोयी-खोयी-सी मुस्कान के साथ नताशा और सोन्या से अपनी मंगेतर की ओर से यह अनुरोध किया कि वे उनकी शादी में ज़रूर आयें और बॉक्स से बाहर चला गया। नताशा ने खिली-खिली और चंचल मुस्कान बिखेरते हुए उससे बातचीत की और उसी बोरीस को बधाई दी जिसे वह कभी प्यार करती थी। नशे की जिस हालत में वह इस वक़्त थी, उसमें हर चीज़ सीधी-सादी और स्वाभाविक लग रही थी।

अधनंगी एलेन उसके क़रीब बैठी थी और सभी की ओर एक जैसी मुस्कान लुटा रही थी। नताशा ने बोरीस को भी ऐसी ही मुस्कान भेंट की।

एलेन का बॉक्स लोगों से भर गया और हॉल की ओर से सर्वाधिक जाने-माने लोगों से घिर गया जो मानो होड़ करते हुए सभी को यह

दिखाना चाहते थे कि वे उससे परिचित हैं।

कुरागिन इस पूरे अन्तराल में फुट लाइटों के क़रीब पहली क़तार में खड़ा हुआ रोस्तोवों के बॉक्स की तरफ़ देखता रहा। नताशा जानती थी कि वह उसी की चर्चा कर रहा है और इससे उसे ख़ुशी हासिल हो रही थी। वह तो उसकी ओर ऐसे घूम भी गयी कि उसे उसकी पार्श्व छवि की झलक मिले, क्योंकि उसके मतानुसार ऐसी स्थिति में वह सर्वाधिक सुन्दर लगती थी। ऑपेरा का दूसरा अंक आरम्भ होने के पहले प्येर हॉल में दिखायी दिया। मास्को आने पर रोस्तोवों की अभी तक उससे भेंट नहीं हुई थी। उसका चेहरा उदास था और उसके साथ नताशा की पिछली भेंट के बाद के समय में वह कुछ और मोटा हो गया था। किसी की तरफ़ ध्यान दिये बिना वह पहली क़तारों की ओर चला गया। अनातोल उसके पास आया और रोस्तोवों के बॉक्स की ओर देखते तथा संकेत करते हुए उसने उससे कुछ कहा। नताशा को देखकर प्येर का चेहरा खिल उठा और वह कुर्सियों की क़तारों को जल्दी-जल्दी लांघते हुए उसके बॉक्स की तरफ़ बढ़ गया। वहां पहुंचकर उसने बॉक्स के सिरे पर कोहनियां टिका लीं और मुस्कराते हुए देर तक नताशा से बातें करता रहा। प्येर के साथ अपनी बातचीत के दौरान नताशा को काउंटेस बेज़ूख़ोवा के बॉक्स से मर्दाना आवाज़ सुनायी दी और न जाने क्यों, वह जान गयी कि यह आवाज़ कुरागिन की थी। नताशा ने उधर देखा और उनकी आंखें मिलीं। अनातोल लगभग मुस्कराते हुए ऐसी प्रशंसा और प्यार भरी दृष्टि से सीधे उसकी आंखों में झांक रहा था कि यह अजीब-सा प्रतीत हुआ कि वह उसके इतनी क़रीब थी, उसकी तरफ़ ऐसे देख रही थी, विश्वासपूर्वक यह जानती थी कि उसके मन को अच्छी लग रही थी और फिर भी उससे अपरिचित थी।

दूसरे अंक में स्टेज पर गत्ते की मूर्त्तियोंवाला क़ब्रिस्तान दिखाया गया था, पीछेवाले परदे में एक बड़ा, गोल सूराख़ चांद को ज़ाहिर कर रहा था। फुट लाइटों के शेड ऊपर उठा दिये गये थे, तुर्हियां तथा डबल-बास भारी आवाज़ में शोकपूर्ण धुन बजाने लगे और काले लबादे पहने हुए बहुत-से लोग दायीं और बायीं ओर से मंच पर निकल आये। ये लोग अपने हाथों को हिलाने-डुलाने लगे और इनके हाथों में ख़ंजरों जैसी कोई चीज़ थी। इसके बाद कुछ अन्य लोग भागते हुए आये और

वे उस लड़की को, जो पहले सफ़ेद और अब आसमानी रंग की पोशाक पहने थी, घसीटकर ले जाने लगे। वे फ़ौरन ही उसे घसीट नहीं ले गये, बल्कि देर तक उसके साथ गाते रहे और फिर घसीट ले गये। परदों के पीछे धातु की किसी चीज़ पर तीन बार ज़ोर से चोट की गयी, सभी घुटनों के बल हो गये और प्रार्थना गाने लगे। इन दृश्यों के समय दर्शक कई बार बड़े उत्साह से वाह-वाह कर उठे।

इस अंक के दौरान नताशा ने जब-जब भी हॉल पर नज़र डाली, उसने अनातोल कुरागिन को कुर्सी की टेक के गिर्द बांह डाले हुए अपनी तरफ़ देखते पाया। उसे यह देखकर ख़ुशी होती थी कि वह इस तरह से उसपर मुग्ध था और उसके दिमाग़ में यह ख़्याल तक नहीं आया कि इसमें कोई बुरी बात भी हो सकती थी।

दूसरा अंक समाप्त होने पर काउंटेस बेज़ूख़ोवा उठकर खड़ी हुई, रोस्तोवों के बॉक्स की ओर घूमी ( उसकी छाती बिल्कुल नंगी थी ), दस्ताने से ढकी उंगली के इशारे से उसने बुज़ुर्ग काउंट का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और अपने बॉक्स में आनेवालों की परवाह न करते तथा मधुरता से मुस्कराते हुए काउंट से बातचीत करने लगी।

"अपनी इन बहुत ही प्यारी बेटियों से मेरा परिचय तो करवा दीजिये," उसने कहा, "सारे शहर में इनकी सुन्दरता की धूम मची है और मैं इन्हें जानती तक नहीं।"

नताशा उठी और उसने झुककर इस अद्भुत सुन्दरी का अभिवादन किया। इस अनूठी रूप-रानी की प्रशंसा नताशा को इतनी अच्छी लगी कि वह प्रसन्नता से लज्जारुण हो गयी।

"अब तो मैं भी मास्कोवासिनी बनना चाहती हूं," एलेन ने कहा। "आपको शर्म आनी चाहिये कि आपने ऐसे हीरों को गांव में छिपा रखा है!"

जादू करनेवाली महिला के रूप में काउंटेस बेज़ूख़ोवा की ख़्याति उचित ही थी। वह जो कुछ सोचती भी नहीं थी, विशेषकर किसी की चापलूसी करने की बात, उसे भी बड़ी सरलता और स्वाभाविक ढंग से कह देती थी।

"नहीं, प्यारे काउंट, आप मुझे अपनी बेटियों में दिलचस्पी लेने की अनुमति दीजिये। बेशक मैं कुछ ही दिनों के लिये मास्को में हूं और आप भी। फिर भी मैं इनका कुछ मन ख़ुश करने की कोशिश

करूंगी। मैंने तो पीटर्सबर्ग में भी आपके बारे में बहुत कुछ सुना था और आपसे परिचित होना चाहती थी," उसने अपनी एक ही ढंग की प्यारी मुस्कान के साथ कहा। "मैंने अपने ग़ुलाम द्रुबेत्स्कोई से, जो, आपने सुना होगा, शादी करने जा रहा है, आपकी बड़ी प्रशंसा सुनी है और अपने पति के मित्र बोल्कोन्स्की, प्रिंस बोल्कोन्स्की से भी," उसने विशेष ज़ोर देते और इस तरह यह ज़ाहिर करते हुए कहा कि वह नताशा के प्रति बोल्कोन्स्की की भावनाओं से परिचित है। एलेन ने अनुरोध किया कि अधिक अच्छी तरह से परिचित हो पाने के लिये नताशा और सोन्या में से कोई एक ऑपेरा के बाक़ी वक़्त तक उसके बॉक्स में आ जाये और इस तरह नताशा उसके बॉक्स में जा बैठी।

तीसरे अंक में स्टेज पर महल दिखाया गया था जिसमें बहुत-सी मोमबत्तियां जल रही थीं और दाढ़ियोंवाले सूरमाओं की तस्वीरें लटकी हुई थीं। मंच के मध्य में सम्भवतः ज़ार और उसकी पत्नी खड़े थे। ज़ार ने दायां हाथ हिलाया और शायद घबराहट के कारण बुरे ढंग से कुछ गाया और लाल रंग के सिंहासन पर बैठ गया। शुरू में सफ़ेद, फिर आसमानी रंग की पोशाक में सामने आनेवाली युवती अब सिर्फ़ शमीज़ पहने थी, उसके बाल खुले थे और वह सिंहासन के पास खड़ी थी। वह ज़ार-पत्नी को सम्बोधित करते हुए कोई करुणाजनक गाना गा रही थी। किन्तु ज़ार ने कठोरता से हाथ झटका और दायीं-बायीं ओर से नंगी टांगोंवाले पुरुष तथा नारियां मंच पर आकर एकसाथ नाचने लगे। इसके बाद वायलिनें बहुत ही पतली आवाज़ में कोई उल्लासपूर्ण धुन बजाने लगीं, मोटी-मोटी, नंगी टांगों और पतली-पतली बांहोंवाली एक युवती अन्य सभी से अलग होकर परदे के पीछे चली गयी, वहां उसने अपनी चोली ठीक की, मंच के मध्य में लौटी, हवा में ऊंचे-ऊंचे उछलने और जल्दी-जल्दी एक पांव को दूसरे पांव से टकराने लगी। हॉल में बैठे सभी लोग ज़ोर से तालियां बजाने और वाह-वाह चिल्लाने लगे। इसके बाद एक पुरुष एक कोने में जा खड़ा हुआ। आर्केस्ट्रा में तुरहियां और झांझ-मजीरे ख़ूब ज़ोर से बजने लगे और नंगी टांगोंवाला यह पुरुष ख़ूब ऊंची-ऊंची कुलांचें भरने और टांगों को हवा में लहराने लगा। (यह पुरुष प्रसिद्ध नर्तक डूपोर था जो अपनी इसी कला के लिये चांदी के साठ हज़ार रूबल वार्षिक वेतन पाता था।) हॉल में, बॉक्सों में और ऊपर की मंज़िलों पर बैठे दर्शक पूरे

ज़ोर से तालियां बजाने और वाह्-वाह् चिल्लाने लगे। नर्तक रुक गया और मुस्कराते हुए सभी ओर झुकने लगा। इसके पश्चात नंगी टांगोंवाले कुछ अन्य पुरुष-नारियां नाचे, फिर से राज-वंश का कोई व्यक्ति संगीत की संगत में कुछ चिल्लाया और सभी गाने लगे। किन्तु अचानक एक तूफ़ान-सा आया, आर्केस्ट्रा में कुछ धीमी-धीमी और मन्द-मन्द ध्वनियां सुनायी दीं और मंच पर उपस्थित लोगों में से एक को अपने साथ घसीटते हुए सभी परदों के पीछे भाग गये और परदा गिर गया। दर्शकों में फिर से भारी शोर और कोलाहल मच गया और सभी उल्लासपूर्ण चेहरों के साथ चिल्लाने लगे :

"डूपोर! डूपोर! डूपोर!"

नताशा को यह अब अजीब नहीं लग रहा था। वह प्रसन्नता और हर्षपूर्वक मुस्कराते हुए अपने इर्द-गिर्द देख रही थी।

"डूपोर तो कमाल करता है न?" एलेन ने नताशा से फ़्रांसीसी में कहा।

"ओह, लाजवाब," नताशा ने उत्तर दिया।

## १०

अन्तराल के समय एलेन के बॉक्स में ठण्डी हवा का झोंका आया, दरवाज़ा खुला और झुकते तथा यह कोशिश करते हुए कि किसी के साथ टकरा न जाये, अनातोल अन्दर आया।

"आपसे अपने भाई का परिचय करवाने की अनुमति चाहती हूं," बेचैनी से नताशा और फिर अनातोल पर दृष्टि डालते हुए एलेन ने कहा। नताशा ने अपने नंगे कंधे के ऊपर से अपना प्यारा-सा सिर घुमाकर इस सुन्दर नौजवान की तरफ़ देखा और मुस्करा दी। अनातोल दूर से जितना ख़ूबसूरत लगता था, नज़दीक से भी वैसा ही सुन्दर था। वह नताशा के पास बैठ गया और बोला कि वह बहुत अरसे से, नारीशकिनों के यहां हुए बॉल के वक़्त से, जहां उसको उसे देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और भूला नहीं था, यह ख़ुशी पाने की राह देख रहा था। पुरुषों की तुलना में स्त्रियां की संगत में अनातोल

कहीं ज़्यादा समझदारी और सरलता का व्यवहार करता था। वह दिलेरी और सादगी से बातचीत कर रहा था तथा नताशा को इस बात का अजीब और सुखद आश्चर्य हुआ कि इस व्यक्ति में ऐसा कुछ भी भयानक नहीं था जिसकी इतनी अधिक चर्चा की जाती थी, बल्कि, इसके विपरीत, उसकी मुस्कान बहुत ही भोली-भाली, सुखद तथा प्यारी थी।

अनातोल कुरागिन ने नताशा से पूछा कि उसे ऑपेरा कैसा लगा और यह बताया कि कैसे पिछली बार अपनी भूमिका अदा करते हुए सेम्योनोवा गिर गयी थी।

"काउंटेस, मैं आपको बताना चाहता हूं," उसने अचानक ऐसे कहा मानो उसके साथ उसकी पुरानी जान-पहचान हो, "हम लोग चित्र-विचित्र पोशाकोंवाले एक बॉल का आयोजन कर रहे हैं। आपको उसमें ज़रूर हिस्सा लेना चाहिये, बहुत मज़ा रहेगा वहां। सभी लोग अरखारोव परिवारवालों के यहां जमा होंगे। कृपया आइयेगा न?" उसने पूछा।

यह कहते हुए उसकी मुस्कराती आंखें नताशा के चेहरे, उसकी गर्दन और नंगी बांहों पर जमी रहीं। नताशा निस्सन्देह रूप से यह जानती थी कि अनातोल उसपर मुग्ध है। उसे यह अच्छा लग रहा था, किन्तु, मालूम नहीं क्यों, उसकी उपस्थिति में उसे कुछ परेशानी और घबराहट-सी अनुभव हो रही थी। जब वह उसकी तरफ़ देखती नहीं थी तो यह महसूस करती थी कि अनातोल उसके कंधों पर नज़र जमाये है और वह अनचाहे ही उससे नज़र मिलाने लगाती ताकि यही ज़्यादा अच्छा हो कि वह उसकी आंखों की तरफ़ देखे। किन्तु उससे नज़रें मिलाते हुए वह इस अनुभूति से भयभीत हो उठी कि उसके और अनातोल के बीच लज्जा की वह सीमा-रेखा नहीं है जो वह अपने और अन्य पुरुषों के बीच अनुभव करती थी। वह स्वयं नहीं जानती थी कि यह कैसे हुआ, किन्तु पांच मिनट बाद उसने अपने को इस व्यक्ति के बहुत ही निकट महसूस किया। जब वह मुंह दूसरी ओर करती तो मन ही मन घबराती कि कहीं वह पीछे से उसकी नंगी बांह को न पकड़ ले या उसकी गर्दन को ही न चूम ले। वे बहुत ही मामूली चीज़ों की चर्चा कर रहे थे और वह अनुभव कर रही थी कि वे इतने अधिक निकट हैं जितनी वह कभी किसी पुरुष के निकट नहीं थी। एलेन और

अपने पिता की ओर नताशा ऐसे देखती रही मानो पूछ रही हो कि इस सब का क्या मतलब है। किन्तु एलेन किसी जनरल के साथ बात करने में व्यस्त थी और उसने उसकी दृष्टि के उत्तर में कुछ नहीं कहा तथा पिता की नज़रों ने उसी चीज़ के सिवा और कुछ नहीं कहा जो वे हमेशा कहती थीं : "तुम ख़ुश हो, मैं ख़ुश हूं।"

अटपटी ख़ामोशी के एक क्षण में, जब अनातोल अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से नताशा को शान्तिपूर्वक तथा टकटकी बांधकर देख रहा था, उसने इस ख़ामोशी को भंग करने के लिये उससे पूछा कि उसे मास्को कैसा लगता है। नताशा ने यह पूछा और विह्वलता से लाल हो गयी। उसे लगातार ऐसे लग रहा था कि उसके साथ बातें करके वह कोई बुरी हरकत कर रही है। अनातोल मानो उसकी हिम्मत बढ़ाते हुए मुस्कराया।

"शुरू में मास्को मुझे बहुत अच्छा नहीं लगा, क्योंकि आख़िर वह क्या चीज़ है जो शहर को प्यारा बनाती है? सुन्दर नारियां," उसने फ़्रांसीसी में कहा। "ठीक है न? लेकिन अब बहुत अच्छा लगता है," उसने अर्थपूर्ण दृष्टि से नताशा की ओर देखते हुए कहा। "फेंसी ड्रेसों के बॉल में आयेंगी न काउंटेस? ज़रूर आइयेगा," उसने कहा और नताशा के गुलदस्ते की तरफ़ हाथ बढ़ाकर तथा आवाज़ को ज़रा नीची करके फ़्रांसीसी में बोला: "आप वहां सबसे अधिक सुन्दर होंगी। प्यारी काउंटेस, ज़रूर आइयेगा और ज़मानत के रूप में मुझे यह फूल दे दीजिये।"

अनातोल के ये शब्द ठीक उसी तरह से नताशा की समझ में नहीं आये जैसे कि वह ख़ुद भी उन्हें नहीं समझ रहा था। किन्तु उसने यह अनुभव किया कि समझ में न आनेवाले उसके शब्दों में कोई बुरा इरादा छिपा हुआ है। नताशा नहीं जानती थी कि उत्तर में क्या कहे और उसने ऐसे मुंह फेर लिया मानो उसके शब्द सुने ही न हों। किन्तु दूसरी ओर मुंह करते ही उसके दिमाग़ में यह ख़्याल आया कि वह उसके पीछे, उसके इतने नज़दीक खड़ा है।

"अब उसके मन की क्या हालत है? उसे शर्म आ रही है? वह झुंझला रहा है? मामले को ठीक करना चाहिये?" उसने अपने आपसे पूछा। वह उसकी ओर देखे बिना न रह सकी। उसने सीधे उसकी आंखों में देखा और उसकी निकटता और आत्मविश्वास तथा

उसकी मुस्कान की भोली-भाली स्नेहशीलता ने उसे जीत लिया। उससे आंखें मिलाते हुए वह उसकी भांति ही मुस्करा दी। और उसने फिर से भयभीत होते हुए यह अनुभव किया कि उन दोनों के बीच किसी भी तरह का कोई अवरोध नहीं है।

फिर से परदा उठा। शान्त और प्रसन्नचित्त अनातोल बॉक्स से बाहर चला गया। नताशा पिता के पास अपने बॉक्स में लौट आयी और अब वह पूरी तरह से उसी दुनिया में खोयी हुई थी जिसमें इस वक़्त थी। रंगमंच पर उसके सामने जो कुछ हो रहा था, उसे वह सब कुछ बिल्कुल स्वाभाविक लग रहा था। दूसरी ओर अपने मंगेतर, प्रिंसेस मरीया तथा गांव में अपने जीवन के बारे में पहलेवाले विचार एक बार भी उसके दिमाग़ में नहीं आये। वे तो मानो अतीत से, भूले-बिसरे अतीत से सम्बन्ध रखते थे।

चौथे अंक में कोई शैतान स्टेज पर आया जो हाथ हिलाते-डुलाते हुए तब तक गाता रहा, जब तक कि उसके पैरों के नीचे से तख़्ते नहीं हटा लिये गये और वह नीचे नहीं चला गया। चौथे अंक में नताशा ने केवल यही देखा – उसे कोई चीज़ विह्वल तथा व्यथित कर रही थी और उसकी इस विह्वलता का कारण अनातोल कुरागिन था जिसकी ओर वह देखे बिना नहीं रह पाती थी। जब ये लोग थियेटर से बाहर आये तो अनातोल इनके पास आया, उसने इनकी बग्घी बुलवायी और इन्हें उसमें बिठाया। नताशा को बग्घी में बैठाते हुए उसने कोहनी के ऊपर उसकी बांह दबायी। नताशा ने विह्वल, लज्जारुण और ख़ुश होते हुए उसकी तरफ़ देखा। अनातोल आंखों में चमक और होंठों पर प्यार भरी मुस्कान लिये उसे एकटक देख रहा था।

केवल घर आने पर ही नताशा स्पष्ट रूप से वह सब समझ पायी जो उसके साथ हुआ था और अचानक प्रिंस अन्द्रेई का ध्यान आने पर वह दहल उठी और चाय की मेज़ पर ही, जिसके गिर्द थियेटर के बाद सभी जमा हुए थे, उसने ज़ोर से गहरी आह भरी और लज्जा से लाल होते हुए कमरे से बाहर भाग गयी। "हे भगवान! मैं तबाह हो गयी!" उसने अपने आपसे कहा। "मैंने मामले को इस हद तक बढ़ने ही कैसे दिया?" वह सोच रही थी। वह अपने लाल चेहरे को

देर तक हाथों से ढककर बैठी रही, इस बात को साफ़ तौर पर समझने की कोशिश करती रही कि उसके साथ क्या हुआ था। लेकिन वह न तो यह समझ पायी कि उसके साथ क्या हुआ था और न ही उस चीज़ को जो वह अनुभव कर रही थी। उसे सभी कुछ धुंधला, अस्पष्ट और भयानक प्रतीत हो रहा था। वहां, रोशनी से चमचाते उस विराट हॉल में, जहां सितारों से जड़ी और जगमगाती जाकेट पहने नंगी टांगोंवाला डूपोर संगीत की लय के साथ कुलांचें भर रहा था और युवतियां तथा बूढ़े तथा शान्त, गर्वीली मुस्कान के साथ अधनंगी एलेन भी "वाह-वाह!" चिल्ला रहे थे – वहां एलेन की छत्र-छाया में यह सब स्पष्ट और सीधा-सादा मामला था, किन्तु अब अकेली, अपने तक ही सीमित रह जाने पर यह सब अस्पष्ट था। "क्या मतलब है इसका? यह कैसा भय है जो मैंने उसके प्रति अनुभव किया? आत्मा की उस धिक्कार का क्या अर्थ है जो मैं अब अनुभव कर रही हूं?" वह सोच रही थी।

रात के वक़्त अपनी मां, बुज़ुर्ग काउंटेस के बिस्तर में लेटकर केवल उन्हें ही नताशा वह सब बता सकती थी जो सोच रही थी। वह जानती थी कि अपने कठोर और एकनिष्ठ दृष्टिकोण के कारण सोन्या या तो कुछ भी नहीं समझेगी या फिर उसकी आत्मस्वीकृति से दहल उठेगी। इसलिये नताशा ने किसी की मदद के बिना ख़ुद ही उस समस्या का समाधान ढूंढ़ने का प्रयास किया जो उसे व्यथित कर रही थी।

"मैं प्रिंस अन्द्रेई के प्यार के लायक़ रही या नहीं?" उसने अपने आपसे पूछा और ख़ुद को तसल्ली देते हुए हंसकर यह उत्तर दिया: "कैसी बुद्धू हूं मैं! यह क्या पूछ रही हूं ख़ुद से? आख़िर हुआ ही क्या है? कुछ भी तो नहीं। मैंने तो कुछ भी नहीं किया, किसी प्रकार भी उसे अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश नहीं की। कोई कुछ भी नहीं जान पायेगा और मैं उससे फिर कभी नहीं मिलूंगी," उसने अपने आपसे कहा। "तो बात साफ़ हो गयी कि कुछ भी नहीं हुआ, कि पश्चात्ताप का कोई कारण नहीं है, कि प्रिंस अन्द्रेई मुझे **ऐसी** को भी प्यार कर सकता है। लेकिन कैसी **ऐसी**? हे भगवान, हे मेरे भगवान! वह यहां क्यों नहीं है!" नताशा कुछ देर को शान्त हो गयी, लेकिन कुछ देर बाद उसका सहज-बोध पुनः उससे यह कहने

लगा कि बेशक यह सब सच है और बेशक कुछ भी नहीं हुआ – सहज-बोध ने उससे कहा – फिर भी प्रिंस अन्द्रेई के प्रति उसके प्यार की भूतपूर्व निर्मलता नष्ट हो गयी है। उसने फिर से अपनी कल्पना में अनातोल कुरागिन के साथ हुई सारी बातचीत दोहरायी और उस क्षण में इस सुन्दर तथा साहसी पुरुष के चेहरे, उसके हाव-भाव और कोमल मुस्कान को अपनी आंखों के सामने उभारा, जब बग्घी में बैठते समय उसने उसकी बांह दबायी थी।

## ११

अनातोल कुरागिन इसलिये मास्को में रह रहा था कि उसके पिता ने उसे पीटर्सबर्ग से भेज दिया था, जहां वह साल में बीस हज़ार से अधिक रूबल नक़द और इतनी ही रक़म क़र्ज़ लेकर ख़र्च कर देता था जिसे लेनदार उसके पिता से मांगते थे।

पिता ने बेटे से दो टूक कह दिया था कि वह आख़िरी बार इस शर्त पर उसका आधा क़र्ज़ चुका रहा है कि वह प्रधान सेनापति का एडजुटेंट बनकर ( पिता ने दौड़-धूप करके उसे यह नौकरी दिलवा दी थी ) मास्को चला जाये और अब आख़िर तो वहां अपने लिये कोई अच्छी बीवी चुनने की कोशिश करे। पिता ने प्रिंसेस मरीया और यूलिया करागिना की तरफ़ इशारा किया।

अनातोल मान गया और मास्को चला गया जहां प्येर के यहां ठहरा। प्येर ने शुरू में अनिच्छा से उसे अपने यहां रखा, मगर बाद में उसका आदी हो गया, कभी-कभार उसके साथ बेतहाशा शराब पीने की पार्टियों में भी जाता और क़र्ज़ के नाम पर उसे पैसे भी देता।

जैसा कि शिनशिन ने अनातोल के बारे में ठीक ही कहा था, जब से वह मास्को आया था, उसने मास्को की सभी औरतों को पागल कर डाला था। ख़ास तौर पर इसलिये कि वह उनकी ज़रा भी परवाह नहीं करता था और उनकी तुलना में स्पष्टतः जिप्सी लड़कियों और फ़्रांसीसी अभिनेत्रियों को तरजीह देता था जिनमें से प्रमुख अभिनेत्री

कुमारी जोर्ज* के साथ, जैसा कि लोग कहते थे, उसके बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध थे। दोलोखोव और मास्को के अन्य मौज करनेवालों के यहां शराब की हर पार्टी में शामिल होता, सारी-सारी रात खूब पीता रहता, पीने में अपने सभी साथियों से बाज़ी मार लेता और ऊंची सोसाइटी की सभी दावतों तथा बॉल-नृत्यों में हिस्सा लेता। मास्को की कुछ महिलाओं के साथ उसके इश्क-मुहब्बत के कुछ क़िस्से फैले हुए थे और बॉल-नृत्यों के समय उनमें से कुछेक के प्रति वह अपना प्रेम प्रकट करता। लेकिन युवतियों, विशेषकर धनी उत्तराधिकारिणियों से, जो अधिकतर बदसूरत थीं, दूर रहता। इसका एक कारण था जिसे घनिष्ठतम मित्रों के सिवा अन्य कोई नहीं जानता था। वह यह कि दो साल पहले उसकी शादी हो चुकी थी। वह इस तरह कि दो साल पहले, जब वह रेजिमेंट, जिसमें वह काम करता था, पोलैंड में ठहरी हुई थी, तो मामूली हैसियत के एक पोलैंडी ज़मींदार ने उसे अपनी बेटी से शादी करने को मजबूर कर दिया था।

लेकिन अनातोल ने जल्द ही अपनी इस बीवी को छोड़ दिया और उन पैसों के बदले में, जिन्हें उसने अपने ससुर को देने का वचन दिया, खुद को अविवाहित कहने का अधिकार प्राप्त कर लिया।

अनातोल अपनी स्थिति, स्वयं अपने से तथा अन्य लोगों से हमेशा खुश रहता था। उसे अपनी सहज वृत्ति तथा पूरे मन से इस बात का विश्वास था कि उसकी ज़िन्दगी का जैसा रंग-ढंग था, उससे भिन्न कुछ हो ही नहीं सकता था, कि उसने अपने जीवन में कभी कोई बुरी बात नहीं की है। वह न तो यह सोच सकता था कि उसकी हरकतों का किसी दूसरे पर क्या असर पड़ सकता है और न ही यह कि उसकी इस या उस हरकत का क्या नतीजा निकल सकता है। उसे विश्वास था कि जैसे बत्तख़ हमेशा पानी में रहने के लिये ही बनी है, उसी तरह भगवान ने उसे भी इसलिये बनाया है कि वह साल में तीस हज़ार रूबल खर्च करे और सोसाइटी में हमेशा ऊंचा दर्जा बनाये रहे। वह इस बात पर इतना अधिक यक़ीन करता था कि उसे देखते हुए दूसरे भी

---

* नाटकों में अभिनय करनेवाली प्रसिद्ध फ़्रांसीसी अभिनेत्री मार्गेरिट-जोज़ेफ़िन बेमर (उपनाम – जोर्ज, १७८७-१८६७) १८०८-१८१२ में रूस (पीटर्सबर्ग और मास्को) में अपना कला-प्रदर्शन करती रही। – सं०

ऐसा ही मानने लगते थे और न तो सोसाइटी में उसे ऊंचा दर्जा और न ही क़र्ज़ देने से इन्कार करते थे जो वह स्पष्टतः लौटाने का कोई इरादा न रखते हुए हर किसी से ले लेता था।

अनातोल जुआरी नहीं था, कम से कम पैसे जीतने की तो उसे कभी इच्छा नहीं होती थी। और वह पैसे हारना भी नहीं चाहता था। वह घमंडी नहीं था। उसके बारे में कौन, क्या सोचता है – उसे इसकी बिल्कुल परवाह नहीं थी। उसपर महत्त्वाकांक्षी होने का अपराध तो और भी कम लगाया जा सकता था। अपना कैरियर ख़राब करके उसने कई बार पिता को नाराज़ किया था और वह सभी तरह की उपाधियों-सम्मानों की खिल्ली उड़ाता था। वह कंजूस नहीं था और अपने सामने हाथ फैलानेवाले को कभी पैसे देने से इन्कार नहीं करता था। सिर्फ़ मौज-मनोरंजन और औरतों में ही उसकी दिलचस्पी थी। चूंकि उसकी धारणा के अनुसार उसकी इन रुचियों में कोई बुराई नहीं थी और इन रुचियों की पूर्ति का दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह सोचने में वह असमर्थ था, इसलिये अपनी आत्मा में स्वयं को अनिंद्य व्यक्ति मानता था, निश्छल मन से नीचों और बुरे लोगों से घृणा करता था तथा आत्मा की कोई धिक्कार न अनुभव करते हुए ख़ूब सीना तानकर चलता था।

नारी-मगदालीनों* की भांति लम्पट-पियक्कड़ पुरुष-मगदालीनों के दिलों में भी अपने निर्दोष होने की एक गुप्त भावना की चेतना बनी रहती है जो क्षमा कर दिये जाने की आशा पर आधारित होती है। "नारी को इसलिये सब कुछ क्षमा कर दिया जायेगा कि उसने बहुत प्यार किया और पुरुष को इस कारण सब कुछ क्षमा कर दिया जायेगा कि उसने ख़ूब मौज की।"

निर्वासन और ईरान में अपने कारनामे करने के बाद इसी साल मास्को लौटने और यहां शराब तथा जुए की ठाठदार ज़िन्दगी बितानेवाले दोलोख़ोव ने पीटर्सबर्ग के अपने पुराने साथी अनातोल कुरागिन के साथ फिर से दोस्ती बढ़ा ली और वह अपनी स्वार्थसिद्धि के लिये उसका उपयोग करने लगा।

---

* मगदालीना – ईसाई धर्म की पौराणिक कथाओं के अनुसार बहुत पाप करनेवाली विलासी औरत जिसने बाद में प्रायश्चित्त किया और ईसा की सच्ची भक्त बन गयी। – सं०

दोलोखोव की सूझ-बूझ तथा साहस के लिये अनातोल सच्चे मन से उसे चाहता था। दोलोखोव, जिसे अनातोल कुरागिन का नाम, उसकी ख्याति तथा जान-पहचान की इसलिये ज़रूरत थी कि अमीर घरानों के नौजवानों को अपने जुए के हलक़े में खींच सके, उसे इस बात की चेतना न होने देकर अपना उल्लू सीधा करता था और उससे अपना दिल बहलाता था। अपनी स्वार्थसिद्धि के अतिरिक्त, जिसके लिये उसे अनातोल की ज़रूरत थी, किसी दूसरे को अपने इशारों पर नचाने की प्रक्रिया ही दोलोखोव का मनोरंजन, उसकी आदत और आवश्यकता थी।

नताशा ने अनातोल के मन पर बहुत गहरी छाप अंकित की थी। थियेटर के बाद भोजन करते समय उसने दोलोखोव के सामने एक पारखी की तरह नताशा के हाथों, कंधों, टांगों और बालों की खूबियां बयान कीं और अपने इस निर्णय की घोषणा की कि वह उसके प्रति अपना प्रेम-प्रदर्शन करेगा। इस प्रेम-प्रदर्शन का क्या नतीजा होगा – अनातोल इसके बारे में सोच-विचार करने में असमर्थ था और वैसे ही अनजान था, जैसे उसे कभी भी यह मालूम नहीं होता था कि उसकी किसी भी हरकत का क्या परिणाम सामने आयेगा।

"बहुत सुन्दर है, मेरे भाई, लेकिन वह हमारे लिये नहीं है," दोलोखोव ने मत प्रकट किया।

"मैं बहन से कहूंगा कि वह उसे अपने यहां लंच पर बुला ले," अनातोल ने कहा। "क्या ख्याल है?"

"यही बेहतर होगा कि उसकी शादी हो जाने के बाद ही तुम ..."

"तुम तो जानते हो कि मैं ऐसी जवान लड़कियों का दीवाना हूं। बहुत जल्द ही वह मेरे फेर में पड़ जायेगी।"

"तुम एक बार तो लड़की के कारण मुसीबत भुगत चुके हो," अनातोल की शादी के बारे में जाननेवाले दोलोखोव ने उसे चेतावनी दी। "अब सम्भलकर।"

"दूसरी बार तो ऐसा होने का नहीं। क्यों?" अनातोल ने खुशमिज़ाजी से हंसते हुए जवाब दिया।

# १२

थियेटर के अगले दिन रोस्तोव-परिवारवाले कहीं नहीं गये और कोई भी उनके यहां नहीं आया। नताशा से छिपाते हुए मरीया द्मीत्रियेव्ना काउंट रोस्तोव के साथ कुछ बातचीत करती रही। नताशा ने अनुमान लगा लिया कि वे बुजुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की की चर्चा कर रहे थे, कोई तरकीब सोच रहे थे और उसे इससे बेचैनी तथा अपमान की अनुभूति हो रही थी। वह हर क्षण ही प्रिंस अन्द्रेई के आने की राह देख रही थी और यह जानने के लिये कि वह आया या नहीं, दो बार नौकर को व्ज़द्वीजेन्का सड़क पर उसके घर भेज चुकी थी। प्रिंस अन्द्रेई नहीं आया था। मास्को आगमन के पहले दिनों की तुलना में अब उसे अपने मन पर कहीं अधिक बोझ महसूस हो रहा था। प्रिंसेस मरीया तथा बुजुर्ग बोल्कोन्स्की से हुई भेंट की कटु स्मृति तथा भय और घबराहट, जिसका कारण वह नहीं जानती थी, प्रिंस अन्द्रेई के बारे में उसकी बेसब्री और उदासी के साथ जुड़ गये थे। उसे लगातार ऐसा ही लगता था कि या तो वह कभी नहीं आयेगा या फिर उसके आने के पहले उसके साथ कुछ हो जायेगा। पहले की भांति अब वह एकान्त में शान्त मन से घण्टों तक उसी की याद में खोयी नहीं रह सकती थी। जैसे ही वह उसके बारे में सोचने लगती, बुजुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की, प्रिंसेस मरीया, थियेटर की शाम और कुरागिन की स्मृतियां प्रिंस अन्द्रेई की स्मृति के साथ आ जुड़तीं। फिर से यह सवाल उसके सामने उभरता – उसने कोई अपराध तो नहीं कर दिया, प्रिंस अन्द्रेई के प्यार के प्रति विश्वासघात तो नहीं कर दिया? और वह फिर से अपने मन में एक अनबूझ और भयानक भावना पैदा करनेवाले इस व्यक्ति यानी अनातोल के हर शब्द, उसकी हर गति-विधि, उसके चेहरे के भावना-खिलवाड़ की हर रंगत की छोटी से छोटी तफ़सील पर बार-बार विचार करती। घर के लोगों को नताशा सामान्य से अधिक सजीव प्रतीत होती थी, किन्तु वह पहले की तुलना में कहीं कम शान्त और कम सुखी थी।

इतवार के दिन मरीया द्मीत्रियेव्ना ने मां मरियम के प्राणोत्सर्ग के पर्व के सिलसिले में अपने मेहमानों को स्थानीय गिरजे में चलने के लिये आमन्त्रित किया।

"मुझे ये आधुनिक क़िस्म के गिरजाघर अच्छे नहीं लगते,"

उसने सम्भवतः अपने स्वतन्त्र विचारों पर गर्व करते हुए कहा। "भगवान तो सभी जगह एक जैसे ही हैं। हमारा पादरी बहुत अच्छा है, बढ़िया ढंग और गरिमा से धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न करता है और डीकन के बारे में भी यही कहा जा सकता है। गिरजों में कन्सर्टों का आयोजन करने में पवित्रता कहां रह जाती है? मुझे यह पसन्द नहीं, यह तो निरा मनचलापन है!"

मरीया द्मीत्रियेव्ना को इतवार के दिन बहुत अच्छे लगते थे और वह उन्हें खुशी के दिन बनाने का ढंग भी जानती थी। शनिवार को उसके घर में पूरी तरह से झाड़-बुहार और धुलाई-पुताई कर दी जाती थी। रविवार के दिन न वह खुद और न उसके नौकर-चाकर ही काम करते थे। सभी बन-ठनकर गिरजे में जाते थे। हर दिन की तुलना में कुछ अधिक पकवान बनाये जाते, नौकरों को वोद्का दी जाती और उनके भोजन में तला हुआ कलहंस या सूअर के बच्चे का मांस शामिल होता। किन्तु सारे घर में पर्व के दिन की इतनी अधिक अनुभूति और कहीं न होती, जितनी दिन भर समारोही भाव बनाये रखनेवाले मरीया द्मीत्रियेव्ना के चौड़े और कठोर चेहरे पर।

गिरजे से लौटने के बाद जब ड्राइंगरूम में, जहां फ़र्नीचर के गिलाफ़ उतार दिये गये थे, कॉफ़ी पी जा चुकी थी, मरीया द्मीत्रियेव्ना को सूचित किया गया कि बग्घी तैयार है। मरीया द्मीत्रियेव्ना ने कठोर मुद्रा बनाते हुए सबसे बढ़िया वह शाल ओढ़ ली जिसे ओढ़कर वह लोगों से मिलने-जुलने जाती थी, अपनी जगह से उठी और यह घोषणा की कि वह नताशा के बारे में सारी बात साफ़ करने के लिये बुज़ुर्ग प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच बोल्कोन्स्की के पास जा रही है।

मरीया द्मीत्रियेव्ना के जाने के बाद मदाम शेल्मा की दुकान की एक ड्रेसेर रोस्तोवों के पास आयी। नताशा अपना ध्यान दूसरी ओर ले जाने की इस सम्भावना से बेहद खुश होकर ड्राइंगरूम के बग़लवाले कमरे का दरवाज़ा बन्द करके अपनी नयी पोशाकों की ट्राई करने लगी। जब उसने धागों की कच्ची सिलाईवाली चोली पहनकर, जिसकी आस्तीनें अभी जोड़ी नहीं गयी थीं, यह देखने के लिये दर्पण की ओर सिर घुमाया कि वह पीठ पर फ़िट है या नहीं, तो उसी वक़्त उसे ड्राइंगरूम से पिता और एक नारी की खुशी भरी आवाज़ सुनायी दी जिससे उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी। यह आवाज़ एलेन की थी।

नताशा उस चोली को, जिसे पहनकर देख रही थी, उतार भी नहीं पायी थी कि दरवाज़ा खुला और ऊंचे कालरोंवाली गहरे बैंगनी रंग की मख़मली पोशाक पहने काउंटेस बेज़ूख़ोवा कमरे में आयी। उसका चेहरा सौम्य और स्नेहपूर्ण मुस्कान से खिला हुआ था।

"ओह, मनमोहिनी!" उसने लज्जारुण होती नताशा से फ़्रांसीसी में कहा। "लाजवाब हैं आप!"

"नहीं, यह भी कोई बात हुई, मेरे प्यारे काउंट," उसने अपने पीछे-पीछे कमरे में आनेवाले काउंट से कहा, "आप लोग मास्को में होते हुए भी न कहीं आते हैं, न कहीं जाते हैं? नहीं, मैं आपका पिंड नहीं छोड़ूंगी! आज शाम को फ़्रांसीसी अभिनेत्री कुमारी जोर्ज मेरे यहां कलात्मक पाठ करने आ रही है, कुछ मेहमान भी जमा होंगे और अगर आप अपनी इन सुन्दरियों को लेकर नहीं आयेंगे, जो कुमारी जोर्ज से भी बढ़-चढ़कर हैं, तो समझ लीजिये कि आपके साथ मेरा झगड़ा हो जायेगा। मेरे पति यहां नहीं हैं, त्वेर गये हैं, वरना में उन्हें ही आप लोगों को लाने के लिये भेज देती। ज़रूर आइये, आठ बजे के बाद ज़रूर ही आइये।" उसने ड्रेसें बनानेवाली अपनी परिचिता की ओर सिर झुकाया जो बहुत झुककर उसका अभिवादन कर रही थी और अपनी मख़मली पोशाक की चुन्नटों को बड़े सुन्दर ढंग से फैलाकर दर्पण के क़रीब रखी आरामकुर्सी पर बैठ गयी। वह ख़ुशमिज़ाजी और प्रसन्नता से लगातार बोलती जा रही थी, नताशा के रूप की लगातार प्रशंसा करती जाती थी। उसने नताशा की नयी पोशाकों को देखा, उनकी और रुपहली जाली वाली अपनी पोशाक की भी तारीफ़ की जो कुछ ही समय पहले उसने पेरिस से मंगवाई थी। उसने नताशा को भी इसे मंगवाने की सलाह दी।

"वैसे आप पर तो सभी कुछ ख़ूब फबता है, मेरी हसीना," उसने कहा।

नताशा के चेहरे पर लगातार ख़ुशी की मुस्कान बनी हुई थी। पहले अपनी पहुंच की सीमा से बाहर और अत्यधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होनेवाली, किन्तु जो अब उसके प्रति इतनी स्नेहशील थी, इस प्यारी काउंटेस की प्रशंसा से उसका मन बाग़-बाग़ हो रहा था और वह मानो खिली जा रही थी। नताशा ख़ुशी के रंग में बह गयी और यह अनुभव कर रही थी कि वह इतनी सुन्दर और इतनी मिलनसार महिला को

लगभग प्यार करने लगी है। दूसरी ओर एलेन सच्चे मन से नताशा पर मुग्ध थी और उसका मन बहलाना चाहती थी। अनातोल ने उससे अनुरोध किया था कि वह नताशा को उसके निकट ला दे और इसी उद्देश्य से वह रोस्तोवों के पास आयी थी। अपने भाई और नताशा को निकट लाने का विचार उसके मन को गुदगुदा रहा था।

यह सही है कि पीटर्सबर्ग में एलेन इस कारण नताशा से कभी नाराज़ हो गयी थी कि उसने बोरीस को उससे छीन लिया था, लेकिन अब उसे इसका ख्याल तक नहीं था और वह अपने ढंग तथा पूरे मन से नताशा का भला चाहती थी। यहां से जाते हुए उसने नताशा को, जिसकी वह सरपरस्ती कर रही थी, एक तरफ़ बुलाकर कहा :

"कल भाई ने मेरे यहां लंच किया। हंसी के मारे हमारा तो बुरा हाल हो गया – वह कुछ भी तो खाता-पीता नहीं, आपकी याद में आहें भरता रहता है, मेरी रूप-रानी। वह तो आपके प्यार में पागल, बिल्कुल पागल हो गया है, मेरी प्यारी।"

फ़्रांसीसी में कहे गये ये शब्द सुनकर नताशा का चेहरा शर्म से लाल-सुर्ख हो गया।

"कैसे शर्माती हैं, कैसे शर्माती हैं आप, मेरी रूप-रानी!" एलेन कह उठी। "ज़रूर आइयेगा। अगर आप किसी को प्यार करती हैं, मेरी मनमोहिनी, तो इस कारण अपने को घर में क्यों बन्द कर रही हैं। अगर आप मंगेतर भी हैं तो भी मुझे विश्वास है कि आपका भावी पति आपके घर में ऊबते रहने के बजाय सोसाइटी में आपका आना-जाना बेहतर मानेगा," उसने फ़्रांसीसी में कहा।

"इसका मतलब है, उसे यह मालूम है कि मेरी सगाई हो चुकी है, इसका यह अर्थ है कि उसने अपने पति, प्येर, उस न्यायशील प्येर के साथ इस मामले की चर्चा की है और इसपर हंसे हैं," नताशा ने सोचा। "तो मानना चाहिये कि इसमें कोई बुराई नहीं है।" और फिर एक बार एलेन के प्रभाव के कारण उसे वह सब सीधा-सरल तथा स्वाभाविक प्रतीत हुआ जो पहले भयानक लग रहा था। "वह तो इतनी भव्य महिला है, इतनी सुन्दर है और स्पष्टतः मुझे मन से चाहती है," नताशा सोच रही थी। "आखिर क्यों मैं अपना दिल न बहलाऊं?" हैरानी से फैली-फैली आंखों से एलेन को देखते हुए नताशा मन में विचार कर रही थी।

मरीया द्मीत्रियेव्ना लंच के वक़्त घर लौटी – गुमसुम, बहुत संजीदा-सी। शायद बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की ने उसे चारों शाने चित कर दिया था। बुज़ुर्ग प्रिंस के साथ अपनी झड़प के कारण वह अभी बहुत उत्तेजित थी और इतमीनान से सारी बात सुनाने में असमर्थ थी। काउंट के पूछने पर उसने सिर्फ़ यह जवाब दिया कि सब कुछ ठीक-ठाक है और यह कि वह अगले दिन सब कुछ कह सुनायेगी। काउंटेस बेज़ूख़ोवा के आने और शाम के लिये निमंत्रित करने के बारे में जानकर उसने कहा:

"बेज़ूख़ोवा के साथ मेल-जोल रखना मुझे पसन्द नहीं और मैं तुम्हें ऐसा करने की सलाह भी नहीं दूंगी। लेकिन चूंकि वादा कर चुकी हो तो जाओ, थोड़ा मनबहलाव हो जायेगा तुम्हारा," उसने नताशा को सम्बोधित करते हुए कहा।

## १३

काउंट इल्या अन्द्रेयेविच रोस्तोव अपनी बेटियों को काउंटेस बेज़ूख़ोवा के यहां ले गये। वहां काफ़ी लोग उपस्थित थे। किन्तु नताशा इनमें से लगभग किसी को नहीं जानती थी। काउंट रोस्तोव को यह देखकर अफ़सोस हुआ कि यहां उपस्थित पुरुषों-महिलाओं में अधिकांश ऐसे थे जो आज़ाद ढंग के आचार-व्यवहार के लिये बदनाम थे। युवा लोगों से घिरी हुई कुमारी जोर्ज दीवानख़ाने के एक कोने में खड़ी थी। कुछ फ़्रांसीसी भी थे जिनमें मेतिव्ये भी शामिल था जो एलेन के मास्को आने के बाद से उसका घर का सा आदमी बना हुआ था। काउंट रोस्तोव ने यह तय किया कि वह ताश खेलने नहीं बैठेंगे, बेटियों के पास ही बने रहेंगे और जैसे ही कुमारी जोर्ज का कार्यक्रम समाप्त होगा, वैसे ही यहां से चले जायेंगे।

अनातोल स्पष्टतः रोस्तोवों की प्रतीक्षा में दरवाज़े के पास खड़ा था। काउंट का अभिवादन करने के फ़ौरन बाद वह नताशा के पास गया और उसके पीछे-पीछे चलने लगा। नताशा ने जैसे ही उसे देखा, वैसे ही थियेटर के समय की भांति इस गर्वपूर्ण प्रसन्नता की भावना

कि वह अनातोल को बहुत अच्छी लगती है और साथ ही यह भय भी उसके मन पर हावी हो गया कि उन दोनों के बीच किसी प्रकार के नैतिक अवरोध का अस्तित्व नहीं है।

एलेन ने बड़ी प्रसन्नता से नताशा का स्वागत किया और खूब खुलकर उसकी सुन्दरता और पोशाक की प्रशंसा की। इनके यहां पहुंचने के कुछ ही देर बाद कुमारी जोर्ज अपनी पोशाक बदलने के लिये कमरे से बाहर चली गयी। इसी बीच ड्राइंगरूम में कुर्सियां लगायी जाने लगीं और लोग बैठने लगे। अनातोल ने नताशा की ओर एक कुर्सी बढ़ा दी और उसकी बग़ल में बैठना चाहा। किन्तु नताशा पर कड़ी नज़र रखते हुए काउंट उसके पास ही बैठ गये। अनातोल नताशा के पीछे बैठ गया।

नंगी, गालों पर गुलों और गदरायी बांहोंवाली कुमारी जोर्ज एक कंधे पर लाल शॉल डाले हुए कुर्सियों के बीच उसके लिये छोड़ दी गयी खुली जगह पर आयी और अस्वाभाविक-सी मुद्रा बनाकर खड़ी हो गयी। प्रशंसापूर्ण फुसफुसाहट सुनायी दी।

कुमारी जोर्ज ने उपस्थित लोगों पर कड़ी और उदास-सी नज़र डाली और फ़्रांसीसी भाषा में एक कविता का पाठ करने लगी जिसमें अपने बेटे के प्रति उसके अपराधपूर्ण प्रेम की चर्चा की गयी थी। वह कभी तो अपनी आवाज़ ऊंची कर लेती, कभी प्रभावपूर्ण ढंग से सिर ऊपर करके फुसफुसाती और आंखों की पुतलियों को इधर-उधर घुमाती हुई खरखरी-सी आवाज़ में बोलती।

"वाह-वाह, अद्भुत, लाजवाब!" सभी ओर से आवाज़ें सुनायी दीं। नताशा मोटी जोर्ज पर नज़र टिकाये थी, मगर उसके सामने जो कुछ हो रहा था, उसे न तो सुन रही थी, न देख और समझ पा रही थी। वह अपने को फिर से पूरी तरह उस अजीब और पागलपन की, पहली दुनिया की तुलना में बेहद दूर, उस दुनिया में अनुभव कर रही थी जिसमें यह जानना सम्भव नहीं था कि क्या अच्छा और क्या बुरा है, क्या समझदारी और क्या बेवक़ूफ़ी है। उसके पीछे अनातोल बैठा था और वह उसकी निकटता अनुभव करते हुए डरी-सहमी-सी किसी बात की प्रतीक्षा कर रही थी।

प्रथम एकालाप के बाद सभी लोगों ने उठकर कुमारी जोर्ज को घेर लिया और अपनी प्रशंसा प्रकट करने लगे।

"कितनी सुन्दर है वह!" नताशा ने पिता से कहा जो अन्य सभी लोगों के साथ उठकर उनके बीच में से अभिनेत्री की ओर बढ़ रहे थे।

"आपको देखते हुए मुझे ऐसा नहीं लगता," नताशा के पीछे-पीछे जाते हुए अनातोल ने कहा। उसने ये शब्द उस वक़्त कहे, जब वह अकेली ही इन्हें सुन सकती थी। "आप बेजोड़ हैं... जब से मैंने आपको देखा है, मैं लगातार..."

"आओ, आओ, अपनी जगह पर चलें, नताशा," काउंट ने बेटी की तरफ़ लौटते हुए कहा। "कितनी सुन्दर है यह!"

नताशा कोई जवाब दिये बिना पिता के पास गयी और उसने आश्चर्यपूर्ण तथा प्रश्नसूचक दृष्टि से पिता की ओर देखा।

कुछ और कविताओं का पाठ करने के बाद कुमारी जोर्ज चली गयी और काउंटेस बेज़ूख़ोवा ने लोगों को बॉल-नृत्य के हॉल में आमन्त्रित किया।

काउंट ने जाना चाहा, लेकिन एलेन ने मिन्नत की कि ख़ास तैयारी के बिना तुरत-फुरत आयोजित उसके बॉल का रंग न बिगाड़ें। रोस्तोव रुक गये। अनातोल ने नताशा को अपने साथ वाल्ज़ नाचने के लिये निमन्त्रित किया। वाल्ज़ के दौरान नताशा की कमर और हाथ दबाते हुए उसने कहा कि वह जादूगरनी है और वह उसे प्यार करता है। एकोसेज़ नाच के वक़्त, जिसमें वह फिर उसकी नृत्य-संगिनी बनी, अनातोल ने कुछ भी नहीं कहा और केवल उसे देखता रहा। नताशा इस दुविधा में पड़ी रही कि वाल्ज़ नाचते वक़्त अनातोल ने उससे जो कुछ कहा था, वह कोई सपना तो नहीं था। नाच की पहली मुद्रा के अन्त में उसने फिर से नताशा का हाथ दबाया। नताशा ने उसकी तरफ़ सहमी-सहमी नज़रें उठायीं, किन्तु अनातोल की प्यार भरी दृष्टि और मुस्कान में आत्मविश्वास तथा मुग्धता का ऐसा भाव था कि उसकी तरफ़ देखते हुए वह उन शब्दों को न कह सकी जो कहने को तैयार थी। उसने नज़रें झुका लीं।

"मुझसे ऐसी बातें नहीं कहिये, मेरी सगाई हो चुकी है, मैं किसी अन्य को प्यार करती हूं," उसने जल्दी-जल्दी कह दिया... नताशा ने उसकी तरफ़ देखा। उसके शब्दों से अनातोल परेशान और दुखी नहीं हुआ था।

"मुझसे इसकी चर्चा नहीं कीजिये। मुझे क्या लेना-देना है इससे?" उसने कहा। "मैं तो आपको बता रहा हूं कि आपके प्रेम में दीवाना हूं, दीवाना हूं। इसमें मेरा क्या क़ुसूर है कि आप इतनी प्यारी हैं?.. अब हमें नृत्य की अगुवाई करनी है।"

उत्साहपूर्ण और विह्वल-सी नताशा डरी-डरी आंखों को फाड़-फाड़कर अपने इर्द-गिर्द देख रही थी और सामान्य की तुलना में अधिक प्रसन्न प्रतीत हो रही थी। इस शाम को जो कुछ हुआ, उसे वह लगभग कुछ भी याद नहीं था। एकोसेज़ और ग्रोसफ़ाटेर नाच नाचे गये, पिता ने घर चलने को कहा और उसने रुकने का अनुरोध किया। वह कहीं भी क्यों न होती, किसी से भी बोलती-बतियाती, लगातार यह अनुभव करती कि अनातोल की दृष्टि उसपर जमी हुई है। बाद में उसे याद आया कि कैसे उसने पिता से ड्रेसिंगरूम में जाकर अपनी पोशाक ठीक करने की अनुमति मांगी थी, कि एलेन उसके पीछे-पीछे आयी थी और उसने हंसते हुए उसके प्रति अपने भाई के प्यार का ज़िक्र किया था, कि छोटी बैठक में अनातोल से उसकी फिर भेंट हुई थी, एलेन कहीं ग़ायब हो गयी थी, वे दोनों ही वहां रह गये थे और अनातोल ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर प्यार भरी आवाज़ में कहा था :

"मैं आपके यहां नहीं आ सकता, लेकिन क्या फिर कभी आपसे भेंट नहीं हो सकेगी? मैं आपका दीवाना हूं। क्या फिर कभी भेंट नहीं हो सकेगी?.." और उसका रास्ता रोककर वह अपने चेहरे को उसके चेहरे के पास ले आया था।

अनातोल की बड़ी-बड़ी, चमकती हुई आंखें उसकी आंखों के इतनी निकट थीं कि इन आंखों के अतिरिक्त उसे और कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था।

"नताशा?!" वह प्रश्नसूचक आवाज़ में फुसफुसाया और उसने इतने ज़ोर से उसके हाथ दबाये कि उसे दर्द महसूस होने लगा। "नता-शा?!"

"मैं कुछ भी नहीं समझ पा रही, कुछ भी नहीं कह सकती," नताशा की दृष्टि कह रही थी।

दहकते होंठ उसके होंठों पर चिपक गये, अगले ही क्षण उसने अपने को फिर से मुक्त अनुभव किया और कमरे में एलेन के क़दमों की आहट तथा उसकी पोशाक की सरसराहट सुनायी दी। नताशा ने

मुड़कर एलेन की ओर देखा, इसके बाद उसने लज्जारुण होते और कांपते हुए डरी-सहमी प्रश्नसूचक दृष्टि से अनातोल की तरफ़ देखा और दरवाज़े की ओर बढ़ गयी।

"एक शब्द, केवल एक शब्द, भगवान के लिये," अनातोल ने फ़्रांसीसी में कहा।

नताशा रुक गयी। उसे इस बात की बेहद ज़रूरत थी कि वह इस शब्द को कह दे जो यह स्पष्ट कर सके कि क्या हो गया है और जिसका वह उत्तर दे सके।

"नताशा, एक शब्द, केवल एक शब्द!" सम्भवतः यह न जानते हुए कि क्या कहे, वह उस वक़्त तक यही दोहराता रहा, जब तक एलेन इनके पास नहीं आ गयी।

एलेन और नताशा फिर से ड्राइंगरूम में चली गयीं। काउंट डिनर के लिये नहीं रुके और बेटियों को साथ लेकर घर चले गये।

घर लौटने पर नताशा सारी रात नहीं सो सकी। यह प्रश्न, जिसे वह हल नहीं कर पा रही थी, उसे यातना दे रहा था कि वह किसे प्यार करती है–अनातोल या प्रिंस अन्द्रेई को? प्रिंस अन्द्रेई को वह प्यार करती थी–उसे यह स्पष्ट रूप से याद था, कितना अधिक प्यार करती थी वह उसे। लेकिन अनातोल को भी वह प्यार करती थी, यह निश्चित था। "वरना क्या यह सब कुछ हो सकता था?" वह सोच रही थी। "अगर इसके बाद भी उससे विदा लेते समय मैंने उसकी मुस्कान के जवाब में मुस्करा दी, अगर मैंने मामले को इस हद तक बढ़ने दिया तो इसका मतलब है कि मैं पहली ही नज़र में उसे प्यार करने लगी थी। मतलब यह कि वह दयालु, कुलीन और नेक है और मैं उसे प्यार किये बिना न रह सकी। अगर मैं उसको और इसको भी प्यार करती हूं तो मैं क्या करूं?" वह अपने आपसे पूछ रही थी और उसे इन भयानक प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल रहे थे।

## १४

हर दिन की चिन्तायें और दौड़-धूप लिये सुबह आयी। सभी जाग गये, इधर-उधर आने-जाने और बोलने-बतियाने लगे। फिर से ड्रेसें

बनानेवाली आ गयीं, फिर से मरीया द्मीत्रियेव्ना अपने कमरे से बाहर आयी और उसने मेहमानों को नाश्ते के लिये आने को कहा। नताशा आंखें फाड़-फाड़कर और चिन्तित दृष्टि से सभी को देख रही थी मानो अपनी ओर निर्देशित हर नज़र को पहले से पकड़ लेना चाहती हो और हर दिन जैसी ही दिखायी देने का प्रयास कर रही थी।

नाश्ते के बाद (यह उसका सबसे अधिक मनपसन्द समय था) मरीया द्मीत्रियेव्ना अपनी आरामकुर्सी पर जा बैठी और उसने नताशा तथा बुज़ुर्ग काउंट को अपने पास बुला लिया।

"तो, मेरे मित्रो, अब मैंने सारे मामले पर सोच-विचार कर लिया है और आप दोनों को मैं एक सलाह देना चाहती हूं," उसने कहना शुरू किया। "जैसा कि आप जानते हैं, कल मैं प्रिंस निकोलाई बोल्कोन्स्की के यहां गयी थी। उसके साथ मेरी बातचीत हुई... बड़े मियां ने मुझपर चीखना-चिल्लाना चाहा। लेकिन मैं किसी से दबनेवाली नहीं हूं! मुझे जो कुछ कहना था, मैंने वह सब कह दिया!"

"तो उन्होंने क्या जवाब दिया?" काउंट ने पूछा।

"वह क्या जवाब देंगे? सठिया गये हैं... कुछ भी सुनने को तैयार नहीं। इस बात की चर्चा में कोई तुक ही नहीं। इस बेचारी लड़की को तो हमने यों ही बुरी तरह सता मारा है," मरीया द्मीत्रियेव्ना ने कहा। "आप लोगों को मैं यही सलाह देती हूं कि यहां अपने काम-धन्धे ख़त्म करें और अपने घर यानी ओतरादनोये गांव चले जायें... और वहां इन्तज़ार करें..."

"ओह, नहीं!" नताशा कह उठी।

"नहीं, जाना चाहिये," मरीया द्मीत्रियेव्ना ने कहा, "और वहां इन्तज़ार करें। अगर तुम्हारा मंगेतर अब यहां आ जाता है तो ज़रूर ही झगड़ा हो जायेगा। लेकिन तुम लोगों के यहां न होने पर वह अकेला अपने बुज़ुर्ग पिता से सारी बात तय कर लेगा और फिर आप लोगों के पास आ जायेगा।"

काउंट इल्या अन्द्रेयेविच ने इस सुझाव की समझदारी को फ़ौरन समझते हुए इसका अनुमोदन किया। अगर बुज़ुर्ग बोल्कोन्स्की सहमत हो जाते हैं तो बाद में उनके पास मास्को या लीसिये गोरि जाना कहीं बेहतर होगा। लेकिन अगर ऐसा नहीं होता है तो बुज़ुर्ग की इच्छा के विरुद्ध केवल ओतरादनोये में ही शादी करना सम्भव होगा।

"बिल्कुल सही है," काउंट ने कहा। "मुझे इस बात का अफ़सोस है कि उनके पास गया और नताशा को अपने साथ ले गया," बुज़ुर्ग काउंट ने कहा।

"नहीं, अफ़सोस की क्या बात है? यहां, मास्को में होने पर आपको उनके प्रति आदर प्रकट करने के लिये तो जाना ही चाहिये था। अगर वह ऐसा नहीं चाहते, तो यह उनका मामला है," मरीया द्मीत्रियेव्ना ने अपने पर्स में कुछ ढूंढ़ते हुए कहा। "दहेज भी तैयार हो गया है, इसलिये यहां और रुकने की कोई ज़रूरत भी नहीं। अगर कुछ तैयार नहीं हुआ तो वह मैं बाद में आपके पास भेज दूंगी। मुझे आप लोगों के जाने से दुख होगा, लेकिन भगवान का नाम लेकर आपका यहां से चले जाना ही ज़्यादा अच्छा रहेगा।" वह पर्स में जो कुछ खोज रही थी, आखिर उसे ढूंढ़कर उसने नताशा को दे दिया। यह प्रिंसेस मरीया का पत्र था। "तुम्हें लिखा है। कितनी परेशान है वह बेचारी! उसे इसी बात का डर है कि कहीं तुम ऐसा न सोच लो कि वह तुम्हें नहीं चाहती है।"

"हां, वह मुझे चाहती भी नहीं है," नताशा ने कहा।

"बेसिर-पैर की बात नहीं करो," मरीया द्मीत्रियेव्ना चिल्ला उठी।

"किसी की बात पर भी विश्वास नहीं करूंगी—मैं जानती हूं कि वह मुझे नहीं चाहती," नताशा ने पत्र लेते हुए दबंगता से जवाब दिया और उसके चेहरे पर कठोरता तथा विद्वेषपूर्ण दृढ़ता का ऐसा भाव आ गया जिसने मरीया द्मीत्रियेव्ना को उसे एकटक देखने और माथे पर बल डालने के लिये विवश कर दिया।

"मेरी अच्छी बिटिया, तुम ऐसे जवाब नहीं दो," मरीया द्मीत्रियेव्ना ने कहा। "मैं जो कह रही हूं, वह सच है। तुम इस पत्र का उत्तर लिख भेजो।"

नताशा ने कोई जवाब नहीं दिया और प्रिंसेस मरीया का पत्र पढ़ने के लिये अपने कमरे में चली गयी।

प्रिंसेस मरीया ने लिखा था कि वह उनके बीच हो जानेवाली ग़लतफ़हमी के कारण बेहद परेशान थी। पिता जी की भावनायें चाहे कैसी भी क्यों न हों, प्रिंसेस ने नताशा से इस बात का विश्वास करने का अनुरोध किया था कि उसके भाई ने जिसे चुना था, वह उसकी

पसन्द की लड़की को प्यार किये बिना नहीं रह सकती थी और अपने भाई की खुशी के लिये हर बलिदान करने को तैयार थी।

"वैसे, आप यह नहीं सोचिये," प्रिंसेस ने लिखा था, "कि मेरे पिता जी आपके प्रति कोई दुर्भावना रखते हैं। वह बीमार और बूढ़े व्यक्ति हैं जिन्हें क्षमा कर देना चाहिये। किंतु वह दयालु और दिल के बहुत अच्छे हैं और उसे प्यार करेंगे जो उनके बेटे को सौभाग्यशाली बनायेगी।" प्रिंसेस मरीया ने आगे यह प्रार्थना की थी कि वह ऐसा समय बता दे, जब उसके साथ फिर से मिल सके।

पत्र पढ़ने के बाद नताशा जवाब लिखने के लिये मेज़ के सामने जा बैठी। "प्यारी प्रिंसेस," उसने फ़्रांसीसी में जल्दी-जल्दी तथा यन्त्रवत ढंग से लिखा और रुक गयी। कल जो कुछ हुआ था, उसके बाद अब वह आगे और क्या लिख सकती थी? "हां, हां, यह सब हुआ था और अब स्थिति बिल्कुल भिन्न है," आरम्भ किये हुए पत्र के सम्मुख बैठी वह सोच रही थी। "क्या उसे इन्कार कर देना चाहिये? क्या ज़रूर ऐसा कर देना चाहिये? यह भयानक बात होगी!.." और इन भयानक विचारों से बचने के लिये वह सोन्या के पास चली गयी और उसके साथ कसीदाकारी के नमूने छांटने लगी।

लंच के बाद अपने कमरे में जाकर नताशा फिर से प्रिंसेस मरीया के पत्र की ओर ध्यान देने लगी। "क्या सचमुच सब कुछ खत्म हो गया?" वह सोच रही थी। "क्या इतनी जल्दी यह सब हो गया और जो कुछ पहले था, इसने उसे नष्ट कर डाला?" उसने अपना पूरा ज़ोर लगाकर प्रिंस अन्द्रेई के प्रति अपने प्यार को याद किया, मगर साथ ही यह अनुभव किये बिना न रह सकी कि अनातोल को भी प्यार करती है। उसने बहुत ही स्पष्ट रूप से प्रिंस अन्द्रेई की पत्नी के रूप में अपनी कल्पना की, यह याद किया कि कैसे कितनी ही बार उसने उसके साथ सुखी जीवन के सपने देखे थे, किन्तु इसी समय विह्वलता से लाल होते हुए उसने अनातोल के साथ पिछले दिन के मिलन के सभी ब्योरों को भी दोहराया।

"क्यों मैं इन दोनों को एकसाथ ही प्यार नहीं कर सकती?" कभी-कभी बिल्कुल चकराते हुए वह सोचती। "तब मैं पूरी तरह से सुखी होती, लेकिन अब मुझे चुनाव करना पड़ रहा है और दोनों में से किसी एक के बिना मैं सुखी नहीं हो सकती। हां," वह सोच रही

थी, "प्रिंस अन्द्रेई को वह सब कुछ बताना चाहिये जो हुआ था या छिपा लेना चाहिये – लेकिन यह भी असम्भव है। **इस दूसरे** के साथ तो सब कुछ ठीक-ठाक है। लेकिन क्या प्रिंस अन्द्रेई के प्रति प्यार के सुख से, जिसे मैं इतने समय तक संजोये रही हूं, हमेशा के लिये वंचित ही होना पड़ेगा?"

"कुमारी जी," चेहरे पर रहस्य का भाव लिये कमरे में दाख़िल होते हुए एक नौकरानी ने फुसफुसाकर कहा। "एक व्यक्ति ने मुझे आपको यह देने को कहा है।" नौकरानी ने पत्र उसे दे दिया। "किन्तु भगवान के लिये..." नौकरानी तब भी यह कहती गयी, जब नताशा कुछ भी सोचे-समझे बिना हाथ की यन्त्रवत चेष्टा से मुहर तोड़कर अनातोल का प्रेम-पत्र पढ़ने लगी जिसका एक भी शब्द समझे बिना वह सिर्फ़ इतना समझ रही थी कि यह उस व्यक्ति का पत्र है जिसे वह प्यार करती है। "हां, वह उसे प्यार करती है, वरना क्या वह हो सकता था जो हो गया था? क्या उसके हाथ में उसका प्रेम-पत्र हो सकता था?"

तीव्र प्रेम-भावनाओं से ओतप्रोत इस पत्र को, जिसे दोलोख़ोव ने अनातोल के लिये लिखा था, नताशा कांपते हाथों में थामे थी और इसे पढ़ते हुए इसमें उस सबकी प्रतिध्वनि पा रही थी, जो, जैसा कि उसे प्रतीत हो रहा था, वह स्वयं अनुभव करती थी।

"कल शाम से मेरे भाग्य का निर्णय हो गया है – या तो आपका प्रेम पाऊं या मर जाऊं। मेरे सामने कोई दूसरा रास्ता नहीं," पत्र ऐसे शुरू होता था। इसके बाद उसने लिखा था कि वह जानता है कि उसके माता-पिता कभी भी उसके, अनातोल के साथ उसकी शादी नहीं करेंगे, कि इसके कुछ गुप्त कारण हैं जिन्हें वह केवल उसे ही बता सकता है। किन्तु यदि वह उसे प्यार करती है तो उसके केवल **हां** कहने की देर है और तब दुनिया की कोई भी ताक़त उनके सुख-सौभाग्य के मार्ग में बाधा नहीं बन सकेगी। प्रेम सभी कुछ पर विजय पा सकता है। वह उसे दुनिया के दूसरे छोर पर भगा ले जायेगा।

"हां, हां, मैं उसे प्यार करती हूं!" नताशा बीसवीं बार उसका पत्र पढ़ते और उसके हर शब्द में कोई विशेष, गहन अर्थ ढूंढ़ते हुए सोच रही थी।

इस शाम को मरीया द्मीत्रियेव्ना अरख़ारोव-परिवारवालों के

यहां मेहमान जा रही थी और उसने दोनों लड़कियों को अपने साथ चलने को कहा। नताशा सिर दर्द का बहाना करके घर पर ही रह गयी।

## १५

रात को देर से घर लौटने पर सोन्या नताशा के कमरे में गयी और उसे यह देखकर हैरानी हुई कि वह कपड़े पहने हुए ही सोफ़े पर सोयी पड़ी है। उसके नज़दीक मेज़ पर अनातोल का खुला पत्र पड़ा था। सोन्या पत्र उठाकर उसे पढ़ने लगी।

वह पढ़ रही थी और जो कुछ पढ़ रही थी, सोयी हुई नताशा के चेहरे पर उसका स्पष्टीकरण ढूंढ़ रही थी और ढूंढ़ नहीं पा रही थी। उसके चेहरे पर शान्ति, विनम्रता और प्रसन्नता व्याप्त थी। इस डर से कि कहीं उसका दम न घुट जाये, अपने सीने को दबाती, पीली तथा भय और उत्तेजना के कारण कांपती हुई सोन्या आरामकुर्सी पर बैठ गयी और आंसू बहाने लगी।

"यह कैसे हुआ कि मैंने कुछ भी नहीं देखा? मामला इतनी दूर तक कैसे पहुंच गया? क्या इसे प्रिंस अन्द्रेई से प्यार नहीं रहा? उसने कुरागिन को इस हद तक कैसे बढ़ने दिया? यह तो साफ़ ही है कि वह धोखेबाज़ और बदमाश है। मेरे प्यारे निकोलाई, नेक निकोलाई को जब इसके बारे में पता चलेगा तो उसके दिल पर क्या बीतेगी? तो यह मतलब था परसों, कल और आज उसके विह्वल, दृढ़ और अस्वाभाविक चेहरे का," सोन्या सोच रही थी। "लेकिन यह नहीं हो सकता कि नताशा उसे प्यार करती हो! शायद यह जाने बिना कि किसने यह ख़त भेजा है, उसने इसे खोल लिया। सम्भवतः नताशा ने इसे अपना अपमान माना होगा। वह ऐसा नहीं कर सकती!"

सोन्या ने अपने आंसू पोंछे और नताशा के पास जाकर फिर बहुत ध्यान से उसके चेहरे को देखा।

"नताशा!" उसने धीरे-से कहा।

नताशा जागी और उसने सोन्या को देखा।

"अरे, लौट आयीं?"

जैसा कि नींद से जागने के फ़ौरन बाद के क्षणों में होता है, नताशा ने बड़े आवेग और प्यार से अपनी सहेली का आलिंगन किया। किन्तु सोन्या के चेहरे पर परेशानी देखकर नताशा के चेहरे पर भी परेशानी और सन्देह झलक उठा।

"सोन्या, तुमने ख़त पढ़ लिया है?" नताशा ने पूछा।

"हां," सोन्या ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया।

नताशा उल्लासपूर्वक मुस्करायी।

"नहीं, सोन्या, मैं अब और ऐसा नहीं कर सकती!" उसने कहा। "तुमसे अब और नहीं छिपा सकती। बात यह है कि हम एक-दूसरे को प्यार करते हैं!.. सोन्या, मेरी प्यारी, उसने लिखा है... सोन्या..."

सोन्या मानो अपने कानों पर विश्वास न करते हुए आंखें फाड़-फाड़कर नताशा को देख रही थी।

"और बोल्कोन्स्की?" सोन्या ने जानना चाहा।

"ओह, सोन्या, काश तुम यह जान सकतीं कि मैं कितनी ख़ुश हूं!" नताशा ने कहा। "तुम नहीं जानतीं कि प्यार क्या होता है..."

"लेकिन नताशा, क्या **उसके** साथ तुम्हारा सचमुच सब कुछ समाप्त हो गया?"

नताशा ने बड़ी-बड़ी, फैली-फैली आंखों से सोन्या को ऐसे ग़ौर से देखा मानो उसका प्रश्न न समझ रही हो।

"तो क्या तुम प्रिंस अन्द्रेई से नाता तोड़ रही हो?" सोन्या ने जानना चाहा।

"ओह, तुम कुछ भी तो नहीं समझतीं, बेवक़ूफ़ी की बातें नहीं करो, मेरी बात सुनो," नताशा क्षण भर को झल्लाकर कह उठी।

"नहीं, मैं इसपर विश्वास नहीं कर सकती," सोन्या ने फिर से यही कहा। "यह कैसे हो सकता है कि तुम साल भर एक आदमी को प्यार करती रहीं – और अचानक... अनातोल से तो तुम सिर्फ़ तीन बार ही मिली हो। नताशा, मैं तुमपर यक़ीन नहीं कर सकती, तुम शरारत कर रही हो। तीन दिनों में सब कुछ भूल जाओ और इस तरह..."

"तीन दिन," नताशा ने कहा। "मुझे लगता है कि मैं सौ साल से उसे प्यार करती हूं। मुझे लगता है कि उसके पहले मैंने कभी किसी को प्यार ही नहीं किया। और जैसे मैं उसे प्यार करती हूं, वैसे मैंने

किसी को प्यार ही नहीं किया। तुम यह नहीं समझ सकतीं। सोन्या तुम ज़रा मेरी बात सुनो, यहां बैठ जाओ।" नताशा ने उसे गले लगाया और चूमा। "मैंने सुना था कि ऐसा भी हो जाता है, तुमने भी ज़रूर सुना होगा। लेकिन मैं तो केवल अभी इस प्यार को अनुभव कर रही हूं। यह पहले जैसी बात नहीं है। उसे देखते ही मैंने यह महसूस किया कि वह मेरा स्वामी है और मैं उसकी दासी हूं, कि उसे प्यार न करना मेरे बस की बात नहीं। हां, दासी हूं! वह जो कुछ भी कहेगा, मैं वही करूंगी। तुम यह समझ नहीं पा रहीं। लेकिन मैं क्या करूं? मैं क्या करूं, सोन्या?" नताशा ने उल्लासपूर्ण, मगर साथ ही भयभीत चेहरे से कहा।

"लेकिन तुम ज़रा सोचो तो कि यह क्या कर रही हो," सोन्या बोली। "मैं इस मामले को ऐसे ही नहीं छोड़ सकती। यह गुप्त पत्र... तुमने उसे इस हद तक बढ़ने कैसे दिया?" सोन्या ने भय और घृणा से कहा जिसे बड़ी मुश्किल से छिपा रही थी।

"मैं तुमसे कह तो चुकी हूं," नताशा ने उत्तर दिया, "कि मेरा अपने पर बस नहीं। तुम यह समझती क्यों नहीं – मैं उसे प्यार करती हूं!"

"तो मैं इसे ऐसे ही नहीं बढ़ने दूंगी, मैं सब कुछ बता दूंगी," सोन्या छलछलायी आंखों से चिल्ला उठी।

"यह तुम क्या कह रही हो, भगवान के लिये... अगर तुम बता दोगी तो मैं तुम्हें अपनी दुश्मन समझूंगी," नताशा कह उठी... "तुम मुझे दुखी देखना चाहती हो, यह चाहती हो कि हमें अलग कर दिया जाये..."

नताशा के इस भय को देखकर सोन्या अपनी सहेली के लिये लज्जा और दया अनुभव करते हुए रो पड़ी।

"लेकिन तुम दोनों के बीच हुआ क्या है?" उसने पूछा। "उसने तुमसे क्या कहा है? वह खुद हमारे यहां क्यों नहीं आता?"

नताशा ने कोई जवाब नहीं दिया।

"सोन्या, भगवान के लिये किसी से कुछ नहीं कहना, मुझे सताओ नहीं," नताशा ने मिन्नत की। "यह याद रखो कि ऐसे मामलों में दखल नहीं देना चाहिये। मैंने तुम्हारे सामने अपना दिल खोल दिया है..."

दूसरे शब्द कहे हैं जो एक बाइज़्ज़त आदमी होने के नाते मैं किसी को भी कहने की इजाज़त नहीं दूंगा।"

प्येर ने हैरानी से उसकी तरफ़ देखा और वह यह समझ पाने में असमर्थ था कि अनातोल क्या चाहता है।

"बेशक कोई तीसरा आदमी यहां नहीं था," अनातोल कहता गया, "फिर भी मैं यह बर्दाश्त नहीं..."

"तो क्या आप बदला लेने के लिये द्वन्द्व-युद्ध चाहते हैं?" प्येर ने व्यंग्यपूर्वक पूछा।

"अगर और कुछ नहीं तो आप अपने शब्द तो वापस ले सकते हैं? ठीक है न? अगर आप चाहते हैं कि मैं आपकी इच्छाएं पूरी करूं, तो आप इतना तो कर सकते हैं?"

"वापस लेता हूं, अपने शब्द वापम लेता हूं," प्येर ने कहा, "आपसे अनुरोध करता हूं कि मुझे क्षमा कर दें।" अनचाहे ही प्येर की दृष्टि टूटे हुए बटन की तरफ़ चली गयी। "अगर रास्ते के लिये पैसों की ज़रूरत हो तो हाज़िर हैं।"

अनातोल मुस्कराया।

सहमी-सहमी और नीचतापूर्ण इस मुस्कान को देखकर जिससे प्येर अपनी पत्नी के कारण भली-भांति परिचित था, वह बौखला उठा।

"ओह, नीच और निर्दयी नसल!" उसने कहा और कमरे से बाहर चला गया।

अगले दिन अनातोल पीटर्सबर्ग के लिये रवाना हो गया।

## २१

प्येर यह सूचित करने के लिये मरीया द्मीत्रियेव्ना के यहां गया कि उसकी इच्छा पूरी कर दी गयी है, कि अनातोल कुरागिन को मास्को से भगा दिया गया है। सारे घर में भय और घबराहट का वातावरण छाया था। नताशा बहुत ज़्यादा बीमार थी और जैसा कि मरीया द्मीत्रियेव्ना ने राज़ के तौर पर प्येर को बताया कि नताशा को जब यह पता चला कि अनातोल शादीशुदा है, तो उसने उसी रात

को कहीं से चोरी-छिपे संखिया हासिल करके खा लिया। थोड़ा-सा ज़हर खाने के बाद वह इतनी अधिक डर गयी कि उसने सोन्या को जगाया और उसे यह बता दिया कि उसने क्या किया है। उसी वक़्त ज़हर के असर को दूर करने के ज़रूरी उपाय किये गये और अब उसकी जान ख़तरे से बाहर थी। किन्तु वह इतनी ज़्यादा कमज़ोर थी कि उसे गांव ले जाने की बात ही नहीं सोची जा सकती थी तथा काउंटेस को मास्को बुलवा भेजा गया था। प्येर की बेहद परेशान काउंट तथा अत्यधिक रोने के कारण सूजी आंखेंवाली सोन्या से भेंट हुई, किन्तु वह नताशा से नहीं मिल सका।

इस दिन प्येर ने क्लब में खाना खाया और वहां उसे हर तरफ़ ही नताशा को भगा ले जाने की कोशिश के बारे में चर्चा सुनने को मिली। उसने पूरे ज़ोर से इस चर्चा का खण्डन किया, हर किसी को यह विश्वास दिलाया कि इससे अधिक कुछ नही हुआ था कि उसके साले ने नताशा से विवाह-प्रस्ताव किया था और उसे इन्कार कर दिया गया था। प्येर को ऐसा लगता था कि इस सारे मामले पर परदा डालना और नताशा की इज़्ज़त का फिर से लोगों की नज़रों में ऊपर उठाना उसका कर्त्तव्य था।

प्येर धड़कते दिल से प्रिंस अन्द्रेई के लौटने की राह देख रहा था और उसके बारे में जानकारी पाने के लिये हर दिन बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्को-न्स्की के पास जाता था।

बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की को कुमारी बुर्येन के ज़रिये शहर में फैली हुई सभी ख़बरें मालूम थीं और वह प्रिंसेस मरीया के नाम लिखा गया वह रुक़्क़ा भी पढ़ चुके थे जिसमें नताशा ने प्रिंस अन्द्रेई से अपना नाता तोड़ने की सूचना दी थी। बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की हमेशा की तुलना में अधिक प्रसन्न प्रतीत होते थे और बड़ी बेचैनी से बेटे के लौटने का इन्तज़ार कर रहे थे।

अनातोल के मास्को से जाने के कुछ दिन बाद प्येर को प्रिंस अन्द्रेई का एक रुक़्क़ा मिला जिसमें उसने अपने मास्को आने की ख़बर भेजी थी और यह अनुरोध किया था कि वह उससे मिलने आये।

मास्को पहुंचते ही प्रिंस अन्द्रेई को अपने पिता से प्रिंसेस मरीया के नाम लिखा गया नताशा का वह रुक़्क़ा मिल गया जिसमें उसने नाता तोड़ने की सूचना दी थी (यह रुक़्क़ा कुमारी बुर्येन ने प्रिंसेस मरीया

के यहां से चुराकर बुज़ुर्ग प्रिंस को दे दिया था ) और बुज़ुर्ग प्रिंस ने नताशा को भगा ले जाने के क़िस्सों को भी कुछ नमक-मसाला लगाकर बेटे को सुना दिया था।

प्रिंस अन्द्रेई जिस शाम को मास्को लौटा था, उसके अगले दिन की सुबह को प्येर उससे मिलने आया। प्येर ने यह आशा की थी कि प्रिंस अन्द्रेई की नताशा जैसी ही मानसिक स्थिति होगी और इसलिये ड्राइंगरूम में दाखिल होने पर जब उसे अध्ययन-कक्ष से पीटर्सबर्ग के किसी षड्यन्त्र के बारे में चर्चा कर रहे प्रिंस अन्द्रेई की सजीव और ऊंची आवाज़ सुनायी दी, तो उसे बड़ी हैरानी हुई। बुज़ुर्ग प्रिंस और कोई अन्य व्यक्ति जब-तब उसे टोक देते थे। प्रिंसेस मरीया ने प्येर का स्वागत किया। आंखों से उस दरवाज़े की तरफ़ संकेत करते हुए, जहां प्रिंस अन्द्रेई था, उसने आह भरी और इस तरह भाई के दुख के सम्बन्ध में अपनी सहानुभूति प्रकट करनी चाही। किन्तु प्रिंसेस मरीया के चेहरे से प्येर यह देख रहा था कि जो कुछ हुआ था, वह उससे तथा इस बात से भी ख़ुश थी कि उसके भाई ने अपनी मंगेतर की बेवफ़ाई के समाचार को इस शान्त ढंग से ग्रहण किया था।

"अन्द्रेई ने कहा कि उसने ऐसी ही आशा की थी," उसने प्येर को बताया, "मैं जानती हूं कि उसका अहं उसे अपनी भावना व्यक्त नहीं करने देगा, फिर भी जितनी मुझे उम्मीद थी, उसने उससे कहीं बेहतर, कहीं ज़्यादा अच्छी तरह से इसे सहन किया है। शायद ऐसा ही होना चाहिये था..."

"लेकिन क्या सचमुच सभी कुछ ख़त्म हो चुका है?" प्येर ने प्रश्न किया।

प्रिंसेस मरीया ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। वह तो यह भी नहीं समझ पा रही थी कि कोई ऐसी बात पूछ ही कैसे सकता है। प्येर अध्ययन-कक्ष में गया। काफ़ी बदला हुआ, पहले से कहीं अधिक स्वस्थ प्रिंस अन्द्रेई, जिसके माथे पर भौंहों के बीच अब एक नयी, सीधी रेखा उभर आयी थी, असैनिक पोशाक में अपने पिता और प्रिंस मेश्चेर्स्की के सामने खड़ा था तथा हाथों को ख़ूब हिलाता-डुलाता हुआ बड़े ज़ोर से बहस कर रहा था।

ये लोग स्पेरान्स्की की चर्चा कर रहे थे जिसके अचानक निर्वासन और तथाकथित देश-द्रोह की ख़बर अभी-अभी मास्को पहुंची थी।

"अब वे सभी उसपर (स्पेरान्स्की पर) कीचड़ उछालते हैं, उसे दोषी ठहराते हैं जो एक महीना पहले उसकी तारीफ़ों के पुल बांधते थे," प्रिंस अन्द्रेई कह रहा था, "और वे भी, जो उसके लक्ष्यों-उद्देश्यों को समझने में असमर्थ थे। बुरे दिनों का शिकार हो जानेवाले आदमी पर उंगली उठाना और दूसरों की ग़लतियां भी उसके मत्थे मढ़ देना बहुत आसान है। लेकिन मैं यह कहूंगा कि अगर वर्त्तमान शासनकाल में कुछ भी अच्छा किया गया है तो वह सब उसी ने, सिर्फ़ उसी ने किया है..." प्येर को देखकर वह रुक गया। उसका चेहरा सिहरा और उसी क्षण उसपर क्रोध का भाव झलक उठा। "भावी पीढ़ियां उसके साथ न्याय करेंगी," उसने अपनी बात समाप्त की और प्येर की तरफ़ मुख़ातिब हुआ।

"तो तुम्हारा कैसा हाल-चाल है? और मोटे होते जा रहे हो?" प्रिंस अन्द्रेई ने चुटकी लेते हुए कहा, किन्तु उसके माथे पर बननेवाली नयी रेखा और अधिक गहरी हो गयी। "हां, मैं स्वस्थ हूं," उसने प्येर के प्रश्न का उत्तर दिया और उदासीनता से मुस्कराया। प्येर को यह समझने में देर न लगी कि उसकी यह मुस्कान कह रही है: "मैं स्वस्थ हूं, मगर मेरे स्वास्थ्य की किसी को ज़रूरत नहीं।" पोलैंड की सीमा से आगे भयानक सड़क, स्विट्ज़रलैंड में मिले प्येर की जान-पहचान के कुछ लोगों और इस बात का ज़िक्र करने के बाद कि वह श्रीमान देसाल को अपने बेटे के शिक्षक के रूप में विदेश से अपने साथ लाया है, प्रिंस अन्द्रेई फिर बड़े जोश से स्पेरान्स्की से सम्बन्धित बात-चीत में हिस्सा लेने लगा जो अभी तक दोनों बुज़ुर्गों के बीच चल रही थी।

"अगर उसने कोई ग़द्दारी की होती और नेपोलियन के साथ उसके गुप्त सम्बन्धों के कही कुछ प्रमाण उपलब्ध होते तो उन्हे सभी के सामने पेश कर दिया जाता," उसने उत्तेजना से और जल्दी-जल्दी कहा। "व्यक्तिगत रूप से मुझे स्पेरान्स्की कभी पसन्द नही था और अब भी पसन्द नहीं है, किन्तु मैं न्याय को पसन्द करता हूं।" प्येर अब किसी पराये मामले को लेकर उत्तेजित होने और बहस करने की अपने मित्र की उस आवश्यकता को, जिससे ख़ुद भी अच्छी तरह परिचित था, समझने लगा था जिसका उद्देश्य हृदय की बहुत ही कसकती और तड़पती भावना को दबाना था।

प्रिंस मेश्चेर्स्की के जाने के बाद प्रिंस अन्द्रेई ने प्येर की बांह में बांह डाली और उसे अपने रहने के लिये तैयार किये गये कमरे में ले गया। कमरे में एक पलंग बिछा था और खुले हुए कई सूटकेस तथा सन्दूक़ रखे थे। एक सन्दूक़ के पास जाकर उसने उसमें से एक मंजूषा और उसमें से काग़ज़ों का एक पैकेट निकाला। उसने चुप रहते हुए और जल्दी-जल्दी यह सब कुछ किया। वह उठा तथा उसने खांसकर गला साफ़ किया। उसका चेहरा उदास था और होंठ भिंचे हुए थे।

"मैं तुम्हें एक तकलीफ़ देने के लिये माफ़ी चाहता हूं..." प्येर समझ गया कि प्रिंस अन्द्रेई नताशा की चर्चा करना चाहता है और उसके चौड़े चेहरे पर दुख तथा सहानुभूति का भाव आ गया। प्येर के चेहरे के इस भाव से प्रिंस अन्द्रेई झल्ला उठा – वह दृढ़, गूंजती और कटु आवाज़ में कहता गया: "काउंटेस रोस्तोवा ने मुझे इन्कार कर दिया है और मुझ तक यह खबर पहुंची है कि तुम्हारे साले ने उसके सामने विवाह का प्रस्ताव किया है या ऐसी ही कोई अन्य बात हुई है। यह सच या नहीं?"

"सच भी है और झूठ भी है," प्येर ने कहना शुरू किया, मगर प्रिंस अन्द्रेई ने उसे टोक दिया।

"ये उसके पत्र हैं," उसने कहा, "और यह छविचित्र।" उसने मेज़ पर से पैकेट उठाकर प्येर को दे दिया।

"अगर काउंटेस से तुम्हारी भेंट हो... तो यह उसे दे देना।"

"वह बहुत बीमार है," प्येर ने कहा।

"तो वह अभी तक यहीं है?" प्रिंस अन्द्रेई ने जानना चाहा। "और प्रिंस कुरागिन?" उसने जल्दी से यह भी पूछ लिया।

"वह तो कभी का जा चुका है। वह मरते-मरते बची है..."

"उसकी बीमारी का मुझे बहुत अफ़सोस है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। वह अपने पिता की तरह रुखाई, विद्वेष और कटुता से मुस्कराया।

"तो यह कहना चाहिये कि श्रीमान कुरागिन ने काउंटेस रोस्तोवा के साथ शादी करने की मेहरबानी नहीं की?" प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। उसने कई बार नथुने फरफराये।

"वह शादी कर ही नहीं सकता था, क्योंकि शादीशुदा था," प्येर ने बताया।

प्रिंस अन्द्रेई अप्रिय ढंग से हंस दिया और फिर से उसने अपने पिता की याद दिला दी।

"और क्या मैं यह पूछ सकता हूं कि तुम्हारा साला अब कहां है?" उसने प्रश्न किया।

"वह पीटर्सबर्ग चला गया... वैसे, मुझे मालूम नहीं," प्येर ने जवाब दिया।

"ख़ैर, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "काउंटेस नताशा रोस्तोवा से कह देना कि वह पूरी तरह से स्वतन्त्र थी और स्वतन्त्र है तथा मैं उसके लिये अधिकतम सुख-सौभाग्य की कामना करता हूं।"

प्येर ने काग़ज़ों का पैकेट हाथ में ले लिया। प्रिंस अन्द्रेई मानो यह याद करते हुए कि उसे कुछ और तो नहीं कहना है या फिर इस इन्तज़ार में कि प्येर कुछ कहता है या नहीं, उसे एकटक देख रहा था।

"सुनिये, आपको पीटर्सबर्ग में हुई हमारी वह बहस याद है," प्येर ने कहा, "इस बारे में कि..."

"याद है," प्रिंस अन्द्रेई ने झटपट जवाब दिया, "मैंने कहा था कि पतित नारी को क्षमा कर देना चाहिये, किन्तु मैंने यह नहीं कहा था कि मैं ऐसा कर सकता हूं। मैं नहीं कर सकता।"

"लेकिन क्या इन दो चीज़ों की तुलना की जा सकती है?.." प्येर ने आपत्ति की। प्रिंस अन्द्रेई ने उसे टोक दिया। वह ज़ोर से चिल्ला उठा:

"हां, फिर से उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखूं, उदारता दिखाऊं और ऐसी ही दूसरी बातें करूं?.. हां, यह बहुत बड़ी सज्जनता होगी, किन्तु मैं उस महानुभाव द्वारा छोड़े गये पद-चिह्नों पर चलने में असमर्थ हूं। अगर तुम मेरे दोस्त रहना चाहते हो तो कभी भी मुझसे इसकी... इस सब की चर्चा नहीं करना। तो बात ख़त्म। तुम यह पैकेट दे दोगे न?.."

प्येर कमरे से बाहर आ गया और बुज़ुर्ग प्रिंस तथा प्रिंसेस मरीया के पास गया।

बुज़ुर्ग हमेशा की तुलना में आज ज़्यादा ख़ुश नज़र आ रहे थे। प्रिंसेस मरीया सदा जैसी ही थी, किन्तु भाई के प्रति सहानुभूति के कारण प्येर उसमें इस बात की ख़ुशी देखे बिना नहीं रह सकता था

कि उसके भाई की शादी का मामला गड़बड़ हो गया था। इन्हें देखते हुए प्येर समझ गया कि रोस्तोवों के विरुद्ध इन सभी के दिलों में घृणा और क्रोध की कितनी अधिक भावना व्याप्त थी, यह समझ गया कि इनके सामने तो उसका नाम तक नहीं लिया जा सकता था जो किसी भी व्यक्ति को प्रिंस अन्द्रेई पर तरजीह दे सकती थी।

खाने के वक़्त युद्ध की चर्चा होती रही जिसके जल्द ही आरम्भ होने के बारे में कोई सन्देह नहीं रहा था। प्रिंस अन्द्रेई लगातार बोलता तथा कभी अपने पिता और कभी स्विस शिक्षक देसाल के साथ बहस करता जाता था तथा सामान्य से अधिक सजीव प्रतीत हो रहा था – वही सजीवता दिखाते हुए जिसका वास्तविक नैतिक कारण प्येर बहुत अच्छी तरह से जानता था।

## २२

प्येर अपने को सौंपा गया कार्यभार पूरा करने के लिये इसी शाम को रोस्तोवों के यहां गया। नताशा बिस्तर में थी और काउंट क्लब गये थे। सोन्या को पत्र देकर प्येर मरीया द्मीत्रियेव्ना के पास चला गया जो यह जानना चाहती थी कि प्रिंस अन्द्रेई पर नताशा से सम्बन्धित समाचार की क्या प्रतिक्रिया हुई है। दस मिनट बाद सोन्या मरीया द्मीत्रियेव्ना के कमरे में आयी।

"नताशा अवश्य ही काउंट बेज़ूख़ोव से मिलना चाहती है," उसने कहा।

"मगर कैसे, क्या उसे तुम लोगों के कमरे में जाने दिया जाये? वहां इतनी गड़बड़ है," मरीया द्मीत्रियेव्ना ने आपत्ति की।

"नहीं, नताशा कपड़े पहनकर ड्राइंगरूम में आ गयी है," सोन्या ने बताया।

मरीया द्मीत्रियेव्ना ने केवल कंधे झटक दिये।

"न जाने, काउंटेस कब आयेगी। मुझे तो बहुत ही परेशान कर डाला है इस लड़की ने। देखो, तुम उससे सब कुछ नहीं कह देना," उसने प्येर को सम्बोधित किया। "उसे तो डांटने-डपटने को भी मन

नहीं होता, इतना तरस आता है, इतना रहम आता है उसपर।"

पहले की तुलना में दुबली नताशा, पीले और कठोर चेहरे के साथ (उसके चेहरे पर लज्जा का ज़रा भी भाव नहीं था जिसकी प्येर ने आशा की थी) ड्राइंगरूम के बीचोंबीच खड़ी थी। प्येर के दरवाज़े पर आते ही सम्भवतः इसी दुविधा में कि उसकी तरफ़ बढ़े या वहीं खड़ी रहकर उसकी प्रतीक्षा करे, वह कुछ परेशान-सी हो उठी।

प्येर जल्दी से उसके क़रीब गया। उसका ख़्याल था कि हमेशा की तरह वह उसकी तरफ़ अपना हाथ बढ़ा देगी। किन्तु वह उसके नज़दीक आकर रुक गयी, हांफती-सी, अग़ल-बग़ल निर्जीव-सी बांहें लटकाये हुए, बिल्कुल उसी मुद्रा में, जिसमें वह गाने के लिये हॉल के बीचोंबीच आकर खड़ी होती थी। किन्तु उसके चेहरे का भाव एकदम दूसरा था।

"प्येर," वह जल्दी-जल्दी बोलने लगी, "प्रिंस अन्द्रेई वोल्कोन्स्की आपके मित्र थे, अभी भी आपके मित्र हैं," नताशा ने अपनी भूल सुधारी (उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह सब पहले की बात थी और अब स्थिति बिल्कुल दूसरी थी)। "प्रिंस अन्द्रेई ने तब मुझसे कहा था कि अगर कोई ज़रूरत आ पड़े तो मैं आपसे..."

प्येर उसकी तरफ़ देखते हुए सिर्फ़ नाक से सूं-सूं करता रहा। अब तक वह मन ही मन उसकी भर्त्सना और उससे घृणा करने की कोशिश करता रहा था। लेकिन अब उसे उसपर इतनी दया आयी कि उसकी आत्मा में भर्त्सना के लिये कोई स्थान ही नही रहा।

"प्रिंस अन्द्रेई अब यहां हैं, आप उनसे कहिये.. कि वह मुझे क्षम... क्षमा कर दें।" वह रुक गयी और अधिक तेज़ी से सास लेने लगी, मगर रोयी नहीं।

"हां... मैं उससे कह दूंगा," प्येर ने जवाब दिया, "मगर..." उसकी समझ में नही आ रहा था कि आगे क्या कहे।

नताशा सम्भवतः उस विचार से भयभीत हो उठी जो प्येर के दिमाग़ में आ सकता था।

"नहीं, मैं जानती हूं कि हमारे बीच सब कुछ ख़त्म हो चुका है," उसने जल्दी-जल्दी कह डाला। "नहीं, अब यह कभी नहीं हो

सकता। मुझे तो केवल वह अन्याय ही संतप्त कर रहा है जो मैंने प्रिंस अन्द्रेई के प्रति किया है। उनसे केवल इतना कह दीजिये कि वह मुझे क्षमा कर दें, क्षमा कर दें, सभी कुछ के लिये क्षमा कर दें..." उसका सारा शरीर कांपने लगा और वह कुर्सी पर बैठ गयी।

दया की ऐसी भावना, जैसी प्येर ने पहले कभी अनुभव नहीं की थी, उसके मन में उमड़ पड़ी।

"मैं उससे कह दूंगा, फिर एक बार उससे सब कुछ कह दूंगा," प्येर ने उत्तर दिया। "किन्तु... मैं एक बात जानना चाहता हूं..."

"क्या जानना चाहते हैं?" नताशा की दृष्टि पूछ रही थी।

"मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या आप उसे..." प्येर की समझ में नहीं आ रहा था कि अनातोल का कैसे उल्लेख करे और उसका ख़्याल आते ही उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी, "क्या आप उस बुरे आदमी को प्यार करती थीं?"

"उसे बुरा नहीं कहिये," नताशा ने कहा। "लेकिन मैं कुछ भी, कुछ भी नहीं जानती..." वह फिर से रोने लगी।

और पहले से भी अधिक दया, स्नेह तथा प्यार की भावना प्येर के अन्तर को मथने लगी। वह अनुभव कर रहा था कि कैसे उसके चश्मे के नीचे से आंसू बह रहे हैं और वह यह आशा कर रहा था कि नताशा की उनपर नज़र नहीं पड़ेगी।

"हम इस बात की और अधिक चर्चा नहीं करेंगे, प्यारी नताशा," प्येर ने कहा।

नताशा को प्येर की यह विनम्र, स्नेह और प्यार से ओत-प्रोत आवाज़ बहुत अजीब-सी लगी।

"हम इसकी चर्चा नहीं करेंगे, प्यारी नताशा, मैं प्रिंस अन्द्रेई से सब कुछ कह दूंगा, किन्तु आपसे एक अनुरोध करता हूं – मुझे अपना मित्र मानिये और अगर आपको कभी सहायता, सलाह या किसी के सामने सिर्फ़ अपना दिल हल्का करने की ज़रूरत महसूस हो – इस वक़्त नहीं, बल्कि तब, जब आपके मन में सब कुछ स्पष्ट हो जाये – तो आप मुझे याद कर लीजिये।" उसने नताशा का हाथ अपने हाथ में लेकर चूम लिया। "मैं इसे अपना सौभाग्य समझूंगा, यदि कुछ भी कर..." प्येर घबराहट के कारण अपना वाक्य पूरा न कर सका।

"मुझसे यह सब नहीं कहिये, मैं इसके लायक़ नहीं हूं!" नताशा

चिल्ला उठी और उसने कमरे से बाहर जाना चाहा, किन्तु प्येर उसका हाथ पकड़े रहा। वह जानता था कि उसे नताशा से कुछ और भी कहना है। मगर जब उसने यह कहा तो स्वयं अपने शब्दों पर आश्चर्यचकित रह गया।

"कैसी बात कह रही हैं, कैसी बात कह रही हैं, अभी तो पूरा जीवन आपके सामने है," उसने नताशा से कहा।

"मेरे सामने पूरा जीवन? नहीं! मेरे लिये तो सब कुछ ख़त्म हो चुका है," उसने लज्जा और आत्म-तिरस्कार की भावना अनुभव करते हुए कहा।

"सब कुछ ख़त्म हो चुका है?" प्येर ने उसके शब्द दोहराये। "अगर मैं ऐसा न होकर, जैसा हूं, दुनिया का सुन्दरतम, सबसे अधिक बुद्धिमान, सर्वश्रेष्ठ और विवाह के बन्धन से मुक्त व्यक्ति होता तो इसी क्षण आपके सामने घुटने टेककर आपसे अपनी पत्नी बनने और आपका प्यार पाने का वरदान मांगता।"

कई दिनों के बाद नताशा इस क्षण कृतज्ञता और कोमल भावना से द्रवित होकर रो पड़ी तथा प्येर की ओर देखकर कमरे से बाहर चली गयी।

नताशा के फ़ौरान बाद ही प्येर भी कोमल भावना और सुख के आंसुओं पर क़ाबू पाता हुआ, जिनसे उसका गला रुंधा जा रहा था, ड्योढ़ी में भाग गया और पोस्तीन के ओवरकोट की आस्तीनों में बांहें न घुसेड़ पाते हुए उसे कंधों पर डालकर ही स्लेज में जा बैठा।

"अब किधर चलने का हुक्म है, हुज़ूर?" कोचवान ने पूछा।

"किधर?" प्येर ने अपने आपसे पूछा। "अब कहां जाया जा सकता है? क्या क्लब या किसी के यहां मेहमान जाना सम्भव है?" कोमलता और प्यार की उस भावना की तुलना में, जो वह अनुभव कर रहा था, नर्म पड़ गयी और कृतज्ञता की उस दृष्टि की तुलना में, जिससे डबडबायी आंखों के बीच से नताशा ने अन्तिम बार उसकी तरफ़ देखा था, उसे सभी लोग बहुत दयनीय और तुच्छ प्रतीत हो रहे थे।

"घर चलो," प्येर ने कहा और दस सेंटीग्रेड की सर्दी के बावजूद उसने अपनी चौड़ी, ख़ुशी से सांस लेती छाती पर से भालू की खाल के ओवरकोट के बटन खोल दिये।

खूब पाला पड़ रहा था और आकाश मेघ-मुक्त था। गन्दी, अध-अंधेरी सड़कों और काली छतों के ऊपर सितारों से जड़ा हुआ काला आकाश फैला था। केवल आकाश को देखते हुए ही प्येर उस ऊंचाई की तुलना में, जिसपर इस वक़्त उसकी आत्मा पहुंची हुई थी, वह पृथ्वी की हर चीज़ की तिरस्कारपूर्ण तुच्छता को अनुभव नहीं कर पा रहा था। अर्बात चौक को लांघते हुए सितारों से जड़े काले आकाश का अपार विस्तार प्येर की आंखों के सामने आ गया। इस आकाश के लगभग मध्य में, प्रेचीस्तिन्स्की सड़क के ऊपर, सभी ओर से सितारों से घिरा, किन्तु सभी तारों-सितारों की तुलना में पृथ्वी के सबसे अधिक निकट होने की भिन्नता लिये हुए, रुपहले प्रकाश से जगमगाता तथा अपनी लम्बी पूंछ को ऊपर उठाये सन् १८१२ का विराट और प्रखर धूमकेतु दिखायी दे रहा था। यह वही धूमकेतु था जो, जैसा कि लोगों का कहना था, सभी तरह की भयानक मुसीबतों और संसार के अन्त की भविष्यवाणी करता था। किन्तु जगमगाती, लम्बी पूंछवाले इस उज्ज्वल सितारे ने प्येर के मन में किसी भी प्रकार के भय की भावना पैदा नहीं की। इसके विपरीत, प्येर प्रसन्नता और आंसुओं से भीगी आंखों से इस जगमगाते तारे को देख रहा था जो मानो अवर्णनीय तीव्र गति से अपनी कक्षा पर बढ़ता हुआ असीम विस्तार को लांघकर बड़े उत्साह से अपनी पूंछ को ऊपर उठाये अन्य असंख्य झिलमिलाते सितारों के बीच अपने श्वेत प्रकाश को जग-मगाता तथा उससे खिलवाड़ करता हुआ काले आकाश में अपने लिये पहले से नियत स्थान पर पृथ्वी को अचानक बींधनेवाले तीर की भांति आकर रुक गया था। प्येर को लगा कि यह धूमकेतु पूरी तरह से उस सब को अभिव्यक्ति दे रहा था जो अब एक नये जीवन में पुष्पित-पल्लवित हो रही उसकी सुकोमल तथा उन्नत हो जानेवाली आत्मा में सांस ले रहा था।

वह प्रश्न, जो ... दिन भर प्येर को परेशान करता रहा था, अब उसे सर्वथा स्पष्ट और हल हो चुका-सा प्रतीत हुआ। वह अब इस युद्ध और अगले दिन होनेवाली लड़ाई का पूरा सार और महत्त्व समझ गया था। इस पूरे दिन में उसने जो कुछ देखा था, उसे सैनिकों के चेहरों पर जिन अर्थपूर्ण तथा कठोर भावनाओं की झलक मिली थी, वे अब एक नयी ही रोशनी में उसके सामने आलोकित हो उठीं। उसने देशभक्ति की उस छिपी आग को अनुभव कर लिया था जो उन सभी लोगों के दिलों में थी जिनसे उसकी भेंट हुई थी और जो उसे यह स्पष्ट करती थी कि किस कारण ये सब लोग बड़े इतमीनान से, यहां तक कि जिन्दादिली से मरने को तैयार हो रहे थे।

('युद्ध और शान्ति', खण्ड ३, पृ० 307)

"लेट जाओ!" जल्दी से ज़मीन पर लेटता हुआ एडजुटेंट चिल्लाया। प्रिंस अन्द्रेई दुविधा की स्थिति में खड़ा रहा। विस्फोटक गोला जुती ज़मीन और चरागाह की सीमा पर, नागदौने की झाड़ी के क़रीब उसके तथा ज़मीन पर लेटे एडजुटेंट के बीच धुआं उगलता हुआ लट्टू की तरह घूम रहा था।

"क्या वह मौत है?" प्रिंस अन्द्रेई ने घूमते हुए काले गोले से निकलते तथा बल खाते धुएं, घास और नागदौने की झाड़ी को सर्वथा नई, ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हुए सोचा। "मैं मर नहीं सकता, मैं मरना नहीं चाहता, मैं जीवन को प्यार करता हूं, इस घास, धरती और हवा को प्यार करता हूं ..."

('युद्ध और शान्ति', खण्ड ३, पृ० 370)

रादुगा प्रकाशन · मास्को